प्रकाशक

डॉ. भोगीलाल ज. सांडेसरा,
अध्यक्ष, गुजराती विभाग,
म. स. विश्वविद्यालय, वडोदरा.

आवृत्ति पहेली, वि. सं. २०१९
ई. स. १९६३



मूल्य रु. १८=६०

प्राप्तिस्थान

युनिवर्सिटी पुस्तकवेचाण विभाग
महाराजा सयाजीराव युनिवर्सिटी प्रेस,
राजमहेल दरवाजा पासे, राजमहेल रोड,
वडोदरा

मुद्रक

श्री. रमणलाल जी. पटेल, व्यवस्थापक,
म. स. युनिवर्सिटी ऑफ बरोडा प्रेस
(साधना प्रेस), राजमहेल दरवाजा पासे,
राजमहेल रोड, वडोदरा.

निवेदन

यशोधीरकृत 'पंचाख्यान बालावबोध' ए पश्चिम भारतीय 'पंचतंत्र'नी मुनि पूर्णभद्र-संकलित अलंकृत पाठपरंपरा 'पंचाख्यान'नो जूना गुजरातीमां थयेलो रसाळ्नो गद्यानुवाद छे. एनी रचना विक्रमना सोळमा शतकमां थई लागे छे. सने १९४७-४८मां गुजराती साहित्यपरिषद माटे 'पंचतंत्र'ना अनुवादनुं तथा तद्विषयक अध्ययन-संशोधननुं काम करतां आ बालावबोधनी बे हस्तप्रत में जोई अने 'पंचतंत्र'नी प्रस्तावना(पृ. ४३-४६)मां ए कृतिनो परिचय आप्यो. आ प्रलंब अने समृद्ध गद्यरचनानुं संपादन करवानो विचार ते समये मने आवेलो. ए पछी, १९५१मां, वडोदरा युनिवर्सिटीए भाषाकीय, साहित्यिक अने सांस्कृतिक महत्त्व धरावती विशिष्ट जूनी गुजराती कृतिओना तेम ज ए विषेनां अध्ययनोना प्रकाशन माटे 'प्राचीन गुर्जर ग्रन्थमाला'नी संशोधन योजना मंजूर करी, तेमां आ रचनानो पण समावेश करवामां आव्यो; एने परिणामे आ प्रकाशन शक्य बन्युं छे.

आ माटेनी जरूरी हस्तप्रत-सामग्री अमने जुदे जुदे स्थळेथी मळी छे. आचार्य श्री जिनविजयजीए आ बालावबोधनी पोताना संग्रहमांनी हस्तप्रत अमने आपी हती. भांडारकर इन्स्टिटयूट, पूना खातेना सरकारी संग्रहनी बे प्रतो ए संस्थाना भूतपूर्व क्यूरेटर डॉ. पी. के. गोडे अने हालना क्यूरेटर डॉ. ए. डी. पुसाळकरे लांबा समय सुधी अमने धीरी छे. लंडननी इन्डिया ऑफिस लायब्रेरीमांनी हस्तप्रतनी माइक्रोफिल्म तेम ज एनुं एन्लार्जमेन्ट, मुंबईनी ब्रिटीश काउन्सिलना अधिकारीओए अमने मेळवी आप्यां हतां. आ बालावबोधनी विरल अने बहुमूल्य सचित्र हस्तप्रत खरीदीने उपयोग माटे अमने सुलभ बनाववानुं श्रेय वडोदरा युनिवर्सिटीनां भूतपूर्व वाइस-चान्सेलर श्रीमती हंसाबहेन महेता अने युनिवर्सिटी-लायब्रेरियन डॉ. चपकलाल शुक्लने छे. चित्रोनो अभ्यासी परिचय ए विषयना तद्विद् अने वडोदरा प्राच्यविद्या मन्दिरमां मारा सहकार्यकर डॉ. उमाकान्त शाहे लखी आप्यो छे. ए सर्वेए आपेली सहायनी अहीं साभार नोंध लउं छुं.

पाठान्तरो साथेनो आखो ग्रन्थ एक ज पुस्तकरूपे प्रगट करवामां घणो विलंब थाय तेम हतो. आ पुस्तकमां पहेलुं तंत्र प्रगट कर्युं छे. बाकीनां तंत्रो तथा शब्द-कोशादि अभ्याससामग्री हवे पछी प्रकाशित थशे.

'अध्यापकनिवास',
वडोदरा.
वसंतपंचमी, सं. २०१९

भोगीलाल जयचंदभाई सांडेसरा
सामान्य संपादक

डॉ. सांडेसरानां अन्य पुस्तको

संघविजयकृत सिंहासनबत्रीसी (१९३३)
माधवकृत रूपसुन्दरकथा (१९३४)
वीरसिंहकृत उषाहरण (१९३८)
वाघेलाओनुं गुजरात (१९३९)
मतिसारकृत कर्पूरमंजरी (१९४१)
प्राचीन गुजराती साहित्यमां वृत्तरचना (१९४१)
इतिहासनी केडी—लेखसंग्रह (१९४५)
संघदासगणिकृत वसुदेव-हिंडी : अनुवाद (१९४६)
वस्तुपाल का विद्यामण्डल—हिन्दी अनुवाद (१९४७)
वस्तुपालनुं विद्यामंडळ अने बीजा लेखो (१९४८)
सत्तरमा शतकना प्राचीन गुर्जर काव्य (१९४८)
ज्येष्ठीमल्ल ज्ञाति अने मल्लपुराण (१९४८)
पंचतन्त्र—अनुवाद (१९४९)
जगन्नाथपुरी अने ओरिसाना पुरातन अवशेषो (१९५१)
हेमचन्द्राचार्य का शिष्यमण्डल—हिन्दी अनुवाद (१९५१)
जैन आगमसाहित्यमां गुजरात (१९५२)
उत्तराध्ययन सूत्र, अध्ययन १-१८ (१९५२)
भारतीय आर्यभाषा अने हिन्दी (१९५२)
नेमिचन्द्र भंडारी-विरचित षष्टिशतक प्रकरण, त्रण बालावबोध सहित (१९५३)
Literary Circle of Mahāmātya Vastupāl and Its Contribution to Sanskrit Literature (1953)
महीराजकृत नल-दवदंती रास (१९५४)
शब्द अने अर्थ—ऐतिहासिक शब्दार्थशास्त्र विषे पांच व्याख्यानो (१९५४)
वर्णक-समुच्चय, भाग १ — मूल पाठ (१९५६)
महामात्य वस्तुपालनुं साहित्यमंडळ तथा संस्कृत साहित्यमां तेनो फाळो (१९५७)
प्रदक्षिणा—पश्चिम अने पूर्वनी विद्यायात्रा (१९५९)
वर्णक समुच्चय, भाग २—सांस्कृतिक अध्ययन (१९५९)
दयाराम (१९६०)
सोमेश्वर-विरचित उल्लाघराघव नाटक (१९६१)
संशोधननी केडी—लेखसंग्रह (१९६१)
Lexicographical Studies in 'Jaina Sanskrit' (1962)
अमृतकलश-विरचित 'हम्मीर प्रबन्ध' (छपाय छे)

अनुक्रम

चित्रसूचि

प्रतिपरिचय अने संपादनपद्धति

प्रतिपरिचय

यशोधीरकृत 'पंचाख्यान बालावबोध'ना संपादन माटे नीचेनी हस्तप्रतोनो उपयोग करवामां आव्यो छे.

१. **वि.** आचार्य श्री जिनविजयजीना संग्रहनी हस्तप्रत.

२. **इ.** इन्डिया ओफिस लायब्रेरी, लंडननी हस्तप्रत नं S 3400 c-नी फोटो नकल

३. **भा-१.** भाण्डारकर ओरियेन्टल रिसर्च इन्स्टिट्यूट, पूनानी हस्तप्रत नं 289 of A 1882-83

४. **व.** श्रीमती हंसा महेता लायब्रेरी (वडोदरा युनिवर्सिटी लायब्रेरी)-नी सचित्र हस्तप्रत

५. **भा-२.** भाण्डारकर ओरियेन्टल रिसर्च इन्स्टिट्यूट, पूनानी हस्तप्रत नं. 424 of 1879-80

आ हस्तप्रतोनो विगतवार परिचय नीचे प्रमाणे छे

१. **वि.** आ हस्तप्रत आचार्य श्री जिनविजयजीनी हस्तप्रतोना भारतीय विद्याभवन, मुंबईमां रखायेला संग्रहमांथी प्राप्त थई छे. आ प्रतनुं छेल्लुं पत्र नथी अने तेथी कृतिना रचनासंवत के लेखनसंवत विषे पुष्पिकामां उल्लेख थयो होय तो ते मळ्यो नथी. पण तेना भाषास्वरूप परथी जणाय छे के, संवत १६२३ना लेखनसंवतवाळी भाण्डारकर ओरियेन्टल रिसर्च इन्स्टिट्यूट, पूनानी हस्तप्रत नं 289 of A 1882 83 अने इन्डिया ओफिस लायब्रेरी, लंडननी हस्तप्रत नं S 3400 c (एनो लेखनसंवत १६०३ छे.) ए बन्ने प्रतो करतां एनुं भाषास्वरूप जूनुं छे. एटले आ प्रतनो लेखनकाल संवत १६०३ पहेलांनो होवो

यशोधीरकृत 'पंचाख्यान बालावबोध'नी सचित्र प्रतनी माफक आ प्रतमां पण मूळे चित्रो मूकवानी योजना करवामा आवी हशे, एम प्रतना पृष्ठांक 1-B, 2-B, 6-B, 7-A, 8-A, 8-B, 13-A, 20-A, 24-B, 26-A पर जमणी बाजुए व्यवस्थित रीते लीटीओ दोरी, आशरे ३" थी ३·५" जेटली खाली राखेली जग्या परथी मालम पडे छे. वडोदरा युनिवर्सिटी लायब्रेरीनी सचित्र प्रतमा लेखनसवत आपेलो नथी, पण तेना भाषास्वरूप परथी, आचार्य जिनविजयजीवाळी प्रतनी नकल थया पछी, थोडा वर्ष बाद तेनी नकल थई हशे अने तेना चित्रो पण त्यारे दोरायां हशे, एम अनुमान थाय छे. ताजेतरमा, म. स. युनिवर्सिटी, वडोदराना गुजराती विभागे खरीदेली यशोधीरकृत 'पंचाख्यान बालावबोध'नी प्रतमा पण केटलाक पृष्ठ पर चित्रो दोरवाना आशयथी खाली जग्या राखेली छे अने चित्रोना रेखांकन करेला छे. आ सर्व परथी फलित थाय छे के, आ बालावबोधनी सचित्र नकलो करवानी प्रेरणा आपनार कोई वधारे जूनी सचित्र नकल हशे के जे हजी जाणवामा आवी नथी, पण जेना परथी बीजी अनेक नकलोमा चित्रो दोरवाना प्रयत्नो थया लागे छे.

आखी प्रत एक ज हाथे देवनागरी लिपिमा लखायेली छे, अने सुवाच्य छे. प्रतनो मोटो भाग पडी मात्रामा लखायेलो छे, पण कोई कोई स्थळे खडी मात्रा मळे छे. तेना प्रथम ४५ पत्रमा केटलीक अशुद्धिओ छे. लेखनपद्धतिनी दृष्टिए, तेमा केटलाक स्थळे 'व'ना स्थाने 'ब' अने 'ब'ना स्थाने 'व' लखेलो छे. 'प' अने 'व' तेम ज 'प' अने 'य' एकसरखी रीते लखेला मळे छे, जेथी 'प', 'व' अने 'य'मा तफावत करवो मुश्केल बने छे.

लहियानी भूलना कारणे, प्रतमा केटलाक सम्कृत श्लोकोनो अनुवाद

जोईए. ए रीते आ प्रत सर्व प्राप्त प्रतोमा जूनी छे तथा पाचे य तन्त्रोनो बालावबोध आमां अखंडितकल्प छे, तेथी तेने मुख्य प्रत तरीके स्वीकारी, तेना परथी बालावबोधनो पाठ तैयार करवामा आव्यो छे.

आ प्रतिना प्रारंभमा 'श्रीगणेशाय नम ' ए शब्दोथी नमस्कार-विधि करेलो छे, ज्यारे इ प्रत 'श्रीवीतरागाय', **भा–१** प्रत '[श्री]सर्वज्ञाय', **व** प्रत 'उं नम. श्रीगणपतये', **भा–२** प्रत 'ओं नम. श्रीगणपतये' एवा शब्दोथी प्रारंभ करे छे.

आ हस्तप्रतना कुल पत्र १ थी १५४ छे. वच्चे पत्र २५ तेम ज छेलुं एक पत्र नथी. ए बे पत्र सिवाय, आखी य कृति आ प्रतमा छे. तेना पत्राकमा अंक २० नाखवो रही गयो छे, ज्यारे पत्राक २१ बे पान पर नाखेलो छे. संपादनमा आ भूल सुधारी छे. तेना पाननुं माप १०.५"×४.४" छे. दरेक पान पर सरेराश तेर पंक्तिओ छे. कृतिनो प्रारंभ पृष्ठाक 1-B परथी थाय छे, पृष्ठ 1-A कोरुं छे. दरेक पृष्ठनी डाबी अने जमणी बाजुओए काळी शाहीथी १" नो हासियो पाडेलो छे अने दरेक पाननी उपर अने नीचे ६" जग्या कोरी राखेली छे. आखी प्रतमा, पृष्ठाक १, २, ३ पर बन्ने बाजुओए, लाल शाहीथी हासियो पाडेलो छे अने डाबा तेम ज जमणा हासियामा मध्य भागे तेम ज पाननी वच्चेनी कलशाकृतिमा लाल गोळ वर्तुल मूकेला छे. पृष्ठाक १५१, १५२, १५३ अने १५४नी B बाजु पर पण लाल शाहीथी डाबो अने जमणो हासियो पाडी, दरेक हासियाना मध्य भागे, अने पाननी वच्चे कलशाकृतिमा लाल गोळ वर्तुल मूकेला छे, ज्यारे आ ज पृष्ठोनी A बाजु पर काळी शाहीथी बन्ने हासिया दोरेला छे हासिया विषे उपर्युक्त जे पृष्ठोनो निर्देश कर्यो छे ते सिवाय अन्य सर्व पृष्ठोनी बन्ने बाजुओए काळी शाहीथी हासिया दोरेला छे. वडोदरा युनिवर्सिटी लायब्रेरीनी

यशोधीरकृत 'पचाख्यान बालावबोध'नी सचित्र प्रतनी माफक आ प्रतमा पण मूळे चित्रो मूकवानी योजना करवामा आवी हशे, एम प्रतना पृष्ठाक 1-B, 2 B, 6-B, 7 A, 8-A, 8 B, 13 A, 20 A, 24 B, 26 A पर जमणी बाजुए व्यवस्थित रीते लीटीओ दोरी, आशरे ३" थी ३ ५" जेटली खाली राखेली जगा परथी मालम पडे छे वडोदरा युनिवर्सिटी लायब्रेरीनी सचित्र प्रतमा लेखनसवत आपेलो नथी, पण तेना भाषास्वरूप परथी, आचार्य जिनविजयजीवाळी प्रतनी नकल थया पछी, थोडा वर्ष बाद तेनी नक्ल थई हशे अने तेना चित्रो पण त्यारे दोराया हशे, एम अनुमान थाय छे ताजेतरमा, म स युनिवर्सिटी, वडोदराना गुजराती विभागे खरीदेली यशोधीरकृत 'पचाख्यान बालावबोध'नी प्रतमा पण केटलाक पृष्ठ पर चित्रो दोरवाना आशयथी खाली जगा राखेली छे अने चित्रोना रेखाकन करेला छे आ सर्व परथी फलित थाय छे के, आ बालावबोधनी सचित्र नकलो करवानी प्रेरणा आपनार कोई वधारे जूनी सचित्र नकल हशे के जे हजी जाणवामा आवी नथी, पण जेना परथी बीजी अनेक नकलोमा चित्रो दोरवाना प्रयत्नो थया लागे छे

आखी प्रत एक ज हाथे देवनागरी लिपिमा लखायेली छे, अने सुवाच्य छे प्रतनो मोटो भाग पडी मात्रामा लखायेलो छे, पण कोई कोई स्थळे खडी मात्रा मळे छे तेना प्रथम ४१ पत्रमा केटलीक अशुद्धिओ छे लेखनपद्धतिनी दृष्टिए, तेमा केटलाक स्थळे 'व'ना स्थाने 'व' अने 'ज'ना स्थाने 'य' लखेलो छे 'प' अने 'व' तेम ज 'प' अने 'य' एकसरखी रीते लखेला मळे छे, जेथी 'प', 'व' अने 'य'मा तफावत करवो मुश्केल बने छे

लहियानी भूलना कारणे, प्रतमा केटलाक संस्कृत श्लोकोनो अनुवाद

संपूर्ण रीते अने केटलाकनो अंशतः पडी गयेलो छे, जेनो पाठ बीजी प्रतोमांथी लई कौंसमां मूकेलो छे.

२. इ. आ हस्तप्रतनुं वर्णन 'Catalogue of the Sanskrit and Prākṛt Manuscripts in the Library of the India Office,' Vol. II, Part II (p. 1191) पर आ प्रमाणे आपेलुं छेः

"हस्तप्रत चोपडी (गुटका) आकारनी छे. ते एक मोटी संग्रह-पोथी नं. ७३१६नां पृ. ११७–१९० पर उतारेली छे, अने तेनो जुदो क्रमांक नं. S. 3400 c छे. तेनुं माप ७½" × ६½" छे, अने प्रत्येक पान पर १९ पंक्तिओ छे. तेनी नकल एक ज हाथे जैन देवनागरी लिपिमां, वि. सं. १६०३ (ई. स. १५४७)मां करवामां आवेली छे. प्रतना पाननी डावी अने जमणी बाजुओए, काळी शाहीनी बेवडी लीटीओनी साथे लाल पहोळी लीटीथी हांसियो पाडेलो छे. बन्ने बाजुना हांसियामां अने पाननी वच्चे खाली राखेली जग्याए, लाल रंगनी वर्तुलाकार आकृतिओ आपेली छे."

सर्व प्राप्त प्रतोमां, प्राचीनतानी दृष्टिए, **चि** पछी आ **इ** प्रतनुं स्थान आवे छे. **इ** अने **भा–१** बन्नेनां भाषास्वरूपमां घणुं साम्य छे. आ प्रतमां एक ज तंत्रनो बालावबोध मळे छे.

आ हस्तप्रतनी माइक्रोफिल्म तथा वांची शकाय एवा कदनुं एनुं एन्लार्जमेन्ट, मुंबईनी ब्रिटीश काउन्सिल द्वारा, ई. स. १९५३मां वडोदरा युनिवर्सिटीना गुजराती विभाग माटे लंडनथी मंगाववामां आव्युं हतुं.

३. भा–१. आ हस्तप्रत भाण्डारकर ओरियेन्टल रिसर्च इन्स्टिट्यूट, पूनाना सरकारी ग्रन्थसंग्रहनी छे. तेनो क्रमांक 289 of A 1882-83 छे. तेना कुल पत्र १–४६ छे, वच्चे पत्रांक २ नथी. तेनां

पत्रनुं माप १०·५"×४·५" छे. प्रत्येक पृष्ठ पर सामान्यतः २५ पंक्तिओ लखेली छे. प्रत्येक पृष्ठनी डाबीजमणी बाजुओए ·५"नो हासियो काळी शाहीथी पाडेलो छे; पृष्ठनी उपर नीचे ५" जग्या छोडेली छे. प्रतनुं पहेलुं पत्र डाबी बाजुना उपला भागे फाटेलुं छे, ज्यारे पत्रांक १–९नी डाबी बाजुनो नीचलो भाग अने पत्रांक १२–२६नी डाबी बाजुनो उपलो भाग कपायेलो छे, तेथी एटलो पाठ खंडित थाय छे. प्रतनी डाबी अने जमणी बाजुनी किनारीने सारो एवो घसारो लागेलो छे.

आखी प्रत एक ज हाथे, एकधारा अक्षरे देवनागरी लिपिमा लखायेली छे. एनुं लखाण मोटे भागे पडी मात्रामा छे, ज्यारे कोई कोई ठेकाणे खडी मात्रा पण नजरे पडे छे. एमा संस्कृत श्लोकादिना पाठ लगभग शुद्ध स्वरूपमां छे, ते परथी एम अनुमान थाय छे के, एनी नकल कोई विद्वान लहियाए करी छे. पुष्पिकामा, प्रतनी नकल करनार 'ऋषि थावर' नामना कोई जैन साधुनुं नाम छे.

प्रतनी पुष्पिका आ प्रमाणे छे

संवत १६२३ वर्षे मार्गसिर वदि १४ भूमे ऋषि थावर लिपतं लोलीयाणा नयरे स्वयं पठनार्थं । शुभं भवतु ॥ कल्याणमस्तु ॥ छ ॥ श्री ॥ श्री ॥

पुष्पिकाने अन्ते, जुदा मोटा अक्षरोमा 'स । धनजी स । वर्धमानने पाम्नो' एवा शब्द लखेला छे.

चि प्रतना प्रमाणमा आ प्रत शुद्ध छे, पण आमा मूळ बालावबोधनो संक्षिप्त पाठ मळे छे, एटले तेनो उपयोग पाठान्तरो नोंधवामा कर्यो छे. **चि** प्रत ज्या ज्या अस्पष्ट अने अशुद्ध जणाई त्या त्या आ **भा–१** मा मळता पाठ परथी **चि**नो पाठ घणुंखरु शुद्ध करी शकायो

छे इन्डिया ऑफिस लायब्रेरी, लंडननी इ प्रतनो लेखनसवत १६०३ छे, अने आ प्रतनो लेखनसवत १६२३ छे. एटले थोडा वर्षना अतरे जेनी नकलो थयेली छे, एवी आ बन्ने प्रतोना भाषारूपमां सारा प्रमाणमा साम्य छे.

४. व. आ हस्तप्रत वडोदरा युनिवर्सिटी लायब्रेरीनी छे अने तेनो क्रमाक नं. १ छे. आ सचित्र प्रतमा १२० रगीन चित्रो छे. आ कृतिनी समीक्षित वाचनाना आ पहेला भागमा प्रसिद्ध थयेला सादा अने रंगीन चित्रो आ प्रतमाथी लीघेला छे अत्यार सुधीमा 'पंचतंत्र' ग्रन्थनी के प्राणीकथाओनी बीजी कोई जूनी सचित्र प्रत मळी नथी, ते जोता आ प्रत अति महत्त्वनी छे. तेमाथी जे छ रंगीन अने सात सादा चित्र आ कृतिमा प्रसिद्ध करवामा आव्या छे तेमनो परिचय आ विषयना तद्विद् डॉ. उमाकान्त शाहे आ ग्रन्थमा जुदा लेखरूपे आप्यो छे.

प्रतनुं माप १० ५" × ४ १" छे. प्रतना कुल पत्र १–१९१ छे. दरेक पृष्ठ पर सामान्यत अगियार पक्तिओ लखेली छे. दरेक पाननी डाबी अने जमणी बाजुओए १ २"नो हामियो पहोळी लाल लीटीथी पाडेलो छे, ज्यारे दरेक पानना मथाळे ८" अने नीचेना भागमा ७" जग्या छोडवामा आवेली छे. बन्ने बाजुना हासियामा अने दरेक पाननी वच्चे खाली राखेली जग्यामा लाल रंगनी वर्तुलाकार आकृतिओ आपेली छे. जमणी बाजुना हासियाना नीचला भागमा प्रतना पृष्ठाक नाखेला छे. आखी प्रत, एक ज हाथे जैन देवनागरी लिपिमा लखायेली छे. प्रतना लखाणमा 'ए' अने 'प', 'प' अने 'व' तेम ज 'त्र' अने 'त्त' वच्चे तफावत मालूम पडतो नथी.

प्रतनी पुष्पिका आ प्रमाणे छे :

इति पंचाख्यानं समाप्तं ॥छ॥ ग्रंथाग्रं ५५०० ॥छ॥ साह रायमल पठनार्थं देवजी लिपींतं ॥छ॥

प्रतमा रचनासंवत के लेखनसंवत आपेलो नथी, पण तेना तुलनाए अर्वाचीन भाषास्वरूप उपरथी ते वि, इ अने **भा–१** पछीना समयनी होय, जोके तेना चित्रोनी घाटीने आधारे ते स. १६२५ पहेलानी पण होय एम डॉ. उमाकान्त शाह गणे छे. आ प्रतनो उपयोग पाठान्तरो नोधवामा तेम ज तेनी विशिष्ट चित्रकलानो परिचय आपवा माटे कर्यो छे.

५. **भा–२.** आ हस्तप्रत, भाण्डारकर ओरियेन्टल रिसर्च इन्स्टिटयूट, पूनाना सरकारी ग्रन्थसग्रहमानी छे. तेनो क्रमाक नं. 424 of 1879-80 छे. तेना कुल पत्र १–२१० छे. प्रतनुं माप १०"× ४ ५" छे. तेना प्रथमना बे पृष्ठ पर नव पंक्तिओ अने पछीना दरेक पृष्ठ पर सामान्यत. दश पंक्तिओ रखेली छे. दरेक पृष्ठनी डाबी अने जमणी बाजुओए चेवडी काळी लीटीथी ८"नो हासियो पाडेलो छे, ज्यारे पृष्ठनी उपर नीचे ७" जग्या छोडेली छे.

आखी प्रत एकधारी जैन देवनागरी लिपिमा लखायेली छे. बधी प्रतोमा, **भा–१**ना अक्षर नाना छे ते एटले सुधी के, दरेक पृष्ठ पर २५ पंक्तिओ लखेली छे, ज्यारे सर्व प्रतोमा आ **भा–२** ना अक्षर मोटा छे अने तेथी दरेक पृष्ठ पर ओछी पंक्तिओ लखायेली छे, अने तेनी कुल पृष्ठसख्या २१० थाय छे.

प्रतनी पुष्पिका आ प्रमाणे छे.

इति पचाख्यानं समाप्त ॥ शुभ भवतु ॥ सवत १६३८ वर्षे वैशाख मासे तृतीया गुरुवारे[१] पर निमोटी ४.

पुष्पिकामा लेखनसवतनी पक्ति प्रतना लखाणथी जुदी शाही

---

१ मूळमा 'गुरुवावेरे' लख्यु छ.

अने जुदा अक्षरोमां लखायेली छे. एटले प्रतनी नकल खरेखर संवत १६३८मा थयेली छे के केम ते प्रश्न छे एमा बालावबोधनी भाषानुं सं. १६३८ आसपास होय ते करता ठीक ठीक अर्वाचीन स्वरूप जोता ए निर्देश पाछळथी कोईए उमेर्यो लागे छे 'प निमोटी ४'नो अर्थ अस्पष्ट छे.

आ प्रतनो उपयोग पाठान्तरो नोंधवामा कर्यो छे. च प्रत साथे तेनु घणु साम्य छे, पण च नुं भाषास्वरूप आ **भा–२** करता जूनु छे

उपर्युक्त प्रतो सिवाय, सने १९५०मा एक संशोधनप्रवास दरमियान चाणस्मा(उ गुजरात)ना जैन ग्रन्थभंडारमा आ बालावबोधनी एक हस्तप्रत अमारा जोवामा आवी हती. पण आ संपादनकार्य वखते ते मळी शकी नथी, तेथी तेनो उपयोग थई शक्यो नथी. ते उपरान, म. स. युनिवर्सिटी, वडोदराना गुजराती विभागने आशरे सत्तरमा शतकनी शरूआतमा लखायेली, आ कृतिनी एक प्रत (पृ २–१३२, प्रथम पत्र नथी) थोडा समय पहेला मळी छे. पण ते अरसामा पुस्तकनु छापकाम लगभग पूरु थयु होवाथी, तेनो उपयोग थई शक्यो नथी

संपादनपद्धति

आगळ जणाव्यु तेम, आ पाच प्रतो पैकी **वि** प्रतने मुख्य प्रत तरीके स्वीकारी आ कृतिनी समीक्षित वाचना तैयार करवामा आवी छे. बाकीनी चार **इ, भा–१, च, भा–२** प्रतोनो उपयोग पाठान्तरो नोंधवामा, **वि** प्रतना अस्पष्ट पाठने शुद्ध करवामा अने कृतिने सचित्र बनाववामा कर्यो छे कृतिमा आपेला चित्र **च** प्रतमाथी लीधेला छे, अने दरेक चित्रनी नीचे दर्शावेल हस्तप्रतना पत्रांक ते **च** प्रतना पत्रांक छे. मुख्य प्रतमाथी केटलेक ठेकाणे पाठ पडी गयेला छे, एवो पाठ **इ** अथवा **भा–१**माथी लई कौंसमा मूक्यो छे जे जे प्रतमाथी पडी गयेला पाठनी

पूर्ति करी छे ते प्रतोनो उल्लेख पाठान्तरोमा करवामा आव्यो छे. **वि** प्रतथी जुदा पडता पण **इ, भा-१, व** अने **भा-२**मा एकसरखा रूपमा मळता पाठनो उल्लेख **हप्रो.** संज्ञाथी दर्शाव्यो छे. **हप्रो.** एटले **वि** सिवायनी अन्य प्रतो. पाठान्तरोमा ज्या ज्या पंक्तिओ अने परिच्छेदोना पाठफेर नोंधायला छे तेमा, ज्या **व** अने **भा-२**नो पाठ दर्शाव्यो छे त्या **व**ना पाठ साथे कौंसमा मूकेलो पाठ **भा-२**नो छे. (उदाहरण तरीके जुओ पृ. २१०, २१५, २२१, २३१, २३४)

बालावबोधना मुख्य पाठमा वच्चे वच्चे मोटा कौंसमा आपेला अंग्रेजी अंक **वि** प्रतना पृष्ठांक छे, ज्यारे पाठान्तरोना विभागमा, मोटा कौंसमा मूकेला काळा बाळबोध अंक बालावबोधना मुद्रित पाठना पृष्ठांक छे. समग्र मुद्रित कृतिना बे भाग पाडेला छे पहेला भागमा पृ. १-१८४ सुधी बालावबोधना पहेला तंत्रनो पाठ छपायेलो छे, ज्यारे पृ. १८५-३६८ सुधी पाठान्तरो मुद्रित थयेला छे आ गद्यकृतिना विपुल पाठान्तरोनी नोंध मुख्य पाठनी नीचे आपवाने बदले सळंग अलग विभागमा आपवामा आवी छे. पाठान्तरोनो क्रमांक १थी शरू थई १०० सुधी जाय छे, अने १०० क्रमांक पछी नवेसर १थी क्रम शरू थाय छे आ क्रमनुं पुनरावर्तन थया करे छे कृतिनो कोई भाग के वार्ता पूरी थता, नवेसर शरू थता भाग के नवी वार्ताना पाठान्तरोनो क्रम नवेसर १थी शरू करवामा आव्यो छे.

हस्तप्रतमा संस्कृत श्लोकोनो क्रमांक आप्यो नथी, पण मुद्रित वाचनामा आखा तंत्रना सर्व श्लोकोनो सळंग क्रमांक आपवामा आव्यो छे. आ रीते आ कृतिना पहेला तंत्रमा ४५२ श्लोको छे. पुस्तकना आ पहेला भागमा, प्रथम तंत्र 'मित्रभेद'नो बालावबोध प्रसिद्ध करवामा आव्यो छे; तेमा 'कथामुख', 'सिंह अने बळद'नी मुख्य कथा,

તેમ જ ૧ થી ૨૯ ઉપકથાઓનો સમાવેશ થાય છે 'કથામુખ', 'મુખ્ય કથા' અને ઉપકથાઓના શીર્ષક મૂળ પ્રતોમાં ન જ હોય તેથી અહીં મોટા કૌંસમાં મૂકેલાં છે અને પ્રત્યેક ઉપકથાને ક્રમાંક આપેલો છે

સંસ્કૃત શ્લોકોના પાઠ શુદ્ધ કરવામાં, હાર્વર્ડ ઓરિયેન્ટલ સિરીઝમાં પ્રસિદ્ધ થયેલ ડૉ હર્ટેલ સંપાદિત પૂર્ણભદ્રના 'પંચતંત્ર'નો તેમ જ બોમ્બે સંસ્કૃત સિરીઝમાં પ્રસિદ્ધ થયેલ, ડૉ કિલ્હૉર્ન સંપાદિત, પશ્ચિમ ભારતીય પરંપરાને અનુસરનાર 'પંચતંત્ર'નો ઉપયોગ કર્યો છે કેટલાક શ્લોક બાલાવબોધકાર યશોધીરે પોતે ક્યાંકથી ઉમેરેલા છે

યશોધીર અને 'પંચાખ્યાન બાલાવબોધ'

'પંચતંત્ર'ના અનુવાદ, ભાવાનુવાદ અને રૂપાન્તરો દુનિયાની જુદી જુદી ભાષાઓમાં થયેલા છે[1] જૂની ગુજરાતીમાં જાણવામાં આવેલા ગદ્યાનુવાદ કે પદ્યાનુવાદોમાં આ યશોધીરકૃત 'પંચાખ્યાન બાલાવબોધ' સૌથી જૂની ઉપલબ્ધ ગદ્યકૃતિ છે આના સિવાય, જૂની ગુજરાતીમાં 'પંચતંત્ર'-વિષયક નીચે દર્શાવેલી કૃતિઓ જોવામાં આવી છે

અજ્ઞાત કર્તૃક ગદ્યરચના 'પંચાખ્યાનોદ્ધાર' (સત્તરમા શતકનો પૂર્વાર્ધ), રત્નસુન્દરકૃત પદ્યરચના 'પંચાખ્યાન ચતુષ્પદી' (વિ સ ૧૬૨૨), વચ્છરાજકૃત પદ્યરચના 'પંચાખ્યાન ચતુષ્પદી' (વિ સ ૧૬૪૮), મેઘવિજય ઉપાધ્યાય વિરચિત 'પંચાખ્યાનોદ્ધાર' (વિક્રમનો અઢારમો શતક), અજ્ઞાત કર્તૃક ગદ્યરચના 'પંચાખ્યાનવાર્તિક' (વિક્રમનો અઢારમો શતક), અજ્ઞાત કર્તૃક ગદ્યકૃતિ 'હિતોપદેશ પંચાખ્યાન' (વિક્રમનો અઢારમો શતક) અને અજ્ઞાત કવિકૃત 'પંચાખ્યાન રાસ' (વિક્રમનો અઢારમો શતક) આ કૃતિઓનો વિગતવાર

---

૧ જુઓ સાંડેસરા, (ડૉ) ભો જ—અનૂદિત 'પંચતંત્ર' (ગુજરાતી સાહિત્યપરિષદ, મુંબઈ, ૧૯૪૯) ઉપોદ્ઘાત પૃ ૧ ૪૨

परिचय में मारा 'पंचतंत्र' (गुजराती अनुवाद)ना उपोद्घातमां आप्यो छे.[1] ते उपरांत, जुदा जुदा ग्रन्थभंडारोमां, आ 'पंचाख्यान बालावबोध'नी अढारमा अने ओगणीसमा शतकमां लखायेली, गद्य अने पद्य रचनाओनी हस्तप्रतो ठीक प्रमाणमां मळे छे.

'पंचतंत्र'नी प्राचीन मौलिक पाठपरंपराओ पैकी जैन साधु पूर्णभद्रनी रचना (ई. स. ११९९)मां आ ग्रन्थनो 'पंचाख्यान' नामथी पहेली वार उल्लेख करायेलो छे. तेमनी कृतिनी पुष्पिकामां 'पंचाख्यान' नाम आ रीते मळे छे :

> एतत्समाप्तौ समाप्तं*पञ्चतन्त्रापरनामकं पञ्चाख्यानकं नीतिशास्त्रम् ।
> कथान्वितं सत्कविसूक्तयुक्तं श्रीविष्णुशर्मा नृपनीतिशास्त्रम् ।
> चकार येनेह परोपकारः स्वर्गाय जायेत बुधा वदन्ति ॥ १ ॥

जैन साहित्यपरंपरामां 'पंचतंत्र' करतां आ 'पंचाख्यान' नाम ज विशेष प्रचारमां रह्युं छे.

यशोधीरे पोतानी रचनाने 'पंचाख्यान बालावबोध' नाम आप्युं छे, अने कृतिना नामाभिधान वखते तेनी दृष्टिमां पूर्णभद्रे 'पंचतंत्र'ने 'पंचाख्यान' तरीके ओळखाव्युं छे ते हकीकत होवी जोईए. यशोधीरे तेनी कृतिनुं मंगलाचरण आ प्रमाणे आप्युं छे :

॥ द० ॥ श्रीगणेशाय नमः

> पंचाख्यानस्य शास्त्रस्य भाषेयं क्रियते शुभा ।
> यशोधीरेण विदुषा सर्वार्थस्य प्रकाशिका ॥ १ ॥

यशोधीरे मोटे भागे पूर्णभद्रना 'पंचतंत्र'नी परंपराने अनुसरी आ बालावबोधनी रचना करी छे. पश्चिम भारतीय 'पंचतंत्र' करतां

---

१. उपर्युक्त, पृ. ४३-६६, पृ. १२१-१२४

पूर्णभद्रे पोताना 'पंचतंत्र'नो घणो विस्तार कर्यो छे, अने ए विस्तृत वाचनानो आ बालावबोध छे, एम केटलाक श्लोकना पाठ अने वार्ताओ परथी जणाय छे. केटलाक संस्कृत श्लोको अने कथाओ पश्चिम भारतीय 'पंचतंत्र'मा नथी, जे पूर्णभद्रना 'पंचतंत्र' अने यशोधीरना तद्विषयक बालावबोधमा छे. पश्चिम भारतीय 'पंचतंत्र'ना प्रथम तंत्रमा २२, बीजा तंत्रमा ६, त्रीजामा ५, चोथाना १६ अने पांचमामा १४ कथाओ छे, पूर्णभद्रना 'पंचतंत्र'ना प्रथम तंत्रमा ३०, बीजामा ९, त्रीजामा १७, चोथामा ११ अने पाचमामा ११ कथाओ छे, ज्यारे यशोधीरकृत 'पंचाख्यान बालावबोध'ना प्रथम तत्रमा २९, बीजामा १०, त्रीजामा १६, चोथामा ११ अने पाचमा तंत्रमा ११ कथाओ छे. आम कथासख्यानी दृष्टिए यशोधीर मुख्यत्वे पूर्णभद्रने अनुसरे छे.

पूर्णभद्रना 'पंचतंत्र'मानी नीचे दर्शावेली वार्ताओ पूर्णभद्र सिवाय 'पचतंत्र'नी बीजी कोई परंपरामा मळती नथी[1]

'यज्ञदत्त ब्राह्मण, वाघ, वानर अने साप' (१-९),[2] 'हंस अने घुवड' (१-१२), 'सिंह अने सुथार' (१-१४), 'सिंह अने घेटु' (१-२०), 'राजा, मत्री अने नग्न श्रमण' (१-२२), 'सर्पने परणनारी कन्या' (१-२३), 'देवो पण मृत्यु साथे निरुपाय छे' (१-२४), 'जेवो संग तेवो रंग' (१-२९), 'उदरोए हाथीने छोडाव्यो' (२-८), 'काळो नाग अने कीडीओ' (३-५), 'नित्य एक दीनार आपतो सर्प' (३-६), 'सोनाना पींछा आपनार हंस' (३-७), 'पोतानी जातनुं बलिदान आपनार कपोत' (३-८), 'जेना जठरमां सर्प रहेतो हतो एवो राजकुमार' (३-११), 'सुवर्णनी विष्ठा

१ जुओ साडेसरा, (डॉ) भो ज –अनूदित, 'पंचतत्र,' पृ. ३९७-४२५

२ प्रथम अक तत्रनो अने बीजो अक कथानो क्रमांक दर्शावे छे

करनार पक्षी' (३-१४), 'सर्प उपर सवारी करनार देडक।' (३-१६), 'पुंश्चलीना पतिए वाळेलुं वेर' (३-१७), 'स्त्रीने वश थयेला नंद अने वररुचि' (४-६).

उपर्युक्त वार्ताओ यशोधीरना 'पंचाख्यान बालावबोध'मा पण मळे छे. एटले यशोधीरे मुख्यत्वे पूर्णभद्रना 'पंचाख्यान' परथी आ बालावबोधनी रचना करी छे, एम फलित थाय छे.

आ बालावबोधना रचनाकाळ विशे कोई नोंध नथी, पण इंडिया ओफिस लायब्रेरी, लंडननी आ कृतिनी इ हस्तप्रत (नं. S 3400 c)नो लेखनसवत १६०२ छे, अने आचार्य जिनविजयजीनी वि प्रतमा लेखन-सवत चोक्कस आपेलो नथी, पण अनुमाने ते वि. स. १६०० पहेलानी छे. एटले कृतिनी रचना, विक्रमना सोळमा शतकमा थई छे. सोळमा शतक करता ए जूनी नथी ए पण स्पष्ट छे.

कर्ता यशोधीर विशे कृतिमाथी कई जाणवा मळतु नथी हस्तप्रतोना मंगलाचरणमा तेनु नाम 'यशोधीर' छे, पण यशोधीरना एक चित्रनी समजूतीमा (वडोदरा युनिवर्सिटी लायब्रेरीनी सचित्र हस्तप्रत पृ 1-B) तेने 'पचाख्यान वार्त्तिककार यशोधर पंडित' कह्यो छे पूर्णभद्रना 'पचाख्यान' जेवी जैन रचना साथे निकटनो परिचय धरावनार ते कोई ब्राह्मण विद्वान हशे एवी कल्पना थाय छे. अनेक ब्राह्मण विद्वानो जैन साधुओने सम्कृतादिनु अध्ययन करावता ए परंपरा आज सुधी चालु छे एवी अध्यापनप्रवृत्ति अगे, विद्यार्थीओना उपयोग माटे, बीजा अनेक बालावबोधोनी जेम, आ बालावबोधनी पण रचना थई होय एम बने

यशोधीरना अगत जीवन विषे अथवा मारु-गुर्जर प्रदेशमा ए क्यानो वतनी हतो ए विषे कंई जाणवा मळतु नथी.

यशोवीरनो आ बालावबोध मूळ संस्कृत कृतिनो अक्षरशः अनुवाद नथी, पण तेनो भावानुवाद छे. बालावबोधकारे कथातंतु जाळवीने कुशळताथी, मूळनी कथाओनो संक्षेप कर्यो छे, अने पोते दृष्टि समक्ष राखेली पाठपरंपराने ए पूर्णपणे वफादार रह्यो छे.

चित्रपरिचय

लेखक : डॉ. उमाकान्त प्रेमानन्द शाह

यशोधीरकृत 'पंचाख्यान'नी सचित्र प्रत(संज्ञा च)माथी केटलाक चित्रो पसंद करी आ पुस्तकमा छाप्या छे. आमाना केटलाक त्रिरंगी अने केटलाक एकरंगी शाहीथी छापी रजू कर्यां छे. प्रस्तुत भागमा छपायेला 'पंचाख्यान'ना पहेला तंत्रमा मूळ सचित्र प्रतमा कुल ४७ चित्रो छे.

'पंचाख्यान'नी आ सचित्र प्रतिने अंते एनो लेखनकाळ आप्यो नथी, पण लिपि तेम ज भाषा आदि परथी आ प्रति विक्रम संवत १६५० के ते पछी लखाई होय एवुं अनुमान छे. तेथी तेनो समय ई. स. १६००–१६२५ आसपास कल्पी शकाय तेम छे. चित्रशैली आ अनुमानने पुष्ट करे छे, कारण के, ई. स. ना सोळमा सैकाना अंतभागमा अने सत्तरमा सैकानी शरूआतमा मूकी शकाय एवी शैलीना आ चित्रो छे.

जेने Western Indian Miniature Painting नामथी ओळखवामा आवे छे ए शैलीना ग्रन्थस्थ चित्रो प्राचीन जैन ताडपत्रीय अने कागळनी प्रतोमा तेम ज कापड उपरना पटोमा मळे छे. आ शैलीना चित्रोमा कालक्रमे अमुक फेरफार, स्थळ अने समय परत्वे होवा छता, आशरे ई. स. ना बारमा सैकाथी माडीने लगभग ई. स. ना सोळमा सैकाना मध्य भाग सुधीना समयमा मूकी शकाय एवा चित्रो ए परिपाटीमा मळे छे

राजस्थानी (अथवा राजपूत) चित्रकला तरीके ओळखावी शकाय अने उपर दर्शावेल पश्चिम भारतीय चित्रकला (Miniature Painting)थी जुदी पाडी शकाय एवी राजस्थानी कलम आशरे ई. स.

१५९० पहेला शरू थई नहोती एवो श्री कार्ल ख्डालावालानो मत छे आनो अर्थ एवो नथी के आ पहेला आवी बीजी चित्रशैलीओ (जेवी के, मुगल चित्रकला) नहोती अथवा गुजराती (पश्चिम भारतीय) चित्रकलाना स्थानिक तेम ज आनुषंगिक शैलीभेद नहोता वळी, आशरे ई स १४७५नी देवशाना पाडानी 'कल्पसूत्र'नी प्रख्यात प्रतमा तेमुरना वंशनी (तिमुरिद) चित्रकलानी असर पण मळे छे ज अर्थात् राजस्थाननी पोतानी आगवी अथवा विशिष्ट कलाशैली, आ समय पहेला विकसेली अद्यापि शोधाई नथी गुजराती अथवा पश्चिम भारतीय चित्रकलाना नामे ओळखाती ग्रन्थचित्रकलाना स्थानिक (देशपरत्वे, स्थळभेदे) नाना मोटा भेद (Provincial variants) पडता ई स १४३०ना माडुमा लखायेला 'कल्पसूत्र'मा के ई स १४६५ना जौनपुरमा लखायेला 'कल्पसूत्र'मा आवा भेद (Variants) मळे छे आ भेद केटलीक वार स्थानिक विशिष्ट वेशभूषारूप अने क्वचित् मुखाकृतिभेदे देखाय छे पण आ बधा भेद मुख्यत्वे मूळ गुजराती शैलीमाथी ज पोषायेला छे एटलु ज नहि पण ए शैलीना मुख्य मुख्य अंगो के एनी प्रणालिकाओने चालु राखी रहेला नमूनाओ ज हता एम उपलब्ध साधनो दर्शावे छे दाखला तरीके, गुजराती चित्रकलामा Profile face—मोंनी एक बाजुनो आलेख छे, परतु तेमा बीजी बाजुनी आख मुखरेखाथी बहार पडती (Projecting farther eye) जोवा मळे छे, ते पद्धति अने प्रणाली अनेक बाखराओमा पण सचवाई रहेली छे एटले फक्त अमुक स्थळ के देशना वस्त्रपरिधानमा फरक होवाथी, वेशभूषाना आ फरकने लीधे ए चित्रकला एकदम नवीन ज शैलीनी छे एम कही शकाय नहि

आ ग्रन्थचित्रकलाने गुजराती चित्रकला कहो, के पश्चिम भारतीय चित्रकला कहो, के जैन चित्रकला कहो, ए बहु महत्त्वनु नथी पण

जूनी भाषा अंगे जेम श्री. उमाशंकर जोशीए सूचन कर्युं हतुं तेम आ चित्रकलाने पण वधु स्पष्ट रीते ओळखाववी होय तो आपणे एने 'मारु-गुर्जर ग्रन्थचित्रकला' कही शकीए. ए कला बंगाल, बिहारना अने मोटा भागना नेपाली ग्रन्थोनां चित्रोनी पालशैलीना नामे ओळखाती कलाथी जुदी पडे छे.

पण ई. स. १५४०मां दिल्ही (योगिनीपुर)मां चित्रित दिगम्बर-ग्रन्थ 'महापुराण'नी प्रतिमां ते प्रदेशना पहेरवेश उपरांत आपणने, बहार आवती बीजी आंख (Projecting farther eye) जोवा मळती नथी, एटलुं ज नही पण गुजरात-राजस्थानना ग्रन्थोचित्रोमां मळती विशिष्ट प्रकारनी मुखकृतिओ पण मळे छे. छतां पण 'महापुराण'नां आ चित्रोना अभ्यासीओ सहेलाईथी समजी शकशे के, तेथी कोई विशिष्ट नवी शैलीनुं निर्माण थयुं नथी, पण मूळ गुजराती शैलीनुं आ एक रूपान्तर ज छे.

ई. स.ना पंदरमा के सोळमा सैकाना ग्रन्थचित्रोमां, गुजरात, राजस्थान, मालवा, दिल्ही अने जौनपुरनी प्रतोमा, छूटी छवाई ईरानी—(पर्शियन) असर बाद करता, ईरानी शैलीनी खास छाप के असर तरी आवती नथी. Deccanı painting (दक्षिणी चित्रकला)ने नामे जाणीती चित्रशैलीमा, खास करीने सोळमा सैकामा इरानी अने तुर्की असर स्पष्ट तरी आवे छे, तेथी ते पश्चिम भारतीय शैलीथी जुदी पडे छे.

ई. स. १४३९ना मांडुना 'कल्पसूत्र' (हाल नेशनल म्यूझियम, दिल्हीमां सुरक्षित)मा केटलीक प्रादेशिक (local, regional) विशिष्टताओ छे. आ विशिष्टताओ, छाती ढाकती ओढणीनी रजूआतमां देखाय छे. स्त्रीपात्रोनी मुखाकृति, आगळ पडती बीजी आंख अने

अणियाळी हडपची जेवा सामान्य तत्त्वो होवा छता आ शैली विशिष्ट प्रकारनी छे. गुजराती चित्रो करता आमां नारीनुं मस्तक वधारे चपटुं, मुख वधारे चोरसाकारनुं, अने आखो वधु लांबी छे. माडुना 'कल्पसूत्रो'ना चित्रोनी कलम वधु सूक्ष्म छे. आम, गुणनी दृष्टिए तेम ज रेखाङ्कन (draughtsmanship)नी दृष्टिए वधु सारी, आ प्रतमा पण इरानी (persian) असर नहिवत् छे. कोई पुरुषो जामा के वाघ पहेरेला मळता नथी. हजु गुजराती ग्रन्थचित्रोनी प्रणालिकागत वेशभूषा ज जोवा मळे छे. पण, 'कालककथा'ना चित्रोमा लगभग ई. स ना चौदमा सैकाना मध्यभागथी, शाहीराजानी आकृतिओ लांबा जामावाळी मळे छे, अने आ शाहीओनी मुखाकृति मुगलो जेवी (Mongolian) बतावी छे आमा आगळ पडती बीजी आम्व पण घणुंखरुं देखाती नथी. आ बाबतमा इरानी असर देखीती छे. तेम ज केटलीक वखत गुचळिया (Curly) अने छंटकाव कर्यो होय एवी शैलीए दोरेला वृक्षो (Spray-like trees) जेवी केटलीक असरो अने देवशाना पाडाना 'कल्पसूत्र'ना हासिया (Borders) बाद करता गुजराती ग्रन्थचित्रोमा इरानी असर आ समय सुधी मळती नथी एटले के, इरानी असरोमाथी गुजराती ग्रन्थचित्रकलानुं मूळभूत माळखु बदलाई विशिष्ट चित्रशैली ऊभी थई नथी. पण सोळमा सैकाना अन्तभागथी अने सत्तरमा सैकाथी आ जूनी गुजराती शैली पर मुगल शैलीनी घेरी असर पडवाथी ए जूनी गुजराती शैली लुप्तप्राय थई जाय छे. आ संक्रान्ति अदाजे ई स १५७५ थी १६२५ (= विक्रम सवत १६३१ थी १६८१) सुधीमा थई लागे छे. राजकीय दृष्टिए आ समयमा मोगलोनु वर्चस्व आ प्रदेश पर स्थपाई चूक्यु हतु अने तेथी तेमनी असर वधी.

ई. स. १५४०नी दिगम्बर 'महापुराण'नी चित्रित प्रत तेम ज लौर-चंदा, चौरपंचाशिका वगेरेनी एनी जेम चघती मोगल असरवाळी

प्रतोनी विगतवार चर्चा करी, श्री कार्ल खंडालावालाए बताव्युं छे के, आ पोथीओ, खास करीने 'महापुराण'नी पोथी हजी मूळभूत रीते गुजराती चित्रशैलीनी रहे छे. पण पछीथी, तेओ कहे छे तेम, ई. स. १५८३नी 'संग्रहणी सूत्र'नी प्रतमां, ई. स. १५९०नी वडोदरा म्यूझियमनी 'उत्तराध्ययन सूत्र'नी प्रतमा, ई. स. १५९८ आसपासनां 'भागवतपुराण'ना चित्रोमां, आम उत्तरोत्तर मुगल असर स्पष्ट वधती जाय छे. अने मुगल चाकदार जामा, अटपटी अकबरयुगनी पाघडी वगेरे देखा दे छे अने आगळ पडती बीजी आंख (Projecting farther eye) अदृश्य थाय छे. दिल्ही जैन भंडारनी ई. स. १६०१नी 'संग्रहणी सूत्र'नी प्रतमां चाकदार तेम ज घेरदार जामा नजरे पडे छे, अने अटपटी पाघडी पण छे. श्री खंडालावालाना मते मूळ गुजराती (मारु गुर्जर) चित्रशैली पर मुगल चित्रकलानी जोरदार असर नीचे राजस्थानी चित्रकलानो जन्म थाय छे. आम, ई. स. १५८३ अथवा तेथी एकाद बे दायका पहेला आ शरूआत मानी शकाय.

राजस्थानी चित्रकलाना प्रारंभनुं एक अति अगत्यनुं केन्द्र ते सत्तरमा सैकानुं मेवाड. सत्तरमा सैकानी मेवाडी चित्रकला आ दृष्टिए महत्त्वनी छे. पण राजस्थानी चित्रकलानो आ उद्भव अने मारु गुर्जर-माथी राजस्थानी कलानी संक्रान्ति ए कंई मेवाड पूरता मर्यादित नथी. उत्तर गुजरात, मारवाड अने मेवाडमाथी आ जातना चित्रो मळ्या छे.

हवे आटली प्रास्ताविक चर्चा पछी आपणे 'पंचाख्यान'ना चित्रो जोईए.

पहेलुं तो आ चित्रोमा मुगल असर भाग्ये ज—नहिवत्—नजरे पडे छे. चाकदार के घेरदार जामा के मुगल पाघडी वगेरे कंई ज नथी. वेशभूषा मोटे भागे गुर्जर अथवा मारु-गुर्जर चित्रशैली (जेने Western

Indian Miniature Painting कहे छे)ने मळती, तेमांथी ज उतरी आवेली छे. हस्तप्रतना पृष्ठ 1-B परनुं गणपति, सरस्वती अने यशोधर पंडितनी आकृतिवाळुं चित्र, जे अहीं चित्र १ (रंगीन चित्र) तरीके रजू थयुं छे ते जोतां आ वात तद्दन स्पष्ट थशे.

मुखाकृतिओमां लांबां अणियाळां नाक, कंईक अणियाळी हडपची अने चोरस (Squarish) मुखाकृति जोवा मळे छे. पण एक बाजु (Profile) दर्शावता मुखोमा, आगळ पडती बीजी आंख तो अदृश्य ज थाय छे.

आ पोथी मुगल असरथी लगभग मुक्त, अने ई. स. १५८३ ('संग्रहणी सूत्र 'नी चित्रित प्रतनो समय; ए प्रतनी चर्चा उपर थई गई छे.) पहेलांनी होवी जोईए; एटले के, वि. सं. १६३९ (ई. स. १५८३) पहेलानी होवी जोईए. 'संग्रहणी सूत्र 'ना एकबे दसका पहेलां आ असर शरू थई होय एम बनी शके. तो आ प्रत वि. स. १६२५ पहेलांनी पण होई शके.

आमां आंखो कंईक मोटी अने लंबगोळ छे, गुजराती शैली जेवी बधु लांबी नथी अने तेथी कंईक पहोळी पण छे जे भारत कलाभवनना 'मृगावतीनी कथा 'नां चित्रो, दिगम्बर 'महापुराण 'नां चित्रो आदिने मळती आवे छे. आ जोतां आ चित्रोने अंदाजे ई. स. १५५० थी १५७० अथवा वि. सं. १६०० थी १६२५ वच्चेना समयमां थयेलां गणीए तो युक्तिसगत गणाशे.

चित्रोनुं संक्षिप्त विवरण

चित्र १; मुद्रित पृष्ठांक २ सामे—आ चित्र प्रतनी शरूआतमा पृष्ठ 1-B उपर छे. आखा पृष्ठ पर चार खानां पाडवामा आव्यां छे. पहेला खानामां, चतुर्भुज ऊभा नृत्तगणपति मूषक वाहन

साथे छे गणपतिना शरीरनो वर्ण पीळो, माथे मुकुट अने हाथे कडा छे बे बाजु हाथमा के अकमा बे नानी आकृतिओ छे जे सिद्धि बुद्धि होई शके त्रीजा खानामा चतुर्भुज, सरस्वती, तेमना उपला बे हाथमा पुस्तक तथा कमळ, नीचेना जमणा हाथमा कमडलु अने डाबा हाथमा वीणा पीठ उपर ललितासने बेठेला देवीनी बाजुमा हसवाहन छे शरीरनो वर्ण लालाश पडतो श्वेत माथे मुकुट, कानमा कुडल, हाथे ककण वक्षमा चोळी, दुपट्टो तेम ज नीचे पहेरेली साडी (अथवा लहेरिया भातनो चणियो)

चोथा खानामा 'पचाख्यानवार्त्तिककार यशोधर पडितरूप' चीतयानु चित्र उपरनु मथाळु दर्शावे छे पीतवर्ण, जनोई पहेरेला पडिते दाढी राखी छे अने माथा पाछळ मोटी चोटली बाधी छे शरीर उपर उत्तरीय देखातु नथी, पण पाटली वाळीने लाल छाटनु धोतियु पहेर्यु छे आग्रा धोतिया पर आ भात छे सामे पुस्तक मूकवानी घोडी उपर 'पचाख्यान'नु पुस्तक छे तेना उपर पुष्प आदि मूकी पूजा करेली छे

बीजा खानामा ग्रन्थनो प्रारभ छे—"ॐ नम श्रीगणपतये ॥ पचाख्यानस्य शास्त्रस्य भाषेय क्रियते शुभा " एम शरू थाय छे प्रत्येक चित्रनी पृष्ठभूमि लाल, जेने ईंटोरी लाल कहे छे तेवी छे

चित्र २, मुद्रित पृष्ठांक ३ सामे—आ चित्र हस्तप्रतना पृष्ठाक 2 A उपर छे आ चित्र मूळ रगोमा नथी छाप्यु आ चित्र पण प्रतिना आखा पान जेटलु लाबु छे अने एमा दोरेली आकृतिओनी पिछाण, मथाळाना भागमा तेमना नाम लखी बतावी छे ते चित्रनी जमणी बाजुथी वाचता नीचेना क्रमे छे—" मनुऋषि ४, बृहस्पति० ५, शुक्राचार्य० ६, पराशर ऋषि ७, वेदव्यास ८, राजा चाणक्य ० " पछी चित्रनी वचमा डाबी बाजु ' अनेरड पडितरूप "

आम मनुऋषिने चोथी आकृति गणाववाथी एम लागे छे के, आगला पृष्ठमानी त्रण आकृतिवाळा चित्र अने आ चित्रने एकमेकथी सयुक्त अथवा सळंग जेवा गणवाना छे. मनु तथा शुक्राचार्यने दाढी-वाळा बनाव्या छे, ज्यारे बृहस्पति वगेरेने दाढी नथी. मनुथी माडी वेदव्यास सुधी दरेकने मस्तके जटा छे. बृहस्पतिना मस्तके वाळ जुदी रीते गूंचळाथी बताव्या छे, तेथी कदाच तेमना मस्तके जटा ना पण होय. आ आकृतिओमाथी केटलाकनी धोती उपर कमरबंधरूपे बाधेल वस्त्रनी गाठ तथा लटकता बे छेडा ध्यान खेंचे छे.

'राजा चाणक्य' ए शब्दो कोई अन्य व्यक्तिए पाछळथी लख्या जणाय छे, केम के, ते 'मनुऋषि' वगेरे लखाणथी जुदा पडे छे. वळी छत्र नीचे, बे हाथे नमस्कार करीने बेठेली आकृति वास्तविक रीते राजानी नहि, पण कोई देवनी होवा सभव छे, केम के, ए आकृतिने बेने बदले चार हाथ छे. छत्रनी पाछळ एक नानी चामरधरनी आकृति छे अने नीचेना भागमा 'अनेरइ पंडितरूप' ए लखाण नीचे ऊभेली आकृति छत्रधरनी छे, एणे एक हाथे छत्रनो दंड पकडेलो छे.

फक्त पराशरऋषि सिवायनी बधी आकृतिओना शरीरनो वर्ण पीत छे, ज्यारे पराशर मुनिनो वर्ण नील चीतर्यो छे. जुदी जुदी धोतीमा घेरो लीलो, आछो गुलाबी अने नीलो रंग वापरवामा आव्यो छे. चतुर्भुज देवनी मूछोनो घाट ई. स. १५९१ना वडोदरा म्यूझियममाना 'उत्तराध्ययन सूत्र'मांनी केटलीक मूछो साथे मळतो आवे छे. 'उत्तराध्ययन सूत्र'मा वेशभूषामा मुगल असर वधारे छे, जे 'पंचाख्यान'ना चित्रोमा घणी ओछी छे.

चित्र ६; मुद्रित पृष्ठांक ५ सामे—आ चित्र हस्तप्रतना पृष्ठाक 3-A पर छे. आ चित्र मूळ रंगोमा छापेलुं छे. लाल पृष्ठभूमिका

पर पीतवर्णवाळी आकृतिओवाळुं आ चित्र सुंदर रेखांकनवाळुं होई, नोंधपात्र छे. प्रत्येक आकृति उपर चित्रना मथाळे तेनुं नाम आप्युं छे जे जमणी बाजुथी अनुक्रमे आ प्रमाणे छे—"एक बहुशक्ति, बीजो उग्रशक्ति, त्रीजो अनेकशक्ति, राजा अमरशक्ति, प्रधाननाम सुमती ॥ छ ॥ ब्राह्मण विष्णुशर्मा ॥ छ ॥".

सिंहासन उपर, छत्र नीचे बेठेला राजानी सामे प्रधान सुमति तेम ज ब्राह्मण विष्णुशर्मा बेठेला छे, ज्यारे राजानी पाछळ तेना त्रण मूर्ख राजपुत्रो ऊभा छे, तेओए बे हाथ नमस्कारमुद्राए जोडेला नथी, पण मूठियो वाळी, फक्त अनामिका ऊंची राखी, कोई विचित्र रीते ऊंचा करी राख्या छे. आगला चित्रमां जेनो निर्देश कर्यो छे ते धोती उपर लांबा लटकता छेडावाळी गांठथी बांधेलो कमरबंध जेवो पटको खास ध्यान खेंचे छे, केम के, एना बे छेडा वधारे पडता मोटा अने लांबा दोरवामां आव्या छे.

आ चित्रनी कारीगरी जोता तेम ज सरस्वती, गणेश अने यशोधरवाळा चित्र नं. १ने जोतां एम ज छाप पडे छे के, आ चित्रो गुजराती अथवा पश्चिम भारतीय (मारु-गुर्जर) ग्रन्थचित्रकलाना नमूना छे. तेमां पण, एमनी शैली जोता, ए माळवा, दिल्ही के जौनपुरना नहि पण गुजरात-राजस्थानमां, संभवतः गुजरातमा ज चितरायेलां छे. संभव छे के ए वि. सं. १६२५ करतां वि. सं. १६००नी वधारे नजीक होय.

चित्र ४; मुद्रित पृष्ठांक ७ सामे—आ चित्र हस्तप्रतना पृष्ठांक 3-B पर छे. एक बाजुए नाना कोठामां ग्रन्थनुं लखाण बाद करतां, बाकीनुं आखुं पानुं आ चित्रे रोकेलुं छे. कलानी दृष्टिए आ चित्र पण सूक्ष्म अने सुघड रेखांकननो नमूनो छे अने गुण (Quality)नी दृष्टिए ऊंची कोटीनुं चित्र छे. खास करीने गायनी आकृति खूब

वास्तविक लागे एवी छे; आगलो पग ऊंचो करीने ऊभेली सफेद गाय सहेज भयभीत दशा दर्शावे छे. चित्रमां उपर लखेलां मथाळां प्रमाणे, "राजा, पंडित, गाइ ठाली' (गाय ठाली), राजानु मुर्ख पुत्र" (कुल त्रण पुत्र छे)नी आकृतिओ छे. पंडित एटले विष्णुशर्मा पंडित लेवाना छे, नहि के यशोधर. गायनी नीचे बकरीनी आकृति छे, पण ते गायनी माफक 'ठाली' अथवा वंध्य समजवी जोईए.

राजा अने पंडित जे आसन अथवा पाट उपर बेठा छे तेनी वेल-भात जूनां गुजराती चित्रोनी याद आपे छे. गायनो रंग सुंदर सफेद छे. राजा वगेरेनी आकृति पीतवर्ण छे. लगभग तमाम चित्रोनी पृष्ठभूमि ईंटोना जेवा लाल रंगनी छे. अहीं छपायेली रंगीन प्लेटमां, राजा अने पंडित वगेरेना अधोवस्त्रो वधारे पडता घेरां भूरा, लीलां जेवां छपायां छे, पण मूळ रंगो आथी आछा अने जरा जुदा पडता छे.

चित्र ५; मुद्रित पृष्ठांक १० सामे—आ चित्र (मूळ चित्रनुं कद छापेला कद जेटलुं—३·८" × ३·२") प्रतना पृष्ठ 7-B पर छे. आ चित्र पंडित अने वर्धमान वाणियानुं छे. ऊंचा आसने पंडित बेठा छे, माथे जटा छे; दाढी, मूछ, कपालमां ऊर्ध्व तिलक अने अंग पर जनोई छे. चित्रने ओळखाववुं लखाण, मथाळा उपर प्रतिना कोरा भागमां, पाननी धारो थोडी कपाई गई होवाथी पूरुं वंचातुं नथी, पण छेल्ला थोडा अक्षरो आ प्रमाणे छे—" ....ब्राह्मण शरणो; ब्राह्मण डाहु; माहे वात करि वाणिउ आयामण छइ ॥ छ ॥".

मूळ कथामां (मुद्रित पृष्ठ ९ अने ११). 'पंडित कहेइं,'

१. 'किं तया क्रियते धेन्वा या न सूते न दुग्धदा'। जे गाय वीआय नहि तेम दूध आपे नहि ते शा कामनी? ए आशयनुं सुभाषित मूळमां छे. 'ठाली' एटले वंध्या. आ शब्द गाय-भेंस माटे (तेम क्वचित स्त्री माटे पण) खास करीने उत्तर गुजरातमां प्रचलित छे.

पडित कहिड' एम बे वार आवे छे, एटले कथालेखकने वर्धमान वणिक अने तेना अध्यापक कोई पडित वच्चेनो सवाद उद्दिष्ट छे एम कही शकाय तेनु आ चित्र छे

चित्र ६; मुद्रित पृष्ठांक ११ सामे—आ चित्र (मूळ चित्रनु कद छापेला कद जेटलु—२ ८"×३ २") हस्तप्रतना पृष्ठ 39 B पर आवेलु छे वार्ताना क्रममा अने चित्रना क्रममा आ चित्र, पुस्तकना हवे पछी प्रसिद्ध थनार भागमा आवे छे, पण अहीं जे क्रममा चित्रो छपाया छे ते क्रममा तेमनी चर्चा करी छे

आ चित्र 'बगला अने करचला'नी वातमाना एक प्रसगनु छे चित्रने मथाळे नोंधवामा आव्यु छे के, "बगनइ कलकडि मार्यो अनि भक्ष कर्या थको" चित्रमा बगलाने माछलु पकडतो, सरोवरने काठे ऊभेलो बताव्यो छे, एटले माछलाने मारी बगलो तेने भक्ष करी गयो, एवु चित्रनु सूचन होई शके पण मथाळाना लखाण साथे चित्र बराबर बंधबेसतु नथी गुणनी दृष्टिए आ चित्र खास नोंधपात्र नथी

चित्र ७; मुद्रित पृष्ठांक १४ सामे—आ चित्र (मूळ चित्रना कद जेटलु छापेलु कद—४ ४"×२ ७") हस्तप्रतना पृष्ठ 10 A पर आवेलु छे 'सिंह अने बळद'नी मुख्य कथामानु आ चित्र रगीन छाप्यु छे सजीवक बळदने पडतो मूकी, बीजा बळदने गाडी जोडी चालता थयेला वर्धमान वाणियानु आ चित्र छे चित्रने मथाळे लख्यु छे— "मृग केडा सिंह आवइ छइ, एक नगर ठामि जम वाहन चालेइ ताहा कोइक पाट मूकइ वहि" हवे आ चित्रमा वास्तविक रीते एक बळद जोडेला गाडा पर वणिक पोते पाट अथवा कपाट जेवु काईक मूकतो देखाडेल छे, पण मूळ कथानकमा एवु कई नथी ते वणिकनी पाछळ एक मृग अने तेनी पाछळ वाघ, सिंह आदि वन्य पशु चीतरेला

छे, जोके सिंहनी आकृति वास्तविक नथी. आ जातनुं चित्रामण शीर्षकमा लख्या प्रमाणे ' मृग केडा सिंह आनइ छइ ' एने अनुरूप छे, पण कथानक साथे बराबर बंधबेसतुं न गणाय.

आम, चित्र नं. ६, ७ अने ८ना चित्रो अने तेमना शीर्षको जोता समजाशे के, ' पंचाख्यान 'ना पाठ साथे तेमनो पूरो सुमेळ नथी, एटले आवा दाखलाओ परथी एम अनुमान करवुं वाजबी गणाशे के, आ चित्रकारनी सामे कोई चित्रित ' पंचाख्यान 'नी जूनी आदर्श प्रति हती, अने तेना चित्रो तेम ज शीर्षको, आ चित्रोना आदर्शरूपे चित्रकारे गण्या होय. एटले ' पंचाख्यान 'ना चित्रोनी प्रणालिका उपलब्ध एकमात्र सचित्र प्रति करता सहेजे पचीस पचास वर्ष जूनी होय तो नवाई नहि वळी, शीर्षको अने चित्रोनो उपलब्ध कथापाठ साथे मेळ न खाय एवा सजोगोमा ' पंचाख्यान 'ना चित्रो अने कथापाठनो मेळ खाती बीजी कोई जूनी प्रति होवानुं अनुमान करवुं के केम ए प्रश्न विचार मागी ले छे.

चित्र ८; मुद्रित पृष्ठांक १४ सामे—आ चित्र (मूळ चित्रना कद जेटलु छापेलु ३ ४" × ३ ३") प्रतना पृष्ठांक 116 A पर छे. आ चित्र बीजा तंत्रनी सातमी वार्ता—' प्रासत्यमर्थना पराक्रम 'माथी लीधेलुं छे, जे वार्ता हवे पछीना भागमा छपाशे. पण, आ ' पचाख्यान 'नी चित्रशैलीनो अहीं स्पष्ट ख्याल आपवा माटे अमुद्रित भागमाथी बे चित्रो आ ग्रन्थमा छाप्या छे.

आ चित्रनु शीर्षक आ प्रमाणे छे—" राजानी पुत्री, प्रासत्यमर्थ वर ए नाम ". चित्रमा पाथरणा पर बेठेली राजपुत्री सामे प्रासत्यमर्थने ऊभेलो दर्शाव्यो छे, अने बन्ने जणने कंईक वार्तालाप करता दर्शाव्या छे. राजपुत्री तथा प्रासत्यमर्थनो पीत वर्ण छे. बन्ने जणनी मुखाकृतिओ

एक ज बाजु (Profile) बतावे छे, अने मुखाकृतिरेखानी बहार जती बीजी आख देखाती नथी प्रातत्यमर्थे कच्छो मारेलुं धोतियुं पहेर्युं लागे छे. वेशभूषा अने अलंकारनी दृष्टिए आ चित्र प्राचीन पश्चिम भारतीय अथवा मारुगुर्जर शैलीने अनुसरे छे. राजकुंवरीना दुपट्टाना बे छेडा हवामा बाजुए लटकता अने ऊडता बताव्या छे.

चित्र ९; मुद्रित पृष्ठांक ८८ सामे—आ चित्र हस्तप्रतना पृष्ठ 44 B पर आवेलुं छे. आ चित्र 'पंचाख्यान'ना प्रथम तंत्रनी वार्ता नं. ८—'वणकर अने राजकन्या'माथी लीधुं छे. चित्रना शीर्षक तरीके आ प्रमाणे लखाण छे—"कोली विष्णुनइ रूपे करी राजपुत्रीनइ भोगवइ. गुरुड एकनु रूप सुत्तार भाल्तो ॥छ॥." चित्रमा काष्ठना गरुडनी मोटी आकृति पर चतुर्भुज विष्णुरूपे कोली बेठो छे अने तेनी सामे तेनो सुतार मित्र हाथमा फरशी लईने पोते घडेला गरुडने जोई रह्यो छे गरुडना शरीरनो वर्ण सफेद गणी, तेमा कोई रंग पूर्यो नथी, पण तेनी पाखो पीळी माटोडी रंगनी चीतरी छे, ज्यारे कोलीने श्यामवर्ण बताववा माटे घेरो नील रंग वापर्यो छे. कोली तेम ज गरुडना कपाळे तिलक छे. सुतारनो पीत वर्ण छे अने तेणे बारिक वणाटनु धोतियु पहेर्युं छे. आखा चित्रनी पृष्ठभूमि बीजा चित्रोनी माफक ईंटना जेवा लाल रंगनी छे, अने बधी आकृतिओना नाक तीणा, हडपची अणियाळी अने मुखाकृति चोरस छे

चित्र १०; मुद्रित पृष्ठांक ८९ सामे—आ चित्र (छापेलु चित्र मूळना कद जेटलु ५ ३" × ३ ५") हस्तप्रत पृष्ठ 50 A पर आवेलु छे, अने 'पचाख्यान'ना प्रथम तंत्रनी वार्ता न. ८माथी लीधेलु छे. आ चित्र प्रतना डाबा अर्धा भागमा चीतरेलु होई, चित्रनु वस्तु डाबा हासियानी लीटीनी बहार विस्तरेलु छे. चित्रनी पश्चाद्भूमो

लाल रंग हासियानी लीटीने दबावी दे छे. तेथी प्रत आखी पहेलां लखाई अने चित्रोनी जगा पहेलीथी नकी करी खाली राखवामां आवी हती, एम स्पष्ट थाय छे. आखी प्रत लखाया पछी चित्रो दोरवामा आव्या छे.

आ चित्रनुं मथालुं आ प्रमाणे छे—"राजानूं स्वरूप; पुत्री भर्त्तार आगली कहि छइ, 'तह्मो विष्णु छु, तह्मो पर[ब्रह्म] विष्णु छइ तेहनइ भाजु. तिवार पछी विष्णु गुरुडे चडी आवीनइ परसैन्य मार्युं ॥छ॥"

चित्रमा बे विभाग पाडी, एक जमणी तरफना विभागमां राजपुत्रीने विष्णुस्वरूप कोली साथे वात करती बतावी छे. एक ज आसन पर बन्ने बेठा छे. राजपुत्रीना शरीरनो वर्ण पीत छे. तेनी कंचुकी नीलवर्णी छे अने नीचेनुं वस्त्र लीला रंगनुं छे. ते चित्रमा चोरणा अथवा लेंघा जेवुं होवानी शंका जाय, पण संभव छे के ए कच्छ बांधी पहेरेलो चणियो के अधोवस्त्र होय.

चित्रना बीजा भागमा, गरुड पर आरूढ थयेला विष्णुने परसैन्यनो संहार करता दर्शाव्या छे. अहीं पण गरुडे कच्छयुक्त धोतियुं पहेर्युं होय एवुं लागे छे. आ चित्रमा उपरना भागनी पश्चाद्भूना तेम ज बीजा केटलाक रंग ऊडी गया छे. राजकुमारीनुं एक बाजुनुं मुख (Profile) देखाडयुं छे. पण तेमा नाकना भाग साथे मुखरेखा पृष्ठभूमिना लाल रंगथी दबाई गई होय एवुं लागे छे. राजकुमारीनुं नाक अत्यन्त चींवुं लागे छे.

चित्र ११; मुद्रित पृष्ठांक १६२ सामे—आ चित्र हस्तप्रतना पृष्ठ 84 B पर छे लगभग अहीं छापेला कद जेटलुं (५.२"× २.८") लंबचोरस आ चित्र पण बे भागमा वहेंचायेलुं समजवानुं छे. "पंचाख्यान"नी 'धर्मबुद्धि अने पापबुद्धि' ए नामनी वार्ता

न. २५माना आ चित्रने मथाळे हासियामा आ प्रमाणे लखेलु छे "एक स्थान विपि वाणियाना पुत्र बिहि मित्र एह्वा, एक धर्मबुद्धि, बीजो अधर्मबुद्धि, ते बिहि धन ऊपार्जेवा परदेशि ग्या "

आम, मथाळा प्रमाणे चित्रना बे विभाग छे पहेला विभागमा एक मडप नीचे धर्मबुद्धि अने अधर्मबुद्धि (पापबुद्धि) नामना बे मित्रो वातो करता बताव्या छे बीजा विभागमा आ गोष्ठिने अन्ते लीधेला निर्णय मुजब बन्ने मित्रोने परदेश जता चालता दर्शावेला छे बन्नेना कपाळे तिलक छे, तेमना शरीरनो वर्ण पीळो छे, अने चोरणा जेवी देखाती भातीगळ लीला तेम ज भूरा रगनी धोती पहेरी होय एम लागे छे आ वस्त्रो लेंघा अथवा पायजामा के सुरवाल जेवा देखाता नथी सभव छे के, कच्छ मारेला धोतिया होय.

चित्र १२; मुद्रित पृष्ठांक १६३ सामे—आ चित्र हस्त प्रतना पृष्ठ 101 A पर आवेलु छे, अने प्रतना अर्धाथी वधु पृष्ठने आवरी लेतु आ चित्र अहीं छापेला कद प्रमाणे मूळमा (५ १"×३.७") छे आ चित्र 'चकलीना सहायको' ए नामनी बीजा तत्रनी वार्ता न २माथी लीधेलु छे, जे वार्ता हवे पछीना भागमा छपाशे चित्रने मथाळे आ प्रमाणे नोंध छे—"हाथी एक एतले मिली मारयु हाथीइ आवी वृक्ष एक हलाव्यो तिवारे सूतारीइ आपि काटी, माषीइ आमीग मूंक्या, ते डेडको शब्द करया पछेइ हाथी तरस्यु अध कूइ पड्यो ॥ छ॥" चित्रना मथाळा परथी चित्रनु वस्तु स्पष्ट थाय छे सुतारिया पखीए हाथीनी आख फोडी लाबी चाचवाळु आ पखी हाथी पर बेसाडेलु छे झाड पासे ऊडती माखीनु कद घणु मोटु बताव्यु छे अने झाडना मूळ पासे चीतरेला देडकानु रूप पण वास्तविक नथी बीजी बाजु, अही चीतरेलु झाड राजस्थानी कलमनी याद आपतु अने प्राचीन गुर्जरशैली तेम ज ते

पछीनी कलमो वच्चेना संक्रान्तिकाळनुं लागे छे. आ वस्तु स्पष्ट करवा माटे आ चित्रने बीजा विभागने बदले ग्रन्थना आ विभागमां स्थान आप्युं छे. ईंटोरी रंगनी पृष्ठभूमि पर चीतरेल आ वृक्ष सुंदर छे. एनुं थड तथा डाळीओ पीळा रंगनां अने पांदडा लीला रंगनां छे. पशुपंखीनी आकृतिओ दोरवामां चित्रकार वास्तविकताने वफादार रही शक्यो नथी. ते हकीकत, आ भागमां रजू करेलां अन्य चित्रो परथी पण समजाशे. छता संयोजननी दृष्टिए, आ चित्र काढी नाखवा जेवुं नथी.

चित्र १३; मुद्रित पृष्ठांक १७३ सामे—आ चित्र (चित्रनुं छापेलुं कद मूळना जेटलुं—३·८"×३·२") हस्तप्रतना पृष्ठांक 91-A पर छे. 'राजा अने सूडाना बे पुत्रो' ए नामनी वार्ता नं. २८मांथी आ चित्र लीधुं छे. मथाळे, 'ऋषिश्वरनी आश्रमि राजा छौ तां आव्यो; तिहां सूडो एक छइ तेह प्राणि बोल्यो; ऋषिश्वरे, राजा आयो, घणू मान दीधू॥" ए प्रमाणे नोंध छे. नोंध जोतां लागे छे के आ जातनी नोंध जेमां वाक्यरचना शिथिल छे ते कदाच चित्रकारनी पोतानी नोंध होय. चित्रमा पोतानी झूंपडी अथवा कुटिर पासे ऋषि बेठा छे, तेमना एक हाथ उपर तेमणे उछेरेलो सूडानो पुत्र छे; सामे राजा विनयपूर्वक बेठो छे. चित्रमा, मथाळाना भागमां जे रीते आकाश-रेखा (Sky-line) बतावी छे ते नोंधपात्र छे.

नि

× मनववावस्पतयेअस्त्र. [illegible]एगसरायससुतायानाणक्या न्नायवि

एर्पण॥श्रीगणेशायनमः॥पंचाख्यानस्यशास्त्रस्य।राष्येयंक्रियते
सुता।यत्राधारणविडषा।सर्वार्थस्यप्रकाशिका।२।मनविविडय
नःमास्तुनयशास्त्रकरतेभ्यः२यथकर्त्ताकिहिस्यै।मनुतनि।इद
स्पति।शुक्रति।परासरस्पने व्यासद्वैपायनव्यासति।चाणक्यने
श्रनर्षश्रति।राजेशास्त्रनाकर्त्ता।तिहनिनमस्कारकरू छै।सकल
यशास्त्रसारजगतिमम्।लोक्यविष्णुशर्मणे।३।वि विष्णुशर्मा
एदवइनामिब्राह्मण।तेएमसारमाहिसघला। शास्त्र
नाअर्थानिजाइनिश।मोटपांचतंत्रकहीतेआख्या। नां।तणि
करानिउत्तमजशास्त्रातइकरातां हेउयाया।तिशास्त्र कहीएछै।
दक्षणादशमध्येमहिलारोप्यऐह्निनामिनगरछै।तिहांसकलअ
र्थनाकल्पवृक्ष।मोटोजराजा।तेणिनमस्करणीया।सर्ववृद्धानाप
रतिजाणिइ।एकोअमरशक्तिएह्निनामिराजाहोउ।तिराजानित्रणपु
त्रअर्थहीआ।एकवहुशक्ति।वीजोउग्रशक्ति।त्रीजोअनंतशक्ति



× नते परम्श्री।स्वलेस्यकारसूमनोदरहवा[illegible]× ८

[illegible]

इन्डिया ऑफिस लायब्रेरी, लडननी, यशोधीरकृत 'पचाख्यान बालावबोध'
हस्तप्रत (न S 3400 C) नु प्रथम पत्र

इन्डिया ऑफिस लायब्रेरी, लंडननी, यशोधीरकृत 'पचख्यान बालावबो'
हस्तप्रत (न S 3400 C) नु अन्तिम पत्र

भाण्डारकर ओरियेन्टल इन्स्टिट्यूटनी, यशोधीरकृत 'पंचाख्यान बालावबोध' नी हस्तप्रत (नं. 289 of A 1882-83) नुं प्रथम पत्र

भाण्डारकर ओरियेन्टल इन्स्टिट्यूटनी, यशोधीरकृत 'पंचाख्यान बालावबोध' नी हस्तप्रत (नं. 289 of A 1882-83) नुं अन्तिम पत्र

१५१

म० स० युनिवर्सिटी लायब्रेरीनी, यशोधीरकृत 'पंचाख्यान बालावबोध' नी सचित्र हस्तप्रत (नं. १) नुं अन्तिम पत्र.

भाण्डारकर ओरियेन्टल इन्स्टिट्यूटनी, यशोधीरकृत 'पचाख्यान बालावबोध' नी हस्तप्रत (नं 424 of 1879 80) नुं अन्तिम पत्र

यशोधीरकृत

पंचाख्यान बालावबोध

तन्त्र १-मित्रभेद



॥ॐ नमः श्रीगणपतये
पंचाख्यानस्य शास्त्रस्य
ताचेयं क्रियते मुसाय
बोधी रणविङ्षा सर्व
शास्त्रप्रकासिका॥१॥ म
नावलाचस्पतये शुक्र
यपराशराय सुकायचा
णाक्यायवविद्भुतेम
हममयशास्त्रकर्तृयः॥
ग्रंथकर्ताकहइवइ॥





गणपति, सरस्वती अने पंचाख्यान-वार्त्तिककार यशोधर पंडित [हस्तप्रत, पृष्ठ 1-B]



मनु बृहस्पति शुक्राचार्य, पराशर, द्वैपायन व्यास, चाणक्य अने अन्य बे पंडित [हस्तप्रत, पृष्ठ 2-A]

[कथामुख]

[1-B] ॥ ६० ॥ श्रीगणेशाय नमः[1]

पंचाख्यानस्य शास्त्रस्य भाषेयं क्रियते शुभा ।
यशोधीरेण विदुषा सर्वार्थस्य[2] प्रकाशिका ॥ १ ॥

मनवे वाचस्पतये शुक्राय पराशराय ससुताय[3] ।
चाणक्याय च विदुषे नमोस्तु नयशास्त्रकर्तृभ्यः ॥ २ ॥

ग्रंथकर्ता कहिइ[4] छि,[5] हूं[6] मनुनि,[7] बृहस्पतिनि,[8] शुक्रनि,[9] परासर[10] रष्यनि,[11] कृष्ण द्वैपायन व्यासनि,[12] चाणक्यनि[13] अनइं[14] अनेरा[15] जे[16] शास्त्रना कर्ता तेहनि[17] नमस्कार करूं[18] छुं.[19]

सकलार्थशास्त्रसारं जगति समालोक्य विष्णुशर्मेदम् ।
तन्त्रैः पञ्चभिरेतच्चकार[20] सुमनोहरं शास्त्रम् ॥ ३ ॥

विष्णुशर्मा एहवइ[21] नामि[22] ब्राह्मण[23] ते ए संसारमाहि[24] सघला शास्त्रना अर्थनि[25] जोइनि[26] मोटा पाच तंत्र कहीजे[27] आख्यान तीणि[28] करीनि[29] उतम जे[30] शास्त्र तेन्हे[31] करतो हुउयो[32] ते शास्त्र कहीए[33] छं.[34]

दक्षण[35] देश मद्धे[36] महिलारोप्य[37] एहि[38] नामि[39] नगर छि.[40] तिहा सकल शास्त्रनो[41] कल्पवृक्ष मोटा जे[42] राजा[43] तेणि[44] नमस्करणीय; सरव[45] वधाना[46] पारनि[47] जाणिइ[48] एहु[49] अमरशक्ति एहि[50] नामि[51] राजा हौउ. ते राजानि[52] त्रेण्य[53] पुत्र मुर्ष[54] हौआ; एक व्यहूशक्ति,[55] बीजो[56] उग्रशक्ति, त्रीजो अनिकशक्ति.[57] [2-A] तनार[58] पूठि[59] राजा ते[60] पूत्रनइं[61] मुर्ष[62] देषीनइ[63] प्रधान सघला वोलावीनइ[64] कहितु[65] हौउ, अहो प्रधान[66] तम्हे ए जांणो[67] छो[68] जे[69] माहरे[70] ए त्रंण[71] पूत्र[72]

मूर्ष अनट[७३] विवेक[७४] न जाणि[७५] एवा[७६] हौउया[७७] छिद्.[७८] तेहनि[७९] हूं[८०] देषीनि[८१] मुन्हि[८२] [ए निर्वैर][८३] जे[८४] [राज्य] सुष नथी करतूं;[८५] अथवा पंडित एहवूं[८६] कहि[८७] ते जुक्त[८८]

अजातमृतमूर्खेभ्यो मृताजातौ सुतौ वरम् ।
यतस्तौ स्वल्पदुःखाय यावज्जीवं जडो दहेत् ॥ ४ ॥

अणजण्यु[८९] जे[९०] पूत्र[९१] अनइ[९२] जण्या[९३] पच्छी[९४] मरि[९५] जे पूत्र[९६] अनइ[९७] मुर्ष[९८] जे[९९] पूत्र तेह[१००] त्रंण्य[१] पूत्रमाहि[२] अणजण्यू[३] अनि[४] जण्या[५] पन्छी[६] मरिइ[७] ए त्रि[८] भला जे थो[डु][९] दूष्य[१०] करि[११] पण मुर्ष्य[१२] काइ[१३] नहीं[१४] जे मातापनइ[१५] यावज्जीव दुक्ख[१६] दिइ.[१७] वली पंडत[१८] एहुं[१९] कहि[२०]

किं तया क्रियते धेन्वा या न सूते न दुग्धदा ।
कोऽर्थ. पुत्रेण जातेन यो न विद्वान्न भक्तिमान् ॥ ५ ॥

तेणी[२१] गाई[२२] शूं[२३] कीजि[२४] जे वीयाजि[२५] नहीं[२६] अनिड[२७] दुन्योद[२८] नही.[२९] तम[३०] तिणि[३१] ज्यणि[३२] पूत्रि[३३] सू[३४] कीजि[३५] जे पूत्र[३६] विद्वाम नोहोइ[३७] अनइ[३८] मातापनी[३९] भक्ति न करिइ.[४०]

वरं गर्भस्रावो वरमृतुषु नैवाभिगमनं
वरं जातप्रेतो वरमपि च कन्यैव जनिता ।
वरं वन्ध्या भार्या वरमपि च गर्भेषु वसति-
र्न चाविद्वान्रूपद्रविणगुणयुक्तोऽपि तनयः ॥ ६ ॥

स्त्रीनु[४१] गर्भस्राव हुइ[४२] ते भलु,[४३] अथवा स्त्रीनि[४४] रितुदान[४५] न दीजि[४६] ते भलुं, अनइ[४७] पूत्र[४८] यर्णाने[४९] मरिइ[५०] ते भलुं,[५१] अथवा कन्या[५२] यर्णी[५३] ते भली, अथवा स्त्री वंध्या हुइ[५४] ते भली, अथवा गर्भनि[५५] विषि[५६] पूत्र[५७] नावइ[५८] ते भलु,[५९] पण रूपवंत नइ[६०] धनी[६१] घणुं[६२] होएइ[६३] अनइ[६४] चलवंत[६५] हुइ,[६६] मूर्ष पुत्र काइ[६७] नही.[६८]

राजा अमरशक्ति, तेना त्रण मूर्ख पुत्र, प्रधान अने विष्णुशर्मा [हस्तप्रत, पृष्ठ 3-A]

कि जातर्बहुभि पुत्रर्गणनापरिपूरकै ।
वरमेक कुलालंबी यत्र विश्रमते कुल ॥ ७ ॥

घणे[६९] पुत्रे[७०] जणे[७१] सू,[७२] किंचित[७३] गणना [2 B] हु,[७४] ते पाहि[७५] एक सुपुत्र[७६] भलो[७७] जेहनि[७८] कुल सघलु[७९] अवलंबीनि[८०] विश्राम[८१] पामइ[८२]

को नाम मम पुत्राणा नित्यमुन्मार्गगामिनाम् ।
नीतिशास्त्रोपदेशेन पुनर्जन्म प्रयच्छति ॥ ८ ॥

राजा प्रधाननइ[८३] कहि[८४] छइ,[८६] को एहु[८७] पंडित छिइ[८८] जे[८९] माह्रा[९०] पूत्रनिइ[९१] उन्मार्गि[९२] जाता[९३] थका[९४] न्यायशास्त्रनो[९५] उपदिश[९६] तेणि[९७] शरीरनइ[९८] नवो[९९] जन्म दिइ[१००]

एकेनापि गुणवता पुरुषविशेषेण कि न पर्याप्तम् ।
मणिरेकोपि विशुद्ध करोति दारिद्रविद्रवणम् ॥ ९ ॥

एकइ गुणवंत पुत्रथी कुण वस्तु न पामीइ[२] सर्व पामीइ[३] यम[४] एकई शुद्ध जि[६] मण्य[७] तिं[८] दरीद्रनि फेटि[१०]

एकेनापि गुणवता जातिविशुद्धेन चारुवृत्तेन ।
स्वकुलमलंकृतमखिल महता मुक्ताफलेनेव ॥ १० ॥

एक[११] पुत्र गुणवंत अनइ[१२] जाति शूद्ध[१३] रूडु[१४] आचारवत एहो[१५] जे पुत्र तेणइ[१६] आपणू[१७] सघलु जे कुल[१८] शोभवीइ[१९] इम[२०] रूडू जे[२१] मोती मोटा तीणे[२३] हार[२४] शोभि[२५]

अहो प्रधान, ते भणी एवू[२७] सेंरं[२८] गुणनु[२९] कारण काई[३०] चीत[3 A]वु[३१] उपाय जेणेइ[३२] माह्रा पुत्रनिइ[३३] बुद्धिप्रबोध हुइ[३४] अनेइ माह्री वृत्ति[३६] भोगवता जे पडत[३७] छइ[३८] तेहनि[३९] कहु[४०] जे माहारा[४१] पुत्रनिइ[४२] बुद्धिवत करी माहु[४३] मनोरथ शधि[४४] ल्यो तिहा[४५]

केतलाएक प्रधान बोलता हुंडया, राजन्, व्याकरण भणता बार वरस लागइ, तुहेईई थोडूं थोडूं जाणीए. पछि धर्मशास्त्र अनि अर्थशास्त्र जाणीइं. तह्वार पछी बुद्धिनु प्रबोध होयइ. वली प्रधानमाहि सुमति एहि नामि जे प्रधान ते बोलतो हुंउ, राजन्, मनुष्यनु जीवतव्य घणूं थोड न जाणीइ अनेइ शास्त्र तो बहुकालसाध्य; ते भणी एइ मुहि नाननि अर्थ कांइ संक्षेप थोड अनि घणी बुध्य करइं एहु शास्त्र चींतनुं. पंडित कहिः

> अनन्तपारं किल शब्दशास्त्रं
> स्वल्पं तथायुर्बहवश्च विघ्नाः ।
> सारं ततो ग्राह्यमपास्य फल्गु
> हंसैर्यथा क्षीरमिवाम्बुमध्यात् ॥ ११ ॥

शब्दशास्त्रनुं अंत पार नथी अनि आयु मनुष्यनो थोडो अनि विघ्न घणा, ते भणी शास्त्र शास्त्र मध्यथी नेफल छांडीनि सार ग्रहीइं जम हंस उदकनइ छांडीनइ दुधनि ग्रहइ छ.

ते भणी आज विष्णुशर्मा एहि नामि ब्राह्मण छइ. तेणि अनेक विद्या भणी छइ, निपुण करी, प्रसिद्ध छि. तेहनि त्रंणि पुत्र समरपो. ते विष्णुशर्मा एह पूत्रनि त्वरित सुबुद्धि करसि.

ते 'अमरशक्ति' राजा एहं प्रधाननु वचन सांभली ते वीष्णुशर्मा ब्राह्मणनि बोलावी कहितो हुंउ, अहो ब्राह्मण, तूं माहंत निश्चइ. मुं उपरि कृपा करीनि ए माहूा पूत्र ज्यम्यनि अर्थशास्त्र भणावी सुबुद्धि होय तम करु. हं तूंनि शत सम्याक वृत्ति आपस. एह्वां राजनूं वचनि विष्णुशर्मा सांभलीनि मनमाहि चींतवंतु हुंउ, हूं ए कुमा[3-B]रनि उद्धतनि

योऽत्रेव पठति नित्यं नीतिशास्त्रं शृणोति यः ।
न पराभवमाप्नोति शक्रादपि हि कर्हिचित् ॥ १२ ॥

जे[96] पूरूप[97] संसार मध्य[98] ए[99] नीतिशास्त्रनि[100] दिहाडी[1] भणि अथवा सामलइ[3] ते पूरूप[4] ईंद्रथकी[5] पराभव न पामि,[6] पछि[7] बीजा मनष्यै[9] था माहि ?

एतलूं[10] ए कथानू[11] मूख.[12]

[पहेलुं तंत्र–मित्रभेद]

[सिंह अने वळद–मुख्य कथा]

हवि[1] पंचतंत्रमाहि[2] प्रथम[3] मित्रभेद नामि[4] जे[5] तंत्र ते आरभीइ[6] छे,[7] जेहनो[8] पहिलु[9] श्लोक,

वर्धमानो महास्नेहः सिंहगोवृषयोर्वने ।
पिशुनेनातिलुब्धेन जम्बुकेन विनाशित ॥ १३ ॥

वन मध्य[11] सिंह अनइ[12] गाये-वलद[13] बिहूंनिंइ[14] गाढी प्रीति हौइ. ते प्रीति[15] चाड अनिंइ[16] लोभीउ[17] एहो जे[18] शीयाल[19] तीणे[20] फेडी.

ते वार्त्ता पूर्वे[21] साभलीये[22] छेइं.[23] दक्षिण देश मध्य[24] महेलारोप्य एहि[25] नामि[26] नगर छिइ.[27] ते नगर मध्ये[28] सन्मार्गि[29] करी [ध]ननइ[30] उपार्जितौ[31] एहो[32] वर्द्धमान[33] नामि[34] वाणीयानि[35] पूत्र[36] हौउं.[37] ते वर्धमाननइं[38] रात्रि[39] सूता[40] क्रिमारिके[41] चिंता ऊपनी.[42] ते चितमाहि[43] चीनवतो हौउ, जुहड[44] धन घणू[45] छेड[46] तोहइ[47] धन उपार्जवाना उपाय चीतववा[48] अनड[49] ति[50] उपाय[51] करवो,[52] अनइं[53] पंडित कहे[54] जे[55] वस्तु[56] न पामी[57] होइ[58] ते वस्तु पामीवानिइ[59] उपाय करवा[60] अनि[61] पामी[62] हुइ[63] तेहि[64] रक्षण[65] करवूं[66] धन घणूंइं[67] होए[68] अनि[69] रूडी[70] परि[71] रापीइ[72] नही[73] तु[74] व्यणसइ[75] अनि[76] साचवीइ[77] तु[78] थोडु थोडुं[79] वाबिलानी[80] परि[81] व्रद्धि[82] पामइ,[83] अनि[84] वावरु थको[85] काजलनी[86] पिरि[87] थोडु थोडु[88] करता[89] घणु[90] साचउ[91] हुइ[92] ते[93] पूटइं.[94] अनइं[95] पंडित कहेइं,[96]

न हि तद्विद्यते किंचिद्यदर्थेन न सिध्यति ।
यत्नेन मतिमास्तस्मादर्थमेकं प्रसाधयेत् ॥ १४ ॥



राजा अमरशक्ति, विष्णुशर्मा अने तेना त्रण मूर्ख पुत्र [हस्तप्रत, पृष्ठ 3-B]

किम[५७] न्यायेमार्गनि[५८] व्यप्यइ[५९] प्रवरतावीश?[६०] जु[६१] एह्नि[६२] नायमार्गनि[६३] व्यपि[६४] नही[६५] प्रवर्त्तावू[६६] तु[६७] पांच शत पंडननी[६८] व्यति[६९] लोप हुसे,[७०] अनि[७१] नायशास्त्र[७२] सीपवीश[७३] तो राजानुं कार्य अनट[७४] माहरु[७५] कार्य अने[७६] पंडितनुं कार्य, ए त्रंणि[७७] कार्य सरस्वतीना प्रमादथी रूडां होय[७८] तम करूं.[७९] एहं[८०] विष्णुशर्मा चित्तमाहि[८१] व्यमासीनि[८२] राजा प्रति बोल्यतो[८३] होउं,[८४] राजांन[८५]! माहरूं[८६] सत्य वचन सामलो.[८७] हूं[८८] वीद्यानो[८९] वीक्रय न[९०] करू.[९१] हूं[९२] तमारी[९३] प्रति[९४] चीना एह[९५] पुत्रनइ[९६] पट्[९७] मासमाहि[९८] न्यायसास्त्रनि[९९] जांणता[१००] न करूं[१] तो माहरूं[२] नांम[३] त्यजु.[४] घणुं[५] शूं[६] कहूं[७]? माहरो[८] ए सिंहनाद[९] सांभलो. हूं[१०] धंनलुब्ध[११] थको नथी बोलतुं.[१२] बुद्धनि[१३] काई[१४] असाद्य[१५] नथी. मूंहनि[१६] इशी[१७] विरप्य[१८] होआ तेणि[१९] सर्व इंद्रिय निवर्त्त्या.[२०] ते भणी[२१] माहरइ[२२] धन[२३] प्रीउजन[२४] नहीं[२५] पण[२६] ताहूं[२७] प्रार्थना-शषिने[२८] आर्थि हूं[२९] माह्री वाणीनि[३०] विस्तार करीश.[३१] ते भणी राजा[३२]नु! दिन[३३] रुपी रापो.[३४] जो हूं[३५] छ मास मध्ये[३६] ताह्रा[३७] पूत्रनि[३८] न्यायशास्त्र[३९] जाणि[४०] एह्रा करुं तो[४१] तह्नि[४२] भुनि[४३] मान[४४] देवानइ[४५] योग्य हूं.[४६] एहवी[४७] ब्राह्मणनी[४८] असंभावि[४९] प्रतीज्ञा साभलीनि[५०] हर्ष्यित[५१] थकि[५२] परम विस्मयनि[५३] पामीनइ[५४] ते पूत्रनि[५५] ब्राह्मणनि[५६] हस्ति समर्पत[५७] होउं;[५८] पछि[५९] परम सुखनि[६०] पाम्यो. विष्णुशर्मा[६१] तेह पूत्रनि[६२] आपणि[६३] महिनि[६४] व्यपि[६५] लेटनि[६६] राजानी क्रपानि[६७] अर्थे[६८] एक मित्रभेद नामि[६९] तंत्र १, बीजो[७०] मित्रसप्राप्ति नाम[७१] [२], त्रीजो[७२] काकोलुकीयं [३], चोथो[७३] लब्ध-प्रणाश [४], पाचमु[७४] अपरीक्षितकरणीय [५], ए पाच तंत्र रचीने[७५] ते राजाना[७६] पूत्र[७७] भणाव्या.[७८] ते राजपूत्र[७९] ते[८०] पांच[८१] तंत्र[८२] भणीनि[८३] मास छ[८४] माहि[८५] विरपंन[८६] हौआ. ते काल[८७] आदि करी प्रथवीमाहि[८८] पंचाप्यान[८९] नामे[९०] शास्त्र प्रर्वत्युं.[९१] बालकनी[९२] बुद्धयनि[९३] [वृद्धिनेह[९४] अर्थि] प्र[4-A]वृत्युं.[९५]

ते पदार्थ नथी जेइं[97] धननि[98] न साधीइं;[99] ए[100] सर्व धनें[1] साधीइ;[2] ते भणी बुद्धिमानि[3] मोटि[4] [य]तनें[5] एक धन साधिवूं.[6]

[4-B] यस्यार्थस्तस्य मित्राणि यस्यार्थास्तस्य बान्धवाः ।

यस्यार्थाः स पुमॉल्लोके यस्यार्थाः स च जीवति ॥ १५ ॥

जिइं[7] पूरूषनइ[8] धन हुइ[9] तेहनइ[10] सहू मित्र थाइं[11] अनइ जेहनइ[12] [धन तेहनइ][13] सहू भाइ[14] हुइ;[15] जेहनइ[16] धन ते लोकमाहिं[17] मोटो पुरुष[18] कहाइ[19] अनिइ[20] जेन्हिइं[21] धन[22] तेन्हंनूं[23] जीवतव्य[24] प्रमाणइं.[25]

न सा विद्या न तच्छिल्पं न तद्दानं न सा कला ।

अर्थार्थिभिर्न तत्स्थैर्यं धनिना यन्न गीयते ॥ १६ ॥

धननि[26] वंछिता[27] जे[28] पुरुष[29] तीणे[30] ते विद्या नथी जे[31] धनाढ्य आगिलें[32] न कहीइ,[33] सघली[34] विद्या कहइ,[35] सघली[36] [कला] कहिइ,[37] सर्व दान[38] कहइ,[39] सघलो[40] सत्य[41] कहेइ,[42] सघली सुरव्रत[43] कहइ.[44]

इह लोकेऽपि धनिना परोऽपि स्वजनायते ।

स्वजनोऽपि दरिद्राणां तत्क्षणाद्दुर्जनायते ॥ १७ ॥

धनाढ्यनि[45] इह लोकि[46] पर[47] ये ते स्वजन थाइं[48] अनिइ[49] दरीद्रीनि[50] स्वजन जे ते[51] तत्काल दुर्जन थाइं.[52]

अर्थेभ्यो हि विवृद्धेभ्यः संवृत्तेभ्यस्ततस्ततः ।

प्रवर्तन्ते क्रियाः सर्वाः पर्वतेभ्य इवापगाः ॥ १८ ॥

वृद्धि पमाड्य[53] जे[54] धन ते सघलि थ्युं[55] एकत्र कीधा पछी[56] धनाढ्यनि[57] व्यनिक[58] सघला उपजइ[59] ज्यम[60] पर्वत थकी[61] नदी उपजइ.[62]

पूज्यते यदपूज्योऽपि यदगम्योऽपि गम्यते ।

वन्द्यते यदवन्द्योऽपि तत्प्रभावो धनस्य हि ॥ १९ ॥



पंडित अने वर्धमान वाणियो [हस्तप्रत, पृष्ठ 7-B]

पण्याना गान्धिक पण्य किमन्ये काञ्चनादिभि ।
यत्रकेन च यत्क्रीत तच्छतेन प्रदीयते ॥ २३ ॥

सघला[51] द्रव्य ऊपार्जवाना[52] हाटमाहि[53] गाधीहट[54] वारू,[55] ते[56] गाधीहट[57] आगलि सोनहट[58] काई[59] नही गाधीह[ट]माहि[60] एक गणू[61] लीधू[62] होइ ते शतगुणू[63] वेचीइ[64]

ते विणज[65] केतला[66] सात प्रकारि[67] कहइ[68] पोट्ट[69] तोल, पोटउ[70] माप [१], पोट्ट[71] मूल वहीइ[72] [२], थापणमाहे[73] प्रवेश कीजेइ[74] [३], ओलपीतू[75] ग्रहाग[76] कीजेई[77] [४], गोठि कीजइ[78] [५], गाधीहट[79] कीनइ [६], देशातरथी वस्तु आणीइ[80] ७ एणी[81] परि[82] सात प्रकार धन उपार्जवाना[83] वली कहिइ[84] बोल्यू[85] छिइ[86] पण्डितेइ,[87]

पूर्णापूर्णे माने परिचितजनवञ्चन तथा नित्यम् ।
मिथ्याक्रयस्य कथन निजधर्मोऽय किराटकानाम्[88] ॥ २४ ॥

पूरू[89] लेइ[90] अनइ[91] उछउ[92] आपइ[93] अन[इ][94] [5 B] ओलपीतानि[95] पोट्ट[96] आपइ,[97] जुठउ[98] मूल कहि,[99] ए माहाजननु[100] निज धर्म्मई[101] वली बोलु[102] छैइ,[103]

परिचितमागच्छन्त ग्राहकमुत्कण्ठया विलोक्यासौ ।
हृष्यति तद्धनलुब्धो यद्वत्पुत्रेण जातेन ॥ २५ ॥

माहाजन[104] हाटि बइठू[105] ऊची कोट करीनइ[106] जोई[107] अनिइ[108] उलपीतू[110] ग्राहाग[111] आवतू[112] देषीनिइ[113] ऐहा[114] हर्षनइ[115] पामइ[116] जेहवउ[117] हर्ष पूत्र[118] जण्या[119] पठी[120] होई[121]

निक्षप पतिते हर्म्ये श्रेष्ठी स्तौति स्वदेवताम् ।
तदा सो म्रियतामाशु तुभ्य दास्यामि चेप्सितम् ॥ २६ ॥

वाणीउ[22] घरमा[23] पीयारी[24] थापणि आव्या पूंठि[25] आपणी[26] गोत्रजानि[27] वीननि[28] स्तूति[29] करिइ,[30] जो थापणिनु[31] मूकनारु[32] वेगु[33] मरशि[34] तो हू[35] तुह्वि[36] वाळिन नेवेद्य[37] करिश.[38]

गोष्ठिककर्मनियुक्त श्रेष्ठी चिन्तयति चेतसा हृष्ट ।
वसुधा वसुसपूर्णा मयाद्य लब्धा किमन्येन ॥ २७ ॥

वाणीऊं[39] ब्राह्मगशू[40] गोठि करतो[41] चित्तमाहि[42] चीतनइ[43] हर्ष्युथो चीतनइं,[44] आज मिं[45] प्रथवी[46] सघली[47] धनपूर्ण[48] पामी अनेराइ[49] शू[50] पामसि.[51]

येषा स्याद्विपुलं वित्त उद्यमन्तोऽपि दूरत ।
अर्थैरर्था निबध्यन्ते गजैरिव महागजा ॥ २८ ॥

जे[52] पुरुपनइ[53] घणूं[54] धन होइ अनइ परदेशथी वस्तु आणी उद्यम[55] करइ[56] तेहनि[57] धनि[58] करी धन वाधइ[59] जम[60] मोटा जे[61] हाथी तेणि[62] वनना हाथी वाधीइ.[63]

द्विगुण त्रिगुण वित्त भाण्डक्रयविचक्षणा ।
प्राप्नुवन्त्युद्यमाल्लोका दूरदेशान्तर गता ॥ २९ ॥

जे[64] पुरुप दिशायतरि[65] जईनइ[66] लेइ[67] वेची जाणइ[68] ते[69] पुरुप वस्तूना[70] त्रिमणा अनि[71] त्रेमणा[72] दाम[73] पामिइ.[74]

सुभीना परदेशस्य बहुमायानपुंसका ।
स्वदेशे निधन यान्ति काका कापुरुपा मृगा ॥ ३० ॥

परदेशनइ[75] निपइ[76] जातो[77] बीहिइ[78] अनइ[79] घणी मायाइ[80] नियां थका पुरुपार्थ नीगमइ[81] ए[6 A]हा जे[82] कागा[83] अनइ[84] कापुरुप अनिइ[85] मृग एतला[86] आपणा ज[87] देशनि[88] विपि[89] नाशनेइ[90] पामिइ.[91] वली बोल्ड[92] छइ,[93]



बगलो अने करचलो [हस्तप्रत, पृष्ठ 39-B]

[जुओ पहेला तंत्रनी वार्ता छट्ठी, पृ ७६-७७]

जे[63] पूरुष[64] पूज्या[65] ज्योग्य[66] न होइं[67] अनि[68] पूजीइं[69] ते धननो प्रभाव; अनइ[70] जे[71] नमस्कार ज्योग्य[72] नोहइं[73] तिन्हे[74] नमस्कार कीजेइं[75] ते धननु[76] प्रभाव; अनिइ[77] जेन्हइं[78] घरि जावा जोग्य[79] नोहिइ[80] तेहनइ[81] घरि जइंई[82] ते धननो प्रभाव.[83]

अशनादिन्द्रियाणीव सत्कार्याण्यखिलान्यपि ।
एतस्मात्कारणाद्वित्तं सर्वसाधनमुच्यते ॥ २० ॥

जम[84] जमा[85] पठी[86] सघली[87] इंद्रय[88] प्रवर्तइं[89] त्यम[90] रुडा[91] कार्य धनथी प्रवर्त्तिइं[92] तेह कारण[93] धन सर्वनु[94] साधन.

अर्थार्थी जीवलोकोऽयं श्मशानमपि सेवते ।
जनयितारम[5-A]पि त्यक्त्वा निःस्वं गच्छति दूरतः ॥ २१ ॥

लोक धननि[95] अर्थ[96] स्मशांन[97] शेवइं[98] छिइ[99] अनि[100] निरधन[1] पितानइ[2] छाडइं[3] [छइं].[4]

उपायानां हि सर्वेषामुपायाः पण्यसंभवाः ।
धनार्थं शस्यते येन ते सर्वे संशयात्मकाः ॥ २२ ॥

उपाय सर्व[5] मध्ये[6] उत्तम उपाय तिहां[7] हाट मांडवाना तीणइ[8] धन घणूं[9] हुइं;[10] अनेरा जे[11] धन ऊपार्जवाना[12] जे[13] ऊपाय[14] तिहां धन उपजवानु[15] संदेह.

ये अर्थ थका[16] सर्व पदार्थ होइं[17] ते अर्थ छए प्रकारि[18] मनुष्ये[19] करवो,[20] ति[21] उपाय गांधीनु कर्म १, थापणि[22] मूंकी[23] होइं[24] ति[25] माहि[26] थोडि[27] थोडिइं प्रविश[28] २, अनइ[29] गोठि कीजे[30] ३, अनइं[31] ओलपीतो ग्रहाग[32] कीजेइं[33] ४, जूंटूं[34] बोलवूं[35] ५, अनइ[36] पोटूं[37] तोल, पोटूं[38] माप ६. अनेइंराइ[39] धनना उपायः भिक्षाइ,[40] राजानी सेवाइं,[41] करसण[42] करी अनिइ[43] विद्याइं[44] करी, वोहोरगति,[45] व्याजवुहुरा[46] करी, एण[47] उपायें[48] करी धन उपार्जवूं.[49] पंडित कहिइं,[50]

कोऽतिभारः समर्थाना, किं दूरं व्यवसायिनाम् ।
को विदेश. सुविद्याना, क पर. प्रियवादिनाम् ॥ २१ ॥

समर्थनिइ[94] काइं[95] भारि[96] नहींइ,[97] अनइ व्यवसाईयानइ[98] काइं[99] विगलुं[100] नही,[1] अनइ[2] विद्यावंतनिइं[3] कहुं[4] परदिश[5] [न]ही,[6] सवि सह देश हुइं,[7] अनइं[8] प्रिय बोलइ तिन्हि[9] कोइ वइरी[10] नही,[11] सहुं[12] ज मित्र हुइ.[13]

यो न निर्गत्य निःशेषा विलोकयति मेदिनीम् ।
अनेकाश्चर्यसपूर्णा, स नर कूपदर्दुर. ॥ २२ ॥

जे[14] पु[रु]ष घरि[15] नीकलीनइं[16] अनिक[17] आश्चर्ययुक्त[18] सघला[19] देश विदेश[20] न जोइं[21] ते पुरुष कुआनु[22] देडक[23] जाणवो.[24]

एह्वि[25] वर्द्धमान[26] नामि[27] वाणीयुं[28] रात्रि[29] वीतवीनइं,[30] प्रभात-कालि[31] रूडी तिथ्य[32] अनइ रूडु[33] वार एह्वि[34] दिवसिं[35] गुरू वडानी[36] आज्ञा मागीनइ[37] मथूरा[38] नगरी[39] मद्धे[40] लइ[41] जावा जि[42] जोग्य वस्तु तिहनि[43] लइनिइ[44] गाडि[45] बलद बि[46] जोतरीनिइ[47] [6-B] साथी[48] सघाति[49] चाल्यु[50] ते वर्द्धमाननइ[51] उत्तम बि[52] बलद, एक नंदक नाम,[53] बीजो सजीवक नाम.[54] आगिलथा[55] [धुर वहे][56] एह्वो[57] वाटि[58] चालता[59] घणि[60] भारि[61] करी थाका ते बेहे[62] बलदमाहि[63] सजीवक एहवे[64] नामि[65] एक[66] मोटो बलद[67] जमुनानि[68] काठि[69] जि[70] इस्वरण[71] तेणि[72] करी होउ[73] जे कलण ताहा[74] पूतो[75] बलदनो पाग[76] अनइ[77] भागो. तिणे[78] सजीवक जे बलद ते तिहां[79] मिठो.[80] तह्वार[81] पच्छी[82] ते[83] वर्धमान[84] ते[85] संजीवकनि[86] दिठो[87] अनि[88] पग[89] भागो देपीनिइ[90] दुपनि[91] धामतो[92] होउ[93] ते बलद ऊपरि[94] स्नेहे[95] करी त्रण्यो[96] दिन[97] पीयाणू[98] भाजी[99] तिहां[100] रह्यो.[1] तिहार[2] पच्छी साथी सघला वर्धमानने[3] दुष्चिंतत[4] थेइं[5] रह्यो[6] दिषी[7] कहेता[8] होया[9], अहो वर्द्धमान,[10] एक बलदनि[11]

संजीवक बळदने पडतो मूकी, बीजा बळदने गाडीए जोडी चालतो थयेलो वर्धमान वाणियो [हस्तप्रत, पृष्ठ 10-A]



राजकुंवरी अने प्राप्तव्यमर्थ [हस्तप्रत, पृष्ठ 116-A]

काजि[१२] ईहा वनमाहि[१३] व्याघ्रनो भय, सिंहनो भय, गहि[१४] ठामि[१५] सघलो[१६] साथ ते काइ[१७] सदेहमाहि[१८] पाडो[१९] छिट[२०] थोडाने[२१] काजि.[२२] पंडित कहेइ,[२३]

न स्वल्पस्य कृते भूरि नाशयेन्मतिमान्नर ।
एतदेव हि पाण्डित्यं यत्स्वल्पाद्भूरिरक्षणम् ॥ ३३ ॥

बुद्धिमत जि[२४] पूरुष[२५] तेणि[२६] थोडानि[२७] काजि[२८] [7-A] घणानो[२९] नाश न करवो एह ज पूरुषनी[३०] चातुरी[३१] जे थोडि[३२] जाति[३३] घणू[३४] राषीइ[३५] वर्द्धमान[३६] एहू[३७] साथीनु[३८] [व]चन सांभलीनिइ[३९] सजीरक जे बल्दनी[४०] गपनानि[४१] वनमाहि[४२] [केतलाएक] जण[४३] मुंकीनिइ[४४] अनिरो[४५] नल्द जोतरीनिइं[४६] थाक्ता[४७] मार्थी सघाति[४८] चाल्या[४९] तिवार पछी ते गपना मुक्या[५०] जे पुरुष[५१] ते भयानक वन देषीनइ[५२] सजीरक-निइ[५३] छाडीनिइ[५४] बीजि[५५] दिन[५६] वर्द्धमाननि[५७] साथि[५८] गयल्या[५९] अनि[६०] वर्द्धमान[६१] आगिलि[६२] जुठू[६३] बोलू रहिता[६४] होउया,[६५] अहो स्वामी,[६६] सजीरक मूउ[६७] अनि[६८] अज्ञानि[६९] घणू[७०] वाहलु तेणे तेन्हि[७१] अमि[७२] अग्निदाघ[७३] अनि[७४] क्रिया कीधी " एहू[७५] जुठू[७६] बोलीनि[७७] वृद्धमान[७८] आगिल अनि[७९] साथि[८०] ग्या[८१] अनि[८२] सजीरक बल्द ति[८३] यमुनाना[८४] वायु टाढा[८५] लेइनि[८६] आडता[८७] फीटो, शरीरनि[८८] आप्यायन हौउं.[८९] पछि[९०] उठीनिइ[९१] जमुनाना[९२] तटनि[९३] व्यपिइ[९४] मरकत मणि शरषा[९५] नील[९६] त्यरण[९७] चरता इश्वरना नंदी शरष्यो[९८] वनचर[९९] होउ[१००] अनिइ[१] पाद्ध[२] मोरू थेउ[३] अनि[४] शींगि[५] करी बारला अनिइ[६] भोड[७] पणि[८] गाढि[९] मोटा शब्दनिइ[१०] करतो[११] तिहा[१२] रहितो[१३] होउ[१४] अहो पडित एहू[१५] कहि[१६] ति[१७] साधू[१८],

अरक्षित तिष्ठति दैवरक्षित, सुरक्षित दैवहत विनश्यति ।
जीवत्यनाथोऽपि वने विसर्जित, कृतप्रयत्नोऽपि गृहे विनश्यति ॥३४॥

मनुष्य जेहे[20] राषे[21] नही[22] तेहनि[23] जो दैव रापि[24] तो[25] घणो[26] काल रहेइ,[27] अनि[28] सुनूप्य[29] जिह्वि[30] मोटि[31] जत्ने[32] रापि[33] तिहि[34] जो दैव न रापिइ[35] तो विनाश पामइ[36] जम[37] अनाथ वनमाहि मूक्यो[38] जीविइं[39] अनि[40] मोटि[41] जत्ने[42] घेरमाहिथी[43] राक्षो[44] विनाशनि[45] पामइं.[46]

ते वनमाहि[47] पंगलक[48] एहि[49] नामे[50] सैह[51] नरचर अनि[52] सुपनि[53] अनुभवतु[54] रहेतो[55] हौउ.[56]

अभिषेको न सम्कार सिंहस्य क्रियते मृगै ।
विक्रमार्जितवित्तम्य स्वयमेव मृगेंद्रता ॥ ३५ ॥

वनना मृग सिहिनि[57] अभिषे[7-B]क राज्यनु[58] न देइ[59] अनि[60] राजपदि[61] वेसारवानो[62] सम्कार न करि[63] तोहि[64] सैह[65] आपणा[66] पराक्रमे[67] वित्त उपार्जि[68] अनिइ[69] मृगनो[70] स्वामी[71] आपणीया[72] थाइं.[73]

केहो[74] एक[75] अवसरि पगलक[76] सैह[77] सर्व मृगि[78] परवरा[79] थको तृषाक्रान थकु[80] पाणी[81] पीवानिइ[82] यमुनानि[83] तीरि[84] आवता[85] होउ.[86] तवार[87] पछी ति[88] सेह[89] सजीवक वृषभनु[90] विगल थका[91] शब्द मोट्ठु[92] साभलतु[93] हौउ.[94] ते शब्द[95] साभली आकुलित हृदय हौउ. पछइ[96] भयभीत[97] थकु[98] वट वृक्ष तरि[99] मडली करीनिइ[100] रहितो[1] होउ[2]. पछि[3] एक करटक[4] नामि,[5] बीजो दमनक एहि नामि[7] शीयाल प्रधानना[8] पूत्र[9] अनि[10] प्रधानपदथी[11] छडान्या[12] सघाति[13] हीडता[14] थ्या,[15] परस्पोरि[16] मंत्र करता हौया.[17] ते बेहूमा[18] दमनक कहतो[19] हवोउं,[20] अहो करटक, ए आपणु[21] स्वामी[22] तृषाक्रात थको पिंगलक सेह[23] जमुंनातटनेइ[24] विषइं[25] आवीनइ सेनानो[26] व्यूह रचीनइ[27] मननि[28] व्यपिइ[29] दुखित[30] थको रह्यो ति[31] सू[32] ? करटक तवार[33] पछी कहितु,[34] [8 A] अहो दमनक,[35] ईणइ[36] मिथ्या [व्या]पारि[37] शु करीगि[38] ? पूर्छिइ[39] बोलिउ[40] उइ,[41]

अव्यापारेषु व्यापारं यो नरः कर्तुमिच्छति ।
स एव निधनं याति कीलोत्पाटीव वानरः ॥ २६ ॥

दमनक[४२] कहेतो[४३] हौउ.[४४] ए कथा कंम ?[४५] करटक[४६] कहेतो[४७] हुउ,[४८]

[१. खीलो खेंचनार वानर]

एक[१] नगरनि[२] समीपिइ[३] वाणीयानइ[४] पूत्रि[५] वनमाहि[६] देवनो[७] प्रासाद[८] करावावु[९] मंडाव्यो.[१०] तिहा जि[११] सूत्राधारि[१२] आदि करी अनिराइं[१३] कांम[१४] करि[१५] ति[१६] मध्याननि[१७] समिइं[१८] भोजननि[१९] अर्थि[२०] नगर मध्य[२१] आविइं.[२२] ति[२३] वनमाहि[२४] कदाचि[२५] भमतुं[२६] वानरजुंथ[२७] आवतु[२८] हौउं.[२९] प्रासाद[३०] समीपे[३१] आव्या[३२] तिहा[३३] [8 B] सूत्रधारि[३४] अंजन[३५] वृक्षनो स्तंभ अर्द्ध विदारो[३६] ति[३७] माहि पैरनो[३८] पीलो घाली मुंको.[३९] तेहा[४०] केतलाएक वानर वृक्ष उपरि,[४१] केतलाएक प्रसाद[४२] उपरि[४३] जथेष्ट[४४] क्रीडा करता हौया.[४५] तेहा[४६] वानरमाथु[४७] एक वानर[४८] चपलपणाथी[४९] अर्द्ध विदारा[५०] स्तंभ उपरि[५१] बिसीनिइं[५२] ति[५३] काष्टबंधननुं[५४] दोर छोडीनिइ[५५] एह्वो[५६] बोलतो हौउं,[५७] अहो वानरो,[५८] ईहा काष्टमाहिइ[५९] कोण्हि[६०] पीलुं[६१] वइसारो[६२] छिइं,[६३] एह्वु[६४] बोलतो हौउं[६५] [व्युह्रो][६६] हाथि[६७] करी पीलो काढतो हुउं.[६८] तवार[६९] पच्छी[७०] ति[७१] पीलो नीकलता[७२] ते[७३] वानरनो वृषण फाड्या लाकडामाहि[७४] आव्या अनइ[७५] चपाणो,[७६] वृषण चंपाणा, पच्छी वानर[७७] मूंउं.[७८]

ते भणी[७९] कहूं[८०] छूं[८१] जे[८२] अव्यापारिपू[८३] व्यापार न करवु,[८४] अनइ आपण[८५] पाता[८६] आहार मात्र उगरो[८७] छिइ[८८] तो[८९] इंणि[९०] व्यापारि[९१] सु[९२] प्रयोजन ?

तवार[९३] पछी दमनक कहि[९४] छइं,[९५] अहो करटक, तू[९६] तुं[९७] केवल आहारार्थी[९८] छंइं;[९९] जे[१००] एहुं[१] कहि[२] छि[३] ते युक्त नही[४] बोल्यूं[५] छइं,[६]

सुहृदामुपकारकारणाद् द्विषतां चाप्यपकारकारणात् ।
नृपसंश्रय ईष्यते बुधैर्जठरं को न बिभर्ति केवलम् ॥ ३७ ॥

मित्रनइ[7] उपकार करवानइ[8] अनइ[9] शत्रुनइ[10] वैर पोषवानइ[11] राजानो[12] आश्रय करवु;[13] पंडिते[14] अन्यथा आपणू[15] उदर[16] तु सहूइ[17] भरइ.[18] वली,[19]

यस्मिञ्जीवति जीवन्ति बहवः सोऽत्र जीवति ।
वयांसि किं न कुर्वन्ति चञ्च्वा स्वोदरपूरणम् ॥ ३८ ॥

जे[20] जीवतइ[21] घणा जीवइ[22] ते पुरूप घणूं[23] जीवु;[24] बीजी परि[25] चांचीइ[26] करी आपणा[27] उदर भरि[28] एह्वा पक्षी[29] ते[30] घणाइं[31] छइ.[32] वली,

यज्जीव्यते क्षणमपि प्रथितं मनुष्यै-
र्विज्ञानशौर्यविभवार्यगुणैः समेतम् ।
तन्नेपु जीवितफलं प्रवदन्ति तज्ज्ञा.
काकोऽपि जीवति चिरं च बलिं च भुङ्क्ते ॥ ३९ ॥

जे[33] पुरुपे[34] क्षण मात्र थोड़ूं[35] जीवइं,[36] जीवि[37] पण रूडुं[38] जीवइ,[39] ज्ञानि[40] करी[41] प्रसिद्ध, शौर्य[42] करी [9-A] प्रसिद्ध अथवा घणी संपत्ति[43] करी अनि[44] गुणि[45] करी प्रसिद्ध जीवि[46] ति[47] जीवूं[48] भलुं; बीजी परि[49] काग घणूं[50] जीवि[51] अनि[52] जंम्म[53] सघलु[54] यारा[55] पाइं.[56]

सुपूरा स्यात्कुनदिका सुपूरो मूषकाञ्जलिः ।
सुसंतुष्टः कापुरुष स्वल्पकेनापि तुष्यति ॥ ४० ॥

नांन्ही[57] नदी थोडि[58] पूराई[59] अनि[60] उदरनी[61] पसली[62] थोडि[63] पूराइं[64] अनि[65] [तिम हीन][66] पूरुप[67] थोडि[68] संतोपाइं.[69] वली,

कि तेन जातु जातेन मातुर्यौवनहारिणा ।
आरोहति न य स्वस्य वंशस्याग्रे ध्वजो यथा ॥ ४१ ॥

जिम ध्वजा वासना[70] अग्रनिइ[71] व्यपि[72] [बि]सि[73] तिम जे[74] पूरूप[75] आपणा[76] वंस्यमाहि[77] अग्रधुरि न होइ[78] ते पूरूपनो[79] जन्म केवल[80] मातानु[81] यौवन हरवानि[82] अर्थी.[83]

जातस्य[84] नदीतीरे तस्यापि तृणस्य जन्मसाफल्यम् ।
यत्सलिलमज्जनाकुलजनहस्तालम्बनं भवति ॥ ४२ ॥

जे तृण नदीनइ[85] काठि[86] ऊगइं[87] तेनु[88] जंन्म[89] सफल जिणि[90] वुडतू[91] मुनुष्य[92] आकूलू[93] थकु हाथि झूबीनइ[94] रहिउ.[95]

परिवर्तिनि ससारे मृत को वा न जायते ।
जातस्तु गण्यते सोऽत्र य स्फुरत्यन्वयाधिकम् ॥ ४३ ॥

ससार प्रवर्तति मूउ[97] थकु[98] कोण[99] नथी उपजतू,[100] सहू उपजइ[1] छइ,[2] पण जन्म तेहेउ[3] गणीइ[4] जो वशमाहि[6] अधिक जाणीइ[7]

स्तिमितोन्नतसचारा जनसतापहारिण ।
जायन्ते विरला लोके जलदा इव सज्जना ॥ ४४ ॥

निश्चल बुद्धिनि[8] अनि[9] मोटी चालि[10] अनि[11] मुनुपना[12] सतापनि[13] फेडि[14] एह्वा मेघनी परि[15] पुरूप्य[16] थोडा ज होई ते सत्पुरूप्य[17]

अप्रकटीकृतशक्ति शक्तोऽपि जनस्तिरस्क्रिया लभते ।
निवसन्नन्तर्दारुणि लङ्घ्यो वह्निर्न तु ज्वलित ॥ ४५ ॥

समर्थ हुइ[18] ते[19] पूरूप[20] अनइ[21] आपणी शक्ति प्रगट[22] न करि[23] ते[24] पूरूप[25] तिरस्कारनि[26] पामिट[27] जिम काष्टमाहिनु[28] वैश्वानर प्रगट[29] पामि[30] लो[31] [9 B]कि उल्डीट[32] छ.[33]

करटक कहितु[३४] हुउ,[३५] आपणइ[३६] हवडा प्रधान[३७] नहीं[३८] तो एणे[३९] व्यापारि[४०] सु[४१] प्रयोजन? बोल्यू[४२] छिइ,[४३]

अपृष्टो य प्रधानोऽपि ब्रूते राज्ञ पुर कुधी ।
न केवलमसंमान लभते च विडंबनम् ॥ ४६ ॥

प्रधान[४४] थकु[४५] जे पुरूष[४६] राजा आगेलो[४७] अणपूछ[४८] थकु[४९] जे कुबुध[५०] बोलइ[५१] ते अपमान[५२] पामइ[५३] अनि[५४] घणी विडबना पामि[५५] वली,[५६]

वचस्तत्र प्रयोक्तव्य यत्रोक्त लभते फलम् ।
स्थायीभवति चात्यन्त राग शुक्लपटे यथा ॥ ४७ ॥

पूरूषे[५७] वचन त्याग[५८] बोलवू[५९] जहा[६०] [बोल्यु][६१] लागिइ[६२] अनिइ[६३] फल पामिइ[६४] अनिइ[६५] स्थिर[६६] होइ जम[६७] धुलि[६८] वस्त्रे[६९] रग स्थिर होइ[७०]

दमनक कहितो[७१] होउ,[७२] भाइ[७३] करटक,[७४] एह्व म बोलिश

अप्रधान प्रधान स्याद्यदि सेवेत पार्थिवम् ।
प्रधानोऽप्यप्रधान स्याद्यदि सेवाविवर्जित ॥ ४८ ॥

जे[७५] पूरूष[७६] प्रधान[७७] नोहि[७८] अनि[७९] राजानी शिवा[८०] करि[८१] ति[८२] प्रधान[८३] हिइ[८४] अनि[८५] प्रधान[८६] थको राजानी शेवा[८७] न करि[८८] तिहू[८९] [प्रधा]नपणू[९०] जाइ वली बोल्यू[९१] छिइ,[९२]

आसन्नमेव नृपतिर्भजते मनुष्य
विद्याविहीनमकुलीनमसगत वा ।
प्रायेण भूमिपतय प्रमदा लताश्च
यत्पार्श्वतो भवति तत्परिवेष्टयन्ति ॥ ४९ ॥

जे[९३] पूरुष[९४] विद्याहीनइ[९५] थकु,[९६] अकुलीन थकु,[९७] कुरूप[९८] थकि[९९]

जु[१००] राजा समीप[१] रहि[२] तु[३] राजा तेहनइ[४] घणू[५] भजइ[६] अनइ[७] राजानुं,[८] स्त्रीनु,[९] वेलिनु[१०] एह ज स्वभाव जे पासि[११] रहि[१२] तेहि[१३] वींटि[१४]

कोपप्रसादवस्तूनि ये विचिन्वन्ति सेवका ।
आरोहन्ति शनैस्त च धुन्वन्तमपि पार्थिवम् ॥ ५० ॥

जे शेवक[१५] राजाना कोपनिड[१६] सहि[१७] अनि[१८] प्रमाद कीधु[१९] हु[२०] तेहनइ[२१] वहि[२२] ने पुरूष[२३] राजाना अणगमताइ[२४] थकु[२५] मोटा थाइ[२६]

विद्यावता महेच्छाना शिल्पविक्रमशालिनाम् ।
सेवावृत्तिविदा चेव नाश्रय पार्थिव विना ॥ ५१ ॥

ये[२७] पुरूष[२८] विद्यावत होइ[२९] अनइ जे[३०] मोटी आशाना[३१] धणी, [10 A] जे[३२] करीगरी जाणि,[३३] जे[३४] पराक्रमीं[३५] हुइ,[३६] जे[३७] शेवा[३८] करी जाणि[३९] तेहनइ[४०] राजा विना अनेरो[४१] आश्रिय[४२] नही[४३]

ये जात्यादिमहोत्साहान्नरेन्द्रान्नोपयान्ति च ।
तेपामामरण भिक्षा प्रायश्चित्त विनिर्मितम् ॥ ५२ ॥

जे जाति आदि करी घणा गुणवत हुइ,[४४] अनइ उद्यमी हुंइ[४५] एह्वा जि[४६] राजा कहि[४७] न जाइ[४८] तिहना[४९] पापनु प्रायश्चित भिक्षा जाणवी[५१]

ये च प्राहुर्दुरात्मानो दुराराध्या हि भूभुज ।
प्रमादालस्यजाड्यानि ख्यापितानि निजानि तै ॥ ५३ ॥

जि[५२] दुरात्मा पुरूष इम कहि[५४] जे राजा दुराराध्य ते पुरूष[५६] आपणपानू[५७] असावधानपणू[५८] अनि[५९] आलस अनि[६०] मूर्खपणू[६१] प्रगट[६२] करि[६३]

सपान्व्याघ्रान्गजान्सिंहान्दृष्ट्वोपायैर्वशीकृतान् ।
राजेति कियती मात्रा धीमतामप्रमादिनाम् ॥ ५४ ॥

जे[६४] उदमी[६५] अनिइ[६६] बुध्यमंत[६७] ति[६८] सर्पनि,[६९] व्याघ्रनि,[७०] हाथीनइ,[७१] सिइनइ[७२] दृष्टिमात्रि[७३] वसि[७४] करिइ[७५] छइ[७६] तो राजा शा माहि ?[७७]

राजानमेव संसृत्य विद्वान्याति परोन्नतिम् ।
विना मलयमन्यत्र चन्दनं न विवर्द्धते ॥ ५५ ॥

विद्वांस राजानि[७८] ज[७९] आश्रयीनि[८०] मोटिमपणानइ[८१] पामि[८२] बीजी परि[८३] नही;[८४] ति[८५] दृष्टांत[८६] मलयाचल पर्वत[८७] विना चंदन[८८] वृद्धि न पांमई.

धवलान्यातपत्राणि वाजिनश्च मनोरमाः ।
सदा मत्ताश्च मातंगाः प्रसन्ने सति भूपतौ[८९] ॥ ५६ ॥

शितातपत्रच्छत्र[९०] अनि[९१] रूप[९२] [उत्तम][९३] घोडा अनि[९४] [मत्त][९५] हस्ती, एतला[९६] वांनां[९७] धारितो[९८] हुइ[९९] जु[१००] राजा[१] तूसिइ.[२]

करटक कहि[३] छइ,[४] अहो दमनक, तूं[५] शूं[६] करवा हीडइ[७] छइं[८] ? दमनक कहि[९] छइ,[१०] ए पिंगलक सिंह[११] आपणुं[१२] स्वामी ए[१३] बीहतु[१४] छइं[१५] अनइ एहनो[१६] परिवार पण बीहतु[१७] छइ,[१८] ते भणी पिंगलक पूछी, भयनुं[१९] कारण जाणीनिइ[२०] संधिविग्रह आदि करी अनिरा[२१] जे[२२] गुण तिणे[२३] करी सिंहनुं[२४] भय फेडीशिइं.[२५] करटक कहितो[२६] हूउं[२७], अहो[२८] तु[२९] किम जाणीइं[३०] ए पिंगलक भयभीत [छइ][३१] ? [10-B] दमनक कहितु हूउ,[३२] बुद्धयवंतनइ[३३] काइ[३४] अणजाणूं[३५] नथी. बोल्युं छइं,[३६]

उदीरितोऽर्थः पशुनापि गृह्यते,
हयाश्च नागाश्च वहन्त्युदीरिताः ।
अनुक्तमप्यूहति पण्डितो जनः
परेङ्गितज्ञानफला हि बुद्धयः ॥ ५७ ॥

कह्यु[37] अर्थ[38] पशु[39] जाणि,[40] घोडा[41] [हाथी[42]] पुठी[43] प्रेराधा[44] वहइ[45], अनि[46] अणकह्यु[47] पंडित जाणिटं;[48] ते भणी बुद्धइ[49] पीअरो[50] चित्तनि[51] जाणइं.[52]

आकारैरिङ्गितैर्गत्या चेष्टया भाषणेन च ।
नेत्रवक्त्रविकारैश्च[53] गृहीतान्तर्गत[54] मन ॥ ५८ ॥

आकारि[55] करी,[56] गति[57] करी, चालि[58] करी, चेष्टाइ[59] करी, बोलि[60] करी, आषि[61] देषी,[62] मुष[63] देषी,[64] एतला[65] देषीनि[66] मनुष्यिनु[67] चित्त जाणीइं.[68]

ते भणी ए[69] सिंहनि[70] भयव्याकुल थकुउ[71] निर्भय करीनि[72] माहरी[73] बुद्धिनि[74] प्रभावइ[75] वश करीनि[76] माहूरी[77] प्रधानपद पामीश ”[78] करटक कहितो[79] होउ,[80] दमनक, तुं[81] शिवाधर्म[82] न जाणि,[83] किम ए सिंहनि[84] वशि[85] करीश[86]? दमनक कहितु[87] हूंउ,[88] [किम हुं][89] सेवा न जाणु[90]? सि[91] वापनि[92] बोली[93] बेठा[94] नाहानाहा[95] थका पीता कह्ने नीतिशास्त्र साधु[96] भणता[97] साभलु[98] छट[99] तेह भणी सेवाधर्मनु[100] सार ति[1] मि[2] हैटइ[3] राषू[4] छटं[5] साभलीइ[6] छट,[7]

सुवर्णपुष्पिता पृथ्वीं विचिन्वन्ति नरास्त्रय ।
शूरश्च कृतविद्यश्च यश्च जानाति सेवितुम् ॥ ५९ ॥

सोनानइ[8] फूलि[9] फूली पृथ्वीनि[10] ते[11] पूरूप[12] भोगवइ[13] जे[14] शूर होट,[15] विद्यावंत[16] हुइ[17] अनइ सेवा करी[18] जाणइ.[19] ते सेवा जिम[20] कीजइ[21] त्यम[22] साभलि,[23]

प्रिया हिताश्च ये राज्ञा, ग्राह्यवाक्या विशेषत ।
आश्रयेत् पार्थिवं विद्वान्, तद्द्वारेणैव नान्यथा ॥ ६० ॥

जे[24] राजाना प्रिय हुइ[25] अनिट[26] हित हुइ,[27] राजानी[28] वात

सांमल्ता[29] हुइं[30], एनलानी[31] शेवा[32] करवी जि[33] राजानी[34] सेवा[35] करवा हीडि.[36]

> यो न वेत्ति गुणान्यस्य[37] न तं सेवेत पण्डितः ।
> न हि तस्मात्फलं किंचित् सुकृष्टादूषरादिव ॥ ६१ ॥

जि[38] राजा सेवकना गुणनि[39] न जांणिइ[40] [II-A] पंडिते [ते][41] राजा न शेववो;[42] ते शेव्या[43] पछी फल न हुइं[44] यम[45] उसनी[46] भोइं[47] घणूइं[48] प्येडीइ[49] पुण[50] कांइइ[51] न ऊगिइ.[52]

> अपि स्थाणुवदासीनः शुष्य[53]न्परिगतः क्षुधा ।
> न त्वेवानात्मसंपन्नाद् वृत्तिमीहेत पण्डितः ॥ ६२ ॥

जे[54] पुरुष सेवा करतो पीलानी[55] परि[56] उंभु रहेइं[57] अनइ[58] क्षुधांइं[59] व्यापो[60] होइं[61] पण[62] आपणपानि[63] दुंष्य[64] न आणिइ[65] ते पुरुष[66] राजानी वृत्ति[67] भोगविइं.[68]

> सेवकः स्वामिनं द्वेष्टि कृपणं परुषाक्षरम् ।
> आत्मानं किं न स द्वेष्टि सेव्यासेव्यं न वेत्ति यः ॥ ६३ ॥

जे[69] शेवक[70] स्वामीनि[71] कृपण[72] देषीनिइं[73] श्वामीनि[74] कठिण वचनि[75] करी द्वेष करइ,[76] ते पुरुष आपणपानि[77] ज कां[78] द्वेष न करि![79] जे भणी एह्वा श्वामीनि[80] सेविइं[81] ते सेवा न जाणइ.

> यमाश्रित्य न विश्रामं क्षुधार्ता यान्ति सेवकाः ।
> सोऽर्कवन्नृपतिस्त्याज्यः सदापुष्पफलोऽपि सन् ॥ ६४ ॥

जे[82] राजानि[83] आश्रईनि[84] सेवक भूषा[85] जाइं[86] ते राजा फूल्या[87] फल्या आगकी[88] परि[89] छाडइ.[90]

> राजमातरि देव्यां च कुमारे मुख्यमन्त्रिणि ।
> पुरोहिते प्रतीहारे सदा वर्तेत राजवत् ॥ ६५ ॥

राजानी राणीनइ,[९१] राजानी[९२] मानिति,[९३] कूअरिनिइ,[९४] वडा प्रधान-निटं,[९५] पुरोहीतनि,[९६] द्वारपालनिइं,[९७] एतलांनि[९८] राजानी परि[९९] सेववूं.[१००]

जीवेति प्रब्रुवन्प्रोक्तः कृत्यं कृत्यविचक्षणः ।
करोति निर्विकल्पं यः स भवेद्राजवल्लभः ॥ ६६ ॥

जे[१] सेवक राजानु[२] बोलाव्युं[३] जी कहइ[४] अनि[५] काज[६] दीधूं[७] निकपट[८] करि[९] ते राजानि[१०] वल्लभ हुइं[११].

प्रभुप्रसादजं वित्तं सुपात्रे यो नियोजयेत् ।
वस्त्राद्यं विदधात्यङ्गे स भवेद्राजवल्लभः ॥ ६७ ॥

राजाइं[१२] आप्यो[१३] द्रव्य सुपात्रनि[१४] आपिइ[१५] अनि[१६] राजाइं[१७] वस्त्र आप्यां[१८] हुइं[१९] ते डीलि[२०] पिहिरिइ,[२१] ते राजानइ[२२] वल्लभ हुइ.[२३]

प्रोक्तः प्रत्युत्तरं नाह विरुद्धं प्रभुणा च यः ।
न समीपे हसत्युच्चैः स [11-B] भवेद्राजवल्लभः ॥ ६८ ॥

जे[२४] सेवक[२५] पूछ्या[२६] थकु विरूध न बोलि,[२७] राजा पासि[२८] मोटि[२९] हसे[३०] नही,[३१] ते राजानि[३२] वल्लभ हुइं.[३३]

अंतःपुरचरैः सार्धं यो न मैत्रीं[३४] समाचरेत् ।
न कलत्रैर्नरेन्द्रस्य स भवेद्राजवल्लभः ॥ ६९ ॥

जे[३५] अंत पुरना रहणारशूं[३६] जे[३७] प्रीति न करइ[३८] अनि[३९] राजानी[४०] स्त्रीसु[४१] मैत्री न करि[४२] ति[४३] राजानि[४४] वल्लभ हुइं.[४५]

संमतोऽहं विभोर्नित्यमिति मत्वा व्यतिक्रमेत् ।
कृच्छ्रेष्वपि न मर्यादां स भवेद्राजवल्लभः ॥ ७० ॥

जे[४६] पुरुष गाढइ[४७] दोहिलि[४८] पडि[४९] पण[५०] मर्जादा[५१] न छाडिइ,[५२] हू[५३] राजानइ[५४] मान्य[५५] छु एहवूं[५६] जाणितो[५७] राजानि[५८] वल्लभ हुइं.[५९]

द्वेषिद्वेषपरो नित्यमिष्टानामिष्टकर्मकृत् ।
यो नरो नरनाथस्य स भवेद्राजवल्लभ ॥ ७१ ॥

जे[६०] पूरुष[६१] राजाना शत्रूशुं[६२] वइर[६३] करइ[६४] अनिइ[६५] मित्रसु[६६] मैत्री करइ[६७] ते राजवल्लभ हुइ.[६८]

न कुर्यान् नरनाथस्य योऽरिभि सह सगतिम् ।
न निन्दा न विवाद च स भवेद्राजवल्लभ ॥ ७२ ॥

ठाकुरना सत्रुसु[६९] जि[७०] सगति न करि[७१] जे[७२] केहेनी[७३] न्यदा[७४] न करि,[७५] अनि[७६] विवाद न करि[७७] ते राजानि[७८] वल्लभ हुइं.[७९]

यो रणं शरणं यद्वन् मन्यते भयवर्जित ।
प्रवास स्वपुरावास स भवेद्राजवल्लभ ॥ ७३ ॥

जे[८०] संग्रामनि[८१] ठामि[८२] आवि[८३] शरणे[८४] आव्यानी[८५] परि मानि,[८६] अनि[८७] परदेश[८८] आपणा नगरनी परि[८९] चित्तमाहि[९०] मानि,[९१] ते राजनि[९२] वल्लभ हुइ.[९३]

युद्धकालेऽग्रगामी स्यात्सदा पृष्ठानुग पुरे ।
प्रभुद्वाराश्रितो हर्म्ये स भवेद्राजवल्लभ ॥ ७४ ॥

जे[९४] पुरुष राजानि जुधकालि[९५] आगिलि[९६] थाई,[९७] अनइ[९८] नगर-माहि सदा पाछलिथो[९९] चालइ[१००] [अनइ राजा घर मध्ये जाइ तिवारे राजाने द्वारि रहइ][१] ते राजानइ[२] वल्लभ हुइ[३]

द्यूत यो यमदूताभ हाला हालाहलोपमाम् ।
पश्येत् स स्त्रीं यथा नक्री स भवेद्राजवल्लभ ॥ ७५ ॥

जे[४] जु[५] रमवानि[६] बीहि[७] जिम जिमना[८] दूत थकी[९] बीहिइ[१०] अनिइ[११] स्त्रीयी ज[१२] बीन्हइ[१३] जम[१४] उग्रधरथी बीहि[१५] ते राजवल्लभ [12-A] [हुइं][१६]

नृपस्य भावं जानीयात् यस्य या प्रकृतिर्भवेत् ।
धर्मे वाप्यथवा पापे वर्तितव्यं स्वमिच्छता ॥ ७६ ॥

जे[17] राजानु[18] भाव जाणइ[19] अनइ[20] जेह[21] प्रकृति[22] स्वभाव हुइं[23] ते जाणी[24] धर्मं[25] तथा अधर्मे[26] धननि[27] इछड तेणे[28] प्रवर्त्तवूं.[29]

करटक कहि[30] छिइ,[31] अहो दमनक तूं[32] प्रथम सैहं[33] कंन्हइं[34] जैटनिइं[35] शु[36] बोलि[37] ति[38] कहिंद.[39] दमनक कहितु[40] हूंउः[41]

उत्तरादुत्तरं वाक्यं वदतां संप्रजायते ।
सुवृष्टिगुणसंपन्नाद्वीजाद्वीजमिवापरम् ॥ ७७ ॥

बोलतां उत्तर उपेरि[42] उत्तर ऊपजिइ[43] जम[44] रूडी वृष्टि[45] करी नीपनुं[46] जे[47] बीज तेथी[48] बीज[49] ऊपजिइं.[50]

करटक बोल्यो.[51]

अपायसंदर्शनजां विपत्तिमुपायसंदर्शनजा च सिद्धिम् ।
मेधाविनो नीतिगुणप्रयुक्ता पुरः स्फुरन्तीमिव वर्णयन्ति ॥ ७८ ॥

बुद्धिमंति[52] ये पुरूप[53] हानिथी[54] उपजइ[55] जे आपदा तेन्हंइ[56] देषइ[57] अनिइं[58] ऊपाय थकी[59] ऊपजिइ[60] सिद्धि[61] तिन्हेइं[62] देषइं[63] ति[64] न्यायना[65] गुणथी दृष्टि[66] उदय अनइं[67] न्यास[68] देषइं[69] वली,

एकेषा वाचि शुकवदन्येषां हृदि मूकवत् ।
हृदि वाचि तथान्येषा वल्गु वल्गन्ति सूक्तयः ॥ ७९ ॥

कितलानि[70] वाणी[71] पोपटना[72] सरषी[73] अनिद[74] हैदं[75] मुंगानी[76] परि,[77] अनिदं[78] केनलाएकनइ[79] हईं[80] मुपे रूड़[81] य[82] होइं.[83]

दमनक बोल्यो,[84] ऐहूं[85] कहि[86] छिइ[87] पण राजान दुराराध्य होइ.[88] कहै,[89]

भोगिनः कञ्चुकाविष्टाः कुटिलाः क्रूरचेष्टिताः ।
सुदुष्टा मन्त्रसाध्याश्च राजानः पन्नगा इव ॥ ८० ॥

जिम[10] सर्प्प[11] कांचलीइ[12] वींट्यो[13] होइ[14] अनइ[15] कुटिलं होइ[16] अनइ[17] क्रूर होइ अनि[18] दुष्ट अनिइ[19] मंत्रसाध्य, ऐहा[20] राजा पण हुइं.[21]

स्वल्पमप्यपकुर्वन्ति येऽप्यनिष्टं महीपतेः ।
ते वह्नाविव दह्यन्ति पतंगाः पापचेतसः ॥ ८१ ॥

जे[1] राजानइं[2] थोडूंहइ[3] वरूउ[4] चीनवइ[5] अनइ[6] करि[7] ते दाहनइ[10] पामि,[11] पतंगीया जेम[12] पामि[13] वैश्वानरमाहि[14] तिम पामइ.[15]

दुरारोहं पदं राज्ञां नीत्या सर्वत्र संक्रमम् ।
स्वल्पेनाप्यपकारेण [12-B] ब्राह्मणमिव दुष्यति ॥ ८२ ॥

राजानो पद[16] दुराराध्य[17] होइ,[18] सघलि[19] न्यांइ[20] करी चालइ[21] अनइं[22] थोडइं[23] पाहूंइ[24] कीधइं[25] ब्राह्मणपणानी परि[26] जाइं, हाथिथी जाइ.

दुराराध्याः श्रियो राज्ञां दुरापा दुष्परिग्रहाः ।
तिष्ठन्त्याप इवाधारे चिरमात्मनि संस्थिताः ॥ ८३ ॥

राजाननें[27] ते[28] स्त्री दुराराध्य हुंइं,[29] दुम्वि[30] कन्हलि[31] रहिवाइं,[32] दुख[33] पांनीये;[34] ऊंठकनी[35] परि[36] ठामि[37] रापता[38] दोहिली[39] हुइं.[40]

दमनक बोल्यो, ए कह्युं[41] ते सत्य; पण,

यस्य यस्य हि यो भावस्तस्य तस्य हि तं नरः ।
अनुप्रविश्य मेधावी क्षिप्रमात्मवशं नयेत् ॥ ८४ ॥

मनुष्यि[42] राय्यमाहि[43] ज्येह्नो[44] जेह्नउ[45] भाव जेह्नउ[46] हुइ[47] तेह्नै[48] तेह्नुं[49] हित[50] माहि पइसीनिइं[51] करयूं,[52] अनिइ[53] आपणइ[54] वशि वेगुं[55] कीजइं.[56]

भर्तुश्चित्तानुवर्तित्वं सुवृत्तं चानुजीविनाम् ।
राक्षसाश्चापि गृह्यन्ते नित्यं छन्दानुवर्तिभिः ॥ ८५ ॥

राजानी[७] चित्तवृत्ति करवी, अनइ राजाना सेवकनी अनुवृत्ति करवी, निश्चे ये[८] छंदानुवृत्ति[१] होइ ति स्थिरनिनइ[१३] पामइ[४] वली,

सरुपि नृपे स्तुतिवचन तदभिमते प्रेम तद्विषि द्वेष
तद्दानस्य च शंसा अमन्त्रतन्त्रं वशीकरणम् ॥ ८६ ॥

जिहारि राजा क्रोधी हुइ[६७] तिवारि[८] स्तुतिवचन बोलइ[९९] अनि[९] राजा मानि[५१] मनि ते मानइ अनिइ जे ऊपरि[९४] द्विष[६] करिइ[७५] ते उपरे[७७] द्विष[७] करइ[८] अनिइ[८०] राजाना दाननी[१] स्तुति करिइ,[८२] एतला प्रधानट[८३] राजा वसि[८४] करवाना उपाय छइ[८]

करटक कहितु[८] हुउ[८७] अहो[८८] जो[९] तइ एह[१] कह्यु तो तून्हिइ[३] सिंह कन्हिइ[४] जाता कल्याण हजो अनइ[७] वाछ्यो[९८] पदारथ[९] हुग्यो[१०] पछिइ[१] दमनक करटकनि नमस्कार करीइ[३] सिंह[४] कन्हि चाल्यो पिंगलक सिंह दमनक आवतो दषीनइ द्वारि रहीनिइ[७] बोलतो हुउ[८] अहो द्वारपाल ए दमनक माहरु परम जुनो[९] मित्रनु पूत्र[११] छइ[१] ते आवि[१३] छइ[४] ते आववा देय्यो[१] तोहइ[१६] ईहा बीना माडली करी रहइ[१] तवार[८] पछी दमनक त्या[13–A]हो[११] आवी पिंगलकनि[२] नमस्कार करी आपइ[१] आसनि विठु[२२] पिंगलक तिहा[१] दमनकनी पूठि ऊपरि[४]था पजीनइ तेन्हिइ[२] नामिइ[७] बोला-वीनि[२] आपणपइ बोल्तु[१] हुउ[१] अहो कल्याण[३२] छइ[३३] तू[४] घणि[३५] दीवसिइ[१] दीठो छइ[१] दमनक कहितु हुवउ[३९] काइ[४०] अमनि[४१] राउला वरणनो[१] पण प्रीयोजन[४३] नथी अनि[४४] रानानइ[४] उत्तम मध्यम[४] हीन एहनु प्रयोजन हुइ[४७] ते भणी थोडू[४८] अवसर य्योग्य[४] बोल्यू बाल्यू[१] छिइ

दन्तस्य निष्कोषणकेन राजन्
कर्णस्य कण्डूयनकेन वापि ।
तृणेन कार्यं भवतीश्वराणां
किमङ्ग वाग्घस्तवता नरेण ॥ ८७ ॥

दिंत[५३] पोतरवा,[५४] कान[५५] पजूआलवानि[५६] राजानि[५७] तृणि[५८] पण काज[५९] हुंइ.[६०] पळइं[६१] ज्येन्हइ शरीर[६३] वाणी[६४] हाथ पग,[६५] एतला जेहनइ[६६] हुइं[६७] तेणि[६८] राजानि[६९] घणूं[७०] प्रयोजन हुइं.[७१]

अनिइ[७२] अह्मो[७३] तह्मारा[७४] वैदेशिना[७५] शेवक[७६] छूं.[७७] आपदाइ[७८] छता[७९] राउलपृष्टगामी[८०] छूं[८१], जु[८२] अह्मे[८३] स्वामीनुं[८४] कार्य्य[८५] नथी पांमता[८६] तोहि.[८७] वोल्युं[८८] छइ,[८९]

स्थानेष्वेव नियोज्यन्ते भृत्याश्चाभरणानि च ।
न हि चूडामणिः पादे प्रभावादिति[९०] बध्यते ॥ ८८ ॥

[13-B] शेवक[९१] अनिइं[९२] आभरण आपणि[९३] आपणि[९४] ठामि[९५] ज[९६] रापवा. जिहेंई[९७] आपणो प्रभाव घणो हुंइ[९८] तुहि[९९] माथानो[१००] मणिइं[१] कोइ पगे[२] न बाधइ. अनि,[३]

अनभिज्ञो गुणानां यो न भृत्यैरनुगम्यते ।
धनाढ्योऽपि कुलीनोऽपि क्रमायातोऽपि भूपतिः ॥ ८९ ॥

धन्याढ्य हुइं,[४] कुलीन हुइ[५] कुल्हनि[६] चालु[७] आवुं[८] हुइं[९], एहुंइ[१०] जे[११] राजा शेवकना[१२] गुण न जाणि[१३] तिन्हि[१४] शेवक[१५] न सेवइं[१६].

असमैः समीयमानः समैश्च परिहीयमाणसत्कारः ।
धुरि यो न युज्यमानस्त्रिभिरर्थपतिं त्यजति भृत्यः ॥ ९० ॥

जे[१७] सेवक नीच संघाति[१८] सम कीजिइ[१९] अनि[२०] मरपा हुइ[२१] नि[२२] समान[२३] पूज्या[२४] न पामइ[२५] अनि[२६] धुरि न करीइ,[२७] एह्वि[२८] त्रंणि[२९] प्रकारि[३०] शेवक[३१] राजानइ[३२] छांडइ.[३३]

यच्चाविवेकतया राज्ञा भृत्यानुत्तममध्यमाधमस्थान्नियोजयेत् ।
ते न तत्रैव तिष्ठन्ति स भूपतेर्दोषा न तेषाम् ॥ ९१ ॥

जे[34] राजा शेवकनि[35] उत्तम मध्यम हीन स्थाननि[36] व्यपि[37] मुक्या[38] थका[39] हीन कर्मादि[40] करि[41] ते राजानो दोष, शेवकनु[42] दोष[43] नही.[44] बोल्युं छइं[45] :

कनकभूषणसंग्रहणोचितो
यदि मणिस्त्रपुणि प्रतिबध्यते ।
न स विरौति स चापि न शोभते
भवति योजयितुर्वचनीयता ॥ ९२ ॥

जि[46] मणिणि[47] सुवर्णनि[48] आभरणिइं[49] जडवा[50] जोग्य[51] ते मणिनि[52] जो ये[53] तरूंड[54] जडी[55] नि वाधु[57] तु[58] मणि[59] दूहवण[60] नांणट[61] अनइ शोभि[62] नहीं[63] पण वाधनारनइ[64] लोक पोडि[65] दिट.[66]

जे[67] स्वामिन[68] तूं[69] सिंह महू[70] कहि[71] छट,[72] घणा[73] दिवसि[74] तूं[75] दीसि[76] छिट,[77] तेन्हि[78] कारण सामलि[79]

सव्यदक्षिणयोर्यत्र विशेषो नास्ति हस्तयो ।
कस्तत्र क्षणमप्यार्यो विद्यमानगतिर्वसेत् ॥ ९३ ॥

जिहा डावा नी[80] जिमणा[81] हाथनु[82] विवेक नुहि[83] तिहा भलु[84] अनि[85] जेन्हि[86] ठामि[87] हुइ[88] ति[89] न रहे.[90]

काचो मणिर्मणि काचो येषा बुद्धिर्विकल्पते ।
न तेषां सनिधौ भृत्यो [14-A] नाममात्रोऽपि तिष्ठति ॥९४॥

ज्याहां[91] काच मणिनि[92] ठामि[93] अनइं[94] मणि काचनि[95] ठामि, ते राजानि[96] समीपि[97] शेवकनूं[98] नामि[99] न रहि.[100]

निर्विशेषो यदा स्वामी सम भृत्येषु वर्तते ।
तत्रोद्यमसमर्थानामुत्साह परिहीयते ॥ ९५ ॥

यह्वारि[1] राजानइ[2] भला सेवक नइ[3] पाडूंआ[4] शेवकनि[5] व्यशेप[6] न हुइ[7] त्याहां[8] उद्यमी[9] सेवकनु[10] उद्यम जाइ.[11] वली,

न विना पार्थिवो भृत्यैर्न भृत्याः पार्थिवं विना ।
तेषां च व्यवहारोऽयं परस्परनिबन्धनः ॥ ९६ ॥

राजा सेवक पापइ[12] न रहि[13] अनि[14] सेवक राजा पापि[15] न रहि;[16] शेवक[17] अनिइ[18] राजानु[19] ए व्यवहार छिइ.[20]

भृत्यैर्विना स्वयं राजा लोकानुग्रहकारिभिः ।
मयूखैरिव[21] दीप्तांशुस्तेजस्व्यपि न शोभते ॥ ९७ ॥

लोकनि[22] हित करि[23] एहवा[24] जे सेवक ते पापि[25] राजा न शोभि[26] ,जिम तेजवंत जे सूर्य ति[27] क्यरण[28] पापि[29] न शोभे.[30]

अरैः संधार्यते नाभिर्नाभौ आराः प्रतिष्ठिताः ।
स्वामिसेवकयोरेवं वृत्तिचक्रं प्रवर्तते ॥ ९८ ॥

आरि करी नाभिचक्र धरीये छइ.[31] नाभ्यनि[32] व्यपिइ[33] आरा छइ[34] एणी[35] परि[36] स्वामी[37] अनइ[38] शेवकि[39] करी राज्यचक्र प्रवर्त्तिइ.[40]

शिरसा विधृता नित्यं तथा स्नेहेन पालिताः ।
अपि केशा विरज्यन्ते निःस्नेहाः किं न सेवकाः ॥ ९९ ॥

स्यते[41] माथइ[42] धार्या[43] अनि[44] स्नेहे[45] जे तेल[46] तिणि[47] वधार्या[48] एहा केश[49] तेह[50] विराग रूपपणूं[51] निहि[52] पांमइ;[53] पछि[54] स्नेहरहित[55] शेवक[56] विरागनि[57] तु[58] पामि[59] ज.[60]

राजा तुष्टोऽपि भृत्यानामर्थमात्रं प्रयच्छति ।
तेऽपि संमानमात्रेण प्राणैरप्युपकुर्वते ॥ १०० ॥

राजा त्रुटोथो[61] जे[62] द्रव्य देइ[63] अनइ[64] शेवक[65] राजानि[66] मांनि[67] जि[68] आपणा ज्युद्धनिइ[69] व्यपिइ[70] [प्राण दे].[71]

एवं ज्ञात्वा नरेन्द्रेण भृत्याः कार्या विचक्षणाः ।
कुलीनाः[७२] शौर्यसंयुक्ताः[७३] शक्ता भक्ताः क्रमागताः ॥ १०१ ॥

[14-B] एहूं[७४] जांणीनि[७५] राजाइं[७६] चतुर कुलीन[७७] शूर समर्थ भक्त पूर्वे[७८] च्याल्या[७९] आवि[८०] एहवा[८१] शेवक[८२] करवा.

यस्य कृत्यं समावेश्य निर्विकल्पेन चेतसा ।
आस्यते सेवकः स स्यात्कलत्रमिव चापरम् ॥ १०२ ॥

जे[८३] शेवक[८४] राजानुं[८५] कार्ज[८६] करी निश्चंत[८७] रहि[८८] ते शेवक,[८९] वीजा वैअरि[९०] जांणवा.[९१]

यः कृत्वा दुष्करं कर्म लज्जयाऽधोमुखस्थितः ।
नो ब्रूते सन्मुखं किंचित्तेन राजा सहायवान् ॥ १०३ ॥

जि[९२] सेवक कठिण कांम[९३] करीने[९४] अणबोल्यो वेसीनि[९५] रहि[९६] ते राजानो सहाय जांणवो.[९७]

यश्चाहूतः समभ्येति द्वारि तिष्ठति सर्वदा ।
पृष्टः सत्यं मितं ब्रूते तेन राजा सहायवान् ॥ १०४ ॥

जे[९८] शेवक[९९] बोल्युं[१००] आविइं[१] अनिइं[२] सदा बारि[३] बिठो[४] रहि[५] अनिइ[६] पूछ्या[७] पछी साचूं[८] बोलइं[९] तेणि[१०] शेवकि[११] राजा सहायवंत.

न गर्वं कुरुते मानेनापमाने न कुप्यति ।
स्वाकारं रक्षयेद्यस्तु स भृत्योऽर्हो महीभुजाम् ॥ १०५ ॥

गर्व[१२] न करइं[१३] मांन्य[१४] पांम्या[१५] पछी अनइं[१६] अपमान पाम्यां[१७] पछी कोपिइ[१८] नही; आपणूं[१९] स्वरूप रापइ[२०] ते सेवक राजानिइं[२१] जोग्य.[२२]

अनादिष्टोऽपि भूपस्य दृष्ट्वा हानिकरं च यः ।
यतते तस्य नाशाय स भृत्योऽर्हो महीभुजाम् ॥ १०६ ॥

जे[२३] शेनक अणरूछुंधु[२४] राजानि हाणि[२५] फिडे[२६] अनि[२७] रोग फेडवानि[२८] यत्न करइ[२९] ते शेनक[३०] राजानि[३१] शेव्यानि[३२] जोग्य[३३] हुंइं.[३४]

न क्षुधा पीडयते यस्तु निद्रया न कदाचन।
न च शीतातपाद्यैश्च स भृत्योऽर्हो महीभुजाम् ॥ १०७ ॥

जे[३५] सेनकनि[३६] भूप्य[३७] निद्रा शीततावड, एतला वाना[३८] जिन्हि[३९] न पीडिइ[४०] ते राजानि[४१] ज्योग्यि.[४२]

श्रुत्वा साग्रामिकीं वार्तां भाविनीं स्वामिनं प्रति।
येन सस्थेन नित्य च स भृत्योऽर्हो महीभुजाम् ॥ १०८ ॥

जीणि[४३] रहिंति[४४] राजानु[४५] हुणार[४६] संग्राम[४७] सांभलीइ[४८] अनि[४९] जे स्थिर रहिइ[५०] ते सेनक राजानि[५१] ज्योग्यि.[५२]

सी[15-A]मा सङ्कोचमायाति वह्नौ चर्म यथावृतम्।
येन सम्थेन स त्याज्यो भृत्यो राज्यं समीहता ॥ १०९ ॥

जे[५३] शेनक[५४] छता[५५] शीम[५६] गामनी[५७] थोडी थाइं[५८] अनिरा[५९] लि[६०] ते रूडुं वाछिंति[६१] राजाइ[६२] त्यजवो वली विशेप वचन बोलीइं[६३] छिइं[६४]

अश्व शस्त्र शास्त्रं वीणा वाणी नरश्च नारी च।
पुरुपविशेपं प्राप्ता भवन्त्ययोग्याश्च योग्याश्च ॥ ११० ॥

घोडा[६५] शाहास्त्र[६६] रोहेडा[६७] वाचा[६८] पुरूप[६९] स्त्री, एतला[७०] वांनां[७१] पुरुप विशेपनें[७२] पामी[७३] भलीइ[७४] अनि[७५] पाडुयाइ[७६] थाइ.[७७] अनि[७८] ए शीयाल[७९] एहुं[८०] जणीनिइं[८१] मू[८२] उपिरि[८३] स्वामी[८४] ति[८५] जि[८६] हूं[८७] अवगणीउ[८८] छू[८९] मांनतु[९०] नथी नि[९१] युक्त नही[९२] ये[९३] भणी,

विष्णु शूकररूपेण मृगरूपेण वा मुनि।
षण्मुख छागरूपेण पूज्यते किं न साधुभि ॥ १११ ॥

विष्णु सुअरनि[94] रूपि,[95] रूपि[96] मृगनेइ[97] रूपि,[98] स्वामि कार्त्तिकय[99] बोकडानइ[100] रूपि,[1] एतला[2] नीच रूप माटि[3] शूं[4] नथी पूजाता ?[5] सघलाइ[6] पूजीइं[7] छइ सत्पुरूषे.[8] वली,

नैतदं किं ततः सिंह गृहजाताश्चिरंतनाः ।
भृत्याः श्रेयस्करा राज्ञां अमात्यास्ते हिता इति ॥ ११२ ॥

अहो सिंह, एहु कांइं[9] नथी जे[10] सिवक[11] [घरना[12] ज होइ,[13] अनइ प्रधान तेह[14] ज होइ, अनइ तेह ज] राजाना हितकारी हुइं,[15] एहूं[16] नथी तो सु[17] अनिराइं[18] हुइं ?[19] वली बोल्यूं[20] छइं[21]:

कौशेयं कृमिजं सुवर्णमुपलाद्दूर्वापि गोरोमतः
पङ्कात्तामरसं शशाङ्क उदधेरिन्दीवरं गोमयात् ।
काष्ठादग्निरहेः फणादपि मणिर्गोपित्ततो रोचना
प्राकाश्यं स्वगुणोदयेन गुणिनो गच्छन्ति किं जन्मना ॥११३॥

पडसूत्र कीडाथी उपजिइं,[22] [शोनुं[23] पाहाणथी[24] ऊपजइ[25]], द्रो[26] गायना[27] रोमथी उपजइं,[28] [[29]कादवथी कमल], चंद्रमा समुद्र थकी[30] उपजेइं,[31] इंदीवर गायना[32] छांणथी,[33] अग्नि काष्टथी,[34] मणि सापना[35] फणिथी, गौरोचंदन[36] गायना[37] पित्तथी, एतलांनु[38] प्रकाश आपणि[39] गुणि[40] करी छइ;[41] पण जेथी[42] ऊपना[43] तेन्हे गुण[44] नही[45] तिम गुणवंतनो[46] प्रकाश आप[15-B]णि[47] गूणि[48] करी पण पितानि[49] गुणि[50] नही.[51] वली,

मूपिका गृहजातापि हन्तव्या सापकारिणी ।
उपप्रदानैर्मार्जारो[52] हितकृत्प्रार्थ्यते नरैः ॥ ११४ ॥

ऊंदिरी घरमाहि[53] ऊपनी[54] हुइं[55] अनि[56] व्यीणसाड[57] करिइं[58] ति[59] मारवी,[60] अनि[61] मार जि[62] कंदर्प ति[63] हित करी[64] तीणे[65] सहू वाछि.[66]

एरण्डभिण्डार्कनलैः प्रभूतैरपि सञ्चितैः ।
दारुकृत्यं यथा नास्ति तथान्यैः किं प्रयोजनम् ॥ ११५ ॥

एरंडा मीडा[६७] आकडानल ए रूडा अनि[६८] घणा[६९] हुइं[७०] तोहि[७१] एणि[७२] सागना काष्टनुं[७३] काम न सरि,[७४] तिम बीजि[७५] हीनि[७६] घणि[७७] काई[७८] नही.[७९]

किं भक्तेनासमर्थेन किं शक्तेनापकारिणा ।
भक्तं शक्तं च मां राजन् नावज्ञातुं त्वमर्हसि ॥ ११६ ॥

असमर्थ हुइं[८०] अनिइ[८१] भक्ति करइं[८२] तेणे[८३] शूं[८४] कीजिइ,[८५] अनिइं[८६] समर्थ हुइं[८७] अनि[८८] पाडू[८९] करे[९०] तेणे[९१] शूं[९२] कीजिइं ?[९३] अहो राजान् हूं[९४] भक्त अनिइं[९५] समर्थ छंउं;[९६] तु मुनि[९७] निरादर[९८] करवा जोग्य[९९] नही.[१००]

अवज्ञानाद्राज्ञो भवति मतिहीनः परिजन–
स्ततस्तत्प्राधान्याद् व्रजति न समीपे बुधजनः ।
बुधैस्त्यक्ते राज्ये भवति न तु नीतिर्गुणवती
विपन्नायां नीतौ सनृपमवशं नश्यति कुलम् ॥ ११७ ॥

राजाना अज्ञाणपणाथी[१] सेवक मतिहीन हूइं[२] अनि[३] सेवक[४] मति-हीन[५] थ्या पछी राजा समीपि[६] पंडित नाविइ,[७] अनि[८] पंडिते जे[९] राय[१०] छाडीयेइ[११] पछि[१२] राजनीति भली न हुइं,[१३] राजनीति निपर थ्या पछी राजा समित[१४] [कुल][१५] नाशि[१६] पामि.[१७]

सिंह कहि[१८] छइं,[१९] अहो दमनक तु[२०] समर्थ[२१] असमर्थ थकु[२२] जूना प्रधाननु[२३] पूत्र[२४] छेइं,[२५] ते भणी[२६] बोलिजे तूं[२७] बोल्वा हीडि[२८] छिइं.[२९] ते. दमनक बोल्यो, स्वामिन्[३०] काइं[३१] विनति छेइं.[३२] पिंगलक बोल्यो,[३३] तूं[३४] आपणो अभिप्राय बोलि. दमनक बोल्यो.[३५]

अपि स्वल्पतरं कार्यं यद्भवेत्पृथिवीपतेः ।
तन्न वाच्यं सभामध्ये प्रोवाचेदं बृहस्पतिः ॥ ११८ ॥

राजानुं थोड्डइ[36] कार्ज[37] जे[38] हुइं[39] ते[40] सभा मध्यि[41] न किहिवुं[42] एह्वां[43] [16-A] बृहस्पति[44] कहीइं.[45] ते भणी[46] माह्री विनती स्वामिन् एकाति[47] सांभलीइं.[48] यि[49] भणी,

पट्कर्णो[50] भिद्यते मन्त्रश्चतुष्कर्णस्तु गर्जति ।
द्विकर्णस्य तु मन्त्रस्य ब्रह्माप्यन्तं न गच्छति ।
तस्मात्सर्वप्रयत्नेन पट्कर्णं रक्षयेन्नृप ॥ ११९ ॥

जे[51] मंत्र छकन हुइ[52] ते भिदनि[53] पामिइं[54] अनि[55] चूकन[56] जे[57] मंत्र हुइं[58] ते गाजिइं;[59] बिकन[60] मत्रना पारनि[61] अति[62] ब्रंह्माइं[63] न जाणि;[64] ते माटि[65] सर्व्वे[66] प्रयत्नि प्यट्कर्ण[67] मंत्र राप्यवो.[68]

तवार[69] पछी पंगलकनु[70] अभिप्राय जाणीनिइ[71] समस्त वाध्य[72] हस्ती वरथडा[73] एहा[74] वचन साभली[75] तत्क्षण विगल्या[76] थ्या, पछिइ[77] दमनक बोल्तु[78] हउं,[79] स्वामिन्,[80] उदकप्रासनर्नि[81] जाता[82] थका[83] का[84] ये पाछा वली ईहा रह्या. पिंगलक केहितो[85] हवउ,[86] हसतो[87] थको[88] विपरीति[89] कहिनु[90] हूउ,[91] काई नही. दमनक बोल्यो, स्वामिन्, जो[92] कहिना शरपूं[93] न हुइ[94] तु[95] रहिवा[96] द्यो. बोल्यू[97] छिंइ[98]

दारेषु गोप्यं पुरुषेषु किंचित्
गोप्यं वयस्येषु सुतेषु किंचित् ।
युक्तं न वा युक्तमिदं विचिन्त्य
वदेद्विपश्चिन्महतोऽनुरोधात् ॥ १२० ॥

किस्लीइक[99] वात स्त्रीथी गुप्त राप्यवी,[100] किस्लीइक[1] पुरुषथी

गुप्त[2] राषवी, कितली[3] वात मित्रथी गुप्त राषवी [केतली[4] वात पुत्रथी गुप्त[5] राषवी] अनिइं[6] पंडिति[7] मांहंत[8] आगिलि[9] जुक्त[10] अथवा अजुक्त[11] वात विमांसीनिइं[12] करवी.

एहूं[13] साभलीनि[14] पिंगलक चीतवतो[15] हौउं:[16] ए दमनक जोग्य[17] दीसि[18] छिइं,[19] ति भणी[20] माहारो[21] अभिप्राय ए आगिलि[22] कहूं.[23] बोल्यू[24] छै[25] जे[26] भणी,[27]

सुहृदि निरन्तरचित्ते गुणवति भृत्ये प्रियासु नारीषु।
स्वामिनि सौहृदि युक्ते निवेद्य दुःखं सुखी भवति ॥ १२१ ॥

जि[28] मित्र एकचित्त हुइं[29] अनि[30] शेवक[31] गुणवंत हुइं[32] अनि[33] जे[34] स्त्री प्रिय हुइ[35] अनि[36] स्वामी[37] निर्मलचित्त होइं[38] तो एतलां आगिलि[39] आपणूं[40] दुःष[41] निविदी[42] अनि[43] सुषी थइई.[44]

अहो दमनक तूं[45] ए मोटो शब्द सांभलइं[46] छइं?[47] दमनक बोल्यो, स्वामिन्[48] सांभलुं छूं[49] [16-B] ति[50] सुं[51]? पिंगलक बोल्यो, हूं[52] ए शब्द थकी[53] वन ए[54] छांडी जावा हीडूं[55] छूं[56]. दमनक बोल्यो,[57] ते काई[58] जाउं[59] छूं[60]? पिंगलक बोल्यो,[61] ये भणी[62] ए शब्द शरपो[63] मोटो[64] जीव छिइं[65] एहु[66] छेइं.[67] जेहनु[68] ए मोटो शब्द साभलीइं[69] छेइं[70] ते भणी[71] ए शब्द शरपो[72] मोटो[73] जीव हसि[74] अनि[75] जीव जेवडो[76] मोटो[77] पराक्रम हसि.[78] दमनक बोल्यो,[79] स्वामिन्[80] जे[81] शब्द मात्रिथी[82] भय उपनो[83] छिइं[84] ते अजुक्त.[85] बोल्यं छिइं[86]

अम्भसा भिद्यते शैलः तथा मन्त्रोऽप्यरक्षितः।
पैशुन्याद्भिद्यते स्नेहो गिरा भिद्येत कातरः ॥ १२२ ॥

पर्वत उदकि[87] करी भिदीई[88] तिम मंत्र अणराषो[89] भिदीइं[90] अनिइं[91] पिशुनपणि[92] स्नेह जाइं,[93] बीहकण[94] वांणीइं[95] भेदीइं.[96]

ति[९७] भणी स्वांमिन[९८] तह्मांरू[९९] पूर्वजे[१००] उपांर्जु[१] वननि[२] छांडवानि[३] अजुक्त[४] अनि[५] इहां[६] शब्द तो अनिकि[७] प्रकारना आकाशमार्गनिइं[८] व्यापि[९] ऊपजे[१०] छिइ[११] ते मध्यि[१२] जे[१३] केवल शब्द[१४] मात्र छिइं[१५] तेथी न बीहीवूं.[१६] यम[१७] केतला शब्द वांशना,[१८] वांणीना[१९] पटहना, मृदंगनी,[२०] कमाडना,[२१] यंत्रादिकना, एहंथी[२२] न बीहवूं.[२३] बोल्युं छइं:[२४]

अत्युत्कटे च रौद्रे च शत्रौ यस्य न हीयते ।
धैर्यं प्राप्ते महीशोऽपि न स याति पराभवम् ॥ १२३ ॥

ये स्वांमीनु[२५] धैर्य, रौद्र उत्कट कठिण[२६] एह्वा शत्रू[२७] पाम्यां[२८] पछी[२९] धीर्य[३०] क्षीण न हुइं,[३१] ते राजा पराभव न पामिइं.[३२] वली,

दर्शितभये विधानरि धैर्यध्वंसो हि नैव धीराणाम् ।
शोपितसरसि निदाघे नितरामेवोन्नतः सिन्धुः ॥ १२४ ॥

जिवारि[३३] दैईव[३४] भय दिषाडिइं[३५] तवारि[३६] धीरनो धैर्य न जाइं[३७] यम[३८] ग्रीष्मकालि[३९] उदक शोपइं[४०] पछि समुद्र गाजइं.[४१]

यस्य न विपदि विपादः संपदि हर्पो रणे च धीरत्वम् ।
निजकुलगगनशशाङ्कं जनयति जननी सुतं विरलम् ॥१२५॥

जेह्नइ[४२] आपदा छतां दुःप नही[४३] अनि[४४] संपदा छतां[४५] हर्प करइ[४६] नही[४७] अनइ संग्रांममाहि[४८] जे धीर हुइ[४९] ऐह्वा[५०] पुरू[17-A]प-निइं[५१] विरली स्त्री ज्यणि.[५२] वली,

शक्तिवैकल्पनम्रस्य निःसारत्वाल्लघीयसः ।
जन्मिनो मानहीनस्य तृणस्य च समा गतिः ॥ १२६ ॥

जे[५३] पुरूप[५४] शक्ति पापइं[५५] नम्र हुइं[५६] अनि[५७] निर्बल माटि[५८] लघु हुइं,[५९] अनइ[६०] जे पुरूप[६१] मांनहीन[६२] होइं[६३] ते पुरूपनी अनि[६४] तृणनी[६५] गति शरपी.[६६] वली,

अन्यप्रतापमासाद्य यो धृष्टत्वं न गच्छति ।
दुर्भगाभरणस्येव रूपेणापि हि तेन किम् ॥ १२७ ॥

जे[६७] अनिरानो[६८] प्रताप[६९] पांमीनिइं[७०] धृष्ट न हुई[७१] ते पुरष[७२] दुर्भगाना[७३] रूडा[७४] आभरणनी परि[७५] कांई[७६] नही.[७७]

ते भणी एहुं[७८] जाणीनिइ[७९] धैर्य करवूं,[८०] केवल शब्द मात्रथी वीहवु[८१] नहीं.[८२] बोलुंउ[८३] छइं,[८४]

पूर्वमेव मया ज्ञातं पूर्णमेतद्धि मेदसा ।
अनुप्रविश्य विज्ञातं यावद्दारु च चर्म च ॥ १२८ ॥

पूर्वि[८५] मिंइ[८६] ए मृदंग मिंदं[८७] पूर्ण्ण[८८] जाणिउ;[८९] पछि[९०] माहि[९१] पइठा[९२] पछी थोड्र[९३] काष्ट अनइं[९४] थोडूं[९५] चांपडूं.[९६] पिंगलक[९७] बोल्युं,[९८] ए कथा किम ? दमनक कहतो[९९] हूवउ :[१००]

[२. शियाळ अने दुन्दुभि]

फौ[१] एक प्रदेशनइ[२] विषइ[३] भुपु[४] सीआल[५] इतस्तत भ्रमतुं[६] थकु[७] वनमाहि[८] वि सैन्यनी[९] युद्धनी भोयनि[१०] पांम्युं.[११] ति[१२] वनमाहि[१३] वानी[१४] हलावी[१५] जे[१६] वृक्षनी[१७] डालि[१८] करी वाजतूं[१९] मृदंग[२०] सांभली,[२१] तिवार पछी वीहीनो[२२] थको[२३] शीयाल[२४] चीतवतो[२५] हूउं:[२६] अहो हवइ[२७] हूं[२८] मूंउं.[२९] जांहा[३०] लगिइ[३१] ए शब्दनो[३२] करणहार न[३३] देपि[३४] तितलि[३५] नाहसूं[३६] अथवा ए नाहासवूं[३७] युक्त नही.[३८] जे[३९] भणी[४०] माहारूं[४१] बापनुं[४२] उपार्जूं[४३] वन ते छांडवा[४४] युक्त नही.[४५] बोल्युं[४६] छइं:[४७]

भये या यदि वा हर्षे सम्प्राप्ते यो विमर्शयेत् ।
कृत्यं न कुरुते वेगान्न स संतापमाप्नुयात् ॥ १२९ ॥

भय अथवा हर्ष पाम्या पछी ये[४८] पूरूष[४९] विमासीनेइं[५०] काम नि[५१] करिइ[५२] ति[५३] संतापनइ[५४] पामइं.[५५]

ते भणी नथी जाणतुं[५६] केहितु[५७] ए मोटउ[५८] शब्द, शा[५९] थकी[६०] ऊपनु[६१] अनिइं[६२] किहा[६३] उपजइ[६४] छइ, एहवु[६५] विमासीनइ[६६] सी[17-B]आल[६७] हलइ[६८] हलई[६९] जिहा[७०] वाजि[७१] छिइं[७२] त्याहां[७३] ग्युं[७४]. जै जोइं[७५] नो मृदंगनिइं[७६] वाजतूं[७७] देषतो[७८] हूउ.[७९] जेतलि[८०] वायु वाइ छे[८१] तेवारि[८२] वृक्षनी शाषा[८३] करी वाजि[८४] छिइं.[८५] पछि[८६] शीयाल ति[८७] मृदंग जांणी[८८] विनोदि[८९] आफणीइं[९०] वजावतो हूंउ.[९१] वली[९२] हर्षथी चित्तमाहि चीतवतो[९३] हूउं:[९४] अहो चिरकाल जइनिइं[९५] मइ[९६] एकांइंत्यनि[९७] व्यपि[९८] भोजन पांम्यो;[९९] सही[१००] ए दिशि[१] छइ[२] ति[३] मांस मेदि[४] भरूं[५] छिइं[६], एहू[७] विमांसीनिइं[८] पछि[९] चांबडि[१०] बांधूं[११] जि[१२] मृदंग ति[१३] मोटि[१४] कष्टि[१५] विदारीनिइं[१६] एक[१७] पास[१८] पिठो.[१९] कठिण[२०] ठांमि[२१] दांति[२२] चांमडूं[२३] फाडतां दांत पड्युं.[२४] पछिइ[२५] माहि पिठा[२६] पछी मूढि[२७] थोडूं[२८] शूं[२९] चांबडूं[३०] अनि[३१] लाकडूं[३२] अनि[३३] माहि पिठो[३४] देषई[३५] सघलु[३६] पोलु[३७] देषीनइं[३८] निरास[३९] थको एक[४०] श्लोक शीयाल भणतो होउ[४१] जे पूर्वे श्लोक ल्यपो[४२] 'पूर्वमेव मया ज्ञातं' श्लोक. ते भणी हूं[४३] कहूं[४४] छूं[४५] जे[४६] शब्द मात्र थकिं,[४७] स्वांमिन,[४८] न बीहीवूं.[४९] पिंगलक बोल्यो, अहो दमनक जोनिं[५०] माहारो[५१] परिवार सघलो[५२] भयभीत छिइं,[५३] नाहासवानि[५४] हीडि[५५] छिइं.[५६] तो किम हूं[५७] धैर्य अवलंबूं ?[५८] दमनक बोल्यो,[५९] स्वांमिन[६०] एहनो[६१] दोष नही,[६२] जे भणी[६३] शेवक[६४] राजा शरषा[६५] हुइं.[६६] बोल्युं छइ,[६७]

अश्वः शस्त्रं शास्त्रं वीणा वाणी नरश्च नारी च ।
पुरूषविशेषं प्राप्ता भवन्त्ययोग्याश्च योग्याश्च ॥ १३० ॥

घोडा शस्त्र शास्त्र वीणा वाणी पूरूष स्त्री एतलां वांना[६८] जेह्वा पुरूषनि[६९] पांमि[७०] तेह्वा[७१] थाइं.[७२]

अहो पिंगलक जां लगि[७३] हू[७४] ए शब्दनुं[७५] स्वरूप[७६] जोइं[७७]

आवूं[७८] तां लगि[७९] आपणा[८०] परिवार सहित[८१] धैर्य अवलंबीनिइं[८२] आंहां[८३] रहिजे.[८४] पछिइं[८५] जिहवूं[८६] दशि[८७] तिहवूं[८८] कार्य विमांसीसि.[८९] पिंगलक बोल्यु,[९०] अहो तिहां[९१] तूं[९२] जावा हीडि[९३] छेइ![९४] दमनक बोल्यु,[९५] स्वांमीनी[९६] आज्ञा शेवकि[९७] करीयि,[९८] न करीइं,[९९] एम[१००] विमासवी[१] नही.[२] बोल्यु[३] छइ,[४]

स्वाम्यादेशात्सुभृत्यस्य न भीः संजायते क्वचित् ।
प्रविशेन्मुखमाहेयं दुस्तरं वा महार्णवम् ॥ १३१ ॥

स्वांमीनी[५] आज्ञाथी [18-A] शेवक[६] भलो जो[७] वैश्वानरमाहिं[८] पइसइ[९] अथवा समुद्रमाहिं[१०] पइसइ[११] तोहिं[१२] भय न ऊपजइ.[१३]

स्वाम्यादिष्टस्तु यो भृत्यः समं विषममेव च ।
मन्यते न स संधार्यो भूभुजा भूतिमिच्छता ॥ १३२ ॥

जे[१४] राजा संपत्ति वांछिइं[१५] तेणि[१६] ते सेवक[१७] रापवो जेन्हि[१८] आज्ञा दीधा पछी सम अथवा व्यपम[१९] न विमासि.[२०]

पिंगलक बोल्यो,[२१] अहो दमनक इंम[२२] छंइं[२३] तो तूं[२४] जा, तूंन्हि[२५] कल्यांण[२६] हुय्यो.[२७] तिह्वार[२८] पछी दमनक ति[२९] सिंहनि[३०] नमस्कार करीनि[३१] ज्यांहां[३२] संजीवक ठि[३३] त्यांहां[३४] शब्दनि[३५] अनुसारि[३६] जातो हौउं.[३७] तिवार[३८] पछी[३९] दमनक गि[४०] थिकी[४१] पिंगलक[४२] भयव्याकुलित[४३] थको[४४] चींतवतो[४५] हुउं,[४६] ते[४७] अहो मि[४८] रूडूं[४९] न[५०] कीधूं[५१] जे[५२] मि[५३] दमनकनु[५४] विश्वास आंणीनि[५५] माह्रू चितनुं[५६] अभिप्राय कह्युं.[५७] कदाचि[५८] दमनक विहिनि[५९] स्थलउं[६०] हुइ[६१] अनि[६२] मि[६३] अधिकारिथी[६४] छंडावुं'तुं[६५] तेणि[६६] दुष्ट बुद्धि[६७] हुइं[६८] मूं[६९] ऊपरि. बोल्यूं[७०] छि,[७१]

ये भवन्ति महीपस्य संमानितविमानिताः ।
यतन्ते तस्य नाशाय सर्वदाऽपि कुलोद्भवाः ॥ १३३ ॥

जे[७२] राजानि[७३] शेवक[७४] प्रथम मांन्य[७५] हुइं[७६] ते राजाना नाशनिं[७७] यत्न करइ[७८] जुइई[७९] पूर्विं[८०] चाल्या आवना हुइ[८१] तुहिइं.[८२]

ते भणी[८३] जां लगि[८४] एह्वी[८५] करणी[८६] न जांणूं[८७] तां लगि[८८] स्थांलांतरि[८९] रहुं.[९०] कदाचिं[९१] दमनक ज तेहिं[९२] आंणीनिं[९३] [18–B] मूहइ[९४] मरावइं.[९५] बोल्यु[९६] छइं,[९७]

न वध्यन्ते ह्यविश्वस्ता दुर्बलाः बलवत्तरैः ।
विश्वस्ताश्चापि वध्यन्ते बलिनो दुर्बलैरपि ॥ १२४ ॥

दुर्बल थका[९८] जि[९९] विश्वास न करिइं[१००] ते बलवत्तरि[१] न मराइं[२] अनि[३] बलवत्तर[४] थका जे[५] विश्वास करिइं[६] ति[७] दुर्बलि[८] पण मराइं.[९]

बृहस्पतिरपि प्राज्ञो न विश्वासं व्रजेन्नरः ।
राज्यलोभाद्यतो वृत्रः शक्रेण शपथैर्हतः ॥ १२५ ॥

बुद्धिर्मतिं[१०] बृहस्पतिनुइ[११] विश्वास न करवो;[१२] जे भणी[१३] इंद्रि[१४] राज्यना[१५] लोभथी वृत्रासुर मार्यो.[१६]

यदिच्छेदात्मनो वृद्धिं आयुष्यं च सुखानि च ।
शपथैः संहितस्यामि न विश्वासं व्रजेन्नरः ॥ १२६ ॥

जो[१७] आपणपानि[१८] वृद्धि वांछीइं[१९] तु[२०] अनि[२१] आयु अनि[२२] सुप, तु[२३] सम[२४] करी जे[२५] म्यलो[२६] हुइं[२७] तेनुइं[२८] विश्वास न करवो.

न विश्वासं विना शत्रुर्देवानामपि सिध्यति ।
विश्वासात्त्रिदशेन्द्रेण दितेर्गर्भो विनाशितः ॥ १२७ ॥

विश्वास विना शत्रू[२९] देवइनूइं[३०] साध्य नही.[३१] विश्वासिं[३२] करी इंद्रि[३३] दैत्यनु[३४] गर्भनी[३५] विनाशि[३६] पमाड्यो.

एह्वुं निश्चेय[३७] करी पिंगलक एकांइंतनिइं[३८] व्यपिइं रही दमनकनी[३९] वाट जोतु[४०] हवु.[४१] दमनक[४२] संजीवक कन्हि जईनइं वृषभ जाणीनि हर्षित

थकुं चींतवतउ हूउ, अहो भल[४३] हूउ;[४४] एणि[४५] करी संधि विग्रहादिक मंत्र करी पिंगलक माहुरइ[४६] वशि[४७] हुशि. बोल्यो[४८] छइ,[४९]

न कौलीन्यान्न सौहार्दान्नृपो वाक्ये प्रवर्त्तते ।
मन्त्रिणां यदि नाभ्येति व्यसनं शोकमेव च ॥ १३८ ॥

कुलीनपणइ,[५०] [सुहृदपणें],[५१] वचनें[५२] करी, राजा प्रधांननिइं[५३] वशि[५४] न हुइं,[५५] जां[५६] लगि[५७] कष्ट अथवा शोक आवी नइ[५८] पड्युं[५९] हुइं.[६०]

सदैवापद्गतो राजा भोग्यो भवति मन्त्रिणाम् ।
अत एव हि वाञ्छन्ति मन्त्रिणः सापदं नृपम् ॥ १३९ ॥

राजा आपदा[६१] पाम्यु[६२] थकु[६३] प्रधांननेइ[६४] वशि[६५] हुइं,[६६] ते भणी[६७] प्रधांन[६८] राजानइं[६९] आपदा[७०] पांमी[७१] वांछइं.[७२]

यथा नेच्छन्ति नीरोगाः कदाचित्सुचिकित्सकान् ।
तथापद्रहितो राजा सचिवं ना[19–A]मिवाञ्छति ॥१४०॥

यम[७३] निरोग कदाचि[७४] पण[७५] वैद्यनि[७६] न वांछइ[७७] तिम राजा आपदाइं[७८] रहित थकु[७९] प्रधांननइं[८०] न वांछइं.[८१]

एहूं[८२] चीतवतो[८३] दमनक पिंगलक भणी[८४] आवतो हूउं.[८५] पिंगलक दमनकनइ[८६] आवतु[८७] देर्पनइ पूर्वि[८८] हूतो[८९] त्यम[९०] रह्यो.[९१] दमनक पिंगलकनइ[९२] नमस्कार करी[९३] बिठउं.[९४] पिंगलक बोल्यो,[९५] अहो ति[९६] ते जीन शो[९७] दीठो ? दमनक बोल्यो, स्वांमी[९८] तह्मारा[९९] प्रसादथी दीठो. पिंगलक बोल्यो,[१००] अहो साचूं[१] बोलिनइं.[२] दमनक बोल्यो,[३] शूं[४] स्वामी आगिलि असत्य बोलीइं[५] ? बोल्युं[६] छइं,[७]

अपि स्वाल्पमसत्यं यः पुरो वदति भूभुजाम् ।
देवानां च विनश्येत स द्रुतं सुमहानपि ॥ १४१ ॥

मांहांत[८] थको जे[९] राजा आगलि, दिव[१०] आगिले[११] थोड्इं[१२] जुंट्टूं[१३] बोलिइं[१४] ते शीघ्र नाशनि[१५] पांमिइं.[१६] वली,[१७]

सर्वदेवमयो राजा मनुना संप्रकीर्तितः ।
तस्मात्तं देववत् पश्येन्न व्यलीकेन कर्हिचित् ॥ १४२ ॥

मनु रिषीश्वर[१८] कहिइ,[१९] राजा सर्व दिवमय[२०] हुइं, ते भणी राजानि[२१] देवनी परिं[२२] दिपवूं[२३] पण व्यरूइं[२४] दृष्टि[२५] न देपवूं.[२६] वली,

सर्वदेवमयास्यापि विशेषो भूपतेरयम् ।
शुभाशुभफलं सद्यो नृपाद्देवाद्भवान्तरे ॥ १४३ ॥

राजा सर्व देवमय हुइ[२७] पण देवथी राजानिइं[२८] विशिषे[२९] छइं;[३०] राजा[३१] शुभ अनइ अशुभ फल तत्काल देइ,[३२] देवताथी फल जंन्मांतर[३३] पांमीइं.[३४]

पिंगलक चोलयो,[३५] अथवा[३६] ते[३७] जीव दीठो हुइशेइ[३८] दीन ऊपरि[३९] मांहंत[४०] न कोपिइं[४१] ऐहूं[४२] मांनीनि[४३] तिणइ[४४] तूं न मारयो ?[४५] बोलू[४६] छइ,[४७]

तृणानि नोन्मूलयति प्रभञ्जनो
मृदूनि नीचैः प्रणतानि सर्वतः ।
स्वभाव एवोन्नतचेतसामयं
महान्महत्स्वेव करोति विक्रमम् ॥ १४४ ॥

जे[४८] भणी वायु नीचां कूलां[४९] तृण न उपाडि,[५०] तिम ए[५१] मांहांतनु[५२] स्वभाव जे महांत मांहोतशूं[५३] कल्हो करिइ[५४] पण नीचाशूं[५५] नही.[५६] [19-B] वली,

गण्डस्थलेषु मदवारिमहौघलुब्ध-
मत्तभ्रमद्भ्रमरपादतलाहतोऽपि ।

कोपं न गच्छति नितान्तबलोऽपि नाग-
स्तुल्ये बले तु बलवान्परिकोपमेति ॥ १४५ ॥

भ्रमर[57] हस्तीना[58] कुंभस्थलेनइं[59] व्यपइं[60] मदिं[61] करी लोभनइं[62] पांम्या[63] थका पुगि[64] करी प्रहार हस्तीनि[65] माथिइं[66] करइ[67] पण[68] बलवंतइं[69] थकु[70] हाथी भ्रमर[71] ऊपिरि[72] कोप निइ[73] पांमि.[74] ति भणी[75] बलवत्तर जे[76] ते[77] आपण शरपा[78] बलवत्तरशूं[79] कोपि पांमइं.

दमनक बोल्यो, ति[80] मांहांनभावु[81] छइ[82] अनिइ[83] हु[84] दुर्बल छूं[85] पण तिहिं[86] ताहरु[87] शेवक[88] करेसि.[89] पिंगलक[90] बोल्युं,[91] ते परो[92] तिन्हइं[93] ठांमि रहो अनइं[94] तू[95] तेन्हइ[96] मांहारो[97] सेवक करवा शमर्थ छइं[98] शुं ? दमनक बोल्यो, स्वांमीन[99] शु बुद्धि[100] करी साधवां न सकीये ? बोलु[1] छइं,[2]

न तच्छस्त्रैर्न नागेन्द्रैर्न हयैर्न पदातिभिः ।
कार्यं संसिद्धिमाप्नोति यथा बुद्ध्या प्रसाधितम् ॥ १४६ ॥

हथीयार[3] हाथी[4] घोडां पांला[5] ईणइ[6] कार्य सिद्धि न पामइ[7] ते बुद्धि[8] कार्जसिद्धि[9] होइं.[10]

पिंगलक बोल्युं,[11] जु इंम[12] करेशि तो आज थकी[13] तुन्हइं[14] प्रधांनपणुं[15] मइ[16] आप्युं[17] ए निश्चय. तुंहूं[18] ज संधिविग्रहादिक करजे,[19] ते भणी[20] तु[21] जइनइ[22] जिम ते माहारो[23] शेवक[24] थाइं[25] त्यम[26] करि. पछइ[27] दमनकनि[28] पिंगलकनि[29] नमस्कार करीनइं[30] वली संजीवक वृषभ कन्हिइ[31], जेइ जइनिइ[32] आक्षिपपूर्वक[33] एहूं[34] वचन बोलतो हौउं,[35] अहो दुष्ट वृषभ तून्हिइ[36] पिंगलक सिंह तेडिइ छइं; तु[37] तो मोटे मोटे[38] मोटे[39] वृथा शब्द करें[40] छइं.[41] एहुं[42] दमनकनुं वचन सांमलीनइं[43] संजीवक[44] बोल्यो, अहो भाइं[45] पिंगलक ते[46] कुंग[47] ? एहूं[48] सांभली[49] दमनक आश्चर्यपूर्वक बोल्तु[50] हूउ,[51] किम तूं[52] पिंगलक जे[53] स्वांमी[54]

तेन्टइं[55] नथी जाणतुं[56]? वेगि[57] तेन्हू[58] वचन करि,[59] नहीतिरि[60] फल पामीशि.[61] अहो ति[62] पिं[20-A]गलक सघले[63] वनचर[64] जीवि जीवों[65] थको[66] सघलानउ[67] स्वामी वडतलि[68] रहि छइं.[69] [एहवुं दमनकनुं वचन][70] सजीवक[71] साभलीनिइं[72] परम दुप्यनि[73] पाम्यो[74] थको बोल्यो,[75] [अहो] दमनक [तुं][76] रूडूं[77] बोली[78] जाणइं[79] एह्वो दीसइ[80] छइ.[81] जो तूं[82] मून्हइ[83] अभश[84] तिहा लेई जाइंश[85] तो[86] मून्हइं[87] अभयदान[88] देईनिइ[89] स्वामी[90] ये सिंह ते पाहि[91] प्रसाद करावो. दमनक बोल्यो, अहो ति[92] साचूं[93] बोलो;[94] ए राजनीत्यि[95] छइं.[96] बोल्यु[97] छइ,[98]

लभ्यते भूमिपर्यन्त समुद्रस्य गिरेरपि ।
न कथंचिन्महीपस्य चित्त विज्ञायते क्वचित् ॥ १४७ ॥

भूमिनो[99] छेह[100] जाणीइं,[1] अनि[2] समुद्रनो छेह जाणीइ,[3] परवतिनो[4] छेह जाणीइ[5] पण क्यमिइ[6] राजाना चित्तनो पार[7] न जाणीइ.[8]

ता[9] लगइ[10] तूं[11] ईहा[12] ज[13] रहि[14] जेतलि[15] हूं[16] ताहा[17] जइं[18] ते[19] शुं[20] समसथरा[21] करी[22] सत्य बोल[23] लेई आवूं[24] पछि[25] तूंहि[26] तिहा[27] लेइ[28] जाउं.[29] पछि[30] ति[31] दमनक पिंगलक कन्हेइं[32] जईनइ[33] एहवूं[34] बोलतो हउं,[35] स्वामी[36] ते जीव[37] नान्हो[38] नही,[39] मे[40] पूछ्युं[41] ते ईश्वरना वाहननो वृषभ छइ.[42] हूं[43] इश्वरिइ[44] यमुनानि[45] काठिइ[46] चरवा कृपा करी मूंक्यो[47] छु[48] घणूं[49] शूं[50] कहूं?[51] ए वन ईश्वर[52] हूं[53] क्रीडा करवा[54] मुहनि[55] आपुं[56] छिंडं.[57] पिंगलक[58] बोल्यो, मुहनइ भय उपनो छइ. अहो दमनक त्याहा जैईनि ति शूं कहू? दमनक बोल्यो, स्वामिन्[59] मइ[60] तिहा संजीवक आगलि एहवूं[61] वचन बोल्युं,[62] चडिकानूं[63] वाहन सिंह ते[64] ईहा[65] वनमाहि[66] रहिं[67] छइं.[68] तेन्हइ[69] तु[70] अभ्यागत अतिथि छइ.[71] ति भणी[72] ते[73] तून्टइ[74] तिहा बोलावइं[75]

छइं.[७६] भाइंपणा[७७] थकि[७८] ते मिंह तूंन्हे[७९] स्नेहि[८०] करी अनिक[८१] भोज्यपांन[८२] क्रीडानि[८३] अर्थि एकत्र रहवानि[८४] बोलावइं[८५] छइं.[८६] पछेइं[८७] तेणेइ[८८] ए सर्व मांन्युं[८९] अनइं[९०] कहवा लागो, पिंगलक स्वांमीनी[९१] अभयवाणी पांमूं[९२] तो आवुं. एह[९३] सांभली पिंगलक [20-B] हर्षयुक्त बोल्तो हउं,[९४] अहो दमनक तें[९५] साचूं[९६] बोल्यु.[९७] माहारि[९८] हृदयनि[९९] गमतुं बोल्युं[१००] अनइं[१] मइं[२] ए तेन्हइ[३] अभयप्रदांनं[४] दीधूं[५] छेइं.[६] हवइं[७] तुं[८] तहेनुं[९] अभयप्रदांननुं[१०] वचन मांगीनइं[११] हम्हेनई[१२] ईहा[१३] लेई आवि. एहवूं[१४] वचन कहे[१५] ते रूडुं,[१६]

अन्त सारैरकुटिलैरच्छिद्रैः सुपरीक्षितैः ।
मन्त्रिभिर्धार्यते राज्यं स्तम्भैरिव निकेतनम् ॥ १४८ ॥

अंतर्गत सार होइं, वांका[१७] न होइं, कूंण[१८] सूंहाला[१९] होइं,[२०] अनइं[२१] परीक्षा करे[२२] ऐहा[२३] जि[२४] प्रधान[२५] तिणे[२६] राज[२७] धरीइं[२८] जिम थांभइ[२९] घर धरींइं.[३०] वली,

मन्त्रिणा भिन्नसंधाने भिषजां सान्निपातिके ।
कर्मणि व्यज्यते प्रज्ञा स्वस्थे को वा न पण्डितः ॥ १४९ ॥

प्रधाननी[३१] परीक्षा जेहा[३२] भेद ऊपनो हुइं[३३] सिहा[३४] मिल[३५] करतां जाणीइ[३६] अनइं[३७] वैद्यनी परीक्षा सनिपात गतां जाणींइं.[३८] स्वस्त छतां कुंण आपणी[३९] चातुरी न केलवइं,[४०] सहू किम्बइ.[४१]

तिवार पछी दमनक पिंगलकनि[४२] प्रणाम्य[४३] करीनइं[४४] समीपि[४५] संधि करवा चाल्यो, अनइं[४६] हर्षयुक्तथु[४७] चीतवतु[४८] हुउ,[४९] अहो ए स्वांमी[५०] अम्हनिइ[५१] प्रसाद करि[५२] छइ[५३] अनिइं[५४] वचननिइं[५५] वशि[५६] होउ.[५७] ते भणी मु[५८] थकी[५९] अनिरा[६०] धंन्य[६१] नथी. बोलूं[६२] छइ[६३]:

अमृतं शिशिरे वह्निरमृतं वारिदर्शनम् ।
अमृतं राजसम्मानममृतं सगतिः सताम् ॥ १५० ॥

शीआलि[64] वहि अमृत हुइं,[65] टाढू[66] पाणी अमृत हुंइ[67] अनिइं[68] राजानुं[69] मांन्य[70] अंतृत्य[71] हुइं[72] अनिइं[73] सत्पुरूषनी[74] संगति अंमृत[75] हुंइ.[76]

तिवार पछी संजीवकनिइं[77] पामीनइं[78] कहतो हूउं,[79] अहो मित्र संजीवकं[80] ताह्रि[81] अर्थि पिंगलक स्वामी[82] प्रसंन[83] कीधो छंइ.[84] तिणि[85] सत्य वचन दीधुं[86] ठिइं[87] तिहा वेगि[88] चालुं.[89] मंइं[90] राजानो प्रसाद पाम्यो[91] छइ[92] पण रहिवु[93] नही[94] पण[95] गर्व करवउ नेही.[96] हूंइ[97] ताहरा[98] काजनइ[99] सघली राजधुरनी[100] प्रधांनपदवीं[1] पांमीनइं[2] प्रधांन-[2I-A]वट[3] करीश.[4] संजीवक बोलुं,[5] ताहारि[6] हूं[7] अधींन[8] छूं.[9] तूं[10] कहिशि[11] तिम हूं[12] करिम.[13] एम[14] करता बिहि[15] मिली[16] आपण राज्यलक्ष्मी भोगवशुं;[17] आपण[18] बिहि[19] बोल[20] छइं.[21] बोल्यु[22] छइ:[23]

आखेटकेण धर्मेण विभवा स्युर्वशे नृणाम् ।
मृगयां प्रेरयत्येको हन्त्यन्योऽत्र मृगानिव ॥ १५१ ॥

आवेटक[24] वृत्ति[25] मनुष्यनि[26] घणा अभिमत होइ,[27] वश होइं[28] यम[29] पारध्यनिं[30] एक प्रेरइ, एक मृगनइं[31] मारिइ.[32]

यो न पूजयति गर्वाद्यथौचित्यं नृपाश्रितान् ।
स प्राप्नोति पदभ्रंशं भूपतेर्दन्तिलो यथा ॥ १५२ ॥

जे[33] राजाना शेवकनि[34] न मानिइं[35] ते दंता शेठनी पिरि[36] स्थानभ्रंश[37] थाइं.[38]

एहवूं[39] दमनक बोल्यो,[40] पछी संजीवक कहेतो[41] हूउ,[42] ए वाती किम? दमनक कहितु[43] हुउं.[44]

[३. दंतिल श्रेष्ठी अने गोरभ]

ए[1] प्रथ्वीमाहि[2] एक[3] वर्द्धमान नामि[4] नगर छटं.[5] तिहां[6] दंतिल एहवइ[7] नामि[8] व्यवहारीउ[9] छइ;[10] सघला नगरमाहि[11] मोटो[12] छइ[13] अनइ[14] राज्यमान,[15] एहवु[16] वणि.[17] तेणि[18] राजानुं[19] कामकाज[20] करतां थका[21] सर्व लो[21-B]क सूप[22] पमाड्या अनि[23] राजा ति[24] नगरनु[25] सूप[26] पमाड्यो. घणूं[27] शूं[28] कहीइं[29] ति[30] सरपुं[31] कोइ नही.[32] ने चतुर[33] कोणि[34] दीठो अथवा सांभलो हसिइ[35] अथवा ऐ[36] सुक्त बोलुं[37] छइं,[38]

> नरपतिहितकर्ता द्वेष्यतां याति लोके
> जनपदहितकर्ता मुच्यते पार्थिवेन ।
> इति महति विवादे वर्तमाने समाने
> नृपतिजनपदाना दुर्लभ कार्यकर्ता ॥ १५२ ॥

जे[39] पुरुष राजानिइ[40] हित करिइ[41] ति[42] लोकनिइ[43] विरी[44] थाइं[45] अनिइं[46] जे[47] लोकनिइं[48] हित करइं[49] तेन्हइ[50] राजा छांडइ,[51] त्यजइं[52], एहवुं[53] समानवाद[54] छता लोकनिइ[55] अनिइं[56] राजानिइ[57] हित करिइ[58] तेहवो[59] मनुष्य कार्यनूं[60] कर्ता दुर्लभ छइ.

तेवार[61] पछी तेन्हइ[62] केतले दिवसि[63] पुत्रनो[64] विवाहनो उछव[65] हुउ.[66] तीणि[67] ते राजान नगरना लोक बोलाव्या,[68] रूडी परिइ मान देई[69] अनिइ राजाना समीपना रहुणहार सर्व वस्त्रि[70] करी पहिरावतो होउ.[71] तिवार पछी[72] विवाह[73] पूठि[74] राजा अंतःपुर संघाति[75] घरि आणीनइ[76] पूज्यो, अनइ[77] ते[78] राजाना[79] घर वाहारइ[80] ते राजा पूठिइं[81] आव्यो अनइं[82] वेगलो नीच[83] ठामि[84] ऊभो[85] रहुयु[86] ते राजाना[87] जे[88] शेरक[89] गोरभ[90] एहि[91] नामिइ[92] ते मूढिइं[93] ठामि[94] रहुं[95] देखीनइ[96] धरि थकु[97] गलची[98] देइ[99] काढ्यो बाहिरि.[100] ते

अपमांन[1] थकउ[2] निश्वास मूंकतो[3] थिकु[4] रात्रिइ जइ[5] सूइं[6] नही[7] अनइ विमासतु[8] हूंउ[9] चित्तमाहि, हू[10] ए[11] दंता शेटने[12] राजानी[13] मया फेडेशि[14] किम[15] अथवा मि[16] तेन्हिइ[17] कांई नही चालि[18] क्यम[19] करेशि. बोल्यु[20] छइ,[21]

यो ह्यपकर्तुमशक्तः कुप्यति किमसौ नरोऽत्र निर्लज्जः ।
उच्छलितोऽपि हि चणकः शक्तः किं भ्राष्ट्रकं भङ्क्तुम् ॥ १५४ ॥

जे[22] वेर साधवा समर्थ न हुइं[23] ते वृथा कोप करइ[24] ते लज्जानइ[25] कां[26] न पामइ[27] ज्यम[28] चणु[29] शेकता[30] उछल्यो थको जे चणो[31] ते[32] भाठी[33] भाजवानइ[34] समर्थ न हुइ.[35]

तिवार पछी किवारि[36] कि[37] [22-A] प्रभाते[38] राजा सुपि[39] सूइं[40] तिहां शय्या पापलिं[41] ते[42] गौरंभ[43] सारचतुं[44] बोलतो हूउं,[45] अहो दंता शेठि[46] तूं[47] धृष्टपणूं[48] जोउं[49] जे राजानी[5] स्त्रिनि[51] आलिंगन देतो हूउं.[52] ते वचन राजा[53] साभलीटनि[54] विगो[55] उठीइ[56] बोलतो होउं,[57] अहो गोरंभ, ए सत्य जे[58] तूं[59] कहि[60] छइं[61] राणी दंतिल संघाति[62] आलीघन[63] देदंती हुइं.[64] गोरंभ[65] बोल्यो,[66] स्वामिन[67] रात्रिं जु[68] रमतां घणूं हूं[69] जाग्युं[70] [तीणें[71] सारवता मूंन्हे[72] निद्रा आवी अनइ[73] मुहमाहिथुं[74]] एहुं वचन नीकली[75] ग्यिउं,[76] ते हुं न जाणूं.[77] राजा चिंतनि[78] व्यिमांसतु[79] हुउं,[80] ए[81] गोरंभ अह्मारा[82] घरमाहि सघलि[83] हीडिइं[84] अनइ दंती वाणीउं[85] पण हीडइ[86] सघला[87] घर[88] अनइ[89] इणे[90] गोरंभ्यि[91] राणीनिउ[92] आलिंवतुं[3] सही[4] दीठो[5] हसिइं.[96] तेणि[97] ज[98] मोढि[99] बोली उठो.[100] बोल्यु[1] छइं[2] :

यद्वाञ्छति दिवा मर्त्यो वीक्षते वा करोति वा ।
तत्स्वप्नेऽपि तदभ्यासात् तथा ब्रूते करोति च ॥ १५५ ॥

जे[३] मनुष्य[४] दीहि[५] वांछिइ[६] अथवा जोइ[७] अथवा[८] करइ[९] ते पूरूष[१०] स्वपनमाहि[११] तेहि[१२] ज घनाभ्यासथी[१३] देषइ[१४] अनिइ करइ.[१५] वली,[१६]

शुभं वा यदि वा पापं यन्नृणां हृदि संस्थितम् ।
सगूढमपि तज्ज्ञेयं स्वप्न[१७]वाक्यात्तथा मदात् ॥ १५६ ॥

सूभ[१८] अथवा[१९] पाप जिम[२०] मनुष्यनिइ[२१] चित्ति हुइं[२२] ति[२३] सर्व निद्रामाहि[२४] अथवा मदमत्त थका[२५] मुंढइं[२६] उचरिइ[२७] अथवा स्त्रीनिइ[२८] व्यापिइ[२९] एहुं[३०] सुं[३१] संदेह. बोल्यु[३२] छइ,[३३]

जल्पन्ति सार्धमन्येन पश्यन्त्यन्यं सविभ्रमाः ।
हृद्गतं[३४] चिन्तयन्त्यन्यं प्रियः को नाम योषिताम् ॥ १५७ ॥

बोलिं[३५] स्त्री अनिरा[३६] संघाति,[३७] देषइ[३८] अनिरानिइं,[३९] अनिइ[४०] हैइइं[४१] चीतविइ[४२] अनिरानिइ,[४३] ते भणी स्त्रीनिइं[४४] प्रिय कुण हुइ.[४५]

कुलपतनं जनगर्हां बंधनमपि जीवितव्यसंदेहम् ।
अंगीकरोति तत्क्षणमबला परपुरुषसंसक्ता ॥ १५८ ॥

स्त्री परपूरूषसूं[४६] लागी थकी एतलां[४७] वांनां[४८] सहइ:[४९] कुलनु[५०] पाडवू,[५१] लोकनी[५२] निंदा, बंधन, जीवयानो संदेह[५३], एतला[५४] अं[22-B]गीकरइं.[५५]

पर्यंकसुखशयनं पतिमनुकूलं मनोहरं च सुखम् ।
तृणमिव लघुमन्यं ते कामिन्यश्चौररतिलुब्धाः ॥ १५९ ॥

पलंगि सूवूं,[५६] भर्त्तारहित[५७] रूडं[५८] सुष, एतलां[५९] वांनां[६०] स्त्री तृणनि[६१] ठांमि[६२] मानिइ[६३] जि[६४] स्त्री पीयारा पूरूषसूं[६५] लागी हुइ.[६६] वली,

नाग्निस्तृप्यति काष्ठाना नापगानां महोदधिः ।
नान्तकः सर्वभूताना न पुंसां वामलोचना ॥ १६० ॥

अग्नि[६७] काष्टे तृप्ति न पांमइं,[६८] समुद्र नदीइं[६९] तृप्ति न पांमइं,[७०] यम प्राणी[७१] मारतुं[७२] तृप्ति न पांमइं,[७३] अनिइ[७४] स्त्री कितले[७५] पूरूपे[७६] तृप्ति न पांमइं.[७७]

रहो नास्ति क्षणो नास्ति नास्ति प्रार्थयिता नरः।
तेन नारद नारीणां सतीत्वमुपजायते ॥ १६१ ॥

एकांत नही,[७८] अवसर नही,[७९] को[८०] प्रार्थणार[८१] नहीं,[८२] तीणिं[८३] करी स्त्रीनिइं[८४] सति साध्वी कहीइं[८५] छिइं.[८६]

यो मोहान्मन्यते मूढो रक्तेयं मम कामिनी।
स तस्या वशगो नित्यं भवेत्क्रीडा शकुन्तवत् ॥ १६२ ॥

जे[८७] पुरूप कुबुद्धी[८८] इम जाणिइ[८९] जे स्त्री माहरइ[९०] वसि[९१] छइ[९२] ते[९३] पूरूप[९४] पोपटनी परि[९५] वश[९६] जाणवो.[९७]

तासां वाक्यानि कृत्यानि सुलघूनि गुरूण्यपि।
करोति य. कृतैर्लोके लघुत्वं याति सर्वतः ॥ १६३ ॥

स्त्रीनां वचन करवा योग्य न हुइ,[९८] नांन्हा[९९] अथवा मोटां हुइं[१००] ते न करवां यीणे[१] करिथी[२] सघलि[३] लघूपणूं[४] आविइ.[५]

रक्तोऽभिजायते भोग्यो नारीणा शाटको यथा।
घृष्यते यो दशालम्वी नितम्बे विनिवेशितः ॥ १६४ ॥

जि[६] पूरूप[७] स्त्रीसूं[८] लागो हुइं[९] ते स्त्री ये[१०] भोगवीइं[११] शाडलाती[१२] पिरि[१३] किहिडिसूं[१४] ते घसीइं.[१५]

अलक्तको यथा रक्तो निष्पीड्य पुरूषस्तथा।
अवलाभिर्वलाद्रक्तः पादमूले निपात्यते ॥ १६५ ॥

जे[१६] पूरूप[१७] अलतानी[१८] परि[१९] स्त्रीशूं[२०] रक्त हुइं[२१] ते पीडीनइं[२२] पुग तलइ[२३] मुंकीइ.[२४]

राजा तहिं[25] पूठि[26] एहवूं[27] घणूंएक[28] बोलीनइं[29] दंती शेठि[30] ऊपरि[23-A]कोप्यो घणूं[31] शुं[32] राजद्वारिथु[33] वारयो. तिवार पछी दंतिलइ अकस्मात[34] राजानि[35] कहोप्युं देपीनइ[36] चीतववुं[37] हुउं.[38] ए[39] कहिं[40] ते युक्त:

> कोऽर्थान्प्राप्य न गर्वितो विषयिणः कस्यापदोऽस्तंगताः
> स्त्रीभिः कस्य न खण्डितं भुवि मनः को नाम राज्ञां प्रियः ।
> कः कालस्य न गोचरान्तरगतः कोऽर्थी गतो गौरवं
> को वा दुर्जनवागुरासु पतितः क्षेमेण यातः पुमान् ॥ १६६ ॥

धन पामी[41] कुण गर्व न पामइ अनि[42] व्यपईनि[43] आपदा किहिनि[44] नथी आवी, अनि[45] स्त्रीयें[46] किहिनूं[47] मंन नथी चालवूं,[48] राजानुं[49] प्रिय कुण हुउ[50] छइं,[51] कालनिं[52] वशि कोण[53] नथी आव्यु[54] अनिइं[55] कोण[56] याचक मोटी पदवीनइ[57] पाम्यु[58] छइं[59] अनि[60] दुर्जन-निइं[61] हाथि[62] चढ्या[63] पूठि[64] कोणनि[65] दुप नथी होउं.[66]

> काके शौचं द्यूतकारे च सत्यं
> राजा मित्रं केन दृष्टं श्रुतं वा ।
> क्लीबे धैर्यं मद्यपे तत्त्वचिन्ता
> सर्पे क्षान्तिः स्त्रीषु कामोपशान्तिः ॥ १६७ ॥

नपूंषकनि[67] धैर्य, मद्यपनि[68] तत्वज्ञाननी[69] चिंता, सर्पनि[70] क्षमा, स्त्रीनि[71] कांम,[72] कंदर्पनी[73] शांति, कागनि[74] पवित्राइं,[75] जुआरीनि[76] सत्य, राजाशूं[77] मैत्री, एतला वांना[78] एहनिइं[79] विषय न होई.[80]

अनि[81] मिं[82] ए[83] राजानि[84] अथवा अनिरा[85] वचनिं[86] करी पाड्उं[87] नथी कीधूं[88] एहवूं[89] हूं[90] स्मरूं[91] छूं. एणी[92] पिरिं[93] दंतिल राजद्वारि पइसतुं[94] राप्युं[95] देपीनइं[96] द्वारविइं[97] जे[98] गोरंभ[99] ति[100] हास्य करीनइं[1] कहतुं[2] हुउं,[3] अहो[4] द्वारपालो, ए दंती सेठि[5] राजानु[6]

मान्य अने[9] सर्व ऊपरि मुपी, एह्वि वारशु[5] मा. त्यम[10] मूह्वि[11] गल्ची दीधी त्यम[12] तम्हने[13] देशे[14] एहू[15] साभलीनिइ दतिल चीतवतु[16] हूउ,[17] सहीए एह्वी[18] करणी नोल्युं[19] छइ,

अकुलीनोऽपि मूर्खोऽपि भूपालं योऽत्र सेवते ।
अपि समानहीनोऽपि स सर्वत्रापि पूज्यते ॥ १६८ ॥

हीन कुलनु[20] मूर्ख अनि[21] मा[23-B]नयहीन हुइं[22] एहुइ[23] जे[24] राजानइ[25] शेवइ[26] ति[27] सघलि[28] पूजीइ.[29]

अपि कापुरुषो भीरु स्याच्चेन्नृपतिसेवकः ।
यदाप्नोति फलं लोकात्तस्याशमपि नो गुणी ॥ १६९ ॥

राजानि[30] शेवतु[31] जे हीन बीहीकण एहू[32] जे[33] लोकमाहि[34] फल पामइ[35] [तेन्हु[36] अंश मात्रइ बीजु गुणवंत न पामइ]

एणी[37] परि चीतवतु[38] दती मुख म्लान थकु,[39] ऊचाटो[40] हीन प्रभाव थकु[41] घरि जटनि,[42] साझि[43] गोरभ नोलावीनइ,[44] वस्त्र पिहिरावीनइ[45] बोलतु[46] हौऊ,[47] अहो मे[48] तू तहीइ[49] क्रोध करी काढो[50] जि भणी तू[1] ब्राह्मण[52] आगलि वेसवा[53] जोग्य[54] नही[55] तिहा[56] वेठो[57] ति[58] भणी[59] क्षमा करे[60] पछि[61] ति[62] गोरभि[63] वस्त्र पामीनइ[64] यम[65] स्वर्ग पाम्यो[66] हुइ[67] एहू[68] हर्ष्यु बोलतो हूउ,[69] अहो दती मि[70] मनि क्षम्यु[71] हवि[72] तु[73] माहारी[74] बुद्धय[75] जो[76] जे[77] राजा तू[78] उपिरि[79] केही कृपा करि[80] छिइ,[81] एहू[82] बोली हरप्यु[83] नीकल्यु[84] ए वचन सत्य,

स्तोकेनोन्नतिमायाति स्तोकेनायात्यधोगतिम् ।
अहो सुसदृशी चेष्टा तुलायष्टे खलस्य च ॥ १७० ॥

अहो त्राकडीनी[1] अनि[2] मुर्पनी[87] चेष्टा सरषी,[88] [थोडि[89] नमिइ[90] अनइ[91]] थोडि[92] उच[93] थाइ.[94]

पछी[९१] गोरभक वली तिम्ह ज जैनइ ज्यांहा[९६] राना सुपि[९७] सूतु[९८] छइं[९९] तिहा सारवतु[१००] एहु[१] बोल्तो हुउ,[२] अहो राजा अनाचारी ये[३] फिरतो[४] चीभडी[५] पातो होउ[६] राजा ति[७] वचन सामलीनइ[८] विस्मयनि[९] पाम्यु[१०] थकु[११] उठीनि[१२] बोल्तो हुउ,[१३] अहो गोरभ[१४] शू[१५] अयुक्त बोलिइ[१६] छइ[१७] ? घरनु[१८] काम[१९] करणहार माटि[२०] हू[२१] तुनि[२२] नथी मारतो किहा हू[२३] इम[२४] फिरतो चीभडी पातो दीठो ? गोरभक[२५] बोल्यो,[२६] स्वामिन्[२७] जू रमता रात्रि[२८] निद्रा नावी तेणे[२९] सारवता निद्रावशथी काई जल्पो ते हु नथी जाणतु,[३०] ते भणी क्षमा करो, हू निद्रावशि[३१] हतु राजा चीतवतो[३२] होऊ,[३३] मिं[३४] जन्ममाहि[३५] चीभडी इणि[३६] परि[३७] नथी[३८] पाधी[३९] ते भणी इणि[४०] जेम[४१] निद्रावशथी जूठू बोल्यु ए अशभानि[४२] तिम दतीनु निद्रावशथी [24 A] ईणे[४३] असभावि जूठू बोल्यु ए निश्चय, ति[४४] भणी मिं[४५] युक्त न कीधू[४६] जि[४७] ऐन्हि[४८] सन्मान[४९] दीधू[५०] दती शरपा[५१] मनुष्यनु एहु[५२] कर्म न सभावेइ[५३] ते[५४] काव्या पछी राजकार्य अनइ[५५] नगरना[५६] कार्जे[५७] सर्व[५८] रहि[५९] छिइ[६०] एणी[६१] परि[६२] घणे[६३] प्रकारि[६४] राजा चींतवीनइ[६५] दतीनइ[६६] बोलावीनइ[६७] आपणा डीलना आभरण अनिइ[६८] वस्त्र पहिरावी[६९] तिन्हि[७०] अधिकारि[७१] मुक्यो[७२]

अहो सजीवक हू[७३] ति भणी[७४] म्हू[७५] छूउ,[७६] 'यो न पूजयते गर्वात्' ए वचन सजीवक बोल्यू,[७७] अहो ति[७८] सत्य कहु[७९] ति भणी[८०] एहूं करजि कहि[८१] छि,[८२] एहू[८३] बोली दमनक सजीवकनइ[८४] लेइनिइ[८५] पिंगलकनि[८६] समीप[८७] ग्यो[८८] अनि[८९] बोल्तु हुउ,[९१] अहो पिंगलक ए सजीवक म्यि[९२] आणो[९३] तिवार पछी[९४] सजीवक ते सिंहनि[९५] नमस्कार करीनिइ[९६] नम्र थई[९७] बेठो[९८] पिंगलक ति[९९] सजीवकनू[१००] पाध्य[१] मोटू[२] जयमणि[३] हाथि[४] थापडीनइ[५] पूछतो हउ,[६] अहो सजीवक तून्हि[७] कुशल छइ ?[८] तु[९] किहाथी ए वनमाहि आव्यो ? तिवार पछी सजीवक

आपणूं[१०] वृत्तांत ये[११] वर्द्धमांन[१२] संघाति[१३] दियो। पांम्यो[१४] ते[१५] सर्व[१६] तिन्हिइ[१७] वहुं[१८]. ए[१९] सांभलीनइं[२०] पिंगलक सादर[२१] कहतु[२२] होउ,[२३] अहो मित्र विहिश[२४] मा.[२५] मि[२६] राप्यो थको वनमाहि[२७] जथेष्ट[२८] चरतुं[२९] अनइं[३०] माहारि[३१] समिपि[३२] सदा ति रहेवुं.[३४] जे[३५] भणी,

> बह्वपायं वनमिदं रौद्रसत्त्वनिषेवितम् ।
> गुरूणामपि सत्त्वानामसेव्यं सस्यजीविनाम् ॥ १७१ ॥

ए वनमाहि घणांनुं[३६] नाश हुइ[३७] छि[३८] अनइ भयानक[३९] जे[४०] जीव[४१] [तीपों सेव्युं छइ अनइ मोटाइ जे तृण चरें] जे[४२] जीव तीणे[४३] न रहवाहइं.[४४]

एहूं[४५] संजीवकनि[४६] कहीनिइं[४७] सिंह यमुनामाहि पांणी[४८] पीईनिइं[४९] आपणी इच्छाइ वली वनमाहि रमतु[५०] हूउं.[५१] तिवार पछी करटक अनद दमनक राज्यनु भार[५२] छांडीनइं[५३] संजीवक संघाति[५४] सुभाषितगोष्टि करीतां सुपि[५५] रहता हूआ.[५६] संजीवक अनेके[५७] शास्त्रे करी वुद्धवचंन[५८] थइंनइं[५९] थोडि[६०] दिवसि[६१] मूर्ख्य[६२] थवो[६३] पिंगलक वुद्धिमत की[24-B]धु[६४] अनइं[६५] अरंण्यना[६६] धरम[६७] छंडावीनिइं[६८] ग्रांमना[६९] धर्मनि[७०] व्यपिइ[७१] लगाड्यो. पछि[७२] सर्व जीव विगला[७३] राषी सिंह अनि[७४] संजीवक समीपे[७५] रहिइ.[७६] ते करटक दमनक तेहइं[७७] प्रवेश ताहा[७८] न पांमता[७९] हुआ.[८०] वली सिंहि[८१] पराक्रम छाड्यो.[८२] ते भणी[८३] सर्व मृग[८४] जीव सेवको[८५] क्षुधापीडित रहितुं[८६] हुउं[८७] अनद दीन थ्या. कोरयु[८८] छइ:[८९]

> फलहीनं नृपं भृत्याः कुलीनमपि चोन्नतम् ।
> संत्यज्यान्यत्र गच्छन्ति शुष्कं वृक्षमिवाण्डजाः ॥ १७२ ॥

शेवक[९०] राजानिइं[९१] फलहीन देपीनइं[९२] छांडइं[९३] जोइं[९४] कुलीन हुइं[९५] मोटो हुइं[९६] छांडी अन्यत्र जाइं[९७] यम[९८] पक्षी सूका[९९] वृक्षनि[१००] छाडिइं.[१]

तुहेइं[1] आगेइ[2] राजनि[3] छाडइगा[4] सेवक नही राजाइ[5] धर्म अर्थ काम ए सिद्धि नि[6] जाइ[7] त्यम[8] करवू[9] बोलु[10] छइ[11]

अपि समानसयुक्ता कुलीना भक्तितत्परा ।
वृत्तिभङ्गान्महीपाल त्यक्त्वा यान्ति सुसेवका ॥ १७३ ॥

मान्युक्ता[13] कुलीन समर्थ एहाइ[14] सेवक[15] वृत्तिभग होया[16] पछी राजानिइ[17] छाडीनइ[18] जाइ,[19] तिम किरल[20] सेवक[21] एहा न हुइ[22] सर्व लोक पण[23] भोगनइ[24] आश्रयीनिइ[25] अनिक[26] उपाये[27] आपणी वृत्ति करइ[28] बोल्यु[29] छइ,

[25–A] [देशानामुपरि क्ष्मापा आतुराणा चिकित्सका ।
वणिजो ग्राहकाणा च मूर्खाणामपि पण्डिता ॥ १७४ ॥

राजाना[30] वश[31] देश होइ, रोगी वद्यनइ[32] वशि[33] होइ, वाणीयाने[34] वशि ग्राहग होइ, मूर्खने[35] पंडित वश करे[36]

प्रमादिना तथा चौरा भिक्षुका गृहमेधिनाम् ।
गणिका कामुकाना च तथान्येषा च शिल्पिन ॥ १७५ ॥

प्रमादीनु[37] धन चोर लें,[38] गृहस्थनु[39] भीषारी[40] लिं,[41] वैश्या[42] कामीनु धन ल्ये तिम अनेरानु[43] धन कारीगर ल्यइ[44]

सामादिसज्जिते पाशे प्रतीक्षन्ते दिवानिशम् ।
भुञ्जते च यथाशक्ति जलजाञ्जलजा यथा ।' १७६ ॥

राजा सामादिक ये[45] पाश ते हैं पडर्पे[46] अनइ सामर्थ्ये[47] भोगवें[48] जिम मत्स्य मत्स्यनं[49] भोगवें[50] वली,

अत्तु वाञ्छति शाम्भवो गणपतेराखु क्षुधार्त फणी
त च क्रौञ्चरिपो शिखी गिरिसुतासिंहोऽपि नागाशनम् ।
इत्थ यत्र परिग्रहस्य घटना शम्भोरपि स्याद्गृहे
तत्रान्यस्य कथ न भावि जगतो यस्मात्स्वरूप हि तत् ॥१७७॥

ईश्वरनो[८२] सर्प गणेशना उंदिरनें[८३] पावा[८४] हीडइ[८५] अनइ[८६] ते सर्पनें स्वामि कार्त्तिकेयनो[८७] मोर पावा[८८] हीडइ[८९] अनइ[९०] ते[९१] मोरनें पार्वतीनो[९२] सिंह पावा[९३] हीडइ[९४] अनइ[९५] इम ईश्वरना कुंटुंबमाहि अन्योन्य ग्रास करवा हीडतो अनेरा संसारमाहि किम न होइ.

ते[६६] करटक आपण हवें दमनक बि क्षुधा करी कंठ बइठो. राजाना मान्य रहित एहा बिहि हि अन्योन्य मंत्र करता हौआ. तिहां[६७] प्रथम दमनक बोलतो हौउ, अहो करटक आपण हवे प्रधान कीटा. ए पिंगलक सजीवकनुं ज वचन करेइ. एणें[६८] आपणो व्यापार मुंक्यो.[६९] अनइ सर्व एहनो[७०] सेवक थ्यो.[७१] तो[७२] शुं[७३] करवुं घटइ[७४]? करटक बोल्युं,[७५] जोहेइ[७६] ताहु[७७] वचन सांभलइ[७८] तोहइ[७९] ताहु[८०] दोष टालवानें[८१] कही जोइ. बोल्युं छइः

अशृण्वन्नपि बोद्धव्यो मन्त्रिभि पृथिवीपति.।
यथा स्वदोषनाशाय विदुरेणाम्बिकासुत ॥ १७८ ॥

प्रधानें[८२] राजा सांभलतो[८३] नोहइ[८४] तोहइ[८५] वचन[८६] कहिवु[८७] जिम आपणो[८८] दोष टलइ,[८९] जिम विदुरें[९०] अंबिकानो पुत्र[९१] प्रबोध्यु.[९२]

मदोन्मत्तस्य भूपस्य कुञ्जरस्य च गच्छत.।
उन्मार्गं वाच्यता यान्ति महामात्या समीपगा ॥ १७९ ॥

जो राजा मदोमत्त थकु[९३] उन्मार्गि चालइ[९४] हाथीनी[९५] परि[९६] तो[९७] प्रधान मोटा होइ तेन्हें निंदा होइ.

जो तें[९८] आपणें[९९] हाथिं[१००] ए पटनो पाणद्वार चलइ ते स्वामी कन्हइ[१] आण्यो[२]. ते माटइ[३] तें[४] आपणें[५] हाथें अंगारनी वृष्टि[६] करी[७]. दमनक बोल्यु[८], तें[९] साचु[१०] कह्युं;[११] माहरो[१२] ए[१३] दोष पण सिंहनो नहीं. उक्तं च यत, बोल्युं छइ,

जम्बुको हुडुयुद्धेन वयं चापाढभूतिना ।
दूतिका परकार्येण त्रयो दोषाः स्वयंकृताः ॥ १८० ॥

शीयाल[15] थोकडानें युद्धें मुंउं[16] अनइ संन्यासी हुं आपाढभूतें वंच्यो, *दूती[17] पीयारे[18] काजें नाक वढायुं, ए त्रण्य अनर्थ आपणा[19]* आफणीये[20] कीधा.

करटक बोल्युं,[21] ए कथा किम[22]? दमनक कहतो[23] होउ,[24]

[४. परिव्राजक अने धुतारो]

एक केहा[1] देशने[2] विषि[3] एकाति[4] मठ हूतो. तिहा[5] देवशर्मा नामिं तपस्वी एह्वो संन्यासी रहइ. तेन्हें[6] मोत्र[7] साधु[8] पुरुष[9] रूडा[10] वस्त्र आपें. ते वस्त्र वेचता[11] घणेंएक[12] काले[13] मोटी धनयुक्त] [26-A] मात्रा थई[14]. पिठिइं[15] केहिनुं[16] विश्वास न करइं.[17] दीहीराति[18] काष-माहिथी[19] मात्रा न मूकइ[20]. ते युक्त[21] बोल्युं[22] छइ.[23]

अर्थानामर्जने दुःखमर्जितानां च रक्षणे ।
नाशे दुःखं व्यये दुःखं धिगर्था कष्टसंश्रया. ॥ १८१ ॥

धन उपार्जिता[24] दुख हुइं,[25] ऊपार्जी[26] पछी राषता दुष, चोरें[27] जाइ[28] तो दूष,[29] विर्णाइं तु[30] दुष, अर्थ[31] किवल[32] पापनू[33] मूल ति[34] काई नही.[35]

एक आपाढभूति[36] एहि[37] नामि[38] पीयारा[39] चित्तनि[40] हरिइं[41] एह्वो[42] धूर्त ति[43] संन्यासीनी काष माहिली[44] मात्रा जाणीनइं[45] चिंति[46] चींतवतुं[47] होऊं,[48] एन्ही मात्रा हूं[49] किम[50] चोरी ल्युउं?[51] पण[52] मीत्य[53] तु मठनी पाहाणनी[54] छइ[55] निहा[56] पात्र[57] न पडाइ. दढ[58] कमाड माटि[59] द्वारि न पेसाइं.[60] ते भणी[61] मायावचनि[62] करी शिष्य थइं[63] विश्वास पमाडी[64] मात्रा ग्रहू.[65] बोल्यु[66] छइं,[67]

नाविदग्धः प्रियं ब्रूयात्स्फुटवक्ता न वञ्चकः ।
निःस्पृहो नाधिकारी स्यान्नाकामी मण्डनप्रियः ॥ १८२ ॥

चतुर विना रूडूं न बोलि,[68] जे स्फुट बोलइ[69] ते वंचक न हुइ,[70] जे[71] निस्पृह हुइ[72] ते अधिकार न लेइं,[73] जे[74] कांमी[75] नुहिइं[76] ते आभरण न पहेरई[77].

एहु[78] चीतवीनइं[79] ते संन्यासीनि[80] नमस्कार करी 'नमः शिवाय' एहुं[81] बोल्तुं[82] थकुं[83] त्रिशीनिइ[84] ति[85] स्यंनासीनि[86] कहे[26-B]तु[87] हूउं,[88] स्वामिन्! ए संसार कांइ[89] नही;[90] अनइं यौवन पाल्नी[91] परि[92] उतावलुं,[93] तृणना वैश्वानर[94] सरपूं[95] आयु, आभनी[96] छाया सरपा[97] भोग, स्वप्न सरपा पुत्र, मित्र कलत्र बंधु[98] सेवक एतला[99] ए मि[100] रूडी परि[1] जांणूं,[2] ते शूं[3] करतां नुहिं[4] संसारथी छूटीशइ[5]? एहू[6] सांभली देवशर्मा आदर[7] करी एहूं[8] बोल्यो,[9] अहो तूं[10] धन्य छि[11] जे[12] प्रथम वयनि[13] व्यपिइ[14] एवडो वैइराग्य[15]. बोल्यो[16] छंदं,[17]

पूर्वे वयसि यः शान्तः स शान्त इति मे मतिः ।
धातुषु क्षीयमाणेषु शमः कस्य न जायते ॥ १८३ ॥

जे[18] प्रथम व्ययनइ[19] विषइं[20] शात ते शांत कहीइ;[21] वृद्धपणें धातु क्षीण थ्या[22] पछी कुण एक शांत न थाइं[23]!

आदौ चित्ते ततः काये सतां संजायते जरा ।
असतां तु पुनः काये नैव चित्ते कदाचन ॥ १८४ ॥

सत्पुरुषनइं[24] प्रथम चित्तनि[25] व्यपिइ[26] वृद्धपणूं[27] आवइ[28] पछइ[29] डीलियि[30] आविइं,[31] असंतनि[32] प्रथम शरीरि जरा आवइ[33] पण चिचि नाविइ.[34]

जो[35] तूं[36] संसार तरवा ढीडिइ[37] छइं तु[38] सांभलि,

शूद्रो वा यदि वान्योऽपि चण्डालोऽपि जटाधरः ।
दीक्षितः शिवमन्त्रेण सभस्माङ्गी द्विजो भवेत् ॥ १८५ ॥

जे शिवदीक्षा लिय[39] अनइ[40] जटा धरिइ,[41] डीलि राप अडाडिइं[42] ते[43] चांडाल थको अथवा शूद्र थको ते ब्राह्मण[44] थाइं.[45]

षडक्षरेण मन्त्रेण पुष्पमेकमपि स्वयम् ।
लिङ्गस्य मूर्ध्नि यो दद्यान्न स भूयोऽभिजायते ॥ १८६ ॥

जे पूरूप[46] आपणपिं षडक्षर[47] मंत्रि[48] करी एक[49] फूल ल्यंगनि[50] चढावइं[51] तेन्हि[52] पुनरपि गरभ[53] विसे नही.[54]

एहं[55] साभली आषाढभूत संन्यासीनइं[56] पुगि[57] लागीनइं[58] बोल्तो हौउं,[59] स्वामिन[60] मून्हि[61] वर्त्त[62] द्यो,[63] प्रसाद करो. ति[64] संन्यासी बोल्यो, अहो तूंहि[65] कश[66] करोस[67] पण रात्रि[68] मठमाहि[69] तूं मानिश,[70] जे[71] भणी तिं[72] अनि मिं[73] निसंग[74] रहिवूं.[75] बोल्युं[76] छेइ,[77]

दुर्मन्त्रान्नृपतिर्विनश्यति यतिः सङ्गात्सुतो लालना-
द्विप्रोऽनध्ययना[27–A]त्कुलं कुतनयात्स्नेहः प्रवासाश्रयात् ।
मैत्री चाप्रणयात्समृद्धिरनयाच्छीलं खलोपासनात्
स्त्री मद्यादनवेक्षणादपि कृषिस्त्यागात्प्रमादाद्धनम् ॥१८७॥

दुष्ट प्रधानथी राजा व्यणसि,[78] जती संगथी व्यणशि,[79] पूत्र[80] लडाविइ[81] व्यणसिइ,[82] विप्र अणभणिं[83] व्यणसिइं,[84] कुल कपूंत्रि[85] व्यणशिइं,[86] शील मूर्षनी संगतिथी[87] व्यणशिइं,[88] मैत्री प्रिम[89] पापइं[90] व्यणसइ,[91] संमृद्धि[92] अन्यायथी[93] व्यणशिइ,[94] स्नेह विदेश[95] गयाथी[96] व्यणसिइ,[97] स्त्री मद्यथी व्यणशिइं,[98] करसण जोया पापिइ[99] व्यणीसइ,[100] धंन[1] तज्युं[2] अनइं[3] प्रमादथी व्यणशि.[4]

ते भणी तें मन मद्या पूठि मठनइं बारणेपु[5] पडी करी सूंवूं.[6] आषाढभूत बोल्यो, स्वामीनी[7] आज्ञा प्रमाण[8] पण मूंन्हि[9] हि ति[10] पप

पछइं[11] ते देवशर्मा कृपा[12] ति उपिरि करीनइं[13] शिष्य करतु[14] हौउं.[15] ते शिष्य तपस्वीनिइ[16] पात्यरी[17] अणावइं,[18] पुग[19] चंपाविइ,[20] संतोष पमाडतो हूउं;[21] पण संन्यासी कापमाहिथी मात्रा[22] न मुंकिइं.[23] इंम[24] घणो[25] काल जाति[26] आषाढभूत[27] चीतवतो[28] हूउं,[29] अहो[30] ए[31] केहि[32] मारो[33] विश्वास न करिइ.[34] तो[35] शू[36] दीहि[37]ज एन्हे[38] शस्त्रि[39] मारूं ? कि[40] व्यप[41] दोड[42] ? कि[43] बोकडानी परि[44] मुहु[45] बुरीनि[46] मारूं[47] ?' एहूं[48] चीतवता[49] ते[50] देवशर्मांना शिष्यनु[51] वेटो परगामिथी[52] नोहोतरवा[53] आव्यो; बोल्यो, स्वामिन[54] अम्हारि[55] घरि पवित्र पहिरवूं[56] तम्हे आववूं.[57] ऐहूं[58] कही[59] ते गयो.[60] पछिइं[61] ते[62] देवशर्मा आषाढभूननिइ[63] साथि[64] चाल्यो. पछिइ[65] वाटि[66] जातां नदी आवीइ.[67] ते नदी देषीनइं[68] देवशर्मा मात्रा कापथी उतारीनइं[69] कंथामाहि बाधीनइं,[70] स्नान करी, देव पूजी,[71] आषाढभूतनिइ[72] कहितो[73] होऊं,[74] अहो जेतलिइ[75] हूं वाहरि[76] जइ[77] आवूं[78] तां लगि[79] ए कंथा जागेश्वरनि[80] सावधान[81] थकु[82] रापजै.[83] एहूं[84] कहीनिइ[85] देवशर्मा फिरवा[86] गयो. पछि[87] आषाढभूति[88] ते मात्रा लेईनइ पेलुं[89] अदृष्ट थाइं[90] तितले[91] लेई गयो[92] निगो. पछि[93] [27–B] देवशर्मा विद्यार्थीना गुणनि[94] व्यश्च.सि[95] वाहिर[96] बइठु.[97] जेत्तलिइं[98] ऊठिइं[99] तेतलिइ[100] सोना सरपां रोम एहा[1] व्यढता[2] मीढा[3] दीठा. तेन्ही मारवा मुंए[4] वेगलु[5] जईं[6] रह्यो. ते मीढा व्यढता[7] तिन्हि[8] माथिथि[9] रूधिर[10] नीकली भोइ[11] पडूं.[12] ति रुधिर सीआल[13] चाटवा लागुं[14] भोयि.[15] तेन्हि[16] शीयाल[17] मूर्ष[18] दिवशर्मा[19] जोइंनि[20] चींतवतुं[21] हूउं,[22] ए[23] शीयाल मूर्ष जो[24] ऐ[25] व्योहुना[26] माथा वचि[27] आवशि[28] तु[29] मरशिइं[30] एहूं जाणू[31] छूंउ.[32] एहू[33] चीतवता[34] ति[35] शीयाल विहो[36] व्यचि[37] भोयि[38] मड[39] रूधिर[40] षाता विहोनि[41] माथि[42] चंपाईं मूंऊं.[43] दिवशर्मा[44] ति[45] मुऊं[46] दिपीनइ[47] दुप पाम्यो[48] थकु मात्रा

कनि[५१] आवतु[५२] हौउं.[५१] जेतलिइं[५२] आवि[५३] तितलिं[५४] आषाढभूतनि[५५] न दिपिइं[५६] पठि[५७] गिगो[५८] थोइ[५९] शाउच[६०] लेइं[६१] साद देतु[६२] होऊ,[६३] कंथा जोइं[६४] तो मात्रा न दिपिइं,[६५] अथवा युक्त,

तृणकाष्ठोदकशद्वादपि त्रास प्रयान्ति ये ।
व्याधैस्ते चापि वध्यन्ते क उपायैर्न वञ्च्यते ॥ १८८ ॥

जे[६६] तृण हालता बीहि,[६७] लाकडाथी[६८] बीहि[६९] ते मृगनइ[७०] आहिडी[७१] उपाय करी मारे[७२] छइ,[७३] पठि[७४] मनुष्य शा माहि.

पठि[७५] कहेतो हौऊ, अहो हूं वच्यो, एहूं बोलतो भोइं पड्यो. पछिइ मूर्छा ऊतरया पठी, साभलया पठी ऊठीनि आहा करचूं माडू. आषाढभूत[७७] मूंन्हि काइ वची ग्यो, मूंन्टि बोल दि. एणी परि घणू बोलीनि जातु होऊं, सन्याइं एक[१००] कोडक[१] गामि पाम्यो.[२] तिहा जाता साम्हो[३] एक कोली स्त्री सवाति[४] अनिरि[५] गामि[६] मद्य पीया चाल्यो ते साहामो[७] म्यल्यो.[८] देवशर्मा तिन्हि[९] कहेतो[१०] हौऊ,[११] हू[१२] संध्यासमय[१३] ताहिं[१४] अतिथ्य आव्यो[१५] छु हू[१६] ए गाममाहि[१७] कहिनि[१८] न ओलपू[१९] ति भणी[२०] हू[२१] ताहारो[२२] अतिथ्य छू[२३] बोल्यु[२४] छई,[२५]

प्राप्तो योऽतिथि साय सूर्योढो गृहमेधिनाम् ।
पूजया तस्य देवत्वं प्रयाति गृहमेधिन ॥ १८९ ॥

ये सन्याइ[२] अतिथ्य[२७] आवि[२८] ते[२९] सूर्योढ नामिं[३०] कहीइं,[३१] गृहस्थ तिन्हि[३२] पूजा करिइं[३३] तो देवतनि[३४] पामिइ.[३५] वली,

तृणानि भूमिरुदकं वाक् चतुर्थी च सूनृता ।
सतामेना[28-A]नि हर्म्येषु नोच्छिद्यन्ते कदाचन ॥ १९० ॥

तृण भुइं[३६] जल[३७] चुथू[३८] रुडु[३९] बोल्यू,[४०] एतला[४१] वाना[४२] सत्पुरुष जे[४३] गृहस्थ[४४] ते अतिथ्यनि[४५] आपइ.[४६]

स्वागतेनाग्नयस्तृप्ता आसनेन शतक्रतुः ।
पादशौचेन गोविन्दो विष्णुर्भोज्येन चातिथेः ॥ १९१ ॥

अतिथ्यनि[४७] बोलाविइ[४८] अग्नि तृप्त हुइं,[४९] आसन दीधि[५०] इंद्र तृप्त हुइं,[५१] पग धोतां गोवंद[५२] तृप्त हुइ,[५३] भोजनि[५४] व्यष्णु[५५] तृप्त हुइं.[५६]

अतिथिर्यस्य भग्नाशो गृहात्प्रतिनिवर्तते ।
स दत्वा दुष्कृतं तस्मै पुण्यमादाय गच्छति ॥ १९२ ॥

जेन्हा[५७] घरथी अतिथ्य[५८] पाछो वलिइं[५९] तिन्हिइं[६०] आपणूं[६१] पाप आपि[६२] अनि[६३] पूण्य[६४] तेन्हनु[६५] लेइ[६६] जाइं.[६७]

कोली एहू[६८] साभलीनि[६९] स्त्रीनि[७०] कहितु[७१] हूउं,[७२] अहो स्त्री तुं[७३] ए अनिथ्यनि[७४] लेइंनइ[७५] घरि जइनि[७६] एन्हे[७७] पगधोयण[७८] भक्षण शय्या एतलां आपीनि[७९] तूं[८०] घेरि[८१] रहजे.[८२] हूं[८३] ताहिं[८४] कायि[८५] घणूं[८६] मद्य लेइ[८७] आवुं छूं.[८८] एहु[८९] बोलीनि[९०] कोली चाल्यो. ति[९१] स्त्री विभिचारिणी[९२] ते[९३] अतिथनि[९४] लडनि[९५] हसती[९६] थकी[९७] कोइं[९८] पुरूपनिइ[९९] चित्तमाहि चीतवती[१००] घर भणी[१] चाली. एहूं[२] कहि ति[४] युक्त,

दुर्दिवसेऽसितपक्षे[५] दुःसंचारासु नगरवीथीषु ।
पत्यौ विदेशयाते परं सुखं जघनचपलायाः ॥ १९३ ॥

नगरनी[६] वाट रात्रि[७] मेघि[८] करी गाढी अंधारी हुइं,[९] अंधारि[१०] पपवाडि[११] भर्त्तार गामि[१२] ग्यु[१३] हुइ[१४] तेवारि[१५] व्यभचारिणीनि[१६] परम सुप हुइं.[१७]

पर्यङ्केष्वास्तरणं पतिमनुकूलं मनोहरं शयनम् ।
तृणमिव लघु मन्यन्ते कामिन्यश्चौर्यरतलुब्धाः ॥ १९४ ॥

रूडो[१८] पाथरु[१९] पलंग अनिइ[२०] भरत्तार[२१] भलु[२२] अनि[२३] रूडूं[२४] शयन एतलां तृणनी[२५] परि[२६] मानि जे[२७] स्त्री चोरीनि[२८] परपूरूप[२९] कन्हिइ आइ.

कुल्पतन जनगर्हां बन्धनमपि जीवितव्यसंदेहम् ।
अङ्गीकरोति तत्क्षणमवला परपुरूपसंसक्ता ॥ १९५ ॥

कुल्नु[३२] पाडनू,[३३] लोकनी[३४] निंदा,[३५] बधन, जीवना[28-B]नो सदिह,[३६] स्त्री एतला वाना[३७] अगीकरइ[३८] ज्ये[३९] पीयारा[४०] पुरुषशू[४१] लागी हुइ.[४२]

पछइ ते[४३] घरि जइनइ[४४] देवशर्मानिइ[४५] भागो पाटलो[४६] पाथरणा[४७] पाथिर[४८] आपीनइ[४९] कहेती[५०] हाट,[५१] अहो स्वामिन् जा लगइ[५२] हू[५३] गामिर्थी[५४] आवी ये सही[५५] तेन्हिट मली[५६] आवू[५७] ता लगइ घर साहामू[५९] जोज्यो एहु[६०] कहीनि[६१] श्रगार[६२] करी कोइक[६३] पूरूषनइ[६४] चीतवीनइ[६५] जेनलि[६६] जाइ[६७] तिनले[६८] साम्हो[६९] मन्विह्वल[७०] उघाडि[७१] माथइ,[७२] डगलइ डगलइ[७३] पडतु,[७४] हाथमाहि मद्यनु ठामडू[७५] एह्वो ति[७६] स्त्रीनु[७७] भर्त्तार[७८] साम्हो[७९] म्यल्यो[८०] आवतो दीठो पछि[८१] ते स्त्री विगि[८२] पाछी वलीनइ[८३] घरमाहि पइसीनइ[८४] शणगार[८५] मूक्यो[८६] पछइ[८७] कोली तिन्ही[८८] स्त्रीनिइ[८९] शृगार वनारो[९०] दिपीनइ[९१] वोछो[९२] थको[९३] घरमाहि[९४] पेसी[९५] ते[९६] स्त्रीहे[९७] कहितु[९८] हूउ[९९], अरि[१००] छीनालि तूं[१] क्याहा जाती हुती[२] ? ते बोली, हु तु कन्हियाँ[४] आवी[५] पछि[६] क्यही[७] नथी नीकली[८] तूं[९] शू[१०] मद्यपान[११] वगि[१२] भूहु[१३] बोलइ छइ. अथवा एहु[१४] कहीइ[१५] ते युक्त,

वैकल्यं धरणीपातमयथोचितजल्पनम् ।
सन्निपातस्य चिह्नानि मद्य सर्वाणि दर्शयेत् ॥ १९६ ॥

कला पापइ[१६] मोइ[१७] पडवू,[१८] ज्यथा[१९] नाच[२०] बोल्वू,[२१] एतला सनेपातना[२२] लक्षण मद्य सघलाइ[२३] देषाडिट.[२४]

करस्पन्दो वरत्यागस्तेजोहानिः सरागता ।
वारुणीसङ्गजावस्था भानुनाप्यनुभूयते ॥ १९७ ॥

हाथ हालइ,[७] रूडो[२६] छाडइ,[२७] तेजनी[२८] हाणि,[२९] राग घणो, एह्वी मद्यपानना[३] शरपी[३१] अवस्था सूर्ये पण[३२] भोगवीये छेइ[३३]

ति[३४] कोली एहू[३५] विपरीत[६] वचन साभली, वेष उतारयु[३७] देपीनइ[३८] तेन्हे[३९] कहतो[४] हउ,[४१] अरे छीनालि[४२] ताहारि[४३] हु[४४] घणा दिननु[४५] अपवाद साभलता[४६] ते मि[४७] अपि[८] दीठो[११] ते भणी[५०] ये[५१] तुनि[५२] घटि[५३] ति[४] करू[५] एहवू[६] गोलीनिइ[७] राशडि गाढी[८] मारीनइ[९] जर्जर करीनइ[६०] थामलीये[६१] बाधीनइ[६] मदविह्वल थको निद्रानि[६३] पाम्यो[६४] तेह्इ[६] समय तेही सखी नारीनी स्त्री ते कोली निद्रा पाम्यो[६६] जाणीनइ[६७] आवीनि[६८] कोलिणिनि[६९] कहिती[७] [29 A] हूउ[७१] अरि[७२] सपी ते देवदत्त तून्हिइ[७३] तेणइ[७४] ठामि[७] वाट जोइ[७६] छि[७७] ते भणी[७८] त्याहा[९] विगि[८०] जा कोलिणि बोलीइ,[८१] सखी[८२] जो माहारी अवस्था ते भणी[८३] हु किम जाउ[८४] तेन्हइ[८] तू[८६] जईनइ[८७] कहि,[८८] आज आणइ[८९] अवसरिइ तूनिइ[९] सगम नही[९१] हुइ[९२] नावइणी[९३] बोली, सपी एहू[९४] म कहेशिइ[९] लरटनु[९] ए धर्म नही[९७] बोल्यु छइ,[९८]

विषमस्थस्वादुफलग्रहणव्यवसायनिश्चयो येषाम् ।
उष्ट्राणामिव तेषा मन्येऽहं शसित जन्म ॥ १९८ ॥

विषम फलना स्वाद लेवानी जेहनी[१] इच्छा[१०] हुइ तेहना[१] जीववानो[२] ऊटनी परि[३] सशय[४] नाणवो वली,

सदिग्धे परलोके जनापवादे च जगति बहुचित्रे ।
स्वाधीने पररमणे धन्यास्तारुण्यफलभाज ॥ १९९ ॥

परलोकनो[१] सदेह छता,[२] जननी निंदा छता, लोक दुश्चित[८] थेका[९] पीआरो[१] पूरुष्य[११] वश छता ते स्त्री धन्य जे ज्योवननो[१२] रस भोगवि[१३]

ति[१४] कोलिणि बोली, जु[१] एहू[१६] छइ[१७] तो[१८] कहि[१९] केम[२] ए[२१] बधन थकी[२] छूटाउ[२३] अनिइ[४] पापी समीपि छइ, किम करू[२] नाविणि

बोली, सखी ए ताहारो[२७] भर्त्तार[२८] मदविह्वल[२९] थको[३०] सूतो व्याहाणे[३१] थिइ[३२] ऊठशि.[३३] ते भणी[३४] हूं[३५] तून्हेइ[३६] छोडूं[३७] छूं[३८] तिहां जा; ताहरि[३९] ठांमि[४०] मून्हइ[४१] बांधि अनेइं तिहा तु[४२] जई[४३] कांमकाज[४४] करी[४५] वेगि[४६] आवइ. कोलिणि बोली, 'आ परी'[४७]. पछइं[४८] आपणिइ[४९] ठांमि[५०] नाविणे[५१] बांधीनइं[५२] ते देवदत्त कन्हे गइं.[५३] तेवार[५४] पछी कोली ऊठीनइं[५५] रीम ऊतरी. पछइं[५६] सावधांन थको तेन्हि[५७] बांधीनइं[५८] आपणी स्त्री जाणीनइं[५९] बोलतो हूउं[६०], अरि[६१] छीनालि[६२] जो आजथी परपूरषनी[६३] संभाषण म[६४] करे[६५] तु[६६] तूंन्हिइं[६७] छोडूं.[६८] तिवार[६९] पछी[७०] नाविणि आपणो[७१] बोल प्रीछइं[७२] रखे ते माटइं[७३] अणबोली रही. पेलो घणूं[७४] कहेतो[७५] होऊं[७६] तोहइं[७७] बोली[७८] नही. पछिइ[७९] ते[८०] कोप्यो थको कोली छरी लेइंनि[८१] तेनूं[८२] [29-B] नाक वाढ्ढं;[८३] अनि[८४] केहेतो[८५] होऊं,[८६] छीनालि तूं[८७] हवि[८८] शोभा पामी,[८९] एहूं[९०] बोलीनिइ[९१] सुतो.[९२] अनइं[९३] देवशर्मा, ऊचाटो[९४] भूख्यो निद्रा उडी[९५] एह्वो ते सर्वे चरित्र जोतो हूऊं.[९६] पछीइं[९७] ति[९८] कोलीनी स्त्री तेह्वा[९९] देवदत्त संघाति[१००] संभोग[१] करीनइं[२] घरि[३] आवीनइं[४] नाविणिनि[५] केहेती[६] हूंइ[७], कुशल छइं[८] मु[९] ग्या[१०] पूठि[११] ! ए पापी शूं[१२] नथी ऊठो[१३] ? नाविणि बोली, नाक[१४] पापि[१५] शरीर[१६] सघलूं[१७] वारू[१८] छइं,[१९] सघली वात कही; कहती हूइ[२०] जे, मुंन्हइं[२१] छोडि, हूं[२२] माह्रइ[२३] घरि जाउं. पछइं[२४] तेणी[२५] कोलिणि नाविणि छोडीनइं[२६] आपणपुं बाध्युं.[२७] वली कोली ऊठीनइ[२८] कहतु[२९] हूऊं[३०], अरि[३१] छीनालि हजी का[३२] नथी बोलती ? वली शूं[३३] कांन[३४] वाढुं ? पछेइ[३५] कोलिणि गाढीइ[३६] कोपी थकी[३७] बोलती[३८] होइं,[३९] अरि[४०] मूर्ष मुं सतिनिइं[४१] साम्हा[४२] को[४३] जोवा समर्थ नही.[४४] अहो लोकपालो तह्मे[४५] सांभलज्यो[४६] मह्वारू[४७] वचन,

आदित्यचन्द्रावनिलोऽनलश्च द्यौर्भूमिरापो हृदयं यमश्च ।
अहश्च रात्रिश्च उभे च संध्ये धर्मो हि जानाति नरस्य वृत्तम् ॥२००॥

सूर्य चंद्र वायु अग्नि स्वर्ग भूमि उदक हैयुं ज्यम[48] दिन रात्रि विहि[49] संध्या धर्म एतला[50] वांना[51] मनुष्यनो[52] पापपुण्य[53] जाणि.[54]

जो हूं[55] सती[56] होउं[57] तो[58] देवता[59] माहारूं[60] नाक[61] साजुं[62] करजो[63] अनि[64] तुं[65] मि[66] मंनि[67] परपूरूष[68] चींतव्यो[69] हुइ[70] तो[71] मुहनीं[72] भस्म करज्यो.[73] एहवूं[74] कहीनिइं[75] कोलीनइं[76] कहेती[77] हूइ[78] अरे दुरात्मा माहारूं[79] सत्य[80] जो नासिका[81] जेहवी[82] हूती[83] तेहवी[84] थई साजी.[85] पछइ कोली[86] वल्तुं ऊंनाड[87] लेइंनइं[88] जोइ तो नाक साजुं देषइ.[89] तलिइं[90] लोही घणूं[91] पड्इ[92] देष.[93] पछइ आश्चर्य पामीनइं[94] तेन्हइं[95] छोडीनइ रूडा मधुर वचन बोली स्त्रीनइं[96] सतोषतो[97] हुऊं[98] देवशर्मा यि[99] ते सर्व जोईनइं[100] विस्मयनि[1] पाम्यो[2] थको[3] चींनवतो[4] हूउं,[5]

उशना वेद यच्छास्त्रं यच्च वेद बृहस्पति ।
स्त्रीबुध्या न विशेष्येत तस्माद्रक्ष्या कथ हि ता ॥ २०१ ॥

शुक्र बृहस्पति ये शा[30-A]स्त्रनि[6] जाणइं[7] ते शास्त्र स्त्रीनी बुद्धि थकी विशेष नही.

अहो स्त्री ऊपरि रूपें[8] करी प्रेम न करवो. स्त्री यवारि[9] उद्धत हुइं[10] तवारइं[11] कुलनि[12] दहि[13] जिम वृक्षनि[14] बीज दहिं.[15] बोलुं[16] छइं,[17]

नातिप्रसङ्ग प्रमदासु कार्यो
नेच्छेद्बलं स्त्रीषु विवर्धमानम् ।
अतिप्रसक्तै पुरुषैर्यतस्ता
क्रीडन्ति काकैरिव लूनपक्षै ॥ २०२ ॥

स्त्रीनो[18] संग घणो[19] न करवो.[20] स्त्री बल्वंत थावा न दीजइ.[21] ते[22]भणी अति संग जे[23] पूरूष[24] करइ[25] तेन्हइं[26] त्रोडी[27] पापना कागनी[28] पर[29] पूरूषनइं[30] रमइ.[31]

एता हसन्ति च रुदन्ति च कार्यहेतो-
विश्वासयन्ति च पर न च विश्वसन्ति ।
तस्मानरेण कुलशीलवतासदेव
नार्य श्मशानघटिका इव वर्जनीया ॥ २०३ ॥

स्त्री निचनि[32] हसि[33] अनि[34] रोइ, पुरपनि[35] विश्वास ऊपजाविइ[36] पण विश्वासइ[37] नही[38] ते भणी सघले[40] पूरूपे[41] श्मशानना[42] घडानी[43] परि[44] स्त्री[45] त्यजवी दुष्ट

व्याकीर्णकेसरकरालमुखामृगेन्द्रा
नागाश्च दानजलराजिविराजमाना ।
मेधाविनश्च पुरुषा समरेऽपि शूरा
स्त्री सनिधौ परमकापुरुषा भवन्ति ॥ २०४ ॥

मोटा केसरमुपज्युक्त[46] सिंह, [मदझरता][47] हाथी, पडित, शूर, एतला[48] भलाइ[49] स्त्री कुन्हइ दीन थइ[1]

स्तनौ मासग्र थीरनकनलशाविस्युपमितौ
मुख श्लेष्माागार नदपि च शशाङ्केन तुलितम् ।
शकृन्मूत्रावास पृथुकरशिरस्पर्द्धिजघनम्
अहो निद्य रूप कविजनवितर्के गुरूकृतम् ॥ २०५ ॥

स्तन[2] मासनी गाठि[3] ते सोनाकुभ[4] समानि[5] कीधा, मुघे श्लेष्म भरू ते चद्र समाने[7] कीधू[8] विष्टा मूत्रनु[9] ठाम[10] ये[11] नितर ते हाथीना कुमस्थल शरपो[12] कीधो,[13] अहो पडीत्यें[14] न्यच[15] जे[16] रूप ति[17] कवीश्वरि[18] मोट्ट[19] करी दिपाड्यू[20]

अन्तर्विषमया ह्येता बहिश्चैव मनोरमा ।
गुञ्जाफलसमाकारा योषित केननिर्मि [30-B]ता ॥२०६॥

स्त्री चरमीनी[71] परिइ[72] माहि[73] विप रूप अनइ[74] बाहिरि[75] रूडी,[76] सघली[77] स्त्री एइहवी[78] जाणवी[79]

ईणी[८०] परि[८१] चीतवतो[८२] थको[८३] देवशर्मानिइ[८४] व्याहाणू[८५] थौऊ[८६] ते[८७] नाविणि जि[८८] दुती[८९] ते तनाहारि[९०] निगि[९१] जइनई[९२] नाक वाढू[९३] हाथमाहि[९४] साहीनई[९५] घरमाहि गई[९६] अनि[९७] चीतवती होई,[९८] 'हविइ[९९] हू[१] शू[२] करू[३] ?' तेनार[४] पठी तेहो भर्त्तार नाहावी[५] प्रातुक्कालि[६] राजानी डाढी समारवानिइ[७] बारणा[८] आगिल रहीनेइ[९] नाविणनि[१०] 'वेगे निगे[१०]' कहेतो[११] होऊं,[१२] 'अरि[१३] स्त्री छरानो कोथलो विगि[१४] आपि[१५] जे[१६] राजा भणी हु जाऊ[१७]' पछिइ[१८] ते स्त्रीनिइ[१९] बुद्धि उपनी[२०] अनइ[२१] कोथलामाहिथी[२२] एक छरो काढीनिइ[२३] ते नाहवी साम्हो[२४] नाप्यो[२५] पछै[२६] ते नावीअनइ[२७] सघलु[२८] कोथलु[२९] नाप्यो तिणइ[३०] कोप्यो थको छरो पाछो नाविणि साम्हो नापो पछइ ते[३१] नाविणि[३२] हाथिइ[३३] नाक लहीनइ[३४] रूधीर काढीनइ[३५] नाकनो[३६] कटको लेई[३७] परडीनइ,[३८] डाडि[३९] पाडती[४०] रोती घर बाहिरि[४१] नीसरी[४२] नाकनो कटको लिइ[४३] आगिलि नाप्यो पछिइ[४४] गाढि[४५] किहिती[४६] होई, अरि[४७] लोको एणे[४८] माहारू[४९] नाक वाढू पापीइ,[५०] धायो[५२] रि, धायो रि[५३] पठइ[५४] लोक आवी जोइ[५५] तो प्रत्यक्ष नाक वाढू[५६] देषइ[५७] ते नाहवी[५८] साहीनइ[५९] गडदे पाटूइ मारीनिइ[६०] राजद्वारि लइ[६१] ग्या, अनिइ[६२] स्त्रीनिइ[६३] सघाति[६४] लेइ[६५] ग्या पठइ[६६] सभाइ[६७] बिठा[६८] छइ[६९] तेहनिइ[७०] कहेता[७१] हूऊ,[७२] अहो ईणे[७३] नावीइ[७४] निरापराध ए स्त्रीनू रत्न[७५] नाकहीन कीधू[७६] ते भणी जे एन्हइ[७७] जुक्त हुइ[७८] ति[७९] करो पछेई[८०] सभाइ[८१] बिठा[८२] छइ ज्ये पूरूप ते पूछता हौआ नावीनइ,[८३] अरि[८४] ते मोटू[८५] कर्म ए ताहरी[८६] स्त्रीनिं[८७] कीधू[८८] ईणी स्त्रीइं[८९] शू पीयरा पूरूपशु[९०] सबध कीधोइ[९१] ?

अथवा तून्हइ[९२] मारवानू[९३] उपाय कीधउ[९४] ? के[९५] चोरी कीधी ? ते[९६] कहइं[९७] एन्हो शु[९८] अपराध छ[९९] ? पछेइ ति[१] विस्मय पामो[२]

थक्को[3] उतर[4] न ऊपजतु[5] हौऊं.[6] तिवारि[7] सभासद[8] शास्त्र जोइनि[9] किहेता[10] हू[31-A]ऊं,[11] अहो इंणि[12] राजानिइ[13] जणे रूडूं कहुं.[14] सत्य बोल्युं ज्ये[15] नावीये[16] निरापराध पोडि स्त्रीनिइं[17] कीधी. बोल्युं[18] छइ,[19]

भिन्नस्वरमुखवर्णः शङ्कितदृष्टिः समुत्पतिततेजाः ।

भवति हि पापं कृत्वा स्वकर्मसंत्रासितः पुरुषः ॥ २१० ॥

मूषनो वर्ण अनि[20] स्वर विपरीति[21] थाइं,[22] दृष्टि च्यकित[23] हुइं,[24] तेजहीन हुइं अनिइं[25] आपणा कांमथी[26] जे[27] बीहिइ[28] तेणे[29] पूरूपे[30] पाप कीधुं जांणवूं.[31]

पछेइं[32] नाहवी[33] लाकडि[34] मारयुं ते बोली न सकतु[35] हूउं.[36] पछइ[37] एईणे लयक्ष्यणे[38] सापराधी[39] जांणीनइं[40] जणने[41] कहता हूउ,[42] ऐन्हे[43] शूलीइ[44] चढावो.[45] पछेइ[46] ते राजाना जण नाहवीनिइं[47] सूलीइं[48] चडावश[49] लिईं[50] जाता हौआ. साथि[51] लोक कल कल शब्द करतो जोवा चाल्यो.[52] एहवि[53] ते सन्यासी[54] कोलीनिइं[55] घिरिथी[56] उंठीनिइं[57] प्रातुक्हालि[58] बाहिरि[59] वाडि आवानि आथ उंदकनि[60] कनिइं गाम[61] बाहिरि तिणि[62] ठामि[63] गयो, दैववशथी तिणे[64] ठामि गयो ज्यांहा[65] पेला नाहवीनिइं[66] सूंलीइं[67] दि[68] छिइं.[69] अनइं[70] नाहीवीनइं[71] सूलीइं[72] सारवा[73] आंण्यो[74] दिपीनेइं[75] दया उंपनी.[76] पछइ[77] ते राजाना शेवकनि[78] किहितो[79] हूउं[80] अनिइ[81] प्रार्थतो हूउं,[82] तां लगि[83] एहनि[84] शूली म विसारस्युं[85] जा[86] लगि हुं राजानि[87] कहूंउं.[88] तेणि[89] ति तपसीनूं,[90] वचन मान्युं.[91] पच्छेइं[92] ते ब्रांह्मण[93] राजद्वारि जइंनिइं[94] जिहां न्याय करइ[95] छंइं तिहां जइंनिईं[96] न्याय करणहार आगलि कहेतो[97] हूउं,[98] ए नाहवीनो[99] अन्याय नथी.[100] माहारी[1] वार्ता[2] साभल्यो.[3] मेइं पूर्वे दिनरात्रि[5] दीठी[6] ति[7] ए सर्व नाविणिनो[8] ज अपराध. ति[9] सर्व

वृत्तात कहीनइ,[९] नावीनइ, छोटानीनइ,[१०] एक श्लोक भणतु[११] हुउ[१२] जे पाछिलि[१३] ल्यपो,[१४] 'जम्बुको हुडुयुद्धेन' ए श्लोक पढि[१५] तेणि[१६] राजानि अविकारीइ[१७] सर्व[१८] वृत्तात जा[31–B]णीनिइ[१९] नाहवी[२०] राप्यो अनइ[२१] नाविणिना[२२] कान नाढ्या पछिड[२३] नावी विरि[२४] ग्यो[२५]

ति भणी हु[२६] कहु छू, 'जम्बुको हुडुयुद्धेन' ए कथा पढइ[२७] करटक बोल्यो, 'तो हवि[२८] शू[२९] करवू[३०] पटइ[३१] आपणिर[३२] ?

एक हन्यान्न वा हन्यादिपुर्मुक्तो धनुष्मता ।
बुद्धिर्बुद्धिमतो सृष्टा हन्याद्राष्ट्रं सराजकम् ॥ २०८ ॥

धनुर्धरि[३३] शर मुकु[३४] थको[३५] एकनइ[३६] मारइ[३७] के[३८] न मारइ[३९] पण बुद्धिमत[४०] बुद्धि करी राजा समित[४१] राज्य[४२] हणि[४३]

दमनक बोल्यो, मही बुद्धमतनि बुद्धि करी दोहिलु छुटेउ

आसन्नकार्यस्य समुद्भवार्थ
मागामिकार्यस्य च सग्रहार्थम्[४४] ।
अनर्थकार्यप्रतियातनार्थम्
सन्मन्त्र्यतेऽसौ परमो हि मन्त्र ॥ २०९ ॥

ढूकडूं[४५] काज आवू[४६] जाणीनइ[४७] ते करवानेइं[४८] आवतु[४९] धन[५०] न राषवानि[५१] अनि[५२] अनर्थ शमाववानिइ[५३] जि[५४] एतला करवानिइ[५५] प्रथम मत्र कीजेइ[५६] ते प्रमाण.[५७]

सजीवकन्हे[५८] स्वामीथी[५९] बुद्धि वीजोगि करू.[६०] बोलुं[६१] छइ,[६२]

मन्त्रिणा भिन्नसधाने भिषजा सान्निपातके ।
कर्मणि व्यज्यते प्रज्ञा स्वस्थे को वा न पण्डित ॥ २१० ॥

प्रधाननि मैत्री[६४] करवा चातुरी जाणवी, वैद्यनिइ[६६] सन्यपात, पडी गता बुद्धि जाणवी,[६७] अन्यथा[६८] सन्निधि[६९] कुण चतुर न होइ[७०]

ते भणी पिंगलक मोटि दृष्टि छइ ति भणी सजीवकथी निजोय म्हारा जोय. बोल्यु छेइ,

> व्यसनं हि यदा राजा कामात्सप्रतिपद्यते ।
> विधिना शास्त्रदृष्टेन भृत्यैरार्यं प्रयत्नत ॥ २११ ॥

राजा जेणारि वशने पडिइ तेणारिइ सेवकि शास्त्रदृष्टि करी ति व्यसन टालवूं

ते भणी स्वामी व्यसने पडो छइ जे भणी सजीवकि वशि कीधउ छइ. छ गुणमाहि एकइनी चिंता नथी करता. संजीवक ए पडनो पनहार धर्मनी ज वात करइ धणूं शूं म्हीइ सजीवक पिंगलकथी जूयो करवो करटक बोल्यु, तु असमर्थ. कम तिहि निजोग, पमाडीश दमनक बोल्यो, 'अ[32-A]हो साभलउ,

> उपायेन हि तत्कुर्यात् यन्न शक्य पराक्रमै ।
> काक्या कनकसूत्रेण कृष्णसर्पो निपातित ॥ २१२ ॥

ये पराक्रमें न चालइ ते बुद्धि करवुं जिम कागडीयें सूनानइ सूत्रि कालु साप मारियो

करटक बोल्यो, 'ए कथा किम ?' दमनक कहितु होउ.

[७. वायसदंपती अने कालो साप]

एकइ टामि मोटउ वडनु वृक्ष, तिहा काग कागिणि बि रहि छइ तेन्ही मालाइथी नान्हा कागलाने सर्प वडमाहि थड कोपराडिथउ नीकलीनइ सदाइ खाइ पछइ ते कागना नान्हा सघला पाधा देखीनइ दुखी होउ अनइ घणा दिननो आश्रयो ये वड ते छाडी न सकइ. बोल्यु छइ,

त्रय स्थान न मुञ्चन्ति काका कापुरुषा मृगा ।
अपमाने त्रयो यान्ति सिंहा सत्पुरुषा गजा ॥ २१३ ॥

काग कुपुरुष[27] मृग ए[28] त्रिण्य[29] आपणउ[30] ठाम न छाडइ[2] अनइ सिंह सत्पुरुष गज हाथी[31] अपमानथी छाडी जाइ

तिवार पछी[4] कागने पागे लागीनइ[3] बोन्ती होई, 'स्वामिन् घणा[35] वाल्क इणइ[37] दुष्टि[38] सर्पे पाधा ते भणी[1] जनेरउ[4] वृक्षि[42] जेये.[42] बोल्यउ[43] छद,

नास्त्यारोग्यसम मित्र नास्ति व्याधिसमो रिपु ।
न चापत्यसम स्नेहो न च दु ख क्षुधासमम् ॥ २१४ ॥

आरोग्य समान[44] मित्र नथी,[4] व्याधि समान[46] वटरी नही,[47] पुत्र समान[48] बधु नही[49] क्षुधा समान[50] दुप नही[1]

यस्य क्षेत्र नदीतीरे भार्या च परसगता ।
गृहे सर्पाश्रयस्तस्य कथ स्याच्चित्तनिर्वृति ॥ २१५ ॥

येन्हइ[52] क्षेत्र नदीतट काठइ[53] अनइ येन्ही[4] स्त्री व्यभिचारिणी[5] अनइ घरमाहि जेहनइ[1] सर्प[7] होइ ते[58] सुखी नही

पछइ काग दुषी थकउ[60] बोल्यो, ईणे[62] वडि रहिता[1] आपणट[63] घणउ[64] होउ ते भणी[65] छाडवा नथी सकता बोल्यु छइ,

युक्तो मृगो [32–B] ऽनुजीवति तोयप्रभ्येन घासमुष्ट्या वा ।
मुञ्चति चिरोपितराजन्मवन नापमानेऽपि ॥ २१६ ॥

मृग पत्राली[67] पाणी, मूठि पड, एतलु[68] जीवइ[1] पण आपणु घणा दिवसनु[7] वन न छाडइ.[72]

घणु[73] शु कहु[2] ए सर्पनो बुद्धि करी वध करेगि ' कागडी बोली, 'मोटु[75] विष[76] छ ए कन्हे[2] किम[77] मारेशि[2]' काग बोल्यु[7] 'जो ऐ

मे[७८] नही मराइ तोहि[७९] न्यायशास्त्रनें जाणें छंद[८१] तेहनइ[८२] पूछी एन्हि[८३] मरवानो[८४] उपाय थोडे[८५] दिने करेशि.[८६]' एहुं घणुं काग बोलीनइं[८७] अनेरइ[८८] वृक्ष[८९] गयु.[९०] ते[९१] वृक्ष तलइ[९२] एक शीयाल रहे[९३] ते[९४] एन्हो[९५] मित्र. तेन्हे[९६] काग बोलावीनइ[९७] आपणुं सर्व दुष निवेद्युं[९८] अनइ[९९] कह्युं[१००] हीउ,[१] अहो शीआल[२] सर्पनें[३] मारवानो विलंब न[४] करवशु.[५] ते आपणइ[६] मोटउ[७] वइरी छइ.[८] तेणइ[९] अनेक बालक मारया.[१०] शीआल बोल्यो, अहो मित्र काग मे[११] ए[१२] अनुभव्युं[१३] छइ.[१४] ते दुःख न करवउ.[१५] ए पापी सर्प एहनइ[१६] पापि[१७] नाश पामिशि.[१८] बोल्यु[१९] छइ,[२०]

> अपकारिषु मा पापं चिन्तय त्वं कदाचन ।
> स्वयमेव पतिष्यन्ति कूलजाता इव द्रुमाः ॥ २१७ ॥

वैरी[२१] पापी उपरि[२] पाप न चीतवीइ.[२३] ते तेहनइ[२४] पापि[२५] नदीना कांठाना वृक्षनी परे[२६] आफणीये पडइ.[२७] श्रूयते च[२८] सांभलीइ[२९] छइ,[३०]

> भक्षयित्वा बहून्मत्स्यानुत्तमाधममध्यमान् ।
> अतिलोल्याद्बकः कश्चिन्मृतः कर्कटकग्रहात् ॥ २१८ ॥

एक बगलो अति लोभथी घणा मत्स्य[३१] षाईनइ[३२] कर्कटनें[३३] पावा जातो[३४] तो तेनलइ[३५] कर्कटे गलइ साही मारयो.

काग बोल्यु,[१] 'ए कथा किम?' शीआले[२] कहितु[३] हीउ,

[६. बगलो अने करचलो]

एक[१] ठामि तलावनइ[२] कांठइ[३] बग[४] रहेइ.[५] ते[६] वृद्ध, माटइ[७] माछलानइं[८] मुषि[९] पावानु[१०] उपाय चीतवतो[११] थको[१२] कन्हेइ[१३] आवेइ[१४] ये[१५] मत्स्य तेन्हे[१६] पाईलइ[१७] बेठो[१८] रहे.[१९] ते सरोवरमाहि[२०] सघला[२१] नाठ[ा] मध्य एक कुलीरक एहुं[२२] नामें [करच]लो[33-A]इ.[२४] ते बग

समीपि जइनइ[25] आदर करी पूछतो हौउ, अहो, मामा जिम[26] पहिलु[27] मत्स्यनो[28] आहार[29] करता तिम हवडां[30] शि नथी करता ? वग बोलै,[31] अहो आज लगइ[32] तम्हने[33] पातो [अनइ सुपे[35] रहतो.[36]] आज पूठि[37] तम्हथी[38] नाश देपूं[39] छूं.[40] तीणे[41] मून्हेइ[42] गरढपणि[43] आहारनो उपाय भाजशो[44] ? ते भणी दुषी थको कन्हलि[45] माछला आवें छइं[46] पण तेहने[47] नथी[48] पातो. कुलीरक बोल्यो, अम्हनें[49] शूं[50] पाडुउं हुणहार छइ[51] ? बग बोल्यो,[52] अम्हनें शुं[53] आज मे[39] ईहा[54] तलावनइ[55] काटइं[56] रह्या घणाएक माछलाना[57] मारणहार नावइ।[58] बोलना सांभल्यां.[59] ते कहता हौआ, अहो आपण[60] ए तलाव[61] माछले[62] भर्युं छइ.[63] ते[64] आपण कालि परमे जाल घाली सवलां माछला[65] काढी मारशूं,[66] ते भणी[67] हुं पहूं[68] कहता सांभलीनइ विशेषि[69] कहुं छुं तम्हने ज तह्मारुं बीज नहीं[70] रहइं.[71] ते भणी[72] तम्हनैं कहुं छउ जे आपग सर्व नगर समीपि[73] द्रह[74] छइ[75] तिहां[76] जइये.[77] ईणी चिंताइ हूं[78] दुषी[79] होउ[80] छुं; जे तम्ह मरता हुंइ[81] मरेसि गरढपणा[82] मारइं.[83] पछिइ[84] ते दुष्ट[85] बगनुं[86] वचन सवला माछला सांभलीनइ[87] वीहीता[88] थका[89] बगनइ[90] कहिता[91] हौआ, अहो बग[92] मामा भाई तुं मित्र छइं.[93] अम्हने[94] राषवानो उपाय कहि[95] अनइ[96] मरता[97] राषि.[98] बग बोल्यौ,[99] हु[100] पक्षीमिं मनुष्यशुं[1] वैर न थाइ पण मुन्हे[2] एतलुं बल छइ[3] जे तम्हने[4] ए तलावथी बीजइ[5] द्रह[6] लेई[7] जावानुं.[8] ते[9] तलाव मोटुंउं घणुं,जल कमल भर्युं; तिहां[10] आज हुं तम्हनइ[11] लेई[12] जाउं.[13] पछइ[14] ते मत्स्य ते बगलानइ[15] वचनइ[16] मोह्या[17] बोलता[18] हौआ, अहो मित्र मामा[19] भाई[20] पहिलुं[21] मुंन्हि[22] लेइ[23] जा,[24] मोटउ[25] ताहरु[26] उपकार[27] हुसि.[28] बोल्युं छइ,[29]

स्वहृदयनिहितरागा. सुजनतया संस्मरन्त इह सुकृतम् ।
[37–B] स्वं जीवितमपि सन्तो न गतं गणयन्ति मित्रार्थे ॥२१९॥

सन अभिमान[1] करी रूडुं करता आपणु[2] जीवित[3] पण[4] [न गणे][5] अनइ विपइ[6] दिशा[माहि][7] न गणि[8] मित्रनइ[9] अर्थि.

पछइ[10] बग अतर्गत दर्शनइ[11] चीतवतु[12] होउ,[13] मरो[14] ए बुद्धि करी वशि कीधा[15] छई,[16] सुपि[17] पाईशि[18] एह चीतनी[19] ते[20] झाझा माछलानाहिथी[1] भलु[2] मच्छ[3] अकेकु[4] लेई[5] वेगलो जेनइ[6] शिला उपरि[7] नाखी[8] पातउ[9] होउ इम दिहाडी यथेष्ट चाचे[1] लेई[0] जाइ[1] अनइ आस्ना ते जूठो सदेशा[2] कहि[3] जे पेले माछले सुपनु[4] सदेशो रह्यो छउ,[5] ईणी[6] परि[7] निश्वास ऊपाइ. एक वार कुलीरक मरता बीन्तु[8] थको बगने[9] घणु घणु[10] प्रार्थतो होउ, "मामा[11] बग मूहनइ[12] मरतु[13] गपि बग चीतवतु[14] होउ, बीजा माछला पाट[15] अरुचि पाम्यो छु[16] एह[17] माछलउ[18] अपूर्व छउ,[19] एहनइ[20] आस्वादु[1] एह चीतनीनइ[2] कुलीरकनेंड[3] लेइनइ[4] ऊडयो पछइ[5] सघलु[6] गगेनर कुलीनइ[7] ते[8] शल उन्ही[9] उपरि जेतलि[10] ऊतारइ[1] तेनल्ड[12] कुलीरक पूछतो होऊ,[13] अहो मामा[14] किहा ते मोटउ[15] सरोवर[1] पछइ[2] बग हसी[16] बोल्उ,[17] ए मोटी शिला देखु[18] छउ[1] उन्ही[2] शला ऊपरी सघला माछला[3] स्वस्थ हाआ[4] ईहा[5] तु[6] रहइ स्वस्थ थापिशि[7] पछइ[8] कुलीर[9] हेठउ[10] जोड तो शल[11] उपरि माछलाना हाडनु[12] ढगल्उ[13] मोटउ[14] पछइ चीतवतो[15] होउ,[16] अहो,

> शत्रुरूपाणि मित्राणि मित्ररूपाश्च शत्रव ।
> जायन्ते कार्यसिद्धयर्थं केचिल्लोके विचक्षणा ॥ २२० ॥

केतलाएक विचक्षण आपणु[1] काज[2] साधवाने शत्रु ते मित्र थाई[3], [मित्र[4] ते शत्रु थाइ[5]]

> शत्रुणा न च सदध्यात् सुश्लिष्टेनापि चारणा ।
> सुतप्तमपि पानीयं शमयत्येव पावक ॥ २२१ ॥

मला शत्रुशु[23] मेल न करवु;[24] मेल कीधा[25] पछी नाश पमाडई[26] जि[34-A]म उन्हुं[27] पाणी वैश्वानरनें शमाडइ.[28]

ते भणी[29] ईणे[30] जाणीनइ मत्स्य सघला सही[31] पाधा. ये भणी[32] एवडां हाड दीसइ[33] छइ. ते भणी माह्नो इ[34] काल आव्यो. अथवा शुं चीतवीइये[35] ?

गुरोप्यवलिप्तस्य कार्याकार्यमजानतः ।
युध्यमानस्तदा सोऽपि कुर्यात्कार्यमतंद्रितः ॥ २२२ ॥

मोटो[3] गर्वनइ[38] पाम्यो , कीजइ[4] ए न कीजइ एह्न न जाणइ एह्वा शत्रुशुं युद्ध करीनइ[41] आपणुं[42] काज[43] साधवुं.

वली कुलीरक बोल्युं, मामा तलाव केतलइएक[44] छइ[46] ? शुं[47] माहरइ[48] मारि[49] थाकु[50] छइ[51] ? कहि.[52] बग चीनवतु[53] हौउ, ए माछलो वेगलइ[54] ठामि आण्यो[55] किम जासि[56] ? एहवउ[57] चीतवीनइ[58] बोल्तो हौउ,[59] अहो किहा[60] तलाव छइ[1] ? ए शला[62] उपरि[63] तूम्हे[64] भक्ष करेसि.[65] तु आपणो देवता स्मरि. एहुं बगि[66] कह्या पूठि[67] कुलीर[68] वगनी कोट पातली दाते करडीनइ[9] बगनें मारीनइ[70] हलू हलूं आपणा तलाव भणी बगनु गलु साहीनइ आव्यो. पछइ[71] सघला [माछला][2] पूछता हौआ, अहो कुलीर[73] तुं पाछु कांई[74] वल्यो[75] ? शुं[76] उपशकुन[77] हौआ ? ते[78] बग नाव्यो ते शुं[79] ? एहुं ते[80] पूछ्या पछी हास्य[81] करी कुलीर कहतो हौउ, मूर्ष[82] सघला माछला ते बगे[83] वाहीनइ[84] शल[85] उपरि लेइ[86] सघला[87] पाधा; हु रली[88] ऊगरिउ.[89] तेन्हो[90] मारवानो अभिप्राय जाणीनइ[91] में[92] तेहनी[93] कोट करडी आणी छइ.[94] ते भणी तम्हे निश्चिंत थाउ. हवें[95] कुशल हुशि.[96]

ते मांटइ[97] कहुं[98] छुं,[99] 'भक्षयित्वा बहून्मत्स्यान्' ए कथा. काग बोल्युं,[100] 'अहो सीआल[1] ते सर्प्प[2] किम मारीस्यि[3] ? शीआल[4] बोल्यो,

जेहनइ[74] बुद्धि तेहनइ[75] बल, बुद्धि पापइ[76] पुरुषनइ[77] बल नही जिम वनमाहि मत्त सिंह ससें[78] मारचो.[79]

करकट बोल्यो, ए कथा किम ? दमनक कहितु[80] हौउ,

[७. सिंह अने ससलो]

एक वनमाहि भासुरक नामि[1] मदोन्मत्त[2] सिंह रहइ.[3] ते येतला[4] वनमाहि[5] जीव देषइ[6] तेहनइ[7] मारइ[8] पछइ[9] मृग वनना जीव सघला मिली, दीन थै,[10] मुढइ[11] तृण लेई[12] नमता दीन[13] थका ते सिंहनइ[14] वीनती करता हौआ, स्वामिन् सघ[35-A]ला जीवनु मारवुं काढवुं[15] एहुं[16] लोक विरुद्ध ये कर्म ते आज पूठि म करश्यु.[17] ए[18] पर लोकनइ[19] विरुद्ध बोल्यउ[20] छइ,[21]

एकस्य जन्मनोऽर्थे मूढा कुर्वन्ति यानि पापानि ।
जनयन्ति तानि दुःखं तेषां जन्मान्तरसहस्रम् ॥ २२५ ॥

एक जन्मनइ[22] अर्थि मूर्ष तेहवा[23] पाप करे[24] छे[25] जे जन्मने सहस्रे करी दुख भोगवीये.[26]

अपवादो भवेद् येन, येन विप्रत्ययो भवेत् ।
नरके गम्यते येन तद् बुधः कथमाचरेत् ॥ २२६ ॥

जीणे[27] कर्मे अपवाद थाइ अनइ जेणे[28] कर्मे पाडुउ[29] हुइ[30] जीणे[31] नरकि जईये[32] ते[33] पुरुषे काइ[34] कीजइ.[35]

ते भणी[36] एहुं जाणीनइ[37] अम्हारुं कुल फेडनइ[38] योग्य न होइ; अनइ[39] अम्हे तम्हारा आहारनइ[40] अर्थि वारा लगतो[41] अकेको जीव समीपि[42] मोकलशुं दिहाडी.[43] इम छता तम्हारो आहार हुगि,[44] अनइ[45] अम्हारी[46] जातिनो[47] छेद[48] न होइ. ते भणि अम्हनें संकेत करो.

पछइ[49] एह्वो राजधर्म[50] सांभलीनइ[51] सिंह चींतवतो[52] हौउ, ए[53] सर्व मृग रूडुं वहे छइं अनइं सघला मारया पडी[54] वृत्ति किम हुसे? एहुं[55] चींतवी[56] कहतो हौउ, अहो[57] मृगसमूहो विहाणें[58] आरंभीनइ अकेको जीव मोकल्यो तम्हे सर्व यथेष्ट हीइं.[59] पछे[60] सघला[61] आपणे आपणइ[62] ठामि गया[63] हर्ष्या. पछइ वारा लागो[64] अकेके[65] जीव सिंहने मोकल्यो[66] पछइ[67] केतले[68] कालें[69] जाते[70] शशानो[71] वारो आव्यो ते शशु सघला[72] थे मोकल्यो. पछइ शशो[73] चींतवतु[74] हौउ,[75] आज मुझने[76] मृत्यु आव्यु शुं करवुं घटइ[77] ? अथवा

> किमशक्य बुद्धिमता किमसाध्यं निश्चयं दृढं दधताम् ।
> किमवश्यं प्रियवचसा किमलभ्यं महोद्यमस्थानाम ॥ २२७ ॥

बुद्धिमंतनइ[78] काइ[79] अशक्य नही.[80] निश्चित बुद्धिनि[81] शु न साधीये[82] ? रूडुं बोलइं[83] तेहने[84] शु[85] वश न होइ? उद्यमी शुं[86] एक अलभ्य होइ? सहू [35-B] पामइ.[87]

पछइ[88] शु मार्गि[89] जाता[90] कुउ[91] देषतु[92] हुउ.[93] कूआ[94] काठइ रह्या[95] पूठि जोइ तु[96] आपणु पाणीमाहि प्रतिबिंब देषतु[97] हुउ.[98] पछइ[99] शशो[100] हेये[1] चींतवतो[2] हौउ, भलु[3] उपाय छइ[4] भासुरक सिंह मारवानो. बुद्धि[5] करी एहिइ[6] कूपि[7] नाषुं.[8] एहवु[9] चींतवतइ[10] वेला गालीनइ[11] आव्यो[12] सिंह कहे[13] ग्यो[14] जोइ तु[15] सिंह भूख्यु,[16] क्रोध पाम्यु,[17] होठ चाटतु[18] पासि[19] बइठो[20] सघला जीव[21] मारवाने[22] रह्यो. एहवउ[23] चींतवतो[24] सिहाणइ[25] सघला जीव मारेसि[26] एहवे[27] सिंह आगलि शशो हलु हलु[28] आवीनइ नमस्कार करी रह्यो.[29] पछइ[30] सिंह बोल्यो, अरे[31] प्रमादी शशा तु[32] ऊपरि क्रोध्या पछी मारवु नही रोहेइ[33] मारवो तो कहने वेला असूर करि का आव्यो? अनइ[34] माह्री आज्ञा सहारी तेह्नो[35] भंग[36] का[37] कीधुउ[38] ? [[39]पछे शशो[40] बीहीनो[41]

दिशि[42] जोतो बोल्तो हौउ, स्वामिन् मु[43] दास[44] उपरि[45] कृपा करि.[46] वेला[47] मैं आफणीथि असूर नथी कीधु अनइ अनेरे जीवे असूर न कीधु[48] ! पछइ[49] सिंह पूछतो होउं,[50] तो कूणहे[51] असूर कराव्युं ? शशु[52] बोल्यो, स्वामिन्[53] मार्ग मध्य एक बीजो सिंह मार्ग रूंधी रह्यो; हूं[54] बीहाड्यो. तीणे अनेरा मार्गि आवतां विलंब थयो.[55] पछइ ते शशानु[56] वचन सामली[57] क्रोध्यो[58] सिंह बोल्यो,[59] सू[60] अनेरो सिंह माहू[61] वनमाहि छइ[62] ? शशो[63] बोल्यो, स्वामिन् सही छइ. पछइ[64] सिंह चित्तमाहि चीतवतो[65] हौउ, ए शश्यु[66] मारया[67] पूठिं शुं कार्य हुसि[68] ? ए[69] सिंह[70] देपाडवा रापुं. पछइ[71] मूं[72] आगलि[73] किहा जासिइ[74] ?" एहू[75] चीतवीनइ[76] सिंह शशाने[77] कहतो होउ, अहो शशा ते[78] स्थान[79] देपाडि जिहां ए[80] माहारु[81] वइरी[82] सिंह छइ.[83] पछइ शश्यु[84] अंतर्गत हास्य[85] करीनइ, शास्त्रदृष्टि[86] आपणी[87] अर्थसिद्धिनें[88] ते[89] सिंहनइ[90] तेडी स्वच्छ जलनु[91] कुउ[92] देपाडी[93] बोल्तु[94] हूउ,[95] इहा[96] ते दुष्ट सिंह छइ.[97] पछइ ते सिंह "कुआमाहि[98] जोतु[99] हौउ.[1] जोइ तु[1] माहि[2] प्रतिबिंब[3] आपणउ [36-A] देपइ.[4] जोइ तो माहि सिंह जाणतो हौउ. ते प्रतिबिंबनइ[5] सिंह[6] जाणीनइ हाक करतो[7] थको[8] पडछंदो सामलीनइ[9] जाणइ[10] सिंह शब्द करइ[11] छइ.[12] पछइ[13] क्रोधथी माहि उडी[14] पटऊ.[15] कूआमाहि[16] पड्या पछइ मूउ.[17]

ते माटइ[18] कहुं छइ,[19] 'यस्य बुद्धिर्बलं तस्य' ए कथा.

वली करकट बोल्यो, अहो जोहइ[20] शशानें कार्यसिद्धि हौई तोहइ[21] शक्ति पापे[22] पुरपि[23] मोटाशुं छद्म न करवो." दमुनक[24] कहतो[25] होउ,[26] अरे मूर्ष एह्वउ[27] म करेसि.[28] शक्ति होइ अथवा न हुइ[29] तोहे[30] उद्यम निश्च[31] करवो. बोल्युं छइ,

निरयोद्यतस्य पुरुषस्य भवेद्धि लक्ष्मी-
र्दैवं हि देवमिति कापुरुषा वदन्ति ।
दैवं निहत्य कुरु पौरुषमात्मशक्त्या
यत्ने कृते यदि न सिध्यति कोऽत्र दोष ॥ २२८ ॥

निरये[32] ये[33] पुरुष उद्यम करइ[34] तेन्हे[35] लक्ष्मी होइ, अनइ[36] दैव दैव एहवो[37] कापुरुष करे, दैव रापीनइ उद्यम करता[38] जउ[39] सिद्धि न हुइ तो कूण[40] दोष ?

ते माटइ[41] प्रपच करी पापइ आश्चर्यीनइ[42] जे सजीवकने[43] स्नेहथी छडाव्योस[44] करटक कहितउ[45] होइ, जो[46] कम्हइ[47] ताह्रो प्रपच पिंगलक जाणइगो[48] अथवा सजीवक तु[49] मही मारसिइ.[50] दमनक बोल्यो, अनइ[51] जे[52] सदा उद्यम करइ[53] तेन्हइ[54] देवता साय[56] थाइ बोल्यु छइ,[57]

कृते विनिश्चये पुसा देवा यान्ति सहायताम् ।
विष्णुश्चक्र गरुत्माश्च कौलिकस्य यथाहवे ॥ २२९ ॥

निश्चय कीधा पूठिइ[58] देवसाहायने[59] पामइ[60] जिम कोलीने[61] विष्णु चक्र गरुड सहायने[62] पाम्या[63] वली,

सुप्रयुक्तस्य दभस्य ब्रह्माप्यन्त न गच्छति ।
कौलिको विष्णुरूपेण राजकन्या निषेवते ॥ २३० ॥

गुप्त ने[64] दभ तेन्हा पार[नइ][65] ब्रह्मा पण न पामइ[66] जिम कोली विष्णुनइ[67] रूपिइ[68] राजानी[69] कन्यानइ भोगवतु[70] होउ[71]
करकट बो[36 B]ल्यु,[72] ए कथा किम ? दमनक बोल्येउ,[73]

[८. वणकर अने राजकन्या]

गौड देशमाहि पुण्ड्रवर्द्धन नामे[1] नगर छइ तिहा[2] कोली नइ[3]

सूत्रधार बिहि मित्र, ते आपणइ[१] आपणइ[२] कामि परपरा चाल्या आवें.[३] आपणा कर्म करता घणु[४] ऊपार्जु धन,[५] अनइ वस्तु अनइ कोमल विचित्र घणा मूल्यना[६] एह्वा वस्त्रने पहिरता,[१०] फूल तांबूल कर्पूर अगर कस्तूरी एन्हा ये परिमल तीणे सुगंध शरीर एह्वा कोली सूत्रहार[११] बिहि रहिता हौआ ते बिहि पुहुर त्रण्य काम करीनइ पछइ शरीरने शृंगार नाहणिआ[१२] करीनइ बिहि साथि हाटमाहि उत्तम[१३] स्थानकि[१४] हीडता विनोद जोता थका सध्याइ[१५] बिहि घरि आवता हौआ. ईणी परि केतलाएक दिन[१] ग्या पछइ किवारेक महोत्सव आव्यइ[१७] थकइ[१८] मुहुछवनइ[१९] दिनि ते नगरनइ विषइ सर्व लोक यथा सपत्ति अलंकार पहिरी नगरमाहि देवने देहरइ[२] हीडता होआ[२१] तेहइ कोली अनइ सूत्रहार[२२] बिहि[२] आभरण अलंकार पहिरीनइ ठामि ठामि मिल्या ये लोक तेहना शृगारयुक्त मुख जोता थका अनइ मोग ये धुल्हर तेहना गुखमाहि बैठी[४] यौवने करी मोटा कठिण स्तन, हैयु चदने परङ्ग, मोटा नितब, पातली कटि, कमल सदृश मुख, श्याम माथाना[७] केश, काननि विषिइ सुवर्णहीरानटित आभरण, निद्रानी परि सर्व लोकना[६] नेत्रनइ[७] ग्रहती छइ, मखीनने परवरी हाथिणी ऊपरि बैठी, अनिका देवता जोयाने[८] आवती एह्वी राजानी कुअरि[९] तेने सूत्रधार कोली बिहि देषता हौआ पछइ कोली ते राजकन्यानें[१] जोईनइ कदर्प्पे करी मूर्छा पाम्यो, पाछो[१] पड्यो पछइ मोटें कष्टें घरि आव्यो सर्व दिशानइ विषइ राजानी कुवरि ज नइ देषइ पछइ चचलचित्त मोटा निश्वा[37-A]स नइ[२] मूकतो[३] उपरली पाटनइ[४] विषइ[५] पुहुड्यो[६] ते राजकन्यानइ चीतवतु[७] हौउ, श्लोक[८] भणतो हौउ,

हन्तव्यपक्षे निर्दिष्टा यदि नाम विधेर्नयम् ।
क्रिमुपाया न सन्त्यन्ये दर्शिता यन्मृगेक्षणा ॥ २३१ ॥

दैवि[९] अम्हे मारवाने[१] जो शज्या[११] तो मारवाना उपाय अनेरा

शुं नथी [२] ये भणी [३] मृगनेत्रा स्त्री मारनारी दृष्टि देखाडी.

यत्राकृतिस्तत्र गुणा भवन्ति
सत्यं न चामद्वदितं बुधैस्तत् ।
येनातिचार्वङ्ग्यपि मे हृदिस्था
दुनोति चित्त विरहे प्रियाऽसा ॥ २३२ ॥

पंडित कहें जिहां आकार रूडो तिहां [४] गुण होइ, ए वचन सत्य नही, जेह भणी [५] ए राजकन्या रूडी [६] थकी विरह छता माहा शरीरने [७] दहट करे. [८]

एकमुत्कण्ठया व्याप्तमन्यद्दयितया हृतम् ।
चैतन्यमपरं धत्ते कियन्ति हृदयानि मे ॥ २३३ ॥

अहो माहारा [९] हैया केतलाएक छइ ये भणी, [१०] एक उत्कंठा ये [११] इच्छा तीणें [१२] व्याप्यु, [१३] बीजु लीधे, [१४] त्रीजु चेतनाइ [१५]

रागी बिम्बाधरोऽसौ स्तनकलशयुग यौवनारूढगर्वम्
नीचा नाभि प्रकृत्या कुटिलकमलकं स्वल्पकश्चापि मध्य ।
कुर्वन्त्वेतानि नाम प्रसभमिह मनश्चिन्तितान्यातुरत्वम्
यन्मां तस्याः कपोलौ तपयति मुहुः स्वच्छकौ तन्न युक्तम्
॥ २३४ ॥

रातो होठ, कठिण मोटा स्तन, नीची नाभि, वाका केश, पातली कटि, एतला चीत्या थका पीडा करें छें, [१६] वली ये कपोल तेन्हा पीडे छें ते युक्त नही

मत्तेभकुम्भपरिणाहिनि कुङ्कुमार्द्रे
तस्याः पयोधरयुगे रतजातखेदः ।
वक्षो निधाय भुजपञ्जरमध्यवर्ती
स्वप्स्यामि किं क्षणमपि क्षणदावसाने ॥ २३५ ॥

हाथीना[?] कुम्भस्थल जेवडा मोटा, कुंकुना पर्वत सरखा एहा जे स्तन तेणीं[११] करी पेट उपना पछी तेह[१४] हैयुं क्षण मात्रइ बाथमाहि घालीनइ शूशोग किनारे[?]

अनर्घ्यगुणसपन्नं स्त्रीरत्नं यत्र तादृशं ।

स रत्नाक[37-B]र उद्दिश्य शेषोऽन्य प्रस्तराकर ॥२३६॥

मोटा[१६] गुणयुक्त स्त्रीरत्न[१७] जिहां[१८] होइ ते रत्नाकर कैहेइ[१९] बीजो पाषाणनो आकर जोरवो.[९०]

यो यत्र रमति कश्चित्स तत्र परिरक्षणं करोत्येव ।

मुग्धे वससि च हृदये दहसि च तत्तं नृशंसासि ॥ २३७ ॥

जे जीणट[९१] ठामि बेसेट[९२] ने ते ठामने राषइ;[९३] अरे मूर्ष[९४] तुं माहि हिदय[?] वसे छइं[?] अनइ[९७] दहे छइ ते भणी[?] नरनी मारणहारि.

सगमविरहवितर्के वरमिह विरहो न सगमस्तस्या ।

सगे सेव यदेका त्रिभुवनमपि तन्मय विरहे ॥ २३८ ॥

सगम[९८] अनइ विरहमाहि विरह भलो, सगमनइ विषइ[९९] स्त्री एक ज दी[सइ],[?] वि[रह][?] छता ससार स्त्रीमय देषइ.

दिक्षु भूमा तथाकाशे सर्वत्र च विभाव्यते ।

स्मर्यते प्राणसदेहे तन्वी नारायणायते ॥ २३९ ॥

दिशानइ[?] विषि,[?] भुमि, आकाश सघले दीसइ अनइ[?] प्राण जाता[?] स्मरीये एही स्त्री नारायणनी परि[?] थाइ.

क्षणिका सर्वसस्कारा बुद्धेनोक्त मृषा वच ।

चिन्तयन्तो यत कान्ता नित्यमक्षणिका वयम् ॥ २४० ॥

पंडितन्हे[?] ये[?] सघरा संतोष[?] क्षणिक ते जूठुं बोल्युं, ते भणी[?] अम्हे स्त्रीने[?] स्मरता क्षणिक नथी.

ईणी परिं घणउ[4] विलाप करता[5] मोटे[6] कष्टि[7] रात्रि गई.[8] बीजइ[9] दिनि तिम[10] ज सूत्रहार तणी[1] चेला कोलीनि[2] घरि[3] आव्यो. जोइ[4] तो कोली ऊपरली पाटले विरला हाथ करी, विरला पग करी पड्यो देषतो होउ. पछइ[5] तेन्हें[6] रोतो नीशासु[7] मुंकतो देषीनइ[8] सूत्रहार[9] बोल्यु,[10] अरे कोली[11] इणि[12] अवस्थाइं[13] काइ[14] पड्यो? ईणी[15] परि[16] घणुं[17] घणु[18] सूत्रधारि[19] पूछ्योथो न बोलतो हौउ, तिवारि[20] सूत्रधार श्लोक भणतु[21] हौउ,

नैतन्मित्रं यस्य कोपाद् बिभेति
यद्वा मित्रं शङ्कितेनोपचर्यम् ।
यस्मिन्मित्रे न त्रपा मातरीव
तद्धै मित्रं संगतानीतराणि ॥ २४१ ॥

येन्हा[22] कोपथी भय उपजइ[23] अनइ[24] ये[25] मित्रनी शंका आणी[26] सेवा[27] कीजइ ते मित्र न होई;[28] मित्र ते[29] जे देषी मानी[30] परि[31] शंका न [38-A] उपंजइ,[32] बीजा लोक जाणवो.

वली[33] सूत्रधार[34] कोलीनइ[35] हेये[36] हाथ अडाडी कहतु[37] हौउ, अरे कोली ज्वर तूंन्हे[38] नथी तु ए अवस्था कंदर्पनी. एहु कहइं[39] तेहि[40] कोलीनें[41] आसू आव्या अनइ बैठै[42]. कोली बोल्यु,[43]

स्वामिनि गुणान्तरज्ञे गुणवति भृत्येऽनुवर्तिनि कलत्रे ।
मित्रे चानुपचर्ये निवेद्य दुःखं सुखी भवति ॥ २४२ ॥

जे ठाकुर गुण जाणइ,[44] गुणवंत सेवक, चित्तनि[45] चालीइ[46] ये[47] स्त्री, मित्र एतला आग[लि][48] दुष निवेदीनइ[49] सुषी थैयेट.[50]

एहु[51] बोली[52] कोली आपणुं राजकन्यादर्शननूं[53] वृत्तान कहतो हौउ. पछइ सूत्रहार चीतवीनइ बोल्यु[54] अहो मित्र उठी,[55] स्नान करी[56] जिमि,[57] दुष छाडि. हुं ति[58] उपाय करचोश[59] [यीणेंइ ते



विष्णुस्वरूपे गरुड पर बैसी कोली दररोज छूपी रीते राजकुंवरीने मळतो.
[हस्तप्रत, पृष्ठ 44-B]

संभली,[32] विष्णु जाणी हरषी[33] थइ तेहनु[34] वचन करती हौई.[35] ते पछी[36] गंधर्वविवाह करतो होउ.[37] राजानी कन्या आपणपानइ[38] धन्य मानती हौई. इणी[39] परि[40] ते विहि संभोग करतां सुख[41] भोगवतां हौआ.[42] कोली[43] प्रोहोडी उठी घरि जाये; कहइ, हुं गरुडि बैशी वैकुंठि[44] जाउं छुं. पछइ केतले दिने घूसग जोइं[45] तो राजानी कन्या मोटा स्तन पुरुष संबंध हुई[46] एह्वी जाणीती हौइ.[47] पछइ वींहीता राणी राजा आगलि कहितीं[48] हौया[49] एकांत समय, हे राजन् राजकन्या ये[50] सुदर्शना तेन्हेइ[51] पुरुषना भोगनां चिह्न दीसें[52] छई.[53] अम्हे घणु हेरी जोयों[54] पण अम्हारइ[55] लक्ष नावइ.[56] एहुं सांभलीइ राजा चींनवतु[57] होउ,

> जातेति कन्या महतीह चिन्ता
> कस्मै प्रदेयेति महान्वितर्कः ।
> दत्ता सुखं प्राप्स्यति वा न वेति
> कन्यापितृत्वं खलु नाम कष्टम् ॥ २४३ ॥

कन्या जण्या[58] पूठिं पितानें[59] मोटी[60] चिंता होई.[61] कैन्हि[62] दीजीसि ? दीधा पूठि[63] [39-A] सुख हुसि[64] के नही[65] ? ते माटइ कन्या पितानइ[66] दुक्ख[67] दिइं.[68]

ते भणी कन्या पितानइ[69] आपदारूप कलंक द्रिं. बोल्युं छइ,[70]

> नद्यश्च नार्यश्च समस्वभावा-
> स्तुल्यानि कूलानि कुलानि चासाम् ।
> तोयैश्च दोषैश्च निपातयन्ति
> नद्योऽत्र कूलानि कुलानि नार्यः ॥ २४४ ॥

नदीनो अनइ[71] नारीनो सरखो स्वभाव; एहना[72] सरखी रीति नदी[73] तटनि[74] पाडि,[75] नारी[76] कुलनें पाडइ.[77]

एह्वां अनेरा[७८] वचन विमासि[७९] राजा राणी[८०] बोलावी एकाति अनइ[८१] कहतौ[८२] हौउ, ए पूमरा शु[८३] कहें छइं[८४] ? मुंऊपरि दैव कोप्यो ये भणी[८५] कन्यायें[८६] पाप कीधुं. एहु[८७] स्त्रीन्हें[८८] कहीइ[८९] पुत्री बोलावी म्री पहि[९०] पूछतौ[९१] हौउ जे पुत्री ताहू योवन[९२] सम विकारना चिह्न हौआ[९३] छइ[९४] ते वृत्तान कहि. एहुं माई[९५] पूछ्या पूठि जेहु[९६] वृत्तात होउ[९७] ते कहिती[९८] हूई जे विष्णु रात्रि[९९] आवें छइ. ते पुत्रीनु वचन सामली राजा न मानतौ[१००] हौउ; कहतो हौउ, जु[१] इम[२] छइ[३] तो[४] अम्हारो[५] जमाई नारायण[६] तेन्हें[७] देषाडवा समर्थ छें ? कन्या बोली, राजन्[८] बाप देपाडी शकूं हुं विष्णुनें. तम्हे जिवारैं[९] सहू सूता हुंइ[१०] तिवारि[११] जालीये आवी जोज्यो तिवारि[१२] विष्णु आवसि.[१३] पछइ राजा रात्रि सहू सूता पूठिं[१५] जोइ तो तेन्हिं आवतौ[१६] आकाशथी ऊतरतु[१७] देषी नारायण जाणीनइ मनमाहि नमस्कार करी, स्तुति करी घरमाहि पाछो हर्ष्युथो जातो हौउ. पछइ[१८] स्त्रीनें कहतो[१९] जे आपण सरषा[२०] भाग्यवंत नथी[२१] जे आपणी पुत्रीनें[२२] नारायण स्वयइ[२३] भोगवइ[२४] छिइ.[२५] हवें आपणा सर्व मनोरथ पुहुता.[२६] तही[२७] पूठिं[२८] राजा सुदर्शना पुत्रीनइ अर्थि वस्त्र आभरण तांबूल चंदन फूल अनेक प्रकार ए[39-B]ह्वा मोकलतौ[२९] हौउ. कन्या निर्भयथी कोली सघातिं[३०] सुख भोगवती हौई.[३१] एहइ[३२] समय न्यौ लक्ष गामनो स्वामी जे विक्रमसेन तेहना[३३] सेवक वरसनु[३४] कर लेवानें ते राजा कन्हे आव्या. ते राजा नारायण जमाई जाणीनइ[३५] ते कर लेवा आव्या छिइ[३६] तेहनें[३७] आदर न करइतु[३८] होउ,[३९] विष्णुनु[४०] ससरु[४१] मानीनइ[४२] गर्व पामतो हौउ. पछइ ते सेवक क्रोध्याथा[४३] कहता हौआ, जे दंड दीधें[४४] घणा दिन[४५] हौआ[४६] अनइ दंड नथी आपतो तेह[४७] भणी शूं[४८] तूहनें[४९] बल घणुं थ्युं छि[५०] ते राजा विक्रमसेननें[५१] कोस्वा[५२] हीडइ[५३] छइ[५४] ? एहुं ते राजा साभली कहतो हौउ, जि[५५] विक्रमसेन[५६] शुं करशि ? तम्हे[५७]



(चित्रनो पूर्वार्ध) कोली अने राजकुंवरी; (चित्रनो उत्तरार्ध) विष्णुस्वरूप ग— पर चडी कोली शत्रु राजा साथ युद्ध करे छे [हस्तप्रत पृष्ठ 50]

राजकन्याने] तु भोगवेशि. पछइ कोली मित्रनु एह[60] वचन साभली,[61] उठीनइ[62] स्नान भोजन करतु[63] हौउ बीजइ दिनि[64] सूत्रधार लाकडानो गरुड घडीनइ[65], रगी वाने, पीली हलावइ[66] उडइ[67] बइसइ[68] एहो करी[69] ते कोलीनइ[70] आणी[71] आप्यो पछइ[72] कोलीनै कहतो हौउ, अरे मित्र कोली ए गरुडनइ[73] ए पीली दीधा पछी[74] बैशीनइ इच्छीये तिहाइ[75] जैये[76] उघाडीये पीली तीवारि[77] बेटशि. ते भणी[78] ए गरुड ऊपरि निशी[79] ऊडाडी जिहा ऊपरीनइ[80] मालीये[81] राजानी कन्या छइ तिहा विष्णुनो तु वेष लेटनइ[82] रात्रि रह सूता पूठि तिहा जई[83] राजानी कन्यान कहने,[85] हु नारायण,[86] तु माहूा शापथी भ्रष्ट माही स्त्री, ते परहा[87] स्नेहथी तूम्हे[88] सभोग करवा आव्यो छु, माही[89] सेवा करि एहू[90] कह्या पूठि[91] ते कुमारि[92] तूम्हें[93] भजशि.[94] पछइ तू दिहाडी तेसु[95] सुप भोगवे[96] एह कही सूत्रधार घरि ग्यो पछइ कोली थोडो शु[97] दिन[98] गाढइ[99] दुखि[100] लेइनइ[1] रात्रि हौआ पूठि[2] स्नान करीनइ[3] चढ[38 B] [नि][4] पोलि करी जिम सूत्रधारि[5] कह्यु तिम करी तिहा कन्या कन्हे मालीये ग्यो पछइ[6] ते राजकन्या अतरिक्ष प्रकट[7] गरुड[8] बैठो, शख चक्र धरतो विष्णु जाणीनइ[9] पलगथी[10] ऊठीनइ[11] तेन्हे[12] अर्ध पाद्य करती हौई पछइ[13] हाथ जोडीनइ[14] बोलती होई, स्वामिन् राउलु दर्शन स्वप्ननइ[15] विशि[16] दुर्लभ, पछइ[17] प्रत्यक्ष शु कहीये ? ते भणी काई आज्ञा द्यो पछइ[18] कोली बोल्यु,[19] जहो ताहू[20] दर्शन करवा आव्यु[21] छु पछइ राजकन्या लाजीथी बोलती होई,[22] स्वामिन् हु कन्या मनुष्य, ते माटइ[23] तम्हे एहु[24] कहवा योग्य न[25] हो कोली बोल्यु,[26] तु माही स्त्री[27] शापथी मनुष्यजन्मि आवी ते भणी में तून्हे पुरुष आभडवा नथी दीधो हवइ[28] गधर्वविवाह करी परणेशि, पछइ स्त्री करेशि, नही तु शाप देइ[29] जाइसि.[30] पछइ ते राजकन्या एहु[31] तेह्नु वचन

जाउ[१] पछइ ते सेवक विक्रमसेन राजा आगलि सहस्र गुणु लगाडी,[१]
विक्रमसेन[१०] ते राजा ऊपरि कोप्यो पछइ चतुरग दल लेईनइ ते राजा
ऊपरि आयो, क्रोधथी सेन्यने[११] कहतो होऽ,

> यदि विशति तोयराशिं रोहति वा शक्ररक्षित मेरुम् ।
> स तथापि नृप पापो हन्तव्यो मे प्रतिज्ञेति ॥ २४५ ॥

ते राजा दुष्ट जो समुद्रमाहि पइशई[१२] अथवा[१३] इद्र कन्हड जाइ
तोहि[१४] मारवु[१५] ए प्रतिज्ञा

पछइ[१] विक्रमसेन दिन दिहाडी तेन्हो देश मारतो होउ पीयाणे
करी. पछइ लोक सघला नाशी पुड्रवर्धन नगरनइ द्वारि रहीनइ नाखवा
लागा. ते राजा लोकनु[११] शब्द साभलीनइ क्षोभ न पामतु[१] होउ
पछइ[११] एक दिनि पोड्रवर्धन वीन्यौं[१] पूठि नगरना लोक,[१] प्रधान
पुरोहित आवी राजानइ[१] वीनवतु[१] होआ,[१] स्वामिन् शत्रु आवीनइ[१]
नगर[१] रुधी[१] रह्यो[१] तम्हे निश्चत[१] छु[१०] ते शु[१] एह्वी[१०] वाता
साभली राजा पुत्री[१] तेडी[१] कहतौ[१] होउ, पुत्रि ताहा भर्तारने
बलें[१] अम्हें[१] शत्रुस्यु[१] वैर माडयु[१] छइ[१] ते भणी आज रात्रि[१०]
विष्णुने[१] कहने[१] जे[१] निद्राणइ[१] विष्णु शत्रु[40-A]नि[१] मारें.
पच्छीइ[१] ते वचन सुदर्शना रात्रि तेन्हें कहती निशेषे[१] होई ते
साभलीनइ हसीनइ कोली बोलतौ[१] होउ, प्रिये ए मनुष्य[११] शा
माहि[१] में पूर्वें[१] हरण्यकशिपु[१] कस दैत्य मधुकटभ[१] अनेरा[१] घणाइ
दैत्य मार्या ते भणी[१] राजानि[१] कहिजे तम्हे निश्चत[१] रहो[१] प्रातष्कालि[१]
चक्रि करी विष्णु शत्रुने मारसि पचछ[इ][१] ते राजकन्या कोलीनु
वचन सर्व राजा आगलि स[ग]नि कह्यु, पच्छइ सतोष पाम्यो[१०] राजा
नगरमाहि पगो वजावतु[१] होउ जे प्रातकालि[११] विक्रमसेन[११] सग्रामि
करी[१] मार्या पूठि[१] तेन्ही[११] वस्तु जे लउइ ते लेजो तेन्हा ज हाथी

घोडा[17] सोनु[18] जे[19] लटइ तेहनु.[20] पछइ पटह साभल्यां पूठिं[21] लोक परस्पर मंत्र करता हौआ, अम्हारो राजा नगर वींट्युं छइ[22] तोहइ[23] क्षोभ नथी पामतौ.[24] एह्वो बलवत्तर सही[25] विहाणइ[26] वैरीनें मारसि.[27] पछइ कोली रात्रि संभोग[28] छांडीनइ[29] [उचाट्यो[30]] थको[31] चीतवतो[32] हौंउ, हवइ[34] मइ[35] शुं[36] करवुं घटइ[37] ? जो हुं[38] इणइ लाकडानइ[39] गुरुडि[40] वइसीनइ[41] नासी जायोग[42] तो ए स्त्रीनो वली संयोग नहीं होइ;[43] विक्रमसेन मारी लेइ[44] जाशि. जो संग्राम करु[46] तोहि मृत्यु आव्यु,[47] न करउ[48] तोहिं[49] वियोग माटिइ[50] मृत्यु आव्युं. ते भणी[51] सत्त्व अवलंबु[52] ते वारू अनइ गुरुडि[53] बेठो देपी[54] नारायण जाणी कदाचिं नाशि.[55] बोल्युं छइ,

> शुभकर्मोदये पुंसां अनयोऽपि नयो भवेत् ।
> विपच्यमाने त्वशुभे नवनीतं भवेच्छिला ॥ २४६ ॥

पुरुपनइ[56] शुभ कर्मनो[57] उदय[58] होइ[59] तिवारें[60] अन्याय[61] [न्याय][62] थाइ; अनइ पाप परिपाक पाम्या पूठिं[63] मापण फीटी पहाण[64] थाइ.

> धैर्यं हि कार्यं सततं महद्भि
> कृच्छ्रेऽपि कष्टेऽप्य अतिसंकटेऽपि ।
> कृच्छ्राणि कृच्छ्रेण समुत्तरन्ति
> धैर्योज्झिता ये प्रतिपत्तिदक्षाः ॥ २४७ ॥

महांति धैर्य करवुं; कष्ट होइ, संकट होइ तोहिइ धैर्य रह्या[65] [40-B] पूठि छूटीये.

एहुं चीतवीनइ कोली युद्ध करिवानु[67] निश्चय कीधे[68] थकेइ[69] तेहे[70] वैकुंठि गरुड विष्णुनें[71] वीनवतु[72] हौउ, स्वामिन् पुंड्रवर्द्धन[73] नगरनइ[74] विपि[75] तम्हारो वेप करी[76] कोली राजानी कन्या[77] भोगवइ[78]

छइ[७९] ते[८०] न[ग]रना राजाना शत्रु आवी नगर वींट्यु छइ. तिहा कोली युद्ध करवा, ससरानइ[८१] सहाय[८२] देवा निश्चय कीधो छइ[८३] ते वीनती छइ जो ते कोलीनइ[८४] संग्राममाहि[८५] मारसि[८६] तु[८७] लोक कहिसि[८८] दक्षिण देशनइ[८९] राजाइ[९०] नारायण[९१] मार्या पछइ मृत्युलोकि[९२] एह्वी वार्त्ता होआ पूठिइ[३] यज्ञनु[४] ध्वंस हुसि.[५] पछइ सन्यासी त्रिदंडी सघला सन्यास छाण्डसि[६] ईणी[७] परि धर्मउच्छेद[८] थ्या पूठि[९] प्रजानाश हुसि.[१००] पछइ[१] कला पूर्ण पापइ प्रलय हुसि ए प्रमाण. पछइ[२] नारायणि[३] विमासि[४] जोयु[५] अनइ[६] बोल्या, अहो गरुड[७] युक्त कह्यु. ते भणी कोली देवनु[८] अंश, विक्रमसेन दैत्यनु[९] अंश, तेहना वधनइ[१०] ए कोली सरज्यु[११] ते भणी हू[१२] कोलीनइ[१३] शरीरि अवतरेसि, तु[१४] गरुड-यन्त्रि अवतरि. चक्र[१५] कोलीनइ[१६] सुदर्शन[१७] अवतरि.[१८] ईणि[१९] परि[२०] प्रातःकालि[२१] अवतरु एह्वु[२२] विष्णु आज्ञा देइनइ[२३] प्रभाति अवतरता[२४] होआ तेह्वइ[२५] कोली नारायणनु[२६] वेष करीनइ[२७] [[२८]वस्त्र आभरण आयुध पहिरीनइ[२९]] जेह्वो[३०] विष्णु होइ तेह्वो[३१] गरुडयन्त्र [उपरि[३२]] बइसीनइ[३३] विहि सैन्य जीतो आकाशि थको आवीनइ विक्रमसेनना सैन्यनइ[३४] निपइ[३५] आवी पड्यो ति[३६] गरुड पक्षनो प्रचंड ये[३७] वायु तीणे[३८] करी चतुरंग बल[३९] सैन्य क्षोभ पाम्यु कोलीये[४०] चक्र मुंक्यु ते विक्रमसेननु मस्तक छेदीनइ[४१] वली [कोली]नइ[४२] हाथि आव्युं पछइ[४३] ते अनायक सैन्य[४४] हण्यु[४५] पछइ[४६] केतला नाठा, केतला[४७] नारायणशुं शु विरोधीइ, इम कही[४८] मल्या,[४९] स्तुति करता होआ, केतला[५०] मुआ[५१] इणी[५२] परि कोली निजइ पामीनइ, जूद्र विष्णुनु रूप लेइनइ[५३] [41 A] ते शु स्वप्न होउ एह्वु विमासतो आपणपइ[५४] राजकन्या सघाति संभोग करतो सुखे रहेतो होउ पछइ पुद्रवर्धन राजानी सघला राजा सेवा करवा वाछता होआ

ते माटइ हु कहु[५५] तु,[५६] 'कृते विनिश्चये पुसा' ए कथा.

एहुं सांभली करटक बोल्युं,[५७] जो ते[५८] एहु[५९] निश्चय कीधो तो तून्हे[६०] तिहां जाता कल्याण हयो;[६१] चीतव्युं कार्य सिद्धि पामज्यो. एहुं कह्या पूठि[६२] दमनक उठीनइं[६३] सिंह कन्हि[६४] [गयु],[६५] नमस्कार करीनइं[६६] बैठो. पछइ[६७] सिंहि[६८] पूछयूं[६९], अहो[७०] तु[७१] शुं घणे दिहाडे[७२] दीठो छइ[७३] ? दमनक बोल्यु, काई[७४] एक मोटु[७५] कार्य तम्ह आगलि वीनववा आव्यो छुं अनइ तम्हनें आश्रया ये[७६] सेवक तेन्हि[७७] प्रिय करवा वाछूं[७८] छूं.[७९] घणु[८०] घणु[८१] काल होउ[८२] तीणी[८३] भयभीत थकोइ[८४] निवेदुं छुं बोल्यु छइ,

> प्रियं वा यदि वा द्वेष्यं शुभं वा यदि वाशुभम् ।
> अपृष्टस्तस्य तद्ब्रूयाद्यस्य नेच्छेत्पराभवम् ॥ २४८ ॥

येन्हें[८५] शुभ वान्छीअइ[८६] तेन्हे[८७] शुभ अथवा अशुभ पूछा[८८] पापइ निवेदन्यु अनइं[८९] प्रिय अथवा अप्रि[य] निवेदवुं.

पिंगलक बोल्यु, तु[९०] बोलि. दमनक बोल्यो,

> अनियुक्ता हि साचिव्ये यद्वदन्ति हितैषिण ।
> अनुरागद्रवस्यैनाः प्रगयम्यातिभूमय. ॥ २४९ ॥

ये[९१] पुरुष प्रधानपद मुक्या थकोये[९२] हितवचननइ[९३] बोलें ते प्रीतिरसना स्थान[९४] जाणवा.[९५] वली,

> सुलभाः पुरुषा राजन् सततं प्रियवादिन. ।
> अप्रियस्य तु पथ्यस्य वक्ता श्रोता च दुर्लभ. ॥ २५० ॥

अहो स्वामिन्[९६] प्रिय बोले[९७] एहा[९८] घणा[९९] होइं[१००] पण[१] अप्रिय अनइं[२] हितकारी एह्वाना कहणार दुर्लभ.

पिंगलक[३] बोल्यो, अहो दमनक जे तु बोल्या[४] हीडे[५] ते बोलि. दमनक बोल्यो,[६] स्वामिन् सजीवक तु ऊपरि दुष्ट बुद्धि छइ.[७] ते[८] सदा

सुम्युं वात करइ तेतलइ मूं आगलि कहतो होउ जे ताहरा स्वामी[१] पिंगलकनुं[२] सि[३] बल अनइ [41-B] सारासार शक्ति सर्व जाणु.[१३] हवइ[१४] विश्वसीनइ[१५] सुपि[१६] मारी राज्य मद्योम, एहु कहतां[१७] होउ; ते भणी कहुं तुं[१७] आज सजीवक ए अर्थ करवा हींडइ[१८] छइ.[१९] ते माटि[२०] तुं[२१] अम्हारो कुस्वामी[२२] तीणइ[२३] तुम्हें[२४] वीनवुं[२५] छुं. पछइ ते पिंगलक दमनकनुं[२७] वज्र समान कठिन[२८] वचन सांभली[२९] मोहनें[३०] पाम्यो थको तिवारें कांई[३१] न बोल्यु.[३२] दमनक लेह्यु[३३] आकार जा[णी]नइ, बुद्धि विमासी[३५] बोल्यु,[३६] अहो स्वामिन् ए तम्हारो[३७] दोष छइ. बोल्युं छइ,

अत्युच्छ्रिते मन्त्रिणि पार्थिवे वा-
विष्टभ्य पादावुपतिष्ठते श्रीः ।
सा स्त्रीस्वभावादसहा भरस्य
द्वयोस्तयोरेकतरं जहाति ॥ २५१ ॥

अतिशयो[३८] वाध्यो ये[३९] प्रधान[४०] अथवा[४१] राजा तेहनें[४२] आश्रयी-नइ लक्ष्मी[४३] भार सहइ,[४४] लक्ष्मी स्त्री भणी विहुंनो[४५] भार न सहइ[४६] [ते भणी[४७] बिहुमाहि[४८] एकने[४९] त्यजइ.[५०]]

कण्टकस्य च भग्नस्य दन्तस्य चलितस्य च ।
अमात्यस्य च दुष्टस्य मूलादुद्धरणं सुखम् ॥ २५२ ॥

भागु[५१] जे[५२] कांटो, हाल्यो[५३] दांत, दुष्ट प्रधान, एतलानें[५४] समूल उषेडीइ[५५] ते सुख करइ.[५६]

कार्याण्यर्थानमर्देन अनुरक्तोऽपि साधयन् ।
नोपेक्ष्य सचिवो राज्ञा वाञ्छता भूतिमात्मनो ॥ २५३ ॥

ये राजा संपत्तिनें वाञ्छइ[५७] तीणे गाढा कार्यतत्पर[५८] थको[५९] [अर्थ[६०]] साधतो होई[६१] तोहइ[६२] प्रधान न विश्वसवो.

एहुं वचन[६३] साभलीनइ[६४] पिगरल वोल्यो, ए[६५] माह्रो[६६] सेवक ए किम मुं ऊपरि दुष्ट बुद्धि करशि[६७] ? दमनक बोल्यु, अहो सेवक अणसेवक एहुं न जाणवुं. वोल्युं छइ,

न सोऽस्ति पुरुषो राजा यो न कामयते श्रियम् ।
न शक्तिर्यविदन्यापि तावत् ससेवते परम् ॥ २५४ ॥

एह्वो पुरुष नथी जे राज्यलक्ष्मीनि[६८] न वाछइ, जा [43-A] लगइ[६९] भोगववानी शक्ति न होइ तु[७०] ता लगण[७१] ज सेवइ.[७२]

पिंगलक वोल्यु,[७३] अहो दमनक तोहइ[७४] माहुं चितु ते उपरि द्रोह नथी करतुं. वोल्यु छइ.

अप्रियाण्यपि कुर्वाणो निष्ठुराण्यपि च ब्रुवन् ।
चेत प्रल्हादयत्येन सर्वावस्थासु वल्लभ ॥ २५५ ॥

वाह्लो[७५] होइ ते अणगमतु करइ,[७६] निष्ठुर कै बोल्युइ,[७७] पण चित्तनइ[७८] विषइ[७९] सदा निर्मल हुई.[८०] वली,

अनेकदोषदुष्टोऽपि काय. कस्य न वल्लभ ।
अप्रियाण्यपि कुर्वाणो य प्रिय प्रिय एव स ॥ २५६ ॥

अनेक दोषयुक्त अनइं[८१] [अप्रिय कर्मनइ[८२]] करड[८३] एहुंइ[८४] थकुं शरीर कहि[८५] वाल्हु[८६] न होइ,[८७] अनइ ये[८८] अप्रियनइ[८९] करइ[९०] मित्र थकु[९१] तेहइ[९२] प्रिय ज[९३] होइ.

दमनक बोल्यु,[९४] अत[९५] एव ए दोष राजानो. वोल्युं छइ,

यस्मिन्नप्यधिके चक्षुरारोपयति पार्थिव ।
अजाते सकुलीने वा स लक्ष्म्या हरते मनः ॥ २५७ ॥

जे राजा कुलीन ऊपरि अथवा अणजाण्या ऊपरि अधिकी दृष्टि देइ[९६] छि[९७] ते लक्ष्मी मन हरिइ[९८] छइ.[९९]

तीणइ[100] स्वामिन् तें आपणा मृग टालीनइ ए संजीवक उपरि कृपा कीधी छइ.[1] ते हवडा ताहरी राजलक्ष्मीनें[2] वाछइ[3] छइं.[4] ते भणी ए मित्रइ[5] थको[6] त्यजवो. बोल्युं छइ,

> पूज्यो बन्धुरपि प्रियोऽपि तनयो भ्राता वयस्योऽपि वा
> यो मोहादनयप्रकार्यविमुखो हेय स कार्यार्थिना ।
> लोके हि प्रथिता ननु श्रुतिरियं नार्योऽपि गायन्ति याम्
> किं कार्यं कनकेन तेन भवति च्छेदाय कर्णस्य यत ॥ २५८ ॥

पूज्य बंधु, प्रिय जे पुत्र भाई मित्र एहइ[7] माहिं[8] जे कार्य नाश करइं[9] ते त्यजवो. जे राजा आपणुं[10] हितकार्य वाछइ[11] तीणइं लोकमाहिं[12] वैरा दृष्टात कहिं तीणइं[13] सोनइं[14] शुं[15] कीजइ[16] जीणइ[17] कान त्रूटइ[18] अनइ[19] जो[20] मोटा शरी[42-B]र माटइ[21] उपकारनइ[22] अर्थि राख्यो ते विपरीत हुइ[23] छइ.[24] बोल्युं छइ,

> किं गजेन प्रभिन्नेन राजकर्माण्यकुर्वता ।
> स्थूलो वा यदि वाऽस्थूलः श्रेयान्कृत्यकरः पुमान् ॥ २५९ ॥

राजानु[25] काम न करइ[26] एहो जे मदमत्त[27] हाथी तींणइ[28] स्युं[29] कीजइ[30] अनइ[31] मोटो अथवा नान्हो[32] जे राजकार्य करइ[33] ते भलो.[34]

स्वामिन् ते तुं ए उपरि[35] कृपा करें[36] छें[37] ते अयुक्त बोल्युं छइ,

> सता मतिमतिक्रम्ययोऽसता वर्तते मते ।
> कालेन व्यसन प्राप्य पश्चात्तापं करिष्यति ॥ २६० ॥

ये पुरुष संतनु[38] मत छाडीनइ[39] असतनु[40] मत करइ[41] ते काल्इं[42] दुपनें पामीनइ[43] पश्चातापनें[44] करइ.[45]

> यो न नि.श्रेयसं ज्ञान सुहृदा प्रतिपद्यते ।
> अचिरात्स च्युत. स्थानाद्द्विषता वर्तते वशे ॥ २६१ ॥

ये[46] मित्रनु रूडुं[47] वचन न करइ[48] ते[49] वेगु[50] स्थानभ्रष्ट थैनइ[51] वैरीनइ[52] वशि[53] थाइ.[54]

अप्रियस्यापि वचसः परिणामाविरोधिनः ।
वक्ता श्रोता च यत्रास्ति रमन्ते तत्र सपदः ॥ २६२ ॥

साभलता ते[55] वचन अप्रिय हुइ,[56] परणामि[57] हित हुइ,[58] एह्वा वचनना बोलणहार अनइ साभलणहार जिहा हौइं[59] तिहा सपदा घणी होइ. वली बोल्युं छइ,

क्रियासु युक्तैर्नृप चारचक्षुपो
न वञ्चनीया प्रभवोऽनुजीविभिः ।
अतोऽर्हसि क्षन्तुमसाधु साधु वा
हितं मनोहारि च दुर्लभं नच. ॥ २६३ ॥

सेवके काज[60] करता राजा वाहीइ[61] नही ते माटइ[62] राजाइं साधु अथवा असाधु जे[63] वचन ते[64] क्षमवुं जे भणी[65] रूडुं अनइ[66] हित ये[67] वचन ते[68] दुर्लभ होइ.[69]

मूलभृत्योपरोधेन न ह्यागन्तु प्रपूजयेत् ।
नात परतरोऽन्योऽस्ति राज्यभेदकरो गद ॥ २६४ ॥

जूनो सेवक पह्रो करीनइ नवो[70] न रापवो जे[71] भणी नवा[72] सेवक सरपो अ[43-A]नेरो राज्यनु[73] भेदक नही.

सिंह बोल्यु, अहो[74] एहुं म बोलेशि.[75]

उक्तो भवति य पूर्वं गुणवानिति सपदि ।
न तस्य वाच्य नैर्गुण्यं प्रतिज्ञा परिरक्षिता ॥ २६५ ॥

सपदानि[76] विपिइ[77] जे गुणवत कह्यु[78] होइ तेन्हें[79] निर्गुण न कहीये; ते[80] आपणी प्रतिज्ञानें रापइ.[81]

अहो ते शरणागत जाणीनइ[2] मैं[3] तम्हें[4] अभय वचन दीधुं ते भणी[5] ए किम कृतघ्न थाशि, जो ए द्रोह करशि[6] तोहइ[7] पण्हो[8] हुं विरुद्ध नही[9] करुं. दमनक बोल्यो,

न दुर्जनो वैरमिति प्रकुप्यति
न साधुरेवं सुकृतेन तुष्यति ।
स्वभावभावेन तु गावितावुभौ
यथेक्षुनिम्बौ स्वरसेन तौ तथा ॥ २६६ ॥

दुर्जन केवल वेर माटइ[10] ज[11] कोपइ[12] नही; साधु ये[13] ते उपकारें[14] ज तूशइं[15] नहीं[16] पण लीव अनइ[17] साटानी परि[18] शत्रु-मित्रनो[19] स्वभाव ज जे कोपइ[20] [अनइ][1] तूसइ.[2] वली,

दुर्जन. प्रकृतिं याति सेव्यमानोऽपि यत्नतः ।
घृष्यमाण इवाङ्गारो निर्मलत्वं न गच्छति ॥ २६७ ॥

सेव्योइ दुर्जन आपणइ[3] स्वभावि जाइ जिम लीहालु[4] घस्युंयु[5] न्यर्मल[6] न थाइ.

ते माटइ[7] माहरु[8] हितवचन तुह्मे[9] करवुं. ए राजधर्म न होएइ[10] जे द्रोह करइ तेन्हें क्षमा कीजइ. बोल्युं छट.[11]

तुल्यार्थं तुल्यसामर्थ्यं मर्मज्ञं व्यवसायिनम् ।
अर्धराज्यहरं मित्रं यो न हन्यात्स हन्यते ॥ २६८ ॥

धनइं[12] समान, वले[13] समान,[14] मर्मनइ[15] जाणइ,[16] बुद्धिमंत,[17] अर्ध राज्यने हरइ[18] एहवा मित्रनइ[19] जे[20] न मारइ[21] ते राजा मित्री[22] मारीये.[23]

व्याघ्रवानरसर्पाणां यन्मया न कृतं वचः ।
तेनाहं दुर्विनीतेन मानुषेण निपातितः ॥ २६९ ॥

व्याघ्र वानर सर्प एतलानुं[26] ये[27] में[28] वचन न कीधुं[29] ते माटइ[30] दुष्ट ये[31] मनुष्य तेणइ[32] निपात्यो,[33] मारचो.

पिंगलक बोल्यु,[34] ए कथा किम ? दमनक क[43-B]हतु[35] हौउ,

[९. यज्ञदत्त ब्राह्मण, वाघ, वानर अने साप]

केहइ[1] एक नगरि[2] यज्ञदत्त नामें ब्राह्मण वसइ.[3] तेन्ही स्त्री दिहाडी[4] कहइ,[5] अहो ब्राह्मण ए बालक क्षुधापीड्या छइं.[6] तुं[7] कठिण रिदय[8] छइ[9] जे भणी निश्चित रह्यु छइं ? केहइ[10] म्यागि[11] जइ[12] जीवननो उपाय का नथी करतो ? कुटुंब क्षुधा पीड्युं छइं.[13] पछइ एहुं वचन ब्राह्मण स्त्रीनुं सांभलीनइं[14] मोटइ[15] मार्गि भिक्षानइ[16] अर्थि जातां केतलेक दिवसे मोटा अरण्यमाहि[17] ग्यो. ते अरण्यमाहि तरस्यु[18] थको उदक जोतो[19] होउ.[20] जोइ तो पडसले[21] ढान्यो मोटो कूउ देषइ.[22] जोइ तौ कूआमाहि वाघ वानर सर्प एतलाने[23] देषतु[24] होउ.[25] ते कूआमाहिथी मनुष्यनइ[26] देपीनइ[27] हर्षु.[28] तेह[29] कूआमाहिथु[30] व्याघ्र बोल्युं,[31] अहो मनुष्य[32] जीव रा[प]ना घणुं पुण्य छइ[33] ते भणी[34] मूंन्हें[35] कृपा करीनइ[36] कू[आ]माहिथी उतारि;[37] जिम हुं माहूं[38] मित्र स्त्री बालक कुटुंबनै[39] मिल्युं.[40] ब्राह्मण बोल्युं,[41] ताहिं[42] नामि[43] सर्व जीव वीहइं.[44] हुं इ वीहु छुं. वली व्याघ्र बोल्यु,[45] अहो ब्राह्मण साभलि,

ब्रह्मघ्ने च सुरापे च क्लीबे भग्नव्रते शठे ।
निष्कृतिर्विहिता सद्भिः कृतघ्ने नास्ति निष्कृतिः ॥ २७० ॥

ब्रह्महत्यारो,[46] सुरापानी, नपुसक, महा शठ, एतलाने[47] छूटको छइ[48] पण कृतघ्नइ[49] छूटवु[50] नथी.

वली हुं शम करु छूं तुंन्हि माहरु मत्य वचन छइ. मूर्षी भय म आणसि, कृपा करी उतारि. पछइ ब्राह्मणि विमाशुं, ये प्राणीना प्राण रापताये पाछुउ होइ ते हो एहू चीतवीनइ वाघ उतारयो. पछइ वानर बोल्यु, अहो साधु मून्हइ उतारि. एहवुं साभली ब्राह्मणे वानर उतारयो. पछइ सर्प्प बोल्युं, अहो मून्हनइ उतारि. ते साभली ब्राह्मण बोल्युं, ताहू नामें बीही जायेइ, पछइ स्पर्श कीधे शुं क[44-A]हीये? सर्प बोल्यु, अम्हे काल आन्या पापइ न डस्युं. हुं तून्हें डसु तो शम छइ. मूर्षी म बीहेसि. ब्राह्मणें एहुं साभली सर्प उतारयो. पछइ व्याघ्र वानर सर्प्प कहता हूआ, अहो सर्व पापनु मूल मनुष्य, ते भणी मनुष्य न उतारवो अनइ विश्वास न करवो. वली व्याघ्र बोल्यो, ये ए पर्वत मोटां शृंगनो दीसइ छइ. तेन्हइ उत्तरनइ पासइ वनमाहि माहूी गुफा छइ, तिहा कृपा करी [एक] वार आववुं ये माटइ तून्हें उपगार करुं जीणे ताहूा उपकारनौ अनेरइ जन्मि रिण न होइ. एहवुं बोली व्याघ्र गुफा भणी चाल्युं. पछइ वानर बोल्यो, ते गुफा समीपि निर्झर कन्हइ माहूो आश्रय वृक्ष छइ. तिहा एक वार तम्हे आववुं. एहुं बोली वानर गयु. सर्प बोल्यो, जिवारें तून्हे गाढउ क्ष्ट होइ तिहा हू स्मरजो. एहुं बोली सर्प गयो. पछइ ते कूआमाहिथो पुरुप बली शब्द करवा लागुं, अहो ब्राह्मण मुन्हे उतारि. पछइ ब्राह्मणें कृपाई मनुष्य जाणी उतारयो. पछइ ते बोल्यु, हुं सोनार भृगुकच्छ गामि रहु. जु सुवर्ण घडावयु वेचवउ हुइ ते वारें त मूं समीप वेगुं आणवुं. एहुं बोलीनइ सोनार गयुं. पछइ तेणि ब्राह्मणि भमता काइं न पाम्युं. पछइ घर भणी चालता भूप्यो थयु वानरनु वचन साभलीनइ वानर कहइ आव्यु. वानर दीठउ. वानरे

रूडा[64] फल आणी[65] ब्राह्मणनइ[66] आप्यां; आश्वासन देई ब्राह्मण सुषी कीधउ.[67] वानर बोलु, जो फले[68] काम होइ तो दीहा[69] आववु. बाह्मण बोल्युं, ते[70] सर्व कीधु[71] मून्हें[72] व्याघ्र देषाडि. पछइ वानरे[73] वाघ देषाड्यो. वाघे[74] उपकारनें[75] ते बाह्मणनें[76] वहिरषा[77] कुंडल हार आप्या. पछे बोल्यु[78] व्याघ्र, को[79] एक राजानु[80] पुत्र[81] घोडा ऊपरि बि[44-B]ठो मू[82] पूठिं[83] धायो. ते घोडा समेतिं मि[84] मार्यो. तेहना[85] आभरण में रापी मुंक्युं हतुं. ते तुं[86] लेई यथेष्ट जा.[87] ब्राह्मण ते[88] आभरण लेई ते सोनार मित्र जाणीनइ[89] वेचाववा [जा]तो हौउ. पछइ[90] तीणे[91] सोनारें अर्घपाद्य आसंन स्नान भोजन एतला वाना करी सोनार कहतो हौउ, स्वामिन् मून्हे[92] काइं[93] आज्ञा दइ.[94] ब्राह्मण बोल्युं,[95] मै[96] सुवर्ण्ण आण्युं छइ[97] ते वेच्छी[98] दइ.[99] सोनार बोल्यु,[100] देषाडुं[1] सोनुं. तीणें[2] सोनु देषाड्या पूठि[3] चीतवतो[4] हौउ, में ए राजाना पुत्रनुं घड्युं हतुं. एहुं चीतवीनइ[5] बोल्यु,[6] हुं कौन्हें[7] देषाडी आव्युं[8] ता लगइ वैसु.[9] एहुं कही राजा कन्हे जैनइ[10] देषाड्युं. ते[11] देषी ग्रहिणुं अनइ राजा बोल्यु, किहा ए ते[12] पाम्यु[13] ? सोनार बोल्यु, माहूइ[14] घरि ब्राह्मण आव्यो छइ तेणीं[15] आण्युं.[16] पछइ[17] राजा चीतवतौ[18] हौउ, सही तीणें[19] ब्राह्मणें माहू[20] पुत्र मार्यो. पछइ सेवक तेडी राजाइ[21] कह्युं, ते ब्राह्मणनें विहाणइ[22] शूली[23] द्यो; बाधी ल्यावो.[24] पछइ ते[25] ब्राह्मण[26] बाध्या[27] पछी मारीता सर्प[28] समर्यु.[29] पछइ[30] सर्प समर्यु[31] थको ब्राह्मण आगलि आवी बोल्युं,[32] शुं तूंन्हें[33] उपकार करुं ? बाह्मण बोल्यु,[34] मून्हे[35] ए बंधनथी मूंकावि.[36] सर्प्प[37] बोल्युं,[38] हुं राजानी स्त्रीनें[39] डशुं[40] छुं. ते अनेरा[41] वैद्यनइ[42] औषदे[43] मंत्रे नहीं उतरु. ताह्नो[44] हाथ अडशि तो ऊतरचोश;[45] पछइ तुं मुकाडसि[46] इ[47] प्रतिज्ञा. पछइ[48] सर्प्प[49] राणी डशी. डश्या[50] पूठि[51] सर्व नगरमाहि राजाना गृहमाहि[52] आ[कु]लु[53] थ्युं. पछइ सघला वैद्य गारुडीना

उपचार कीधा पण न उतरइ [4] पछे ढढेरो गाममाहि फेरियो.[5] ते ढढेरु [6] साभलीनइ [7] ब्राह्मण कहतौ[8] हौउ, हु [9] [10] राणीने[11] विष ऊतारचोश एहु कह्या पूठि [1] ते राजसेवक [2] ब्राह्मणनइ[3] बधन[4] छोडी राजा कन्हे लेई [5] गयो [6] राजा बो[45 A]ल्यो, [7] अहो तु एन्हे[8] निर्विष करि पच्छइ [9] ते ब्राह्मण राणी समीप[10] जैनइ[11] माडला[12] लिषवा लागो पछइ[13] तेन्हे[14] स्पर्श मात्रे ते राणी निर्विष थइ [15] पछइ ते राणी जीवी देखीनइ[16] राजा[17] परम सतोष पाम्यो पछइ ते ब्राह्मणनी घणी पूजा करी[18] मान्य देई पूछ्यु,[19] अहो सत्य कहि[20] ए सुवर्ण कीर्णे प्रकारि[21] पाम्यु [2] पछइ ब्राह्मणे ते सर्व वृत्तात कह्यु जे[23] साभली[24] राजा मानीनइ[25] ते सोनारनै [6] देशौटु[27] देईनिइ [8] ब्राह्मणने गाम सहस्र देई[30] प्रधान कीधो [1] पछइ तीणइ[32] ब्राह्मणे[33] आपणु कुटुब आणीनइ [4] मित्र बधु सघाति[35] भोग भोगवतु[36] सुषे[37] अनेक याग करतो तिहा सुषे रह्यु [38]

ते माटइ[39] हु कहु छु 'व्याघ्रवानरसपाणा' ए कथा, वली दमनक बोल्यु [100]

> स्वजनोऽथ सुहृद्गुरुर्नृपो वा
> पुरुषेणोत्पथगो निवारणीय ।
>
> विनिवर्तयितु स चेन्न शक्य
> परतस्तस्य मनोनुग विधेयम् ॥ २७१ ॥

स्वजन मित्र गुरु राजा एतला पडिते अमार्गि जाता[1] वारवा, जु[2] वारी न शीकीये तोहि[1] हित होइ ते करइ [4]

ते सजीवक द्रोही छइ वली,

> हितकृद्भिरकार्यमीहमाना
> सुहृद क्लेशपरिग्रहान्निवार्या ।

परिपूर्णमिदं हि साधुवृत्तम्
कथितं सद्भिरसाधुवृत्तमन्यत् ॥ २७२ ॥

हितनें[5] करता[6] जे पुरुष तीणे पाडुउं करता मित्र वारवा, संतनु[7] एह स्वभाव जे हित करेई[8] [अनइ[9] दुष्टनो ए स्वभाव जे पाडुउं[10] करेइं.[11]]

स स्निग्धो व्यसनान्निवारयति यः तत्कर्म यन्निर्मलम्
सा स्त्री यानुविधायिनी स मतिमान्यः सद्भिरभ्यर्च्यते ।
सा श्रीर्या न मदं करोति स सुखी यो न स्त्रिया मुह्यते
तन्मित्रं यदयन्त्रणं स पुरुषो य. खिद्यते नापदि ॥ २७३ ॥

स्नेह तेहनु[12] वारु[13] जे दुखथी फेडइ,[14] कर्म ते[15] जे निष्पाप,[16] स्त्री ते[17] जे चित्तनइ[18] अणुसरइ,[19] ते[20] बुद्धिमंत जेहनइ[21] भला मानइ,[22] ते[23] [45-B] लक्ष्मी जे सदन करइ,[24] ते सुखी जे[25] स्त्रीये[26] मोह न पामइ,[27] ते मित्र जे लज्जा[28] न करइ, ते पुरुष [जे] आपदा पाम्याथी[29] पेद[30] न पामइं.[31]

ते भणी[32] तम्हने[33] संजीवकनुं[34] ससर्ग धर्म अर्थ काम्नी[35] हाणि करशि. जो हवें घणे प्रकारे वीनव्या थका माहरु[36] वचन मान्या[37] पाखेइ इच्छा[38] प्रवर्त्तौ[39] छौ[40] तो आगलि दोप सेवकनैं[41] म देस्यु.[42] बोल्युं छइ,

नृपः कामासक्तो गणयति न कार्यं न च हितं
यथेष्टं स्वच्छन्दः प्रचरति हि मत्तो गज इव ।
ततो मानाध्मातः पतति स यदा शोकगहने
तदा भृत्ये दोषान्क्षिपति न निजं वेत्त्यविनयम् ॥ २७४ ॥

राजा कामनें[43] विषेइ[44] आसक्त होइ तिवारें शरीर अनइ[45] हित

न विमासइ;[46] मत्त[47] हाथीनी परि[48] यथेष्ट हीडइ.[49] पडइ[50] जिवारें[51] अभिमाननें[52] आफरे करी शोकमाहि पडइ तिवारें सेवकनइ[53] दूप[54] दे[55] पण आपणु[56] दोष न गणइ.

दमनक चीतवतौ[57] हौउ, अहो ईणे[58] शास्त्र नथी जोयुं तो शास्त्रदृष्टि[59] न कहुं.[60] बीजी परिं कहुं; अहो स्वामिन् जे कारणथी ए मैत्री पाम्युं[61] छइ[62]. ते कारण विमासुं.[63] बोल्युं छइ,

> कारणात्प्रियतामेति द्वेष्यो भवति कारणात् ।
> कार्यकारणमाश्रित्य कालं क्षिपति पण्डितः ॥ २७५ ॥

चतुर जे ते कारणथी मित्र होइ अनइ कारणथी वइरी[64] थाइ, इणी[65] परि कार्यकारण विमांशीनइ[66] पंडित कालने[67] क्षेपे.[68]

एन्हें[69] एहवु[70] जाण्यु छइ[71] ते माटि[72] कहिवा[73] [हुं[74] आव्यो छु.[75]] बोल्यु[76] छइ,[77]

> अपृष्टस्तस्य तद् ब्रूयाद्यस्य नेच्छेत्पराभवम् ।
> एष एव सतां धर्मो विपरीतस्ततोऽन्यथा ॥ २७६ ॥

अणेपूछ्या[78] तिहां बोलवुं जिहां रुडुं [इ]छीये,[79] ए संतनो धर्म, बीजो असंतनो धर्म.

सिंह बोल्युं,[80] अहो[81] इम न्याय[82] छता शुं ए निग[83] करवु[84] ?

दमनक बोल्यु,[85] किम काढीये, किहानो ए न्याय ?

> प्रत्यादिष्टस्त्वरति [46-A] रिपुरपकर्तुं तथोपकर्तुं वा ।
> तस्मात्प्रत्यादेष्टुं न्याय्योऽरिः कर्मणा न गिरा ॥ २७७ ॥

ये वैरी शीघ्र निरा करीये ते उपगार[86] अथवा द्वेष करवा योग्य नहीं[87] ते भणी तेन्हे[88] कर्में[89] करी[90] निरा करीये पण वाणीये[91] नहीं.[92]

पिंगल बोल्यो,[93] संजीवक तृण भक्ष करइ;[94] आपण मांस भक्ष

करुं ते भणी ए पाङ्गुउं[९५] करवा किम समर्थ ? दमनक बोल्यो, ए कह्युं ते[९६] सत्य, ते वृषभ अन्ननइ[९७] ठामि तृण जिमणहार[९८] तोहइ[९९] ए[१००] न विश्वसवो. जुहइ[१] आपणापेँ[२] अनर्थ नही[३] करइ[४] तुहइ[५] अनेरा पाहिं[६] करावेश.[७] बोल्युं छइ,

> प्रेरयति परमनार्य. शक्तिदरिद्रोऽपि जंगदमिद्रोहे ।
> तेजयति खड्गधारां स्वयमसमर्था शिला छेत्तुम् ॥ २७८ ॥

दुष्ट असमर्थ थको लोकनइ[८] द्रोह उपजाववा प्रेरि[९] जिम पहाणनी[१०] शला[११] आपुणापहेँ[१२] छेदवा असमर्थ[१३] तोहोइ[१४] खांडानइं[१५] तीपुं करइ छेदवानइ.[१६]

सिंह बोल्यु,[१७] किम द्रोह कर[शि][१८] ? दमनक बोल्युं,[१९] अहो सिंह तु सदा हस्तीशुं युद्ध करी तेहनइ[२०] दाते ताहरुं[२१] शरीर[२२] सघलइ[२३] चादाक्षत[२४] हुइं[२५] अनइं ए सजीवक सदा पासेइ[२६] विष्टा मूत्र करइ,[२७] ते माहि कीडा पडशि.[२८] ते कीडा ताहरा[२९] शरीरना चादा[३०] क्षतमाहि पैशी[३१] ताहा[रा][३२] डीलमाहि पेशशि[३३] तोहि[३४] तु विनाश पामेश.[३५] बोल्युं छइ,

> नैगाविज्ञातशीलस्य प्रदातव्य. परिश्रय ।
> टिटिकस्य हि दोपेण हता मन्दविसर्पिणी ॥ २७९ ॥

जेहनु[३६] शील न जाण्यु होइ तेहनइ[३७] आश्रय न देवुं[३८] जिम टिटिक[३९] नामे[४०] मांकण तेने[४१] दोपि[४२] करी मंदविसर्पिणी नामि[४३] जू ते मारी.

सिंह बोल्यु,[४४] ए कथा किम ? दमनक कहतो[४५] हौउ,[४६]

[१०. जू अने मांकण]

एक राजाना वासनेइ[१] घरमाहि उत्तम शय्या हूती.[२] तिहांनी पाट

प[46-B][छे]डीयें[1] छेहडे मंदविसर्पिणी नामिं[2] जू रहइ.[3] ते जू पुत्र पौत्र दोहित्र कुटुंब जूनुं सघला समेति राजा सूतो अथवा मत्त होइ तिवारें भक्ष करइ.[4] तीणें लोहीये पुष्ट देषाउ[5] एह्वी जू थे.[6] ईणी[7] परिं जूनें तिहां वसतां टिंटिक एहे नामें माकण वायुनु उड्यो तिहां[10] राजाना शयननइ[11] विपइ[12] पड्यो. ते[13] शयन अति कोमल, उढणा[14] पाथरणा जेह्वा गंगानां[15] वेलनां समूह[16] सुगंध एहुं शयन[17] देषी[18] परम[19] हर्ष पाम्यो. ते[20] कोमल गाटइ[21] हर्ष्यु मांकण तिहां भमतु[22] मंदविसर्पिणी जे[23] जू तेन्हें मिल्यो. ते जू माकणनइ[24] देषी[25] दुपनइ[26] पामीथी बोली, अहो[27] अग्निमुष तु राजानु उत्तम शयन तिहा[28] किम आव्यु ? वेगु[29] परु[30] जा. पछइ[31] माकण बोल्युं,[32] अरे एहुं तुं[33] म बोलेशि.

> गुरुरग्निर्द्विजातीनां वर्णानां ब्राह्मणो गुरुः ।
> पतिरेव गुरुः स्त्रीणां सर्वस्याभ्यागतो गुरुः ॥ १८० ॥

ब्राह्मणनइ[34] अग्नि गुरु,[35] सघला[36] वर्णनइ ब्राह्मण गुरु, स्त्रीनइ भर्त्तार[37] गुरु, अतिथि सर्वनइ[38] गुरु.

अनइ[39] संतनी[40] सात पद चाल्या,[41] वात[42] कह्या पूठि मैत्री. बोल्युं, छइं,[43]

> अन्योन्यं योजितौ हस्तौ कथा वृत्ता स्मितं कृतम् ।
> गतं सप्तपदीं साधर्ं मैत्रीबन्धः सतामयम् ॥ १८१ ॥

अन्योन्य हाथ मेल्या,[44] वात कीधी, हास्य कीधुं,[45] सात पगला साथिं[46] चाल्या,[47] संतनी मैत्री ईणी परि[48] थइ.

ते माटइ[49] हुं ताहरु[50] अतिथि. मि[51] मुषि[52] अनेक ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शूद्रना रुधिर स्वाद्यां. तेन्हा[53] रुधिर रूक्ष आछां पुष्टिनि[54] न करे[55] जे[56] आहवा[57] शयननइ[58] [विपइ][59] निद्रा करइ छइ. तेहनु[60] रुधिर निश्चि[61] उत्तम हुशि[62] अमृत [स]रषुं;[63] ते[64] अनेक औषध, उत्तम

अन्न उदक घृतादिके[११] करी अति रूडूं रसायन सरपु हुगे[१६] ते रुधिर ताह्रा प्रसादथी आस्वादवा इच्छुं छुं. जू बोली, ए[१७] असभाव्य; तू[१८] सरपा[47-A] अग्निमुखने ए योग्य नहीं, ते भणी जा[१९] ए शय्याथी. बोल्युं छइ,

देश कालं कार्यं परं आत्मानं च यो न जानाति ।
अभिमृश्य य करोति च न स फलमाप्नोति वै मूर्ख ॥ २८२ ॥

देश काल कार्य आपणपानइं[९०] ये[९१] एतला अणनिमार्गि[९२] काज[९३] करइ[९४] ते मूर्ष[९५] फल न पामइं.[९६]

पछइ[९७] ते माकण जूने पगे पड्यो. तीणी[९८] जूइं दाक्षण[९९] माटइं माकणनुं वचन अगी[८०] कीधु.[८१] पछइ तिणि[८२] माकणि[८३] अनेरा [रा]जानी वात[८४] [जू][८५] आगलि कही. तीणी[८६] जूइ वस्त्रने छेहडइ रह्या माभली. माकणे[८७] श्लोक भणिउ,[८८]

य पादयोर्निपतितं कुपितोऽपि न मन्यते ।
तेन ब्रह्मा हरि शंभुस्त्रयोऽपि स्युर्विमानिताः ॥ २८३ ॥

जे[९] पगे[९] लागता कुप्यो[९१] थकु[९२] न मानइ[९३] तेणइ[९४] ब्रह्मा विष्णु रौद्र इ[९५] त्रण्यि[९६] उपमान्या.[९७]

एहवु[९८] वचन साभलीनइ[९९] जू बोली, माकण[१००] देशकाल जोइनइ[१] एन्हे[२] भक्षवु.[३] माकण[४] बोल्यु,[५] अहो[६] हु देशकालनें न जाणू[७], तू[८] कहि जू बोली जिवारइ[९] ए[१०] राजा मदश्रमनिद्रा ईणे[११] व्याप्यो होइ तिवारि[१२] पुगनइ[१३] विषइ[१४] डसवु,[१५] ए देशकाल. मागणे[१६] ते वचन पछीइ[१७] अगीकरयु. एहवें[१८] थके पहली रात्रि जेतलें शय्याइ सूतो तेतलें मूप्यो जे माकण तेणइ[१९] अवसर पापइ[२०] राजा वासइ[२१] डशो.[२२] पछइ राजा दाधु[२३] होइ अथवा वीछी[२४] पाधउ[२५] हुइ[२६] तेहवइ[२७] वे[गो][२८] शय्याथी उठीनइ[२९] वासुं[३०] चंचूआल्तउ[३१] पासि[३२] रह्यु[३३] जे[३४]

सेवक तेहनइ[१६] कहतो हवुं:[१७] अहो हू[१८] सिज्झाई[१९] केहे जीवे[२०] पाधउ[२१] छूं;[२२] जूउ[२३] ते सू छइ. टिंटिक जे मांकण ते राजानु एहवु वचन सांभलीनइ पाटना दरडांमाहिं[२४] वहितु[२५] पइठउ.[२६] पछइ तेणइ[२७] सेवकि[२८] राजाना वचनथी दीवीइ[२९] करी जोवा लागु.[३०] जोता जोतां पाट पछेडी[47-B]नइ छेहिडइ[३१] मंदविसर्प्पणी जू परिवार समेति दीठी. पछइ परवार[३२] समेत[३३] जू[३४] मारी.

दमनक कहितु[३५] हूउं,[३६] हू[३७] ते भणी[३८] कहु छुं 'नैवाविज्ञात-शीलाय' ए कथा. १०. वली स्वामिन्[३९] तम्हे परंपरागत ये[४०] सेवक ते[४१] टाल्या ते युक्त नहीं.[४२] बोल्युं[४३] छइ[४४]

आत्मवर्गं परित्यज्य परवर्गेषु ये रताः ।
स एव निधनं याति यथा राजा ककुद्रुमः ॥ २८४ ॥

आपणु[४५] वर्ग छाडीनइ[४६] परवर्गरत[४७] हुइ[४८] ते नाश[४९] पामइ[५०] [जिम राजा खुखुद्रम[५१]]. वली,

त्यक्ताश्चाभ्यन्तरा येन बाह्याश्चाभ्यन्तरीकृता. ।
स भूमौ पतितः शेते मूर्खश्चण्डरवो यथा ॥ २८५ ॥

[जीणें[५२] अभ्यंतरमाहिना सेवक बाहरि कीधा, बाहरना माहें कीधा ते भूंइ पडेइ जिम मूर्ष चंडरव पड्यो.

पिंगलक बोल्यो, ए कथा किम ? दमनक बोल्यो,[५३]

[११. गळीथी रंगायेलो शियाळ]

एक[१] नगर] समीपि वर[२] दरडु[३] ते माहिं रहइ[४] चंडरव एहें[५] नामिं[६] शीयाल. ते शीयाल भूष्योथु[७] गाडा करडवानें रात्रिं[८] गाममाहि आव्यो.[९] पछइ ते शीयाल गामने कूतिरे आकुल्याकुल कीधउथु[१०] भूमता[११] नाशतउ[१२] रंगारा[ना] घरमाहिं[१३] गलीनुं कुंड तिहां]

पडिउ.[14] [पछइ[15] कूतिरा पाछा वली ग्या.] पछइ[16] ते शीआल गलीना कुंडमाहिथी किम्हइ नीकलीनइ वनमाहि ग्युं. पछइ ते वनना[17] जीव ते शीयालनुं डील गलीवर्ण्ण[18] देषी बीहीताथा[19] नासता हौआ, कहिता[20] हौआ, ए मोटउ[21] अपूर्व जीव वनमाहि[22] आव्यो छइ. तेन्हुं[23] पराक्रम न जाणइये[24] केहुं[25] छइ. ए सघलानें मारशेइ[26] ते भणी अनेरइ[27] वनि[28] जइई.[29] बोल्यु[30] छइ,[31]

न यस्य चेष्टितं विद्यान्न कुलं न पराक्रमम् ।
न तस्य विश्वसेत्प्राज्ञो यदीच्छेच्छ्रियमात्मनः ॥ २८६ ॥

येन्ही[32] चेष्टा पराक्रम कुल[33] न जाणीइ[34] तेन्हें[35] पंडिते विश्वास न करवौ[36] जु[37] आपणपानें कल्याण[38] वांछइ[39] तौ.[40]

पछइ शीयाल चीतवतो[41] हौउ, ए वनना जीव महारुं[42] विपरीत रूप देषी[43] नाशि[44] छइं.[45] एहने बुद्धि[46] सेवक करुं. पछइ ते वनना जीवने[47] [48-A] शीयाल कहतो हौउ, अहो मूर्षी[48] भय म करशु. हुं इंद्रि सघला[49] वनना[50] जीव रापवानें पृथ्वीमाहि मौकल्यु[51] छुं. सघला[52] जीवनु राज्य मून्हे[53] दीधु[54] छइ.[55] पछइ[56] ते शीयालनु वचन सांभलीनइ[57] सघला[58] सिंह वाघ[59] चीता[60] वानर शशा[61] हरण[62] वरथडां शीयाल, ए[63] सघला[64] तेन्हे नमस्कार करतां[65] हौआ. पछइ तेहनइ सिंहादिक हस्तीनां मांस आणीनइ पवारवा लागा बइठां.[66] तीणें पाशि[67] शीयाले[68] कन्हइथा[69] शीयाल[70] आपणा पहू करीनइ[71] पास[72] सिंघ व्याघ्र[73] रापतु[74] हौउ. तेणइ[75] सिहनइ[76] प्रधानपणुं आप्युं. एक वा[र] भ्रायुथो शीयाल अनेरा[77] ऊनातां सांभलीनइ[78] आ[प]णपहि[79] उनायु[80] मोटइ शब्दि[81] करतौ[82] हौउ. पछइ सिंहादिक तेन्हु[83] शब्द[84] सांभली[85] शीयाली[86] उनायु[87] जाणी लाज्या; वंच्या[88] एहुं जाणीन[इ][89] तेन्हि[90] मारता हौआ.

ते माटइ[11] हु कहु छु, 'त्यक्ताश्चाभ्यन्तरा येन' ए कथा ११.

एम[12] सांभलीनइ[13] पिंगलक[14] बोल्यु,[15] अहो ए में दुष्टबुद्धि छइ एह्वो[16] किम जाणीशि,[17] अनइ एह्वो[18] युद्धनानु[19] प्रकार स्यु[20]? दमनक बोल्यु,[1] जिह्वारे[2] ए सजीवक वीहींतो[3] चयो सर्वत्र जोतो शींगडे करी मारवाने[4] ताक्तो हौइ[5] तिवारे दुष्टबुद्धि जाणवो, तिवारइ[6] मारशि,[7] एह्वु जाणीनइ ये[8] युक्त होइ ते करो एह्वु दमनक बोलीनइ[9] सजीवक कन्हि ग्युउ[10] ते[11] कहइ[12] मद मद जातो उद्वेग्यो सरखु[13] रह्येउ[14] पछेइ सजीवक बोल्यु[15] अहो दमनक कुशल छइ[16]? शु घणे दिने[17] दीठउ[18] छइ[19]? दमनक बोल्यु सेवकनइ[20] कुशल किहा छइ[21]? जे[22] भणी,

> संपत्तय परायत्ता सदा चित्तमनिर्वृतम् ।
> स्वजीवितेऽप्यविश्वासस्तेषा ये राजसेवका ॥ २८७ ॥

सपदा पराधीन, [48 B] चित्तनइ[23] निवर्त्ति[24] नहीं, जीववानो अविश्वास, एतला वाना[25] राजाना[1] सेवकने होइ.[26]

> तावज्जन्मापि दु खाय ततो दुर्गतता परा ।
> तत्रापि सेवया वृत्तिरहो दु खपरपरा ॥ २८८ ॥

प्रथम दुख[28] जन्म, पछइ[29] दरिद्रपणु वली[°] दुख[31] सेवा, अहो[32] ए दुखनी श्रेणि[33]

> जीवन्तोऽपि मृता पञ्च व्यासेन परिकीर्तिताः ।
> दरिद्रो व्याधितो मूर्ख प्रवासी नित्यसेवक ॥ २८९ ॥

दरिद्री, व्याधीयु,[34] मूर्ख, परदेशी, दिहाडी[35] सेवा[36] करइ,[37] व्यास कहइ[38] एतला जीवताइ मूआ[39]

> सेवया धनमिच्छद्भि सेवकै पश्य यत्कृतम् ।
> स्वच्छन्द चरति श्वा हि सेवको राजशासनात् ॥ २९० ॥

सेवाइ [धन] वाञ्छता जे[80] सेवक तीणे जोउ[81] गु रूडूं कीधुं,[82] कूतिरु[83] आपणी इच्छाइ[84] रहि,[85] सेवक राजानी[86] आज्ञाइ.

भूशय्या ब्रह्मचर्यं च कृशत्व लघु भोजनम् ।
सेवकस्य यतेर्यद्वद् विशेष. पापधर्मज ॥ २९१ ॥

भूमि सूवू[87], ब्रह्मचर्य, दुर्बल, थोडो[88] जमवु,[89] ए सर्व सेवक अनइ यतीनैं[90] सरषु पण सेवक पाप करइ[91] अनइ यती पुण्य करइ[92] एतलु[93] विशेष.

स्वाभिप्रायपरोक्षस्य परचित्तानुवर्तिन ।
स्वय विक्रीतदेहस्य सेवकस्य कुत सुखम् ॥ २९२ ॥

आपणु[94] अभिप्राय न जाणइ अनइ[95] पीआरा[96] चित्तनइ[97] अनुवृत्ति[98] जे[99] गमतु तेहनइ[60] करइ,[61] तेणइ[62] आपणु[63] शरीर वेच्युं, ते[64] सेवकनइ[65] सुख नही. ए वचन रूडू कहै,[66]

कोऽर्थान्प्राप्य न गर्वितो विषयिण कस्यापदोऽस्तं गता
स्त्रीभि कस्य न खण्डित भुवि मन को नाम राज्ञा प्रिय ।
क कालस्य न गोचरान्तरगत कोऽर्थी गतो गौरवम्
को वा दुर्जनवागुरानिपतित क्षेमेण यात पुमान् ॥ २९३ ॥

धन पामीनइ[67] कुण नथी गर्व करतो, व्यसनीयानें[68] आपदा किहा फीटी छइ,[69] स्त्रीये कै[49 A]न्हु[70] मन नथी हर्यु,[71] राजानें कुण प्रिय हौउ छइ,[72] कालनइ गोचरि कुण नथी आव्यो, याचक कुण मोटपणु पाम्यु छइ, दुर्जननी[73] जालमाहि पड्यु [कुण] कुशलें गयु छइ ?

क काल कानि मित्राणि को देश को व्ययागमौ ।
कश्चाह का च मे शक्तिरिति चिन्ता मुहुर्मुहु ॥ २९४ ॥

कुण काल, कुण मित्र, [कुण देश], कुण आयपद, कुण वेच[74] कुण हु, केही माहरी शक्ति, एहु वारवार चीतवु छु[75]

हृदयमाहि भाव करी संजीवक बोल्यो, अहो वहि तुं शुं बोल्वा हीडे छे. दमनक बोल्युं, तुं माहु मित्र तीणें तुम्हें अवश्य हित करवुं. स्वामी पिंगलक तुं उपरि दुष्टबुद्धि छइ. आज कहुं सिंहिं, संजीवक मारीनइ सघला मांसगक्षी जीव तृप्त करुं. एहुं वचन सांभलीनइ हुं मोटुं कष्ट पाम्युं छतु हुं कहतो होइ, स्वामिन् ए युक्त नही जे मित्रद्रोह करीनइ जीविये. पछइ सिंह क्रोध्यो बोल्युं, तृण भक्ष करइ तेशुं स्वभावे वैर; तेहणें दोष नही. हवे जे युक्त करवुं होइ ते करि. पछइ संजीवक ते वज्र पड्या समान वै वचन सांभलीनइ दुष पाम्यु. दमनकना वचननी सदा श्रद्धाणीनइ परम विपाद पाम्यो. पछइ चेतना पामीनइ परम दुष्युंथो एहुं बोल्युं,

दुर्जनगम्या नार्यः प्रायेणापात्रभृद्भवति राजा ।
कृपणानुसारि च वित्तं देवो गिर्युदधिवर्षी च ॥ २९५ ॥

स्त्री दुष्टनी संगति करइ, राजा घणुं कुपात्रनें पोशइ, धन कृपण कन्हे जाइ, मेघ पर्वत अनइ समुद्रमाहि वरसइ.

आराध्यमानो नृपतिः प्रयत्ना-
दाराध्यते नाम किमत्र चित्रम् ।
अयं त्वपूर्वः प्रतिमाविशेषो
यः सेव्यमानो रिपुतामुपैति ॥ २९६ ॥

रा[49-B]जा आराधतो जु न आराधीये तो रोप मानेइ ते युक्त पुण ए अपूर्व जे राजा सेवीतो थिको शत्रु थाइ. अनइ ए राजानो कोप फेडवा अशक्य. बोल्युं छइ.

निमित्तमुद्दिश्य हि यः प्रकुप्यति
ध्रुवं स तस्यापगमे प्रसीदति ।

अकारणाविष्कृतवैरदारुणा
दसज्जनात्कस्य भयं न जायते ॥ २९७ ॥

कारण देपीनइ[1] ये[2] पुरुष कोप करइ[3] ते कारण फेडव्या पूठि[4] 'समत थाइ पण[5] जे दुष्ट कारण पाषट[10] वैर करइ[1] ते भय फेडवा न सकीये वली ए वचन साधु,

सरसि बहुशस्ताराछाया दशन्परिवञ्चित
कुमुदविटपान्वेषी हंसो निशास्वविचक्षण ।
न दशति पुन ताराशङ्की दिवापि सितोत्पल
कुहकचकितो लोक सत्येऽप्यपायमपेक्षते ॥ २९८ ॥

रात्रिं[1] जलमाहिं[3] प्रतिबिंब्या जे तारा तेन्हें[4] धौला[5] कमल जाणीनइ[6] असतो जे मूढ हंस ते दीहिं धोला कमलनें तारा जाणीनइ अण्युषु[7] न पाद तिम एक वार भय पाम्यु जे लोक ते[8] सदा भय देषइ[1] वली,

वैद्यसांवत्सरामात्या यस्य राज्ञ प्रियवदा ।
आरोग्यधर्मकोशेभ्य क्षिप्र स परिहीयते ॥ २९९ ॥

ये[1] राजानइ वैद्य रूडु गमतु बोलइ ते राजानो रोग न जाइ, जे राजानु गमतु जोसी बोलइ ते राजानइ शुभ नही, जेन्हे प्रधान गमतु बोलइ तेन्हो भंडार नाश पामइ

अहो में शु पिंगलकने पाडुउ[11] कीधु[12] ? दमनक बोल्यु,[13] अहो मित्र राजा कारण पामइ[14] पाडुउ[1] करें[15] अनइ छिद्र जोइ [सजीनक] बोल्यु, एइम,

भक्तानामुपकारिणा परहितव्यापारयुक्तात्मनाम्
सेवासव्यवहारतत्त्वविदुषामेकार्पणानामपि ।

व्यापत्ति स्वलितान्तरेषु नियता सिद्धिर्भवेद्वा न वा
तस्मादम्बुनिधेरिवाग्रनिपते सेवा सदाशङ्कि[50-A]नी ॥३००॥

भजता,[१७] उपकार करता,[१८] हित करता,[१९] सेवाना व्यवहारना[२०] तत्त्वने[२१] जाणता एकवृत्ति थका पछा जे सेवक तेहनइ[२२] सेवा चूका पूठि[२३] आपदानौ[२४] निश्चय, सिद्धि होइ अथवा न होइ, ते माटइ[२५] समुद्रनी अनइ राजानी सेवा सदा सदेहनइ[२६] करइ.[२७]

चंदनतरुषु भुजगा जलेषु कमलानि तत्र च ग्राहा ।
गुणघातिन खला इति भवन्ति न सुखान्यविघ्नानि ॥ २०१ ॥

चदनना वृक्ष्य सर्पे वीट्या, जलमाहि कमल पण मगरादिके[२८] व्याप्या, गुणने मूर्ष हणे,[२९] ईणी परिं भोगवतनइ[३०] गिपिसुख[३१] निर्विघ्न नथी.

केतक्य कण्टकैर्व्याप्ता नलिन्यो ग्राहदुर्गहा ।
विलासिन्य सकुट्टिन्य क रत्नमनुपद्रवम् ॥ ३०२ ॥

केवडु[३२] काटे व्याप्यो,[३३] कमलीनी ग्राहे व्यापी, विल्यासिनी[३४] स्त्री कूटिणीये व्यापी, ईणी[३५] परि[३६] उपद्रव ° पापइ रत्न नही

नश्यन्ति गुणशतान्यपि पुरुषाणामगुणवत्सु पुरुषेषु ।
अञ्जनगिरि शिखरेष्विव निशासु चन्द्राशव पतिता ॥३०३॥

निर्गुण पुरुषनइ ' विषइ[३९] गुणवतना[४०] घणाइ गुण नाश पामइ[४१] जिम काजरना पर्वत उपरि[४२] चद्रना[४३] किरण वृथा थाइ

अरण्यरुदित कृत, शवशरीरमुद्वर्तित ।
स्थलेऽब्जमवरोपित सुचिरमूषरे वर्षितम् ॥

श्वपुच्छमवनामित बधिरकर्णजाप कृत ।
तदन्धमुखमण्डन यदबुधो जन सेवित ॥ २०४ ॥

वगडेइ[४४] रोयु, शवने चीगसु[४५] कीधु,[४६] कोरडी भुट[४७] कमलिनी वावी, घणु[४८] उशल[४९] ऊपरि वृठ्ठु,[५०] कृतिरानु[५१] पुच्छ नमाडउ,[५२] वहिरानड[५३] [काने][५४] वात कीधी, आधला[नु] मुख शणगारिलु[५५] एतला वाना कीधा[५६] अनट[५७] मूर्पनी सेवा कीधी[५८] सरपी

चिर दुग्धोऽनड्वास्तनभरनता गोरिति वृथा,
परिष्वक्त पढो युवतिरिति लावण्यकलया ।
कृता वैदूर्याशा विततकिरणे काचशकले
मया मोहात्सेव्य कृपणमकृतज्ञ श्रितवता ॥ २०५ ॥

गाइ नाणीनइ[५९] बलद दोह्यु,[६०] अनेक लावण्य देषीनइ[६१] स्त्रीनी [भ्रांति][६२] पावइयु[६३] आलिंग्यु, रुडि काति देषी[६४] काचनइ[६५] विपि[६६] वैदूर्यनी आशा कीधी, में एतला वाना कीधा ये कम्यु न जाणइ कृपण एहु राजा सेव्यु

मौनान्मूक प्रवचनपटुर्वाचको जल्पको वा
क्षान्त्या भीरुर्यदि न सहते प्रायशो नाभिजात ।
धृष्ट पार्श्वे भवति नितरा दूरतोऽप्यप्रगल्भ
सेवाधर्म परमगहनो योगिनामप्यगम्य ॥ २०६ ॥

सेवक ठाकुर आगलि मोन करइ[६७] तो कहें मूगु[६८] छइ,[६९] जो[७०] घणु बोलइ[७१] तो[७२] जल्पक छइ एहु कहें, जु[७३] क्षमा करइ[७४] तो बीही कण[७५] कहै,[७६] जो काई[७७] न सहइ[७८] तो कहें उग्र छइ,[७९] पाशइ[८०] रहइ[८१] तो दीठ[८२] कहइ[८३], वेगलो रहइ[८४] तो कह[इ][८५] काई न जाणइं रही, ईणीं परि[८६] सेवाधर्म परम[८७] गहन योगीश्वरनइ[८८] अगम्य

प्रणमत्युन्नतिहेतोर्जीवितहेतोर्विमुञ्चति प्राणान् ।
दु खीयति सुखहेतो को मूढ सेवकादन्य ॥ २०७ ॥

मोटपण,[८९] पामवाने[९०] नमइ,[९१] जीववानी वृत्तिने प्राण छाडइ,[९२]

सुखने[3] काजे[4] दुःखी थाइं, ते भणी[5] सेवकयी अनेरु[6] कुण मूर्ख छइ.

अगतिनां गतिर्ह्येषा सा राज्ञा सह जीविका ।
आशीविषैश्च तस्याहुः सगतं यस्य राजभिः ॥ २०८ ॥

ये[7] राजा संघाते रही जीवियें[8] ते निर्वाहरानो[9] ठाम;[10] जेहनइ[1] राजा संघातें संगम तेन्हें साप संघातें संगम जाणवो.

रत्नान्यधो नयति सारगुरूणि मोहा-
दुच्चैस्तरं वहति काष्ठतृणं समुद्रः ।
संपाति* दूषयति पाति भुजङ्गलोकं
सर्वो महान् भवति कार्यपथादपेतः ॥ २०९ ॥

समुद्र मोटां रूडां[2] जे रत्न तेन्हें[3] हेटा मूंकइ[4] अनइ लाकडुं तृण तेहनइ[5] उंचु वहइ[6] अनइ[7] गरूड पातालि [51-A] जैनइ[8] सर्पनइ[9] मारइ;[10] ईणी परिं सर्व कार्यने[11] मोटा[12] विचार न जाणें विनाश पमाडइ.[13]

न शैलशृंगे कमलं प्ररोहति
प्रवर्तते नापि च दुर्जने शुभम् ।

---

* अहीं बालावबोधकारे आपेलो अर्थ बराबर नथी. आ पंक्तिनो आवो अर्थ थई शके—"(अदर पहेलां) पाणीने (समुद्र) दूषित करे छे अने नागलोकनुं रक्षण करे छे". प्रस्तुत श्लोक वल्लभदेवनी 'सुभाषितावलि'—(सुभाषित नं. २९२७)मां नीचे मुजब छे, अने भावार्थनी दृष्टिए ते पाठ वधारे औचित्यपूर्ण छे—

रत्नान्यधो नयति जातिगुरूणि मोहा-
दूर्ध्वं सदा वहति काष्ठतृणं समुद्रः ।
तोयानि दूषयति पाति भुजङ्गलोकं
प्रायो महान्भवति कार्यविमूढचेताः ॥

न साधवो यान्ति कदापि विक्रिया
यवाः प्रकीर्णाः न भवन्ति शालयः ॥ ३१० ॥

पर्वत ऊपरि कमल न लागइ,[१४] दुर्जननें शुभ करतां नावडइ,[१५] साधु कदापि[१६] विकार न पामें, जव वेर्या[१७] शालि[१८] न थाइं ए सत्य.

यत्नाद्विशुद्धतपसस्तपसे यतन्ते
शास्त्रेषु शास्त्रविद एव वदन्ति तज्ज्ञाः ।
शीलं हि शीलव्रत एव करोति तुष्टिं
नित्यं गुणा गुणवतां दयिता भवन्ति ॥ ३११ ॥

जेहनां भला तप छइ[१९] ते तप करवा यत्न करइ,[२०] शास्त्रज्ञ[२१] शास्त्र[२] उपरि यत्न करें, [शीलपणुं][२३] शीलवंतनें संतोष[२४] करइ,[२५] नित्ये गुणवंतनें गुण वाल्हा[२६] होइ. वली,

विस्मरन्त्यपराधान् च स्मरन्ति सुकृतानि च ।
असंभिन्नस्वमर्यादाः साधवः पुरुषोत्तमाः ॥ ३१२ ॥

साधु अपराधनइ[२६] वीशरें,[२७] उपकारनें स्मरें, आपणी मर्यादा भेदइं नहीं,[२८] ते भणी[२९] साधु सघला[३] पुरुषमांहि[३१] उत्तम होइं.[३२] अथवा

किं करिष्यति पाण्डित्यं विनयो विक्रमोऽपि वा ।
दैवं यस्य छलान्वेषि करोति विफलान् गुणान् ॥ ३१३ ॥

पांडित्य विनय पराक्रम एतलां वानां[३३] शुं[४] करइ ? येन्हें[३५] दैव छल करइ[३६] तेन्हें[३७] सघला गुण निष्फल थाइं.[३८]

विशालं शाल्मल्याः नयनसुभगं वीक्ष्य कुसुमम्
बभूवैषा बुद्धिः फलमपि भवेदस्य सदृशम् ।
इति ध्यात्वोपास्यं शुकशिशुरहोगत्रमुषितो
निदाने तूलोन्तः सपदि मरुता सोऽप्यहृतः ॥ ३१४ ॥

रूडु शांथलिनु फल जोईनइ[9] एही बुद्धि शूडानी[10] थे ते[11] फल सरषा[12] फल हुयि[13] एह चांनवीनइ[14] सूडउ[15] अनोरात्रि[16] तिहा रही जोइ[17] तो फ[51-B]लमाहि सूए तेरइ[18] वारइ[19] उडीयु,[20] ते भणी[21] मैं सुमित्र जाणीनइ[22] कुमित्र सेव्यु[23] बोल्यु[24] छड,[25]

अकालचर्यां विषमा च गोष्ठीम्
कुमित्रसेवा न कदापि कुर्यात् ।
पश्याण्डज पद्मवने प्रसुप्तम्
धनुर्विमुक्तेन शरेण ताडितम् ॥ २१५ ॥

अकालि चाल्नु, विपरीत वार्त्ता, कूमित्रनी[1] सेवा एतलां कदाचि न करवा, पक्षी पद्मवनमाहि सूतो जिम धनुपे[7] मुक्यो[8] ये शर तीणे[9] मार्यो

दमनक बोल्यु,[10] ए कथा किम[2] सजीवक कहितो[11] होइ,

[१७. हस अने घुवड]

केहा[1] एक वनमाहि मोटु सरोवर, तिहा मरकत नामें हस रहइ[3] तिहा ते[4] हसाने क्रीडा करता घणो काल ग्यु[4] पछइ[5] ते हसना[6] अतनु करणहार घूवड आव्यो घूअडने देषी हस बोल्यु,[8] किहा[9] तु अरण्यमाहि आव्यु[?] घूअड बोल्यु,[?] ताहरा गुण साभलीनइ हु[10] आव्यु बोल्यु छइ,[11]

पर्यटन् पृथिवी सर्वां गुणान्वेषणतत्पर ।
गुणै स्त्वदधिको नान्य तेनायात तवान्तिकम् ॥ २१६ ॥

पृथ्वी सघलीइ[12] गुण जोता तू सरषो गुणवत नथी, ते भणी[13] तु कन्हइ[14] आव्यु छु

त्वया सह मयावश्यं सख्यं कार्यं इहादरात् ।
अपवित्रमपि प्राप्य गङ्गां याति पवित्रताम् ॥ ३१७ ॥

तुं[१६] संघाति[१७] में अवश्य मैत्री करवी जिम अपवित्र गंगानइ[१८] पांमीनइ[१९] पवित्र थाइं.[२०] वली,

हरिहस्तगतः शङ्खः पवित्रः कथितोऽस्थ्यपि ।
महानुभावसंपर्कः कस्य नोन्नतिकारकः ॥ ३१८ ॥

विष्णुना हाथनो[२१] शंख[२२] हाडनो[२३] पण पवित्र कहीयें[२४] तिम महानुभावनो स्पर्श[२५] कहिनें[२६] मोटपणुं न आणइ ? सर्वने आणइ.

एहुं कह्या[२७] पूठिं हंस बोल्यु,[२८] अहो[२९] मित्र सुखें ए सरोवरमाहि आपण रहशुं.

ईणी[३०] परि तिहां सरोवरमाहि हंस घूअड [52-A] रहतां रमतां घणो काल हौउ. पछइ[३१] एक अवसरनइ[३२] विषि[३३] घूअड बोल्यु,[३४] अहो हंस हुं आपणुं पद्मवन नामें जे आश्रम तिहा जायोस.[३५] जु[३६] मइं[३७] काज होइ[३८] तो एक वार प्रहोणुं[३९] तु[४०] आवे माहे आश्रमि. एहुं बोली घूअड आपणइ[४१] स्थानि[४२] ग्युं.[४३] पछइ केतलइएक[४४] कालें हंस चींतवतो हौउ, आणइ[४५] ठामि रहइता[४६] गरढो[४७] हौउ;[४८] केही[४९] दिशा न जाणुं.[५०] ते भणी १ हुं ते मित्र ये घूअड ते समीपि जाउं. तिहां मुन्हें[५१] विनोद [भ]क्ष्य भोज्य हुशि.[५२] एहु चीतवी[५३] घूअड[५४] [कि]नइ[५५] हंस ग्युं.[५६] जोइ तो तेन्हें[५७] पद्मवनमाहि[५८] न देषीइं.[५९] जोइ तो दीहें[६१] आंधलो कौतरमाहि[६२] घूअडनइ[६३] देषतो हौउ; देषीनइ साद कीधु,[६४] अहो घूअड हुं हंस[६५] ताहु[६६] मित्र आव्यो छुं. घूअड बोल्युं, हुं दीहे[६७] न हीडुं; ताहु [माहू][६८] समागम रात्रिं[६९] हुशि.[७०] रात्रि[७१] हौआ[७२] पूठिं[७३] हंस घडीवार रहीनइ[७४] सूतुं.[७५] पछइ[७६] तीणे[७७] सरोवरि

मोटो[18] संघात संग उत्तरयु.[19] राति[20] सुषिं सूतो; प्रभाति संग[1] उठी-नइ[2] चालतां[3] शंख वजाड्यो. एहइ घूअड मोटो शद्ब करी उठ्युं;[4] पछइ कोतरमाहि पैठु.[5] तीणें[6] साथना[7] ठाकुर चींतव्युं, ए कुण दुष्ट जीव माह्यो[8] साथ[9] तेन्हे अपशकुन करइ[10] छइ[11] ? एहुं चींतवी जोता हौआ. जोतां जोतां पद्मवनमाहि[12] हंस दीठु;[13] कहिता[14] हौआ[15] एह ज पक्षी अपशकुननो करणहार. पछइ बाण ताणीनइ मूंक्युं ते मारयु हंस मूंउ.

ते भणी[16] हुं कहुं[17] छुं[18] 'विकालचर्या' ए कथा.

दमनक बोल्यो ए पिंगलक[19] स्वामि पहिलुं[20] वाणीये[1] मधुर परिणामि विष समान चित्त. बोल्यु छइ,

> परोक्षे कार्यहन्तारं प्रत्यक्षे प्रियवादिनम् ।
> वर्जयेत् तादृशं मित्रं विष[52-B]कुम्भं पयोमुखम् ॥ २१९ ॥

अणदेषता कार्यनो नाश करइ,[2] देषता रूडुं बोलइ एहु[3] मित्र वर्जवु[4] जिम विषभर्युं[5] कुंभ मूंडइ[6] [दू]ध में ए अनुभव्युं[7] छइ.

> दूरादुच्छ्रितपाणिरार्द्रनयनः संदर्शितार्धासनो
> गाढालिङ्गनतत्परः प्रियकथाप्रश्नेषु दत्तादरः ।
> अंतर्गूढविषो बहिर्मधुमयश्चातीव मायापटुः
> को नामायमपूर्वनाटकविधिर्यः शिक्षितो दुर्जनः ॥ २२० ॥

वेगलांथा[8] उठइ,[9] हाथ उंचु[10] करइ,[11] स्निग्ध नेत्र, अर्द्ध आसन[12] देपाडीइ,[13] गाढुं[14] साई दे, रूडी वात करइ,[15] अंतर्गत विष [स]रषो,[16] बाहिरि[17] मधुर सरषो[18] मीठु,[19] घणी माया, एतला[20] वाना दुर्जन केही नटशालमाहि[21] शीष्यु.[22]

> आदावस्युपचारचारुविनयालंकारशोभान्वितं
> मध्ये चापि विचित्रवाक्यकुसुमैरभ्यर्चितं निष्फलैः ।

पैशुन्याविनयापमानमलिनं बीभत्समन्ते च यद्
धिक् केनाप्यकुलीनसंगतमसद्धर्मार्थमुत्पादितम् ॥ ३२१ ॥

प्रथम घणुं[23] आ[दर], विनय[24] [शोभा] करइ[25] अनइ[26] मध्ये[27] अनेक वचने संतोषइ,[28] निष्फल[29] ये[30] वचन[31] तीणें[32] संतोषइ[33] अनइ छेहडइ पिशुनपणुं, विनय नहीं अपमान करइं, मलिण होइ भय करइ एह्वो जे अकुलीण दुष्ट कुगहे निर्ध्युं ते दुष्टने धिक्.

संजीवक बोल्यु[34] दुष्टनी सेवी[35] मुंन्हें[36] मोटुं कष्ट आव्युं. किहां हुं पडनो पाणहार, किहां ये[37] मांसना पाणहारनो[38] संसर्ग ? ए वचन युक्त,[39]

ययोरेव समं चित्तं, ययोरेव समं श्रुतम्[39] ।
तयोर्विवाहः सख्यं च, न तु पुष्टविपुष्टयोः ॥ ३२२ ॥

जेहीनइ[40] समान चित्त, जेहनें[41] समान शास्त्र[42] तेह बिहिनें विवाह योग्य अनइ मैत्री योग्य पण अधिक अनइ ओछाने[43] प्रीति विवाह योग्य नही.

हुताशज्वालाभे स्थितवति रथावरतशिखरे
[53-A] पिपासुः किञ्जल्कं प्रविशति सरोजं मधुकरः ।
तदन्तः संरोधं न गणयति संध्यासमयजं
जनोऽर्थी नापायं विमृशति फलैकान्ततृपितः ॥ ३२३ ॥

जिवारे[44] सूर्य अस्ताचल पर्वतनइ विपिह रह्या पूठिं तरस्यु भ्रमर कमलमाहि मकरंद मसवा पैशि पण आपणुं कमलमाहि रुंधावुं[45] न जाणइ जे हुं संध्याइं कमलमाहि रुंधायेशि तिम मनुष्य फलनु[46] वाह्यो आपणो नाश न चींतवइ.

गण्डोपान्ते सुचिरविगलद्दानवन्यद्विपानां
ये सेवन्ते नवमधुरसास्वादलुब्धा द्विरेफाः ।

ते तत्कर्णव्यजनपवनप्रेङ्खितैः क्षिप्तदेहा
भूमिं प्राप्ताः कमलविवरक्रीडितानि स्मरन्ति ॥ ३२४ ॥

वनना[11] हाथीना क्षण एक मदना आस्वादनइ अर्थि जे कुंभस्थलनें[12] भ्रमर सेवै[13] ते कर्ण बहुना[14] मारयां मुइं पञ्चांथा कमल ये क्रीडा तेहने स्मरें ए गुणवंतनु[15] ज दोष.

स्वफलनिचयो नम्रां शाखां करोति वनस्पति-
र्गमनमलसं बर्हाटोपः करोति शिखण्डिनाम् ।
चतुरगमनो जात्यो योऽश्वः स गौरिव वाह्यते
गुणवति जने प्रायेणैवं गुणाः खलु वैरिणः ॥ ३२५ ॥

वृक्षनी[16] शाखानें आफणाये फलनु भार नमावइ, मोरनी कला पीठ उतावली गतिनें फेटइ, जे रूडुं चालइ सुजाति ये अश्व तेन्हें बलदनी परिं बाहें;[17] ईणी परिं गुणवंत पुरुषनें[18] गुण ज वैरी थाई.[19] वली,

कालिन्द्याः पुलिनेन्द्रनीलशकलश्यामाम्भसोऽन्तर्जले
मग्नस्याञ्जनपुञ्जमेचकनिभस्याहेः कुतोऽन्वेषणम् ।
ताराभाः फणचक्रवालमणयो न स्युर्यदि द्योतिनो
यैरेवोन्नतिमाप्नुवन्ति गुणिनः तैरेव यान्त्यापदम् ॥ ३२६ ॥

युमुनाना[11] काला जलमाहि[12] काजल सरपो[13] कालो कालीनाग किम दीशतो[14] जौता[15] जु[16] माथइ[17] तारा सरपा दीपता[18] [53-B] मणि न होता[19] तो; ते मणि[20] गुणवंत जीणइ[21] करी मोटाइ[22] पामइ[23] तेणी[24] ज आपदा पामें.

नरेन्द्रा भूयिष्ठं गुणवति जनेऽत्यन्तविमुखाः
श्रियः प्रायो लोके व्यसनिषु च मुर्खेषु च रताः ।

नराणां माहात्म्यं गुणत इति मिथ्या स्तुतिरियं
जनः प्रायेणैवं न हि पुरुषकारं गणयति ॥ ३२७ ॥

राजा घणुं गुणवंतथा उपराठा,[७०] स्त्री घणुं[७१] लोकमाहि[७२] व्यसनी मूर्पनइ[७३] विपि[७४] रत अनइ जे गुणवंत मनुष्य कहीये ते मिथ्यावाद गुणवंत कह्यां पूठिं ते मनुष्य अनेरा कहने[७५] न गणइ.

सिंहैः पञ्जरयन्त्रणापरिभवप्रम्लानदीनाननै-
र्नागैरङ्कुशभिन्नमस्तकपुटैर्मन्त्रालसैः पन्नगैः ।
विद्वद्भिश्च निराश्रयव्यसनिभिः शूरैश्च भाग्यक्षतैः
कालः क्रीडनकैरिवात्मरुचितैः प्रेङ्खोलयन् क्रीडति ॥ ३२८ ॥

सिंह पांजरांनुं[७६] बंधन पाम्या, हाथी[७७] दीन थका अंकुश करी ,मस्तकनइ विपइ कष्ट पाम्या, सर्प मंत्र[७८] करी आलसी थ्या, पंडित आश्रय पाषे[७९] दरिद्री थ्या, शूर भाग्य पाषट[८०] हौआ; ईणी परिं[८१] काल एह्वे[८२] रमकडे[८३] रमइ[८४] छइ.[८५]

ते भणी[८६] मुन्हे[८७] ए मंडलमाहि[८८] आव्या पूठि[८९] जीवतव्य नथी. बोल्युं छइ,

बहवः पण्डिताः क्षुद्राः सर्वे मायोपजीविनः ।
कुर्युः कृत्यमकृत्यं वा उष्ट्रे काकादयो यथा ॥ ३२९ ॥

नान्हा सर्व मायानें जाणे,[९०] चतुर[९१] एह्वा घणां अकार्य करी आपणु कार्य[९२] करइ[९३] जिम उंटनइ[९४] विषइ[९५] कागादिक.

दमनक बोल्युं,[९६] ए कथा किम ? [संजीवक बोल्यो],

[१३. सागरदत्त वाणियो, उंट अने सिंह]

कोइक[१] नगरनइ[२] विषइ[३] सागरदत्त नामि[४] वाणियो जे[५] घणा[६]

मूल्ना[७] वस्त्र लेई[८] उटना[९] शत[१०] भरी[११] निहे[१२] देशि वेचवा चाल्यु[१३] ते सागरदत्त वाणीयानु[१४] विकट नहीं[१५] नामे उट[१६] भारें[१७] करी गाढो[१८] थाको[१९] बहु[२०] निश्चेष्ट[२१] पड्यु. पछइ[२२] तेहनु[२३] भार वहिंचीनइ[२४] अनेरा[२५] उट उपरि[२६] घलावीनइ[२७] ते सागरदत्त वाणीउ[२८] [54-A] उट जे विकट तेन्हें तिहा मूकी भय माटइ[२९] साथ सघाते चाल्यु ते ग्या पूठिं[३०] विकट[३१] मुडइ[३२] तृण पातो[३३] होउ. इम[३४] ते उट[३५] केत[ले] दिहाडे[३६] बलवत[३७] थयु[३८]. ते वनमाहि[३९] मदोत्कुट[४०] नामिं[४१] सिंह रहइ.[४२] तेहना[४३] सेवक सिंह[४४] काग शीआल.[४५] पछइ तेणइ[४६] उट दीठउ.[४७] ते उंट विपरीत कहीइ[४८] दीठु नहीं इसामणु[४९] देषी[५०] सिंह पूछतु[५१] होउ, ए[५२] अपूर्व जीव वननइ[५३] विषइ[५४] पूछीये[५५] कुणनु[५६] छइ? पछइ काग बोल्यु,[५७] स्वामिन्, ए लोक प्रसिद्ध उट[५८] पछइ सिंहि पूछ्युं,[५९] तु[६०] ईहा किहाथु[६१] आव्यो[६२]? तीणी[६३] उटे[६४] आपणु[६५] जे रहवानु[६६] कारण सर्व कह्यु पछइ[६७] तेन्हें[६८] सिंहें अभयदान दीधु इम रहता[६९] वनमाहि कियारेक[७०] सिंहगज युद्ध करता दातें सिंहना पाशा[७१] छुड्या.[७२] पछेइ सिंह[७३] क्षत माटइ गुफामाहि पडी रहइ[७४] पछइ[७५] दिन पाच-छ पूठिं सघला ते सिंहना सेवक क्षुधाइ कष्टमाहि पड्या. ते सीदाता देषी सिंह बोल्यु,[७६] हु आम प्रहारे[७७] अक्षम कीधो, तम्हे आहारें[७८] [उद्यम[७९] करु पछइ[८०] ते बोल्या, तम्हे[८१] इम[८२] छता अम्हे शु[८३] करशु आहारें?] सिंह बोल्यु, तम्हारी[८४] सेवा वारू भली[८५] भक्ति[८६] तु[८७] तम्हे माहरा[८८] आहारने[८९] लेई आवो[९०] जिवारें[१] ते[२] एहवुं[३] कह्या पूठिं[४] न बोले[५] तिवारें वली[६] सिंह[७] बोल्यु,[८] अहो लाज छाडु.[९] को एक जीव[१००] आहारनइ[१] जूउ[२] हूं[३] आहोइ तम्हने पारणु कराव्योइ[४] एहवु कह्या[५] पूठिं[६] ते[७] सघला उठीनइ[८] निकट संघाते वनमाहि[९] पइठा[१०] पछइ विकटने छांडीनइ[११] सघला[१२] दुष्ट मन्त्र करवा लागा तिहा[१३] काग बोल्यु,[१४] अहो छते भक्षे[१५] अक्षे[१६] मारया, ते भक्ष सुलभ. पछइ[१७] ते

शशु,[18] सिंह वीजु[19] त्रिहे बोल्या, शा[20] थकी मारया ? काग बोल्युं,[21] आ विकट छर्‌ता,[22] ए[23] उंट आपण कुण सबंध ? ए तृण पाइ, आपण मास पाउं. ते त्रिहि[24] बोल्या, अहो[25] [54-B] काग, स्वामी[26] सिंहे ए[27] अभयदान देई राप्यो छड[28] ते भणी[29] एह वोल्वा[30] अयुक्त. काग बोल्यु,[31] तह्मे[32] रहु[33] एहु[34] सिंहनि[35] कही[36] अर्थ साधेशि.[37] पछइ काग सिंह राजा[38] कन्हइ[39] ग्यु.[40] सिंहे[41] पूछ्युं,[42] दीठु[43] तम्हे काई जीव ? काग बोल्यु, जेन्हइ[44] शरीरने[45] बल[46] होइं, आपिने[47] बल[48] होइ ते जोइ,[49] अम्ह[50] सघला[51] आहार पाषेइं[52] अध[53] अनइ शक्ति नही.[54] स्वामिन् अवसर छइ पण स्नये कहनातु नथी जे तम्हे[55] छतइ[56] आहारि[57] आपणपु[58] क्षुधाइ[59] क्षीण थ्या. सिंह बोल्यु, ते किम ? काग बोल्युं, विकट छर्‌तौ[60] सिंह बोल्यु, शुं[61] दुष्ट केहें[62] छड ? में इन्हे[63] आश्रय अभयदान दीधुं छर.[64] बोल्युं छइ,[65]

> न गोप्रदानं न महीप्रदानं
> नान्नप्रदानं हि तथा प्रधानम् ।
> यथा वदन्तीह बुधा प्रधानं
> सर्वप्रदानेष्वभयप्रदानम् ॥ २३० ॥

गोदान[66] महीदान[67] अन्नदान[68] श्रेष्ठ नहीं जेह्व अभयदान पंडित श्रेष्ठ कहै.

काग बोल्यो, अहो स्वामिन् तम्हने[69] धर्मशास्त्रज्ञान छइ[70]; एहइ[71] रिषीश्वरनुं वचन[72] जे शरीरनइ अर्थि पापइ कीजइ. बोल्यु छइ,

> त्यजेदेकं कुलस्यार्थे ग्रामस्यार्थे कुलं त्यजेत् ।
> ग्रामं जनपदस्यार्थे आत्मार्थे पृथिवी त्यजेत् ॥ २३१ ॥

कुलनइ[73] अर्थि एक त्यजवु[74], ग्रामनइ[75] अर्थि कुल त्यजवुं, देशनइ[76] अर्थि गाम त्यजवु, आपणइ[77] अर्थि पृथ्वी[78] त्यिजीइ.[79] वली,

येन येनाप्युपायेन शुभेनाप्यशुभेन वा ।
उद्धरेद्दीनमात्मान समर्थो धर्ममाचरेत् ॥ ३३२ ॥

शुभ अथवा अशुभ[10] ये[11] के[12] उपाय[13] करी आपणपुं आपदयी राषवु, पच्छइ समर्थ थका[14] धर्म करवो

तम्हे[1] स्वामिन् ए उग्रने[2] म मारशु में[3] ए मारवानो "उपाय माड्यो छई[4] सिंह[5] बोल्यु[6], किम[7] काग बोल्यु[8], ए उट तम्हनें अम्हनें[9] [55 A] घणो देषीनइ परलोकने[1] सघलाना[11] हितनें अर्थि आपणु[12] जीवित[13] त्यजवा हींडइ[14] छइ[1] तें[15] कहइ छइ एहु[1] काग बोलता सिंह क्रोध्यु काई बोल्यु नहीं पच्छइ[1] काग ते सिंह कन्हइथी[1] जिहा ते सर्वे[1] हता[1] तिहा ग्यु[1], अहो तम्हे ए जाण्यु छइ जे प्राण राष्यानु पुण्य आपण जेनइ[1] स्वामी अक्षम[1] आगलि[1] आपणपाने[20] निवेदीये

श्रूयते च कपोतेन शत्रु शरणमागत ।
पूजितश्च यथान्याय स्वैश्च मांसैर्निमन्त्रित ॥ ३३३ ॥

सामलीयेइ[11] छइ[12] इन्द्रे[13] होलारूपि[14] अतिथि[15] आव्यु[16] थको राजाइ आपणे मासे[17] करी तृप्त कीधो

आपद प्राप्नुयात् स्वामी यस्य भृत्यस्य पश्यत ।
प्राणेषु विद्यमानेषु स भृत्यो नरक व्रजेत् ॥ ३३४ ॥

जे[18] सेवक देषता[19] स्वामी[1] आपदा[12] पामइ[1] ते सेवक जु[13] प्राण[17] आपणा रापइ[1] तु[15] नरकि जाइ

तम्हे इम कहवु[10] जे राजन् तम्हे मास भक्षण[18] करु, भूख्या अहारइ[19] शरीरि[20] धारणु करु[21] एहु[1] मत्र करी निकट सघातें सिंह समीपि सघला[33] आव्या पछइ[1] काग नमस्कार[1] करी बोल्यु,[15]

स्वामिन् माहूँ[३७] शरीरि[३८] तम्हारा प्राण राषु.[३९] सिंह राजा[४०] बोल्यो,[४१] काग,[४२] ताहरे[४३] शरीरें अछे[४४] सघला तृप्त न थाई;[४५] ताहु शरीर नान्हुं. काग[४६] एहु[४७] कही रह्या पूठि शीयाल इम कहितौ[४८] हौउ, जे माहूँ[४९] शरीरि[५०] राउली प्राण राषु, काग पहें माहु शरीर मोटु, माहरइ[५१] शरीरि पारणुं करुं.[५२] पछइ[५३] सिंह कहि, वासवनइ न पुहुचइ. शीआल गया[५४] पूठिं[५५] बीजउ[५६] सीइ[५७] बोल्यु,[५८] ए बुहुं[५९] पहिं[६०] माहरु[६१] शरीर मोटउ[६२] च्छइ, माहरइ[६३] शरीरि[६४] पारणुं करुं.[६५]

येनैव जीवंति बहूनि यत्र
स तत्र यत्नात्परिरक्षणीयः ।
तस्मिन्विनष्टे कुलमेति नाशं
किं [55-B] नाभिभङ्गे ह्यरका वहन्ति ॥ ३३५ ॥

जीणें करी घणा जीवे तिहा ते[६६] यत्नें रापीये;[६७] ते नाश पाम्यो[६८] कुल नाश पामइ[६९] जिम नाभिनो[७०] नाशै आरा नाश पामें.

सिंह[७१] राजा ते सेवक बीजो सिंह तेन्हे कहतो हौउ, ताहु[७२] अल्प शरीर ते[७३] युक्त कहुं पण नखयुक्तनें[७४] ठाकुर[७५] किम पाइं ? अनइ स्वजाती[७६] न पावु.[७७] पछइ[७८] विकटक[७९] चीतवतो[८०] हौउ, मूर्षपणइ[८१] इंणे[८२] कोइ मारयुं[८३] नहीं[८४] तु[८५] हृदय[८६] एह[८७] कहुं. पच्छइ[८८] उट[८९] सीह कन्हइ[९०] जे[९१] बोल्यु,[९२] स्वामिन्,

न यज्वानोऽपि गच्छन्ति, तां गतिं नैव योगिनः ।
यां यान्ति प्रोज्झितप्राणाः स्वाम्यर्थे सेवकोत्तमाः ॥ ३३६ ॥

सेवक स्वामिनइ[९३] अर्थि प्राण छाडीनइ[९४] जे[९५] गति पामें ते गतिनें याज्ञिक योगीश्वर न पामइ.[९६]

एहना शरीरथी माहरु[९७] शरीर मोटुं छइ. माहूं शरीरि[९८] तम्हारा

प्राण राषो. एहुं कथा पूठि[11] सिंह शीयाल बिहइ[10] ऊंटनां पासां फाडी मारीनइ[1] षाना लागा.

ते भणी[1] हुं कहुं[1] छुं,[2] 'बहवः पंडिताः क्षुद्राः' ए कथा. वली संजीवक बोल्यो, अहो[1] दमनक, ए राजानुं परिवार क्षुद्र[2] ते भणी[3] सेवकनइ[4] हित न हुइ.[5] बोल्युं छइ, हंसि[11] परिवर्यो गृद्ध राजा वारू पण गृध्रे परिवर्यो हंस राजा काइं[12] नही. गृध्रपरिवारथी स्वामीनें घणा दोष हुइ.[13] भूंडानइ[14] वचने भला जे[15] राजा ति[16] विचार न करइ.[17] बोल्युं छइ,

भद्रेभपतिनो राजा कुनावयामर्षसंश्रयः ।
सुहृदामपि वश्यः स्यात् किं चित्रं यच विद्विषाम् ॥ ३३७ ॥

भद्रजाति हस्ती[18] सरषो[19] राजा मित्रनइ[20] कठन[21] वचनि[22] वश्य हुइ,[23] पच्छइ[24] शत्रुनइ[25] वशि[26] होइ ते[27] शु आश्चर्य शांभलीये[28] छइ[29] ?

येन ते जम्बुकः पार्श्वे तीक्ष्णतुण्डश्च वायसः ।
तेनाहं वृक्षमारूढः परिवारो न शोभनः ॥ ३३८ ॥

जे[30] माटइ[31] शीयाल पाशइ[32] छइ [अनइ[33] तीषी[34] चांचनो काग पाशे[35] छइ[36]] ते भणी हुं वृक्ष [56-A] उपरि चड्युं[37] छुं ए परिवार भलुं[38] नहीं.

दमनक बोल्यु, "ए कथा किम ?" संजीवक कहे[39] छइ,[40]

[१४. सुथार अने सिंह]

कोइक[1] नगर विषइ[2] देवगुप्त[3] सूत्रहार[4] वसइ.[5] ते[6] स्त्री संघातें भात रूडुं[7] लेई मोटा वनमाहि ग्युं; स्तंभ अरण्यमाहि वाढइ. पछइ तिहां मोटो विमल नामेंइ[8] सिंह[9] रहइ. ते विमलना सेवक वि मास

भक्ष करें एह्वा[१०] काग शीयाल. ते सिंह वनमाहिं भ्रमतें सूत्रहार दीठु.[११] सूत्रहार[१२] ते सिंहनइ[१३] देषी बीहनु;[१४] पच्छइ[१५] बुद्धि ऊपनी जे यन्ही[१६] अनुवृत्ति करुं. साम्हो[१७] जैनइ[१८] नमस्कार करी बोल्युं,[१९] अहो मित्र सिंह,[२०] माहु [मा]त भक्ष[२१] तुं;[२२] माह्री[२३] स्त्रीयें[२४] आप्युं छइ.[२५] तुं भाइ[२६] छइं.[२७] सिंह[२८] बोल्युं,[२९] अहो मून्ई[३०] अन्ने तृप्ति नहीं; हुं[३१] मांस भक्ष करुं. तोइइ[३२] ताह्री प्रीतिनें[३३] थोडुं[३४] आस्वादेशि. शूं[३५] भक्ष छइ? एहुं पूछतां सूत्रहारे[३६] पांडना लाडू आणि[३७] आप्या. पछइ[३८] ते सिंह पांडना लाडू अनेक पक्वान[३९] पाई संतोष्युं.[४०] पच्छइ[४१] सिंहिं[४२] ते सूत्रधारनइ[४३] अभइदान दीधुं; आज[४४] पूठिं अवश्य आववुं. पच्छइ[४५] सूत्रधार[४६] बोल्युं,[४७] स्वामिन्[४८] एक वार तह्मे एकला दिहाडी माहुं अन्न भक्ष करवा आववुं. बीजु[४९] मुं[५०] कन्हे[५१] म आणशु. ईणी[५२] परि[५३] प्रीति[५४] घणु[५५] काल हवुं.[५६] पच्छइ सिंह[५७] दिहाडी आहार[५८] तृप्ति [थ्या[५९] पूठिं[६०]] पारधि न करइ.[६१]

पच्छइ[६२] शीयाल[६३] काग बिहि[६४] भूष्याथा[६५] केतलाइ[६६] दिनना[६७] सिंहने[६८] वीनवता[६९] हौआ, स्वामिन् तम्हे दिहाडी किहां जाउ छुं,[७०] तृप्त थै आवो छो. सिंह बोल्युं, सूत्रधारनी[७१] स्त्री अनेक भक्ष लेई आवइ[७२] छइ[७३] सूत्रहार[७४] संघाति;[७५] तेन्हें[७६] हुं भक्ष करी भातनें तृप्त थाउ छुं. पच्छइ[७७] ते शीयाल[७८] काग बिहि[७९] बोल्या, आपण ते सूत्रधारनें[८०] मारीनइं[८१] तेन्हइं[८२] मांसि[८३] घणा दिन तृप्त थाशुं. ते सांभली सिंह[८४] बोल्युं,[८५] अहो में[८६] तेन्हें अभयदान दीधुं छइ.[८७] ते उपरि[८८] मनसा[८९] असुभ[९०] न चीतवीई[९१] तेथी तु[56-B]म्हनें[९२] अनेरुं[९३] भक्षण[९४] आणीशइ.[९५] ते बिहि[९६] बोल्या, अनेरु[९७] भक्ष नहीं; ते सूत्रधारने भक्ष्यशुं. मोटइ[९८] कष्टिं[९९] सिंहे[१००] तेहनु[१] वचन मानीनइ[२] सूत्रधार समीपि जातु[३] हौउ. पच्छइ ते वेगलुथु[४] सूत्रधार सिंह बि[५] काग सीआल[६] आवता[७]

देपीनइ[८] तेहनां दुष्ट[९] चिह्न[१०] देपी स्त्री सहित[११] सूत्रधार वृक्ष[१२] ऊपरि चड्यु[१३] पच्छइ[१४] सिंह[१५] आवी कहितु[१६] हौउ, आज[१७] तु मूहइ[१८] देपीनइ[१९] वृक्ष उपरि[२०] का[२१] चढ्यउ[२२] ? हु ताहरु[२३] मित्र विमल नामी[२४] सिंह, तु[२५] म बीहसि.[२६] पच्छइ वृक्ष उपरिथु[२७] सूत्रधार बोल्यु 'येन ते जम्बुक पार्श्वे' ए श्लोक

ते भणी[२८] कहु[२९] छउ[३०] जे राजा क्षुद्रनु[३१] चीट्यु[३२] परिवारने[३३] सुपनइ[३४] करइ[३५] वली सजीवक बोल्यु,[३६] ते[३७] पिंगलक कुगहँ सु उपरि कोपयु ? युक्त,

मृदुना सलिलेन खन्यमाना
न्यवपुष्यन्ति गिरेरपि स्थलानि ।
उपजापविदा च कर्णजापे
किमु चेतांसि मृदूनि मानवानाम् ॥ ३३९ ॥

कोमल उदकना पण्या पर्वत[३८] पडइ[३९] टइ,[४०] तु[४१] जे काननेड[४२] विपइ[४३] मन्त्र दइ[४४] तेहें[४५] मन्त्रे मनुष्यना[४६] हृदय भेदीइ ए शु आश्चर्य ? तु जेहवु[४७] काल हुइ[४८] तेहु[४९] करवु अथवा युद्धथी अनेरु शु छइ[५०] बोल्यु छिइ,[५१]

गुरोरप्यवलिप्तस्य कार्याकार्यमजानत ।
उत्पथप्रतिपन्नस्य दण्डो भवति शासन ॥ ३४० ॥

गर्वथी गुरु पण कार्य [अकार्य][२] न जाणइ[३] तोहुइ[४] तेन्हइ[५] शिक्षा ने[६] दंड करवो

यान्यज्ञसघे तपसा च लोकान्
स्वर्गैषिणो दानचयैश्च यान्ति ।
क्षणेन[७] तान् एव हि यान्ति शूरा
प्राणाश्च युद्धेषु परित्यजन्त ॥ ३४१ ॥

ये[८४] लोक दाने,[८५] यज्ञसमूहें, तपें पामीये ते लोक शूरा युद्धनइ विषइ प्राण छाडइतें[८७] पामे

प्राणाश्च कीर्तिश्च परिच्छदश्च
सर्वेऽपि युद्धे परिरक्षणीया[८८] ।
युद्धे विशिष्ट मरण नराणा
द्विपद्धशो जीवति सो मृतोऽन्यो ॥ ३४२ ॥

प्राण, कीर्त्ति परिवार एतला[८९] युद्धनइ[९०] विषइ [57-A] [रा]षवा[९१] युद्धनइ[९२] विषइ[९३] मरण[९४] भलु पण वइरीनइ[९५] वसि[९६] जीवइ[९७] ते मुउ,[९८]

मृत प्राप्स्यति वा स्वर्गं शत्रून् जित्वापि वा सुखम् ।
उभावपि हि शूराणा मार्गावेता सुदुर्लभौ ॥ ३४३ ॥

मृत थु[९९] स्वर्ग पामइ[१००] अथवा शत्रुने[१०१] जीपइ[१०२] तो[१०३] सुख पामइ,[१०४] शूरनइ[१०५] ए बिहि[१०६] मार्ग दुर्लभ

मणिकनकविभूषणा युवत्यो
द्विपतुरगाश्च शुचीनि चामराणि ।
अविकलशशिकान्तमातपत्र
न भवति मातृसुखस्य युद्धभीरो ॥ ३४४ ॥

ये[१०७] मानो वेटु[१०८] युद्धथी बीहइ[१०९] ते हे[११०] मणि सुवर्णभूषित[१११] स्त्री, हाथी, घोरा,[११२] ऊजला चमर, चद्रनी कांति सरषु सितातपत्र छत्र एतला[११३] वाना[११४] न होई[११५]

एह्वु वचन साभली दमनक चीतवतु[११६] हौउ,[११७] एन्हा शींग तीषा छइ[११८] कदाचित् पिंगलकने सजीवक मारइ[११९] ते अयुक्त बोल्यु छइ,[१२०]

सदिग्धो विजयो युद्धे जायते महतामपि ।
उपायत्रितयादूर्ध्वं तस्माद् युध्येत पण्डित ॥ ३४५ ॥

महातनें युद्धाद विषइ[४] संदेह होइ,[५] ते भणी प्रथम त्रिण्य उपाय, साम दाम[६] भेद[७] करवा, पच्छइ[८] युद्ध करवु

ते भणी एहइ[९] युद्ध करतो वारु एह चीतवतां[१०] दमनक बोल्यु,[१] अहो ए युद्ध[२] अयुक्त, ये[३] भणी,

> शत्रोर्बलमविज्ञाय वैरमारभते हि यः ।
> स पराभवमाप्नोति समुद्रः टिट्टिभादिव ॥ २८६ ॥

ये[४] शत्रुनु बल जाण्या पाखइ[५] ये वैर करइ[६] ते पराभव ज[७] पामइ[८] जिम समुद्र टीटोडीथी[९] पराभव पाम्यु[१०]

संजीवक बोल्यु, ए[११] किम?[१] दमनक बोल्यु

[१५. टीटोडो अने समुद्र]

मच्छ मगर कच्छप सीप शंख ए घणा जीवे व्याप्यो ये[१] समुद्र तेहें[२] एकें[३] कांठइ[४] टीट्टहडी[५] स्त्रीभर्त्तार विहिं[६] रहें तें माहि उत्तानपाद नामें टीट्टहड[७] पति पतिव्रता नामें टीटुन्डी तीणी टीटुडीयें[८] गर्भ धर्यु, टीटुन्डाने कहती हौईई, अहो भर्त्तार मुन्हें[९] ईडा जणवानो समय छइ[१] ते माटइ[२] ठाम [5, B] करो[१३] जो जिहां[११] ईडा मुकु,[१४] केहु स्थान जो टीट्टहड[१५] बोल्यु[१६] अहीं[१७] ज आपणु[१८] जूनु[१९] बापना[२०] वारानु[२१] स्थानक,[२] ईहीं[३] ज[४] ईडा मुकि टीटोन्डो[५] बोली, ईहां[६] पूर्णिमनइ[७] दिनि[८] समुद्रनी वेलि आवशइ[९] जे वेलि हाथी सरखान ताणी जायें[१०] छइ[१] तीण[२] ए स्थान[३] कांई[४] नहीं[५] पाणि[६] समुद्र कदाचि माहरां बालक वेल[७] ताणी नाइ टीट्टहड[८] बोल्यु[९] अरे स्त्री[१०] ए समुद्र मुझें[११] उत्तानपादनें जाणइ[१२] छइ[१३] समुद्र मु साथ[१४] वैर करवान[१] समर्थ नहीं तें[२] सांभलुए नथी[३]

य. पराभवसतप्तः स्वस्थानं त्यजते नरः ।
तेन चेत्पुत्रिणी माता तद्वंध्या केन कथ्यते ॥ ३४७ ॥

ये[37] पुत्र परथी बीहतु[38] ठांम[39] छांडइ आपणुं जु तीणे[40] पुत्रें माता पुत्रवंत होइ तो वांझिणी[41] शि कहीये.

को गृह्णाति फणमणिं ज्वलन्तमतितेजसा भुजंगस्य ।
यो दृष्ट्यैव प्रहरति दुरासदं कोपयति कस्तम् ॥ ३४८ ॥

कुण पुरुष हाथें करी कोप्यो ये सर्प्प तेन्हो मणि ग्रहइ ?

ग्रीष्मातपतप्तोऽपि हि वृक्षादिनिराश्रयेऽपि कान्तारे ।
गात्रच्छाया कः किल मदान्धनागस्य सेवेत ॥ ३४९ ॥

ग्रीष्मकालि वृक्षनीं छाया पापे तावडनो [मारयो][42] पुरुष कुण मत्त हाथीनीं[43] छायइ[44] आश्रय करि.[45]

प्रालेयलेशमिश्रे मरुति प्राभातिके च वाति जडे ।
गुणदोषज्ञः पुरुषो जलेन कः शीतमपनयति ॥ ३५० ॥

प्रभातनु[46] टाढु जे वायु तेणइ करी अनइ हिम करी टाढो पुरुष कुण मूर्ष जलें करी टाढि फेटइ.

मत्तेभकुम्भविदलनकृतश्रमं सुप्तमन्तकप्रतिमम् ।
[47]यमलोकदर्शनेच्छुः सिंहं बोधयति को नर. ॥ ३५१ ॥

मत्त हस्तीनइ[48] विदारई[49] एह्वा[50] सिंह[51] सूतानइ[52] कुण[53] पुरुष यमना[54] घरि जावानइ[55] उठाडइ.[56]

को गत्वा यमसदनं स्वयमन्तकमादिशत्यजातभयः ।
प्राणानपहरमत्तो यदि शक्तिः काचिदस्ति तव ॥ ३५२ ॥

कुण पुरुष जिमना[57] स्थान[न]इ[58] पामीनइ[59] यमनइ[60] [इम][61]

पुण कहइ[९३] ये[९४] यम [तूर्ते][९५] शक्ति काई[९६] [58 A] होइ तो माह्या प्राणनें हारि

ज्वालाशतरद्वाम्बरमपगतधूम सदा महाभयदम् ।
मन्दमति क प्रविशति हुताशन स्वेच्छया मनुज ॥ ३५३ ॥

अनेक[९७] ज्वाल्युक भयानक[९८] जे वैश्वानर तेन्हे[९९] माहि[१००] इच्छाए[८०] कुण पुरुष पइसइ.[८१]

एह् टीटुडड्डु बोल्यु सामलीनइ टींटुडडी हास्य करी तेहु सामर्थ्य जाणती कहती हाई जे वारू योग्य बोल्यु,

कि भापितेन गुरुणा लोके हास्यो भविष्यसि खगेन्द्र ।
हदते तदिहाश्चर्य यच्छशको हस्तिलिण्डानि ॥ ३५४ ॥

अरे पक्षी घणु शु बोलीये[८२] ? हास्य पामेशि,[८३] शशु[८४] हाथीना लींडा हगेइ[८५] ते आश्चर्य मोटु

आपुणापानें[८६] बन्धन[८७] अबल किम न जाणीईये[८८] ? बोल्यु छई,

दु खमात्मपरस्यैत्रमिति योग्यो न वेत्ति वा ।
इह यस्यास्ति विज्ञान न स कृच्छ्रेषु सीदति ॥ ३५५ ॥

ए दु ख सुख[८९] अथवा अनेराने एह्नु जेहनइ[९०] ज्ञान हुइ[९१] तु[९२] [योन] सीदाइ नहीं

यनेन सीदतीत्येतन्मार्गेप पराक्रम ।
एव ज्ञात्वा चरेद्यस्तु सफलास्तस्य बुद्धय ॥ ३५६ ॥

इण[९३] करी सीदाइ[९४] पराकम एह्नु जाणी विचारइ[९५] तेन्ही[९६] कार्यसिद्धि[९७] सफल थाई ए साचु

मित्राणां हितकामाना न करोतीह यो वच ।
स कुर्म इव दुर्बुद्धि काष्ठाद्भ्रष्टो विनश्यति ॥ ३५७ ॥

हितनइ[११] वांछता जे[१] मित्र तेन्हु वचन जे न करइ[२] ते[३] पुरुष काछवानी[४] दुर्बुद्धिनी परिं लाकडाथी पड्यु नाशने पांम्युं[५] तिम नाश पांमइं.[६]

टीटूहडु[७] पूछइ[८] छइ,[९] ए किम? टीटूडी[१०] कहि[११] छइ.[१२]

[१६. बे हंस अने काचबो]

एक जलमाहि[१] कंबूग्रीव नांमि[२] काच्छबु[३] छइ.[४] तेन्हइं[५] संकट विकट नामेइ[६] मित्र घणु[७] स्नेह करइ.[८] ते बि मित्र दिन प्रति[९] सघलो देवना ऋषिनी कथा सरोवरनइ[१०] कांठइ वैठा[११] वैठा कहि[१२] छइ. सांझइ[१३] आप[58-B]णइ[१४] आपणइ[१५] स्थानि जाइं. पच्छइ तेन्हें ईणी परि रहतो[१६] केतला[१७] कालें अनावृष्टि[१८] ते सरोवर सूकुं. पच्छइ[१९] ते बिहि मित्र ते कंबुग्रीवणं[२०] कहतां[२१] होआ : अहो मित्र ए सरोवर सूकइ[२२] छइ.[२३] तुं शुं[२४] कुरेशि.[२५] अम्हने[२६] घणुं[२७] दुख छइ.[२८] ते सांभली[२९] कंबूग्रीव बोल्यु,[३०] अहो अम्हने[३१] जल पाषइ[३२] जीवितव्य नथी,[३३] ते उपाय चींतवो. बोल्युं छइ,[३४]

> मित्रार्थे बान्धवार्थे च बुद्धिमान् यतते सदा ।
> ताभ्यां न कुरुते धैर्यं कदाचिद्गतिमाप्नुयात् ॥ ३५८ ॥

मित्रनइ[३५] अर्थि, बांधवनइ[३६] अर्थि बुद्धिमंत सदा यत्न करइ[३७] तीणें करी धैर्य [न][३८] करइ[३९] पण गति करइ,[४०] उपाय करइ.[४१]

ते भणी मुंन्हें[४२] दोरडुं लाकडुं आणि विहो[४३] पासे[४४] चांचे सांही[४५] हुं विचि[४६] लाकडुं[४७] दोते[४८] साहेशि.[४९] ईणी[५०] परि[५१] मूलइ[५२] तूम्हे[५३] मोटु सरोवर भरयउ[५४] हुइ[५५] [तिहां[५६] लेई][५७] जाउं.[५८] ते[५९] बिहि मित्र बोल्या, अहो मित्र, अम्हे इम करीशुं; पण [तें] दाते करी लाकडुं न

मूंरखु,[१९] मौन करवुं, नही तु[१] पडेसि. पच्छड[११] तीणइ[१२] मित्रि[१] काष्ठ आणी निहु[११] पासे[११] निहुइ[११] चाचे धरी निचि काच्छबानइ[१८] लाकडुं दाते धरावी उड्या. पच्छड[११] जाता[११] कम्बुग्रीवे हेठउ[११] एक नगर[११] दीठउं. ते नगरना लोक तेन्हड[११] लेई जाता देषी[११] कहता हौआ, अहो आश्चर्य! ये पषी निडि एस्येडु[११] शु लेट जाइ छि[०] ते जूउ.[११] ते लोक्नु[११] कोलाहल साभली काच्छब[११] बोल्युं,[११] अहो ए कोलाहल स्युं[११]? एहू बोल्ट[११] तेनन्इ[११] मुइ[११] पड्यु.[११] पच्छइ ते काच्छब[१] लोके कटका करी लीधु.[११]

ते भणी कहु छू 'सुहृदा हितकामाना' ए कथा. वली टीट्टहडी[११] बोली,

> अनागतविधाता च प्रत्युत्पन्नमतिश्च य ।
> द्वावेतौ सुखमेधेते यद्भविष्यो विनश्यति ॥ ३५९ ॥

[आगम[१] चीतवी करे अनि[१] यथायोग्य मति सद्य उपजि[११] ति[११] वि सुख पामें पण भविष्यनि[१] पडपे ते विनाश पामे].

टीट्टहडु[११] बोल्यु, ए किम कथा[११]? टिट्टिभि[११] कहि[११] छइ,[११]

[१७. अनागतविधाता, प्रत्युत्पन्नमति अने यद्भविष्य]

को एक मोटा द्रहमाहि[१] मोटा मच्छ[१] त्रिणि[१] रहे.[१] एक नाम अनागतविधाता, बीजु[१] प्रत्युत्पन्नमति, त्रीजु[१] [59-A] यद्भविष्य. तिहा[१] ज अनागतविधाता तीणें उदकनइ[१] तीरि रहिता कदाचि[१] नावडानु वचन साभल्यु एहु[११] ए[११] द्रह घणा[११] मत्स्य[११]–भर्यु[११] छइ,[११] विहाणइ[११] मच्छबधन[११] करस्यु[११] ते वचन[११] अनागतविधाता साभली[११] चीतवतो[११] होउ, ए नावडा आज[११] विहाणे[१] साहासि,[१] किम करीशि[११]? ते भणी[११] ए मित्र[११] प्रत्युत्पन्नि[११] अनइ[११] यद्भविष्य[११] ए निहिने[११]

लेईनइ[32] अनेरइ[33] ठामि[34] लेइं[35] जाउं. पच्छइ[36] ते बोलावी पूछतु[37] हौउ.[38] तिहा प्रत्युत्पन्नमति बोल्युं,[39] घणा दिननो सेव्यु[40] द्रह[41] एकइं[42] वारें[43] छाडवा योग्य नही. जु[44] नावडा मारवा आवशें[45] तो[46] कोइ[47] बुद्धि करीनइं[48] आपणपानें रक्षेशे.[49] यद्भविष्य पच्छइ बोल्युं, मरणहार घणा[50] अनेरा द्रह छइ[51] किहारि तिहा जाता घटइ;[52] आही[53] आवे के नावे ते भणी[54] ए ठाम[55] छाडवा योग्य नही. जन्मनु[56] द्रह न छाडीयि.[57] बोल्यु छट,[58]

सर्पाणा च खगाना च सर्वेषा दुष्टचेतसाम् ।
अभिप्राया न सिध्यन्ति तेनेदं वर्तते जगत् ॥ ३६० ॥

सर्प पक्षी, दुष्ट एतलाना अभिप्राय सिद्धि[59] न जाट.[60] ते भणी[61] ससार प्रवर्त्तइ[62] छइ.[63]

[64]अनागतविधाता ए वचन साभली अनेरइ[65] द्रहि[66] गयुं.[67] ते[68] विहि रह्या. पच्छइ एक दिवसि ते मच्छघाती सघला सगानइ[69] तेडी आव्युं, जालि[70] करी सह्या.[71] प[च्छ]इ[72] प्र यु पन्न नामे जे मच्छ[73] ते जालनइ[74] छेहडइ[75] मुंउ सरपु[76] थै रह्यु,[77] आपणपु निश्चल रह्यु. नावडे ते आफणी[78] [मुउ[79] जाणी[80]] काढइ[81] नाख्युं.[82] पच्छइ[83] ते उडी[84] मच्छ[85] जलमाहि पड्यो पच्छइ[86] यद्भविष्य ये मच्छ[87] ते जलमाहि कोट आवी तीणइ[88] तडफडतो देषी पेले लाकडे कू[टी] मार्युं[89] ते मूंउ.[90] ते भणी[91] कहु छउ ' अनागतविधाता च ' ए कथा.

टीट्टहडो[92] बोल्यो, अहो तु[93] मुन्हि[94] यद्भविष्य सरपु[95] मानइ[96] छइं[97] ?

वाजिवारणलोहाना काष्ठपाषाणवाससाम् ।
नारीपुरुषतोयाना दृश्यते महदन्तरम् ॥ ३६१ ॥

घोडा हाथी [59-B] लोह लाकड पाषाणवस्तु नारी पुरष उदक

एहनें[९८] माहोमाहि घणो मोट्ठु अतर छइ.

तु भय म करेसि. मुं छना कोइ तूहनइ[९९] पराभन करवा समर्थ नही. पच्छइ तिहां टीटुहडीये ईडा मूक्या.[१००] पच्छइ[१] समुद्र पूर्वे टीट्टडीनुं वाक[२] माभल्यु स्मरीनइ समुद्र चींतवतो होउ, अहो ए वच[न] साधु,

स्वचित्तकल्पितो गर्वे कस्य नाम न विद्यते ।
उत्क्षिप्य टिट्टिभ पादौ शेते भङ्गभयाद् दिव· ॥ ३६२ ॥

आपणइ[३] चित्ति कूण एक गर्व न करइ[४] जिम टीट्टहड्ड[५] आभनें[६] पडतु[७] जाणीनइ[८] थोभ देवानें उचा पग करी सूइ छइ.[९]

ते भणी[१०] हुं कौतुक जोउं. ईंडा[११] हरया पूठि टीट्टड्ड सु करसि ते जोउ. एहूं[१२] समद[१३] चीतवीनइ[१४] जिवारि[१५] टीटुड्ड[१६] टीट्टडी[१७] चणसा[१८] फहही[१९] उडी[२०] गया[२१] तेतलइ[२२] कौतकि[२३] समुद्र तेह्या[२४] ईंडा[२५] हरतो होउ, वेलि करी हरया. पछट आवी टीट्टहडी जोइ तु ईंडा न देपइ,[२६] स्थानक शून्य देपइ.[२७] पच्छई[२८] भर्तारने[२९] कहती[३०] होइ,[३१] [आ जो] माहारा[३२] इडा[३३] [समुद्रे][३४] हरया, माहरु[३५] अभाग्य. सिं[३६] तुहनइ[३७] घणी वार कह्यउ जे आपण इहार्थी[३८] जइई[३९] पण[४०] तु[४१] मद्रविप्य[४२] पहि दुर्बुद्धि जे[४३] न ग्यु आहीं[४४] हुं हवे ईणे दुषि वैश्वानरमाहि पच्योसि.[४५] टीटुड्ड[४६] बोल्यु,[४७] अहो स्त्री माहरु[४८] सामर्थ जो, इ[४९] वृथा गाजइ[५०] छइ.[५१] समुद्र मुन्हेइ[५२] शु अशक्त मानट[५३] छइ !

प्रशमश्च क्षमा चेव आर्जवं प्रियवादिता ।
असामर्थ्ये भवन्त्येते निर्गुणस्य सता गुणा ॥ ३६३ ॥

शांति क्षमा रिजुपणुं प्रियवचन एतला गुणवंतना ये[५४] गुण तेहनें निगुण[५५] पुरुष असमर्थना कारण कहें.

आत्मप्रशंसिनं क्रूरं धृष्टं विप्रियवाचकं ।
सततोद्यतदण्डं च लोकः सत्कुरुते कथं ॥ ३६४ ॥

आपणपानइ[56] जे[57] वषाणइ,[58] क्रौर[59] धृष्ट पाडुउ[60] बोलइ,[61] देहाडी[62] मारतो[63] ही[60-A]डइ[64] एतला[65] पुरुषइ[66] लोक रूडुं न करे.[67]

क्षमया च समायुक्तं मामयं वरुणालयः ।
असमर्थं विजानाति न क्षमश्चेदृशो जनः ॥ ३६५ ॥

क्षमायुक्त मुहनइ[68] ए समुद्र असमर्थ जाणइ छइ; एह्वु पुरुष समर्थ न हुइ इम जाणइ छइ.

एह्वु बोलीनइ[69] तीणइ सघला पक्षीनु[70] समवाय करी बग सारस हंस शूडा मयूर[71] एतलां आगलि कह्युं जे[72] माहरु[73] दुःख फेडु.[74] पच्छइ[75] ते सघला पक्षी पापि[76] करी समुद्रनें[77] मारवा लागा.[78] पच्छइ[79] एकु[80] पच्छी[81] बोल्युं,[82] इम नही पण समुद्रने धूलइ[83] पांहाणिइं[84] करी पूरु.[85] पच्छइ[86] सघला पक्षी चाचें करी, धूलि[87] कांकरे करी समुद्रनें[88] पूरवा लागा. पच्छइ[89] एक पक्षी बोल्यो, आपण समुद्रसु[90] वेर करवा समर्थ नही. अनेरइ[91] कह्युं, तु आपण शुं कीजइ[92] ? ते बोल्यु, एक हंस गरढ[93] वड रहि[94] छइ[95] ते बुद्धि आपणनइ[96] देशि. बोलु छइ,

श्रव्यं वाक्यं हि वृद्धाना ते वृद्धा ये बहुश्रुताः ।
हंसयूथं वने बद्धं वृद्धबुद्धया विमोचितम् ॥ ३६६ ॥

जे[97] वृद्ध बहुश्रुत हुइ[98] तेहनु[99] हितवचन[100] कीजइ.[1] पूर्वि हंसनु यूथ वृद्धनी बुद्धि करी बंधनथी मुंकाणुं.

पक्षी पूछतु[2] हुउ,[3] ए कथा किम ? [ते पक्षी कहतौ[4] हौउः[5]

[१८. वृद्ध हंस अने वड उपरनी वेल]

एक[1] वनमाहिं[2]] मोटी आपनो[3] वड, तिहां[4] हंसनु टोलुं[5] रहइ.[6] ते वट[7] [त]ल्इ[8] एक वेलि[9] उगी. पच्छइ ते[10] माहि गरढो हंस हूतो तीणें कहुं, अहो हंसो ए वेलि[11] पाडुई.[12] जा लगइ[13] नान्ही छइ ता लगइ[14] एह्नी[15] ऊपाडी नाषो. रषे[16] ईणी वेली को चडीनइ आपणने मारइ. पच्छइ[17] तीणे तेन्हुं वचन न मान्यु, वेली न छेदी. पछइ ते वेलि वृक्ष्य[18] सघलइ[19] चढी पछइ[20] [ए]क वार आहेडी तेणी[21] वेलि वड[22] उपरि[23] चडीनइ[24] हृसनइ[25] मालइ पास माडीनइ[26] घरि ग्यु.[27] पछइ ते हंस साझइ[28] ते[29] वड[30] आवी नट्टा[31] [60 B] तेतलइ बंधाणा पासे. पच्छइ[32] गरढो हस बोल्यो, तह्मे[33] माहरु[34] वचन न मान्यिउ[35] तेणइ ए कष्टमाहिं[36] पड्या,[37] हवें मुआ.[38] आ पछइ ते बोल्यु, हवइ[39] शु करवु घटइ[40] ? पच्छइ वृद्ध हंस[41] बोल्युं,[42] जु[43] माहरु[44] वचने करता हु तो जि वारि[45] आहेडी आवइ[46] मूआ सरषा हल्इयु[47] मा[48] पच्छइ ते जाणशइ[49] ए[50] सघला[51] मुआ. पछइ[52] वृक्ष उपरि चढी[53] तह्मनइ[54] हेठा नाषसिइ[55] मुइ[56] तिवारइ[57] सघला नाषीनइ[58] जेतलइ[59] उतरइ[60] तेतलइ[61] साथि[62] सघला ऊडी जाय्शो. ए[63] मंत्र कीधा पूठि[64] प्रभाति आहेडी आन्यु[65] जोइ तु[66] हस[67] मघला[68] मृतप्राय था देषइ.[69] पछइ[70] तेणइ[71] सघला[72] हंस पागथी छोड्या[73] भुंइ[74] नाष्या. पच्छइ[75] तेह[76] आहेडी उतरइ[77] तेतल्इ[78] गरढा[79] हंसनइ[80] वचन[81] थकें सघला साथि[82] ऊडी गया.[83]

ते भणी हू कहु छु 'अन्य वाक्य रि वृद्धाना' ए कथा.

ते कथा कहा[84] पूठि[85] सघल[86] ते पर्व्या[87] हंस वृद्ध कहिं[88] ग्या. जेनइ[89] तेरा[90] कहु जे समुद्रे टीटोटीना ईडा हरया ते दुष. पच्छइ[91] ते हंस बोल्यु,[92] तम्ह[93] सघलानो राजा गरुड,[1] ते तरुइ[2] दुस्व

फेडसिइं.[९९] तम्हे[९८] आक्रंद सघला करु. ते गरुडनइ[९९] पच्छइ उद्वेग हुसि.[१००] एहु वचन साभली ते पक्षी गरुड कन्हइ[१] ग्या. एह्वे[२] समइ[३] गरुड[४] नारायणे दैत्य मारवा[५] गरुडनैं बुलाव्यय[६] छइ.[७] तीणइ समइ ते सघले[८] पक्षीये गरुड आगलि ते[९] दुख[१०] कह्युं, अहो स्वामिन्[११] गरुड, तु अम्हारो स्वामि छता[१२] अम्हे चाचे करी पेट भरवुं. ते[१३] माटइ दुर्बल जाणीनइ क्षुमुद्रि[१४] इडा लीधा. साभलीइ[१५] छइ,[१६]

> प्रच्छन्नं किल भोक्तव्यं दरिद्रेण विशेषत ।
> पश्य भोजनदौर्बल्याद् धुड सिंहेन घातित ॥ ३६७ ॥

दरिद्रि[१७] विशेष[१८] छानुं जमवुं, जेथी भोजनना दुर्बल[61-A]पणाथी सिंहे[१९] मीढु[२०] मार्‍यु.[२१]

गरुड पूच्छइ[२२] छइ,[२३] ए कथा किम ? गरुड[२४] हस कहइ[२५] छइ,

[१९. सिंह अने घेटुं]

कोइक[१] स्थानकि[२] आपणा टोलामाहिथु[३] भूलु[४] मीढु,[५] मातु,[६] मोटा शींग, मोटा डील, नानी माला, एहु[७] वनमाहि[८] हींडतो एक[९] सिंहे[१०] दीठउ.[११] सिंह तेन्हे[१२] देषी[१३] भय पाम्यु[१४] चीतवतो[१५] हौउ, अहो ए जीव मुझी बलवंत हशइ,[१६] रखे मुन्हे[१७] मारइं,[१८] एहुं विमाशीनइ[१९] मुडइं[२०] मुडि[२१] वेगलुं[२२] गयु[२३] पच्छइ[२४] एक दिन[२५] [वन]माहि[२६] देषइ[२७] तो मीढउ पड पातु[२८] दीठउ.[२९] पच्छइ[३०] सिंह चींतव्युं,[३१] ए तु[३२] तृण पाए छइ[३३] तो[३४] पड पाधा शरपु बल हसि.[३५] मइ[३६] फोक एह थकी भय कीधु.[३७] एहवु[३८] चीतवीनइ ते मीढु उच्छलीनइ मार्‍युं सिंहि.

ते भणी हू[३९] कहु[४०] छू[४१] 'प्रच्छन्नं किल भोक्तव्यं' ए कथा.
पछइ गरुड ते पक्षीनी[४२] व्यथा साभली घणुं दुष पामतो हौउ[४३]

नारायणनि[48] कहतो हौउ, स्वामिन् तु स्वामि[49] छता माह्री जातिनें समुद्र दुख दे छइ.[50] बोल्युं छइ,

> मामैप पतितो वाद: केवलं तु रजस्तव ।
> आश्रयस्य हि दौर्बल्यादाश्रिमिः परिभूयते ॥ ३६८ ॥

मुन्हे[51] वाद पड्यु[52] ते ताहरु[53] रजोगुण जे भणी[54] सेवकना दुर्बलपणाथी स्वामि–आश्रययुथु[55] बल करइ.[56]

नारायण गरुडनु वचन साभली समुद्र[57] तेडीनइं विष्णु कहतु[58] हौआ, ए[59] टीट्टहडीना[60] बालक आपि नही तो[61] अग्नेयास्त्र[62] बाण मूकीनइ सघलु तुहनइ[63] शोपेसि.[64] एहवु विष्णुनुं वचन समुद्र साभली चीतवतु[65] हुउ,[66] अहो टीट्टडीना[67] इडा लीधा माटइ माहरु[68] नाश उपनु.[69] एहवु[70] व्यमासीनइ[71] नारायणिने[72] नमस्कार करीनइ[73] टीट्टहडीना[74] इडा[75] आप्या.

ते भणी हु कहु[76] छउ[77] 'शत्रोर्बलमविज्ञाय' ए कथा.

दमनकि[78] एह्व कथा पूठिइं[79] संजीवक पूछतु[80] होउ, अहो मित्र [61-B] ए सिंहने युद्ध करवाना प्रकार क्या[81] छे ते कहि.[82] ते दमनक बोल्यु,[83] सदा ए सिं शला उपरि स्वस्थ बैसि.[84] आज जो ए पुंछ वाली, च्यार[85] पग[86] तकावी, उचा कान करी वेगलुथो[87] तूर्हें[88] जोइ तिवारें ते जाणवुं[89] जे मु उपरि कूड छइ.[90] एहुं कही दमनक करटक कन्हइ[91] ग्यु[92] करटकि[93] पूछु,[94] ते शु कीधुं ? दमनक बोल्यु,[95] [ते में परस्पर[96] भेद कीधो करटक बोल्यु,] शु सत्य ? दमनक बोल्युं, फले[97] करी तु जाणेशि. करटक बोल्यु, गुण ईहा आश्चर्य, बोल्युं छइ,

> भिनत्ति सम्यक्प्रहितो भेद· स्थिरमतीनपि ।
> भूधरान् संहितशिलान् महापूर इवाम्भसाम् ॥ ३६९ ॥

भेदनइ[९४] रूडी परि[९५] जाणइ[९६] ते थिरमतिनइ[९७] पण भेदइ[९८] जिम महा[९९] पुरु[१००] पर्वतनी शलाने[१] भेदइ.[२]

दमनक बोल्युं,[३] भेदउपजीवीनइ[४] पुरुषि[५] आपणु[६] हित करवुं. बोल्यु छइ,

योऽधीत्य शास्त्रमखिलं शास्त्रार्थं तत्त्वतश्च विज्ञाय ।
आत्महितं न हि कुरुते श्रमावहैस्तस्य किं शास्त्रैः ॥ ३७० ॥

ये[७] शास्त्रनुं अध्ययन करी तत्त्व जाणइ[८] जे आपणपानइ हित [न[९]] करइ[१०] तेहनइ[११] शास्त्रनु[१२] केवल श्रम जाणवु.[१३]

करकट बोल्युं,[१४] विचारी जोईयें[१५] तो ए आपणपानु[१६] हित नही.

कृमयो भस्म विष्ठा वा निष्ठा यस्येयमीदृशी ।
स काय परपीडाभि पोष्यते यत्स को नय ॥ ३७१ ॥

ते किमि[१७] भस्म विष्टा भोगवइ[१८] तेन्हु[१९] शरीर पीयारी[२०] पींडाइ करी[२१] पोशीये ए कुण न्याय ?

दमनक बोल्यु, तु प्रधानपणानु मन्त्र न जाणइ,[२२] न्यायमार्ग वाकु[२३] छइ.[२४] बोल्यु छइ,

निस्त्रिंश हृदयं कृत्वा वाणी चेक्षुरसोपमाम् ।
वितर्कोऽत्र न कर्तव्यो हन्यात्पूर्वापकारिणम् ॥ ३७२ ॥

[हृदय[२५] पाटा[२६] सरपु] करइ,[२७] वाणी रस सरषी करइं,[२८] विचारया पापइ[२९] शत्रुनइ[३०] हणवु.

वली ए सजीवक मारया पन्छी ए राजा अम्हारो भोग्य हशि.[३१] बोल्यु [62-A] छइ,

परस्य पीडनं कुर्वन् स्वार्थसिद्धिं च पण्डित ।
गूढबुद्धिर्न लक्ष्येत वने चतुरको यथा ॥ ३७३ ॥

परनें पीडा करीनइ[३२] आपणो अर्थ सिद्धि[३३] करवो, गूढबुद्धि थको[३४] न जणाववु जिम वनमाहि[३५] चतुरक

करटक बोल्यु[३६] ए किम ? दमनक बोल्यु

[२०. चरु अने सिंहने छेतरनारो शियाळ]

एक वनमाहि[१] वरयडो शीयाल छइ, एक नाम क्रव्यमुग, बीजु चतुरक, त्रीजु[२] शत्रुकर्ण चुथु ईणे प्रधाने युक्त[३] वज्रदत नामि[४] मिग[५] रहइ[६] ते[७] कदाचि हाथीशु युद्ध[८] करीनइ[९] तेन्टइ शरीरि हाथीना दातना क्षत थ्या पच्छइ एकाति पडि रह्यो पच्छइ सात दिन उपवास[१०] क्षुधाइ दूबलो ते प्रधानने कहतो[११] हउ,[१२] काइ[१३] वनमाहि आहाराथ जीव जोउ ये भणी[१४] हु एह्वोद काई[१५] तम्हनें[१६] तृप्ति उपजावु[१७] पच्छइ[१८] ते सघला[१९] राजानी आज्ञा मागी[२] अरण्यमाहि[२१] भ्रमता काँई जीव न पाम्यु[२] तिवारें चतुरक चीन्तवो[२३] होउ, जु[२४] ए शत्रुकर्ण मारीये तो सर्वने केतलाएक दिन तृप्ति होइ अनइ[२५] स्वामि एन्हि[२६] मित्र मारइ[२७] मारवा नही छइ[२८] अथवा बुद्धि तिम करु जिम स्वामी एन्हें मारइ[२९] बोल्यु छइ,

अवध्यमथवागम्यमकृत्य नास्ति किंचन ।
लोके बुद्धिमतामत्र तस्मात्ता योजयाम्यहम् ॥ ३७४ ॥

लोकमाहि[३०] बुद्धिमतनें[३१] अवध्य अथवा अगम्य काई अकार्य[३२] नथी सर्वें[३३] बुद्धि[३४] साध्य ते माटइ[३५] हु बुद्धि योजेसि

एहु चीतवीनई[३६] शत्रुकर्णने एहु कहतो होउ, अहो शत्रुकर्ण स्वामि[३७] पथ्य पावइ[३८] क्षुधाइ पीडाये[३९] छइ,[४०] स्वामि विना अम्हनें[४१] मृत्यु[४२] छइ[४३] ते भणी अम्हारइ[४४] अर्थि, स्वामीनइ[४५] अर्थि काई चींतवीये[४६] वली स्वामीनें हित करी[४७] पुण्य होइ चतुरक बोल्यु,[४८] अहो

शंकुकर्ण ताहरुं[49] शरीर विमणु लेजे पच्छइ;[50] पहिलुं मारवा दइ[51] पच्छइ[52] ताहरुं[53] विमणुं[54] शरीर थाइ. स्वामीनुं[55] काम[56] होइ एहुं सांभ[62-B]ली शंकुकर्ण बोल्यु,[57] जो इम छइ[58] तो[59] माहु शरीर आप्पु[60] स्वामिनइ भक्ष करवा. स्वामीनें[61] कहो इम करइ पण विमणुं आपवाने सापि पढु धर्मराज करइवो.[62] एहुं निश्चय करी ते सघला सिंह कन्हइ[63] ग्या. पच्छइ चतुरक बोल्यु, स्वामिन्[64] काईं जीव न पाम्युं[65] अनइ सूर्य आथमवा[66] वीला[67] थै. एहुं सांभली सिंह घणु[68] दुष पाम्यु.[69] वली चतुरक बोल्यु, स्वामिन् शंकुकर्ण ए इम कहइ[70] छइ,[71] जु[72] धर्मराज[73] पढु यो[74] तो[75] विमणु माहूं शरीर द्यु तु हुं माहु शरीर पारणु करवा आपुं. सिंह बोल्यु, अहो रूडु कहुं, इम करु. पच्छइ[76] तीणें शंकुकर्णे अंगी[कार][77] कीधा पूठि[78] सिंहि थापटिं मार्यु.[79] शीयाल वरथडे थै तेहनी[80] कूप फाडीनइ[81] शंकुकर्ण मारयउ.[82] पच्छइ चतुरक सीहनु[83] डील रुधिरे[84] परडु देपीनइ[85] बोल्युं,[86] स्वामिन्[87] स्वामिन् स्नान करवा जाउ. हुं क्रव्यमुख विहि[88] रापवा रहुं छुं. सिह[89] ग्या पूठि[90] चतुरक चींतवतु[91] हूउं,[92] मि[93] किम ए एकले पाईये ते उपाय करु, एहुं चीतवीनइ क्रव्यमुखने कहतौ[94] हौउ, जेतले[95] सिह स्नान करी आवइ एतलइ[96] मास तु भक्ष करइ. क्रव्यमुख बोल्यु,[97] काइंनइ[98] सीहनइ[99] शु[100] उतर[1] थउं[2] ‘ शीयाल[3] बोल्युं,[4] तुन्हि[5] ईणइ[6] विचारि[7] शुं काज ? हू[8] सिंहनइ[9] उत्तर देश.[10] तुं भक्ष्य करि. माहरा[11] मुप साहमु[12] जोजो.[13] पच्छइ क्रव्यमुखि[14] ए उंटना हैयानुं मांस भक्ष कीधउ.[15] एहवइ[16] समइ सीह आव्यु.[17] जोइ[18] तु हइआनुं मास न देषइ ग्यु. पछइ चतुरकनइ[19] कहितु[20] हउउं,[21] अहो एहनु[22] हइआनु मांस किहां ! एहु सिह बोलताथा[23] क्रव्यमुप कापतु[24] नासवानइ[25] पग हलावइंतु[26] सीआलना[27] मुह[28] सादमुं[29] जोतो हुउं.[30] पच्छइ चतुरक बोल्युं,[31] अहो सिंह ए तुं[32] उटना कर्मनु [63-A] फल जे[33] हैयानु[34]

मांस नथी. पच्छइ अन्यमुख वीहीतो नाठु.[३५] सिंह चीनवतु[३६] होउ, ए परथइं मोटा नग पहो[३७] जावु थुं.[३८] एहे समय लोकनुं[३९] साह[४०] वाटई[४१] जातु[४२] होउ.[४३] ते साथमाहि[४४] आगलि अहों[४५] मोटु[४६] उंट गलइ[४७] टोकरु टणणतु जाइ छइ.[४८] तेन्हो[४९] मोटु टोकरुनो शब्द सांभली सिंह चतुरकनें कहतो होउ अहों, नाशि वेगु नासी सकें तिम. शियालें[५०] बोल्युं,[५१] स्वामी तुं मुन्हे[५२] काइं वीहावे[५३] छइ[५४]! सिंह बोलु,[५५] तु[५६] तूं[५७] जोनइ[५८] ए कुण आवइ[५९] छइ.[६०] चतुरक जोटनइ[६१] बोल्युं,[६२] स्वामिन्[६३] आपण मारचा ज्यो ए धर्मराज तुं ऊपरि कोप्यो मोटु कटक लेइनइ मारवा; उंट मारचुं तेन्हा वि शरीर मागवानें आवइ छइ अनइ कहइ छइ जे हुं पहु कां कीधु अनइ अगालि ए उट कां मारचउं! एहवु जांणी धर्मराज आवइ कहइ छइ हुं शतगुणुं शरीर ए कन्हे लेशि. ए साभलीनइ[६४] सिंह बोल्यु,[६५] अहो हवे हुं[६६] शुं करुं[६७] ते कहइ.[६८] शीयाल बोल्यु, स्वामिन् तु दिगंत जा जां लगइ[६९] हू[७०] एहनु[७१] अभिप्राय जोउं. एहुं कह्यां पूठिं[७२] सिंह मुंउ[७३] उट[७४] मुकी नाठु.[७५] चतुरकें एकलइ[७६] घणा दिन ते उट पाधउ.[७७]

जे भणी[७८] हुं[७९] कहु[८०] छूं[८१] जे 'परस्य पीडा कुर्वाणो' ए कथा.

पछइ[८२] दमनक गया[८३] पूठि संजीवक चीतवतौ[८४] हुउं,[८५] शुं करुं' जाउं तो को एक क्रूर मारसिइ.[८६] स्वामि रूठा पछी ए वनमाहिथी जावा न शकीये.[८७] बोल्युं छइ,

कृतापराधं नष्टः सन्दूरस्थोऽस्मीति न स्वपेत् ।
दीर्घे बुद्धिमता बाहू कर्पतो हि प्रमादिनम् ॥ २७५ ॥

स्वामिनु[८८] अपराध करीनइं[८९] वेगलुं[९०] छूं[९१] एहुं जाणी न शूवूं;[९२] स्वामी बाहे मांहीनउ[९३] बुद्धि प्रमादिनइ[९४] ताणइं.[९५]

ईणी परि[९६] चिंति विमा[63-B] [सी[९७] संजीवक हलहल सिंह

कन्हेड[8] जातो[9] हौउ वेगलोथो[10] शकतो ते सिंहने कह्यु तेह्नो देपी विमासतो होअउ,[1] स्वामि निपम होइ बो ल्यु छड,

अन्तर्गूढभुजगम गृहमिव व्यालाकुल वा वन
ग्राहाकीर्णमिवाभिरामकमलच्छायामनाथ सर ।
नित्य दुष्टजनैरसत्यरचनै क्षुद्रनाथीकृत
दु खेनेह विगाह्यते सुचरितै राज्ञा मन सेवकै ॥ ३७६ ॥

जे[1] घरमाहि सर्प हो, ये[1] वनमाहि[1] सीह व्याघ्र जीव हुइ,[1] रूडा कमल उग्या हुट[1] अनट माहि[1] मगर एह्नु सरोवर हुइ,[1] नित्य जूठु बोल्इ एह्वे[1] सेवके,[1] अनर्थ कीधु एहु राजानु मन, एतला वाना मनुष्यने भय उपाइ एतल। कन्हे[11] न जवाइ

पछइ[1] डील सकोरतु नीचे माथे[13] चचल दृष्टि थकीतो एह्नो सजीवक पिंगलक क हे[14] आवतो हौउ सिंह[15] [तेन्ही][16] चेष्टा दमनके कही तेही[17] देषीनइ फाल देईनइ[18] सिंह सजीवक ऊपरि पड्यु.[19] सजीवक[20] सिहने नखे करी पृठि विदारी एह्नो शीगड करी सिहनु पेट फाडी मोटे कष्टे नाठो वली तेह बिहुनइ[1] वैर होउ मोटु युद्ध होउ[22] ते विहुः[1] रुधिर परह्या शरीर देषीनइ [करटक[24]] दमनकने[1] कहतु[26] हुउ[27] दुरात्माने[28] जे बिहिने विरोध ऊपनाव्यु[1] ते तइ[30] रूडू न कीधउ[1] जे भणी सर्व वन ए आकुल कीधउ[32] अरे मूर्ष तु न्याय न जाणइ[33] बोल्यु छड,

कार्याण्युत्तमदण्डसाहसफलान्यायाससाध्यानि ये
प्रीत्या सशमयन्ति नीतिनिपुणा साम्नैव ते मन्त्रिण ॥
नि साराण्यफलानि ये त्वविधिना वाञ्छन्ति दण्डोद्यमै
तेषा दुर्नयचेष्टितैर्नृपतेरारोप्यते श्रीस्तुलाम् ॥ ३७७ ॥

ये कार्य साहस करी आयाम करी साधीई[1] तेहनइ[1] जे न्याय

करी शमाडइ[११] ते प्रधान चतुर जाणीरा[१०] अनइ ये निष्कार्य निष्फले ये काम अन्याये[१८] करी करे[११] राजानुं, ते राजानी लक्ष्मी अन्यायनी उपार्जी जाणवी.

साम्नैवादौ प्रयोक्तव्यं कार्याकार्य [64-A] विचक्षणे ।
सामसिद्धा हि विषयो न प्रयान्ति पराभवम् ॥ ३७८ ॥

जे कार्य साधी जाणइ[१०] तीणइ[११] शाणपणइ[१२] काम करवुं[१३] ये[१४] कान स्याणपणे कीधा हुइ ते न फीटइ.

नोन्मयूखेन रत्नेन नातपेन न वह्निना ।
मार्गैव विलयं याति विद्वेषिप्रभव तम ॥ ३७९ ॥

वैरथी ऊपजइ[१५] जे अधकार ते रत्नी कातिना वडि,[१६] वैश्वानरे न फीटइ[१७] ते अधकार स्याणपणी[१८] विलय पामइ.[१९]

ते भणि तु प्रधानपणुं वाउ[२०] छइ[२१] अनइ[२२] साम[२३] नथी जाणतो[२४] नाह्नो मनोरथ वृथा ये दड उपाय करे[२५] छइ[२६] बोल्युं छइ,

सामादिर्दण्डपर्यन्तो नयो दृष्टश्चतुर्विध ।
तेषा दण्डस्तु पापीयान् तस्माद्दण्ड विवर्जयेत् ॥ ३८० ॥

न्याय चारि[१] प्रकार—साम दान भेद दड, ते माहि[१८] दड पापी ते भणी दड त्यजनु.[१९]

साम्नैव यत्र सिद्धि स्यात्तत्र दण्ड न योजयेत् ।
यदि शर्करया पित्त शाम्येत्तत् कि पटोलया ॥ ३८१ ॥

शातपणे जिहा[१०] कार्यसिद्धि हुइ[११] तिहा दड न करवु[१२] जिम[१३] जु पित्त शाकरें शमइ[१४] तो पटोल औषध काइ पाईए[१५]

ये सामदानभेदान्ते किल बुद्धेरपावृत द्वारम् ।
यस्तु चतुर्थोपायस्तमाहुरार्या पुरुषकारम् ॥ ३८२ ॥

जे[66] साम दाम भेद ते बुद्धिनु तु ऊघाड्ड वार जे[67] चउथ[उ][68] उपाय ते पुरुषनइ[69] घात.

बाङ् मूढमनसो यद्वत् तद्वन्मूकम्य मानसं ।
तथापेतनयः शूरो नयश्चापेतपौरुषः ॥ ३८३ ॥

मूर्खचित्त पुरुषनी जेह्वी वाणी तिम मूकनु[70] मन, तिम शूर न्याय पापइ[71] काइं नही अनइ न्याय सूर[72] पापइ नही.

द्विपाशीविषसिंहाग्निजलानिलविवस्वताम् ।
बलं बलवतां दृष्टमुपायाक्रान्तिनिष्फलम् ॥ ३८४ ॥

हाथी सर्प सिंह अग्नि जल वायु सूर्य अनइ बलवंत. एतलांनुं बल उपाय पापइ निष्फल.[73]

सुवृत्तबा[64-B]हवः शूराः प्रांशवः पृथुवक्षसः ।
चक्षुष्मंतोऽप्यचालाश्च किमित्यनुगता वयम् ॥ ३८५ ॥

रूडा हाथ, शूर मोटा, मोटुं हयु, देषता गरढा, एह्वां था जे[74] सेवकपणुं कीजइ[75] ते शु ?

जुहइ[76] तुं सकल शास्त्र भण्युं[77] छइं[78] प्रधान छइ[79] तुहि, आपणपाणा नाशनइ[80] अर्थि ज. अरे मूर्ख,

यां लब्ध्वेन्द्रियनिग्रहो न महता भावेन संजायते
या बुद्धेर्न विधेयतां प्रकुरुते धर्मे न या वर्तते ।
लोके केवलवाक्यमात्ररचना यां प्राप्य संजायते
या नैवोपशमाय नापि यशसे विद्वत्तया किं तया ॥ ३८६ ॥

ये विद्वांसपणें इंद्री[82] वशि[83] न होइ, ये बुद्धिनइ[84] रूडी न करइ,[85] जे धर्म न प्रवर्त्तावइ[86] यीणी[87] विद्याइ[88] केवल लोकमाहि[89] नाम[90] ज[91] होइ; ये[92] शमनें[93] नही,[94] ये[95] यशनें[96] नही,[97] तीणी[98] विद्याइ[99] शुं कीजइ[100] ?

शास्त्र निपइ[1] मंत्र पाठ[2] प्रकारनु[3] बोल्यु[4] छइ,[5] कार्य आरभवानो उपाय १, पुरुष द्रव्यनी सपद २, देशकालना[6] विभाग ३, कष्ट पड्यु फेडवानो उपाय ४, कार्यनी सिद्धि ५

हवडा स्वामीनइ[7] कष्ट[8] छइ तेन्हु[9] काई चाल्इ तो उपाय करि[10] प्रधाननी बुद्धिनी[11] रीक्षा ये[12] मेढनु सधान करइ[13] बोल्यु छइ,

मन्त्रिणा भिन्नसधाने भिषजा सान्निपातके ।
कर्मणि व्यज्यते प्रज्ञा स्वस्थे को वा न पण्डित ॥ २८७ ॥

प्रधाननी परीक्षा मेल करता,[14] वैद्यनी परीक्षा सनिपात पडी गर्ता, स्वस्थ छता कुण एह्नु[15] बुद्धिमत न थाइ[16] ?

अरे मूर्ख मेल करी[17] न जाणइ[18] ते प्रीति करवा असमर्थ तु[19] विरोध उपजावइ[20] छइ[1]

मदादिक्षालन शास्त्र मन्दाना कुरुते मदम् ।
चक्षु प्रबोधन तेज उलूकानामिवान्ध्यकृत् ॥ २८८ ॥

मद फेरवा भणी ये शास्त्र ते मूर्खने मद करें जिम ज तेज सर्वने अजूआलु करइ[2] ते घूअडनि[23] आधलु[24] करेइ

ज्ञान मददर्पहर माद्यति यस्तेन तस्य को वैद्य ।
अमृत यस्य विषायति तस्य चिकित्सा कथ [65 A] क्रियते
॥ २८९ ॥

जे[25] ज्ञान मद हरइ तीणीं ज जे मद पामइ तेन्हे कुण वैद्य छइ जिम अमृत नेन्हे विष थाइ तेहि चिकित्सा कीजइ

करटक ते स्वामीनें कष्ट देषी दुष पाम्यो बोलतो होउ, अहो स्वामीने मोढु कष्ट उपनु[6] अन्यायना उपदेशथी, बोल्यु छइ,

नराधिपा नीचजनानुवर्तिनो
बुधोपदिष्टेन पथा न यान्ति ये ।

विशन्ति ते दुर्गममार्गनिर्गमं
सपत्नसंबाधमनर्थपञ्जरम् ॥ ३९० ॥

जे[28] राजा नीचनी बुद्धि करइ,[29] जे पंडितनी बुद्धि न करइ[30] ते छूटीयैं[31] नही एह्वा वैरीना पंजरमाहि[32] पडें.

अहो सर्व राजा गुणवंत सेवकनीं सेवानो अंगीकार करइ[33] अनइ[34] तुं सरपा पिशुन छता राजा समीप[35] गुणवंत नही आवें. बोल्युं छइ.[36]

गुणवानप्यसन्मन्त्री नृपतिर्नाधिगम्यते ।
प्रसन्नस्वादुसलिलो दुष्टग्राहो यथा हृदः ॥ ३९१ ॥

गुणवंत[37] जे राजा तेन्हो प्रधान जो दुष्ट होइ तो राजा कन्हइ[38] सत्पुरुष नावइ[39] जिम रूडा उदकना द्रहमाहिनो[40] दुष्ट जीव होइ ते माहि को[41] न पैसइ.

अरे तु इम जाणे[42] छइ[43] जे हुं राजानें एकलु सेवुं ते[44] मूर्ख.

आकीर्णः शोभते राजा न विविक्तः कदाचन. ।
ये तं विविक्तमिच्छन्ति ते तस्य रिपवः स्मृताः ॥ ३९२ ॥

राजा सेवके परवरिउ[45] शोभइ,[46] [एकलो कदाचिं[47] पण न शोभइ[48]]; जे[49] राजानें एकला रहता वांच्छें ते राजाना शत्रु जाणवा.

परुषे हितमन्वेष्यं तच्च नास्ति विषं हि तत् ।
मधुरे शाठ्यमन्वेष्यं तच्च नास्त्यमृतं हि तत ॥ ३९३ ॥

कठिण पुरुषनें हित कीजइं[50] ते विष न हुइ[51] अनइ[52] शठनें द्रेष कीजइं[53] ते अमृत सरपु[54] न होइ ते[55] विष.

अहो जे तुं पीयारी अदेखाई करी दुखित थाइ छइं[56] ते अयुक्त. वली,

शाठ्येन मित्र कलुषेन धर्मं
परोपघातेन समृद्धिभावम् ।
सुखेन विद्या प[65 B]रुषेण नारीं
वाञ्छन्ति ये व्यक्तमपण्डितास्ते ॥ ३०४ ॥

जे पुरुष धूर्त्तपणइ मित्रनइ वाछे, मलिणपणें धर्म वाछें, परनें घात करी लक्ष्मी वाछइ, सुखे विद्यानें वाछइ, कठिणपणेइ स्त्रीनइ वाछेइ ते मूर्ख जाणवा जेणइ स्वामीनु मान लाधु होइ तेनिं विनय कीजइ बोल्यु छइ,

महान् प्रभुनो न जहाति वीरता
न कूलपाते कलुषो महोदधि ।
लघोर्विकारस्तनुनापि हेतुना
चरन्ति दर्भा शिथिलेऽपि मारुते ॥ ३०५ ॥

मोटु बोहाल्यु शरणु न छाडइ जिम समुद्रमाहि त्रूटी कराडि पडइ पण डोहालु न थाई, हीन थोडइ चले तिम दर्भ थोडे वायु करी डोले

अथवा स्वामिनो दोष जे तरह संघाते पहो मत्र करइ बोल्यु छइ,

चित्रचातुर्यभूर्मिर्यरायामिनरागुरैः ।
ये रमन्ते नृपास्तेषां रमन्ते रिपव श्रियम् ॥ ३०६ ॥

जे राजा हास्यवचन बोलना जो मेरक ते शु रमइ ते राजानी लक्ष्मीनइ शत्रु भोगवइ

स कथा कहे ते सत्य,

नात्र यत्परो दाक्षि पार्थिवोऽभिमुखीकृत ।
आत्मा संयोजितो नीतो दम्भद्वेन मन्त्रिणा ॥ ३०७ ॥

बलभद्र नामि[८९] जे प्रधान तीणइ[८८] नग्न श्रमणैक[८९] नामे जोसी दह्यु.[९०] राजा साम्हो कीधौ[९१] आपणनइ[९२] मोटपणुं कीधुं.

दमनक बोल्युं,[९३] ए कथा किम ? करटक कहतो हौउ,

[२१. राजा, मंत्री अने नग्न श्रमण]

कोशल देश मध्य[१] अयोध्या नामें[२] नगरी, तेहनइ विषइ सुरथ नामें राजा सर्व[३] राजानो[४] वंद्य हौउ. ते राजानें वननों रपवालो आवीनइ[५] कहतौ हौउ, स्वामिन् ए वनना स्वामी घणा [थाई][६] छइं,[७] तम्हारी शी आज्ञा होइ छइ. एहु ते[८] वनपालनुं[९] वचन सांभली राजा[१०] बलभद्र नामि[११] प्रधान बोलावीनइ[१२] ते दुष्टनि[१३] फेडवानें मोकल्तु[१४] हौउ. ते प्रधान ग्यां पूठिं[१५] नग्न श्रमणक ते नगरमा[66-A]हि ज्येष्ट मास वीतें पइठो.[१६] केतलेक[१७] दिवसे प्रश्न व्याकरण ज्योतिष सर्वे[१८] पृच्छा अनेक प्रकार[१९] करी[२०] नगरीनो लोक सर्व वशि कीधो. एक दिन राजा ते जोसी[२१] [साभली][२२] बोलावीनइ[२३] आसन आपीन[इ][२४] पूछ्युं,[२५] अहो तम्हे पीयारा[२६] अभिप्रायनें[२७] जाणो ए सत्य. पच्छइ ते बोल्युं, पूच्छु[२८] तम्हे, जाणशु; एहुं कह्या पूठिं सदा राजाने परिचय करइ[२९] आवइ.[३०] एक वार[३१] असूर करीनइ[३२] राजा कन्हेइ[३३] आव्यो जोशी राजाने[३४] कहतौ[३५] हौंउ,[३६] अहो[३७] राजन् एक प्रिय वार्त्ता निवेदुं.[३८] हुं आज मठमाहि ए शरीर मूकीनइ[३९] अनेरु दिव्य शरीर लेई स्वर्गनइ विषइ[४०] ग्यु. पच्छइ[४१] आव्यो तिहा ते देवताए[४२] कह्यु[४३] छइ[४४] जे अम्हारा[४५] वचनथी राजा सुरथनइ[४६] कुशल पूच्छइ.[४७] एहु साभली हर्ष्युं आश्चर्य पाम्युथुं[४८] राजा बोल्युं,[४९] अहो तुं[५०] स्वर्गि[५१] विषि[५२] जाइ छइं ? ते बोल्युं, स्वामिन् हुं सदा स्वर्गि जाउं. पच्छइ[५३] राजा तेन्हु वचन साचुं मानीनइं[५४] मूर्ष राजा सर्व राज्यनुं[५५] कार्य छांडीनइ[५६]

ते-शु[57] गोष्टि-तत्पर हौउ सदा. एहइ[58] प्रधान ते वनना कंटक वैरी पहू फेडइ[59] स्वच्छ करी आवी जोइ तो[60] राजाने जोसी संघाति एकांत; सेवक पहू करी बइठो दीठो. पच्छइ[61] ते प्रधान नमस्कार करी बोल्यो, राजन् जय छइं. पच्छइ[62] राजाइं[63] प्रधान[64] कुशल पूछ्यो.[65] राजा बोल्युं,[66] अहो ए आचार्य माह्रो तेन्हैं[67] तुं[68] जाणइं[69] छइं ? प्रधान बोल्यु,[71] ए सर्वमाहि[72] मुख्य ए किम न जाणीयइं;[73] अनइ ए आचार्य देवलोक स्वर्ग विषि आवइं जाइ छइं, ते शुं सत्य ! राजा बोल्यु, सर्व साचुं जे तें मामल्युं. पच्छइ[74] नग्न श्रमण बोल्युं,[75] आज ए प्रधानने[76] कौतुक छइ तो जोउ. एह बोली मठमाहि पिंडीनड[77] बार दे[66-B]ई आगल देई रहुं.[78] पच्छइ मुहूर्त्त मात्रेक[79] रहीनइ[80] बलभद्र बोल्युं,[81] राजन् ए कि वारें आवशइ[82] ? राजा[83] बोल्यु,[84] कांइ[85] उतावलु[86] थाइं छइं[87] ! ए शरीर मुंकी बीजु[88] दिव्य शरीर लेई[89] स्वर्ग[90] विषइ[91] जाशि[92] ए जोसी. प्रधान बोल्यु,[93] राजन् ए सत्य होइ तुं वैश्वानर काष्ट आणीनइ[94] ए मडी[95] बालीये. जिम ए शरीर बलइ[96] तो दिव्य शरीर ज रहइ अनइ तेणीइ[97] शरीरइ[98] देवता कन्हइ रहइ.

पूर्वकथा[99] साभलीये छइ.

[२२. सपँने परणनारी राजकन्या]

एक[1] राजानइ घरि देवशर्मा एहवे नामिं ब्राह्मण हौउ. तेन्हे छोरु[2] नहीं अनइ बीजाना बालक देषी गाढाइं[3] रोइं;[4] तेन्ही स्त्री रोईं. पच्छइ ब्राह्मण स्त्रीनें कहइतो[5] हौउ, कांइ दुक्ख म करशुं.[6] हुं पुत्रनइ अर्थि होमयाग करयोश.[7] एहवुं कही[8] पुत्रनइं[9] अर्थि याग कीधउ.[10] पच्छइ[11] दैवीवाणी ही[12] जे ताहरइ[13] ब्राह्मण उत्तम पुत्र हशि,[14] एही दिव्य वाणी

ब्राह्मण सांभलीनइ[15] हर्ष्युंधु[16] बोल्यु,[17] ए तथास्तु. पच्छइ ते ब्राह्मणनी स्त्रीनइ गर्भ रह्यो. पच्छइ प्रसवनइ[18] समइ ब्राह्मणीये सर्प जण्यो. पच्छइ मत्रे बंधु कुटुंब[19] कहता हौआ, ए सर्पने त्यजो. ब्राह्मणी[20] कुटुंबनुं वचन अनादरीनइ[21] ते सर्पनइं कोरइ[22] ठामि घाली दिहाडी दूध माषण[23] पखारी मोटो कीधो. केतलेक[24] दिवसे ब्राह्मणी लोकना पुत्रना विवाह घरि[25] घरि[26] देषीनइ[27] रातीथी[28] भर्त्तारनें कहती हौई, लोकना पुत्रना विवाह हुइ छइं, माहा पुत्रनो विवाह का न करु ? पच्छइ ते ब्राह्मण स्त्रीनीं प्रीति करी शंबल बाधीनइ[29] देशांतर[30] हीडतो दुक्षुह[31] नामइं नगरि[32] ग्युं.[33] तिहा परस्पर जाणता संबंधीनइं[34] घरि जै[35] तिहा तीणइ[36] शय्या भोजन स्नान करी[37] ते दिन रही बीजइं[38] दिन[39] प्रातःकालि[40] चालता तीणइ[41] कह्युं, तम्हे ईहा[42] किमर्थि[43] आव्यो छो[44] ? [67-A] किहा जास्यु[45] ? पच्छइ ते ब्राह्मण बोल्यु, पुत्रने[46] कन्यानइं अर्थि. पच्छइ ते ब्राह्मणनें घरनु[47] धणी कहतौ[48] हौउ, अहो माहे[49] सूरूप कन्या छइ,[50] तम्हे प्रभु छु,[51] तम्हारइ[52] पुत्रनइ[53] अर्थि ए कन्या ल्युं.[54] पच्छइ ते ब्राह्मण कन्या[55] परिवार[56] समेति लेई[57] आपणाइ[58] गामि आवतो होउ.[59] पच्छइ लोक ते कन्याना कुटुंबने कहता हौआ, तम्हे[60] ए सुंदर[61] कन्या सर्पनइ[62] का[63] द्यो छो ? ए ब्राह्मणनइ[64] पुत्र सर्प छइ,[65] बीजो पुत्र नथी. कन्या तम्हारी म देशो,[66] पाछी लेई[67] जाउ. जो ते[68] सर्पनइ[69] देशो तो यमनइ[70] घरि वेगी जासिइ.[71] पच्छइ[72] ते कन्या बोली, रहौ[73] हवें विडंबना जोउ,

सकृज्जल्पन्ति राजान सकृज्जल्पन्ति पण्डिता ।
सकृत्कन्याः प्रदीयन्ते त्रीण्येतानि सकृत्सकृत् ॥ ३९८ ॥

राजा एक ज बोल[74] बोलइं,[75] पंडित एक ज बोल बोलइ, एक[76] वार ज कन्या दीजइ, ए त्रण्य एक ज वार होइं.

कृतान्तविहित कर्म यद्भवेत् पूर्वनिर्मितम् ।
न शक्यमन्यथा कर्तुं पुष्पकस्य सुरैर्यथा ॥ २९९ ॥

जे कृतातें[77] पूर्वं निर्माण कीधुउ[78] हुइ[79] ते अन्यथा करवा न शकीइ[80] जिम पुष्पकनु कर्म देवताए न कीधु.

एह् कन्यानु वचन साभली मह पूच्छइ[तु][81] हौउ, ए कथा किम ? कन्या बोली,

[२३. इन्द्रनो सूडो]

एक इद्रनइ[1] पुष्पक नामे शूड,[2] ते सर्व व्यद्या[3] भणु[4] अति रूपवत,[5] ते कदाचित्[6] इद्रना हाथ उपरि चढ्यु[7] सुप पाम्युथो[8] अनेक सुभाषित भणतो थको इंद्रनी सेवा करवा[9] यम[10] आवतो देषी[11] नाठु[12] पच्छइ[13] सघले देवे[14] पूछ्यु,[15] शूडा[16] तु[17] यम देषी[18] का[19] नाठु[20] ? शूडो[21] बोल्यु[22] ए सर्व जीवनु[23] मारणहार देषी किम न नाशीइ[24] ? एह[25] साभली[26] सर्व देवता शूड्यानु[27] भय फेडवा यमइ[28] कह्यु[29] अम्हारा[30] [67 B] बोलथी तइ ए शूड [न] मारवु यम बोल्यु,[31] हु जाणु,[32] काल मोटउ[33] छइ[34] एह साभली देव[35] सघला काल कन्हइ[36] ग्या कालनइ[37] कह्यु, तु सूडाने म मारिशि[38] काल बोल्यु,[39] मृत्यु जाणइ, हू न जाणु मृत्युने कह्यु तु मृत्युना दर्शनथी ए सू मरइ, एह साभली सर्व देव आपणइ ठामि ग्या

ते भणी हु कहु छु 'कृतान्तविहित कर्म' ए कथा अनइ माहो पिता असत्यवादी थाइ जो मूंन्हें[40] न देतो एहो निश्चय कन्यानो जाणी[41] मावाप[42] ते कन्या सर्पन[43] दीधी,[44] सर्पि[45] परणी पच्छइ[46] ते भक्तिपूर्वक सर्पने दुग्धपानादिकइ करी सर्पनी घणी सेवा करवी आरंभी एक वार रातिं[47] सर्प पगारीमाहिथो[48] नीकलीनइ[49] स्त्रीनी शय्या उपरि

बैठो. ते स्त्री बोली, ए पुरुषने[५०] आकारे[५१] ए कुण छइ[५२] ? एहुं[५३] कही उठी बार ऊघाडी कांपती जेतलें जाइ नेतलें तीणें सर्पे कह्युं, हुं ताहरु भर्त्तार छुं; तुं म जावशि.[५४] एहुं[५५] कही स्त्रीनी प्रतीतिनइ ते स्त्री देषता सर्प शरीर लेई वली पेटारीमाहिथी मनुष्यनु शरीर लेइं नींकल्युं. पच्छइ ते स्त्री जोइनि देपइ तु मुकुट कुंडल वहिरपा ईणी आभूपणे भूपित देपी भर्त्तारने पौगे लागी पच्छइ[५६] ते संभोगनुं सुख भोगवता हौआ. ते सर्व साभली सर्पनो पिता सर्व पुत्रनु प्रकार[५७] देषतु[५८] हौउ. पच्छइ विमाशतो हौउ, ए वली पुत्र रपे सर्पना शरीरमाहि[५९] पैशइ.[६०] एहु चीतवी जेतलें पुत्र रात्रि[६१] सूतो छइ[६२] तेतलै पेटारीमाहिथी[६३] सर्पनुं पोलीउ काढी बालिउ.[६४] पच्छइ ते पुत्र[६५] पुरुपनइ[६६] शिरीरि[६७] रह्यु.[६८] पच्छइ[६९] पुत्रवहू [सासू]-ससरानइ[७०] माबापनइ[७१] बिहि[७२] पगे[७३] लागीनइ सुपि[७४] रहता हौआ. ते[७५] बाह्मण पुत्रनइं देपाडी हर्प्युं होउ.

तिम ए श्रमणकनु[७६] मठमाहिनु[७७] श[68-A]रीर दहीये तो दिव्य शरीर ज रहइ.[७८] पच्छइ दिव्य शरीरि[७९] ज आहा[८०] आवशि.[८१] इणी परिं प्रधान राजानें निदर्शन देपाडीनइं[८२] नग्न श्रमणनु डील[८३] समेति[८४] मढीने बालतौ[८५] होउ.

करटक कहतौ[८६] होउ, हुं ते भणी[८७] कहु छूं[८८] जे ' नग्न श्रमणको दग्ध ' ए कथा. अरे मूर्ख प्रधान एह्या होइं पण तुं मरपा नामधारक केवल[८९] न होइं. केवल आपणा[९०] स्वार्थी[९१] करी पेट भरे छि.[९२] सही ताहरे[९३] लक्षणे पितापि[९४] तुं[९५] सरपो होसि. बोल्युं छइ,

> योऽवश्यं पितुराचारः पुत्रस्तमनुवर्तते ।
> न हि केतकिवृक्षस्य भवत्यामलकीफलम् ॥ ४०० ॥

जेहो[९६] पिता आचार होइ पुत्र तेहो ज कर[इ] जिम केवडानेइ वृक्ष आमरा न लागइ.

ये स्वभावें गंभीर पंडित छे तेहनें जन्ममाहि त्रासो न पडइ जु आपणुं छिद्र चपलपणें न देषाडइं. ए सत्य,

यन्नादपि कः पश्येच्छिखिनामाहारनिर्गमस्थानं ।
यदि जलदध्वनिमुदितास्त एव मूढा न नृत्येयु. ॥ ४०१ ॥

कुण यत्नें करी मोरनो आहार फरवाना छिद्र देषतो जु मोर मेघ गाजंतों नाचवाने कला न करइता तौ !

ते भणी तुं मूर्षने उपदेश दीधइ शु होइ ! बोल्युं छइ,

नानाम्यं नाम्यते काष्ठं न शस्त्रं क्रमतेऽश्मनि ।
सूचीमुख्या इवाशिष्ये नोपदेशः सुखावहः ॥ ४०२ ॥

जे काष्ट नमवा योग्य न होइ ते न नमइ अनइं शस्त्र पाहाणि न वहइ तिम शूचीमुखीनु उपदेष हीन शिष्यनि दिधइ सुखनेइं न करतो होइ.

दमनक बोल्युं, ए कथा किम ? करटक बोल्युं,

[२४. सूचीमुख पक्षी अने वांदराओ]

को एक वनमाहि वानरनुं यूथ रहइ. ते हेमंतकालि अति टाढि करी कापवा लागा. संध्यासमय तेणें वानरइं अगीयो उडतो जातो दीठु. ते देषी वैश्वानर जाणी साहीनइ सूका वृक्षना पात्रडा उपरि मूकया; पाप[68-B]लि वीटी वइठा; हाथपग लाबा करी सेकवानीं परि पंझोल्ता होआ. तेहमाहि एक वानर गाढो शीत-पइयु माडं करी फूंकतो होइ. पच्छइ सूचीमुखी नामि पक्षिणी ते वृक्षथी उतरीनइ कहती हांई, अहो तम्हे तापुत्रु शुं ! ए अगीयो वैश्वानर न होइं पच्छइ वानर तेन्हुं वचन अनादरीनइ वली फूंकतो होइ.

वली[25] तीणी शूचीमुखीये कह्युं तोहइ वानर नापवा लागो; वली[26] कहती होई. पच्छइ[27] वानर एह्वो[28] पीज्यो जे[29] शूचीमुखीनें[30] साही-नइ[31] पाहाणा[32] ऊपरि आच्छेटीनइ[33] दांते करडीनइ[34] मारी.

ते भणी हुं कहुं छुं 'काष्ठं नमति नानाम्यं' ए कथा. अथवा

किं करिष्यति पाण्डित्यमपात्रे प्रतिपादितम् ।
सपिधानघटान्तःस्थः प्रदीप इव वेश्मनि ॥ ४०३ ॥

कुपात्रनइ[35] विपिइ[36] पांडित्य शुं करइ[37]. ? ढांक्या घडामाहिनो[38] दीवो[39] जिमइ प्रकाश न करइं,[40] तुं सही अपजात छइ.[41] बोल्युं छइ,

पुत्रस्तुल्यगुणो जातस्त्वनुजातः पितुः समः ।
अभिजातोऽधिकस्तस्मादपजातोऽधमाधमः ॥ ४०४ ॥

जे पुत्र गुणे करी पिता समान हुइ[42] ते अनुजात कहीये, जे पिताथी अधिक होइं[43] ते अभिजात कहीयइ,[44] जे पिताथी अधम हुइं[45] ते अपजात कहीइं.[46] ए वचन साधु,

प्रज्ञया यो विसारिण्या यौवनेन बलेन वा ।
धुरं वहति गोत्रस्य जननी तेन पुत्रिणी ॥ ४०५ ॥

जे पुत्र प्रज्ञा करी, यौवनें[47] करी, बलि[48] करी गोत्रनीं धुरा[49] वहइं[50] तीणइं[51] पुत्रि[52] करी माता पुत्रिणी हुइं.[53]

ते भणी तु[54] राजानि[55] आपदा आवी छइ[56] पण न बोलइं.[57] ए वचन साधु,

धर्मबुद्धिरबुद्धिश्च द्वावेतौ विदितौ मम ।
पुत्रेण ह्यतिपाण्डित्यात् पिता धूमेन मारितः ॥ ४०६ ॥

एक धर्मबुद्धि, बीजु[58] अधर्मबुद्धि तीणें पुत्रें[59] अति पंडितपणें[60] पिता धूंआडें मार्यो.

दमनक बोल्युं,[११] ए कथा किम ? करटक कहतो हौउ,

[२५. धर्मबुद्धि अने पापबुद्धि]

एक स्थान विपइ[१] वाणीयानु[२] पुत्र निहि[३] मित्र एह्वा एक धर्मबुद्धि बी[69-A]जो अधर्मबुद्धि. ते निहि[३] मित्र धन उपार्जेवा परदेशि गया. पच्छइ धर्मबुद्धि यत्न पापिइ कोएकना[४] सोनाना टंका[५] सहस्र[६] भर्युं[७] घडु[८] पाम्यो. ते दुष्टबुद्धि संघाते[९] वार्त्ता करतो हौउ, आपण कृतार्थ हौआ. आपणइ देशि जाईये.[१०] एहुं[११] चींतवी बिहि आपणइ घरि समीप गुआंदरइ आव्या. [पच्छेइ धर्मबुद्धि कह्युं,][१२] अहो ए सोनाना टंकांनो अर्द्ध भाग ताह्रो छइ ते लेइ[१३] घरि जैये. पच्छइ दुष्टबुद्धि चित्त कुटिल थिकु[१४] बोल्युं,[१५] आपण एक छैये. ए धन ईहां क्षेत्रमाहि डाटीनइ अकेकु शत वरतुं वरतुं घरि लेइ जैशि.[१६] तिम[१७] ते धन[१८] डाटीनइ[१९] बिहि घरि गया. पच्छई[२०] केतलाएक दिनमाहि[२१] ते दुष्टबुद्धि शत[२२] टंका[२३] दुर्व्यसने करी[२४] पाई रहुं.[२५] पच्छइ[२६] धर्मबुद्धि वली शत वांटी आप्युं तेहइ पाधउं.[२७] इम[२८] छतां दुष्टबुद्धि चीतवतो[२९] हौउ, वली हुं[३०] शत टंका मागुं ते शुं ? हवइं[३१] एकलो आफणीयइ[३२] सर्व धन लेई आवु.[३३] एहुं चींतवी सर्व धन लेईने भूमि समी करी घरि आव्युं. तेहइ[३४] धन मासेकमाहि[३५] पाई रह्यो, [कु]मार्गि[३६] पाधुं.[३७] मास एक गया पूठिं दुष्टबुद्धि धर्मबुद्धिशुं आलोच करतो हौउ जे आपणुं उगरयुं धन विभाग करी लीजइ.[३८] पच्छइ धर्मबुद्धि कह्युं, अयार चालो धन विभाग करी लीजइ.[३९] पच्छइ बिहि जै[४०] पणी जोइं तो[४१] न देषइं.[४२] तिवारिं[४३] दुष्टबुद्धि पापाण लेइनइ[४४] आपणु माथउ[४५] कूटवा लागु;[४६] कहतो हौउ, अरे धर्मबुद्धि तिं[४७] धन सर्व लीधु[४८] आपि कें[४९] हुं राजा आगलि कहेशि. धर्मबुद्धि बोल्युं,[५०] अरे दुरात्मा हुं मूंन्हि इम म कहेशि.[५१] हुं धर्मबुद्धि छुं. हुं चौरी[५२] न करु. बोल्यु छइ,



धर्मबुद्धि अने पापबुद्धि [हस्तप्रत, पृष्ठ 84-B]

द्विजिह्वमुद्वेगकरं क्रूरमत्यन्तनिष्ठुरं ।
खलस्याहेश्च वदनमपकाराय केवलम् ॥ ४१३ ॥

वि जीभ उचाट दिइं,[६७] क्रूर कठिण दुष्टनु[६८] अनइ सापनु मुख एहुं हुइ.

ते भणी मूहनइ[६९] तूथी भय ऊपजइ[७०] छइ;[७१]

मा गाः क्षुद्रेषु विश्वासं ममैतत्पूर्वसेवितः ।
चिरकालोपचीर्णोऽपि दशत्येव भुजङ्गमः ॥ ४१४ ॥

मइ[७२] प्रथम सेव्यु[७३] छइ[७४] एहुं जाणीनइं[७५] मूर्खनो विश्वास न करवुं[७६] जिम[७७] सर्प घणो काल सेवीइं[७८] पण वीसशु पाड.

चंदनादपि संभूतो [71-B] दहत्येव हुताशनः ।
विशिष्टकुलजातोऽपि यः खलः खल एव सः ॥ ४१५ ॥

जिम[७९] चंदनकाष्टनोट वैश्वानर दहइ तिम उत्तम कुलनइ विषइ ऊपनो जे मूर्ख ते दुष्ट ज.

किम पीयारे अवगुणे माहुं मन उचाट पामइ[८०] छइ[८१] ? अथवा ए मूर्खनु[८२] स्वभाव.

परदोषकथाविचक्षणः
स्वगुणाख्यापयननित्यतत्परः ।
स्वयमेव दैवदण्डितः
पिशुनो विश्वविनाशपण्डितः ॥ ४१६ ॥

पिशुन पीयारा अवगुणने[८३] बोलवा[८४] चतुर[८५] अनइ आपणा गुण बोलइ[८६] अनइ[८७] आपुणपइ[८८] देव[८९] दंडयुं[९०] हुइं[९१] विश्वनु विनाश करवा हीडइ.[९२]

दुष्टबुद्धि बोल्यो, ए किम ? पिता कहइ[२२] छइ,[२३]

[२६. बगलो, साप अने नोळियो]

एक वनमाहि[१] सरोवरनइं[२] कां[70-A]ठइ[३] कहूनो वृक्ष तिहां बग बगली विहि[४] रहइ.[५] तेहना[६] बालक जण्यां वृक्षनी कोपराडिमाहियी[७] सर्प नीकली बालकनइं[८] खाइ. सदा तीणइं[९] दुपिं बग बगली विहि[१०] आहार कीधा[११] पापइ[१२] तलावइ[१३] काठइ[१४] बैसी रहिं.[१५] पच्छइ[१६] तिहां एक जीव बगबगलीनइ कहितु[१७] हवु,[१८] अहो मामा[१९] आज आहारनुं कार्य[२०] काइं नथी करता ? बग बोल्यु, धैर्य पापइ[२१] किहानो[२२] आहार ? पच्छइ[२३] ते बोल्युं,[२४] शाथी[२५] दुख ऊपनु छइ ? बग बोल्यो, हुं मंदभाग्य छुं. माहूं बालक जात[२६] मात्र[२७] सर्प पाई[२८] जाई. तीणिं दुपिं धैर्य नथी. काइ उपाय छइ जे[२९] सर्प मरइं[३०] ? ते सांभलीनइ[३१] कुलीरक[३२] चींतवतो हौउ, अहो ए अम्हारा वंशनु[३३] शत्रु ते भणी भलो जाणी दुष्टशु उपदेश घुं जिम सघला अनेरा बग नाश पामइ. बोल्युं छइं,

> नवनीतोपमावाणी कृत्वा चित्तं सुनिर्दयं ।
> तथा प्रबोध्यते शत्रु सान्वयो म्रियते यथा ॥ ४०९ ॥

वाणी मापण शरीपी कुली करीयइ,[३४] चित्त निर्दय कीजइ[३५] अनइ शत्रु[३६] तेह्वी बुद्धि दीजइ[३७] जिम वंश समेति नाश पामइ.

एहुं चीतवी कहिंकड्डु[३८] बोल्यु, ते सर्पना वधनु[३९] उपाय तून्हइ[४०] कहुं. ईहा नुलीया[४१] छइं.[४२] तेहना[४३] स्थानकथी ताहूा वृक्षना सर्पनइ वास लगाड्ण मत्स्यना मांस मुइ वैरि जिम तेन्हा लोभथी नुलीया सर्प लगइ आवशि,[४४] पच्छड सर्पने[४५] पासे.[४६] पच्छि[४७] बगि तिम कीधा[४८] पच्छी[४९] नोलीया मासना लोभथी तीणइं[५०] मार्गि वृक्षनइ पामीनइ[५१] सर्पनइ[५२] भक्ष करी पच्छइ[५३] बगला सघलानु[५४] भक्ष कीधु.[५५] तेह[५६]

भणी हू[५७] कहू[५८] छू[५९] ' उपायं चिन्तयेद्विद्वान् ' ए कथा.

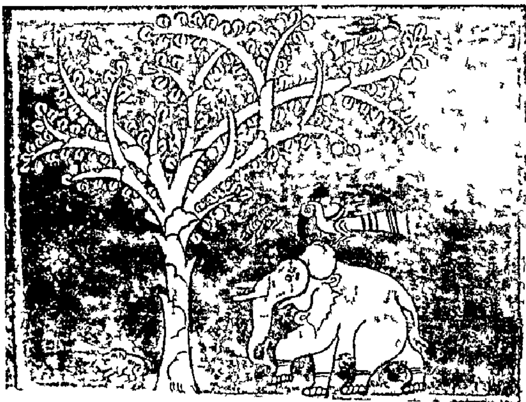
एहुं कही तेन्हु[६०] पिता तिहां[६१] वृक्षमाहि पइठउ. पच्छइ दुष्टबुद्धि धोयां वस्त्र पहिरीनइं[६२] धर्मबुद्धि[६३][70-B]नै तेडीनइ[६४] राजाना धर्मना जाणहार तेडी शमी कन्हइं[६५] ग्यु;[६६] तिहां जेनि मोटि[६७] शब्द करतु[६८] हौउ,

आदित्यचन्द्रावनिलोऽनलश्च
द्यौर्भूमिरापो हृदयं यमश्च ।
अहश्च रात्रिश्च उभे च संध्ये
एते विजानन्ति नरस्य कृत्यम् ॥ ४१० ॥

सूर्य चंद्र वायु वैश्वानर आकाश भूमि जल हैयुं यम एतलां,[६९] दिवस[७०] रात्रि बिहि संध्या एतलइ[७१] मनुष्यनु[७२] धर्माधर्म जाणें.[७३]

ते भणी अहो वनदेवता जे अम[७४] बिहिमाहि[७५] जीणें चोर्युं धन होइ ते कही धुं.[७६] एहुं कह्या पूठि[७७] शमीमाहिथी वृद्ध तेन्हु पिता बोल्युं, ए अर्थ धन धर्मबुद्धि लीधो.[७८] एहुं वचन सर्व लोक सांभली विस्मयने[७९] पाम्युं.[८०] जा[८१] लगइ धर्मबुद्धिनइ[८२] धन चोर्यानुं[८३] दंड विमासइ[८४] तेतलइ[८५] धर्मबुद्धि चीतवतु[८६] हौउ, अहो ए वाणी शरीर विना किम घटइ[८७] ? कांई कारण छइ.[८८] ते भणी[८९] ए बुद्धिसाध्य छइ.[९०] एहुं चीतवी[९१] लोकनइ[९२] कहतु[९३] हौउ, धर्मबुद्धि बोल्युं,[९४] अहो अद्यापि धर्म छइ[९५] जे वृक्ष सापि देवा लागा. मइ[९६] द्रव्य एकलइ[९७] लीधो;[९८] लेई[९९] विमाशुं[१००] ए दीनार टंका घरि लेइ[१] शूं[२] करुं ? एहनें[३] चोर उदक अग्नि राजा गोत्री एतला लेशिं तेणइं[४] शु करीशि ? तेह[५] भणी मइं[६] वृक्षनी कोपराडिमाहि[७] मुंक्या, लेवानें[८] भयइं.[९] बोल्युं छइ,[१०]

दायादाश्चिचत्वारो धर्मचौराग्निपार्थिवाः ।
ज्येष्ठेऽपमानिते पुंसां हरन्त्यन्ये बलाद्धनम् ॥ ४११ ॥



पक्षीआण मप करी वनडगत करता हाथीने मार्यो [हस्तप्रत, पृष्ठ 101-A]

मातृवत्परदाराणि परद्रव्याणि लोष्टवत् ।
आत्मवत्सर्वभूतानि यः पश्यति स पश्यति ॥ ४०७ ॥

देषणहार ते कहीइ जे पीआरी स्त्रीने [69-B] मानी परि देषइ अनइ जे पीयारा द्रव्यनें पहाणानी परिं देषइ अनइ सर्व प्राणीनइ आत्मावत देषइ ते देषणहार.

ईणी परि परस्परी शंका करता राजानी द्वारि धर्मस्थानि न्याय करवा ग्या. जइं सर्व तेहनें निवेद्युं. तीणे कह्युं, ए विहि राषो. पंचरात्रिमाहि न्याय करशुं. पच्छइ दुष्टबुद्धि चित्ति उपाय विमासी बोल्यु, अहो माहूइ साक्षी छइं ते पूछीनइ तम्हे व्यवहार करू. तीणे न्यायकरणहारि पूछ्युं, अहो दुष्टबुद्धि कुण ताहरइ साषि छइ ? दुष्टबुद्धि बोल्युं, जे वृक्ष हेठि धन दाट्युं ते वृक्ष हेठियुं धर्मबुद्धि लेईं ग्यु एही वृक्षनी देवता पहिं देवाडुं. पच्छइ ते न्यायना करणहार विस्मय पाम्याथी चीतवता हौआ जे वृक्ष वाणी पाषइ किम बोलशि ? पच्छइ तीणी विहिना घडा लेईं घरि मोकल्या; कह्युं जे विहाणइ जोईशि. पच्छइ दुष्टबुद्धि घरि जइनइ पितानइ कह्युं, अहो पिता, दीनार टंका माहूीइ हस्ति छें जु तुं एक वचन कहईं तो रहइं. तइं रात्रि धन डाटवानइ ठामि शमिनो वृक्ष छइं तेहनी कोथराडिमाहि तु पैशी; जिवारइं हुं साषि देवारुं तिवारइं साषि पूरे. पच्छइ तेन्ही पिता बोल्युं, अरे पुत्र आपुणी फीटी जे भणी आपणइ पक्ष नही, उपाय नही. बोल्युं छइ,

उपायं चिन्तयेद्विद्वानपायमपि चिन्तयेत् ।
पश्यतो वकमूर्खस्य नकुलैर्भक्षिताः सुताः ॥ ४०८ ॥

पुरुषे उपाय अनइं आपणु नाश विहि चींतववां जिम मूर्ष बग देषतां नोळीयें बालक बगना षाधा.

धनना लेणहार च्यारि धर्म चोर अग्नि राजा; तेहमाहि[11] धर्मनइ[12] अर्थि न वावरीये तो थाकता[13] लिइं.[14]

पच्छइ[15] काज उपना पूठि आवी ल्योश;[16] घरि[17] धन तु[18] छइ. वली एकलु[19] आवीइ[20] हाथी[21] धन लेवु मांडुं[22] तो ए वृक्षनी कोपराडि-माहि[थी][23] लेता[24] मोटउ[25] सर्प निकल्युं[26] तेन्हें[27] भये[28] न लीधु. एहुं धर्मबुद्धि कही तृण काष्ट अग्नि आणी शमी[71-A]नु कोपराडि-माहि[29] वैश्वानरें करी बालवा लागतो हौउ; एह्वे माहिथो[30] वृद्ध बोल्यो, एहुं[31] म करेशि, म बालेशि. पच्छइ[31] वैश्वानर प्रगट थ्या पच्छी[32] [सघलइ बलतुथु] तीणइं माहिथो दुष्टबुद्धिनो पिता मुइं पड्यो. पच्छइ सघला वेगलाथा आवी जोता थका कौतक करी विस्मय पाम्या. काईएक जीवतो देषी सघला पूछता हौआ, अहो इम अदृष्ट थै आपण-पइ[33] काइ[34] बलाव्युं ? अहो हु ईणइं[35] दुष्टबुद्धि मोटइ[36] व्यसन[37] पड्युं;[38] एहुं कहतो[39] ज मूंउं.[40] पच्छइ ते राजाना जण ते दुष्टबुद्धिने शमीनइ[41] डालि[42] उंघइ[43] मुंडइ[44] बाधीनइ धर्मबुद्धिनें संतोषी[45] राजा पहि[46] संतोषता[47] हौआ.

ते भणी कहुं[48] छुं[49] 'धर्मबुद्धिरबुद्धिश्च' ए कथा.

करटक वली बोल्यु,[50] धिक् मूर्ष पापंड करी जीवं[51] छइ[52] ते[53] अतिशय पंडितपणे वंश दह्यु.[54] ए साधु.

लवणजलान्ता नद्यः स्त्रीभेदान्तानि बन्धुहृदयानि ।
पिशुनजनान्तं गुह्यं दुःपुत्रान्तानि च कुलानि ॥ ४१२ ॥

नदीनु अंत समुद्र, बंधुनु[55] हैयानु अंत स्त्रीनो भेद, गुह्य मंत्रनो अंत पशुनउ[56] सांभल्युं,[57] कुलनु[58] अंत दुष्ट पुत्र.

वली[59] जे मनुष्यनइ[60] मुंढइ[61] बि जीभ[62] हुइ[63] तेन्हे[64] कुण[65] विश्वास[66] करइ ! बोल्युं छइं,

द्विजिह्वमुद्वेगकर क्रूरमत्यन्तनिष्ठुर ।
खलस्याहेश्च वदनमपकाराय केवलम् ॥ ४१३ ॥

नि जीभ उचाट दिइ,[१७] क्रूर कठिण दुष्टनु[१८] अनइ सापनु मुख एह्व हुइ.

ते भणी मूहनइ[१९] तूंथी भय ऊपनइ[२०] छइ,[२१]

मा गा क्षुद्रेषु विश्वासं मंमतत्पूर्वसेवित ।
चिरकालोपवीर्णोऽपि दशत्येव भुजङ्गम ॥ ४१४ ॥

मइ[२२] प्रथम सेव्यु[२३] छइ[२४] एह्व जाणीनइं[२५] मूर्षनो विश्वास न करवु[२६] जिम[२७] सर्प घणो काल सेवीइ[२८] पण चीसइ पाइ

चदनादपि सभूतो [71-B] दहत्येव हुताशन ।
विशिष्टकुलजातोऽपि य खल खल एव स ॥ ४१५ ॥

जिम[२९] चदनकाष्टनोइ वैश्वानर दहइ तिम उत्तम कुलनइ विषइ ऊपनो जे मूर्ख ते दुष्ट ज

जिम पीयारे अवगुणे माहु मन उचाट पामइ[१] छइ[२] । अथवा ए मूर्खनु[३] स्वभाव

परदोषकथाविचक्षण
स्वगुणाख्यापयननित्यतत्पर ।
स्वयमेव दैवदण्डित
पिशुनो विश्वविनाशपण्डित ॥ ४१६ ॥

पिशुन पीयारा अवगुणने[४] बोलवा[५] चतुर[६] अनइ आपणा गुण बोलइ[७] अनइ[८] आपुणपइ[९] देव[१०] दड्यु[११] हुइ[१२] विश्वनु विनाश करवा हीडइ[१३]

ते भणी[3] सर्वथा[4] मूर्खनी मनुष्यनी संगति जाणीनइ करवी. बोल्युं छइं,[5]

विद्वान् ऋजुरभिगम्यो विदुषि शठे चाप्रमादिना भाव्यम् ।
ऋजुमूर्खस्त्वनुकंप्यो मूर्खशठ सर्वथा त्याज्य. ॥ ४१७ ॥

पुरुषि[6] पडितनइ विषइ[7] रिजु[8] थावुं, जे पंडित धूर्त[9] हुइ[10]
तिहा सावधान रहवु, ये[1] मूर्ख ऋजु होइ तेन्हि[2] दया कीजइ[3] अनइ[4]
जे मूर्ष दुष्ट होइ ते सर्वथा त्यजवु.[5]

अहो तें केवल ताह्रो ज वंश ण[6] विणासु[7] राजानु[8] ए वंश नाश
पमाड्यु[9] तीणिं[10] ताह्रेइ[11] अनेरु[12] जन[13] तृण समान. शाथी,

तुलारोहसहस्रस्य यत्र खादन्ति मूषकाः ।
गज तत्र हरेत् श्येनो बालके कोऽत्र संशय ॥ ४१८ ॥

जिहा [लोहनु[14]] तोल्युं[15] सहस्रसख्या[16] [तोल] लोहडुं उंदिर[17]
षाइं[18] तिहा शींचाणुं[19] हाथीनइ[20] हरइं,[21] पच्छइ बालकनुं[22] शु कहीये ?

दमनक बोल्युं,[23] ए कथा किम ? करटक बोल्युं,[24]

[२७. लोहुं उंदर खाई गया!]

कोएक नगरि नाटुक एहे[1] नामे वाणीयानो पुत्र वसइ.[2] ते धनहीन
थको देशातरि[3] धन ऊपार्जवानु[4] उपाय चीतववु[5] होउ,[6]

यत्र देशेऽथवा स्थाने भोगा भुक्ता स्ववीर्यत. ।
तस्मिन्विभवहीनो यो वसेत्स पुरुषाधम. ॥ ४१९ ॥

[72-A] जिहां[7] पुरुषें आपणइ समर्थी ईस्यें भोग भोगव्या होइ
तिहा जे पुरुष संपद पापइ[8] वसिइ[9] ते पुरुष[10] अधम.

यत्राहंकारयुक्तेन चिरं विलसितं पुरा ।
दीनं वदति तत्रैव य परेषां स निन्दितः ॥ ४२० ॥

जिहा पूर्वइ[11] अहंकार आणी रह्या होइये[12] अनइ विलास कीधु[13] हुइ[14] तिहा जे दीन बोलइ[15] तेन्हें लोक निंदइं.[16]

एह्र चीनरी[17] ते वाणीयानु[18] पुत्र पृर्विजनी[19] उपार्जी लोहनी तुला सहस्रभार सख्या लक्ष्मण नामि[20] वाणीयो जे मित्र तेहनइ[21] घरि मूंकीनइ[22] थापणि पच्छइ देशातरि[23] गयो[24] वली देशइ[25] हीड्यु[26] पण दुर्भाग्य[27] भणी[28] काइ[29] धन न मल्यु घणु[30] काल हुउ[31] हीडता वली तेणइं[32] ज देश आवतो[33] होउ, आवीनइ[34] लक्ष्मण कन्हीइ[35] ते लोहनी तुला मागतो[36] होउ. पछइ लक्ष्मण वाणीयानइ[37] लोभ माटइ कहतु[38] हवुं,[39] अहो ए सर्व[40] लोह उंदिरे पाधु. पच्छइ[41] ते वाणीयो साभली चींतवतु हवु,[42] हु मंदभाग्य ए[43] लोहइ[44] ग्यु. आज हुं तलावि[45] पाणी पीवा जाउ तो तलावट सूझइ[46] अनइ[47] ए आश्चर्य जे लोह उदिरे पाधुं [पच्छइ] अतर्गत हसी बोल्यु,[48] अहो ए सत्य जे भणी लोह बल न[49] करइ,[50] स्वाद रूडु लोह किम उदिर न खाइ ? पच्छइ[51] ते हर्ष्यु मित्र प्राहोणु छइ एहु कही लक्ष्मण तेन्हइ घरि लेई जे पुग धोईनइ पूजा करतु होउ पच्छइ[52] नाहुक बोल्यु, अहो लक्ष्मण ईहां नगर समीपि नदी छइ[53] तिहा स्नान करवा जाउ. तेणइं[54] ताहरो धनदेव नामे [पुत्र] तेन्हे स्नान करवा[55] उपहार आपीनइ[56] साथि[57] मोकलि. पच्छइ लक्ष्मण पुत्रने तिल आमली आपी साथि मोकलतो होउ. चोरीनो शक्युथु पच्छइ ते स्नान करी आव्यु एकलु पच्छइ एकलु देषी ते[72 B]न्हइ भोजनवेला कहइतो होउ लक्ष्मण बोल्यु, अहो माहरु पुत्र गयु किहा ? पच्छइ ते बोल्यु, सीचाणा लेइ गया. तेहु सामली कोप्यु[58] तेहनें सहीनडावी[59] राजद्वार[60] लेई ग्यु,[61]

बोल्युं,[12] अहो रापो रापो, माहरु पुत्र एणइ परहुणइ कहां राप्युं. पच्छइ ते लोके पूछिउ, अरे एहनु[13] पुत्र किहां ? पछइ ते बोल्युं,[14] सीचाणा[15] लेइ[16] गया.[17] पच्छइ[18] ते विस्मयनइ[19] पाम्यांथा[20] बोल्या, अहो[21] शीचाणो छोकरानें किम लेई जाइ ? ते बोल्यु,[22] अही[23] शूं[24] आश्चर्य ? 'जिहां लोहडु[25] उंदिर पाइ[26] तिहा सीचणा छोकरां लि[27] ईहा[28] शुं[29] आश्चर्य ? ते न्यायना कर्त्ता[30] बोल्या, ए किम ? पच्छइ नाटुक तेहनै[31] लोहतुलानुं वृत्तांत कहतौ[32] हौउ.[33] ते सांभली न्यायना कर्त्ता ते[34] पहि लोहनी[35] तुला अपावी, तेहनु[36] पुत्र[37] अणाव्युं.[38]

ते भणी हुं कहुं छुं, 'तुलालोहसहस्रस्य' ए कथा.

अहो दमनक तूहें ढोरनी परि उपदेश फोक.[39] बोल्युं छइ,

प्रज्ञा श्रुतार्थेषु जलेषु तैलं
रक्ते विषं सत्सु च सङ्गतानि ।
प्रेमं प्रियस्त्रीषु खलेषु गुह्यं
यथा विसर्पन्ति तथेह कीर्त्तिः ॥ ४२१ ॥

पंडितनी प्रज्ञा, पाणीमाहि[40] तेल, रुधिरमाहि विष, संतनी मैत्री, वल्लभ स्त्रीनो प्रेम, मूर्खनइ[41] त्रिपइ[42] गुह्य एतरां वाना[43] वृद्धि पामइ[44] तिम जेहनी[45] कीर्त्ति वृद्धि पामइ[46] ते भलु.[47]

न जातिधर्मः पुरुषस्य साधुता
चरित्रमूलानि यशांसि देहिनाम् ।
अकीर्त्तिरापच्छतजालकर्षिणी
कृतघ्नमन्येति परत्र चेह च ॥ ४२२ ॥

कृतघ्न[ज] पुरुषने जातिधर्म साधुपणुं, आचरणयुक्त यश [एतलां वाना[48] साथइ[49] न जाइ] अनइ कृतघ्नइ[50] अकीर्त्ति, घणी आपदा एतरां इह लोकि परत्र साथिं[51] आवइ.[52]

सुपरीक्षितकीर्त्तिमंडल
पुरुषो नैति मृतोऽपि वाच्यता ।
[73-A] क्षणमप्ययश कलंकित
मरणात्कष्टतर हि जीवितम् ॥ ४२३ ॥

रूडी[1] निर्मल कीर्त्तियुक्तथी[2] मरइ[3] जे पुरुष ते[4] केहिइ[5] निंदा[6] न पामइ,[7] अपयश करी क्षण एक[10] जे जीवइ[11] ते मरणथी[12] अधिकु.

अहो[13] जे तु दिहाडी पीयारा अवगुण बोलवा तत्पर छइ[14] ते ताहू[15] स्वभाव.

प्रायेणैव कुलान्वित कुकुलजा स्त्रीवल्लभ दुर्भगा
दातार कृपणा ऋजूननृजवस्तेजस्विन कातरा ।
वैरूप्योपहताश्च कान्तवपुष सौख्यस्थित दु स्थिता
नानाशास्त्रविशारद च पुरुष निन्दन्ति मूर्खा सदा ॥ ४२४ ॥

हीन कुलनो उत्तम कुलनाने निंदइ,[16] उत्तम[17] स्त्रीनै ज भोगवतो होइ तेन्हे दुर्भागी निंदा करइ, दाताने कृपण निंदइ,[18] शातने उद्धत निंदइ,[19] शूरनइ कातर निंदइ, सुदरने कुरूप निंदइ, दुषी ते सुखीनइ निंदइ, पडित[20] ते मूर्षनै निंदइ

मूखाणा पण्डिता द्वेष्या निर्धनाना महाधना ।
व्रतिन पापशीलाना दुश्चारिण्या कुलस्त्रिय ॥ ४२५ ॥

मूर्ष पडितनइ[21] द्वेष[22] करइ, निर्द्धन[23] धनाढ्यनइ[24] द्वेष करइ,[25] पापी तपसीनइ[26] द्वेष करइ,[27] विभचारिणी[28] कुलवत[29] स्त्रीनइ[30] द्वेष करइ.[31]

सदृश चेष्टते स्वस्या प्रकृतेर्ज्ञानवानपि ।
प्रकृति याति भूतानि निग्रह कि करिष्यति ॥ ४२६ ॥

ज्ञानवंत इ[३२] जे पुरुष ते आपणुं[३३] स्वभाव सरषु[३४] थाइं; जे मनुष्य आपणी प्रकृति जाइं तेन्हइं[३५] शीषामण शुं करइं[३६] ! तेन्हे[३७] उपदेश शुं करइं ! उपदेश तेन्हेइ दीजइ जेन्हइ[३८] लागइ.[३९]

अरे[४०] मूर्ष तुं संघाति प्रीति न करीइ[४१] ते वारू; किवारें[४२] ताहरी संगतिथी अम्हने[४३] अनर्थ लागइं.[४४] बोल्युं छइ,

मूर्खेण सह वासो[73-B]ऽपि देशे ग्रामे पुरे गृहे ।
अनर्थायैव संभाव्यो व्यवहारैर्विनैव हि ॥ ४२७ ॥

देश गामि पुरि घरि एतलें टाळि[४५] मूर्ख संघाति[४६] न रहिवुं;[४७] जुइ[४८] व्यवहार मूर्षशुं न कीजइ तोहिइ[४९] उभां[५०] रह्यां आवी लागइ.[५१]

वरं जलधिपाताल ज्वलनावटपातनम् ।
न विवेकविहीनेन मूर्खेण सह संगतम् ॥ ४२८ ॥

समुद्रमाहि[५२] पडीयइ,[५३] पातालि जैयइ, वडथी पडीयइं एतलां वानां भलां पण[५४] विचारहीन जे मूर्ष तेन्ही संगति काईं नही.

ए साधु कहीयइ,

माताऽप्येका पिताऽप्येको मम तस्य च पक्षिणः ।
अहं मुनिभिरानीतः स च नीतो गवाशनैः ॥
गवाशनानां स गिरः शृणोति
राजन्नहं चाविरतं मुनीनाम् ।
प्रत्यक्षमेतद्भवतापि दृष्टं
संसर्गजा दोषगुणा भवन्ति ॥ ४२९ ॥.

मातापिता माहरा अनइं तेन्हा[५५] बिह शूडानां एक ज; हुं रिषि[५६] आण्यु ते शूडो लीधो भीले तेही भीलनी वाणी साभलइं, अहो राजन्,[५७] हुं रिषिनी वाणी सांभलुं. ए[५८] ते प्रत्यक्ष दीठुं जे संगतिथी दोष अनइ गुण होइं.



રાજા, ઋષિ અને ઋષિનો પુત્ર [હસ્તપ્રત, પૃષ્ઠ 91-A]

दमनकें[16] पूछ्युं, ए किम ? करटक कहइ[17] छइं,

[२८. राजा अने सूडाना बे पुत्र]

एक वनमाहि शूडी आहार चणवा गै जेतलें तेतलें तेन्हा बि पुत्र शूडा पारधीयें धरया;[1] ते माहि एक उडी ग्युं,[2] बीजु[3] तीणे पारधीयें पांजरामांहि घाली भणाववो माड्यो जे शूडु ऊडी ग्युं ते भमतो भमतो रिषीश्वरनिइ[4] आश्रमि गयु.[5] पच्छइ ते शूडो रिषीश्वरे साही पोसिउ.[6] एह्वो केतलोएक काल जाता थकां कोटक[7] राजा पारधि करतां घोडाना वशिथी[8] जिहा पारधी रहइ[9] छइ[10] ते[11] वनमाहि[12] आव्यो. पच्छइ तीणइ पांजरामांहिथी सूडु[13] दीठउ; जूइ[14] तो राजा आव्युं.[15] पच्छइ सूडो[16] को[74-A]लाहल करी पारधीनें साद [करी] कहतो होउ, अहो पारधी, राजा घोडइ[17] बैठो[18] [आ]व्यो[19] छइ. तेन्हें मारी घोडु[20] ल्युं.[21] पच्छइ राजा सूडानु एह्वुं वचन साभली घोडो दुडी[22] नाठो. घणेएक[23] ग्यु[24] देपइ तो एक रिषिनुं[25] आश्रम दीठुं.[26] तिहाइ[27] शूडो[28] बोल्युं, अहो रिषीश्वरो राजा आव्यो छइ[29] एन्हि[30] विश्राम द्यो, अर्घपाद्य करो,[31] भोजन उदक[32] रुडी परि द्यु. एहुं राजा सांभली आश्चर्य पाम्यु[33] वचन बोल्यु,[34] हुं[35] ए वनमाहि[36] आव्या[37] पूठि सूडु[38] एकनुं[39] सरखु[40] दीठउ.[41] ते कह्नि[42] राजानि[43] मारि[44] मारि,[45] बाधि[46] बाधि.[47] पच्छइनुं[48] एह्वुं रूडुं[49] वचन बोलें छइं. पच्छइ[50] सूडु[51] राजानु वचन साभलीनइ[52] ए श्लोक भणतु[53] होउ, 'माताऽप्येका' ए त्रि श्लोक.

ते भणी कहुं छुं तु संघाति[54] संगति श्रेष्ठ नही ए कथा ते मूर्खइ प्रयोजन नथी जे भणी,

> पण्डितोऽपि वरं शत्रुर्मा मूर्खो हितकारकः ।
> स्वयधार्थें हतश्चौरो वानरेण हतो नृपः ॥ ४३० ॥

जे शित्रु[५७] पडित होइ तु[५८] वारु, मूर्ष[५९] मित्र हित करइ तु वारु नही जिम आपणा वधनइ[६०] टामि चोर मारयु,[६१] वानरइ[६२] राजा मारयु दमनक बोल्यु,[६३] ए कथा किम ? करटक कहि[६४] छइ,[६५]

[२०. पंडित शत्रु अने मूर्ख मित्र]

एक रजानु[१] पुत्र, वाणीयानो पुत्र, अनइ भट्टनु[२] पुत्र ए त्रणि[३] मैत्री हुई[४] दिहाडी ते क्रिडा करता हीडइ,[५] सुख भोगवइ[६] ते राजानो पुत्र घोडे न चडइ,[७] पारधि न करइ,[८] आपणइ राजकर्म न करइ[९] पच्छइ राजाई[१०] तेन्हें[११] पुत्रन्हें[१२] क्रोध कीधउ,[१३] धिक्कार कीधु[१४] पच्छइ[१५] ते राजाने[१६] पुत्रि मित्र निहि आगलि कह्यु पच्छइ[१७] ते मित्र कहता हौआ, आपणनइ[१८] आपणा पिता दिहाडी गाल[१९] दिइ[२०] ते दुख ताहूी मैत्रीइ[२१] करी न जाणु[२२] हवइ[२३] ताहू दु ख सामलीनइ[२४] दु स्याथा अम्हे नि[74 B]हि पच्छइ राजानु[२५] पुत्र बोल्यु,[२६] अहो अपमान पामी रहवा योग्य नही, आपण कींहीं[२७] जाशु बोल्यु छइ,

वीरत्वतस्य विद्याया पुण्याना शक्तिशीलयो ।
परीक्षा मानिना ज्ञेया स्वदेशत्यागत फलै ॥ ४३१ ॥

शूरपणानी परीक्षानु फल, विद्यानु फल, पुण्यनु फल, शक्तिनु फल, शीलनुं फल, एतलाना फलनी परीक्षा आपणो देश छाडीनइ[२८] परदेशनइ[२९] विषइ[३०] जोनी अभिमानी पुरुषने[३१]

पच्छइ ते सघला[३२] मित्र चीतवता हौआ, आपण कुण देश विषइ[३३] जाशु[३४] ? पच्छइ[३५] वाणीयानु[३६] पुत्र बोल्यु,[३७] अहो धन विना काइ वाउउ[३८] सिद्धि न पामइ[३९] ते भणी[४०] द्रोणाचल[४१] पर्वत भणी[४२] जै तिहाथा[४३] रत्न आणीनइ[४४] सर्व मनोरथ पूर्ण करशु पच्छइ[४५] सघला[४६] ते वचन मानीनि[४७] द्रोणाचल पर्वत भणी चाल्या. तिहा जइ भाग्यवशिथी[४८]

एकेतु अमूल्य रत्न पाम्यु. पछइ तेणइ विमास्युं, आपण ए मार्ग दुष्टमाहि ए रत्न लेइ कुशलि किम जाशु ? किम ए रत्न राषशु ? पछइ भट्टनु बेटु बोल्यु, अहो हु प्रधाननु पुत्र छु हु तुम्हने बुद्धि दु द रत्न लेइ जावानी. अहो आपणा आपणा रत्न गलीनइ चालो जिम को सराती अनइ चोर न जाणइ. पछइ एहवु मत्र करी भोजनवेला कुलीयामाहि घाली तेणइ रत्न गल्या. ईम करता एक पुरुष पर्वतनी कंदरा पोहमाहिथी आव्यो. ते रत्न गलता देषीनइ चीतवतु हौउ, हु इणइ रोहणाचलि घणा दिन रह्यु आज फल पाम्योस. आज एहना पेट फाडीनइ त्रिणि रत्न लियउ. एहवु नश्चय करी तेह पूठि चालियउ पृठियो बोल्यु, अहो महापुरषो हु एकलु वनमाहि बीह हूं तह्म साथि माहरइ देशि जाउ. तेहइ वनमाहि एकइ अधवु वाछता तेह[75 A]इ साथि तेडी चाल्या पछइ वनमाहि चालता मार्ग मध्य भीलना घर. ते भील अनेक पषीनी भाषानइ जाणइ अनइ सघला भीलमाहि मुषी ते वनमाहिना जीव पारधि करी लाव्यो ते माहि एक पक्षी पाजरामा थी बोल्यो तेहु शद्ब साभली ते भील शद्बनु विचार जोई सघला भील तेडावी कहतो हौउ, अहो ए पक्षी एह्व कहइ छइ जे मार्गि मनुष्य आवइ छइ ते कन्हइ रत्न छइ. ते रत्न घणा मूलाना छइ ते ल्यु, एहुं पक्षी कहइ छइ. पच्छइ ते सघला भील तेन्हु ते वचन साभली सघला मिली वाटिइ जोवा गया. जोइ तु ते च्यार जण आवइ छइ. ते च्यार पोली मूक्या पण रत्न न दीठा पछइ मूक्या जाता हौआ वली ते पषी तिम ज शद्ब करवा लागु वली पच्छइ ते भीलि अणाव्या, वली गाढा सोधी मूक्या. वली जेतलइ जाइ तेतलइ गाढइ वली शब्द करइ कहितो होई. वली ते आणी भील कहतु हवु, ए पक्षी तह्म कन्हइ रत्न कहि

छइ[29] इम कहइ[30] छइ[31] ए केहइ[32] जूवु न नोलइ[33] ते कीम[?] पछइ ते सघला[34] मेल्या, हुइ[35] तु दीसइ पछइ मीर बोलिउं,[37] वली वली ए पक्षी[38] कहइ[39] छइ[40] ते भणी तुम्हारा[41] पेटमाहि[42] रत्न हुसिइ[43] ते भणी ल्यहाणइ[44] तुम्हारा पेट फाडी जोटसिइ[45] एहवु[46] कही वदी पाणइ[47] घाल्या[48] पछइ[49] ते माहि[50] चडथउ[51] चोर मलिउ[52] छइ[53] ते चीतनतउ[54] हौउ, जिवारइ[55] ए मीर एतलाना पेट फाडतौं[56] रत्न[57] नीकलिं[58] तिवारइ माहरयु पण पेट फाडी जोसी तु मृत्यु आव्यु बोल्यु छइ,

अवश्यगन्तरे प्राणैर्मृत्युकाले महात्मनाम् ।
भवेत् परोपकारश्चेत् सिध्ये[75 B]त् तदमृत मृतम् ॥४३२॥

अवश्य ए प्राण तु[59] जाइ[60] ज तो मरणकालि जु[61] परोपकार कीजइ[62] तो ते महानतु[63] मरण[64] परलोक निपइ[65] सुष करइ[66]

ते भणी हू[67] माहरु[68] पट पहिलु[69] फडावु जिम ठालु देषी[70] बीजानु[71] पट न फाडइ[72] इम छता[73] एहना जीव राष्यानु[74] पुण्य अनइ धन राष्यानु पुण्य मुन्हइ[75] हुगि[76] पछइ[77] रात्रि गया[78] पच्छी[79] ते सघला मीलि[80] बोलाव्या पट फाडवानी[81] तिवार[82] पहिलु चोर हाथ जोडी बोल्युउ,[83] अहो ए माहारा[84] भाईना पट फाडना देषी न सकु ते भणी पहिलु माहरू[85] पट फाडी[86] पछइ[87] तीणइ मील्यइ ते चोरनु पेट फाडी जोट तो माहि काईं न दीठु, रत्न न दीठु पछइं[88] ते मीर वृथा ते मारयु जाणी पश्चात्ताप करतौ[89] हौउ, कहतो हौउ, मइ[90] ए पक्षीनइ[91] बोल्इ[92] ए मनुष्यनु वृथा पट फाडु[93] पछइ सघलाना पट ठाला छट पहु[94] जाणु पछइ[95] ते निउनइ[96] कह्यु, तुसारा[97] पेट ठाला छइ आहुनि परि, तम्हे[98] जाउ पछइ ते चाल्या देश ते छाडीनइ[99] कोइक[100] नगरमाहि[101] ग्या निद्दा वसुभाग एह्वे नामि[102] ते

निहुमाहि[3] तीणइ[4] श्लोक भण्यु,[5] 'स्ववधार्यं मूतश्चौर' ते भणी पंडित[6] शत्रु नारू.[7]

पच्छइ तेणइ वाणीआपुत्र[8] आगलि करीनइ ते रत्न नण्य[9] वेच्या[10] पच्छ[इ][11] घणुं धन आणीनइ ते राजाना पुत्रनइ कहुं, अहो ए वाणीआपुत्र भडारी करू, भट्ट ए प्रधान करू पच्छइ आपणइ कटक घोडा मेली राजानु राज्य लीजइ, एहवु तीणइ निश्चय करी घोडा हाथी पाला रथ मेलवीनइ, धननइ वलि प्रधान मेलीनइ देशना राजाशु युद्ध करीने राजाने मारीने राजानो पुत्र राजा होउ पच्छइ ते [76-A] राजा मित्रनइ राज्य चलाववानो भार मुकी आपण पहिं विलासता सुख भोगवतो होउ एक वार ते अंतःपुरमाहिथा[12] पाशि[13] घोडहारिमाहिथी[14] वानर वाध्यो[15] तो[16] ते-शु रमवा लागो जे भणी राजानइ[17] सदा पारेवा मोर शूडा मीढा वानर प्रेय[18] होइ पच्छइ ते वानर तीणे राजाइ पोशी[19] हल्तो कीधो ते वानरनइ[20] सघला लोक मानवा लागा पच्छइ अति वाहा[21] माटइ राजा हाथि[22] पाडु आपइ[23] पच्छइ राजा एक वार अंतःपुरमाहि[24] समीपि वाडी छइ[25] ते[26] माहि वडी पट्टराणी नोलावी[27] वानर माथि[28] तेडावी[29] ते[30] वाडी वसति करी अनेक फूल वृक्ष फल्या रम्य वाडी जोता जोता थाकु पच्छइ बानरनइ[31] कहइतो होउ,[32] अहो हु याहा[33] फूलना माडवा हेठि सूउ छू तु[34] को माहरा शरीरनइ उपद्रव करइ तेहनइ तु [सावधानथो] वारि एहवु कहीनइ राजा सूतु[35] पच्छइ ते राजानइ[36] मस्तक ऊपरि फूल वसतना ऊघड्या माहि[37] कस्तूरी[38] परिमल एह्वी सुगध देषीनइ भमरु राजानइ माथइ फूल ऊपरि बइठउ पच्छइ वानर चीतवतु[39] ए क्षोभ्यु[40] ए भमरु[41] राजाने डससि.[42] एहवु[43] चीतवी भमरानइ[44] ऊचाडवा लागु[45] वली वली उडाडइ[46] आवी बइ[सि][47] तिवारइ[48] क्रोध्यउ वानर पाडु काढी जिहा माथइ राजानइ भमरु बइठु तिहा पाडइ करी मारतु होउ भमरा उपरि, पच्छइ

तेणइ प्रहारि राजानु माथउ वाढउं. पच्छइ तिहा सूतीती जे राणी ते आक्रंद करी बोली, अरे मूर्ख वानर नाहरु राजाइ विश्वास कीधउ हुतु. ति एहवु पापकर्म स्या कीधउं! पच्छइ वानरड कह्यु, मे ए भमरु उडाड्यु न रहई. ते भणी भम[76-B]रु जाणीनइ घा दीधउ. पच्छइ ते वानर लोके धिकारी पहु काढी मुक्यु.

तिहां वली वसुभाग श्लोक एक पंड करतो हौड, 'न तु मित्रमपण्डितं कार्यं यद्वानरेण नृपो हत ' इति ते भणी हुं कहु छुं, 'पण्डितोऽपि वरं शत्रु' ए कथा.

वली करटक वोल्युं,

भेदानां मंत्रकुशल सौहार्दानां विनाशक.।
प्रमाणं त्वादृशो यत्र न तत्कार्यं शिवं भवेत् ॥ ४३३ ॥

भेद करवानइ[12] तूं डाहुं,[13] मैत्रीनु[14] तु[15] विनाश करइ,[16] जिहा तु[17] शरणा हुइ[18] तिहा कार्यसिद्धि न हुई.[19]

स्थितोऽप्यन्त्यास्ववस्थासु नैगाकार्यं व्यवस्यति ।
साधुस्तत्कुरुते येन न लोके दूष्यते यश. ॥ ४३४ ॥

साधु[20] जे पुरुष कष्टनइ दशाने पाम्यु हुइ तुहि ते अकार्य न करइ जेणइ आपणु अपयश होइं. वली वोल्युं छडं,

यदकार्यमकार्यमेव तन्
न वुधस्तत्र मतिं प्रयोजयेत् ।
परयापि तृषा प्रवाधितै-
र्न हि रथ्यागतमम्बु पीयते ॥ ४३५ ॥

जे कार्य[1] करवा योग्य न होइं ते कार्य पंडित न करइं[10] जिम गाढो[11] तरस्यु[12] हुइं तुहइ[13] को चहुटामाहीनु[14] पाणी को न पीइ.[15] वली,

अकर्तव्यं न कर्तव्यं प्राणैः कण्ठगतैरपि ।
कर्तव्यमेव कर्तव्यं प्राणैः कण्ठगतैरपि ॥ ४३६ ॥

ये[66] कार्य करवा योग्य न हुइं[67] ते[68] कंठ[69] प्राण आव्या हुइ[70] तोहइ[71] सत्पुरषे न करइ[72] अनइ[73] कार्य करवा योग्य हुइ तु कंठ प्राण आवइ तुहइ करइं.

पच्छइ[74] दमनक करटकनुं न्यायवचन सांभली, विप शरपु अणगमतुं सांभली तिहा थकु[75] ऊठी गयु.[76] पच्छइ पिंगलक सजीवकनइं मारीनइ कोप शम्या पूठि पश्चात्ताप करतु[77] हौउ दमनक आगलि कहितु हौउ, अहो अन्याय कीधउ जे अति[थि] [77-A] माह्रा आत्मा समान मि मारवु न घटइं मार्यु ते अयुक्त कीधउ. ए वचन साधु,

भूम्येकदेशस्य गुणान्वितस्य
भृत्यस्य वा बुद्धिमत प्रणाशे ।
भृत्यप्रणाशो मरणं नृपाणा
नष्टापि भूमि सुलभा न भृत्या ॥ ४३७ ॥

भूमिनी[78] वृत्ति लोप अनइ मित्रनु नाश वि दुखद होइं, राजानइ सेवकना मरण समान शुद्द कालंतरि न[79] पामीइं.[80]

इणी परि पिंगलकने धैर्यरहित[81] देपीनइ[82] दमनक हल हल कन्हइ[83] जै बोल्यु,[84] अहो स्वामिन् ए कुण न्याय जे सपत्न द्रोह करतो मारीनइ पश्चात्ताप कीजइ[85] ? बोल्युं छइ,

पिता वा यदि वा भ्राता पुत्रो वा यदि वा सुहृत् ।
प्राणद्रोहे प्रवृत्त सन् हन्तव्यो भूतिमिच्छता ॥ ४३८ ॥

पिता पुत्र भाई सुहृत् एतला द्रोह करे तो मारवा राजानि.

राजा घृणी ब्राह्मण सर्वभक्षी
स्त्री चावशा दुःप्रकृतिश्च पुत्रः ।

प्रेष्यः प्रतीपोऽधिकृतः प्रमादी
त्याज्याः इमे यश्च कृतं न वेत्ति ॥ ४३९ ॥

जे[८६] राजा दयाल, जे ब्राह्मण सर्व भक्ष करइं,[८७] जे स्त्री वश न होईं, जे पुत्र दुर्व्यसनी, मित्र अहित[८८] करइ, जे[८९] सेवक प्रमादी, जे[९०] कृतघ्न होइ, ते[९१] एतला त्यजवा. वली,

पृच्छ बालमपि बुद्धिमुत्तमा
गच्छ दूरमपि यत्र नन्दसि ।
मुञ्च वल्लभमपि प्रियापर
छिन्धि बाहुमपि दुष्टमात्मन ॥ ४४० ॥

उत्तम बुद्धि बालकइ पूछीइ,[९२] जिहा आनंद पामीये तिहा वेगलाइ जैये, जे वल्लभ थकुं[९३] प्रिय[९४] न करइं[९५] ते मुंकीये[९६] अनइ सर्पे[९७] डशु[९८] जे आपणो हाथ[९९] छेदवु.[१००]

ए राजानो धर्म नही जे हीननी परि पश्चात्ताप कीधउ.[१] जइ बोल्युं छइं,

न मनुष्यप्रकृतिना शक्यं राज्यं प्रशासितुम् ।
ये हि दोषा [77-B] मनुष्याणां त एव नृपतेर्गुणाः ॥ ४४१ ॥

पाधरे मनुष्ये राज्य साधवा शकीये[२] नही, जे बीजा मनुष्यनु[३] दोष तेह[४] ज राजानइ[५] गुण हुइ.[६] वली,

सत्यानृता च परुषा प्रियवादिनी च
हिंस्रा दयालुरपि चार्थपरा वदान्या ।
नित्यव्यया प्रचुरवित्तसमागमा च
वेश्याङ्गनेव नृपनीतिरनेकरूपा ॥ ४४२ ॥

सत्य बोलइ,[७] जूठु बोलइ,[८] कठिण बोलइ,[९] प्रिय बोलइं हिंसा

करुइ,[१०] दया करइ,[११] धनतत्पर, उदार घणु,[१२] वरुं करुइ,[१३] दिहाडी घणुं[१४] आवइ,[१५] एह्वा गुण राजानी नीति न्यायना अनइ जे स्त्री वेश्या होइ तेन्हा होई.

पच्छइ[१६] करटक पिंगलक कंन्हइ[१७] आवीनइ[१८] तिहां ज दमनकनें[१९] कहतो हौउ, अहो दमनक तु प्रधानवट न जाणें[२०] जे तुं[२१] राजाना मित्रशुं विरोध करें[२२] छे[२३] अनइ[२४] जे शांत वचने करी सेवक राजा पहिं[२५] सीपवीई[२६] ते तु[२७] राजा–शुं सेवकने युद्ध [करावइं][२८] ते अन्याय, ते अति युद्ध न कीजइ.[२९] वील्यु छइ,

धनदस्य तथैव वज्रिणः
पवनस्याथ जलेश्वरस्य च ।
कलहैः खलु खण्डिताः श्रियः
कलहो नित्यजयो न कस्यचित् ॥ ४४३ ॥

कुबेर इंद्र यम वायु वरूण एतलाइंनइं[३०] कलह[३१] करनां श्री जाइ. कलह करतां कहिनइ[३२] जइ[३३] न हुई.[३४]

बह्वपायमुपायघ्नं दैवास्थितजयाश्रयम् ।
युद्धं क्षयददोपाढ्यं जयत्यपुरुपेप्सितम् ॥ ४४४ ॥

युद्ध करता घणानु[३५] नाश थाई,[३६] उपाय जाइ; जय होइ कइ[३७] न हुइ[३८] ते दैव अधीन, युद्ध क्षय करइं;[३९] घणा दोष युद्धनें भला पुरुष [न] वांच्छई.[४०] ते भणी ए दोष युद्धने छइ. वली,

शुचयो हितकारिणो विनीताः
प्रतिपक्षक्षयकारिणो ह्यलुब्धाः ।
निवसन्ति नरा गृहेषु येषां
वशमायान्ति न ते नृपा रिपूणाम् ॥ ४४५ ॥

पवित्र हितकारी चतुर [78-A] अनइ[41] ये शत्रुनें क्षय करवानी[42] बुद्धि होइ, निर्लोभी, जेह[43] राजाने घरे एह्वा मनुष्य होई ते राजा शत्रुनइ[44] वश न थाइं.

नयविद्धरमेक एव बन्धुः न च मूर्खा बहवः सुहृत्प्रतिज्ञाः ।
शमयन्ति हि सन्धिविग्रहं नयनीतिविदो जना न मूढाः ॥ ४४६ ॥

न्यायनें[45] जाणइ[46] एह्वो एकइ[47] मित्र भलुं पण घणा मूर्ष मित्र काई नहीं; सत्पुरुष अन्यायनो[48] जे कल्ह तेन्हे फेडइं, मूर्ष कल्ह करइ.[49]

हितमेव हि वक्तव्यमरुच्यमपि सर्वथा ।
एकान्तप्रियवादित्वं विरुद्धमनुजीविनाम् ॥ ४४७ ॥

सेवके राजानिं[50] अणगमतु पण हितकारी[51] बोल्वुं, एक[52] माहाडुं[53] सेवके प्रिय न बोल्वुं.

पृष्टापृष्टा नरेन्द्रेण प्रियाणि यदि मन्त्रिणः ।
प्रब्रूयुरहितार्थानि प्रक्षीयेरन्नृपश्रिय. ॥ ४४८ ॥

राजाइ[54] पूछ्या[55] जे प्रधान ते प्रिय ज बोलइं[56] अनइ[57] अंतर्गत अहित हुइं[58] ते राजानी लक्ष्मीने नाश करें.

अनइ राजाइ[59] प्रत्येके सघला प्रधान पूच्छवा अनइं जे वचनि हित होइ ते करवुं; जे भणी[60] भ्रांतिथी अन्याय पण बोलाइं.[61] बोल्युं-छइं,

तलवद् दृश्यते व्योम खद्योतो हव्यवाडिव ।
न तलं दृश्यते व्योम्नि न खद्योतो हुताशनः ॥ ४४९ ॥

भ्रमथी आकाशमाहि[62] तलुं दीसइ[63] पण तल्यु नथी; अगीयु[64] वैश्वानर सरिषु[65] दीसइ[66] पण वैश्वानर नथी.[67]

असत्याः सत्यसंकाशाः सत्याश्चासत्यदर्शनाः ।
दृश्यन्ते विविधा भावास्तस्माद्युक्तं परीक्षणम् ॥ ४५० ॥

केतला जूठा पण साचा सरषुं बोलइ,[८८] केतला सत्य पणि असत्य सरीषा[८९] दीसइ,[९०] इम अनेक प्रकारना दीसइ[९१] ते भणी परिष्या[९२] भली.[९३]

ते भणी[९४] अन्यायनु[९५] वचन राजाइ न मानवुं. धूर्त जे सेवक ते लोभथी राजानु कार्य विपरी[78-B]त करी नाश करइ.[९६]

ते भणी राजाइ कार्य जोई करवुं. बोल्युं छइ,

सुहृद्भिराप्तैरसकृद् विचारितं
स्वयं च बुद्ध्या प्रविचिन्तिताशयम् ।
करोति कार्यं खलु यः स बुद्धिमान्
स एव लक्ष्म्या यशसा च भाजनम् ॥ ४५१ ॥

जे[९७] राजा आपणा प्रधाननुं वचन विमासी[९८] बुद्धिइ करइ[९९] ते राजानी लक्ष्मी घणी वृद्धि पामइं[१००] अनइ घणु[१०१] यश हुइं.[१०२]

ते भणी राजाइं पीयारुं वचन जाणी विचारी बुद्धिमंत[१०३] होवुं. अहो को एक प्रदेशि निश्चल थै[१०४] चित्तशुं चीतवी[१०५] हित अहित[१०६] रूडुं[१०७] होइ ते करवु आगलि कार्यनो परिपाक जोवु.[१०८]

पच्छइं ईणी परिं करटके वीनव्युं[१०९] जे सिंह ते संजीवकने मारयानो शोक छाडीनइ दमनकने प्रधानपणुं आपीनइं आपणपइ[११०] राज्य करतु[१११] हौउ.

ए प्रथम तंत्र सुंतु जेन्हु प्रथम श्लोक भण्युं,

वर्धमानो महान्स्नेहः सिंहगोवृषयोर्वने ।
जम्बुकेनातिलुब्धेन पिशुनेन निपातितः ॥ ४५२ ॥

ए तंत्रमाहि[१] कथा बत्रीस ३२.

इति[५] पंडितश्रीविष्णुशर्मणा विरचिते पंचाख्यानके राजनीतिशास्त्रे मित्रभेदं नाम प्रथमं तंत्रं समाप्तम् ॥ १ तस्य भाषेयं श्रीयशोधीरेण कृता ॥ छ ॥

यशोधीरकृत

पंचाख्यान बालावबोध

तन्त्र १–मित्रभेद

पाठान्तरो

[कथामुख]

[पृ. ३] १ अन्य हप्रो मा नीचे प्रमाणे छे : ॥ [श्री] सर्वज्ञाय ॥ भा-१, ॥ श्रीवीतरागाय ॥ इ, ॥ ॐ नमः श्रीगणपतये ॥ व, ॥ ओ नमः श्रीगणपतये ॥ भा-२. २ सर्वशास्त्र० व भा-२. सुखाय च व. ४ कहइ भा-१ इ व, कहि भा-२. ५ छइ भा-१ इ व, छिइ भा-२. ६ हुं हप्रो. ७ मनुनें हप्रो. ८ बृहस्पतिनें भा-१ इ व, बुहस्पतिनिं भा-२. ९ शुक्रनें इ व भा-२. १० पराशर इ व भा-२. ११ रिषिनें इ, ऋषिनें व भा-२. १२ व्यासनें भा-१ इ भा-२, व्यासने व. १३ चाणक्यनें भा-१ इ, चाणाक्यनें व, चाणाख्यनिं भा-२. १४ अनइ भा-१ इ व, अनिइ भा-२. १५ अनेरा भा-१ इ, अनेराइ व भा-२. १६ ये भा-१ इ. १७ तेहनें हप्रो. १८ कहं हप्रो. १९ छुं हप्रो. २० °अतुलै० भा-१ व भा-२. २१ एहं भा-१ इ व, एहे भा-२. २२ नामे हप्रो. २३ ब्राह्मण हप्रो; आ शब्द पहेला भा-१ व अने भा-२ मा 'जे' छे, इ मां 'ये' छे. २४ °माहें भा-१, °माहि व भा-२, °माहिं इ. २५ अर्थनं भा-१, अर्थनें इ भा-२, अर्थने व. २६ जोईनइ भा-१, जोइनइ इ, जोइने व, जोईनि भा-२. २७ कहये भा-१ इ, कहीये व भा-२. २८ तीणि भा-१ इ व, तीणं भा-२. २९ करीने भा-१ इ, करीनेइं व, करीनिइ भा-२. ३० ये हप्रो. ३१ तेन्हें भा-१ इ, तेहनें व भा-२. ३२ हीउ हप्रो. ३३ कहीइ भा-१, कहीये इ व भा-२. ३४ छइ भा-१ इ, छे व भा-२. ३५ दक्षिण भा-१ इ भा-२, दक्षिण व. ३६ मध्ये हप्रो. ३७ महेलारोप्य हप्रो ३८ एहे भा-१, एहे इ, व अने भा-२ मां आ शब्द नथी. ३९ नामें भा-१ इ व, नामिं भा-२. ४० छेइ भा-१ भा-२ छइ इ व. ४१ शास्त्रना भा-२. ४२ ये हप्रो ४३ राजान भा-१ इ. ४४ तीणे भा-१ इ व, तीणिं भा-२. ४५ सर्व हप्रो. ४६ विद्या० ४७ पारनें भा-१ इ व, पारनिं भा-२. ४८ जाणे हप्रो. ४९ एहो हप्रो ५० एहे भा-१ इ, एहें व भा-२. ५१ नामे भा-१ व भा-२, नामे इ. ५२ राजानइ भा-१ इ, राजाने व. ५३ निणि भा-१ इ, निण्य व भा-२. ५४ मूर्ष भा-१ इ, व अने भा-२ मा 'मूर्ष' शब्द नथी. ५५ बहुशक्ति हप्रो. ५६ बीजु व भा-२. ५७ अनेकशक्ति हप्रो. ५८ तिवार हप्रो. ५९ पूठि भा-१ इ, पछी व भा-२. ६० तेह हप्रो. ६१ पुनन्हें भा-१ इ, पुननें व भा-२. ६२ मूर्ष हप्रो. ६३ देषीने व, देखीनें भा-२.

६४ बोलावीनि व, बोलावीनें भा-२ ६५ कहेतौ भा-१ इ, कहतु व. ६६ प्रधान हप्रो. ६७ जाणो भा-१ व भा-२, जाणु इ. ६८ छु इ भा२. ६९ ये भा-१ इ. ७० माह्वा हप्रो. ७१ न्यय हप्रो. ७२ पुन हप्रो. [पृ. ४] ७३ अने व भा-२. ७४ विवेकन्हे भा-१, ववेक इ, विवेकनें व भा-२. ७५ जाणें भा-१ भा-२, जाणि इ, जाणे व. ७६ एह्वा हप्रो. ७७ हौआ हप्रो. ७८ छें भा-१ व, इ भा-२. ७९ तेहने भा-१, तेहने व. ८० हु हप्रो. ८१ देषीने भा-१, देखीने भा-२. ८२ मुंन्हे भा-१, मुंन्हे इ व भा-२. ८३ 'निर्वर' इ मा नथी. ८४ ये भा-१ इ, व अने भा-२ मा आ शब्द नथी. ८५ करतुं भा-१ व भा-२, करतु इ ८६ एहुं हप्रो. ८७ कहे भा-१ व भा-२, कहि इ. ८८ युक्त हप्रो ८९ अणजव्यो भा-१ इ व, अणजव्या भा-२. ९० ये भा-१ इ भा-२, ९१ पुन हप्रो ९२ अने भा-१ व, अनि भा-२. ९३ जव्या भा-१ इ. ९४ पछी इ. ९५ मरेइ भा-१, मरे इ व, मरिइ भा-२. ९६ पुन हप्रो. ९७ अनेइ भा-१, अने व, अनं भा-२. ९८ मूर्ष हप्रो ९९ ये भा-२. १०० ए व भा-२. १ न्यय्य भा-१ इ, न्यय व भा-२. २ पुत्रमाहि भा-१ इ, पुन मध्ये व, पुत्र मध्यें भा २ ३ अणजव्यो हप्रो. ४ अनइ भा-१ इ, अनि भा-२; आ शब्द व मा नथी ५ जम्यां इ; आ शब्द व मां नथी. ६ पछी भा-१ इ; व मा आ शब्द नथी ७ मरइ भा-१ इ, व मा आ शब्द नथी, आ शब्द पछी भा-२ मा 'जे पुन' शब्दो छे' ८ बिहि भा-१ इ भा-२, बेहि व. ९ थोडुं व. १० दुःख भा-१ इ भा-२, दुक्ख व. ११ करे भा-१, करेइ इ, करें व, करि भा-२ १२ मूर्ष हप्रो. १३ काई भा-१ व भा-२, काई इ. १४ नहीं भा-१. १५ माबापन्हे भा-१, माबापन्हि इ, मातापितानें व, मातापितानिं भा-२. १६ दुःख हप्रो. १७ देइ भा-१ इ व, देइ भा-२, १८ पंडित हप्रो. १९ एहुं हप्रो २० वहेंइ भा-१, वहइ इ, वहे व, वहिइ भा-२. २१ तीणी भा-१ व भा-२, तीणीं इ. २२ गाइं भा-१ इ, गाइ व, गांइ भा-२. २३ शुं हप्रो. २४ कीजइं भा-१, कीजइ इ, कीजेइ व भा-२. २५ ब्याइ भा-१ इ व, जाइ भा-२. २६ नहीं भा-१ इ, न्हीं व भा-२. २७ अनइ भा-१, अनइ इ, अनइ व. २८ दूजइ भा-१ इ व, दूजे भा-२. २९ नहीं भा-१, इ व. ३० तिम हप्रो. ३१ तीणें भा-१, तीण भा-२, तीणि इ, तीणे व. ३२ जणें भा-१, जणि इ, व अने भा-२ मां आ शब्द नथी. ३३ पुनेइ भा-१, पुनइ इ, पुनें व भा-२. ३४ शुं भा-१ इ व, शुं भा-२. ३५ कीजेइ भा-१, कीजइ इ, कीजे व, कीजें भा-२. ३६ पुन हप्रो. ३७ न होइ भा-१ व, न हुइ इ, न होयिइ भा-२.

३८ अनेइ भा-१, अनिइ भा-२. ३९ मावापनी इ, मातापित्तानी व भा-२. ४० करउ भा-१ इ, करै व भा-२ ४१ स्त्रीनो भा-१ इ व. ४२ होइ भा-१ इ व, हुए भा-२. ४३ भलो व. ४४ स्त्रीन्हे इ; आ श्लोकनी पहेली पंक्तिना उत्तरार्धनो अनुवाद व अने भा-२ मा नथी. ४५ रितुदान भा-१. ४६ दीजेइ भा-१, दीजउ इ; आ श्लोकनी बीजी अने त्रीजी पंक्तिनो अनुवाद इ मां नथी; बीजी पंक्तिना पूर्वार्धनो अनुवाद व अने भा-२ मा नथी. ४७ अने भा-१. ४८ पुत्र भा-१. ४९ जव्यते भा-१, आ शब्द पछी भा-१ मा 'अने' छे. ५० मरे भा-१. ५१ भलु भा-१. ५२ कन्या भा-१ व भा-२. ५३ जणी भा-१ व, यणी भा-२; आ शब्द पछीनो भा-१ व अने भा-२ मानो 'ये' वि मा नथी. ५४ होइ भा-१ व, हुए भा-२. ५५ गर्भने व, गर्भनि भा-२. ५६ विषे व, विषि भा-२. ५७ पुत्र भा-१ व भा-२. ५८ नावेइ भा-१, नावे व भा-२. ५९ भलु भा-१, भलो व भा-२. ६० अनेइ भा-१ भा-२, अनइ इ व. ६१ धनाढ्य ह्प्रो. ६२ 'घणु' ह्प्रो मा नथी. ६३ एह्वोइ भा-१, हुइ इ; व अने भा-२ मां आ शब्द के तेनुं पाठान्तर नथी ६४ अने भा-१, अनि इ, अनइ व, अनें भा-२. ६५ बलवंत भा-२. ६६ एहोइ भा-१, हुइ इ; व अने भा-२ मा आ शब्द के तेनुं पाठान्तर नथी पण वि मा नथी एवा 'एतला छता' ते बन्ने प्रतोमां 'बलवंत' शब्द पछी मळे छे. ६७ काइ ह्प्रो. ६८ नहीं ह्प्रो. [पृ. ५] ६९ घणें भा-१, घणि भा-२. ७० पुत्र भा-२. ७१ जणे भा-१, जणिइ भा-२ ७२ शु ह्प्रो. ७३ ववल भा-१, केवल इ व भा-२ ७४ होइं भा-१, हुइं इ, होइ व भा-२. ७५ पंह भा-१, पहि इ, पंह व भा-२. ७६ सुपुत्र भा-१ इ, सत्पुत्र व भा-२. ७७ भलु इ. ७८ जेन्हि इ, ये भा-२. ७९ सघलुं भा-१ इ, सर्व व भा-२; व अने भा-२ मा 'सर्व कुल' ए प्रमाणे शब्दक्रम छे. ८० अवलंबीनेइ भा-१, अवलंबीनइ इ भा-२, अवलंबीनइ व. ८१ विश्राम ह्प्रो. ८२ पामेइ भा-१, पामे व, पामइ इ भा-२. ८३ प्रधानने भा-१ व, प्रधाननिं भा-२ ८४ कहेइ भा-१, कहइ इ, कहे व भा-२. ८५ छे व, छे भा-२ ८६ कोइ व भा-२. ८७ एह्वो भा-१ व भा-२. ८८ छे भा व भा-२, छइ इ, भा-१ मा 'छे' पछी 'ए' छे ८९ ये भा-२. ९० मात्र भा-१ इ व. ९१ पुत्रन्हे भा-१, पुत्रन्हइं इ, पुत्रने व भा-२. ९२ उन्मार्गि भा-१ इ भा-२. ९३ जाता इ व. ९४ थिकां व, थका भा-२. ९५ न्यायशास्त्रनु इ, न्यायशास्त्रने व, न्यायशास्त्रनु भा-२. ९६ उपदेश भा-१ इ, उपदेशे व, उपदेशें भा-२. ९७ तीणे भा-१, तीणि इ; व अने भा-२ मा आ शब्द के तेनुं पाठान्तर नथी. ९८ वरी भा-१ व भा-२. ९९

नथु इ. १०० दि इ, ये व भा-२. १ पामीये भा-१ व भा-२ इ. २ सर्वी इ, ३ पामीये भा-१ भा-२, पामिये व, पामीइ इ. ४ जिम हप्रो. ५ एकेइ भा-१, एकेंइ इ, एक व, भा-२ मां आ शब्द नथी. ६ ये भा-२. ७ माणि हप्रो. ८ ते हप्रो. ९ दरिद्रन्हे भा-१, दरिद्रनइं इ, दरिद्र व भा-२. १० फेडइ भा-१ इ व, फेडेद भा-२. ११ एकेइ भा-१, एक्इ इ, एक व भा-२; व अने भा-२ मां 'एक' पछी 'पुत्र' नथी. १२ अनि व भा-२. १३ शुद्ध हप्रो., आ शब्द पछी हप्रोमा 'अनइ' छे १४ हडो भा-१ व भा-२, हडु इ. १५ एह्वो भा-२. १६ तीर्णे भा-१ व भा-२, तीणइं इ. १७ आपणुं हप्रो. १८ हप्रो मा 'कुल सघलु' ए प्रमाणे शब्दक्रम छे, आ बे शब्द वचेनो वि मांनो 'जे' हप्रो मां नथी. १९ शोभावीये भा-१, शोभावीने इ व भा-२. २० जिम हप्रो. २१ जें भा-२. २२ मोटु इ; व अने भा-२ मा आ शब्द नथी; भा-१ अने इ मा 'मोटूं मोती' ए प्रमाणे शब्दक्रम छे. २३ तीर्णे भा-१ व भा-२. २४ व अने भा-२ मां 'हार' पछी 'सघलो' शब्द छे. २५ शोभइ भा-१ इ, शोभावीये व भा-२. २६ प्रधान हप्रो. २७ एहु भा-१ इ, एहू व, एहुं भा-२. २८ सर्व हप्रो. २९ गुणनु भा-२. ३० काइ व ३१ चींतवो भा-१ भा-२, चींतवी व. ३२ जीर्णे भा-१ व भा २, जीणइ इ. ३३ पुत्रन्हें भा-१, पुत्रनइ इ, पुत्रनें व भा-२. ३४ होइ हप्रो. ३५ अने भा-१, अनइं इ, अनइ व. ३६ वृत्तिन्हें भा-१, व भा-२. ३७ पंडित हप्रो, अन्य हप्रोमां 'पंडित' पहेलां 'पीशरात' शब्द छे. ३८ छे भा-१ व भा-२. ३९ तेहने भा-१, तेहनइ इ, तेहनें व भा-२. ४० कहो भा-१ व भा-२. ४१ माहरा भा-१, महरा इ, माह्रा व भा-२. ४२ पुत्रन्हें भा-१ इ, पुत्रने व भा-२. ४३ माहरो भा-१ इ, माहरो व भा-२. ४४ सिद्धि हप्रो. ४५ तिहां हप्रो. [पृ. ६] ४६ प्रधान हप्रो. ४७ बोलैना भा-१. ४८ हौआ भा-१, व भा-२, हूआ इ. ४९ राजन् भा-१ इ भा-२, राजन व. ५० भणतां हप्रो. ५१ लागें हप्रो. ५२ तोहेइ भा-१ इ, तोहे व भा-२. ५३ थोडुं भा-१, व, थोडु इ, थोडूं भा-२. ५४ थोडुं भा-१ इ व. ५५ जाणीइ भा-१ इ, जाणिये व भा-२. ५६ पच्छे भा-१, पच्छइ इ व, पच्छिइ इ व, पच्छिइ भा-२. ५७ धर्मशास्त्र हप्रो. ५८ अनेइ भा-१, अनइ इ भा-२, अनइं व. ५९ जाणिये भा-१ व भा-२, जाणीउ इ. ६० तिवार हप्रो. ६१ पछी हप्रो. ६२ बुद्धिनो भा-१, बुध्यनु इ, बुद्धि व भा-२. ६३ होइ भा-१ व भा-२, हुइ इ. ६४ 'घणी' पछी भा-१ अने इ मां 'तेह' अने भा-२ अने व मां 'ते' शब्द छे. ६५ प्रधानमाहि भा-१ इ, प्रधानमाहि व, प्रधानमाहे भा-२. ६६ एहें

भा-१ इ; व अने भा २ मां आ शब्द नथी. ६७. नामें भा-१ व भा-२, नामि इ. ६८ प्रधान भा-१ इ; 'जे प्रधान ते' आ शब्द व अने भा-२ मां नथी. ६९ बोलतु इ. ७० हुउ इ. ७१ राजन्; आ शब्द पछी वि मां नो 'मनुष्यनु जीवतव्य'..........थी शरू करी, '......... उरक्नट छांडीनइ दुधनी ग्रहइ' ए भाग ('अनन्तपारं किल शब्द-शास्त्रं' ए श्लोक अने तेनो अनुवाद पण) व अने भा-२ मा नथी. ७२ मनुष्यनं भा-१ इ. ७३ जीवितव्य भा-१ इ. ७४ घणुं भा-१ इ. ७५ थोडुं भा-१ इ. ७६ जाणीये भा-१, जाणीय इ. ७७ अनेइ भा-१, अनइ इ. ७८ भणी भा-१ इ. ७९ एहं भा-१ इ. ८० पुनन्हें भा-१ इ. ८१ ज्ञाननेइ भा-१, ज्ञाननइ इ ८२ अर्थि भा-१ इ. ८३ काई भा-१, कांई इ. ८४ थोडुं भा-१, थोडु इ. ८५ अने भा-१ इ. ८६ बुद्धि भा-१ इ ८७ करेइ भा-१, करइ इ. ८८ एहुं भा-१ इ. ८९ चींतवो भा-१, चींतव इ. ९० कहे भा-१ इ. ९१ °नु भा-१ इ. ९२ अनई भा-१, अनइ इ. ९३ मनुष्यनु भा-१ इ. ९४ थोडो भा-१, थोडु इ. ९५ अनई भा-१ इ. ९६ निफल भा-१ इ ९७ छांडीनइ भा-१ इ. ९८ ग्रहीये भा-१ इ. ९८ जिम भा-१ इ. १०० उदक भा-१ इ. १ छाडीनेइ भा-१ इ. २ दूधनें भा-१ इ. ३ ग्रहइ भा-१, ग्रहेंइ इ. ४ आही इ; 'ते भणी आहीं' आ शब्द व अने भा-२ मा नथी. ५ विष्णुशर्म्मा भा-१ इ. ६ एहे भा-१ इ भा-२, एहे व. ७ नामं हुप्रो. ८ ब्राह्मण भा-१ इ व, ब्राह्मण भा-२. ९ छे भा-१ इ, छिइ भा-२. १० तीर्णे भा-१, तीणि इ; 'तेणि अनेक विद्या .... पुन समरपो.' वि नां अही सुधीना वाक्य भा-२ अने व मां नथी. ११ विद्यार्थी भा-१. १२ भणावी भा-१. १३ छी इ; भा-१ मा आ शब्द नथी. १४ प्रसिद्ध भा-१ इ. १५ छेइ भा-१ इ. १६ तेन्हें भा-१ इ. १७ नप्य भा-१ इ. १८ समर्पो भा-१, समर्पु इ. १९ आ शब्द व अने भा-२ मा नथी. २० ए भा-१ इ; आ शब्द व अने भा-२ मा नथी. २१ पुनन्हे भा-१ इ; व अने भा-२ मा आ शब्द नथी. २२ निर्थें भा-१ इ व, आ शब्द भा-२ मा नथी. २३ मतिमंत व भा-२. २४ करशे भा-१ इ व, करशि भा-२.

२५. वि मा नो 'ते अमर सक्तिराजा....... .' थी शरू करी, 'राजा प्रति थोरयतो होउं.........' त्या सुधीनो भाग व अने भा-२ मां सक्षिप्तरूपे नीचे प्रमाणे छे: (नीचे आपेलो पाठ व नो छे अने साथे ज कौंसमा भा-२ ना पाठान्तरो छे.)

'पछइ [पछिइं] राजाए ब्राह्मणने तेडी कह्युं [कह्यूं] जे माहरा पुत्र भणावी निपुन [निःपन्न] करि निवारें [निवारि] ब्राह्मण बुल्यो.'

२६ अमरशक्ति भा-१ इ. २७ प्रधाननुं इ भा-१. २८ विष्णुशर्मा भा-१ इ. २९ ब्राह्मणनें भा-१, ब्राह्मणने इ. ३१ कहितो भा-१. ३२ होउ भा-१, हूउ इ. ३३ ब्राह्मण भा-१ इ. ३४ तुं भा-१ इ. ३५ महामति भा-१. ३६ छें भा-१, छइ इ. ३७ कृपा भा-१ इ. ३८ करीनइ भा-१, करीनइ इ. ३९ पुत्र इ. ४० निष्पन्नइ इ. ४१ होइं भा-१ इ. ४२ तिम भा-१, इ. ४३ करवुं भा-१, इ. ४४ हुं भा-१, हु इ. ४५ तुन्हें भा-१, तुन्हइ इ. ४६ आपेश भा-१ इ. ४७ एहुं भा-१. ४८ राजानुं भा-१ इ. ४९ वचन भा-१ इ. ५० सामलीनइ इ. ५१ चित्तमाहि इ. ५२ चींतवनो भा-१ इ. ५३ हुउ इ. ५४ हुं भा-१. ५५ कुमारन्हें भा-१, कुमारन्हं इ. ५६ उद्धतन्हे भा-१ इ. [पृ. ७] ५७ किम इ. ५८ न्यायमार्गनेइ भा-१, न्यायमार्गनइ इ. ५९ विषेइ भा-१, इ. ६० प्रवर्तावेशि भा-१, इ, प्रवर्तावेशि इ. ६१ जो भा-१ इ. ६२ एहन्हें भा-१ इ. ६३ न्यायमार्गनइ इ ६४ विषे इ. ६५ नहीं इ. ६६ प्रवर्त्तावुं इ. ६७ तो भा-१, इ. ६८ पडिननी भा-१ इ. ६९ वृत्तिनो भा-१ इ. ७० होशि भा-१, होइशि इ. ७१ अनेइ भा-१ इ. ७२ न्यायशास्त्र भा-१ इ. ७३ शीखवेशि भा-१ इ. ७४ भा-१ अने इ माँ 'अनइ' नथी. ७५ माहुं भा-१ इ. ७६ अनेइ भा-१ इ. ७७ निश्चय भा-१ इ. ७८ हुइं भा-१ इ. ७९ कहुं इ. ८० एहुं भा-१, एह इ. ८१ चित्तमाहि भा-१ इ. ८२ विमासीनेइ भा-१, विमासीनइ इ. ८३ बोल्यो भा-१ इ. ८४ हौउ भा-१, हौइ इ. ८५ राजन् भा-२ व इ. ८६ माहुं इ भा-२. ८७ सांभलो व, सामलु भा-२ ८८ हुं इ व भा-२. ८९ विशानु भा-२. ९० म इ. ९१ करुं इ व भा-२. ९२ हुं इ व भा-२. ९३ तम्हारी इ व. ९४ वृत्ति इ व भा-२. ९५ ए व भा-२. ९६ पुत्रन्हे इ, पुत्रनि व, पुत्रने भा-२. ९७ छ इ व भा-२. ९८ भण्ये व भा-२. ९९ न्यायशास्त्रन्हें इ व, न्यायशास्त्रनिं भा-२. १०० जाणता इ व भा-२. १ करुं इ व भा-२. २ माहुं इ व भा-२. ३ नाम इ व भा-२. लगुं इ व भा-२. ५ धर्मु भा-२. ६ शुं इ व, शु भा-२. ७ कहुं इ व, कहुं भा-२. ८ माहरो इ, माहरो व भा-२. ९ गिहनाद इ व भा-२. १० हुं इ व भा-२. ११ धनलुब्ध इ व भा-२.

१२ बोलतो इ व भा-२. १३ बुद्धिन्हें इ, बुद्धिनें व, बुद्धिनि भा-२. १४ काई इ व भा-२. १५ अमात्य इ व भा-२ १६ मूंन्हें इ, मून्हे व मुंन्हें भा-२. १७ असी इ व भा-२. १८ वर्ष इ व भा-२. १९ तीणें इ भा-२, तीणि व. २० निवर्त्या इ, निवृर्त्यां व भा-२. २१ भणीं इ, तेथी भा-२, व मा आ शब्द नथी. २२ माहेर इ, माहे व भा-२. २३ धने इ व भा-२. २४ प्रयोजन इ व भा-२. २५ नहीं इ व भा-२. २६ पणि व. २७ तारी भा-२. २८ °सिद्धिने इ व, °सिद्धिनें भा-२. २९ हुं इ; व अने भा-२ मा आ शब्द नथी. ३० वाणीणो इ व, वाणीनु भा-२. ३१ करेसि इ व भा-२ ३२ राजन् इ व भा-२. ३३ दिवस इ व भा-२; आ शब्द पहेला इ अने व मां 'आजनो' अने भा-२ मा 'आजनु' शब्द छे. ३४ मुंको इ भा-२, मुंकि व. ३५ हुं इ व भा-२. ३६ मध्यें इ. ३७ तम्हारा व भा-२. ३८ पुत्रन्हे इ, पुत्रनइ व, पुत्रनें भा-२. ३९ न्यायशास्त्र भा-२. ४० जाणे इ भा-२, जाणइ व. ४१ तौ व. ४२ तम्हें इ, भा-२; आ पंक्ति व अने भा-२ मा अनुक्रमे नीचे प्रमाणे अहींथी पूरि थाय छे :

'विष्णुशर्मान्य मान देवुं' 'मुन्हे बहुमान देवुं.'

४३ मुंन्हे इ. ४४ मान इ. ४५ देवान्हे इ. ४६ हो इ. ४७ एह्वी इ व भा-२. ४८ ब्राह्मणनी इ, ब्राह्मणनी व भा-२. ४९ असभाव इ, असभाव्य व भा-२. ५० साभलीनइ इ व भार-. ५१ हर्षित इ व भा-२. ५२ थको इ व, थकु भा-२ ५३ विस्मयनें इ, विस्मय व भा-२. ५४ पामीनें इ. ५५ पुनन्हे इ व, पुत्रनइ भा-२. ५६ ब्राह्मणने इ, ब्राह्मणनइ व, ब्राह्मणनें भा-२. ५७ समर्पतौ इ, समर्पतो इ भा-२. ५८ हौउ इ व भा-२. ५९ पछइ इ व, पच्छिइ भा-२. ६० मुखन्हें इ, मुख व भा-२. ६१ विष्णुशर्म्मा इ. ६२ पुत्रन्हें इ, पुत्रन व भा-२ ६३ आपणेइ इ, आपणा व भा-२. ६४ गृहनइ इ, घरनइ व, घरनें भा-२. ६५ विषे इ, विषिइ व, विषेंइ भा-२. ६६ लेईनें इ भा-२, लेईनिइ व. ६७ कृपानइ इ, कृपानें व, कृपानें भा-२ ६८ अर्थि इ व भा-२. ६९ नामें इ व भा-२. ७० बीज्जुं इ, बीजुं व, बीजु भा-२. ७१ नामे व, नामे भा-२. ७२ त्रीजुं इ, त्रीजू व. ७३ चोथुं इ व, चुथुं भा-२. ७४ पाचमु इ व भा-२. ७५ रचीनइ व भा-२. ७६ व अने भा-२ मा नथी. ७७ पुत्र इ व भा-२. ७८ भण्याव्या भा-२ ७९ राजपुत्र इ व भा-२. ८० व अने भा-२ मा नथी. ८१ पाच इ. ८२ आ शब्द पछी इ व भा-२ मां पं २५

'आख्यान' शब्द छे ८३ भणीनइ इ व भा-२ ८४ छ-६ व भा-२ ८५ मध्ये इ व भा २ ८६ व्युत्पन्न इ व भा-२ ८७ समय व भा-२ ८८ पृथिवीमाहिं इ, पृथ्वी मध्ये व, पृथ्वी मध्ये भा-२ ८९ पचाख्यान इ व भा-२ ९० नाम इ व ९१ प्रवर्तुं इ, प्रवर्त्तु व, प्रवर्त्तु भा २, आ शब्द पछी व अने भा-२ मा 'हौउ' छे ९२ बालकनी व ९३ बुद्धिनेइ इ, बुद्धिनी व भा-२ ९४ आ शब्द व अने भा २ मा छे, पछीनो 'अर्थि' इ व भा-२ मा छे, ९५ प्रवत्यु इ, प्रवर्त्युं व, प्रवत्त्यु भा-२ [पृ ८] ९६ ये इ व भा-२ ९७ पुण्य इ व भा-२ ९८ मध्ये इ व भा-२ ९९ ए इ व भा-२ १०० नीतिशास्त्रहें इ, नीतिशास्त्रनि व, नीतिशास्त्रनिइ भा २ १ दिहाडी भा-२ २ भणी इ व, भणिइ भा २ ३ साभल इ व भा-२ ४ पुरुष इ व भा-२ ५ इहथी इ, इहथीइ व भा २, आ शब्द पछी व मां 'पणि' अने भा-२ मां 'पण' शब्द छे ६ पाम इ व भा-२ ७ पछे इ व, पछि भा-२ ८ आ शब्द व अने भा-२ मा नथी ९ मनुष्य इ, व अने भा २ मां आ पक्ति आ प्रमाणे पूरी थाय छे 'मनुष्यमाहि शिम पाम' १० एतलु इ भा २, एतलु व ११ कथानु इ, कथानु व भा २ १२ मुख इ व भा २

[पहेलुं तंत्र–मित्रभेद]

[पृ ९]

[सिंह अने बळद—मुख्य कथा]

१ हिवे इ, हवे व भा-२, पछी इ मां 'ए' छे २ °मध्य व, °मध्य भा २ ३ व अने भा-२ मा 'प्रथम' पछी 'तंत्र' शब्द छे ४ नामे इ व भा-२, पछी व अने भा २ मां अनुक्रमे 'छेइ', 'छइ' शब्द छे ५ ये इ व भा २ ६ आरंभीये इ आरंभीयि व भा २ ७ छइ इ व, छिइ भा-२ ८ जेहो इ, तेहनु व भा २ ९ पहिलो इ, प्रथम व भा-२ १० प्रथमेन॰ इ भा २ ११ मध्ये इ भा-२, मध्ये व १२ अनेइ इ १३ वरु॰ इ व भा २ १४ वहुन इ, विहूनि व, विहूनि भा २ १५ प्रीतिहि व भा-२ १६ अनेइ इ, व अन भा २ मां आ शब्द नथी १७ लेभीयु व, लेभीयु भा-२ १८ ये भा-२ १९ दीयार व भा २ २० नीमि भा २ २१ पूर्वे इ, पूर्वे व भा २ २२ साभलीये इ २३ छइ इ, छिइ व भा २ २४ सर्व व भा २ २५ छोइ इ, व भा-२ मां आ शब्द नथी २६ नामे इ व भा २ २७ छइ इ व, छ भा २

२८ मध्ये इ व; मध्य भा-२. २९ सन्मार्गि इ व. ३० धननें इ व, धननें भा-२. ३१ उपार्जतो इ व भा-२. ३२ व अने भा-२ मा नथी ३३ वर्द्धमान इ व भा-२. ३४ नामें इ व भा-२. ३५ वाणीयानइ इ, वाणीयानेंइ व, वाणीयानें भा-२. ३६ पुत्र इ व भा-२. ३७ हौंउ इ व भा-२. ३८ वर्द्धमानन्हे इ, वर्द्धमानने व, वर्द्धमानने भा-२. ३९ रात्रि इ व भा-२. ४० व अने भा-२मा नथी ४१ किवारेकें इ, किवारें एक व भा-२. ४२ ऊपनी इ व भा-२. ४३ चित्तमाहिं इ, चित्तमाहे व मा-२. ४४ जोइए इ, जोहे व, जोहे भा-२. ४५ घणुं इ व, घणू भा-२, भा-२ मा 'घणू धन' ए प्रमाणे शब्दक्रम छे. ४६ छइ इ, होइ व, हुये भा-२. ४७ तोहइ इ, तोहे व भा-२. ४८ चींतवत्रा इ, चीतव्या भा-२. ४९ अनइ इ, अने व, भा-२ मा नथी. ५० ते इ व भा-२. ५१ ऊपाय इ. ५२ करवा व भा-२. ५३ अनइ इ, व भा-२ मा नथी. ५४ रहे इ, व भा-२. ५५ ये इ. ५६ वस्त भा-२. ५७ पामी इ व भा-२. ५८ होइ इ, होइ व भा-२. ५९ पामीवानें इ, पामवानो व, पामवाना भा-२. ६० वरवो इ व भा-२ ६१ अनइ व भा-२; इ मा नथी. ६२ पामी इ व भा-२. ६३ होइ इ व भा-२ ६४ तेन्हु इ, तेह्नुं व, तेह्नो भा-२. ६५ यत्न भा-२. ६६ करवुं इ व भा-२. ६७ घणुंइ, घणूं व भा-२. ६८ होइ इ, होइ व भा-२. ६९ अनइ इ व भा-२ ७० रहिं इ. ७१ परिं इ, परें व भा-२. ७२ राषीयें इ व भा-२ ७३ नहिं इ व. ७४ तो इ व भा-२. ७५ विणसइ इ, वणसे व भा-२ ७६ अनइ इ व भा-२. ७७ सार्चीयें इ, साचवीयें व भा-२ ७८ तो इ व भा-२. ७९ थोडु थोडु इ, थोडे थोडे व, थोडे थोडे भा-२ ८० आविलीनी व, आमलानी भा-२. ८१ परें इ ८२ वृद्धि इ व भा-२ ८३ पामइ इ व, पामे भा-२. ८४ अनेइ इ, व भा-२ मा नथी. ८५ वावरयो थको इ, वावरयथु व, वावरयूंथू भा-२. ८६ काजलनी इ ८७ परि इ, परि व भा-२. ८८ थोडुं थोडुं भा-२. ८९ करता इ व भा-२. ९० घणु व, इ घणुंइ भा-२. ९१ शाच्यो इ, साच्यु व, साच्यु भा-२ ९२ होइ इ व भा-२ ९३ तोहि व भा-२. ९४ पूटइ इ पूटे व, पूटे भा-२ ९५ अनइ व भा-२; इ मा नथी. ९६ कहे इ व भा-२. [पृ. १०] ९७ जे इ व भा-२. ९८ धनि इ, धने व, धने भा-२. ९९ साधीयेइ इ, साधीयें व भा-२. १०० इ व भा-२ मा नथी. १ धनें इ व भा-२. २ साधीये इ व भा-२. ३ बुद्धिमंति इ, बुद्धिवंते व भा-२. ४ मोटि इ मोटो व मोट भा-२. ५ यत्न इ, यत्नेंइ व, यत्नेंइ भा-२.

'धन' पछी ब अने भा-२ मां 'एक' नथी. ६ माधवुं इ ब भा-२. ७ ये इ, जे ब भा-२. ८ पुरुषनइ इ ब, पुरषनेइ भा-२. ९ होइ इ ब भा-२. १० तेन्हइ इ, तेहने ब, तेहनि भा-२. ११ थाइ इ ब भा-२. १२ केन्हइ इ १३ तेन्हे इ ब, तेहनिइ भा-२. १४ भाई इ ब भा-२. १५ होडि इ; पछी इ मां 'अनेइ', ब भा-२ मां 'अनइ' छे. १६ येन्हे इ, जेह्ने ब. १७ पापमांहि ब भा-२. १८ ब भा-२ मां नथी. १९ वर्हियइ इ, वर्हीं ब भा-२. २० अनेइ इ, अने ब, अनइ भा-२. २१ येन्हइ इ; ब भा-२ मां नथी. २२ 'धन' पछी ब भा-२ मां 'होइ' छे २३ तेन्हु इ, तेहनुं ब भा-२. २४ जीविनव इ, जीवितव्य ब भा-२. २५ प्रमाण इ ब भा-२. २६ धननें इ ब भा-२. २७ वांछना इ ब भा-२. २८ ये इ. २९ पुरुष इ ब भा-२. ३० तीणि इ, तीणें ब, तीणे भा-२. ३१ ये इ भा-२; ब मां नथी. ३२ आगलि इ ब भा-२. ३३ वर्हीये इ ब भा-२. ३४ सकली ब भा-२. ३५ वहे इ ब, वहिइ भा-२. ३६ सबल ब भा-२. ३७ वहें इ ब भा-२. ३८ दान इ, दानप्रकार ब भा-२. ३९ वहें इ, वहें ब भा-२. ४० मधलुं इ, मधलुं ब भा-२. ४१ लिप इ ब भा-२. ४२ वहे इ ब भा-२. ४३ [illegible] इ ब भा-२. ४४ वहें इ, वहें ब भा-२. ४५ धनाढ्यनें इ, धनाढ्यनें ब, धनाढ्यनइ भा-२. ४६ लोकि इ, लोकें ब भा-२. ४७ परय भा-२. ४८ धाइ इ ब भा-२. ४९ अनइ इ ब भा-२. ५० दरिद्रिनि इ, दरिद्रिनि ब भा-२. ५१ तेहे ब भा-२. ५२ थाइ इ ब भा-२. ५३ पमाड्यूं इ भा-२; पमाड्यो ब. ५४ ये इ ब भा-२. ५५ गधलेउं इ, गधलेथी ब भा-२. ५६ पछी ब. ५७ धनाढ्यनें इ ब भा-२. ५८ विंहि इ ब भा-२; ब अने भा-२ मां 'गधला विहे' ए प्रमाणे शब्दक्रम छे ५९ ऊपजें इ ब, ऊपजे भा-२. ६० जिन इ ब भा-२. ६१ परेनथी इ ब भा-२. ६२ ऊपजेइ इ, ऊपजें ब, ऊपजि भा-२. [पृ. ११] ६३ ये इ भा-२; ब मां आ श्लोक छे, पण मंत्री अनुवाद नथी. ६४ पुण्य इ भा-२. ६५ पूजा इ भा-२. ६६ संपय इ भा-२. ६७ होइ इ भा-२. ६८ अने इ, अनइ भा-२; इ मां पछी 'तो' छे ६९ पूर्वनें इ भा-२. ७० अने इ; भा-२ मां आ श्लोकनी पछीनी पंक्तिओ ... अनुवाद नथी. ७१ ये इ. ७२ संपय इ. ७३ न होइ इ. ७४ जिन्हे इ. ७५ नीपजे इ. ७६ पाम्यो इ. ७७ अने इ, अनइ भा-२. ७८ जेन्हे इ भा-२. ७९ संपय इ भा-२. ८० न होइ इ भा-२. ८१ जिन्हे इ, जि॰ भा-२; पछी भा-२ मां 'पछी' शब्द नथी. ८२ जेंहे इ, जेहे

भा-२. ८३ इ मा 'प्रभाव धनयो' ए प्रमाणे शब्दक्रम छे. ८४ जिम इ व भा-२. ८५ जम्या इ, जम्या व भा-२. ८६ पच्छी व. ८७ मघली इ. ८८ इंद्रिय इ व भा-२. ८९ प्रवर्तई इ, प्रवर्त्ते व भा-२. ९० तिम इ व भा-२; पछी इ व भा-२ मा 'सर्वे' छे. ९१ व भा-२ मा नथी. ९२ प्रवर्त्तई इ, प्रवर्त्त व, प्रवर्त्ते भा-२. ९३ कारणथी व भा, व अने भा-२ मा आ पंक्ति आ प्रमाणे पूरी थाय छे: 'सर्व पदार्थ धनथी ज साधीये, धन पाये न मधाइ [सधायेइ].' साथेना कौंसमा भा-२ नुं पाठान्तर छे. ९४ सर्वनुं इ. ९५ धननइ इ, धनने व भा-२. ९६ अर्थि इ व भा-२. ९७ श्मशानेइ इ, श्मशान व भा-२; पछी व अने भा-२ मा 'पण' छे. ९८ सेवेइ इ, सेवे व भा-२. ९९ छइं इ, छे व भा-२. १०० अने इ, अनइ व भा-२. १ निर्धन इ भा-२, निर्द्धन व. २ पिताइनें इ, पिताने व भा-२. ३ छाडे इ, छोडे व भा-२. ४ छे व भा-२; पछी व अने भा-२ मा 'दूरथी' शब्द छे. ५ सघला व भा-२. ६ मध्यें इ भा-२. ७ व भा-२ मा नथी. ८ तीर्णि इ व, तीर्णे भा-२. ९ घणु इ व, घणूं भा-२. १० होइ इ व भा-२. ११ येइ व भा-२. १२ उपार्जवाना व भा-२. १३ ये इ व भा-२. १४ उपाय इ व भा-२. १५ ऊपजवानो इ व, ऊपजवाने भा-२. १६ अर्थथी व भा-२. १७ होइ व भा-२. १८ प्रकारे इ व, प्रकारें भा-२. १९ मनुष्यें इ भा-२. २० करवु भा-२. २१ ते इ व भा-२; पछी व अने भा-२ मा 'छ' छे. २२ थापण इ, थापणि व भा-२. २३ मूकी इ, मुंकी व मूंकीने भा-२ २४ होइ इ, व भा-२ मा नथी. २५ ते इ व. २६ मध्यें व, मध्ये भा-२, मूळ वि मा 'माटि' पाठ छे, ते भ्रष्ट होई 'माहि' पाठ स्वीकार्यो छे २७ थोडे थोडे इ, थोडे व, थोडे थोडे भा-२. २८ प्रवेश इ व भा-२. २९ अने इ, व भा-२ मा नथी. ३० करीये इ व भा-२. ३१ अने इ, अनइ व भा-२. ३२ ग्राहाग इ, गराध भा-२. ३३ कीजइ इ व, कीजेइ भा-२. ३४ जुठू इ व. ३५ बोल्वुं इ, बोलीये व, बोलीयेइ भा-२. ३६ अने इ ३७ पोटुं इ, पोटुं व भा-२. ३८ पोटु इ व भा-२; व अने भा-२ मा 'पोटुं माप, पोटुं तोल' ए प्रमाणे शब्दक्रम छे. ३९ अनेराइ इ व, अनेरायेइ भा-२. ४० भिक्षाइ इ, भिक्षाई व ४१ सेवा व भा-२. ४२ करशण इ. ४३ अनेइ इ, व भा-२ मा नथी. ४४ विद्याइं इ, विद्या व भा-२. ४५ वुहोरगति इ व, भा-२ मा नथी, 'वुहोरगति' पछी भा-२ मा 'करी' छे. ४६ व्याजवुहोरे इ, व्याज व भा-२. ४७ ईणे इ व भा-२. ४८ उपाये इ व भा-२. ४९ ऊपार्जवुं इ व भा-२. ५० कहें इ भा-२, कहे व. [पृ. १२]

५१ सघला इ ५२ ऊपार्जवाना इ, ऊपार्जवाना व ५३ उपाय मध्य व भा २ ५४ गाधीहाट इ, गाधीनु हाट व भा २ ५५ उत्तम इ व भा २ ५६ व भा २ मा नथी ५७ गाधीहट इ, गाधीनु हाट व, गाधीना हाट भा २ ५८ सोनीहाट व, सोनीहट भा २ पछी व अने भा २ मा 'तेहे' छे ५९ काई इ, काइ भा २ ६० 'ते गाधीना हाट मध्य' व भा २ ६१ गुणु इ व ६२ लीघु इ व, लागू भा २ ६३ गुण इ, गणू भा २ ६४ वेचात्र इ भा २, वचीय व ६५ वाणिज्य इ व भा २ ६६ आ शब्द पछी व अन भा २ मां 'पडित' शब्द छ ६७ प्रकारे व, प्रकार भा २ ६८ वहेइ इ व, वहइ भा २ ६९ पोट इ व ७० पोट्ठ इ व, पोट्ठ भा २ ७१ पोट्ठ व पाट्ठ भा २ ७२ वहायें इ व, वहीयें भा २ ७३ थापणिमाहि इ, थापणिमाहे व, थापणिमांहि भा २ ७४ कीनइ इ व ७५ पाल्हीतो इ व भा २ ७६ ग्रहग इ, ग्राहक व, गराघ भा २ ७७ कीनइ इ कीने व, कीनइ भा २ ७८ कीन इ व, कीनइ भा २ ७९ कीने व, कीजेइ भा २ ८० आणीये इ व आणीयइ भा २ ८१ इणी इ व ८२ परिं इ व पेरे भा २ ८३ ऊपार्जवाना इ व भा २ ८४ वह इ, वहाय व वहीय भा २ पछी व मां 'छ अन भा २ मां 'इइ' शब्दो छे ८५ बोल्यु इ, बोल्यु व बोल्यू भा २ ८६ छइ इ, छ व भा २ ८७ पडित इ व भा २ ८८ तिराणाना व ८९ पूर्व इ, पूर्व व भा २ ९० त्यि इ त्य व भा २ ९१ अनइ इ, अनइ व भा २ ९२ आ इ व, आ भा २ ९३ आवें इ व भा २ ९४ अन इ व भा २ मां नथी ९५ आरक्षीतान इ, ओरखीतान व, आरखीनानि भा २ ९६ पाटे इ व भा २ ९७ आव इ व भा २ ९८ ञुडु इ नडु व नडु भा २ ९९ वहे इ भा २, वह व १०० महाजनना इ व महाजननु भा २ १ धम इ भा २, धम्म व २ बोल्यु इ व, बोल्यू भा २ ३ छइ इ, छे व, छइ भा २ ४ महाजन त भा २ ५ वड्डा इ विग व, वडु भा २ ६ ऊंगी इ भा २, ऊगी व ७ बरीनइ इ, बरी व भा २ ८ जाइ इ व भा २ ९ अनइ इ, अनइ व भा २ १० आरखीना इ व भा २ ११ ग्रहाग इ व, गराघ भा २ १२ आवता इ व भा २ १३ दमीनइ इ व भा २ १४ एहा इ, एहा त भा २ १५ इणा इ, इण व भा २ १६ पागें इ पाग व भा २ १७ तहा इ व भा २ १८ पुत्र इ व भा २ १९ जणा इ, जण्या व भा २ २० पर्णी व २१ होइ इ व भा २ [पृ १३] २२ पाणीया इ व भा २ २३ माहि इ मध्य व भा २ २४ पीयारे इ २५ पूरि इ, पर्णी व, पर भा २ २६ आरखतानी व भा २

२७ गोत्रनन इ व, गोत्रजनि भा-२ २८ वीनवइ इ, वीनवे व, वीनवें भा-२. २९ स्तुति इ व भा-२ ३० करेइ इ, करे व, करें भा-२ ३१ थापणिनो इ व, थापणिनु भा-२. ३२ मुक्ताहारू इ, मुक्ताहार व भा-२ ३३ वेगो इ ३४ मरशेइ इ, मरशे व भा-२ ३५ हु इ व ३६ तूह्मि इ, तून्हे व, तून्हे भा-२. ३७ नैवेद्य इ व भा-२. ३८ करेशि इ व भा-२ ३९ वाणीयो इ व, वाणीयुं भा-२ ४० ग्राहागद्धु इ, ग्राहकमु व, गराघद्यु भा-२. ४१ कग्ता व भा-२ ४२ चित्तमाहि इ, मनमाहि व, मनमाहे भा-२ ४३ व अने भा-२ मा अनुक्रमे आ प्रमाणे पाठ छे 'हर्ष्युंथु चीतवे' 'हरखेंथु चीतवे' ४४ चींतवेइ इ, व अने भा २ मा आ पाठ नथी ४५ मे भा-२ ४६ पृथिवी इ, पृथ्वी व भा-२ ४७ सर्व व भा-२ ४८ धने पूर्ण व, धन पूर्ण भा-२ ४९ अनेरा इ व भा २ ५० शु इ व भा-२ ५१ पामिसि इ व व भा २ ५२ येह इ, ये व भा-२ ५३ पुण्यनइ इ, पुण्यनेइ व, पुरुषनि भा-२ ५४ घणु इ व भा २ ५५ उद्यम इ व भा-२ ५६ करे व भा-२ ५७ तेन्हेइ इ, तेहने व, तेहन भा-२ ५८ धन इ, धने व भा-२ ५९ वाधे इ व भा-२ ६० निम इ व भा-२ ६१ ये भा-२ ६२ तीणि व, तेणे इ, तेणे भा-२, पछी व अने भा-२ मा 'करी' शब्द छे ६३ वाधीये इ भा-२, वाधीये व ६४ ये इ, भा-२ मा नथी ६५ देशान्तरे इ, देशातर व भा-२ ६६ जैनइ इ भा-२, जैन व ६७ लेई इ व भा-२ ६८ जाणे इ, जाणें व भा २ ६९ ति व ७० वस्तुना इ व भा २ ७१ अनइ इ व भा २ ७२ त्रिमणा इ व भा-२ ७३ दाम इ व भा-२, व अने भा-२ मा आ शब्द 'त्रिमणा' पछी छे ७४ पाम इ व भा-२ ७५ परदेशन इ, परदेशनइ व, परदेश भा-२ ७६ विपइ इ, विप व भा-२ मा नथी ७७ जाइ इ, जाता व भा २ ७८ वींहे इ, वींहे व भा-२ ७९ अनेइ इ, अनइ व भा २ ८० मायाइ इ व भा-२ ८१ नीगमे इ, नींगमे व, न पामे भा-२ ८२ जें ह ८३ काग व ८४ अनेइ इ, अन व, अने भा-२ ८५ अनइ इ भा-२, अनेइ व ८६ एतला इ व भा-२ ८७ इ अने वि मा आ पाठ 'जे' छे ते भ्रष्ट छे, व अन भा-२ मानो पाठ मुख्य पाठ तरीके स्वीकार्या छे ८८ देशनेट इ, देश व, देशन भा-२ ८९ विपेइ इ भा २, विपे व ९० नाशन इ, नाश व भा-२ ९१ पामेइ इ, पाम व भा-२ ९२ बोल्यु इ, बोल्युं व भा २ ९३ छइ इ, छे व भा २ [पृ १४] ९४ समर्थन इ व, समर्थ भा-२ ९५ काई इ व, काई भा-२ ९६ भारे इ, भार व भा २ ९७ नर्नी इ, नन्ी व भा-२, आनी पछी व अने भा २ मा श्लोकना

अनुवादनी नीचेनी पंक्तिओ मळे छे वाक्यनो अनुवाद ते वक्रमा नथी व ना पंक्ति 'प्रियवक्तानें कोइ वैरी नहा' भा २ नी पक्तिओ, 'व्यवसाइयानिं कांइ वेगलू नही, रुडी विद्याना वणीनं विदेश नहीं, प्रिय वक्तानें कोइ वैरी नहीं ९८ व्यव साइयान इ ९९ कांई इ १०० वेगल इ १ नहीं इ २ अनइ इ ३ विद्यावतन इ ४ वहोड इ ५ परदेश इ ६ नहीं इ ७ हाइ इ ८ अनिइ ९ तेन्ह इ १० वैरी इ ११ नहीं इ १२ सहू इ १३ हाइ इ १४ य इ व भा २ १५ बाहिर इ भा २, बाहरि व १६ नीक्लीनइ इ, नीक्लान व, नीक्लान भा २ १७ अनेक इ व भा २ १८ आ शब्द पछी, इ व भा २ मा 'एहा' छे १९ सत व भा २ २० वन्श इ २१ नाइ इ, व भा २ २२ कुआनो इ व भा २ २३ डडक इ भा २, डेडको व २४ नाणनो इ व भा २ २५ एहू इ, एहु व भा २ २६ वर्द्धमान इ व भा २ २७ नाम इ व भा २ २८ वाणीया इ, वाणीयु व भा २ २९ रातिं इ व भा २ ३० चीनवीनइ इ व भा २ ३१ प्रात काळि व भा २ ३२ निधि इ व भा २ ३३ रुडा इ भा २ ३४ एहवे इ एह व, एहवे भा २ ३५ दिवसि इ, दिवसि व भा २ ३६ वडानी व भा २ ३७ मागीनइ इ, मागीनि व भा २ ३८ मथुरा इ व भा २ ३९ नइरी इ, पछी भा २ मा 'नाम' छ ४० प्रतिइ इ, प्रति व, प्रतिं भा २ ४१ इ मा नथी ४२ व मा नथी इ मां *योग्य य' अन भा २ मा 'याग्य ज' ए प्रमाण शब्दक्रम छे ४३ तहें इ* व, तहन भा २ ४४ लइनइ इ व, ल्यइनइ भा २ ४५ गाडइ इ, गाडि व, गाढे भा २ ४६ व भा २ मां नथी ४७ चोतरीन इ, चातरीनइ व, चोतरी-निइ भा २ ४८ साथ व साथि भा २ ४९ सघाति इ व भा २ ५० चाल्या इ व भा २ ५१ वर्द्धमाननइ इ वर्द्धमानन व, वर्द्धमाननइ भा २ ५२ व अन भा २ मां 'वि उत्तम' ए प्रमाण शब्दक्रम छे ५३ नाम इ व भा २ व अन भा २ मा 'नाम नंदक' ए प्रमाण शब्दक्रम छे ५४ नाम इ व भा २ व अन भा २ मा 'नाम सर्जीवक' ए प्रमाण शब्दक्रम छे ५५ आगल्या इ, आगल्थी व भा २ ५६ मुख्य पाठनी प्रत बि मां द्वारेवि' एवा पाठ छ ते सनायवाचक न जणाता इ व अन भा २ मां मळता 'धुर वहइ' पाठ मुख्य पाठ तरीके स्वीकार्या छे ५७ एहवा भा २ ५८ वाग इ व भा २ ५९ चाल्ता भा २ पछी व मा 'थिका' अन भा २ मां 'थका' शब्द छ ६० घणे इ व, घण भा २ ६१ भार इ व भा २ ६२ विद इ भा २, वहि व ६३ चन्द्रमाहि इ व, वन्दमा भा २ ६४ एहे व, एहव भा २ ६५ नामें इ व

भा-२. ६६ व अने भा-२ मां नथी. ६७ पछी व अने भा-२ मा 'ते'. ६८ यमुनानेई इ, यमुनानें व, यमुनानिं भा-२. ६९ कांठइ इ, कांठे व भा-२. ७० ये इ, जे व भा-२. ७१ झरण इ, निर्झरनी झरण व भा-२. ७२ तीणे इ, तीणें व भा-२. ७३ हौंडे व भा-२. ७४ तिहां इ व भा-२. ७५ पूतो इ व भा-२. ७६ पग इ व भा-२. ७७ अनइ इ; व भा-२ मां नथी. ७८ तीणें इ व, तेणे भा-२. ७९ तिहां इ व भा-२. ८० बैटो इ, बेठो व भा-२. ८१ तिवार इ व भा-२. ८२ पछी व. ८३ इ व भा-२ मा नथी. ८४ वर्द्धमान इ. ८५ °नें भा-२. ८६ संजीवकनें इ, व भा-२ मां नथी. ८७ बैटो इ; व भा-२ मा नथी. ८८ अनेइ इ. ८९ 'पग' शब्द पहेला व मां 'बलदनु' अने भा-२ मा 'बलदनो' शब्द छे. ९० देपीने इ, देपीनइ व, देपीनि भा-२. ९१ दुखे इ, अति दुःख व भा-२. ९२ पामतौ इ, पामतो व, पाम्यो भा-२. ९३ हौंउ इ व, भा-२ मां नथी. ९४ ऊपरि इ व, उपरि भा-२. ९५ स्नेह इ व भा-२. ९६ निणि इ, व भा-२ मां नथी. ९७ व भा-२ मा नथी. ९८ पीयाणुं इ, पीयाणु व, पीयाणूं भा-२. ९९ भाजी व भा-२. १०० तिहा इ भा-२. १ रह्यो इ, रह्यु व, रह्युं भा-२. २ तिवार इ व भा-२. ३ वर्द्धमाननें इ व, वर्द्धमाननिं भा-२ ४ दुपित इ, दुःखे व, दुखे भा-२. ५ थो इ, करी व भा-२. ६ रह्यु इ, रह्यो व भा-२. ७ देपी इ, देपीनइ व, देपीनि भा-२ ८ वहता इ व भा-२. ९ हौआ इ व भा-२. १० वर्द्धमान इ व, वर्द्धमाननुं भा-२; पछी भा-२ मां 'एक' नथी. ११ बलदने इ व भा-२. [पृ. १५] १२ काजे इ, काजे व, भा-२. १३ वनमाहि इ भा-२, वनमाहिं व. १४ एहे इ व भा-२. १५ ठामि इ व, ठाम भा-२. १६ सर्व व भा-२. १७ काइ इ, काइ व, काई भा-२. १८ सदेहमाहि इ भा-२, सदेहमाहे व. १९ पाछ्या इ, पाछ्यु व भा-२. २० छेइ इ; व भा-२ मा नथी. २१ थोडानें इ व, थोडानिं भा-२. २२ काजे इ, काजे व, काजेइ भा-२. २३ वहे इ व भा-२ २४ ये इ, जे व भा-२. २५ पुरुष इ व भा-२. २६ तीणें इ भा-२, तीणे व. २७ थोडानै इ, थोडाने व, थोडानें भा-२. २८ काजे इ व, काजे भा-२. २९ घणानु व. ३० पुरुषनी इ व, पुरुषनी भा-२. ३१ चतुरी इ ३२ थोडें इ, थोडु व भा-२. ३३ जातें इ भा-२, जाते व. ३४ घणुं इ, घणु व. ३५ रापीयें इ व भा-२. ३६ वर्द्धमान इ व भा-२ ३७ गहुं इ व भा-२. ३८ साधीनु व ३९ सांभलीनइ इ, साम्भलीनि व, साम्भलीनें भा-२. ४० बलदने इ, बलद तेहनें व भा-२. ४१ रायाने इ व भा-२. ४२ वन मध्य व भा-२. ४३ पुरुष इ, सेवक व भा-२; पं २६

पछी व अने भा-२ मां 'राजा' शब्द छे. ४४ मुंढीनइ इ, मुढीनं व भा-२. ४५ अनेरो इ व भा-२. ४६ जोतरीनइ इ, जोतरीने व, जोतरीनं भा-२. ४७ थाक्यो इ. ४८ संघातें इ; व अने भा-२ मां 'संघातें साथि' एवो शब्दक्रम छे. ४९ चाल्यो इ व भा-२. ५० मूक्या इ, मूंक्या भा-२. ५१ पुरुष इ व भा-२. ५२ देखीने व भा-२. ५३ सर्जावनें इ व भा-२. ५४ छांडीनइ इ, छांडी व भा-२. ५५ बीजइ इ, बीजे व भा-२. ५६ दिनिसि व भा-२. ५७ वर्द्धमाननइ इ, वर्द्धमानने व भा-२. ५८ आवी व भा-२. ५९ मित्या इ व भा-२. ६० अनइ इ भा-२, अने व. ६१ वर्द्धमाननें इ, वर्द्धमान व भा-१-२. ६२ आगलि इ व भा-२. ६३ जटूं इ व भा-२. ६४ वदता व भा-२. ६५ हांआ इ व भा-२. ६६ स्वामिन् व भा-२. ६७ मुज व, मुंज भा-२. ६८ अनइ इ व भा-२. ६९ अम्हनें इ, अम्हने व, अमन्हें भा-२. ७० घणुं वाल्हो तीणें इ; व मां 'वाल्हो घणुं तीणे' अने भा-२ मां 'वाल्हो तेणं घणूं' ए प्रमाणे शब्दक्रम छे. ७१ तन्हें इ, तेहनें व भा-२. ७२ अम्हें इ. ७३ अभिप्राह भा-२. ७४ व भा-२ मां नथी. ७५ एहूं इ व भा-२. ७६ जटूं इ व भा-२; पछीनो 'बोहूं' शब्द इ व भा-२ मां नथी. ७७ बोल्यो इ; व अने भा-२ मां 'वर्द्धमान आगलि बोलीनइ' एवो शब्दक्रम छे. ७८ वर्द्धमान इ. ७९ अनइ इ; व भा-२ मां नथी. ८० साथे इ, संघाति व, संघातिं भा-२. ८१ चाल्या व भा-२. ८२ अनइ इ, पछइ ते व, पछे ते भा-२. ८३ ते भा-१ इ व, भा-२ मां नथी. ८४ युमुनाना भा-१ इ, यमुनाना व भा-२. ८५ व अने भा-२ मां 'टाढा वायु' एवो शब्दक्रम छे. ८६ लेईनइ भा-१ इ भा-२, लेइनइ व. ८६ ८७ थात हशे. ८८ शरीरनें भा-१, शरीरेनि इ, शरीरेनें व, शरीरनें भा-२. ८९ होइ व, होई भा-२. ९० पछइ भा-१ इ, पछइ व, पछि भा-२. ९१ ऊठीनइ भा-१ इ, ऊठीने व, उठीनइ भा-२. ९२ यमुनाना हशे. ९३ तटनइ भा-१ व भा-२, त्रटनइ इ. ९४ विषइ भा-१ इ, विषे व भा-२. ९५ सरपा हशे. ९६ नीला व. ९७ तृण हशे. ९८ सरपो हशे. ९९ बलवन्तू भा-१, बलवत्त भा-२. १०० होउ हशे, आ शब्द पछी भा-२ मा 'गाढा मोटा शब्द करतो होउ' आवे छे, ए पंक्ति भा-१ इ अने व मा पछीनी एक पंक्ति पछी मळे छे. १ अनइ भा-१ इ, व भा-२ मां नथी २ पाध हशे. ३ थ्युं हशे ४ अनइ इ भा-२, अनेइ व; भा-१ मां नथी. ५ शीगे भा-१ इ, शीगे व, शींग भा-२. ६ अनइ भा-१ इ, नें व भा-२. ७ मुंडं भा-१, मुइं इ, मुंडनि व, मुंडनें भा-२. ८ फणइ भा-१ इ, विदारतो होउ व भा-२. ९ गाढं भा-१ इ,

गाढा व. १० शब्दने भा-१ इ, शब्द व. ११ व अने भा-२ मां 'फरतो हौंउ' ए शब्दोथी वाक्य पूरु थाय छे १२ तिहा इ. १३ रहतो भा-१ इ. १४ हौंउ हस्रो १५ एह्नु हस्रो. १६ वहें हस्री. १७ ते हस्री. १८ साधु भा-१ इ व, साचु भा-२ १९ तिष्ठति ० इ. [पृ. १६] २० येन्हे भा-१ इ, येहने व, येहनेइ भा-२. २१ राषे भा-१ इ भा-२, राषे घ. २२ नहीं भा-१ इ व. २३ तेन्हे भा-१ इ, तेहने व, तेहने भा-२. २४ रापइ भा-१ इ, राषे व भा-२. २५ तु भा-२. २६ घणु व. २७ रहे हस्रो २८ अनइ भा-१ इ; व अने भा-२ मा नथी. २९ मनुष्य हस्रो. ३० येन्हे भा-१ इ, जेन्हे व, जेहनिइ भा-२. ३१ मोटे भा-१ इ, मोटिं व, मोटे भा-२. ३२ यत्न भा-१ इ भा-२, यत्ने व ३३ रापि भा-१, राषे इ व भा-२. ३४ तेन्हे भा-१ इ व, तेन्हे भा-२; आ शब्द पहेलां व मां 'अने' अने भा-२ मां 'अनइ' छे ३५ रापइ भा-१ इ, रापे व भा-२ ३६ पामे भा-१ इ, पामे व, पामे भा-२ ३७ यिम भा-१ इ, जिम व भा-२. ३८ मुक्योथो भा-१, मुकोंथो इ, मुक्यो थको व, मूंक्यो थको भा-२. ३९ जीवइ भा-१ इ, जीव्यो व भा-२. ४० अनइ भा-१ इ भा-२, अने व ४१ मोटे भा-१ भा-२, मोटे इ, मोटो व. ४२ यत्ने भा-१, यत्न इ व भा-२ ४३ घरमाहिंथी भा-१ व, घरमाहिंथीं इ, घरमाहेथी भा-२ ४४ राख्यो हस्रो ४५ विनाशने भा-१, विनाश इ व भा-२ ४६ पामइ भा-१, पामें इ भा-२, पामें व. ४७ वनमाहि इ, वन मध्यें व, वन मध्ये भा-२. ४८ पिंगलक इ व भा-२ ४९ एहें इ. ५० नामे इ व भा-२. ५१ सिंह इ व भा-२ ५२ अनेइ इ, व भा-२ मा आ शब्द नथी पण त्या ते बन्नेमा 'रहे' व, 'रहे' भा-२, पाठ छे ५३ सुपने इ, सुपने व भा-२. ५४ अनुभवतो इ, अनुभवतो थको व, अनुभवतु थकुं भा-२. ५५ रहतो इ व भा-२ ५६ हौंउ इ व भा-२ ५७ सिंहने इ, सिंहने व भा-२ ५८ अभिषेक राज्यनो इ, राजाभिषेक व भा-२ ५९ दें इ, दें व भा-२. ६० अनइ इ व भा-२ ६१ राज्यपदे व, राज्यपदवीनो भा-२ ६२ वैसारवानो इ, वैसारवानो व, करवानो भा-२. ६३ करें इ, ये व भा-२. ६४ तोहइ इ. तोहि व, तोहे भा-२. ६५ सिंह इ व भा-२, व-भा-२ मा 'पराक्रमे' पछी 'सिंह' आवे छे. ६६ आपणें इ व भा-२. ६७ पराक्रमे इ व भा-२, पछी व मा 'करीनेइ' अने भा-२ मां 'करीने' छे ६८ उपार्जइ इ, ऊपार्जे व भा-२. ६९ अनइ इ, व भा-२ मा नथी. ७० मृगनु इ, मृगनो व भा-२. ७१ स्वामी इ व भा-२. ७२ आफणीयें इ, स्वयमेव व भा-२. ७३ थाइ इ व, थायि भा-२; इ मा आ श्लोकनो

मूळक अनुवाद अने आगळनो भागना संक्षेप नीचे प्रमाणे छे :

'बीजा राजा राज्यपद [न] दे, अभिषेक [न] करइ तोहीइ सिंह अटवी-मृगमाहि अभिषेक विना आपणि बलि राजा थाइ मृगपति.

ते वनमाहि पिंगल सिंह संजीव वृषभनो शब्द सांभळी आकुलित हृदय हौउ. पछइ एक करटक दमनक नामि शीयाल ते आवी प्रधानना पुत्र मत्या ए दृष्टांत चालिस्से.'

७४ वेहेइ इ, वो व भा-२. ७५ भा-२ मां नथी. ७६ पिंगळक इ व भा-२. ७७ सिंह इ व, सिंह भा-२. ७८ मृगे इ व, भा-२. ७९ परवरयो इ व भा-२. ८० थयो इ व भा-२. ८१ पाणी इ व भा-२. ८२ पीवाने इ व भा-२. ८३ युमुनानइ इ, यमुनाने व, यमुनानें भा-२. ८४ तीर भा-२. ८५ आवनो इ व भा-२. ८६ हौउ इ व भा-२. ८७ तिवार इ व भा-२. ८८ ते इ व भा-२. ८९ सिंह इ व भा-२. ९० वृषभनो इ व भा-२. ९१ वेगलाथी इ, वेगलाथी व भा-२. ९२ मोटो व भा-२. ९३ सांभलतो इ व भा-२. ९४ हौउ इ व भा-२. ९५ शब्द इ व भा-२. ९६ पछेइ व, पछी भा-२. ९७ भयभीत इ व भा-२. ९८ थयो इ व भा-२. ९९ तलइ इ, तलें व, तले भा-२. १०० करीनइ इ, करीनेइ व, करीने भा-२. १ रहतो इ व भा-२. २ हौउ इ व भा-२. ३ पछइ इ, पच्छेइ व. ४ तेनी पछी इ मा 'एहे' अने व भा-२ मां 'एहें' शब्द छे. ५ नामें इ व भा-२. ६ एहे व भा-२. ७ नामें इ व भा-२. ८ प्रधानना इ व भा-२. ९ पुत्र इ व भा-२; पछी व अने भा-२ मां 'हौआ' शब्द छे. १० अनइ इ व भा-२. ११ प्रधानवटथी व भा-२. १२ छंडाव्या इ व भा-२. १३ संघातें व भा-२. १४ हींडता व भा-२. १५ था इ, थका व भा-२. १६ परस्पर इ व भा-२. १७ हौआ इ व भा-२. १८ विहुंमाहि इ, बिहिमाहि व भा-२. १९ कहितो भा-२. २० हौउ इ व भा-२. २१ आपणो इ व भा-२ २२ स्वामी इ व भा-२, पछी व अने भा-२ मा शब्दक्रम आ प्रमाणे छे : 'पिंगलक सिंह तृषार्त्त थयो' २३ सिंह इ. २४ यमुनातटनेइ इ, यमुनाना तटनइ व भा-२. २५ विषय इ, विषेइ व भा-२. २६ सेनानुं इ, सेनानूं व, सेनानू भा-२. २७ रचीनइ इ, रचीने व, रचीनेइ भा-२. २८ मननइ इ भा-२, मननेइ व. २९ विषइ इ, विषे व भा-२. ३० दुश्चित्त इ व भा-२. ३१ ते इ व भा-२. ३२ शुं इ व भा-२. ३३ तिवार इ व भा-२. ३४ कहतो इ व भा-२; पछी आ नवेय

प्रतोमा 'हौउ' छे. ३५ पछी इ मां 'आपणइ', व भा-२. मां 'आपणे' छे. ३६ ईर्णे इ व, ईणे भा-२. ३७ व्यापारें इ व, व्यापारे भा-२. ३८ करीशेइ इ, करीशे व भा-२. ३९ पूर्वेइ इ, पूर्वे व, पूर्वे भा-२. ४० बोरयुं इ भा-२, बोल्यु व. ४१ छइ इ व, छिइ भा-२. [पृ. १७] ४२ पछी भा-१ मा 'सीयाल' शब्द छे. ४३ कहितो भा-१, कहतो इ, बोल्यो व, बोल्यु भा-२. ४४ भा-२ मा नथी. ४५ किम हस्रो. ४६ भा-१ मां आनी पछी 'सीयाल' शब्द छे ४७ कहितो भा-१, कहतो इ व भा-२. ४८ हौउ हस्रो.

[खीलो खेंचनार वानर]

१ व भा-२ मा आ शब्द पछी 'स्थानि' छे. २ नगरनइ भा-१ इ, नगरनेइ व, नगर भा-२. ३ समीपि भा-१ व, सीमीपि इ, समीर भा-२. ४ वाणीयाने ह्रस्रो. ५ पुत्रे भा १ इ भा-२, पुत्रे व. ६ वनमाहि भा-१ इ व, वनमाहे भा-२. ७ देवतानो व भा-२. ८ प्रसाद भा-१ इ. ९ करावो भा-१, करावशो इ भा-२, करावा व. १० माड्यो भा-१ इ, माड्यो व भा-२. ११ जे भा-१ इ, ये व भा-२. १२ सूतहार भा-१ इ, सूत्रधार व भा-२. १३ अनेरा ह्रस्रो. १४ काम ह्रस्रो १५ करें भा-१ व भा-२, करे इ. १६ ते भा- इ भा-२. १७ मध्याननइ भा-१, मध्याह्ननइ इ, मध्याह्न व भा-२. १८ समइ भा-१, समय इ भा-२, समये व. १९ भोजननइ भा-१ इ, भोजन व, भोजनने भा-२. २० अर्धि व, आ शब्द पछी व भा-२ मा 'सहू' छे २१ मध्ये व, मध्ये भा-२. २२ आवें भा-१ इ. २३ ते ह्रस्रो, आनी पहेला व भा-२ मा 'तेहे' छे. २४ वनमाहि इ, वनमाहे भा-२. २५ कदाचि भा-१ इ भा-२ २६ भ्रमतुं भा-१ इ, भमतु व, भमतु भा-२. २७ वानरनुं यूथ भा-१, वानरनु यूथ इ, वानरनुं यूथ व, वानरनूं यूथ भा-२ २८ आवतुं भा-१ इ भा-२, आवतु व. २९ हौउ भा-१ इ, होउ भा-२ ३० प्रसाद भा-१ इ, प्रासाद व भा-२. ३१ समीपि ह्रस्रो ३२ आव्युं भा-१ इ व, आव्यूं भा-२. ३३ तिहा ह्रस्रो ३४ सूत्रधारि भा-१ व, सूत्रधारि इ भा-२. ३५ अर्जने व ३६ विदारयो ह्रस्रो. ३७ ते माहि भा-१, वहरना मध्यें व, वहरनां मध्ये भा-२. ३८ वेरनो भा-२ ३९ मेह्यो ह्रस्रो. ४० तिहां ह्रस्रो. ४१ ऊपरि ह्रस्रो. ४२ प्रासाद ह्रस्रो ४३ ऊपरि ह्रस्रो. ४४ यथेष्ट ह्रस्रो. ४५ हौआ ह्रस्रो. ४६ तेह ह्रस्रो. ४७ वानर मध्य ह्रस्रो. ४८ वानर ह्रस्रो. ४९ अति चपलपणाथी व भा-२; आ शब्द

पछी अन्य हप्रो मां 'ते' छे. ५० विदारपा भा-१ इ, विदारयो व भा-२; पछी व भा-२ मां 'ये' छे. ५१ ऊपरि हप्रो. ५२ वइसीनइ भा-१, वेइसीनइ इ, बिसीनइ घ, वेशीनइ भा-२. ५३ ते भा-१ इ; व भा-२ मां नथी. ५४ काष्ठ-धंधननुं भा-१, काष्टबंधननु व. ५५ छोडीनइ हप्रो. ५६ एहुं हप्रो. ५७ हींओ भा-१, हीउ इ व भा-२. ५८ वानरो इ व भा-२. ५९ °माहि भा-१, माहि इ, मध्यें व भा-२. ६० कुष्टं भा-१ इ, व भा-२ मां नथी. ६१ पीलो हप्रो. ६२ बेसारयो हप्रो. ६३ छइ भा-१ इ, छे व भा-२. ६४ एहं व. ६५ थको भा-१ व भा-२, हीउ इ. ६६ व्योहो घ, व्यो भा-२; इ अने भा-१ मां 'व्युहो' छे; मुख्य प्रतमां 'बीजइं' छे; मूळ संस्कृत 'पाणिभ्यां' अने 'वेसे' ना अर्थनां बीजी प्रतोना पाठान्तरो साथे सरखावता 'बीजइं' पाठ भ्रष्ट गणी 'व्युहो' स्वीकार्यो छे. ६७ हाथे हप्रो. ६८ हीउ हप्रो. ६९ तिवार भा-१ इ, तिवारें व भा-२. ७० पछी भा-१ इ, व भा-२ मां नथी. ७१ ते हप्रो. ७२ नीकलतां भा-१ इ, काढतां व भा-२. ७३ व भा-२ मां नथी. ७४ लाकडमाहि इ भा-१. ७५ अनेइ इ व भा-२. ७६ आ शब्द पछी व भा-२ मां 'पछइ' छे ७७ व भा-२ मां नथी ७८ मुउ भा-१, मुंउ इ व भा-२.

७९ आ शब्द पछी व भा-२ मां 'हुं' छे. ८० कहुं हप्रो. ८१ छुं हप्रो. ८२ ये इ, ज्ये भा-१. ८३ अव्यापारेषु हप्रो. ८४ करवो हप्रो. ८५ आपणइ भा-१ इ, आपणि घ, आपण भा-२ ८६ पाता घ. ८७ ऊगरयो भा-१ इ, ऊगरयु व, ऊगरयुं भा-२ ८८ छइ भा-१ इ, छे व भा-२. ८९ ते व भा-२. ९० ईणे भा-१, ईणें इ व भा-२. ९१ व्यापारे भा-१, व्यापार इ, व्यापारें व भा-२. ९२ शुं हप्रो ९३ तिवार हप्रो. ९४ कहे भा-१ इ व, कहि भा-२. ९५ छइ भा-१ इ, छे व भा-२. ९६ तो भा-१ इ, तु व भा-२. ९७ तु व ९८ पछी व भा-२ मा 'न' छे. ९९ छइं भा-१ इ, छें व भा-२. १०० ये भा-२. १ एहवुं भा-२. २ कहे भा-१ व, कहे इ, किहें भा-२. ३ छें हप्रो. ४ नहीं भा-१ इ. ५ बोल्युं भा-१ इ भा-२, बोल्यु व. ६ छइ भा-१ इ व, छि भा-२. [पृ. ११८] ७ मित्रनें हप्रो. ८ करवानें हप्रो ९ अनइं इ, व भा-२ मां नथी. १० स्नानं हप्रो ११ गोपवानें हप्रो. १२ राजानु भा-१ इ, राजानो व भा-२. १३ करवो हप्रो. १४ पंडित इ. १५ आणुं भा-१ इ भा-२. १६ ऊदर भा-२. १७ सौहे व, सहू इ. १८ भरे व, भरें भा-२; पछी व मां 'छे' अने भा-२ मा 'छि' पाठ छे.

१९ भा-१ व भा-२ मा नथी २० ये भा-१ इ, जी व, जे भा-२. २१ जीवतें ह्प्रो. २२ जीवें ह्प्रो २३ घणु ह्प्रो. २४ जीवो ह्प्रो. २५ °परें भा-१ इ, अन्यथा व भा-२. २६ चांचे भा-१ व, चाचे इ भा-२. २७ आपणुं ह्प्रो. २८ मरें ह्प्रो. २९ पंखी इ. ३० तु भा-१ इ; व भा-२ मा 'तो पक्षी' एवो शब्दक्रम छे. ३१ घणाइ भा-१ इ व, घणाए भा-२. ३२ छें ह्प्रो. ३३ ये ह्प्रो. ३४ पुरुषे इ. ३५ थोडुइ भा-१ इ, थोडु व, थोडूं भा-२. ३६ जीवेइ भा-१ इ भा-२, जीवइ व. ३७ अन्य ह्प्रो. मा नथी ३८ हर्डु इ, हर्डे व मा-२. ३९ अन्य ह्प्रो. मां नथी. ४० ज्ञानें भा-१ व भा-२, ज्ञानि इ. ४१ भा-१ व अने भा-२ मा नथी. ४२ शौर्यें भा-१ व, शौर्यं इ, शौर्ये भा-२. ४३ सपत्ति व भा-२. ४४ अनेइ भा-१ इ, अने व, अनइ भा-२. ४५ गुणे ह्प्रो. ४६ जीवें भा-१ इ, जीवे व भा-२. ४७ ते भा-१ इ, तेन्हे व, तेहनूं मा-२. ४८ जीव्युं मा-१ व भा-२, जीवुं इ. ४९ परें भा-१ इ, परिं व. ५० घणुं भा-१ इ, घणुइ व भा-२. ५१ जीवें भा-१ इ, जीविं व, जीवे भा-२; पछी व मां 'छिं' अने भा-२ मा 'छेइ' छे ५२ अनेइ भा-१ इ, अनइ व; पछी व मां 'मल विष्टा पाइं' एटलो ज अनुवाद छे ५३ जन्म भा-१ इ भा-२. ५४ सघलो इ भा-२ ५५ वारि भा-१, वारिं इ. ५६ पाईनइ भा-२. ५७ नान्ही इ व भा-२, भा-१ मा आ श्लोक अने तेनो अनुवाद नथी. ५८ थोडें इ व भा-२. ५९ पूराइ इ व भा-२ ६० अनें इ, अनइ व भा-२. ६१ उदिरनी इ, ऊदिरनीं व भा-२. ६२ पशली इ. ६३ थोडि इ, थोडें व भा-२. ६४ पूराइ भा-२. ६५ अनेंइ इ ६६ मुख्य प्रत वि मा 'अति माहांत' भ्रष्ट पाठ छे; 'कापुरुष' नो एवो अनुवाद होई ज न शके एटले इ व भा-२ मा मळतो 'तिम हीन' पाठ स्वीकार्यो छे. ६७ पुरुष इ व भा-२. ६८ थोडें इ व भा-२. ६९ सतोषाइ इ व भा-२ [पृ १९] ७० वांसना इ व भा-२; श्लोक अने तेमनो अनुवाद भा-१ मा नथी ७१ अग्रनेइ इ व, अग्रनेंइ भा-२. ७२ विषइ इ व, विषे भा-१ ७३ वेसइ इ, रहे व भा-२. ७४ ये इ, जे व भा-२. ७५ पुरुष इ व भा-२. ७६ आपणां व ७७ वंशमाहिं इ, वंशमाहि व भा-२ ७८ होइ इ व भा-२. ७९ पुरुषनो इ, पुरुषनुं व, पुरुष० भा-२. ८० व भा-२ मां नथी ८१ माना व भा-२; इ मा नथी. ८२ हरवानें व, हरवानेइ भा-२; इ मा नथी. ८३ आविं व भा-२, इ मां नथी. ८४ आ शब्द पछी व भा-२ मां 'हि' छे. ८५ नदीनें व, नदीने भा-२. ८६ तीरि व, तीर भा-२. ८७ ऊनाइ व भा-२. ८८ ते तृणनो व भा-२.

८९ जन्म व भा-२ ९० जीर्ण व, जीण भा २ ९१ बूड्तु व भा-२ ९२ मनुय व भा २ ९३ आकुलु व, आकूलूं भा-२, पछीना 'थकु हाथि' शब्दो व भा-२ मा नथी ९४ ज्ञनी व, ज्ञ्वी भा २ ९५ रहे व, रहेइ भा-२, श्लोक न ४२ थी ५० सुधीनो भाग इ मां नथी ९६ प्रवर्ततें भा १ भा-२, प्रवर्तत व ९७ मृत व भा-२ ९८ थिको भा-१, थको व, थकु भा २ ९९ वुण भा-१, वुण व भा २ १०० ऊपजतो भा-१ व, उपजतो भा-२ १ ऊपजइ भा १, ऊपजे व भा २ २ छेइ व, छे भा २ ३ तेन्हो भा १, तेहनु व भा-२ ४ गर्णीयेइ भा २ ५ जे भा-१ व, ये भा-२ ६ वशमाहे व, वशमाहिइ भा २ ७ जाणीये भा-१, जाणीयें व भा २ ८ बुद्धे व, बुद्धि भा २ ९ अनइ व भा २ १० चाल्इ व भा-२ ११ अनइ व भा-२ १२ मनुष्यना व भा २ १३ सतारन व भा २ १४ फेडे व, फेडिइ भा २ १५ परिं व भा-२ १६ व भा-२ मां आ प्रमाणे पक्ति पूरि थाय छे 'थोडा ज पुरुष होई' १७ 'ते सपुरुष्य' व भा मां नथी १८ व भा २ मां नथी १९ जे व भा २ २० पुन्य व भा २ २१ व भा-२ मां नथी २२ प्रकट व भा-२ २३ करइ व, करेंइ भा २ २४ ति व २५ पुरुष व भा २ २६ तिरस्कारन व भा २ २७ पामेइ व, पामे भा २ २८ °माहिलो व भा २ २९ प्रकट थ्या व भा २ ३० पावे व भा २ ३१ जन्ये व, जने भा २ ३२ ओला डीने व भा २ ३३ -छे व, छे भा २, पछी व भा-२ मां आ प्रमाणे वधारे शब्द छे 'तिम प्रज्वल्तो वैश्वानर कोइ न ऊलाडे ओलाडे' [पृ २०] ३४ कहतो व भा २ ३५ हौंउ व भा-२ ३६ आपण व भा २, आ शब्द पहेलां व भा २ मां 'अहो दमनक' शब्द छे ३७ प्रधान व भा २ ३८ नहीं व भा २ ३९ इणि व इण भा २ ४० व्यापारि भा २ ४१ तु व भा २ ४२ योग्यु व ४३ छइ व, छिइ भा २ ४४ प्रधान व भा २ ४५ थयो व भा २ ४६ पुरुष व भा २ ४७ आगलि व भा २ ४८ अणपूछ्यो व भा २ ४९ थयो व भा २ ५० कुबुद्दि व भा-२ ५१ व लेइ व, व लेइ भा-२ ५२ अपमान व भा २ ५३ पामइ व, पामें भा २ ५४ अनइ व भा २ ५५ पामद व, पामइ भा २ ५६ व भा २ मां नथी ५७ पुरुषें व भा २ ५८ तिहां व भा २ ५९ मोल्यु व भा २ ६० जिन्हां व भा-२ ६१ मु य प्रत वि मां नथी याल्युं व, बाल्यू भा २ ६२ लागइ व, लागि भा २ ६३ अनइ व भा २ ६४ पामइ व, पामेइ भा २ ६५ अनइ व भा २ ६६ स्थिर व भा-२ ६७ जिम व भा २ ६८ धोले व, धुणे भा २

६९ वब्रि व भा-२. ७० होइ व भा-२. ७१ कहतो व भा-२. ७२ हीउ व भा-२. ७३ भाई व भा-२. ७४ पछी व मां (कौंसमां भा-२ नां पाठान्तर साथे) आ प्रमाणे कथन छे : 'एहुं बोलेरिशि[बोल्यशि] जै[जड].'

७५ मुख्य प्रत वि अने व नी पंक्तिओनो क्रम एकसरखो न होई, पाठान्तरो नोंधतां उभी थती क्लिष्टता टाळवा नीचे व नो पाठ आप्यो छे :

'जे पुरुष प्रधान होइ अनेइ राजानी सेवा न करे ते अप्रधान होइ अनइ अप्रधान थको राजानी सेवा करइ तो प्रधानपणूं थाइ.'

७६ पुरुप भा-२. ७७ प्रधान भा-२. ७८ न होइ भा-२. ७९ अनइ भा-२; पछी भा-२ मा 'जे ए' शब्द छे. ८० सेवा भा-२. ८१ करे भा-२. ८२ ते भा-२. ८३ प्रधान भा-२. ८४ होइ भा-२. ८५ अनइ भा-२. ८६ प्रधान भा-२. ८७ सेवा भा-२. ८८ करेइ भा-२. ८९ तो भा-२. ९० प्रधानपणूं भा-२. ९१ बोल्युं भा-२. ९२ छेइ भा-२. ९३ ये भा-२. ९४ मनुष्य व भा-२. ९५ विद्याहीन व भा-२. ९६ थको व भा-२. ९७ थको व. ९८ रूप भा-२. ९९ थको व भा-२ [पृ. २१] १०० जो व भा-२. १ समीपि व. २ रहे व भा-२. ३ तो व भा-२. ४ तेहनें व भा-२. ५ घणु व, घणूं भा-२. ६ भजे व भा-२. ७ अनइ व भा-२ ८ राजानो व भा-२. ९ स्त्रीनो व भा-२. १० बालीनो व भा-२. ११ पाशे व, पासे भा-२. १२ रहें व, रहे भा-२. १३ तेहने व भा-२ १४ वीटइ व, वीटिइ भा-२. १५ सेवक व भा-२. १६ कोपने व भा-२. १७ सहे व, सहेइ भा-२. १८ अने व, अनइ भा-२. १९ दीधो व भा-२. २० जोइ व भा-२. २१ तेहनें व, तेहनिं भा-२. २२ वहे व, वहे भा-२. २३ पुरुष व भा-२. २४ अणगमता व भा-२. २५ थवाइ व भा-२ २६ थाई व भा-२. २७ जे व भा-२. २८ पुरुष भा-१ व भा-२. २९ हुइ भा-१. ३० ये भा-१, व भा-२ मां नथी. ३१ इच्छाना भा-१ व भा-२. ३२ ये भा-१. ३३ जाणइ भा-१, जाणें व भा-२. ३४ ये भा-१. ३५ पराक्रमी भा-१ व भा-२. ३६ होइ भा-१ व भा-२. ३७ ये भा-१. ३८ सेवा भा-१ व भा-२. ३९ जाणइ भा-१, जाणें व भा-२. ४० तेहंनइ भा-१, तेहने व, तेहनिंइ भा-२. ४१ अनेरो भा-१ व भा-२. ४२ आश्रय भा-१ व भा-२. ४३ नहीं भा-१. ४४ होइ व भा-२. ४५ होइ व भा-२. ४६ यें व, जे

भा-२. ४७ मन्हे व भा-२. ४८ जाइ व भा-२. ४९ तेन्हा व भा-२. ५० पापणुं व भा-२. ५१ जाणिवी व भा-२. ५२ ये इ, जे व भा-२. ५३ पुरुष इ व, पुरुषे भा-२. ५४ कहइ इ, कहे व भा-२. ५५ ये इ. ५६ पुरुष इ व भा-२. ५७ आपणपातु इ, आपणपांतुं व, आपणपातुं भा-२. ५८ असावधानपणुं इ, असावधानपणं व, असावधानपणूं भा-२. ५९ अनइ इ व भा-२. ६० अनइ इ व भा-२. ६१ मूर्षपणुं इ व, मूर्षपणूं भा-२. ६२ प्रकट व भा-२. ६३ करइ इ, करे व भा-२. [पृ. २२] ६४ ये भा-१; इ व भा-२ मां नथी. ६५ उद्यमी इप्रो. ६६ अनइ इप्रो. ६७ बुद्धिमंत इप्रो ६८ ते भा-१ व भा-२; इ मां नथी ६९ सर्पने भा-१ इ, सर्पने व भा-२. ७० व्याघ्रनें भा-१ इ, व्याघ्रनेइ व भा-२. ७१ हाथीनें भा-१ इ. ७२ सिंहनें भा-१, सिहने इ, सिंहनइ व, सिंहनेंइ भा-२. ७३ दृष्टिमानें इ व ७४ वशि भा-१ इ, वश व भा-२. ७५ करें भा-१ व, करे इ, करें भा-२; आ शब्द पछी व भा-२ मां (वीसमां भा-२ नो पाठान्तर छे) नीचे प्रमाणे श्लोकनो अनुवाद पूरो थाय छे :

'एहा बुद्धिमंत अप्रमादी राजानें वश करें [करेंइ]'.

७६ छें भा-१, छे इ ७७ माहिं इ, 'छइ तो राजा रा माहि' आ शब्द व भा-२ मां नथी. ७८ राजानें इ व भा-२. ७९ व भा-२ मां नथी. ८० आश्रईनइं इ, आश्रमीनइ व भा-२. ८१ मोटपणानें इ व, मोटपणानइ भा-२. ८२ पामइ इ व, पामें भा-२. ८३ बिजी परिं इ, अन्यथा व भा-२ ८४ न पामइ इ व, न पामें भा-२. ८५ तिहा इ, व भा-२मां नथी ८६ पछी व भा-२ मां 'जिम' छे. ८७ व भा-२मां नथी. ८८ आ शब्द पछी व भा-२ मां 'न बाधे' एवो पाठ छे ८९ शंकरे व भा-२. ९० मिनातपत्रछत्र इ, श्वेतातपत्रछत्र व भा-२. ९१ अनइ इ व भा-२. ९२ इहा इ व भा-२. ९३ मुख्य प्रत विमां 'उत्म' पाठ छे ते भ्रष्ट लागतां इ व भा-२नो 'उत्तम' पाठ स्वीकार्यो छे. ९४ अनइ इ व भा-२. ९५ मुख्य प्रतमांथी पडी गयेलो आ पाठ इ व भा-२ मांथी लीधो छे. ९६ एतला व भा-२. ९७ वानां इ, पदार्थ व भा-२. ९८ धरितो इ व भा-२. ९९ होइ इ, होई व भा-२. १०० ज्ञोइ व भा-२. १ ईश्वर व भा-२. २ तुमइ इ, तुरि व, तुमे भा-२. ३ कहइ इ व, कहे भा-२. ४ छेइ भा-२. ५ तुं इ व भा-२. ६ शुं इ भा-२, शुं व. ७ हीडइ इ, हींडें व, हींडें भा-२. ८ छे इ व, छेइ भा-२.

९ कहेइ इ, कहतो व भा-२.. १० हौउ व भा-२. ११ सिंह इ, व भा-२मां नथी. १२ आपणा इ, आपणु व भा-२. १३ अनइ इ व भा-२. १४ बीहीनो इ, भय पाम्यो।भा-२, भय पाम्यु व. १५ छइ इ व, छे भा-२. १६ एह्यो इ, व भा-२ मा नथी. १७ बीहींतो इ, बीही व, बीहे भा-२. १८ छेइ भा-२. १९ भयतु इ, भयतू व, भयनूं भा-२. २० जाणीनइ इ व भा-२. २१ अनेरा इ व भा-२. २२ ये व भा-२. २३ तीर्णं इ व, तीर्ण भा-२. २४ सिंहनो इ व भा-२. २५ फीडीशि इ, टालीसि व, टालीसे भा-२. २६ कहइतो इ, बोल्यो व, बोल्यु भा-२. २७ हौंइ इ; व भा-२ मां नथी. २८ व मा नथी. २९ ते व. ३० जाणइ इ, जाण्यौं व, जाणेयें भा-२. ३१ विमा आ पाठ पछी गयेलो लागे छे, छइ इ, छिइ व, छेइ भा-२. ३२ कहतो हौउ इ, बोल्यो व, बोल्यु भा-२. ३३ बुद्धिवंतने इ, बुद्धिवंतने व, बुद्धिमतनि भा-२. ३४ काई इ भा-२, काई भा-२. ३५ अणजाणुं इ, अजाण्यु व, अजाण्यू भा-२. ३६ छे व, छिड भा-२. [पृ. २३] ३७ कह्यो व भा-२. ३८ पछी व मां 'तु' छे. ३९ पछी व मा 'पण' छे. ४० जाणें इ व, जाणेंइ भा-२. ४१ घोडा इ व, घोटा भा-२. ४२ आ शब्द मुख्य प्रतमाथी पडी गयेलो छे ४३ इ व भा-२मां नथी ४४ प्रेरयाथा इ व, प्रेरयाप्या भा-२. ४५ वहें इ, वहिं व, वहे भा-२. ४६ अनइ इ व भा-२. ४७ अणकह्युं इ व, अणकयूं भा-२. ४८ जाणे इ, जाणि व, जाणे भा-२; व अने भा-२ मा त्यार पछीनो अनुवाद नथी. ४९ बुद्धि इ. ५० पीयारो इ. ५१ चित्तनि इ. ५२ जाणइ इ. ५३ विकारेण भा-१ इ. ५४ गृह्यते इ, नायते व भा-२. ५५ आकारें भा-१ व, आकारे इ, आकारे भा-२ ५६ करीइं भा-१, करीइ इ. ५७ गतिं भा-१, व भा-२ मां नथी. ५८ चालिं भा-१ इ व, चाली भा-२. ५९ चेष्टाइं भा-१ इ, चेष्टा व भा-२ ६० वोलें भा-१, वोले इ, वोली भा-२; व मा नथी ६१ आंखि भा-१ व, आंखिं भा-२. ६२ डेपें व ६३ मुखनें व भा-२. ६४ आकारें व, आकारे भा-२. ६५ एतला भा-१ इ. ६६ देषीनइं भा-१, देषीनइ इ, देषी व भा-२ ६७ मनुष्यनुं भा-१ इ, मनुष्यनु व भा-२. ६८ जाणीयेइ भा-१ भा-२, जाणीइ इ, जाणीये व. ६९ एह व. ७० सिहने इ, सिहने व भा-२. ७१ थकी इ व भा-२ ७२ करीनइ इ, करीनिइ व भा-२ ७३ मार्ह्यो इ भा-२. ७४ बुद्धिने इ, बुद्धि व, बुद्धि भा-२. ७५ प्रभावे इ व, प्रभावे भा-२. ७६ करीनइ इ, करीरि व, करीतेइ भा-२; पछी व भा-२ मा 'पछेइ हुं' शब्दो छे. ७७ मारी व. ७८ पामेसि इ, पाम्योस व भा-२. ७९ कहेतो इ, कहतो व

भा-२. ८० हौउ इ व भा-२. ८१ तु इ. ८२ सेवा व भा-२. ८३ जाणें इ व भा-२. ८४ सिहने इ, सिहने व, सिंहनि भा-२. ८५ वश व भा-२. ८६ करेशि इ, करेशे व, करिसेइ भा-२. ८७ कहतो इ व भा-२. ८८ हौंइ इ व भा-२. ८९ आ शब्द मुख्य प्रत वि माथी पडी गया छे, इ व भा-२ मां ते मळे छे ९० जाणूं व ९१ में इ भा-२, मिं व. ९२ बापनइ इ, मावापनइ व, मावापनेइ भा-२. ९३ बोलेइ इ, बोले व भा-२. ९४ बेइठा इ, बेठा व, बेठा भा-२ ९५ नान्हाथा इ व भा-२. ९६ पछी इ व भा-२ मा 'जन' छे. ९७ कहता व, कहिता भा-२ ९८ सभन्यां इ, साभल्या व भा-२. ९९ छे इ, छि व, छेइ भा-२. १०० धर्म्मर्तु इ, धर्मनु व भा-२. १ ते इ व भा-२. २ मे इ, मे व भा-२ ३ हइये इ, हैये व, हैए भा-२. ४ राषुं इ, राखु व, राखु भा-२. ५ छइ इ व, छेइ भा-२. ६ सांभलीये इ व भा-२. ७ छे व, छेइ भा-२. ८ मोनाने भा-१ इ व, सोनाने भा-२. ९ फूले हशे. १० पृथ्वीनें भा-१ इ, पृथ्वी व भा-२. ११ *शिष्य व भा-२.* १२ *पुरुष हशे.* १३ भोगने हशे, आ शब्द पहेला व मां 'ते' छे. १४ एक व भा-२. १५ व भा-२ मां नथी १६ आ शब्द पहेलां व भा-२ मां 'बीजो' छे. १७ होइ भा-१ इ; व भा-२ मा नथी. १८ पछी भा-२ मां 'ये' छे. १९ जाणइ भा-१ इ व, जाणेइ भा-२ २० किम व भा-२. २१ कीजे व भा-२ २२ तिम इ, ते व भा-२. २३ साभलि इ व भा-२. २४ ये इ भा-२. २५ होइ इ भा-२, होई व. २६ अनइ इ भा-२, अनि व. २७ होइ इ व भा-२. २८ आ शब्द पहेला व मां 'ते' अने भा-२ मां 'जे' छे. [पृ. २४] २९ सांभल्ता इ, सांभलें व, साभलेड भा-२. ३० होइ व भा-२ मां नथी. ३१ तेहनी व भा-२. ३२ सेवा व भा-२. ३३ जे इ व भा-२. ३४ राजाने व भा-२. ३५ सेवना व भा-२. ३६ हीउइ इ, हींडे व, हींडेइ भा-२. ३७ तस्य व भा-२. ३८ ये इ व, जे भा-२. ३९ गुणनें इ व भा-२. ४० जाणेइ इ, जाणे व, जाणें भा-२ ४१ *मुख्य प्रत वि मांथी आ शब्द पडी गयेलो छे;* इ व भा-२ मां छे ४२ सेवनो इ व भा-२. ४३ सेव्या इ व भा-२. ४४ होइ इ व भा-२. ४५ जिम इ व भा-२. ४६ ऊरानी इ व. ४७ भुंइ इ भा-२, भुंई व. ४८ घणुंइ इ, घणुं भा-२. ४९ पेहीये इ व, पैहीयेइ भा-२. ५० पणि इ, पण व भा-२. ५१ *वाई इ, व भा-२ मां नथी* ५२ *फलइ इ, फले व, फलेइ भा-२.* ५३ पुष्पनु व भा-२. ५४ ये इ, जे व भा-२. ५५ पुंटानी इ व, पुंटानी भा-२. ५६ परि इ, पिरि भा-१. ५७ फलो इ व भा-२. ५८ रहइ इ, रहे व भा-२.

५९ क्षुधाइ इ, क्षुधाइ व, क्षुधांइ भा-२ ६० व्याप्यो इ व भा-२ ६१ होइ इ व भा-२ ६२ पणि इ ६३ आपणपानं इ भा-२, आपणपाने व ६४ दुख इ व भा-२ ६५ आणइ इ, आणे व भा-२ ६६ व भा-२ मा नथी ६७ वृत्तिन व भा-२ ६८ भोगवइ इ, भोगवे व भा-२ ६९ ये इ व भा-२ ७० सेवक इ व भा-२ ७१ स्वामीने इ व, स्वामीन भा-२ ७२ कृपण इ व भा-२ ७३ देयीनइ इ व भा-२ ७४ स्वामीने इ, व भा-२ मा नथी ७५ वचनें इ व भा २ ७६ करेइ भा-२ ७७ आपणपानें इ व भा-२ ७८ काइ व भा-२ ७९ करइ इ, करेइ व भा-२ ८० स्वामीनं इ व भा-२. ८१ सेवइ इ, सेवतें व भा-२ ८२ ये इ व भा २ ८३ राजान इ भा-२, राजाने व ८४ आश्रयीनइ इ, आश्रयीनेइ व, आश्रयीनिइ भा-२ ८५ भूख्या इ व भा-२ ८६ जाइ व भा २ ८७ फत्या व भा-२ ८८ आक्नी इ व भा-२ ८९ परि व भा-२ ९० छाडिवो इ, छांडवो व भा-२ [पृ २५] ९१ राणीन भा-१, राणीन इ व, राणीनइ भा-२ ९२ राजानीं भा-१, व भा २ मा नथी ९३ मान हप्रा ९४ कुअरनें भा-१ इ, पुत्रनें व भा-२ ९५ वडा प्रधानन हप्रो ९६ पुरोहितन हप्रो ९७ द्वारपालने भा-१ इ, व भा-२ मा नथी ९८ एतलान भा-१ इ व, एतलांन भा-२ ९९ परिं इ, परें व भा २ १०० सेववु हप्रो १ ये भा-१ इ. २ राजाइ हप्रो ३ चालाव्यो हप्रा ४ कहेइ व भा-२ ५ अनइ भा-१ इ भा-२, अनेइ व ६ कार्य व भा-२ ७ दीधु हप्रो ८ नि कपट भा-१, नि कपटपणें व, नि कपट पणिं भा-२ ९ करइ भा-१ इ, करे व, करेइ भा २ १० राजान हप्रो ११ होइ हप्रो १२ राजाइ भा-१ इ, राजायें व भा-२ १३ आप्यु भा-१ इ, आप्यु व भा-२, पछी व भा-२ मा 'जे' छे १४ सुपात्रन भा-१, सुपात्रेंचें इ, सुपात्र विषें व, सुपात्रनइ विषें भा-२ १५ आपइ भा १ इ, आपे व भा-२ १६ अनइ हप्रो १७ राजाइ भा-१ इ व, राजाइ भा-२ १८ आप्यु व भा-२ १९ 'हुए' व भा २मा नथी २० ढीलें भा-१ व भा-२, ढीले इ २१ पहिरइ हप्रो २२ राजान भा-१ इ व, राजाने भा-२ २३ होइ हप्रो २४ ये इ २५ मस्त इ २६ पूछ्यो इ २७ बोलइ इ २८ पाशेइ इ २९ मोटें इ ३० हसइ इ ३१ नहीं इ ३२ राजानइ इ ३३ होइ इ ३४ मत्री व भा-२ ३५ ये इ ३६ रहणारशु इ, रहणारस्यु व, रहणारस्यु भा २ ३७ ये इ, व भा २ मा नथी ३८ करइ इ, करे व भा-२ ३९ अनइ इ व भा-२ ४० राजानइ व भा २ ४१ स्त्रीयगु इ, स्त्रीशु व भा-२ ४२ करइ इ, करे व

भा-२. ४३ ते इ व भा-२. ४४ राजानें इ, राजाने व, राजानइ भा-२. ४५ होइ इ व भा-२. ४६ ये इ भा-२. ४७ गाढे व भा-२. ४८ दोहलइ इ, दोहल्ये व, दोहिलें भा-२. ४९ पडइ इ, पडये व, पड्यौ भा-२. ५० व मां नथी. ५१ मर्यादा इ व भा-२. ५२ छाडइ इ, छाडे व, छाडें भा-२. ५३ हुं इ व भा-२. ५४ राजानें इ भा-२, राजाने व. ५५ मान्या इ व भा-२. ५६ एहु इ व, एहुं भा-२. ५७ जाणतोइ इ, जाणी व भा-२; पछी व मां (व ना पाठ साथे कौंसमां भा-२ ना पाठान्तर छे) 'जैं[जे] मर्यादा रेहेइ[रहे]' ५८ राजानइ इ, राजवल्लभ व भा-२. ५९ होइ इ व भा-२. [पृ. २६] ६० ये इ. ६१ पुरुष इ व भा-२. ६२ शत्रुशु इ, शत्रुशु व भा-२. ६३ वैर इ व भा-२. ६४ वेरे व भा-२. ६५ अनइ इ भा-२, अनई व. ६६ मित्रशुं इ व भा-२. ६७ करे व भा-२. ६८ होइ इ व भा-२. ६९ शत्रुशुं भा-१ इ व भा-२. ७० ये भा-१ इ ७१ करइ भा-१ इ, करेइ व, करे भा-२. ७२ ये भा-१ इ भा-२. ७३ कह्ही भा-१ इ, कहनी व, कहेनी भा-२. ७४ निंदा हस्रो. ७५ करइ भा-१ इ, करेइ व, करे भा-२. ७६ अनइ हस्रो. ७७ करइ भा-१ इ, करे व भा-२. ७८ राजान भा-१ इ भा-२, राजाने व. ७९ होइ हस्रो. ८० ये इ; आ पंक्ति व मां (व ना पाठ साथे कौंसमा भा-२नां पाठान्तर छे) आ प्रमाणे छेः

'जें[ये] सग्रामनें शरणनी परिं जाणइ'

८१ सग्रामनेइ इ. ८२ ठामि इ. ८३ आव्ये इ. ८४ शरण इ. ८५ आव्यानीं इ. ८६ मानइ इ. ८७ अनइ इ व भा-२. ८८ परदेशेने व, परदेशनें भा-२. ८९ परिं व भा-२. ९० चिति इ व, चित्त भा-२. ९१ मानइ इ व भा-२. ९२ राजानें इ, राजवल्लभ व भा-२. ९३ होइ इ व भा-२. ९४ ये इ. ९५ इ मां 'युद्धकालि राजानेइ,' व मां 'युद्धकालि राजानइ,' भा-२ मां 'युद्धकालि राजानेइ' ए प्रमाणे शब्दक्रम छे ९६ आगलिइ व भा-२. ९७ धाइ इ व, धाइ भा-२. ९८ अनें व ९९ पाछलिशु इ. १०० आवइ व, आवे भा-२ १ मुख्य प्रत वि अने इ मांथी आ पंक्ति पडी गयेली छे तेथी मुख्य प्रतना पाठ तरीके तेटलो भाग व मांथी लीधो छे. भा-२ मां आ पाठ आ प्रमाणे छे. 'अनइ राजा घर मध्य जाइ तिवारां राजानिं द्वारि रहे' २ राजानें इ भा-२, राजानउ व. ३ होइ इ व भा-२. ४ ये इ. ५ जू इ व; भा-२ मां नथी ६ रमवानें इ भा-२, रमवाने व ७ बीहइ इ, बीहे व भा-२. ८ यमना इ; व मां 'यमदूतना भयथी बीहि,' भा-२ मां

'यमदूतना भय थकी बीहि,' एवो पाठ छे. ९ दूतथी इ. १० बीहउ इ. ११ अनइ इ व मा-२. १२ जे इ व मा-२. १३ बीहे व भा-२. १४ जिम इ व मा-२. १५ बीहइ इ, बीहे व भा-२. १६ मुख्य प्रत बिअर्नोइ मा नथी, मुख्य प्रतमा बीजा श्लोकमां 'हुई' पाठ छे ते प्रमाणे अहीं पण ते पाठ लीधो छे, ब मा-२ मा 'होइ'. [पृ. २७] १७ ये इ; पछी व भा-२ मा 'प्रधान' छे. १८ राजानो इ ब मा-२. १९ जाणे व मा-२. २० अनेइ इ, व भा-२ मा नथी. २१ जेह्वी इ, जेह्वो व भा-२. २२ व भा-२मा नथी. २३ होइ इ व भा-२. २४ जाणे व भा-२. २५ धर्म इ; अहींथी ब भा-२ मा आगळनो अनुवाद आ प्रमाणे छे: (ब ना पाठ साथे कौंसमा भा-२ना पाठान्तर आप्यां छे.)

'तीगें [तीणं] धर्मि अथवा अधर्मे [अधर्मं] करी राजानो अर्थ साधवो तेन्हा चित्तनें अनुसरता.'

२६ अधर्म्मि इ. २७ धननं इ. २८ तीणे इ. २९ प्रवर्त्तववुं इ. ३० कहेइ इ, कहे व भा-२. ३१ छइ इ, छे व मा-२. ३२ तु इ, तुं व मा-२. ३३ सिंह इ व भा-२. ३४ कन्हइ इ, कन्हे व भा-२. ३५ जैनइ इ, जैने व भा-२. ३६ शुं इ व भा-२. ३७ बोलेशि इ व भा-२ ३८ ते इ व भा-२. ३९ कहेइ इ, कहि व भा-२. ४० कहेतो इ, कहे व भा-२ ४१ हौउ इ, छे व भा-२. ४२ उपरि इ, ऊपरि व भा-२. ४३ उपजइ इ, ऊपजे व, ऊपजि व भा-२. ४४ जिम इ व भा-२. ४५ त्रुटिं इ व भा-२. ४६ नीपनतु इ, नींपनुं व, नींपनूं भा-२. ४७ ये इ ४८ तीणें व, तीणे भा-२ ४९ बीजातर व भा-२. ५० उपजइ इ, ऊपजे व भा-२ ५१ बोल्युं इ. ५२ बुद्धिमंत इ व, बुद्धिमत भा-२ ५३ पुरुष इ व भा-२ ५४ हार्णिथी व, हार्णिथी भा-२. ५५ ऊपजे इ व मा-२. ५६ तेन्हे इ, तेन्हें ब, तेह्ने भा-२. ५७ देवें इ व भा-२. ५८ अनेइ इ, अनइ व भा-२. ५९ उपाय थकें इ, उपायथी व भा-२ ६० ऊपजेइ इ, ऊपजे व भा-२; पछी इ मा 'ये' अने व मा-२ मां 'जे' छे ६१ सगति व भा-२ ६२ तेन्हे इ, तेहने व मा-२ ६३ देये इ, देवें व मा-२. ६४ ते इ व भा-२. ६५ ज्ञायना भा-२. ६६ दृष्टिं इ व भा-२. ६७ अनइ इ, ने व मा-२. ६८ नाश इ, नाशनें व मा-२. ६९ देयइं इ, देवें व भा-२. ७० केतलानइ, केतलानी व भा-२. ७१ वाणी इ व मा-२ ७२ मृडाना व मा-२ ७३ शरषी इ भा-२. ७४ अनइ इ व मा-२. ७५ हैयइ इ, हृदय व भा-२. ७६ मूंगानी इ, मूंगाना व, मुंकाना भा-२. ७७ सरपुं व, शरपुं; पछी व मा

'केतलांनु छे' अने भा-२ मां 'केतलातुं छि' एवा शब्द छे. ७८ अनइ इ भा-२, अनेइ व. ७९ केतलाने व, केतलाएकनें भा-२. ८० हैयइ मुखि इ; व भा-२ मा 'मुखि हृदय' ए प्रमाणे शब्दक्रम छे. ८१ हन्दु इ, हडुं व, हडूं भा-२. ८२ ज इ व भा-२. ८३ होइ इ व भा-२. ८४ बोलो इ. ८५ एहुं व भा-२; आनी पहेलां व भा-२ मा 'तुं' छे. ८६ कहे इ व, कहें भा-२. ८७ छें इ व, छि भा-२. ८८ वहें व भा-२. ८९ वहि इ, व भा-२ मां नथी. [पृ. २८] ९० आ शब्द पछी व मां 'सर्पकांचली' अने भा-२ मा 'सर्पनी कांचली' एवा शब्द छे. ९१ सर्प इ व भा-२. ९२ कांचलीयें इ. ९३ वींटयो इ, वीव्या व, वींव्या भा-२. ९४ हुइ इ, हुइं व, हुयि भा-२. ९५ अनइ इ व भा-२; 'अनइ कुटिल होइ' आ शब्द व मां नथी. ९६ होइ इ, हुंइ भा-२. ९७ अनइ इ व भा-२. ९८ अनइ इ व भा-२. ९९ अनइं इ, अनइ व भा-२. १०० एहा इ व भा-२. १ होइ इ व भा-२. २. अन्यन व भा-२. ३ ये इ. ४ राजानें इ भा-२, राजाने व. ५ थोड़ुंइ इ, थोड़ुइ व, थोडूंइ भा-२. ६ वहउं व भा-२. ७ चींतवें इ, चीतवे व भा-२. ८ अनइ इ भा-२, अने व. ९ वरें इ व भा-२. १० दाहनि इ, दाहने व, दाहनें भा-२. ११ पामि इ, पामें व भा-२. १२ यिम इ, व अने भा-२ मां (व ना पाठ साथे बीजामां भा-२ नां पाठान्तर छे) आ पंक्ति आ प्रमाणे छे:

'जिम पतंगीया[पतंगिया] जिम[भा-२ मां नथी] वैश्वानरनें पामें.'

१३ पामें इ. १४ वैश्वानरमांहि इ. १५ पामें इ १६ राजानुं पद इ, राजपद व भा-२. १७ दुःप्राप्य व भा-२ १८ हुइ इ. १९ सघले इ, सर्वत्र व भा-२. २० न्याई इ, न्यायें व भा-२. २१ चालइ इ, चाले व भा-२. २२ अनइ इ; व भा-२ मां नथी. २३ थोडे इ, थोडें व भा-२; आ शब्द पहेलां भा-२ अने व मां 'स्वल्पें' छे. २४ पाहुइं इ, पाहएं भा-२. २५ कीधें इ; व भा-२ मां नथी. २६ परिं इ व भा-२; पछी इ मां 'हाथियी जाइ,' व भा-२ मां 'हाथिथी नष्ट थाइ' एवो पाठ छे. २७ राजाननें इ, राजानी व भा-२. २८ इ व भा-२ मां नथी. २९ होइ इ व भा-२. ३० दुःखिं इ, दुःखें व, दुखें भा-२. ३१ कन्हे व, कन्हें भा-२. ३२ रहवाइ इ, रहेवाइ व भा-२. ३३ दुखि इ, दुःखें व, दुःखे भा-२. ३४ पामीये व भा-२. ३५ उत्कर्जी इ व भा-२. ३६ परिं व भा-२. ३७ टामि इ व भा-२. ३८ राखना इ. ३९ दोहोल्युं इ, दोहल्युं व भा-२. ४० होइ इ व भा-२. ४१ वधूं व भा-२. ४२ मनुष्यें इ व,

मनुष्ये भा-२. ४३ राज्यमाहि इ, राज्यमाहे व भा-२. ४४ येन्हो इ. ४५ येन्हो इ, जेह्नो व भा-२. ४६ जेह्नो इ, व भा-२ मां नथी. ४७ होइ इ व भा-२. ४८ तेन्हे इ, तेन्हो व, तेह्नो भा-२. ४९ तेन्हुं इ, व भा-२ मां नथी. ५० ते व भा-२. ५१ पैशीनइ इ, पैसीनइ व, पेशीनइ भा-२. ५२ घरबु इ. ५३ अनइ इ व भा-२. ५४ अपाणे व, आपणे भा-२ ५५ वेगुं इ, वेगु व, वेगो भा-२. ५६ कीजइ इ व, कीजेइ भा-२. [पृ. २९] ५७ राजाने व, राजानें भा-२. ५८ सेवकने व, सेवकनेंइ भा-२. ५९ नित्ये भा-२. ६० जे व भा-२. ६१ छंदानुवृत्ती व भा-२. ६२ ते इ व भा-२. ६३ स्थितिनें इ, व भा-२. ६४ पामे इ भा-२, पामें व. ६५ जिवारि इ, जिवारें व, जिवारे भा-२. ६६ क्रोध्यो इ व भा-२. ६७ होइ इ व भा-२. ६८ तिवारें इ व, तिवारे भा-२. ६९ बोलइ इ व, बोलेइ भा-२. ७० अनइ इ व भा-२. ७१ मानइ इ व भा-२; वि ना पछीना शब्द पैकी 'मनि' इ मा नथी, 'मनि ते मानइ' व अने भा-२ मा नथी. ७२ अने इ, अनइ व भा-२. ७३ ये इ. ७४ उपरि इ. ७५ द्वेष इ व भा-२ ७६ करे इ, करेइ व भा-२. ७७ उपरि इ, ऊपरि व भा-२. ७८ द्वेष इ व भा-२. ७९ करइ इ, करें व, करे भा-२. ८० अनइ इ व भा-२. ८१ दाननी इ व भा-२. ८२ करइ इ व, करें भा-२. ८३ प्रधाननें इ व भा-२. ८४ वश इ व भा-२. ८५ छेइ भा-२. ८६ कहतो इ व भा-२. ८७ हौउ इ व भा-२. ८८ आ शब्द पछी व भा-२ मा 'तो तुं जा' एवा शब्द छे ८९ व भा-२ मा नथी. ९० ते इ व, ते भा-२. ९१ एहुं इ व भा-२. ९२ कह्युं इ व, कह्यू भा-२. ९३ तुन्हे इ व भा-२. ९४ कन्हेइ इ; 'सिंह कन्हिइ' शब्दो व भा-२ मा नथी ९५ कल्याण इ व भा-२ ९६ हज्यो इ व भा-२ ९७ अनइ इ भा-२, अने व. ९८ वाछित व भा-२. ९९ पदार्थ इ व भा-२ १०० हज्यो इ, पामजे व भा-२. १ पछइ इ व, पछेइ भा-२ २ करटकनें इ, करटकने व, करटकनि भा-२. ३ करीनइ इ, करीने व भा-२ ४ सिंह इ व भा-२. ५ कन्हे इ व भा-२. ६ देषीने इ, देषीनइ व, देषीनेंइ भा-२ ७ रहीनइ इ, रहीने व भा-२. ८ हौउ इ व भा-२. ९ माह्नो इ व भा-२ १० जूनो इ व भा-२ ११ मिननो पुत्र इ, मिनपुन व भा-२. १२ छे इ भा-२, छेइ व. १३ आवइ इ, आवे व भा-२ १४ च्छइ इ, छेइ व भा-२. १५ वेज्ये इ भा-२, वेज्यो भा-२. १६ तोहेइ इ, तेहेइ व भा-२. १७ रहइ इ, रहेइ व भा-२. १८ तिवार इ व भा-२. १९ तीहां इ, तिहा व भा-२. २० पिंगलकनें इ व भा-२, पं २८

२१ व भा-२ मां नथी. २२ बैठो इ, बेठो व भा-२. २३ तेहइ इ, तेह व भा-२. २४ उपरि॰ इ; व भा-२ मां नथी. २५ पहीनइ इ, पहीनिइ व भा-२. २६ तेन्हें इ, तेहमें व भा-२. २७ नामिं इ, नामें व भा-२. २८ बोलावीनइ इ व, बोलावीनिं भा-२. २९ आपणपे इ, आपणपें व भा-२. ३० बोल्तो इ, बेसतो व भा-२. ३१ हौंउ इ व भा-२. ३२ कल्याण इ व भा-२. ३३ छि इ, छेइ व, छे भा-२. ३४ तुं इ, तूं भा-२. ३५ घणे इ व भा-२. ३६ दिवसे इ व भा-२. ३७ छे इ, छें व भा-२. ३८ कहतो इ व भा-२. ३९ हौंउ इ व भा-२. ४० कांइ इ व भा-२. ४१ अम्रनें इ, अम्हने व भा-२. ४२ वरणनु भा-२. ४३ प्रयोजन इ, व भा-२ मा नथी. ४४ अनेइ इ, अनइ व भा-२. ४५ राजानें व भा-२. ४६ मध्यंम इ. ४७ हौंइ इ, न होइ व भा-२. ४८ थोडुं इ व भा-२. ४९ योग्य इ व भा-२. ५० योलवुं इ व भा-२. ५१ बोल्यु इ व, बोल्युं भा-२. ५२ छइ इ, छे व, छिइ भा-२. [पृ. ३०] ५३ दांत व भा-२. ५४ पोतरवा इ. ५५ कर्ण्ण व, कर्ण भा-२. ५६ पंहुहाल्वाने भा-१ इ, पजूआल्वा व, खंझूआल्वा भा-२. ५७ राजानें हस्यो. ५८ तृणें भा-१ इ, तिणपलें व भा-२. ५९ नाम व भा-२. ६० होइ हस्यो. ६१ पछे भा-१ इ भा-२, पछइ व, आ शब्द पछी व अने भा-२ मां (व ना पाठ साथे कौंसमां भा-२ नां पाठान्तर आप्यां छे.) आगळनो अनुवाद आ प्रमाणे छे :

'पछइ [पछे] शरीरिं वाणी हाथ पग युक्त पुरुषें तिम कार्य न होइ [होई.]१'

६२ येन्हे भा-१ इ. ६३ शरीर भा-१ इ. ६४ वाणी भा-१ इ. ६५ पुग भा-१ इ. ६६ जेन्हे भा-१ इ. ६७ होइ भा-१ इ. ६८ तीणे भा-१, तीणें इ. ६९ राजानइ भा-१ इ. ७० घणुं भा-१ इ. ७१ होइ भा-१ इ. ७२ अने इ, अनइ व भा-२. ७३ अम्हे इ व भा-२. ७४ तम्हारा इ व भा-२. ७५ वैदाना इ व भा-२. ७६ सेवक इ व भा-२. ७७ छुं व भा-२; इ मां नथी. ७८ आपदा व भा-२. ७९ छता व. ८० राउलापृष्टगामी व, राउलापृष्टगामी भा-२. ८१ छुं इ व भा-२. ८२ जोहेइ इ, जोहे व भा-२. ८३ अम्हे इ व भा-२. ८४ स्वामीनू इ, स्वामीनु व, स्वामीनुं भा-२. ८५ कार्य इ व भा-२. ८६ पामता इ व. ८७ तोहेइ इ, तोहे व भा-२. ८८ बोल्यु इ व. ८९ छइं व, छेइ भा-२. ९० °इह व भा-२. ९१ सेवक भा-१ इ भा-२; आ श्लोक व मां छे पण तेनो अनुवाद तेमां नथी. ९२ अनेइ भा-१ इ,

अनइ व. ९३ आपणइ भा-१ इ, आपणे भा-२. ९४ आपणइ भा-१ इ, व मां नथी ९५ ठामि भा-१ इ व ९६ व मां नथी. ९७ जोहइं भा-१, जोहनइ इ, जोहे, पछीनो अनुवाद भा-२ मां आ प्रमाणे छे:

'जोहे आपणगानो मस्तकनो मणि प्रभायुक्त होइ तोहे पगि को न बाधे.'

९८ होइ भा-१ इ. ९९ तोहइ भा-१ इ, पछी भा-१ इ मां 'को' छे. १०० माथइनो भा-१ इ. १ माणिक भा-१ इ. २ पगि भा-१ इ. ३ अनइ इ भा-२. ४ होइ इ व भा-२. ५ होइ इ व भा-२ ६ कुलने इ व, कुलने भा-२. ७ चाल्यो इ व भा-२. ८ आव्यो इ व भा-२. ९ होइ इ व भा-२. १० एह्नोइं इ, एह्नोइ व भा-२ ११ ये इ, व भा-२ मा नथी. १२ सेवकना इ व भा-२. १३ जाणइ इ, जाणे व भा-२ १४ तेन्हें इ, तेहने व भा-२. १५ सेवक इ व भा-२. १६ सेवें इ, सेवा न करें व भा-२. १७ ये इ; पछी व भा-२ मा 'उत्तम' शब्द छे. १८ नींच सघातें इ, नीचशुं व, नीचनुं भा-२. १९ कीजइ इ व, कीजेइ भा-२. २० अनइ इ भा-२, अनेइ व; पछी व भा-२मां 'जे' छे. २१ हुइ इ व भा-२ मा नथी. २२ ते इ व भा-२. २३ समान इ व भा-२. २४ पूजा इ व भा-२. २५ पामे इ भा-२, पामे व. २६ अनइ इ भा-२. २७ करीये इ, कीजेइ व भा-२. २८ एहे इ व भा-२ २९ निण्य इ व, त्रण्य भा-२. ३० प्रकारे भा-२. ३१ सेवक इ व भा-२. ३२ राजाने इ व, राजानि भा-२. ३३ छाडि इ, छांडें व भा-२ [पृ. ३१] ३४ ये भा-१ इ. ३५ सेवकने भा-१, सेवकने इ व भा-२, आ शब्द पहेला व भा-२ मा 'उत्तम' छे, इ मां 'सेवकने उत्तमने' एवो पाठ छे ३६ स्थानने भा-१ इ, स्थानि व, स्थानने भा-२. ३७ विषइ भा-१ इ, विष व, विषेइ भा-२. ३८ मुक्या भा-१ इ, मूक्या व भा-२. ३९ थिका भा-१ इ, °था व, थका भा-२. ४० कर्म्मादि भा-२. ४१ करें ह्प्रो ४२ सेवकनो भा-१ इ व, सेवकने भा-२. ४३ अन्य ह्प्रो. मा नथी. ४४ नहीं ह्प्रो. ४५ छइ इ, छे व, छिइ भा-२ ४६ ये भा-१ इ, जे व भा-२. ४७ मणि ह्प्रो ४८ सुवर्णने भा-१ इ, सुवर्णि व, सुवर्णि भा-२. ४९ आभरणि भा-१ इ, व भा-२ मां नथी. ५० जडावता व भा-२. ५१ योग्य ह्प्रो, भा-२ मा 'होइ अनइ' शब्दो छे ५२ मणिने ह्प्रो; तेनी पहेलांनो 'ते' व भा-२ मां नथी. ५३ व भा-२ मा नथी. ५४ तरुयें भा-१, तरुयं इ, तरुए व, तरूंए भा-२. ५५ जडे व भा-२. ५६ ने ह्प्रो. ५७ बांधइ भा-१ इ, बाधे व भा-२. ५८ तो ह्प्रो, पछी भा-२ मां 'ते' छे.

५९ मणिनुं व, मणिनूं भा-२. ६० दूहूवण भा-१ इ, दूषण व भा-२. ६१ नावइ इ, नहीं व भा-२. ६२ शोभइ भा-१ इ; 'अनइ शोभि नहीं' ए 'वि' ना शब्द व भा-२ मां नथी. ६३ नहीं भा-१. ६४ बाधणारनइं भा-१ इ, बांधणहारने व, बाधणहारनिं भा-२. ६५ दूषण व भा-२. ६६ दे भा-१ इ, दे व भा-२. ६७ ये इ व भा-२. ६८ स्वामिन् इ व भा-२. ६९ तु इ, 'सिंह तूं' एवो शब्दक्रम व भा-२ मां छे ७० एहुं इ व भा-२. ७१ कहें इ व भा-२. ७२ छ इ, छे व, छेइ भा-२; पछी व मां 'जे तू घणा दिवसे' अने भा-२मां 'जे तू घणें दिवसे' एवो शब्दक्रम छे ७३ घणे इ ७४ दिवसे इ. ७५ तु इ. ७६ दीसइं इ. ७७ छइं इ. ७८ तन्हु इ, तेहु व, तेन्हुं भा-२. ७९ सांभलो इ, सांभलु व, साभलु भा-२. ८० अनइ इ, व भा-२ मां नथी ८१ जमणा भा-२. ८२ हाथनो इ व भा २. ८३ न होइ इ व भा-२. ८४ भलो भा-२; पछी व भा २ मां 'पुरुष' शब्द छे ८५ अनइ इ, व भा-२ मां नथी ८६ केन्हे इ, व भा-२ मां नथी. ८७ ठाम इ व भा-२. ८८ होइ इ व भा-२. ८९ ते इ व भा-२. ९० रहइ इ व. ९१ जिहा इ व भा २. ९२ मणिनइ इ, मणिने व, मणिनिं भा २ ९३ ठामि इ व भा-२. ९४ अनइ भा २, अने व. ९५ काचनइ इ, काचने व, काचनं भा-२. ९६ राजानइ इ, राजानें भा-२, व मां नथी. ९७ व मां नथी. ९८ सेवकनुं इ, सेवक व, सेवकनूं भा-२. ९९ नामइ इ, नामें भा-२, व मां नथी. १०० रहइ इ व, रहे भा-२. [पृ. ३२]
१ जिवारें भा १ इ भा-२. २ राजानि भा-१ इ, राजानेइ भा २. ३ अनइ भा-१ इ भा.२. ४ पाडुंआ भा-१, पाडूआ भा-२. ५ सेवकनें भा-१ इ, सेवकनइ भा-२. ६ विशेष भा १ इ, विशिष भा-२ ७ होइ भा-१ इ भा-२. ८ तिहा भा-१ इ भा-२. ९ उद्यमीं भा-२ १० सेवकनो भा-१ इ, सेवकनुं भा-२. ११ जाइ भा-१ इ भा-२. १२ पाषइ इ, विना भा-२. १३ रहइ इ, नहीं भा-२. १४ अनइ इ, अनद भा-२. १५ पाखे इ भा-२ १६ रहइ इ, रहे भा-२. १७ सेवक इ भा-२, आ शब्द पहेला भा-२ मा 'अनइ' छे १८ अनइ इ भा-२. १९ राजानो इ भा-२ २० छइ इ, छे भा-२. २१ विना किरणे. व. २२ लोचन इ व भा-२. २३ हित करें इ, हेतकारी भा-२. २४ एह्वा इ व भा-२. २५ पाखेइ इ, पाखे व, पाखें भा-२. २६ शोभइ इ, शोभेइ व भा-२; आनी पछी व भा-२ मा आ प्रमाणे छे :

'जिम तेजवंत किरण पाखे सूर्य न शोभइ'

२७ ते इ. २८ किरण इ. २९ पावइ इ. ३० शोभइ इ. ३१ छइ भा-१ इ, छे व भा-२. ३२ नाभिनइ भा-१ इ, नाभि व, नाभिने भा-२. ३३ विषइ भा-१, विषे इ व भा-२. ३४ छे व, छे भा-२. ३५ ईण भा-१, ईर्णी इ, इर्णी व, एणी भा-२. ३६ परि भा-१ व, परिं इ, पेरिं भा-२. ३७ अहींथी व भा-२ मा अनुवाद आ प्रमाणे छे: (व ना पाठ साथे भा-२ नां पाठान्तर छे)

'स्वामीमिवक परस्परें [परस्परि] आचारि प्रवर्त्ते.'

३८ अनइ भा-१ इ. ३९ सेवकि भा-१, सेवकिइ इ. ४० प्रवर्त्तइ भा-१ इ. ४१ नियें इ व भा-२. ४२ माथे व भा-२. ४३ धरया इ व भा-२. ४४ अनइ इ भा-२, अनेर व. ४५ स्नेह इ व भा-२. ४६ तैल इ. ४७ तीणई इ, तीणें व, तीणं भा-२. ४८ वधारया इ व भा-२. ४९ केम इ. ५० तेहइ इ; आ पंक्तिनो उत्तरार्ध व भा-२ मा आ प्रमाणे छे: 'तेह रुक्ष थाई' ५१ रूपपणुं इ. ५२ तेने इ. ५३ पामई इ. ५४ पछइ इ; अहीं व भा-२मा 'स्नेह पामे तिम' एवा शब्द छे. ५५ निस्नेह व भा-२. ५६ सेवक इ व भा-२. ५७ विरागनई इ, निराग व भा-२. ५८ व भा-२ मा नथी. ५९ पामइ इ, पामें व भा-२. ६० व भा-२ मा नथी. ६१ तूटोथो इ, ६२ इ मां नथी; आ श्लोकनो अनुवाद व भा-२ मा आ प्रमाणे छे: (व ना पाठ साथे कोंसमा भा-२ ना पाठान्तर छे)

'राजा सेवकन्हे [सेवकनें] तूटो द्रव्य मानने दे अनद सेवकने मान दीधा पछी सेवक प्राण पण राजा निमित्त दे'

६३ देइ इ. ६४ अनइ इ. ६५ सेवक इ. ६६ राजाने इ. ६७ मान्यं इ. ६८ जे इ. ६९ युद्धनइ इ. ७० विपि इ ७१ मुख्य प्रत वि माथी पडी गयेला आ शब्द इ माथी लीधा छे. [पृ. ३३] ७२ कुलीनाः व भा-२. ७३ कार्यसयुक्ताः व भा-२. ७४ एहुं इ व भा-२. ७५ जाणीनइ इ, जाणीनइ व, जाणीनेइ भा-२. ७६ राजाइ इ भा-२, राजाए व. ७७ कुलीण इ. ७८ पूर्वे इ व भा-२. ७९ चालया इ व भा-२. ८० आवि इ, आवें व भा-२. ८१ एह्या इ व भा-२. ८२ सेवक इ व भा-२. ८३ ये इ. ८४ सेवक इ व भा-२. ८५ राजानु व. ८६ कार्य इ व भा-२. ८७ 'रहें निश्चिन' एवो शब्दक्रम व भा-२ मा छे ८८ रहइ इ. ८९ सेवक इ व भा-२. ९० वैयरि इ, वैरी व भा-२. ९१ जाणवा भा-२. ९२ ये भा-१ इ व. ९३ काम हुओ. ९४ करीनइ हुओ. ९५ वइसी भा-१ इ, वैसी व, वेशी भा-२.

९६ रहइ भा-१ इ, रहेड व भा-२. ९७ जाणवो भा-१ इ व, जाणवु भा-२. ९८ ये इ व. ९९ सेवक इ व भा-२. १०० बोलाव्यो इ व भा-२. १ आवइ इ, आवे व भा-२. २ अनइ इ व भा-२. ३ द्वारि इ व भा-२. ४ बइठो इ, वैठो व भा २. ५ रहइ इ, रहेइ व भा-२. ६ अनइ इ, व भा-२ मां नथी. ७ पूछ्या भा-२. ८. साचुं इ व भा-२. ९ बोलइ इ व, बोलेइ भा-२. १० तीणइ इ, तीणे व भा-२. ११ सेवकेइं इ, सेवके व, सेवकें भा-२. १२ व अने भा-२ मां आवो शब्दक्रम छे: (कौंसमां व ना पाठ साथे भा-२ ना पाठान्तर छे)

'जे मान्य पांम्या पछी गर्व न करे [करइ].'

१३ करइ इ. १४ मान्य इ. १५ पाम्या इ. १६ अनइ इ, व भा-२मां नथी. १७ पाम्या इ व भा-२. १८ कोपइ नहीं इ, कोप न करे व, कोप न करेइ भा-२ १९ आपणु इ. २० रापे व, रापेइ भा-२. २१ राजानें इ, राजा व भा-२. २२ योग्य इ व भा-२. [पृ. ३४] २३ ये इ; आ श्लोक व भा-२ मां छे पण तेनो अनुवाद नथी. २४ अणकह्योथो इ. २५ हाणि इ. २६ फेटइ इ. २७ अनइ इ. २८ फेडवानइ इ. २९ करइ इ. ३० सेवक इ. ३१ राजानें इ. ३२ सेवा इ. ३३ योग्य इ. ३४ होइ इ; आ श्लोक पछी इ मां नीचेनो श्लोक अने तेनो अनुवाद छे:

ताडितोऽपि दुरुक्तोऽपि दण्डितोऽपि महीभुजा ।
यो न चिन्तयते पापं स भृत्योऽर्हो महीभृताम् ॥

जे सेवक मारयो होइ अनइ येने गालि बोली होइ अनइ दंड्यो होइ राजाइ, एहो थको ये राजानें पापबुद्धि न चींतवइ ते सेवक राजानें योग्य.

३५ ये इ व भा-२. ३६ सेवकनें इ व भा-२. ३७ भूप इ व भा-२. ३८ वानां इ व. ३९ येन्हे इ, एन्हे व भा-२. ४० पीडेइ इ, पीडें व भा-२. ४१ राजानें इ, राजान व भा-२. ४२ योग्य इ व भा-२. ४३ जींणे इ व, जेणें भा-२. ४४ रहतें इ व भा-२. ४५ राजानो इ व भा-२. ४६ दुणहार इ व भा-२. ४७ संग्राम इ व भा-२. ४८ सामि-लीये इ व भा-२. ४९ अनइ इ भा-२, अनेइ व. ५० रहइ इ, रहेइ व भा-२. ५१ राजानइ इ, राजान व भा-२. ५२ योग्य इ व भा-२. ५३ ये इ व भा-२. ५४ सेवक इ व भा-२. ५५ छता इ. ५६ सीम व भा-२. ५७ गामनी इ व भा-२. ५८ थाइ इ व भा-२. ५९ अनेरा इ व भा-२. ६०

लैं इ, लें व भा-२. ६१ वाऊते इ, वाऊतें व भा-२. ६२ राजाइ इ भा-२. ६३ बोलीये इ व भा-२. ६४ छइ इ व भा-२. ६५ घोडो भा-१ भा-२ इ, अश्व व. ६६ शास्त्र हप्रो. ६७ लोहडां भा-१ इ, लोह भा-२, हथीयार व. ६८ वाणी व भा-२; आनी पहेलां व मां 'वीणा' शब्द छे. ६९ पुरुष भा-१ इ भा-२, व मां नथी. ७० एतला भा-१. ७१ वाला इ व. ७२ °विशेषने इ. ७३ पामी भा-१ इ, पामीनइ व भा-२. ७४ भलांइ भा-१ इ, भला व, भलां भा-२. ७५ अनई भा-१, अनइ इ व भा-२. ७६ पाइआं इ भा-१ इ, पाइआं व भा-२. ७७ थाई इ. ७८ अनइ इ व भा-२. ७९ शीआल भा-२. ८० एहुं इ व भा-२. ८१ जाणीनइ इ व, जाणीनेइ भा-२. ८२ मुं इ, मू व. ८३ ऊपरि इ व, उपरि भा-२. ८४ स्वामि इ व भा-२. ८५ ते इ व भा-२. ८६ ये इ व, भा-२ मा नथी. ८७ हुं इ, व भा-२ मा नथी. ८८ अवगणीयु इ, अवगणीयूं व भा-२. ८९ छुं इ भा-२. ९० माननो इ, मानतो व भा-२. ९१ तेहइ इ, ते व भा-२. ९२ नहीं इ. ९३ जे व भा-२. [पृ. ३५] ९४ शअरनें इ, शअरने व, शरनरने भा-२. ९५ रुपे इ, रुपें व भा-२. ९६ ऋषि इ व भा-२. ९७ मृगनी इ व भा-२. ९८ रुपे इ भा-२, रुपइं व. ९९ कार्त्तिकेय इ भा-२, कार्त्तिक्य व. १०० वोकडाने व, वोकडाने भा २. १ रुपे इ भा-२. २ एतला इ व भा-२. ३ माटइ इ, माटेइ व, माटेइ भा-२. ४ शुं इ भा-२, शु व. ५ पूजीता इ व, पूजिता भा-२. ६ अहींथी आगळनो अनुवाद व भा-२ मा आ प्रमाणे छेः (व ना पाठ साथे कौंसमा भा-२ नां पाठान्तर छे.)

'सत्पुरुषें सघलाये पूजीये छे[छेइ]'.

७ पूजीयें इ. ८ सपुरुषे इ. ९ वाई इ भा-२, वाई व. १० ये इ. ११ सेवक इ व भा-२. १२ कौंसमां मूकेलो मुख्य प्रत वि माथी पडी गयेलो पाठ इ मांथी लिधो छे १३ होंइ व १४ ते भा-२. १५ होइ इ व भा-२. १६ एहुं इ व भा-२. १७ शुं इ व भा-२. १८ अनेरा व, अनेराइ इ भा-२. १९ होइ इ व भा-२. २० योरयुं इ व भा-२, तेनी पहेला व मा 'वली' नथी २१ छइ इ, छे व, छि भा-२. २२ ऊपजइ भा-१ इ, उपजइ व, ऊपजेइ भा-२. २३ कौंसमां मूकेलो, मुख्य वि मां पडी गयेलो पाठ भा-१ माथी लीधो छे, सोनुं व भा-२. २४ पाषाणथी व भा-२. २५ ऊपजेइ व भा-२. २६ द्रो दर्वा व भा-२. २७ गाइनो हप्रो. २८ ऊपजइ हप्रो, २९ मुख्य प्रत वि मांथी पडी

गयेलो पाठ भा-१ मांथी लीधो छे; आ पंक्ति व मां 'कमल वाडवथी ऊगजेइ' अने भा-२ मां 'कमल वाडवथी ऊगजइ' ए प्रमाणे छे. ३० समुद्रथी इप्रो. ३१ ऊगजे व भा-२, भा-१ इ मां नथी. ३२ गाइना इप्रो. ३३ छाणथी भा-१ इ व. ३४ काठथा व भा-२. ३५ गायनी भा-१, गार्नी इ, सर्पना व भा-२. ३६ गोरोचन इप्रो. ३७ गाइना इप्रो. ३८ एतलांनो भा-१ इ, एतलानो व, एतलानु भा-२. ३९ आपणे भा-१ इ व, आपणें भा-२. ४० गुणे इप्रो.. ४१ छे भा-२. ४२ थेयां भा-१ इ, जेथी व भा-२. ४३ ऊगना व भा-२. ४४ गुणे भा-१, गुणें इ, गुणेथी व भा-२. ४५ नहीं इप्रो. ४६ गुणवंतनु भा-२; पछी भा-१ मां 'गुण' छे. ४७ आपणे इप्रो, पछी भा-१ इ मां 'ज' छे. ४८ गुणे इप्रो. ४९ पितामातानि भा-१, पितामातानें इ, पिताने व भा-२. ५० गुणे इप्रो. नहीं भा-१ इ. ५२ मार्जारो व भा-२. ५३ घरमाहि इ. ५४ उपनी इ, ऊगजेइ व भा-२. ५५ होइ इ, व भा-२ मां नथी. ५६ अनइ इ व भा-२. ५७ वणमाड इ, विणमाड व भा-२. ५८ करइ इ व भा-२. ५९ ते इ, तेन्हे व भा-२. ६० मारें व भा-२. ६१ अनइ इ व भा-२; आनी पछीनो अनुवाद व भा-२ मां आ प्रमाणे छे:

'मार्जार हितकारी भणी सहूइ वांछेइ.'

६२ जे इ. ६३ ते इ. ६४ करे इ. ६५ तेन्हे इ. ६६ वांछइ इ. [पृ. ३६] ६७ भींडा व भा-२. ६८ अनइ इ व भा-२. ६९ घणाइ इ व भा-२. ७० होइ इ, होइं व भा-२. ७१ तोहइ इ, व भा-२ मा नथी. ७२ ईणि इ, तीणे व, तीणें भा-२. ७३ वाघ्रनु व. ७४ सरइ इ व भा-२. ७५ बीजे इ व भा-२. ७६ हीनेइ इ, हीने व, हीनें भा-२. ७७ घणे इ व, घणें भा-२. ७८ काइं इ व भा-२. ७९ नहीं व. ८० होइ इ व भा-२. ८१ अनइ इ व भा-२. ८२ करइ इ, करेइ व भा-२. ८३ तीणइ इ, तीणें व, तेणं भा-२. ८४ शुं इ भा-२, शु व. ८५ कीजइ इ, कीजे व भा-२. ८६ अनइ इ व भा-२. ८७ होइ इ भा-२, होइ व. ८८ अनइ इ व भा-२. ८९ पाडुउं इ, पाडुउं व, पाडुं भा-२. ९० करइ इ, करे व भा-२. ९१ तीणेइ इ, तीणे व, तीणें भा-२. ९२ शुं इ व भा-२. ९३ कीजइ इ व, कीजेइ भा-२. ९४ हुं इ व भा-२. ९५ अनइ इ, अनेइ व, ने भा-२. ९६ छु इ व भा-२. ९७ मुंन्हे इ व, मुन्हे भा-२. ९८ निरास व भा-२. ९९ योग्य इ व भा-२. १०० नहींइ इ, न होइ व भा-२. १ अजाणपणाथी भा-१, अजाणपणाथी इ,

अज्ञानपणाथी व भा-२. २ होट ह्प्रो. ३ अनड ह्प्रो. ४ सेवक ह्प्रो. ५ थ्या व भा-२. ६ समीप इ. ७ नावइ भा-१ इ, न आवें ध भा-२. ८ अनइ ह्प्रो. ९ ये ह्प्रो. १० राज्य भा-१ ट, राजा व भा-२. ११ छाडीनेइ भा-१ इ, छाडीये व, छांडीये भा-२. १२ पच्छे भा-१ इ, अहीं व मां 'तेन्हे' अने भा-२ मां 'तेन्हे' छे. १३ होइ ह्प्रो. १४ समेति ह्प्रो. १५ कुल भा-१ इ, राजकुल व भा-२; मुख्य प्रत 'वि' माथी पडी गयेलो आ शब्द भा-१ माथी लीधो छे. १६ नाश ह्प्रो. १७ पामइ भा-१ इ, पामे व, पामें भा-२. १८ कहइ भा-१, कहे व भा-२. १९ छेइ व, छे भा-२; भा-१ मां नथी, आनी पछीथी, 'अहो दमनक......'थी शरू करी 'स्वामिन् एकांति साभळीइं' त्यां सुधीनो मुख्य प्रत वि नो भाग भा-१ मा सक्षेपमां नीचे प्रमाणे छे :

"अहो दमनक तूं जूना प्रधाननो पुत्र छइ ते भणी जे तुं बोलवा हींडे ते बोलि". दमनक सियाल बोल्यो, "स्वामिन् एकाति साभलीइ."

२० तुइ व, तूं भा-२. २१ आनी पछी व भा-२ मां 'अथवा' छे. २२ थको इ व भा-२. २३ प्रधाननो इ व भा-२. २४ पुत्र इ व भा-२. २५ छइ इ, छि व, छिइ भा-२. २६ तेथी व भा-२; व भा-२ मा आ पंक्ति आ प्रमाणे छे :

'हुं [तूं] हीडें [हींडि] छ ते तूं बोलि.'

२७ तुं इ. २८ हींडि इ. २९ छेइं इ. ३० स्वामिन् इ व भा-२. ३१ काईं इ. ३२ छइ इ, छेइ व, छे भा-२. ३३ बोल्युं इ, पछी व भा-२ मां 'अहो' छे. ३४ तुं इ व भा-२. ३५ बोल्युं इ [पृ. ३७] ३६ थोडुंइ इ व, थोडुंइ भा-२, भा-२ मां आ शब्द पहेला 'थोडूं' छे. ३७ कार्य इ व भा-२. ३८ ये इ, व भा-२ मा नथी ३९ इ व भा-२. ४० ति व. ४१ मध्य इ व भा-२. ४२ कहवु इ व, करवुं भा २ ४३ एह्नु इ भा-२, एह्नं व. ४४ बृहस्पति व. ४५ कहइ इ व, कहेइ भा-२ ४६ तेथी व भा-२. ४७ एकांत व भा-२. ४८ साभलीयें इ व भा-२ ४९ ये भणी भा-१ इ, जेथी व भा-२. ५० आ श्लोकनुं इ व भा-२ मां आवु एक ज चरण मळे छे, भा-१ मां श्लोकनुं आ चरण नथी. पडी गयेलुं चरण पहेलुं चरण होवुं जोइए. पश्चिम भारतीय पचतत्र, पूर्णभद्रकृत पंचतंत्र अने तन्त्राख्यायिकामां आ श्लोक नथी.

५१ ये ह्प्रो. ५२ होइ ह्प्रो. ५३ मेल्हइ भा-१ इ, मेल्हे व भा-२. ५४ पामइ भा-१ इ, पामे व, पामे भा-२. ५५ अनइ भा-१ इ, व भा-२ मां

नथी ५६ चुक्न भा-१, चोक्न व भा-२ ५७ ये भा-१ इ, व भा-२ मां नथी ५८ होइ ह्यो ५९ गाजेइ व, गाजे भा २ ६० वेकन भा-२ ६१ पारन ह्यो ६२ व भा-२ मां नथी ६३ ब्रह्माइ भा-१, ब्रह्माइ इ, ब्रह्मा व भा-२. ६४ जाणइ भा-१ इ व, जाणेइ भा-२ ६५ तेथी व भा-२. ६५ तेथी व भा-२. ६६ सर्व भा-१ इ, सर्वथा व भा-२, पछीनो 'प्रयत्नि' शब्द व भा-२ मां नथी. ६७ पट्कर्ण ह्यो ६८ रापवो भा-१ इ, करवो व भा-२ ६९ तिवार इ व भा-२, अहींयी शरु करी, '.. . कहिवा शरपू न हुइ तु रहिवा यो,' ए मुख्य प्रत वि नो आगो परिच्छेद भा-१ मां आ प्रमाणे छे

'दमनक पिंगलनइ पूछ्, "स्वामी पाणी पीवा जाता कांइ पाछा वली आव्या?" पिंगल हसीनइ विपरीत कहितो हौउ [दमनक बोल्यो], "स्वामिन कहिवा युक्त नोहि तो रहिवा यो "

७० पिंगल्नो इ व, पिंगलनु भा-२ ७१ जाणीनइ इ भा-२, जाणीने व ७२ वाघ इ, व्याघ्र व भा-२ ७३ आ शब्द पछी इ व भा २ मा 'ए सर्व' छे ७४ एहुं इ व भा-२ ७५ सांभलीनेइ व भा २ ७६ वेगला इ व भा २ ७७ पछइ इ व, पछे भा-२ ७८ बोल्तो इ, बोल्यो व भा-२ ७९ हौउ इ, व भा-२ मा नथी, आनी पछी व भा २ मा आ परिच्छेदनी छेल्ली पक्ति नीचे प्रमाणे छे (व ना पाठ साथे कोंसमां भा २ नां पाठान्तर छे)

'स्वामिन् [भा २ मा नथी] कांई कहवा शरपू न होइ तो म कहस्यो बोल्यु [बोल्यू] छइ [छिइ] '

८० स्वामिन् इ ८१ °प्रासनन इ ८२ जाता इ ८३ थक्य इ ८४ कीइ इ ८५ कहतो इ ८६ हौउ इ ८७ हसतु इ. ८८ थकु इ ८९ विपरीत इ ९० कहतो इ ९१ हौउ इ ९२ जु इ ९३ सरपु इ ९४ होइ इ ९५ तो इ ९६ रहवा इ ९७ बोल्यु इ ९८ छइ इ ९९ केतलीएक भा-१, केतली व भा-२, आ पक्ति इ मां नथी १०० रापवी भा-१, कीजेइ व, कीजे भा २ १ केतलीएक ह्यो [पृ ३८] २ व भा-२ मां नथी ३ केतली ह्यो ४ मुख्य प्रत 'वि' माथी पडी गयेली आ पक्ति भा-१ मांथी लीधी छे, केतलीएक इ, व भा २ मां 'केतली' छे पछी इ मां 'पुत्रथी वात' शब्दक्रम छे ५ व भा २ मां नथी ६ अनइ ह्यो ७ पडितइ भा-१, इ, पडित व भा-२ ८ महांत ह्यो ९ आगलि ह्यो १० दुःख ह्यो ११ अयुक्त ह्यो १२ विमांसीनइ भा १, विमाशीनइ इ, विमांसी व, विमाशी भा-२,

१३ एहुं हप्रो. १४ साभलीनइ भा-१ इ व, साभलीने भा-२. १५ चींतवतो हप्रो. १६ हौउ हप्रो. १७ योग्य हप्रो. १८ दीसइ भा-१ इ, दीसे व भा-२. १९ छइ भा-१ इ, छेइ व, छे भा-२. २० ते भणी इ, तेथी व भा-२. २१ माट्रो हप्रो. २२ आगलि हप्रो. २३ कहुं इ भा-२. २४ बोल्यूं भा-१ भा-२, बोल्युं इ, बोल्यु व. २५ छइ भा-१ इ, छे व भा-२. २६ थे इ, भा-१ मां नथी. २७ भणी इ व भा-२. २८ ये भा-१ इ. २९ होइ हप्रो. ३० अनइ भा-१ इ; अहींथी आगळनो अनुवाद व भा-२ नीचे प्रमाणे छे, अनुवादनो बाकीनो भाग ते बन्नेमा नथी;

'तो तें आगलि आपणुं दुःख निवेदी सुखी थैयेइ.'

३१ सेवक भा-१ इ. ३२ होइ भा-१ इ. ३३ अनइ भा-१ इ. ३४ ये भा-१ इ. ३५ होइ भा-१ इ. ३६ अनइ भा-१. इ. ३७ स्वामी भा-१ इ. ३८ होइ भा-१ इ. ३९ आगलि भा-१ इ. ४० आपणुं भा-१ इ. ४१ दुःख भा-१ इ. ४२ निवेदीनइ भा-१ इ. ४३ भा-१ इ मा नथी. ४४ थैये भा-१ इ. ४५ तुं इ व भा-२; मुख्य प्रत वि मानो आ परिच्छेद भा-१ मा नीचे प्रमाणे मळे छे :

पिंगल बोल्यो, "ए वनमाहि को एक मोटो जीव मोटा शब्द करइ छइ. ते शब्द सरपो मोटउ जीव मोटा पराक्रमथी आवी पइहु छि." [दमनक बोल्यो], "स्वामिन् ए शब्दमात्रथी भय ऊपनो छइ ते अयुक्त. बो यूं छइ."

४६ शाभलं इ, साभले व, साभले भा-२ ४७ छइ इ, छें व भा-२. ४८ स्वामिन् इ व, भा-२ मा नथी. ४९ छुं इ, छुं व. ५० ते इ व भा-२. ५१ शुं इ भा-२, स्युं व. ५२ हु इ व भा-२. ५३ शब्दथी व भा-२. ५४ व भा-२ मा नथी. ५५ हींडु इ, हींडू व. ५६ छुं इ भा-२. ५७ बोल्यु इ. ५८ काइ इ, काइ व. ५९ जाउ इ, जाउं भा-२. ६० छो इ, छुं व भा-२. ६१ बोल्यु इ. ६२ जेथी व भा-२, आनी पछी व भा-२ मा 'ए वनमाहि' शब्दो छे, मुख्य प्रतना 'शब्द शरपो' शब्दो व भा-२ मा नथी. ६३ सरपो इ. ६४ मोटु इ. ६५ छइ इ, छेइ व भा-२ ६६ ऐवु व भा-२, इ मां नथी. ६७ छेइं व, छेइ भा-२, इ मां नथी. ६८ जेह्वो व भा-२; 'जेहनु ए मोटो शब्द साभली छेइ' आ मुख्य प्रतना शब्द इ मा नथी. ६९ साभलीये व भा-२. ७० छेइ व भा-२. ७१ आ शब्द पछी व भा-२ मा आ प्रमाणे शब्दक्रम छे : (व ना पाठ साथे कोंसमा भा-२ ना पाटान्तर छे.)

'मोटो जीव ए शब्द सरषो [शरषु] हुशि [हुशे].

७२ सरषो इ. ७३ मोट्ठ इ. ७४ हुशि इ. ७५ अनइ द व भा-२. ७६ जेवड्ड इ, सरषो व, शरषो भा-२. ७७ मोट्ठ इ. ७८ हुशि इ भा-२, होसे व. ७९ बोल्यु इ. ८० स्वामिन् इ व भा-२. ८१ ये भा-२, इ मां नथी. ८२ °मानथी इ व भा-२. ८३ ऊपनो द व. ८४ छइ इ, छेइ व भा-२. ८५ अयुक्त इ व भा-२. ८६ छइ इ, छेइ व, छिइ भा-२. ८७ उदके ह्प्रो. ८८ मेदीयें भा-१ द, मेदाइ व भा-२. ८९ अणराष्यो ह्प्रो. ९० मेदीइ इ, मेदाइ भा-१ व भा-२. ९१ अनइ ह्प्रो. ९२ पिशुनपणें भा-१ इ भा-२, पशुनपणे व. ९३ जाइ ह्प्रो. ९४ बीहीरुण भा-१ इ व, बिहीरुण भा-२. ९५ वांणीये भा-१, वार्णायें इ, वार्णीइं व, वार्णायें भा-२. ९६ भेदाइ ह्प्रो. [पृ. ३९] ९७ ते ह्प्रो. ९८ स्वामिन् ह्प्रो. ९९ तम्हारं भा-१ व भा-२, तम्हारें इ. १०० पूर्वजें भा-२. १ ऊगार्जु भा-१ इ व भा-२; पछी व मां 'जे वन ते' अने भा-२ मां 'ये वन ते' एवा शब्द छे. २ वनने भा-१, वनने इ. ३ छाडवाने भा-१, छांडवानें इ व, छांडवा भा-२. ४ अयुक्त भा-१ इ, युक्त नही व, युक्त नहीं भा-२. ५ अनइ भा-१ व भा-२, इ मां नथी. ६ ईहां ह्प्रो. ७ अनेक ह्प्रो. ८ आकाशनइ भा-१, आकाशने इ व भा-२. ९ विषइ भा-१, विषि इ, विषेइ व, विषे भा-२. १० ऊगजइ भा-१ इ, ऊगजे व भा-२. ११ छइ भा-१ इ, छे व भा-२. १२ मध्यें भा-१ इ व, मध्ये भा-२. १३ ये भा-१ इ. १४ भा-१ मा 'मान शब्द' एवो शब्दक्रम छे. १५ छें भा-१ इ, छे व भा-२. १६ बीहतुं ह्प्रो. १७ जिम ह्प्रो. १८ वासना व भा-२. १९ वार्णाना इ, वीणाना भा-१ व भा-२. २० मृदंगना ह्प्रो. २१ समाकनो इ. २२ एहथी इ व भा-२. २३ बीहतुं ह्प्रो. २४ छइ भा-१ इ व, छिइ भा-२. २५ स्वामीतुं भा-१ इ भा-२, स्वामीनुं व. २६ कठिन व भा-२. २७ शत्रु ह्प्रो. २८ पाम्या ह्प्रो. २९ पच्छी भा-१ इ व. ३० धैर्य ह्प्रो. ३१ हीर ह्प्रो. ३२ पामइ भा-१ इ, पामेइ व, पामे भा-२. ३३ जिवारें ह्प्रो. ३४ दैव ह्प्रो. ३५ देवाडइ भा-१ इ, देवाडे व भा-२. ३६ तिवारेंइ भा-१, तिवारें इ व भा-२; पछी व भा-२ मां 'धीर नर ये तेहनुं' एवा शब्द छे. ३७ जाइ ह्प्रो. ३८ जिम ह्प्रो. ३९ °काळि ह्प्रो. ४० ढोपाइ भा-१, ढोप्याइ इ, ढोप्या व भा-२. ४१ गाजइ भा-१ इ व, गाजे भा-२. ४२ येन्ह भा-१, येन्हे इ, जे-हें व भा-२. ४३ नहीं ह्प्रो. ४४ अनइ भा-१ इ भा-२, अने व. ४५ छता भा-१. ४६

अन्य हप्रो. मां नथी. ४७ नहीं भा-१ व भा-२. ४८ संग्राममाहि भा-१ इ, संग्राम मध्य व, संग्राम मध्ये भा-२. ४९ होइ हप्रो. ५० एहवा हप्रो. ५१ पुरुषनें भा-१ इ भा-२, पुरुषने भा-२. ५२ जणइ भा-१ इ, जणेइ व भा-२. ५३ ये इ. ५४ पुरुष इ व भा-२. ५५ पामइ द, पामेइ व. पामे भा-२. ५६ होइ इ व भा-२. ५७ अनइ इ व भा-२. ५८ माटइ इ, माटेइ व भा-२. ५९ होइ इ व भा-२. ६० अनइ इ व भा-२. ६१ पुरुष इ व भा-२. ६२ मानहीन इ व भा-२. ६३ होइ इ व भा-२. ६४ अनइ इ, व भा-२ मा नथी. ६५ त्रिणली इ. ६६ सरपी इ व. [पृ. ४०] ६७ ये भा-१ इ. ६८ अनेरानो भा-१ इ व, अनेरानु भा-२. ६९ प्रतापनइं भा-१ इ. ७० पामीनइ भा-१, पामीनइ इ भा-२, पामीनि व. ७१ होइ इ व भा-२. ७२ पुरुष हप्रो. ७३ दुर्भगानइ व भा-२. ७४ इहा हप्रो. ७५ परिं व. ७६ काई व. ७७ नही भा-१, न शोभइ व, न शोभेइ भा-२. ७८ एहुं भा-१ व भा-२; भा-१ मां आनी आगळनो अनुवाद आ प्रमाणे छे :

'एहुं जाणी बीहुं नही, धैर्य करवुं.'

७९ जाणीनि इ, जाणीनइ व भा-२. ८० करवुं इ व भा-२. ८१ बीहवुं इ व भा-२. ८२ नहीं भा-२. ८३ बोल्यु इ, बोल्यू व भा-२. ८४ छइ इ, छेइ व भा-२. ८५ पूर्वे हप्रो. ८६ मेइ भा-१ इ, मे व भा-२ ८७ मेदिं भा-१ इ, मे व भा-२. ८८ पूर्ण भा-२. ८९ जाण्युं हप्रो ९० पछइ भा-१ इ, पछे व भा-२. ९१ माहिं भा-१ इ, माहे भा-२. ९२ पेठा व भा-२. ९३ थोडुं भा-१ इ व, थोडूं भा-२. ९४ व भा-२ मा नथी. ९५ थोडुं भा-१ इ व, थोडूं भा-२; पछी व भा-२ मा 'ज' छे. ९६ चावडुं भा-१ व, चावडुं इ, चावडूं भा-२. ९७ पिंगल भा-१. ९८ बोल्यो भा-१ व भा-२. ९९ वहे व भा-२. १०० छइ व, छे भा-२.

[२. शियाळ अने दुन्दुभि]

१ को हप्रो. २ प्रदेशने व भा-२. ३ विषई इ, विषे भा-२. ४ भूख्यु हप्रो. ५ शीआल भा-१ इ भा-२, शीयाल व. ६ भ्रमतो भा-१ इ, भ्रमतो व भा-२. ७ थको भा-१ इ, थकि व भा-२. ८ मध्य व भा-२. ९ सैन्य भा-२. १० भुइनें भा-१ इ, भूमि व भा-२. ११ पाम्यु भा-१, पामु इ,

पाम्यो व भा-२. १२ ते ह्यो. १३ °मध्यें व भा-२. १४ वायुनी व भा-२. १५ कंगावी व भा-२. १६ ये भा-१ इ, व भा-२ मा नथी. १७ वृक्षनीं भा-२. १८ डालि व भा-२. १९ वाजनउं भा-१, वाजतुं इ व भा-२. २० मृदंग व भा-२ मा नथी. २१ साभल्युं भा-१ इ, साभलीनइ व, साभलीनइ भा-२. २२ बीहीतु भा-१ इ. २३ थकु भा-१ इ. २४ शीआल इ, व भा-२ मां नथी. २५ चीतवतो भा-१ इ व. २६ हीउ भा-१, हौउ इ व भा-२. २७ हवें ह्यो. २८ हुं ह्यो. २९ मुउ भा-१ व, मुंउ इ भा-२. ३० जा ह्यो. ३१ लगे ह्यो. ३२ शब्दनउ भा-१. ३३ नइ इ. ३४ देखइ भा-१ इ, देखे व भा-२. ३५ तेतलें भा-१ इ, ता लगइ व, ता लगेंड भा-२. ३६ नाशुं भा-१ इ, नाशी जाउं व भा-२ ३७ नाशवुं भा-१ इ, नासवुं व भा-२. ३८ नहीं ह्यो. ३९ ये भा-१ इ. ४० भणी भा-२. ४१ माहरुं भा-१ इ, माहुं व भा-२. ४२ माचापनुं ह्यो. ४३ ऊपार्जुं भा-१ इ, ऊपार्ज्युं व, ऊपार्ज्युं भा-२. ४४ छाडवा भा-२. ४५ नही भा-१ इ व. ४६ बोल्यूं भा-१ व. ४७ छइ भा-१ इ, छेइ व भा-२. ४८ जे व भा-२. ४९ पुरुष ह्यो. ५० विमाशीनइ भा-१, विमासीनइ इ, विमासीनइ व, विमासीने भा-२; पछी व मा 'काईं' अने भा-२ मां 'कांइ' छे. ५१ नें भा-१ इ, न व भा-२. ५२ करइ भा-१ इ, करेइ व भा-२. ५३ ते ह्यो; पछी व भा-२ मां 'पुरुष' छे. ५४ सनाथनें ह्यो. ५५ पामइ भा-१ इ व, पामें भा-२. [पृ. ७१] ५६ जाणनो ह्यो. ५७ कहेइतो भा-१, कहेइतो इ; व मां 'ए कहेइतो' अने भा-२ मा 'ए कहेतो' एवो शब्दक्रम छे. ५८ मोटो इ व भा-२ ५९ 'ह्या थकी ऊपनु अनिइ किहा उपजइ छइ एहवु विमासीनइ' मुखपत्रत वि नो आ पाठ व भा-२ मां नथी. ६० थकें भा-१ इ. ६१ ऊपनो भा-१ इ. ६२ अनइ भा-१ इ. ६३ किहां भा-१ इ. ६४ ऊपजइ भा-१ इ. ६५ एहुं भा-१ इ. ६६ विमांशीनइ इ. ६७ शीयाल भा-१ इ, व मां 'पछइ ते शीयाल' अने भा-२ मां 'पछि ते शीआल' एवा शब्दथी पंक्ति शरू थाय छे. ६८ हलू भा-१ व, हलूं भा-२. ६९ हलू भा-१ व, हलूं भा-२, इ मां नथी. ७० जिहा व. ७१ वाज भा-१, वाजइ इ, वाजे व भा-२. ७२ छइ भा-१ इ, व भा-२ मां नथी. ७३ तिहां ह्यो. ७४ ग्यो व भा-२. ७५ जोइ ह्यो. ७६ मृदंगनें ह्यो. ७७ वाजनुं ह्यो; पछी व भा-२ मां 'वृक्षनुं काट' एवा शब्द छे. ७८ देखीनइ व, देखेइ भा-२. ७९ हीउ भा-१ इ, व भा-२ मां नथी. ८० जेतलें भा-१ इ, जिवारे व, जिवारें भा-२. ८१ व भा-२ मां नथी. ८२ तेवारें भा-१ इ, तिवारे व भा-२. ८३ आनी पछी व मां 'हाथीनइ मृदंगनें' अने भा-२ मां 'हाथीनि

मृदंगनें' एवा शब्द छे. ८४ बाजइ भा-१ इ व, बाजे भा-२. ८५ छइ भा-१ इ व, छे भा-२. ८६ पछइ भा-१ इ, पछेइ व भा-२; पछी व भा-२ मां 'ते' छे. ८७ ते भा-१ इ, व भा-२ मां नथी. ८८ जाणी व भा-२; व भा-२ मां आ पंक्ति आ प्रमाणे पूरी थाय छे: (व ना पाठ साथे भा-२ नां पाठान्तर छे.) 'म्वई वजाडतो [वजाडतु] हौउ.' ८९ विनोदें भा-१ इ. ९० आफणीइं भा-१, आफणीइ इ. ९१ हौउ हप्रो. ९२ पछइ व भा-२. ९३ चींतवतो भा-१ इ व. ९४ हौउ हप्रो. ९५ जईनइ भा-१ इ, जैइनें व, जैने भा-२. ९६ में हप्रो. ९७ एमाननइ भा-१ इ, एमातने व भा-२. ९८ विषइ भा-१ इ, विषे व, विषें भा-२. ९९ पाम्युं हप्रो. १०० व भा-२ मा नथी. १ पदार्थ व भा-२. २ छे व भा-२. ३ ते हप्रो. ४ मेदें भा-१ इ, मेद व भा-२. ५ भरुं भा-१ इ, पूर्णो व, पूर्ण भा-२. ६ छइ भा-१ इ व, छेइ भा-२. ७ एहुं हप्रो. ८ विमासीनइ भा-१, विमासीनद इ, विमासीनिइ व भा-२. ९ पछइ भा-१ इ व, पछेइ भा-२; आ शब्द पछी व भा-२ मा आ पंक्तिनो उत्तरार्ध आ प्रमाणे छे: (व ना पाठ साथे कौंसमा भा-२ ना पाठान्तर छे.)

'मृदंगना मुखनूं चामडूं वांध्युं [वाध्यूं] छइ [छेइ] ते वष्टे [वष्टे] विदारीनइ मध्ये पैठो [पेठो].

१० चावड भा-१ इ. ११ वाध्यु भा-१ इ १२ ये भा-१ इ. १३ ते भा-१ इ. १४ मोटें भा-१, मोटे इ. १५ वष्टे भा-१, वष्टे इ. १६ विदारीनइ भा-१ इ. १७ एके भा-१ इ १८ पामें भा-१ इ. १९ पइठो भा-१ इ. २० कठिन व भा-२. २१ ठामि इ, स्थानि व, स्थान भा-२. २२ दांते हप्रो; आ शब्द पछी व भा-२ मा पंक्तिनो उत्तरार्ध आ प्रमाणे छे:

'दांते करी विदारतो हौउ तेथी दांत पड्यो.'

२३ चावडुं भा-१ इ. २४ पड्यु भा-१ इ. २५ पछइ भा-१ इ व, पछिइ भा-२; अहींथी आगळनी चारेक पंक्तिनो अनुवाद व भा-२ मां आ प्रमाणे छे: (व ना पाठ साथे कौंसमा भा-२ ना पाठान्तर छे)

'पछइ [पछिइ] मध्य पैसी [पेसी] देखेइ तो थोडूं चर्म, थोडूं काष्ट, बीजू [बीजुं] सर्व मध्ये [मध्ये] पोल [पोलूं] ते देषी शीयाल निरास [निराश] थै ते श्लोक एक [भा-२ मां नथी] भणतो हौउ जे [भा-२ मां नथी] 'पूर्वमेव मया ज्ञातं' ए श्लोक [श्लोक ए] ते भणी हुं कहुं छु जे शब्दमात्रथी न बीहीवुं [बीहवुं]'.

२६ पैठा भा-१ इ. २७ मूंड्इ भा-१ इ. २८ थोड्डं भा-१ इ. २९ छुं भा-१ इ. ३० चांवडुं भा-१ इ. ३१ अनइ भा-१ इ. ३२ लाकडुं भा-१ इ. ३३ अनइ इ, 'अनि माहि पिटो' ए मुख्य प्रतनो पाठ भा-१ मां नथी. ३४ पइठो इ. ३५ देवइ भा-१, देपीइ ड. ३६ सघलु भा-१ इ. ३७ पोलूं भा-१, पोलुं ट. ३८ देपीतइ भा-१ इ. ३९ निराश भा-१ इ. ४० 'एक श्लोक जे पूर्वे लख्यो ते शीयाल भणतो हीउ' एवो शब्दक्रम भा-१ छे. ४१ हीउ इ. ४२ त्यगो इ, ४३ हुं भा-१ व भा-२. ४४ कहुं ह्प्रो. ४५ छुं ह्प्रो. ४६ ये भा-१ ट. ४७ थकें भा-१ इ, थी व भा २. ४८ स्वामिन् भा-१ इ; व भा-२ मा नथी. ४९ मीहीतुं भा-१ इ व, बीहतुं भा-२. ५० जोनें भा-१, जोनइ इ, जो व भा-२; आ शब्द पछी अन्य ह्प्रो मा 'ए' छे. ५१ माहूं भा-१ इ भा-२, माहु व. ५२ सर्व व भा-२. ५३ छइ भा-१ इ, छेइ व, छे भा-२. ५४ नाशवानि भा-१ इ, नासवा व भा-२. ५५ हीडइ भा-१ इ, हींडे व, हीडें भा-२. ५६ छई भा-१, छइ इ व, छेइ भा-२. ५७ हुं ह्प्रो; व भा-२ मां 'हुं धैर्य किम' एवो शब्दक्रम छे. ५८ अरलेंबु भा-१ इ, अरलेंबू व. ५९ बोल्यु भा-१ इ. ६० स्वामिन् ह्प्रो. ६१ एह्नु व. ६२ नहीं ह्प्रो. ६३ 'जे भणी' व भा-२ मां नथी. ६४ सेवक ह्प्रो. ६५ सरपा ह्प्रो; पछी व भा-२ मा 'ज' छे ६६ हुइ भा-१, होइ व भा-२. ६७ 'बोल्युं छइ' ए शब्दो अने 'अथ शत्रं........ योग्याश्च अयोग्याश्च' ए श्लोक व भा-२ मां नथी. ६८ वार्ता इ. ६९ पुरुषने भा-१ इ. ७० पामें भा-१ इ. ७१ तेह्ना इ. ७२ थाइ इ;

आ श्लोक पछीनो मुख्य प्रत वि नो, प्रतना पान 17-B, 18-A अने 18-B उपरनो भाग भा-१ मां सळंगमां आ प्रमाणे छे :

'दमनक पिंगलक प्रति बोल्यो, "सपरिवार हडि रहिज्यो, हूं तेन्हे जोई आवूं." राजा आदेश दीधो. दमनक गया पूठि पिंगल विमासवा लागो, "जे मइं एन्हइ आपणो अध्यवमा कह्यो छइ अनिइ रखे ए बेहु ठामि मल्यो होइ सुनइ मरावइ. बुद्धिमंति रहस्यतिनोइ विश्वास न करवो; जे भणी ईदि दितिनो गर्भ विनाश पमाड्यो." एहं निश्चय करी पिंगल एकांति रह्यो. दमनक वृषभ देपीनइ हर्ष्यो, "अहो भलूं हवूं ईणें संधिविग्रहादिक मंत्र करी पिंगल माहि वाहि हुसे."

५ ७३ लगइ इ व, लगई भा-२. ७४ हुं इ व भा-२. ७५ शब्दनूं व, शब्दनू भा-२. ७६ स्वरूप इ व भा-२. ७७ जोई इ व भा-२. [पृ. ४२]

[पृ. ४२] ७८ आवुं इ व भा-२. ७९ लगइ इ व भा-२. ८० आपणी इ. ८१ °शुं व भा-२. ८२ अवलंबी व भा-२; पछी व भा-२ मा 'तम्हे' छे. ८३ अहां इ, व भा-२ मां नथी. ८४ रहजे इ, रहवुं व भा-२. ८५ पछइ इ व, पछिइ भा-२. ८६ जेहु इ, जेह व भा-२; पछी व भा-२ मा 'युक्त' छे. ८७ हुसेइ इ, होसि व भा-२. ८८ तेहुं इ, ते व भा-२. ८९ विमार्शीशि इ, विमासीगेइ व, विमार्गीगेइ भा-२. ९० बोल्यो व भा-२. ९१ तिहा इ व भा-२. ९२ तुं इ व. ९३ हीडें इ भा-२, हींडें भा-२. ९४ छइ इ, छे व, छें भा-२. ९५ बोयो व भा-२. ९६ स्वामिनी इ, स्वामीर्नि व. स्वामिनी भा-२. ९७ सेवकें इ व भा-२. ९८ वरीये इ, वरवी व भा-२. ९९ वरीये इ व भा-२. १०० इम इ, ए व भा-२. १ विमामर्तुं व भा-२. २ नहीं इ व भा-२. ३ बोल्यु इ व, बोयूं भा-२. ४ छेइ व, छिइ भा-२. ५ स्वामीनी इ व भा-२. ६ सेवक इ व भा-२. ७ 'भलो जो' व भा-२ मा नथी. ८ वैश्वानर मध्यें व, वैश्वानर मध्ये भा-२. ९ पैशि इ, पेसं व, पेसि भा-२. १० समुद्रमाहे भा-२. ११ पैइशि इ, पैसइ व, पैमेइ भा-२. १२ लोहिइ इ, लोहे व भा-२. १३ ऊगजेइ व भा-२. १४ ये इ. १५ वाछइ इ व, वाछेइ भा-२. १६ तीर्णे इ व, तीर्णे भा-२. १७ व भा-२ मा 'सेवक ते' एवो शब्दक्रम छे. १८ येन्हि इ, जेन्हे व, जेन्हे भा-२. १९ विषम इ व भा-२. २० विमासइ इ, विमासे व, विमासेइ भा-२. २१ बोल्यु इ. २२ इम इ व भा-२; आनी पहेला इ व भा-२ मा 'जो' छे. २३ छइ इ, छइ व, छेइ भा-२ २४ तुइ इ; 'तू जा' पाठ व भा-२ मा नथी. २५ तुन्हे इ, तुन्हे व, तूंन्हे भा-२. २६ कल्याण इ व भा-२. २७ हुयो इ, हो व भा-२ २८ निवार इ व भा-२. २९ ते इ व भा-२. ३० सिहनें इ भा-२, सिंहनें व. ३१ करीनइ इ, करी व भा-२. ३२ जिहा इ व भा-२. ३३ छइ इ, छेइ व भा-२. ३४ तिहा इ व भा-२. ३५ शब्दनइ इ, शब्दने व, शब्दनि भा-२. ३६ अनुसारिइं इ, अनुसारें व भा-२. ३७ हौंउ इ व भा-२. ३८ व भा-२ मा नथी. ३९ पछइ व, पछि भा-२. ४० गे इ, ग्या व, ग्या भा-२. ४१ थके इ, व भा-२ मा नथी. ४२ आनी पहेला व मा 'पछइ' अने भा-२ मा 'पछेइ' छे ४३ भयव्याकुल व भा-२. ४४ °यो व भा-२; पछी भा-२ मा 'पिंगलक' छे ४५ चिंतवतो इ, चींतवतो व, चींतवतो भा-२. ४६ हौंउ इ व भा-२. ४७ व भा-२ मा नथी. ४८ मे इ, मे व भा-२. ४९ रुडुं इ, रुडुं व भा-२. ५० नथी भा-२ ५१ कीधुं इ व भा-२. ५२ ये इ. ५३ में इ व भा-२ मा नथी. ५४ दमनकनो इ व

भा २ ५५ गार्गिनइ इ व, आर्गिना भा २ ५६ धिशा। इ व भा २ ५७ गया इ व भा २ ५८ कन्या इ व भा २ ५९ गिरि इ, गिन्न व, गिरुनि भा २ ६० मउत्या इ, मिन्या व भा २ ६१ इ इ व भा २ ६२ शनइ इ व भा २ ६३ मंड इ व भा २ ६४ प्राकाण्धा इ, भण्डार व भा २ ६५ रोण्याण्या इ, घोडाण्या इ व भा २ ६६ नन्न इ व, नगिर्ग भा २ ६७ आ शब्द गां व भा २ मां 'वनरि' छ ६८ ना इ व भा २ ६९ गुं इ ७० माज्युं इ व ७१ छइ, छे व [इ ७३] ७२ वइ ७३ राणानइ इ, राजा व, राजा भा २ ७४ सारइ इ व भा २ ७५ मान्य इ व भा २ ७६ हांड इ, हाड व भा २ गामी पामी व भा २ मां नीचे प्रमाणे अनुवाद छ (व ना पाठ साथे भीजमां भा २ नां पाठान्तर छ)

'वलिइ [पछ] आगमन हाइ यद्यपि पुत्रना हाइ ताहइ [ताह] राजानना नाशा [नाश] अर्थि उत्तम [आनी पहेलां भा २ मां 'हा' छ] करि [करेइ]

७७ नाना इ ७८ करइ इ ७९ गुरुइ इ ८० पूर्वे इ ८१ होइ इ ८२ ताहइ इ ८३ नेथी व भा २ ८४ लगइ इ व, लग भा २ ८५ एही इ, एही व भा २ ८६ किरणी भा २ ८७ जाणु इ, जाणु व भा २ ८८ ल्गइ इ व भा २ ८९ स्थानांतरि इ स्थानांतरि व भा २ ९० रहू व भा २ ९१ कदाचि व भा २ ९२ तहि इ, तह व तह भा २ ९३ आणानइ इ आणी व आणी भा २ ९४ मुह इ, मुंहि व, मुंह भा २ ९५ मरावइ इ व मराव भा २ ९६ वायु व, वायू भा २ ९७ छइ इ व छि भा २ ९८ चराइ व भा २ ९९ यइ, नव भा २ १०० करइ व भा २ १ वस्त्तरें इ, वस्त्त व भा २ २ मरीइ इ मराइ भा २ ३ अनइ इ, व भा २ मां नथी ४ 'वल्वितर' पहेलां भा २ मां 'य' अने व मां 'ज' छे ५ येइ ६ करेइ करें व भा २ ७ तइ व भा २ ८ दुबले इ भा २, दुबड व ९ मराइ इ, मराइ भा २ १० बुद्धिवंत पुरुष व भा २ ११ बृहस्पतिनाइ इ व भा २ आनी पछी व भा २ मां 'पण' छ १२ करवु इ, करवौं व भा २ १३ भणीं इ व १४ इद्रि इ इद व भा २ १५ राजना भा २ १६ मारवु व मारवुं भा २ १७ चेइ १८ आपणपान इ भा २ व भा २ मां आ श्लोकना अनुवाद आ प्रमाण छे (व ना पाठ साथे कासमां भा २ नां पाठान्तर छ)

जो आगणगानि [आगणगनि] ऋद्धि सत्त आयु एतलां वांछीये तो सम करइ [करे] तोहि [तोहि] विश्वास न करवो.

१९ वाछीये इ. २० तो इ. २१ अनइ इ. २२ अनइ इ. २३ तो इ. २४ शम इ. २५ ये ड. २६ म यो इ. २७ होइ इ. २८ तेन्हो इ. २९ शनु व भा-२; इ मा आ संस्कृत श्लोक छे पण तेनो गुजराती अनुवाद नथी. ३० देखने व भा-२, पछी व भा-२ मा 'पण' छे. ३१ नहीं व भा-२. ३२ विश्वासीनइं व, विश्वासीनइ भा-२. ३३ इंद्रे भा-२. ३४ दिति दैत्य मातानो व भा-२. ३५ गर्भ व भा-२. ३६ विनाश व भा-२. ३७ निश्चय इ व भा-२. ३८ एकांतनि इ; पछी व भा-२ मा 'एकात प्रच्छन्न रही' एवो पाठ छे. ३९ दमनकनी इ. ४० जोतो इ व भा-२. ४१ हौउ इ व भा-२. ४२ इ मा आ पंक्तिनो पाठ आ प्रमाणे छे: 'दमनक संजीवक कन्हइ जईनइं वृषभ जाणीनइं हर्षित थयको चीतवतो हौउ,' आ पंक्ति व भा-२ मा नथी. [पृ. ४४] ४३ भर्युं इ, भर्‌युं व, भर्‍यूं भा-२. ४४ हौउं इ, हौंउ व, हो भा-२. ४५ ईणें इ, ईणि व, इणे भा-२ ४६ माहू इ, माहि व भा-२. ४७ वश व. ४८ बोल्युं भा-१ इ व, बोल्यू भा-२. ४९ छि भा-२ ५० कुलीनपणें भा-१ भा-२, कुलीनपणे इ, कुलीनपणि व. ५१ सुहृदपणें भा-१ इ भा-२, सुहृदपणि व, मुख्य प्रतमाथी पडी गयेलो आ शब्द भा-१ माथी लीधो छे ५२ वचने भा-१ भा-२. ५३ प्रधाननइ भा-१ इ, प्रधानने व भा-२. ५४ वश व भा-२. ५५ नोहइ भा-१, न होइ इ व भा-२. ५६ जा व. ५७ लगइ भा-१ इ, लगे व भा-२. ५८ न हुत्रो ५९ पडुं इ, पड्यो व भा-२. ६० होइ हुत्रो. ६१ आपदानें व भा-२. ६२ पाम्यो हुत्रो. ६३ थतो भा-१ इ, °थो व भा-२. ६४ प्रधाननइ भा-१ इ, प्रधानने व, प्रधाननें भा २. ६५ वश व भा-२. ६६ होइ हुत्रो. ६७ तेथी व भा-२. ६८ प्रधान हुत्रो. ६९ राजान्हे भा-१ इ, राजाने व, राजान भा-२. ७० पंक्तिनो उत्तरार्ध व मा 'सदा पीडा वाछि' अने भा-२ मा 'सदा पीडा वाछे' ए प्रमाणे छे ७१ पामी भा-१ इ ७२ वाछइ भा-१ इ. ७३ यिम भा-१ इ, जिम व भा-२ ७४ कदाचे भा-२. ७५ इ मां नथी ७६ वैद्य भा-१, वैद्यने इ भा-२, वैद्यने व ७७ वांछेइ भा-२ ७८ आपदा भा-१ व भा-२. ७९ थको हुत्रो. ८० प्रधाननें भा-१, इ भा-२, प्रधाननि व. ८१ वाछइ भा-१ इ, वाछिइ व, वाछेइ भा-२ ८२ एहुं हुत्रो ८३ चीतवी भा १, चीतवतो इ ८४ भणी भा-१ इ ८५ हौउ इ व भा-२, आ परिच्छेद भा-१ मां संक्षेपमा नीचे प्रमाणे छे :

एहवुं बोलतां दमनक पिंगल कन्हीं आवी नमस्कार करी बैठो. पिंगल बोल्यो, "अरे तुं घणे दिने दीठो!" [दमनक बोल्यो], "तुम्हारा प्रसादथी दीठो." पिंगल बोल्यो, "कहो मारुं बोलिसि." दमन बोल्यो, "हुं स्वामी आगलि अभय बोलिइ! बोल्युं छइ.

८६ दमनकन्हइ ड ब भा-२. ८७ आवी ड ब भा-२. ८८ बइठउ ड, बइठो ब भा-२. ८९. हवो ब भा-२. ९० पिंगल ड ब भा २; पछी भा-२ मां 'ज' छे. ९१ घणे ड बभा-२ ९२ दिनरनइ ड भा-२, दिनइ ब. ९३ दीठउ ब, दीठइ भा-२. ९४ बोलइ ड ब भा-२. ९५ बोल्युं ड. ९६ ते ड, तें ब भा-२. ९७ हुं ड; ब भा-२ मां नथी. ९८ स्वामी ड ब भा-२. ९९ तम्हारा ड ब भा-२. १०० बोल्युं ड. १ मारुं ड भा २, मारु ब. २ बोलिसि ड, बोलि ब भा.२. ३ बोल्युं ड. ४ हुं ड भा-२, हुं ब; 'स्वामी आगलि हुं' ए प्रमाणे ब भा-२ मां शब्दक्रम छे. ५ बोलाइ ड, बोलीइ ब भा-२. ६ बोल्यु ब. ७ छइ ड, छे ब, छिइ भा-२. [पृ. ४५] ८ महानिइ भा-१ ड, महान ब भा-२. ९ ते भा १ ड. १० देव हस्तो. ११ आगलि हस्तो. १२ बोलुइ भा-१ ड ब, बोलूं भा-२. १३ जहुं भा-१, जइ ड ब, जुइं भा-२. १४ बोलइ भा-१ ड ब, बोलिइ भा-२. १५ नागर भा-१ ड भा-२, वनराजानि ब. १६ पामइ भा-१ ड, पामिइ ब, पामें भा-२. १७ भा-१ मां नथी. १८ रिपि ब, रपि भा-२; पछी ब मां 'एहु' अने भा-२ मां 'एहुं' छे. १९ बहे हस्तो. २० डमनय हस्तो. २१ राजाने भा-१ ड, राजा ब भा-२. २२ परि हस्तो. २३ देखो भा-१ ड, मानवो ब भा-२. २४ वसइ भा-१ ड, दिसइ ब, दिसइ भा-२. २५ दृष्टि भा-१ ड भा-२. २६ देखो भा-१ ड, जोवो ब भा-२. २७ होइ हस्तो. २८ राजानिं भा-१ ब, राजानइ ड भा-२; अन्य हस्तो. मां आनी पछी 'ए' छे. २९ निशेष हस्तो; पछी ब भा-२ मां 'अधिक' छे. ३० छइ भा-१ ड, छेइ ब, छे भा-२. ३१ जे ब भा-२. ३२ ये हस्तो. ३३ जन्मान्तरें भा-१ ड, जन्मान्तरि ब भा-२. ३४ पामीये भा-१ ड ब, पामीयइ भा-२. ३५ बोल्यु ड. ३६ भा-१ मां नथी. ३७ तें भा-१ ड भा-२. ३८ हुसे भा-१, हुसि ड, होसे ब भा-२. ३९ ऊपरि हस्तो. ४० महा भा-१, महान ड ब भा-२. ४१ कोप न करें हस्तो. ४२ एहुं ड ब भा-२, भा-१ मां नथी. ४३ मानीनइ ड भा-२, मानीनिइ ब, भा-१ मां नथी. ४४ तीणि ड ब भा-२, भा-१ मां नथी. ४५ मारइ भा-१ ड, मारयो ब भा-२. ४६ बोल्युं ड, बोलु ब, बोल्यूं भा-२.

४७ छिइ व, छि भा-२. ४८ ये भणी द, जेथी व भा-२; आ श्लोकनो अनुवाद भा-१ मा आ प्रमाणे छे :

महात महातशुं कलह करइ पण नीचाशुं नही.

४९ कुला इ, भा-२ मा 'कूला नीचा' एवो शब्दक्रम छे. ५० ऊपाडइ इ, ऊपाडि व, ऊपाडे भा-२. ५१ भा-२ मा नथी. ५२ मातनो इ, महातनो व भा-२. ५३ महातशुं इ व, महांशुं भा-२. ५४ करइ इ, करे व, करे भा-२. ५५ नीचाशुं इ व भा-२. ५६ नहीं इ. [पृ. ४६] ५७ भ्रमर ह्प्रो. ५८ हस्तीना भा-१. ५९ कुंभस्थलनइ भा-१ इ, कुंभस्थल व, कुंभस्थलने भा-२. ६० विपइ भा-१, विपिइं इ, विपे व, विपे भा-२. ६१ मदे व भा-२. ६२ लोभने भा-१ इ. ६३ पाम्या ह्प्रो. ६४ पुगे भा-१ इ, पोगे व, पागे भा-२. ६५ हस्तीवइ भा-१ इ, हस्तीने व, हस्तीने भा-२. ६६ माथे ह्प्रो. ६७ करे भा-१ इ भा-२, करिं व. ६८ पणि भा-२. ६९ बलवंत व भा-२. ७० थको ह्प्रो. ७१ भ्रमर ह्प्रो. ७२ ऊपरि ह्प्रो. ७३ न ह्प्रो. ७४ पामइ भा-१ इ, करिइ व, करेइ भा-२ ७५ तेथी व भा-२. ७६ ये भा-१ इ, व भा-२ मा नथी. ७७ व भा-२ मा नथी. ७८ सरखा भा-१ इ, तुल्य व भा-२. ७९ °शुं ह्प्रो, व भा-२ मा आ पंक्तिनो उत्तरार्ध आ प्रमाणे छे · (व ना पाठ साथे कौंसमा भा-२ ना पाठान्तर छे)

बलवंत होइ तेशु कोप पामि[पामे] पण हीनसुं[हीनशुं] कोप न पामि[पामे].

८० ते ह्प्रो. ८१ महानुमाव ह्प्रो. ८२ छेइ व, छिइ भा-२. ८३ अनइ ह्प्रो. ८४ हुं ह्प्रो. ८५ छु ह्प्रो ८६ तेन्हे भा-१, तेन्हें इ व भा-२; पछी भा-१ मा 'युद्धे करी' एवा शब्द छे. ८७ ताहु भा-१ इ, ताहो व भा-२. ८८ सेवक ह्प्रो. ८९ करेशि इ भा-२, करेंशि व. ९० पिंगल भा-१; अहींथी शरू करी,....... 'अभयप्रदाननुं वचन मागीनइं ह्म्हेनइं ईहा लेई आवि, एहवूं वचन कहे ते हहुं,' त्यां सुधीनो मुख्य प्रत 'वि' ना पृष्ट 20-B सुधीनो भा-१ मां आ प्रमाणे छे :

पिंगल बोल्यो, "तूं समर्थ छइ ?" [दमनक बोल्यो], सामी, च्यारि सैन्यादिके तुहि जे युद्धे." पिंगल बोल्यो, "तो तूंन्हि प्रधान करेमि" दमनक बोल्यो, "स्वामी ते मोटो सजीवक ईश्वरनुं वाहन, मइ पूछ्यो कहि, 'हु ईश्वरे यमुनाकाठि चरवा कृपा करी मुंक्यो छुं ' पछइ मइ आकरे वचने करी तेन्हे एहवू कह्यूं, चंडिकानु वाहन सिंह ते सर्व मृगपति राजा, तेणि स्नेहे करी बोलावइ छइ, तेन्हे तुं

अभ्यागत अतिथि छे. अनेक गोरयन पान मंडानइ अर्थि बोलाविइ छइ. पछइ तेणि ते सर्व मांन्यू अनइ वरता लागो, 'पिंगल स्वामीनी अभयवाणी पामु तो आवुं.' पिंगल हर्षयो बोल्यो, "मइ तेन्हं अभयप्रदान दीधुं छइ. हवइ तुं तेहनुं अभय-प्रदाननु वचन मागीनइ तेन्हें ईहा लेई आवि, एहुं वचन कहें ते रहूं."

९१ बोयो इ व भा-२. ९२ पट्ट इ, पहो व भा-२. ९३ तेन्हइ इ, तेन्हे व भा-२. ९४ अनइ इ व भा-२. ९५ तुं इ व, तूं भा-२. ९६ तेन्हे इ व, तन्हें भा-२. ९७ माहूं इ, व भा-२ मां नथी. ९८ छि व, छे भा-२. ९९ *स्वामिन्* इ, *स्वामी* व भा-२. १०० बुद्धंय इ; व भा-२ मां आ पंक्ति आ प्रमाणे छे : (व ना पाठ साथे कौंसमां भा-२ ना पाठान्तर छे.)

स्वामी बुद्धि वरी इ [छुं] एज न साधीजे.

१ योयुं इ व भा-२. २ छइ इ, छेइ व, छे भा-२. ३ हथीयारे व, हथीआरें भा-२. ४ हाथीये व, हाथीयें भा-२. ५ पाला इ व भा-२. ६ इणें इ, इणे व भा-२; पछी व भा-२ मा 'जे' छे. ७ पामिइ व, पामे मा-२. ८ बुद्धि इ व भा-२. ९ कार्यसिद्धि इ; व भा-२ मा नथी. १० पामइ इ, पामिइ व, पामे मा-२. ११ बोयो इ व भा-२. १२ ईम इ, इम व भा-२. १३ थकी इ, °थी व भा-२. १४ तुंन्हें इ, तुंन्ह व, तूंन्हे भा-२. १५ प्रधान-पणुं इ व, प्रधानपणूं भा-२. १६ मे इ व, मे भा-२. १७ आप्युं इ व भा-२. १८ तुंहुं व भा-२ १९ वरयेइ भा-२. २० मणी इ. २१ तुं इ, तूं व भा-२. २२ जईनइ इ, जईने व, जईनइ भा-२; पछी व भा-२ मा आ पंक्तिनो उत्तरार्ध आ प्रमाणे छे :

तूं माहूं सेवक थाई तिम वरि.

२३ माहूं इ. २४ सेवक इ. २५ थाइ इ. २६ तिम इ. २७ पछि भा-२. २८ दमनक इ व भा-२. २९ पिंगलकनें इ भा-२, पिंगलकनि व. ३० करीनइ इ, करीने व, करीनें भा-२. ३१ कन्हेइ इ, कन्हे व भा-२. ३२ जैनइ इ, जैनि व, जैनेइ भा-२. ३३ आक्षेपपूर्वक इ व भा-२. ३४ एहुं इ व भा-२. ३५ हीड इ, हींड व भा-२. ३६ तुन्हें इ; पंक्तिनो पछीनो पाठ व मां '*तुन्हि पिंगलक सिंह तेडिइ छि,*' अने भा-२ मा '*पिंगलक सिंह तूंन्हे तेडे छेइ*' ए प्रमाणे छे. ३७ तुं इ व भा-२; पछीना 'तो मोटे' ए मुरय प्रतना शब्द इ व भा-२ मां नथी, पण 'तुं' पछी इ मा 'शु', व मां 'शि' अने भा-२ मां 'शे' शब्द छे, आथी वाक्य प्रश्नार्थ बन्युं छे. ३८ मोटि इ, मोटी व, मोटे भा-२.

३९ मोर्दे इ भा-२, त मा नथी ४० करि व, करे भा-२ ४१ छेइ इ व भा २ ४२ एहुं इ व भा-२ ४३ साभलीनइ इ, साभलीनइ व, साभलीनेइ भा-२. ४४ आनी पछी व भा-२ मा 'वृषभ' छे ४५ भाई इ व भा-२. ४६ व भा-२ मा 'ते पिंगल्क' एवो शब्दक्रम छे ४७ कुण इ, कोण भा-२, पछी व मा 'छिइ' अने भा-२ मा 'छेइ' छे ४८ एहु इ व भा २ ४९ साभलीनइ व, साभलानेइ भा २ ५० बोल्तो इ भा-२. ५१ हौउ इ व भा-२. ५२ तु इ व भा-२ ५३ ये इ. ५४ स्वामी इ व भा-२ [पृ ४७] ५५ तेन्हे इ, तेन्हि व, तेन्हे भा-२ ५६ जाणतो इ व भा-२ ५७ वेगो इ, वेगो व भा-२ ५८ तेन्हु इ व, तेहनू भा-२ ५९ करि इ. ६० नहीतर इ, नही तो व भा-२, पछी व मा 'तेहु' अने भा-२ मा 'तेनू' शब्द छे ६१ पामेशि इ व, पामीश भा-२ ६२ ते इ व भा-२. ६३ सघलि व, सघलें भा-२ ६४ वनने जीवि व, वनने जीवे भा-२ ६५ चीथो व भा-२ ६६ °थो व भा-२. ६७ सघलाना इ, सर्वेनो व भा २ ६८ वड तले इ, वडने तलि व, वडने तले भा-२ ६९ छइ इ व, छे भा-२ ७० मुख्य प्रतमाथी पडी गयेलो आ पाठ इ माथी लीधो छे ७१ आनी पछी भा-२ मा 'वृषभ' छे ७२ साभलीनइ इ, स्याभलीने व, साभलीने भा-२ ७३ दुखने इ, दुख व भा-२ ७४ पाम्यो इ भा-२, प्याम्यो व ७५ वात्यु इ ७६ मुख्य प्रतमाथी पडी गयेलो आ पाठ इ माथी लीधो छे, व भा-२ मां पण आ पाठ छे व मा 'तु' अने भा-२ मां 'तू' पाठ छे ७७ रुद्दु इ, रुद्दु व, रुडू भा २ ७८ वोली इ व भा-२ ७९ जाणइ इ, जाणि व, जाणे भा २, पछी व मा 'छे' अने भा-२ मा 'छेइ' छे ८० दीसे इ, दीसें व भा २ ८१ छइ इ, छि व, छे भा २ ८२ तु इ, तु व, तू भा-२ ८३ मुन्हे इ, मुन्हें व, मुन्ह भा २ ८४ अवश्य इ व भा-२ ८५ जाएशि इ व भा-२ ८६ पछी व मां 'तु' अने भा-२ मा 'तू' छे ८७ मुन्ह इ भा-२, मुन्हि व ८८ अभयदान इ व भा २ ८९ दइनइ इ, व मा 'देइ' पछी 'अनइ' अने भा-२ मा 'दे' पछी 'अनइ' छे ९० जे व भा-२ ९१ पहि इ, पहि व, प भा २ ९२ ते इ, ते व भा-२ ९३ साचुं इ ९४ बोल्यु इ व, बोल्यू भा २ ९५ राजनीति इ व भा २ ९६ छि इ, छे व, छेइ भा-२ ९७ वोयु इ व, वाल्यू भा-२ ९८ छइ व, छेइ भा-२. ९९ भुइनो व भा-२. १०० छिट व १ जाणीयें इ, जाणीयि व, जाणीयेइ भा-२ २ अनइ इ, अनिइ व ३ जाणीये इ व भा २ ४ पर्वतनो इ व, पर्वतनु भा-२ ५ जाणीये इ व भा २. ६ कीम्हइ इ, व भा-२ मा नथी ७

छेह व भा-२. ८ जाणीये इ व, जाणीयेइ भा-२. ९ आनी पहेलां व मां 'अहो' छे १० लगइ इ भा-२, लगे व. ११ तुं इ व भा-२. १२ इहां भा-२. १३ व भा-२ मा नथी. १४ रहइ इ, रहेइ भा-२. १५ जेतलें इ, जां लगे व, जा लगइ भा-२. १६ हुं इ व भा-२. १७ तिहा इ व भा-२. १८ जई इ, जैं व भा-२. १९ व भा-२ मा नथी. २० शु इ, व भा-२ मां नथी. २१ अनिं व, अने भा-२. २२ वरि व. २३ 'सत्य बोल' आ शब्द व भा-२ मा नथी. २४ आवु इ, आवुं व भा-२. २५ पछइ इ, पछेइ व. २६ तुं इ, व भा-२ मां नथी. २७ तिहा भा-२. २८ लेई इ व भा-२. २९ जांउं इ व भा-२. ३० पछइ इ, पछेइ व, पछे भा-२ ३१ ते इ, व भा-२ मां नथी. ३२ कन्हेइ व, कन्हे भा-२. ३३ जईनेइ इ, जैने व भा-२. ३४ एहुं इ व भा-२. ३५ हौंइ इ, हौउ व भा-२. ३६ स्वामी इ व भा-२. ३७ पछी व भा-२ मां 'तो' छे. ३८ नान्हो इ व भा-२. ३९ नहीं व भा-२. ४० मे इ भा-२. ४१ पूछ्यू इ, पूछ्यो व, पूछो भा-२; आनी पछीनी त्रणेक पंक्ति व भा-२ मा आ प्रमाणे छे: (व ना पाठ साथे कौंसमा भा-२ ना पाठान्तर छे.)

'इम कहेइ[कहे छे] जे हुं ईश्वरना वाहननो वृषभ छु, कहेइ, हुं ईश्वरें[ईश्वरे] कृपा करी यमुनानेइ[यमुनाने] कांठिं[कांठेइ] हुं चरवा मुंक्यो छुं[छूं] वली घणूं शुं[शूं] कहुं ? [ए वन ईश्वरे क्रीडा करवा मन्हें आप्यूं छेइ.]

४२ छुं इ. ४३ हुं इ. ४४ ईश्वरें इ. ४५ यमुनानें इ. ४६ काटइ इ. ४७ मुक्यो इ. ४८ छुं इ. ४९ घणुं इ. ५० शुं इ. ५१ कहु इ. ५२ ईश्वरि इ. ५३ हुं इ. ५४ करवानें इ. ५५ मुंन्हे इ. ५६ आप्युं इ. ५७ इ मा नथी. ५८ 'पिंगलक बोल्यो'. .... त्यांथी शरू करी........ 'त्याहा जैईनि ति शुं कहुं ? त्या सुधीनो मुख्य प्रतनो पाठ के तेना पाठान्तर व मा नथी. ५९ स्वामिन् इ भा-२, स्वामिन व. ६० मे इ व, मे भा-२. ६१ एहु इ, एहुं व भा-२ ६२ आनी पछी व भा-२ मा 'जे' छे. ६३ चंडिकानु इ, चंडिकानो व भा-२ ६४ ए व भा-२. ६५ व भा-२ मा नथी. ६६ वनमां भा-२. ६७ रहे इ व भा-२. ६८ छइ इ, छि व, छे भा-२. ६९ तेन्हे इ भा-२, तेम्हे व. ७० तूं भा-२. ७१ छे इ, छि व, छेइ भा-२. ७२ ते भणीं इ, तेथी व भा-२ ७३ भा-२ मा नथी. ७४ तुंन्हरइं इ, तुम्हे व भा-२. ७५ बोलावइ इ, बोलावि व, बोलावे भा-२. [पृ. ४८] ७६ छइ इ, छिइ व,

छेइ भा-२. ७७ माईपणा इ, माइपणा व भा-२. ७८ थकें इ, थी व भा-२; ७९ तून्हें इ, व भा-२ मा नथी. ८० स्नेहें इ, स्नेहे भा-२. ८१ अनेक इ व भा-२. ८२ भोज्यपान इ व भा-२. ८३ क्रीडानइ इ, क्रीडा एन्हें व, क्रीडा एन्हे भा-२. ८४ रह्वानें इ व भा-२. ८५ बोलावइ इ, बोलावे व भा-२. ८६ छइ इ, छे व, छेइ, भा-२. ८७ पछइ इ, पछेइ व, भा-२ मां नथी. ८८ तीर्णि इ व, तीर्ण भा-२. ८९ मान्युं इ व भा-२. ९० अनइ इ भा-२, अने व. ९१ स्वामीनी इ, स्वामींनी व भा-२. ९२ पामुं इ, पामूं व भा-२. ९३ एहुं इ व भा-२. ९४ होउ इ व भा-२. ९५ ते इ भा-२. ९६ साधु इ व भा-२. ९७ बोल्युं इ, बोल्यो व भा-२; व मां पछी 'छइ' अने भा-२ मा 'छेइ' छे. ९८ माहूे इ, माहूा व भा-२; व मा आनी पहेला 'तें' छे अने भा-२ मा 'ते' छे. ९९ हृदयनें इ भा-२, हृदयनि व. १०० क्युं व भा-२. १ अनइ इ व, अनेइ भा-२. २ मइ इ, मि व, मे भा-२. ३ तेन्हे इ, तेहनि व, तेहनें भा-२. ४ अभयप्रदान इ, अभयदान व भा-२. ५ दीधुं इ, दीधुं व भा-२. ६ छइ इ; व भा-२ मां नथी. ७ हविं व, हवें भा-२. ८ तूं व भा-२. ९ तेहनुं इ व भा-२ मा नथी. १० अभयप्रदाननुं इ, अभयदाननुं व, अभयदानगं भा-२. ११ मागीनइ इ, पामीने व, पामीनेइ भा-२. १२ तेन्हिं इ, तेन्हे व, तेन्हे भा-२. १३ ईहा व, इहां भा-२. १४ एहुं इ व भा-२. १५ वहि इ व, कहे भा-२. १६ रुडुं इ व, रुडूं भा-२. १७ वासा भा-२. १८ कुंला भा-१ इ. १९ सुंआला भा-१ इ. २० होइ ह्प्रो. २१ अनइ भा-१ इ व, अनेइ भा-२. २२ करें भा-१ व भा-२. २३ एह्वा ह्प्रो. २४ ये भा-१ इ, जे व भा-२. २५ प्रधान ह्प्रो. २६ तीर्णे भा-१ इ, तीणे व, तीर्ण भा-२. २७ राज्य ह्प्रो. २८ धरीये ह्प्रो. २९ थामे भा-१ इ, स्तंभे व भा-२; पछी व भा-२ मा 'करी' छे. ३० धरीये ह्प्रो. ३१ प्रधाननी ह्प्रो, व भा-२ मा आ श्लोकनो अनुवाद आ प्रमाणे छे: (व ना पाठ साथे कौंसमां भा-२ ना पाठान्तर छे.)

प्रधाननी परीक्षा जिहां[जेह] विहि राजा भिन्न थवा मेल करें तिवारें बुद्धि जाणवी अनेइ[अनइ] वैद्यनी परीक्षा सनिपात पडी गतां जाणीये. स्वस्थ छता कोण [कोण] आपणी चातुरी न[ने] देखवे[देषवे].

३२ जिहां भा-१ इ. ३३ होइ भा-१ इ. ३४ तीहा भा-१, तीह्रां इ. ३५ मेल भा-१ इ. ३६ जार्णीये भा-१ इ. ३७ अनइ भा-१ इ. ३८ जाणीये भा-१ इ. ३९ आपर्णी भा-१ इ. ४० वेलवइ भा-१ इ. ४१ वेलवइ भा-१ इ. ४२ पिंगल-

वन ह्प्रो ४३ प्रमाण ह्प्रो ४४ करीनइ भा-१ इ, करीनेइ व, करीनड भा-२ ४५ समीपि ड व, समीर भा-२ ४६ अनइ ह्प्रो ४७ हर्षयुक्तथो भा-१ इ, हर्षयुक्त व भा-२ ४८ चींतवतो भा-१ इ भा-२, चींतवतो व ४९ हौउ ह्प्रो. ५० स्वामी ह्प्रो ५१ अम्हनें भा-१ इ, नम्हन व, तम्हने भा-२ ५२ करे ह्प्रो ५३ छेइ व भा-२ ५४ अनइ ह्प्रो, पछी व भा-२ मा 'माहू' छे ५५ वचननइ भा-१ ड, वचनने व, वचनहे भा २ ५६ वश भा-१ इ ५७ हौउ ह्प्रो ५८ मु भा-२ इ, मूं भा-२ ५९ थक भा-१, थकइ व भा-२. ६० अनेरो ह्प्रो ६१ धन्य ह्प्रो, व मां 'धन्य वो' अने भा २ मा 'वा धन्य' एवो शब्दक्रम छे ६२ बोल्यु भा-१ इ, बोल्यु व, बोयु भा-२ ६३ छइ व भा-२ [पृ ४९] ६४ शीयाले भा-१ इ व, शीआले भा-२, आनी पहेला व भा-२ मा 'अनइ' छे ६५ होइ ह्प्रो, आनी पछी भा- मा 'अनइ' छे, व भा-२ मा 'अनइ उष्णकालि' एवो पाठ छे ६६ टाढु भा १, टाढु इ, टाढू व भा-२ ६७ होइ ह्प्रो. ६८ अनइ ह्प्रो ६९ राजानू भा-२ ७० मान्य ह्प्रो ७१ अमत ह्प्रो ७२ होइ ह्प्रो ७३ अनइ भा-१ व भा-२, इ मां आ पंक्तिनो अनुवाद नथी. ७४ सत्पुरुषनो भा-१ व भा-२ ७५ अमृत ह्प्रो ७६ होइ ह्प्रो ७७ सजीवकनइ भा-१, सजीवकन इ व भा २ ७८ पामीनइ भा-१, पामीनइ इ व, पामीनई भा-२ ७९ हौउ ह्प्रो ८० भा-१ मा नथी ८१ ताहे व भा-२. ८२ स्वामी ह्प्रो ८३ प्रसन्न ह्प्रो ८४ छेइ व, छे भा-२ ८५ तीणें भा-१ इ भा-२, तेणिं व ८६ दीधु ह्प्रो ८७ छइ भा-१ इ व, छे भा-२ ८८ वेगा ह्प्रो ८९ चाल्यो भा १ इ, चालु व भा-२ ९० मे भा-१ इ भा-२, मे व ९१ पाम्यो भा-१ ९२ छे व, छेइ भा-२, आनी पछी भा-१ मां आ परिच्छेदनो उत्तरार्ध संक्षेपमां नीचे प्रमाणे छे

"तुम्हि मोटो करेसि" सजीवक बोल्यो, "ताह्रो हु आधीन छु हु कहेशि तिम हु करेसि इम करतां बिहि मिली आपण राज्यलक्ष्मी भोगवशुं. आपण बिहि चोल छइं

९३ रहिवु इ, रहवु व भा-२ ९४ नहीं व भा-२ ९५ व भा-२ मां नथी ९६ नहीं इ, व भा-२ मां 'गर्व न करवो' एवो शब्दक्रम छे ९७ हुइ इ, हु व भा-२. ९८ ताह्रा इ व भा-२ ९९ काजुनें इ व भा-२. १०० राजधुरानी इ, राजधुरानें व भा-२. १ प्रधानपदवी इ भा-२, प्रधानपदीवी व २ पामीनइ इ व, पामीनइ भा २ ३ प्रधानवट इ व भा २ ४ करेशि इ व, करशि भा-२. ५ बोल्यो इ व भा-२ ६ ताह्रि इ, ताह्रो व, ताह्रे भा-२. ७ हुं इ व. ८

अधीन इ व, आधीन भा-२. ९ छुं इ व. १० तुं इ व भा-२. ११ कहेशि इ व भा-२. १२ व भा-२ मा नथी १३ करेशि इ व, करीश भा-२. १४ इम इ व भा-२. १५ बिहे व भा-२. १६ व भा-२ मां नथी १७ भोगवशुं इ व भा-२. १८ आपणपा व भा-२. १९ बिहे व. २० बोलइ इ, बोले भा-२. २१ छइ इ, छेइ व भा-२. २२ बोल्युं इ व, बोल्यूं भा-२. २३ छिइ व भा-२. २४ आपेट भा-१. २५ तृप्ति भा-१ इ भा-२. २६ मनुष्यने ह्प्रो. २७ हुई इ, होइ व भा-२. २८ होइ ह्प्रो. २९ यिम भा-१, जिम इ व भा-२. ३० पारधिनं इ, पारधिवइ व भा-२; आनी पछी व मां 'एक प्रेरक, एम' शब्दो पडी गयेला छे. ३१ मृगने भा-१ इ व, मृगनेइ भा-२. ३२ मारइ भा-१ इ, मारेइ व भा-२. ३३ ये ह्प्रो. ३४ सेवकने भा-१ इ व. ३५ मानइ भा-१ इ, माने व भा-२. ३६ परि भा-१ इ, परिं व, पेरिं भा-२. ३७ स्थानभ्रंश ह्प्रो. ३८ थाड ह्प्रो. ३९ एहवुं ह्प्रो. ४० बोल्या ह्प्रो. ४१ कहितो भा-१, न्हतो इ व भा-२. ४२ हौंउ ह्प्रो. ४३ कहतो भा-१ इ भा-२, कहतौ व. ४४ हौंउ ह्प्रो.

[३. दंतिल श्रेष्ठी अने गोरंभ]

[पृ ५०]

१ भा-२ मां नथी २ पृथ्वीमाहि भा-१ इ व, पृथ्वीमाहे भा-२. ३ भा-१ व भा-२ मां नथी. ४ नामे ह्प्रो. ५ छइ भा-१ इ व, छे भा-२ ६ तिहा ह्प्रो. ७ एहवे भा-१ इ भा-२, एहवे व ८ नामि भा-१, नामिं इ, नामे व, नामें भा-२. ९ वहिवारीयो भा-१ इ, व्यवहारीयो व भा-२. १० छे भा-२, भा-१ इ व मा नथी ११ नगरमाहि भा-१, नगरमाहे व भा-२. १२ मोटउ भा-१, मोटु व, मोटा इ. १३ अन्य ह्प्रो. मा नथी. १४ अने भा-२ १५ राज्यमान भा-१, राज्यमानं इ, राज्यमान्य व भा-२ १६ एहुं भा-१ इ, एहवे व, एहवे भा-२ १७ वसे भा-१ इ, वसेइ व, वसेइ भा-२ १८ तीर्णे ह्प्रो. १९ राजानु ह्प्रो. २० काम भा-१, कार्य व भा-२. २१ थका इ, व भा-२ मां नथी. २२ सुरा ह्प्रो. २३ अनइ भा-१ इ, अने व भा-२. २४ ते ह्प्रो. २५ नगरनो ह्प्रो २६ मुरा ह्प्रो २७ घणु भा-१ इ व. २८ शुं भा-१ इ व. २९ कहीइ भा-१ इ, कहीये व भा-२. ३० ते ह्प्रो ३१ सरपो ह्प्रो ३२ नहीं भा-१ इ भा-२. ३३ चतुर ह्प्रो. ३४ कुणहे भा-१ इ, कूणे व, कोणें

भा-२. ३५ हुसे भा-१, हुसि इ, होशे व, होशि भा-२. ३६ ए भा-१ इ, व भा-२ मां नथी. ३७ बोयुं भा-१ इ व, बोल्यूं भा-२. ३८ छइ भा-१ इ, छे व, छेइ भा-२. ३९ ये भा-१ इ भा-२. ४० राजानि हप्रो. ४१ करइ भा-१ इ, करें व भा-२. ४२ ते हप्रो. ४३ लोक्ना हप्रो ४४ वैरी हप्रो. ४५ थाइ हप्रो. ४६-अनइ हप्रो. ४७ ये भा-१ इ, व भा-२ मा नथी. ४८ लोकने हप्रो. ४९ करे इ, करें व भा-२. ५० तेन्हे भा-१ इ व, तेहे भा-२. ५१ छाडइ भा-१ इ, व भा-२ मां नथी. ५२ लजइ भा-१ इ, लजे व भा-२. ५३ एहु भा-१, एहुं इ, एहो व भा-२. ५४ समानवाद हप्रो. ५५ लोकने भा-१ इ भा-२, लोक्न्हे व; आनी पछीनो श्लोक्नो अनुवाद व भा-२ मां आ प्रमाणे छे: (व ना पाठ साथे कौंसमां भा-२ नां पाठान्तर छे.)

१ लोकन्हें[लोकनें] हित करे, राजानें हित करे तेहो प्रधान दुर्लभ.

५६ अनइ भा-१ इ. ५७ राजानि भा-१ इ ५८ करइ भा-१ इ. ५९ तेहो भा-१ इ. ६० कार्यनो भा-१ इ. ६१ तिवार हप्रो. ६२ तेन्हे भा-१ इ, ते दंतिल्नेइ व भा-२. ६३ दिवसे हप्रो. ६४ पुनना व भा-२. ६५ उत्सव हप्रो. ६६ हौउ हप्रो ६७ तीगें भा-१ इ, तीणि व, भा-२ मा नथी ६८ बोलावी हप्रो. ६९ देई अनइ व, देईनेइ भा-२ ७० वह्ले हप्रो. ७१ हौउ हप्रो. ७२ पछें व भा-२. ७३ व भा-२ मां नथी. ७४ पूठि भा-१ इ, व भा-२ मां नथी. ७५ सघातिं भा-१ इ, सघाते व भा-२. ७६ आणीने भा-१ इ, आणी व भा-२. ७७ अने भा-१ इ, अनइ व भा-२. ७८ भा-२ मा नथी. ७९ राजानां भा-२. ८० बहारइ भा-१ इ, बाहरि व, बाहिर भा-२. ८१ पूठि भा-१ इ, पूठें व भा-२. ८२ अनइ हप्रो. ८३ नीच भा-१ इ, नीचनइ व, नीचने भा-२. ८४ ठामि हप्रो ८५ उभ्यो भा-१, ऊभो इ व भा-२. ८६ रह्यो हप्रो. ८७ राजानो भा-१ व भा-२, राजानु इ. ८८ अन्य हप्रो मां नथी. ८९ सेवक हप्रो. ९० गोरंभ हप्रो ९१ एह्वे भा-१ इ भा-२, एहवें व. ९२ नामे भा-१, नामें इ व भा-२. ९३ भुडइ भा-१ इ, भुंडेइ व, भूंडे भा-२. ९४ टामि हप्रो. ९५ रह्युं भा-१ इ, रह्यो व भा-२, आनी पहेला 'ऊभो' अने भा-२ मां 'उभो' छे ९६ देखीने भा-२. ९७ धक्को भा-१ इ, °धु व, °धो भा-२ ९८ गर्लाची भा-२. ९९ मारी व भा-२. १०० व भा-२ मां नथी. [पृ. ५१] १ अपमान हप्रो. २ धक्को भा-१, थके इ, °धी व भा-२. ३ मुंक्यो भा-१ इ. ४ धक्को भा-१ इ, °धो व भा-२ ५ रात्नेंयेइ भा-१ इ, रात्रि व भा-२; आनी पछी व भा-२ मां

'पण' छे ६ शूले भा-१ इ, सूइ व भा-२ ७ नदी भा-१ इ भा-२. ८ विमाशतो भा-१, विमाशतो इ, विमासतो व भा-२ ९ हौउ ह्प्रो १० हु ह्प्रो ११ व भा-२ मा नथी १२ शेठन ह्प्रो १३ राजानीं भा-२ १४ टालेशि व, टालिशि भा-२ १५ व भा-२ मां नथी १६ मे ह्प्रो १७ तेन्हे भा-१ इ भा २, तेन्ह व १८ चालइ भा-१, चालेइ इ, चाले व भा-२ १९ किम ह्प्रो २० बोल्यु इ व, बोल्यू भा २ २१ छिइ व, छेइ भा-२ २२ ये भा-१ इ भा-२ २३ होइ ह्प्रो २४ करे व, करे भा-२ २५ लज्जान भा-१ इ भा-२, ल्जानि व २६ वा भा-१ इ २७ पामइ भा १ इ व, पामे भा-२. २८ जिम ह्प्रो २९ चणो ह्प्रो ३० सेक्ता व ३१ चणा व भा-२ ३२ तो व भा-२, पछी व भा-२, पछी व भा-२ मां 'भ्राष्ट' छे ३३ भाठो व भा २ ३४ भाजवान भा-१ इ, भाजवा व भा-२ ३५ हाइ ह्प्रो ३६ *स्त्रिरें भा १ इ, स्त्रिरे व भा-२ ३७ कें ह्प्रो ३८ प्रमालि ह्प्रो ३९ सुपें* भा १, सुप इ, व भा-२ मा नथी ४० सूइ ह्प्रो ४१ पापलि ह्प्रो ४२ व भा २ मा नथी ४३ गोरभ ह्प्रो ४४ सारवतो ह्प्रो, भा-१ मां पछी 'थयो' छे ४५ हौउ ह्प्रो ४ शेठ ह्प्रो ४७ तु भा १ इ व, तु भा २ ४८ धूटणु भा-१ इ व ४९ जोउ ह्प्रो ५० राजानीं भा-२ ५१ स्त्रीन भा-१ इ भा २, स्त्रीने व ५२ हौउ ह्प्रो ५३ 'व' मा 'राजा' पहेला 'तेन्हु' छे अने भा २ मा 'राजा' पछी 'तेन्हू' छे ५४ साभलीनइ भा १ इ, साभली व भा २ ५५ वेगो ह्प्रा ५६ उठीनइ ह्प्रा ५७ हौउ ह्प्रो ५८ ये भा-२ ५९ तु भा-१ इ ६० कहें ह्प्रा ६१ छइ इ, छे व, छ भा २ ६२ सघाति भा १ इ भा २, सघात व ६३ आलिंगन ह्प्रा ६४ हौइ भा १ इ व, होइ भा २ ६५ व भा-१ मा नथी ६६ व भा २ मा नथी ६७ स्वामिन् ह्प्रो ६८ जू ह्प्रो ६९ हु ह्प्रा ७० जाग्यो ह्प्रो ७१ मुद्रय प्रत 'वि' माथी पडी गयेला आ पाठ भा १ माथी लीधा छे, इ व अन भा २ मां पण आ पाठ मळे छे ७२ मून्ह इ, मुन्हें व, मुन्हे भा-२ ७३ तेहेथी वि, तीणि व, तीण भा २ ७४ मुख मध्यथी व भा २ ७५ नीकळा भा-१ इ, नीकेली व ७६ ग्यु ह्प्रो ७७ जाणु ह्प्रो ७८ चित्तन्हे भा-१ इ, चित्तने व, चित्तन भा-२ ७९ विमा-सना भा १ व भा २, विमासतो इ ८० हौउ ह्प्रो ८१ आनी पछी भा-१ मा ने नण पंक्तिओनो पाठ नीचे प्रमाणे छे

ए गोरभ अनइ दति वाणीयो अम्हारा घरमांहि सघल्इ हींडइ अनइ ईण गोरभे राणीन आलिंगता सही दीठो होसि तीणइ ज ए मुटइ बोली ऊठ्यो

८२ अम्हारा इ व भा-२. ८३ सघलइं इ, सघलें व भा-२. ८४ हीडइं इ, हीडि व, हींडे भा-२. ८५ वाणीयो इ व भा-२. ८६ हींडे इ व, हींडि भा-२. ८७ व भा-२ मा नथी ८८ घरमाहि इ. ८९ अनइं इ. ९० ईणि इ, ईणि व, ईणे भा-२. ९१ गोरंभ इ भा-२, गोरंभ व. ९२ राणीनि इ, राणीनि व, राणीने भा-२. ९३ आलिंगनो इ, आलिंगन देतो व भा-२. ९४ व भा-२ मां नथी ९५ दीठु इ. ९६ हुसि इ, हुसि व, हुशे भा-२. ९७ तीणिइं इ, तीणि व, तीणे भा-२. ९८ 'ज' पछी अन्य हप्रो मां 'ए' छे. ९९ मुंडइ इ, मुंडिइ व, मुंडेइ भा-२. १०० उक्यो इ, ग्यो व भा-२. १ बोल्यु इ व, बोल्यूं भा-२. २ छइ इ, छिइ व, छि भा-२. [पृ ५२] ३ ये भा-१ इ. ४ मनुष्यें व. ५ दीहें भा-१, दीहे इ, दीहि व. देहें भा १. ६ वांछइ भा-१ इ व, वांछे भा-२. ७ जोइ हप्रो, पछी व भा-२ मा 'ते' छे. ८ तथा भा-१. ९ करेइं भा-१ इ, करिइ व करेइ भा-२. १० पुरुष हप्रो. ११ °मध्य व भा-२ १२ तेहे भा-१ इ, तेहना व भा-२. १३ अभ्यासथी व भा-२. १४ देषइ भा-१ इ व, देषेइ भा-२. १५ करइ भा-१ इ, करे व, करेइ भा-२. १६ भा-१ मां नथी १७ सुप्त° व भा-२ १८ शुभ हप्रो. १९ तथा भा-१. २० जेम हप्रो २१ मनुष्यने हप्रो. २२ होइ हप्रो २३ ते हप्रो २४ °माहे व भा-२. २५ थका इ, °था व भा-२ २६ मुंडइ भा-१ इ, व भा-२ मां नथी. २७ उचरइ भा-१ इ, उचरे व भा-२. २८ स्त्रीनइ भा-१ इ, स्त्री व, स्त्रीने भा-२. २९ विषइ भा-१ इ, विषेइ व भा २ ३० एह्नो भा-१ इ, एन्हो व भा-२. ३१ श्रु भा-१ इ, सो व भा-२ ३२ बोल्यु व, बोल्यूं भा-२. ३३ छिइ व, छेइ भा-२. ३४ हृदये व भा २, आ श्लोकनो अनुवाद व भा-२ मा आ प्रमाणे छे: (व ना पाठ साथे कौंसमां भा-२ ना पाठान्तर छे)

स्त्री अनेरा सघाते[सघाते] बोलइ[बोलेइ] अनइ जोइ अनेराने अनइ हैये चींतवि[चींतवे] अनेरानि[अनेराने] ते भणी स्त्रीनइ कुण प्रिय.

३५ बोलें भा-१ इ ३६ अनेरां भा-१, अनरा इ. ३७ सघातें भा-१ इ. ३८ देषे भा-१ इ ३९ अनेरानइं भा-१ इ. ४० अनइं भा-१ इ. ४१ हैये भा-१ इ ४२ चींतवे भा-१ इ. ४३ अनेरान भा-१ इ. ४४ स्त्रीनइ भा-१ इ. ४५ होइ भा १ इ. ४६ परपुरुषसु भा-१ इ, परपुरुषशु व भा-२. ४७ एतलानि व, एतलांने भा-२. ४८ व भा-२ मां नथी. ४९ सहि व, सहे भा-२. ५० कुलनु भा-१ व भा-२. ५१ पाडेनुं भा-१ इ, पतन व भा-२. ५२ लोकनां

व. ५३ सदेह ह्प्रो. ५४ एतलां ह्प्रो. ५५ अंगीकरइ भा-१ इ, अंगीकरि व, अंगीकरे भा-२. ५६ मुखुं भा-१, सुखुं इ व भा-२. ५७ भर्तारवश व भा-२. ५८ रुडुं भा-१ इ, उत्तम व भा-२. ५९ एतलानि व, एतलाने भा-२. ६० वाना भा-१, वानां इ, व भा-२ मां नथी. ६१ तृणने भा-१, तृणनं इ, तृणनी व भा-२. ६२ ठामि इ, परि व, परें भा-२. ६३ माने भा-१ इ, मांनइ व, मानइ भा-२; आनी पछी व भा-२ मां नीचे प्रमाणे अनुवाद छे: (व ना पाठ साथे कोसमां भा-२ ना पाठान्तर छे)

अनइ चोरिनइ परपुरुषशुं रमइ [रमेइ]

६४ ये भा-१ इ. ६५ पुरुषशुं भा-१ इ. ६६ होइ भा-१ इ. [पृ. ५३] ६७ वैश्वानर व भा-२; पछी व मा 'केतलेइ काष्टे' अने भा-२ मा 'केनले काष्टे' छे. ६८ पामइ ह्प्रो. ६९ नदीये भा-१ इ, केतलीइ नदीयें व भा-२. ७० पामइ भा-१ इ व, पामे भा-२. ७१ प्राणी भा-१ इ, केतलेइ प्राणीये व, केतले प्राणीयें भा-२. ७२ मारतां भा-१ इ, व भा-२ मा नथी. ७३ पामइ ह्प्रो. ७४ अनइ ह्प्रो. ७५ केतले ह्प्रो ७६ पुरुषे भा-१ इ व, पुरषे भा-२. ७७ पामइ ह्प्रो. ७८ नहीं ह्प्रो. ७९ नहीं ह्प्रो ८० गोइ व भा-२. ८१ प्रार्थनहार व भा-२. ८२ नही भा-१ इ. ८३ तीणें ह्प्रो ८४ स्त्रीने ह्प्रो. ८५ कहीइ भा-१, कहीये इ व भा-२ ८६ छइ भा-१ इ, व भा-२ मा नथी. *८७ ये भा-१ इ. ८८ कुबुद्धि ह्प्रो. ८९ जाणइ इ, जाणेइ व, जाणे भा-२.* ९० माहे ह्प्रो. ९१ वशि भा-१ इ, वश व भा-२ ९२ छेइ व, छे भा-२. ९३ आनी पछी व भा-२ मा 'स्त्रीनइ' छे ९४ पुरुष ह्प्रो. ९५ परि भा-१ इ. ९६ वशि भा-१ इ, रमिकडुं व, रमेकडूं भा-२ ९७ जाणिवो भा-१, जाणवो इ व भा-२. ९८ होई भा-१ इ, होइ व भा-२ ९९ नान्हां ह्प्रो १०० होइं भा-१ इ, व भा-२ मा नथी. १ जीण भा-१ व, जीर्ण भा-२ २ करेथी भा-१ इ, करयेथी व भा-२ ३ सघले भा-१ इ, सघलुं व, सघलू भा-२. ४ लघुपणु ह्प्रो ५ आवइ भा-१ इ, आविइ व, आवेइ भा-२. ६ ये भा-१ इ, जे वे भा-२. ७ पुरुष ह्प्रो. ८ स्त्रीशुं ह्प्रो. ९ होइ ह्प्रो १० ये व भा-२ ११ भोगवीये ह्प्रो. १२ साडलानी व भा-२ १३ परि भा-१ इ, परिं व भा-२; पछी व भा-२ मा 'सरक्त' छे १४ कहिडिशुं भा-१ इ, कडिशुं व, कहडिशु भा-२. १५ घशीयें भा-१ इ, घसीये व, घशीयेइ भा-२. १६ ये भा-१ इ. १७ पुरुष ह्प्रो. १८ अलतानीं भा-२. १९ परिं व भा-२.

२० श्रीगुं हप्रो. २१ होड हप्रो. २२ पीढीनइ हप्रो. २३ तले हप्रो. २४ मुंकीये भा-१ ड भा-२, मूकीये व. [पृ. ५४] २५ तहीं भा-१ इ, तिगर व भा-२. २६ पूठिं इ, पछी व भा-२. २७ एहं भा-१ व, एहं इ भा-२. २८ पणुंएक भा-१ इ, पणुं व भा-२; व भा-२ मां आनी पछी 'वचन' छे. २९ थोडीनइ हप्रो. ३० होठ हप्रो. ३१ व भा-२ मां 'पणुं कोप्यो' एवो शब्दक्रम छे. ३२ गु इ. ३३ °थो भा-१ इ, °थी व भा-२. ३४ अकस्मात् भा-१ इ, अक्स्मात व, आक्स्मात भा-२. ३५ राजान्हे भा-१ इ; व भा-२ मां 'राजानो कोप' एवो पाठ छे. ३६ देपीइनइ व, देपीनइं भा-२. ३७ चींतवनो भा-१ इ भा-२, चीतवनो व. ३८ हौउ भा-१ इ भा-२, हौउ व. ३९ आनी पछी व भा-२ मां 'वचन' छे. ४० कहे भा-१ इ, कहिं व, कहि भा-२. ४१ पामी भा-१ इ, पामीनइ व, पामीनि भा-२. ४२ अनइ हप्रो. ४३ विरईनि भा-१, विरईने इ, विरईनि व, विरईनइ भा-२. ४४ कुन्हे भा-१, कन्हे इ, कंन्हि व, कन्हे भा-२. ४५ अनइ भा-१ इ, व भा-२ मां नथी. ४६ स्त्रीयें व भा-२. ४७ कन्हुं भा-१, कन्हउं इ, कुणनुं व भा-२. ४८ चाल्युं भा-१ इ, चाल्वुं व, चाल्युं भा-२. ४९ राजा व भा-२; आ पंक्ति 'व' मां 'राजा कहेइना हौउ छइ' ते प्रमाणे छे; भा-२ मां 'राजा कहिना हौउ' एवो पाठ छे. ५० हौउ भा-१ इ. ५१ छइ भा-१ इ. ५२ बालनइ हप्रो. ५३ कुण भा-१ इ. ५४ आव्यो भा-१ इ, पाम्यो व भा-२. ५५ अनइ भा-१ इ. ५६ कुण हप्रो. ५७ पद-वीनें व भा-२. ५८ पाम्यो हप्रो. ५९ छइ भा-१ इ, छिइ व, छेइ भा-२. ६० अनइ भा-१ इ, व भा-२ मां नथी. ६१ दुर्जननइं भा-१, दुर्जननइ इ, दुर्जनने व भा-२. ६२ वश व भा २. ६३ पाम्या व भा-२. ६४ पूठि भा-१ इ, पछी भा-२. ६५ कुणने भा-१ इ, कंन्हि व, केहे भा-२. ६६ हौउं भा-१ इ व, होंइ भा-२. ६७ नपुंसकनें हप्रो, व भा-२ मा आ श्लोकनो अनुवाद आ प्रमाणे छे: (व ना पाठ साथे कौंसमा भा-२ ना पाठान्तर छे.)

नपुंसकनें धैर्य किहा, मद्यपनि[मद्यपने] तत्त्वज्ञान किंहा[किहा], सर्पनि[सर्पने] क्षमा, स्त्रीन्हे[स्त्रीने] कदर्पनी शांति किहां, कागनि[कागन] पवित्राइ, जूआरीने [जूआरीनें] सत्य, राजाशुं[राजाशुं] मैत्री, एतलान[एतलानें] ए सामत्या [सांमत्यां] नथी.

६८ मद्यपने भा-१ इ. ६९ तत्त्वज्ञाननी भा-१ इ. ७० सर्पने भा-१, सर्पनें इ. ७१ स्त्रीनइं भा-१, स्त्रीनइ इ. ७२ काम भा-१ इ. ७३ कंदर्पनीं भा-१

इ ७४ कागन भा-१ इ ७५ पविनाई भा १, पविनाई इ ७६ जुआरीने भा-१, जुआरीनें इ ७७ रानाशु भा-१ इ ७८ वाना इ ७९ एहनइ भा-१ इ ८० होइ भा-१ इ ८१ अनइ ह्प्रा ८२ मे भा-१ इ, मे भा-२ ८३ व भा-२ मां नथी ८४ राजानें भा-१ इ भा-२. ८५ अनेरान भा-१ भा-२, अनेरा इ, अनेरानिं व ८६ वचनें भा-१ इ, व भा २ मा नथी आ पछीनु 'करी' व भा-२ मां नथी ८७ पाडुउ भा-१ इ, पाडू भा २ ८८ कीधु ह्प्रा, पछी भा १ मा आ पाठ छे 'हु स्मर छु, नथी कीधु तु ए शु,' इ मा आ पाठ नथी ८९ एह्रु व भा-२ ९० हु व भा-२ ९० स्मर व भा-२ ९१ छुं व भा-२ ९२ ईणी ह्प्रो ९३ परि भा-१ भा-२, परिं इ व ९४ पैशतो भा-१ व, पेइशतो इ, पेसतो भा-२ ९५ राष्या ह्प्रो ९६ देपीनइ ह्प्रो ९७ शारवइ भा-१ इ, व भा-२ मा नथी ९८ ये भा १ इ ९९ गोरभ भा २ व १०० ते भा १ इ, व भा २ मा नथी, पछी भा १ मा 'द्वारपाल्नें' शब्द छे, व मा 'हास्य करी द्वारपाल्नि' अने भा २ मा 'हास्य करी द्वारपाल्न' एवो शब्द-क्रम छे १ करीनइ भा १ इ २ कहतो भा १ व भा-२, कहतौ इ ३ हौउ ह्प्रो ४ व भा-२ मा आ पंक्तिनो पाठ आ प्रमाणे छे

अहो द्वारपाल्ो, ए दसी सेठनें वारस्यो [वारशा] मा, ए राजाने मान्य अनइ सर्व ऊपरि मुखी छि [छे]

५ शेठ भा-१ इ ६ राजानो भा १ इ [पृ ५५] ७ अनइ भा-१ इ ८ एन्हिं भा-१ इ ९ वारशो भा-१ इ १० जिम ह्प्रा ११ मून्हे भा-१ इ, मून्हि व, मून्हे भा २ १२ तिम ह्प्रो १३ तम्हनें भा-१, तम्हने इ, तम्हिंइ व, तम्हेन भा-२ १४ देशि भा १ इ, देस्ये व, देशेइ भा २ १५ एह्रु भा १, एह्रु इ, व भा २ मा 'एह्रु सामली' एवा शब्दक्रम छे १६ चींतवतो भा १ इ भा-२, चीनवतो व १७ हौउ ह्प्रो १८ एन्ही भा-१ इ १९ बोल्यु भा १ इ २० कुल्नो भा १ इ २१ अनइ भा १ इ २२ होइ भा १ इ २३ एह्रोइ भा-१ इ २४ ये भा १ इ २५ राजान भा-१ इ २६ सेनइ भा १ इ २७ ते भा-१ इ २८ सघलइ भा-१ इ २९ पूजीये भा-१ इ ३० राजान भा-१ इ ३१ सेवता भा-१ इ ३२ एह्रो भा १ इ ३३ ये भा १, इ मा नथी ३४ लोकमा भा १ इ ३५ पामइ भा १ इ अनुवादनो पछीनो भाग मुख्य प्रत 'वि' माथी पडी गयेलो छे ते 'इ' माथी लिधो छे ३६ तेन्हु भा १ ३७ ईणीं भा १ इ ३८ चातवतो भा-१ इ ३९ थका

भा-१ इ. ४० उत्तारणी भा-१ इ. ४१ थतो भा-१ इ. ४२ जईनइ भा-१ इ. ४३ गाहि भा-१, गाहि इ. ४४ बोलावीनइ भा-१ इ. ४५ पहिरावीनइ भा-१ इ. ४६ बोलनो भा-१ इ. ४७ हौउ भा-१ इ. ४८ मैं भा-१ इ; व मां 'तुं मिं', अने भा-२ मां 'तुं मैं' एवो शब्दक्रम छे. ४९ नहीई भा-१, तहीये इ, तेहि व, तेहीये भा-२. ५० वाङ्यो हत्यो. ५१ तुं हत्यो. ५२ ब्राह्मण हत्यो. ५३ वेगरा भा-१ इ व. ५४ योग्य हत्यो. ५५ नहीं इ व भा-२. ५६ तिहां व भा-२; आनी पछी व भा-२ मां 'तुं' छे. ५७ वेठो इ व. ५८ ते इ व भा-२. ५९ आनी पछी व भा-२ मां 'तुं' छे. ६० आनी पछी व भा-२ मां आ प्रमाणे पाठ छे:

एउं कहि तन्हि [तेन्हें] आपणि [भा-२ मां नथी.] घरि लेई नाना प्रकार भोजन वस्त्र सत्कार करी संतोष पमाड्यो. पछइ [पछि] ते गोरंभ हर्ष्यु स्वर्ग पाम्यो हउ एहो बोल्यो [बोल्यो].

६१ पछइ इ. ६२ ते इ. ६३ गोरंभे इ. ६४ पामीनइ इ. ६५ जिम इ. ६६ पाम्यो इ. ६७ हुइ इ. ६८ एहो इ. ६९ हौउ इ. ७० मैं इ, मि व, मे भा-२. ७१ क्षमु इ, क्षम्यु व भा-२. ७२ इवेइ इ, व भा-२ मां नथी. ७३ तुं इ, व भा-२ मां नथी. ७४ माहरी इ भा-२, माहरी व. ७५ बुद्धि इ व भा-२. ७६ जोइ व भा-२. ७७ 'जे' ने स्थाने व मां 'हवि' अने भा-२ मां 'हवे' छे ७८ तुं इ भा-२, तू व. ७९ ऊपरि इ व भा-२. ८० करइ इ, करे भा-२. ८१ छइ इ व, छेइ भा-२. ८२ एहु इ व भा-२. ८३ हर्ष्यु इ, हर्ष्युथे व भा-२. ८४ नीसरयो व भा-२. ८५ श्राकडीनी इ व भा-२. ८६ अनइ इ व भा-२, ८७ मूर्खनी इ व भा-२. ८८ सरीषी इ; आनी पछी मुख्य प्रतमाथी पडी गयेला शब्द 'व' मांथी लीधा छे ८९ थोडें भा-२, इ मां नथी. ९० नमेंद भा-२, इ मां नथी. ९१ इ मां नथी. ९२ थोडइ इ, थोडें भा-२. ९३ उच इ व भा-२. ९४ थाइ इ व भा-२. [पृ. ५६] ९५ पछइ व, पछि भा-२; आनी पहेलो इ मां 'तिवार' छे, आ पंक्तिनो पाठ व भा-२ मा आ प्रमाणे छे:

पछइ [पछि] गोरंभ वन्री तिम राजा सुखि [सुखे] सूतो छिइ [छे] तिहां जै सारवतो बोलतो हौउ.

९६ जिहां इ. ९७ सुखि इ. ९८ सूतो इ. ९९ छइ इ. १०० सारवतो इ. १ एहुं इ. २ हौउ इ. ३ जे व; भा-२ मा नथी, आनी पछी

व मां जुदा अक्षरे 'वेडइ' शब्द लखेलो छे. ४ फरतो व भा-२. ५ चीभडी इ व, चींभडी भा-२. ६ होंउ इ; व भा-२ मां 'पाइ' एवुं क्रियापदनुं रूप छे. ७ ते इ, ए भा-२; आनी पहेलो व मां 'तेन्हु' अने भा-२ मां 'तेन्हूं' छे. ८ सांभलीनइ ड व भा-२. ९ विस्मयनें इ, विस्मय व भा-२. १० पाम्यो इ व भा-२. ११ थकु इ, थको व भा-२. १२ ऊठीनइ ड, व भा-२ मां नथी. १३ हौंउ इ; व भा-२ मां 'वचन बोरयो' एवो पाठ छे. १४ गोरंभ इ व भा-२; पछी व मां 'तुं' अने भा-२ मां 'तूं' छे. १५ शुं इ व भा-२. १६ बोलि इ भा-२, बोलि व. १७ छि व, छिइ भा-२, आनी पछीनी पंक्ति व भा-२ मा आ प्रमाणे छे: (व ना पाठ साथे कैंसमां भा-२ नां पाठान्तर छे.)

तूं [तुं] घरनो काम [काम] करे छि [छेइ] तेथी तुंन्हि [तुंन्हे] नथी मारतो; ते [तें] किहां [केहां] हुं [हूं] वेडइ [भा-२ मां नथी] फिरतो [फरतो] चीभडी पातो दीठो.

१८ घरनो इ. १९ काम इ. २० माटइ इ. २१ हुं इ. २२ तन्हे इ. २३ हुं इ. २४ इम इ. २५ गोरंभक इ, गोरंभ व भा-२. २६ बोल्युं व. २७ स्वामिन् इ व, स्वामीन् भा-२. २८ रात्रिं इ व भा-२; पछी व भा-२ मा 'जाग्यो' क्रियापद छे. २९ तीणें इ व, तीणं भा-२; आ पंक्ति व भा-२ मा आ प्रमाणे छे:

तीणें [तीणं] निद्रावश मुखथी न [भा-२ मा नथी.] जाणु काईं [काई] नींसर्युं तेथी क्षमा करज्यो [करयो].

३० जाणतो इ. ३१ निद्रावश इ. ३२ चीतवतो ड व, चितवतो भा-२. ३३ हौंउ इ व भा-२. ३४ में इ भा-२. ३५ जन्ममाहि इ व भा-२. ३६ ईणी इ व, एणी भा-२. ३७ परें भा-२. ३८ न व भा-२ ३९ आनी पछीनी पंक्ति व भा-२ मा आ प्रमाणे छे:

जिम ए निद्रावशथी [निद्रावशथी] मिथ्या बोल्यु तिम असभाव्य दंती तु[तू] निद्रावशिथी [निद्रावशथी] मिथ्या बोल्युं ए निश्चय, ते भणी मिं [मे] युक्त न कीधुं जे [जि] मे एन्हि [एन्हे] सन्मान दीधुं.

४० ईणें इ. ४१ जिम इ. ४२ असभावि इ. ४३ ईणें इ. ४४ ते इ. ४५ में इ. ४६ कीधु इ. ४७ जे इ. ४८ एन्हें इ. ४९ सन्मान इ. ५० दीधु इ. ५१ सरषा इ व भा-२. ५२ एहुं इ व भा-२. ५३ सभवइ इ व भा-२. ५४ दंती व भा-२. ५५ अने इ. ५६ लोक० व, लोकना

मा-२. ५७ कार्य व मा-२. ५८ व मा-२ मां नथी. ५९ रहें इ, रहिं व, रहे मा-२. ६० छइ इ, छि व, छेइ मा-२. ६१ इंणी इ, इंणी व, इणे मा-२. ६२ परिं व. ६३ घणे इ, व मा-२ मां नथी. ६४ प्रकारे इ, व मा-२ मां नथी. ६५ चींतवी व मा-२. ६६ दंतीने इ, दंती व मा-२. ६७ बोलावी व मा-२. ६८ अनइ इ. ६९ पेहिरावी मा-२; व मां आनी पछी 'आपणे' अने मा-२ मां 'आपणि' छे. ७० तेन्हेइ इ, व मा-२ मां नथी. ७१ अधिकारे मा-२. ७२ मुंक्यो इ, मुक्यो व, मुंक्यौ मा-२.

७३ हुं इ, व मा-२ मां नथी. ७४ तेथी व मा-२. ७५ कहुं इ, कहू व मा-२. ७६ छु इ, छुं व मा-२. ७७ बोल्यु इ, बोल्यो व मा-२. ७८ तें इ व मा-२. ७९ कयुं इ मा-२, कर्यूं व. ८० ते भणी इ; आ पंक्ति व मा-२ मां आ प्रमाणे छे: (व ना पाठ साथे कौंसमां मा-२ नां पाठान्तर छे.)

तूं वहिं [वहें] छि [छे] तेह वरजे [वरयेइ].

८१ कहें इ. ८२ चें इ. ८३ एहुं इ व मा-२ ८४ सजीवकने इ, सजीवकनि व, सजीवकने मा-२. ८५ लेईनइ इ, लिई व, लेई मा-२. ८६ पिंगलकनइ इ, पिंगलक व मा-२. ८७ समीपि इ, कन्हे व मा-२. ८८ ग्यु इ. ८९ अनइ इ व मा-२. ९० बोलतो इ व, बोल्तो मा-२. ९१ हींउ इ व मा-२. ९२ में इ मा-२, मिं व. ९३ आव्यो इ व, आव्यों मा-२. ९४ पडइ व, पडि मा-२. ९५ मिहनें इ व मा-२. ९६ करीनइ इ, करी व मा-२. ९७ थै इ व मा-२. ९८ बेठो इ, बिठो मा-२. ९९ ते इ व मा-२. १०० संजीवकनुं इ मा-२, सजीवकनु व. १ पाथ इ; व मा-२ मां 'मोटुं पाप' एवो शब्दक्रम छे. २ मोटुं इ व मा-२. ३ जिमणे इ मा-२, जिमणि व. ४ हाथे इ, हाथि मा-२. ५ थापडीनइ इ, थापडीनिइ व, थापडीनेइ मा-२. ६ हींउ इ व मा-२. ७ तुन्हें इ, तुन्हिं व, तुन्हें मा-२. ८ छे व, छेइ मा-२. ९ तुं इ व, तूं मा-२. [पृ. ५७] १० आपणुं इ. ११ जे व मा-२. १२ वर्द्धमान इ व मा-२. १३ संघाते इ, शुं व मा-२. १४ पाम्यो इ व मा-२. १५ व मा-२ मां नथी. १६ व मा-२ मां नथी. १७ तेन्हि इ, व मा-२ मां नथी. १८ कहुं इ, व मा-२ मां नथी. १९ ते व मा-२. २० सांभलीनइ इ, सांभली व मा-२. २१ आदर व मा-२. २२ वहतो इ, वरतो व मा-२. २३ हींउ इ व मा-२. २४ बींहिसि इ मा-२, बींहेसि व. २५ मां इ व मा-२. २६ में इ मा-२, मे व. २७ °मध्य व मा-२. २८ यथेष्ट इ

मा-२, येयेट व. २९ चरतो इ, विचरि व, विचरें भा-२. ३० अनइ ड व भा-२. ३१ माहे ड, माहरि व, माहें भा-२. ३२ समीपि ड व भा-२. ३३ तें इ भा-२. ३४ रहतु इ व भा-२. ३५ ये भा-२. ३६ घणांनो इ, घणानो व, घणानु भा-२. ३७ होइ इ व भा-२. ३८ छइ ड, छेइ व, छि भा-२. ३९ भयंकर व भा-२. ४० व भा-२ मां नथी. ४१ आनी पछीनो केटलोक पाठ मु.य प्रत 'वि' मांथी पडी गयेलो छे ते इ मांथी लीधो छे. व भा-२ मां आनी पछीनो अनुवाद आ प्रमाणे छे: (व ना पाठ साथे कौंसमां भा २ना पाठान्तर छे.)

तीणि [तीणें] व्याप् छेइ [छे] तिथी [तेथी] मोटाइ जे तृण चरती [चरतीं] न खाहे.

४२ इ मां नथी. ४३ तीणें इ. ४४ रत्याउ इ. ४५ गुहुं इ व भा-२. ४६ सजीवकनि इ, संजीवकनि व, सजीवकनइ भा-२. ४७ वहीनइ इ व, वहीनिइ भा-२; वाक्यनो पछीनो भाग व भा-२ मां आ प्रमाणे छे: (व ना पाठ साथे कौंसमां भा-२ नां पाठान्तर छे.)

सिंह आपणी इच्छाइं [इच्छायेंड] यमुनाई [यमुनाइ] पांणी पी अनइ [नइ] स्वेच्छा वन मध्य [मध्ये] विचरतो हौउ.

४८ पाणी इ. ४९ पीनइ ड. ५० रहतौ इ. ५१ हौउ इ. ५२ राज्यनो ड, व भा-२ मां 'राज्यभार' छे. ५३ छांडीनइ ड, छांडी व भा-२. ५४ संघातें ड, सघाति व भा-२. ५५ मुये इ, व भा-२ मां नथी. ५६ हौआ इ व भा-२. ५७ अनेर इ व, अनेउक भा-२. ५८ बुद्धिवत इ व भा-२. ५९ धैनइ इ व भा-२. ६० थोडे ड, थोडि व, थोडें भा-२. ६१ दिवसे ड व, दिवसें भा-२. ६२ मूर्ख इ व भा-२; पछी व मां 'फीटी' अनइ भा-२ मां 'फेटी' छे. ६३ व भा २ मां नथी. ६४ कीधो व. ६५ अनइ इ व भा-२. ६६ अरण्यना इ व भा-२ ६७ धर्म इ व भा-२. ६८ छंडावीनइ इ, छंडावी व भा-२; आनी पछी व भा-२ मा आ प्रमाणे पाठ छे: (व ना पाठ साथे कौंसमां भा-२ नां पाठान्तर छे.)

सजीवक समीपि रहि [रहे]. पिंगलक राहिं [रहे] तिहा करटक दमनक प्रवेश पामता न हौआ.

६९ प्रामता इ. ७० धर्मनइ इ. ७१ विषइ इ. ७२ पछइ इ. ७३ पिंगला इ. ७४ अनइ इ. ७५ समीप इ. ७६ रहे इ. ७७ तेहैइ इ. ७८ तिहां इ. ७९ पामता इ. ८० हौआ इ. ८१ सिंहि इ, सिंहें व, सिंहे

भा-२. ८२ छाड्युं इ. ८३ तेथी व भा-२. ८४ व भा-२ मां नथी. ८५ सेवक व भा-२. ८६ रहितो इ, रहतो व भा-२. ८७ हौउ इ व भा-२. ८८ बोल्युं इ व भा-२. ८९ छइ इ व, छे भा-२. ९० सेवक इ व भा-२. ९१ राजानइ इ, राजानिं व, राजाने भा-२. ९२ देवीनइ इ, देवीनिइ व, देवीनिइ भा-२. ९३ छाडइ इ, छाडइ व. ९४ जुहे इ, जोहे व भा-२. ९५ हुउ इ, व भा-२ मा नथी. ९६ होइ इ व भा-२ मा नथी, व भा-२ मा 'मोटो' पछी 'तोहे' छे ९७ जाइ भा-२. ९८ जिम इ व भा-२. ९९ सूका इ, शुष्क व भा-२. १०० वृक्षने इ, वृक्षनें व, वृक्ष भा-२. १ छांडइ इ, व भा-२ मा 'छाडी जाइ' एवुं क्रियापद छे. [पृ. ५८] २ तोहिइ इ, आ आखी पंक्ति व भा-२ मा नथी. ३ आपणें इ. ४ राज्यनें इ. ५ छांडवा इ. ६ राजाइ इ, राजा व भा-२. ७ न इ, नें व, ने भा-२. ८ जाइ व भा-२. ९ तिम इ व भा-२. १० करवुं इ, करवो व भा-२. ११ बोल्युं इ व भा-२. १२ छइ इ, छेइ व, छे भा-२. १३ मान्ययुक्ता इ, मान्ययुक्त व भा-२. १४ एहवाइ भा-२; आनी पछी व भा-२ मा 'जे' छे. १५ सेवक इ व भा-२. १६ हौआ इ व भा-२. १७ राजानें इ, राजानि व, राजानें भा-२. १८ छाडीनइ इ, छाडी व भा-२. १९ जाइ भा-२. २० केवल इ व भा-२. २१ आनी पछी व भा-२ मा 'ज' छे. २२ होइ इ व भा-२. २३ व भा-२ मा नथी. २४ मोटानें इ, मोटान्हि व, मोटान्हें भा-२. २५ आश्रयीनइ इ, आश्रयी व भा-२. २६ अनेक इ व भा-२. २७ उपाय भा-२. २८ करइ इ, करैं व भा-२. २९ बोल्युं इ व, बोयूं भा-२; आनी पछीनुं मुख्य प्रत 'वि' नु पान 25-A नथी; तेथी ते पाननो पाठ 'इ' माथी लीधो छे. ३० राजानिइ व, राजानें भा-२. ३१ वशि व. ३२ वैद्यने व भा-२. ३३ वश व भा-२. ३४ व मां 'ग्रहाग वाणीयानि वश' अने भा-२ मा 'ग्रहाग' वाणीयानि वश' एवो पाठ छे. ३५ मूर्खनि व, मूर्खनिं भा-२. ३६ होइं व, होइ भा-२. ३७ प्रमादीनुं भा-२. ३८ त्यें व, त्ये भा-२. ३९ गृहस्थनूं भा-२. ४० भिक्षुक व भा-२. ४१ लें व, त्ये भा-२. ४२ आ पंक्तिनो अनुवाद भा-२ मा आ प्रमाणे छे: (व ना पाठ साथे सरखावो भा-२ ना पाठान्तर छे.)

कामीनुं [कामीनूं] धन वेश्या त्यें [त्ये].

४३ सर्वनूं व भा-२. ४४ ले व, त्ये भा-२. ४५ जे व. ४६ तीणें व, तीण भा-२. ४७ पडपेइ व, पडये भा-२. ४८ समर्थपणें व भा-२. ४९

भोगने भा-२. ५० मग्यनि भा-२. ५१ भोगवे भा-२. [पृ. ५९] ५२ ईश्वरनु भा-२. ५३ उंदिरनिं व ५४ भक्ष करवा व भा-२. ५५ हींडे व, हींडे भा-२. ५६ व भा-२ मां नथी. ५७ कार्तिकेनो व. ५८ भक्ष करवा व भा-२. ५९ वांछइ व, वांछे भा-२. ६० व भा-२मां नथी. ६१ व भा-२मां नथी. ६२ पारवतीनु व भा-२; आनी पछी व भा-२ मां 'वाहन' छे. ६३ भक्षवा व, भक्ष करवा भा-२. ६४ वांछेइ व, वांछे भा-२. ६५ व भा-२ मां नथी, आनी पछीनो अनुवाद व भा-२ मां आ प्रमाणे छे:

इम [व भा-२ मां नथी.] ईश्वरना कुटुंब मर्ध्ये [मध्ये] परस्परे [परस्परे] भक्ष करवा हींडें [हींडे] छिं [छेइ] तो अनेराइ [अनेरा] संसार मध्यें परस्परें [अन्योन्य] भक्ष करवा हींडें छिं [भक्ष किम न करें].

६६ मुख्य प्रत वि नी आ अने तेनी पछीनी पंक्ति व भा-२ मां नथी. ६७ आ पंक्ति व भा-२ मां आ प्रमाणे शरू थाय छे:

ते करटक प्रति दमनक बोल्यो, "अहो आपण निहिनी प्रधानवट गै".

६८ इणि व, ईणें भा-२. ६९ मूंस्यो भा-२. ७० एन्हो व भा-२. ७१ थ्यो भा-२. ७२ तु व, तुं भा-२. ७३ शूं भा-२. ७४ घटेइ व भा-२. ७५ बोल्यो व भा-२. ७६ जोहे व भा-२ ७७ ताहू व भा-२ ७८ साभलेइ व, साभलेइ भा-२. ७९ तोहे व भा-२. ८० ताहो व भा-२. ८१ टालवानिं व. ८२ प्रधान व. ८३ साभलतो व ८४ नोहेइ व, नोहे भा-२. ८५ तोहे व, भा-२ मा नथी ८६ व भा-२ मां नथी ८७ कहवुं व भा २ ८८ प्रधाननो व भा-२ ८९ न होइ व, नोहे भा-२ ९० विदुरे भा २. ९१ धृतराष्ट्र व भा-२ ९२ प्रबोध्यो व भा-२. ९३ °थी व भा-२. ९४ चालेइ भा-२, पछी व भा-२ मा 'मत्त' छे ९५ हस्तनी व, हस्तीनी भा-२. ९६ परिं व भा-२ ९७ आनी पछी व भा-२ मा आ प्रमाणे अनुवाद छे:

प्रधानन [प्रधाननइ] निंदा उपजि [ऊपजि]

९८ तिं व ९९ आपणि व. १०० हाथि व, हाथे भा-२. १ कन्हिइ व, कन्हेइ भा-२. २ आप्यो भा-२. ३ तेथी व भा-२. ४ व भा-२ मा नथी. ५ आपणि व ६ हाथिं व ७ अगारवृष्टि व भा-२ ८ कीधी व भा-२ ९ बोल्यो व भा-२ १० ते व ११ साचूं भा-२. १२ कयू भा-२. १३ आनी पछी व भा-२ मा 'ज' छे. १४ व भा-२ मा नथी,

[पृ. ६०] १५ आ श्लोकना अनुवादनी प्रथम पंक्ति व भा-२ मां आ प्रमाणे छे :
सीयाल्ड चिहि मीशानि [मींशानें] युद्ध मध्य पैशी [पेसी] मुउ [मुंउ].

१६ मुउ भा-१. १७ दूतीयें व, दूतीयें भा-२. १८ पीयारें भा-१, परकायें व, परकायें भा-२. १९ आरणताना व भा-२. २० स्वयि जी व, स्वयें ज भा-२. २१ योल्युं भा-१, योल्यो व भा-२. २२ त्रिम भा-१ व भा-२. २३ कहतां भा-१. २४ हीउ भा-१ व भा-२.

[४. परिव्राजक अने धुतारो]

१ व भा-२ मां नथी. २ देशनइ भा-१, देश व भा-२. ३ विषे भा-२. ४ एकांत व भा-२. ५ आ पंक्ति व भा-२ मां आ प्रमाणे छे :

तिहां देवशर्मा एहवे नामें [नामें] तपस्वी सन्यासी रहे.

६ तेन्हिं व, तेन्हें भा-२. ७ आनी पछी व मां ' जे ' अने भा-२ मां ' ये ' छे. ८ आनी पछी व भा-२ मां ' ते ' छे. ९ व भा-२ मां नथी. १० व भा-२ मां ' वस्त्र भलां ' एवो पाठ छे. ११ वेचनां भा-१ व भा-२. १२ घणे व भा-२. १३ काले व भा-२. १४ थै ह्यो. १५ पछइ भा-१ इ, पछि व, पछे भा-२. १६ वैश्न्हु भा-१, वेश्न्हु इ, वैन्हो व, भा-२ मां ' विश्वास केन्हो ' एवो शब्दक्रम छे. १७ न करइ भा-१ इ, नाणे व, नांणे भा-२. १८ दीहीरात्रि भा-१, दिनरात्रि व भा-२; आनी पछी व भा-२ मां ' ते मात्रा ' पाठ छे. १९ कायमाहेथी व भा-२. २० मुंकइ भा-१ इ, छांडे व भा-२. २१ युक्त ह्यो. २२ बोल्युं भा-२. २३ छेइ व, छे भा-२. २४ ऊपार्जतां ह्यो. २५ होइ ह्यो. २६ उपार्ज्यां ह्यो. २७ चोर व भा-२. २८ जाइं भा-१ इ, लि व, ले भा-२. २९ दुःख ह्यो. ३० तो ह्यो. ३१ आ पंक्ति व भा-२ मां आ प्रमाणे छे :

तेथी धन दुःखनूं आश्रय ते काइं [कांइ] नहीं.

३२ केवल भा-१ इ. ३३ पापनुं भा-१ इ. ३४ ते भा-१ इ. ३५ नहीं भा-१ इ. ३६ आपदाभूत व भा-२. ३७ एहुं ह्यो. ३८ नामें भा-१ इ भा-२, नामि व. ३९ पीयारा व भा-२. ४० चित्तनें भा-१ इ; आनी पछी व भा-२ मा केटलाक शब्द पडी गया छे. ४१ हरइ भा-१ इ ४२ एहु भा-१ इ. ४३ ते भा-१ इ. ४४ माहिनीं भा-१, माहिनीं इ. ४५ जाणीनइ भा-१ इ. ४६ चित व भा-२. ४७ चींतवतो भा-१ इ भा-२, चींनवतो व. ४८

हौउ ह्प्रो. ४९ हुं भा-१ इ, व भा-२ मां 'हुं एन्ही मात्रा' एवो शब्दक्रम छे. ५० किम ह्प्रो. ५१ त्युं ह्प्रो. ५२ व भा-२ मां नथी. ५३ भीति ह्प्रो. ५४ पहाणनी भा-१ इ, पाहाणनी व, पाहाणनी भा-२. ५५ छड भा-१, छिड व, छे भा-२. ५६ तेहा भा-१ इ. ५७ पडट व, पडाए भा-२. ५८ आ पंक्ति व भा-२ मां आ प्रमाणे छे :

दढ कमाड न फाटिद [फाटे] द्वारि न पिसाड [पेसाए].

५९ माडड भा-१ इ. ६० पइसाड भा-१ इ. ६१ ते भणी भा-१ इ, तेथी व भा-२. ६२ °वचने ह्प्रो. ६३ थई भा-१ इ, थै व भा-२. ६४ ममाडीनि व, पमाडीने भा-२. ६५ ग्रहुं ह्प्रो. ६६ बोल्युं भा-१ व भा-२. ६७ छइ भा-१ इ, छिइ व, छेइ भा-२. [पृ. ६१] ६८ बोलइ ह्प्रो. ६९ बोलिइ व, बोलेइ भा-२. ७० होइ ह्प्रो. ७१ ये भा-१ इ, व भा-२ मां नथी. ७२ होइ ह्प्रो. ७३ ल्येइ भा-१ इ, लेइ व भा-२. ७४ ये भा-१ इ. ७५ कामी ह्प्रो. ७६ नोहइ भा-१ इ, न होइ व भा-२. ७७ पहरइ भा-१ इ, पहेरिइ व, पहेरेइ भा-२. ७८ एहुं ह्प्रो. ७९ चीनवीनइ भा-१ इ, चींतवी व भा-२. ८० संन्यासीनइ भा-१ इ, सन्यासीनें व, सन्यासीनें भा २. ८१ आनी पछी भा-१ इ मां 'मुपि' अने व भा-२ मां 'वचन' छे. ८२ बोलतो ह्प्रो. ८३ थको ह्प्रो. ८४ वैशीनइ भा-१ इ, वैसीनेइ व भा-२. ८५ ते ह्प्रो. ८६ संन्यासीनें भा-१ इ भा-२, सन्यासीनि व. ८७ कहतो ह्प्रो. ८८ हौउ भा-१ व भा-२, हौइ इ. ८९ काईं भा-१ भा-२, काइ इ, काईं व. ९० नहीं भा-१ इ भा-२. ९१ वायुनी व, वायुनी भा-२. ९२ परें भा-२. ९३ उतावलुं भा-१ इ, ऊतावलुं व भा-२. ९४ वह्नि व भा-२. ९५ सरखुं ह्प्रो. ९६ अग्नी व, अग्नीं भा-२. ९७ सरखो व भा-२. ९८ व भा-२ मां नथी. ९९ व भा-२ मां नथी. १०० में ह्प्रो. १ परिं व भा-२. २ आण्युं ह्प्रो. ३ हुं ह्प्रो. ४ मुन्हें भा-१, मुन्हें भा-२; व भा-२ मां नथी; आनी पछी व भा-२ मां 'ए संसारथी' एवो पाठ छे. ५ छटीशि ह्प्रो. ६ एहुं ह्प्रो. ७ आदरपूर्वक व भा-२. ८ एहुं भा-१ इ, व भा-२ मां नथी. ९ बोल्युं इ, बोल्यु व. १० तुं भा-१ व भा-२, तु इ. ११ छें भा-१, छे इ, छिं व, च्छे भा-२. १२ ये भा-१ इ. १३ वयनइ भा-१ इ, वयने व भा-२. १४ विषिइ भा-१ इ, विषिइ व भा-२. १५ वैराग्य ह्प्रो. १६ बोल्युं ह्प्रो १७ छइ भा-१ इ, छेइ व भा-२. १८ ये भा-१ इ व. १९ वयनइ भा-१ इ, वयनेइ व भा-२. २०

विषे हस्रो. २१ करीसे भा-१ इ व. २२ ध्या हस्रो. २३ धाट हस्रो. २४ सत्पुरुषने भा-१ इ, सतपुरुषनइ व भा-२. २५ चित्तनइ भा-१ इ, चित्त व भा-२. २६ विपइ भा-१ इ, विपिइ व, विपेइ भा-२. २७ वृद्धपणुं हस्रो. २८ आवे व भा-२. २९ पछेइ व, पच्छेइ भा-२. ३० हीलि भा-१ इ, शरीरि व भा-२. ३१ आवइ भा-१ इ, आवेइ व भा-२. ३२ असननें भा-१ इ, असननें व भा-२. ३३ आवइ भा-१ इ, आवे व भा-२. ३४ नावइ भा-१ इ, न आविइ व, न आवेइ भा-२. ३५ जु भा-१ इ. ३६ तुं भा-१ इ. ३७ हींडे भा-१ इ, हींडि व, हींडें भा-२. ३८ तो हस्रो. [पृ. ६२] ३९ लि भा-१ इ, लेइ व भा-२. ४० अनइ भा-१ इ, व भा-२ मा नथी ४१ धरइ भा-१ इ, धरे व भा-२. ४२ लगाडइ भा-१ इ, लगाडेइ व भा-२. ४३ ति व, आनी पछी व भा-२ मां आ प्रमाणे अनुवाद छे :

शूद्र हो अथवा अन्य हुइ [होइ], चांडाल होइ, ते ब्राह्मण [ब्राह्मण] होइ.

४४ ब्राह्मण भा-१ इ. ४५ होइ भा-१ इ. ४६ पुरुष हस्रो. ४७ आपणपेइ, आपणपहे व भा-२. ४८ मनि इ, मने व, मनें भा-२. ४९ एकइ व भा-२. ५० लिंगनइ इ, लिंग ऊपरि व भा-२. ५१ चडावइ इ, चडावेइ व भा-२. ५२ तेन्हें इ व भा-२. ५३ गर्भवास इ व भा-२ ५४ न्हीं इ व भा-२. ५५ एहुं हस्रो. ५६ सन्यासीनइ भा-१ इ, सन्यासीनें व भा-२. ५७ पगि भा-१ व भा-२, पुगि इ. ५८ लागीनइ भा-१ इ, लागीनें व भा-२. ५९ हौइ हस्रो. ६० स्वामिन् हस्रो. ६१ मून्हें भा-१ इ, मुन्हि व भा-२. ६२ हत हस्रो. ६३ कइ व भा-२. ६४ ते हस्रो. ६५ तुन्हे इ, तुन्हि व, तुन्हे भा-२. ६६ कृपा हस्रो. ६७ करेस भा-१ इ, करेशि व भा-२. ६८ रात्रें भा-१ इ, रात्रि व भा-२. ६९ मठमाहि भा-१ इ, मठ मध्य व भा-२. ७० आवेशि भा-१ इ, म आवेशि व भा-२. ७१ ये भणी भा-१ इ, जेथी व भा-२. ७२ तें भा-१ इ भा-२, ति व. ७३ में हस्रो. ७४ निस्सग भा-१ इ, नि सगतिं व भा-२. ७५ रहवुं भा-१ इ व, रहिवुं भा-२. ७६ बोल्यु व, बोल्यू भा-२. ७७ छइ हस्रो. ७८ वणसइ भा-१ इ, वणसिइ व, वणसे भा-२. ७९ विणसइ हस्रो. ८० पुन हस्रो. ८१ लडावें भा-१ इ, लडावि व, लडावे भा-२. ८२ वणसइ भा-१ इ, विणसेइ व भा-२. ८३ अणभणें भा-१ इ, अध्ययन विना व भा-२. ८४ विणसइ हस्रो. ८५ कुपुत्रें भा-१ इ; आ चरणनो अनुवाद व भा-२ मां नथी. ८६ विणसइ भा-१ इ. ८७ सगतिं भा-१, सगति इ व भा-२ ८८ वणसेइ भा-१ इ, विणसइ व, विणसेइ

भा-२. ८९ प्रेम ह्प्रो. ९० पाषेइ भा-१, पायइ इ. ९१ वणसइ भा-१ इ, वणसेइ व भा-२. ९२ समृद्धि भा-१ इ, सम्पत्ति व भा-२. ९३ अन्यायथी ह्प्रो. ९४ वणसइ भा-१ इ, विणासिउ व, विणसेइ भा-२. ९५ वदेश भा-१ इ. ९६ गया पछी भा-१, गया पछी इ, ग्याथी व भा-२. ९७ वणसइ व भा-२, विणसिइ व, विणसेउ भा-२. ९८ वणसइ भा-१ इ, विणसेइ व भा-२. ९९ पाषे भा-१ इ, पाषिइ व, पाषेइ भा-२. १०० वणसड भा-१ इ, विणसिइ व भा-२. १ धन ह्प्रो २ लागु भा १ इ, लागदी व भा-२ ३ अनइ भा-१ इ, व भा-२ मां नथी ४ वणसइ भा-१ इ, विणसिइ व, विणसेइ भा-२. ५ वारिगु भा-१, वारिगु इ, द्वारि व भा-२; आनी पछी व भा-२ मा आ प्रमाणे अनुवाद छे :

पर्णगृह करी रहिवु.

६ सूयुं भा-१ इ. ७ स्वामीआज्ञा भा-१, स्वामीनी आज्ञा इ व भा-२; आनी पछी व भा-२ मां केटलोक अनुवाद आ प्रमाणे छे :

स्वामीनी आज्ञा प्रमाण पण मुं ऊपरि स्नेह तम्हे करवो.

८ प्रमाण भा-१ इ. ९ मुन्हे भा-१ इ. १० ति भा-१ इ. [पृ. ६३] ११ पछइ भा १ इ, पछिइ व, पछेइ भा-२. १२ कृपा ह्प्रो, व भा-२ मां 'ते ऊपरि कृपा' एवो शब्दक्रम छे. १३ करीनइ भा-१ इ, करीनिइ व, करीनेइ भा-२. १४ करतो ह्प्रो १५ हौउ ह्प्रो. १६ तपस्वीनइ भा-१ इ, तपस्वीनि व भा-२. १७ पातरी भा-१ इ व, पातिरी भा-२. १८ आणवे भा-१, आणवे इ व. आणवे भा-२. १९ पग भा १. २० चापवे भा-१ इ, चापविं व, चापवे भा-२; आनी पछी व मां 'तेन्हि' अने भा-२ मा 'तेन्हे' छे. २१ हौउ ह्प्रो. २२ आधारी व भा-२. २३ मुकइ भा-१, मुकइ इ, मुंकिइ व, मुकेइ भा-२. २४ इम ह्प्रो. २५ घणु भा-१ इ. २६ जातें भा-१ इ भा-२. २७ आषाढभूति भा-१ इ. २८ चींतवतो भा-१ इ. २९ होउ ह्प्रो. ३० व भा-२ मां नथी. ३१ आनी पछी व भा-२ मां 'तपसी' छे. ३२ क्रिम्हइ भा-१ इ, क्रिम्हि व, क्रिम्हे भा-२. ३३ माहृो भा-१ इ, माहरो व भा-२. ३४ करइ भा-१ इ, करिइ व, करेइ भा-२. ३५ तु भा-१ इ. ३६ तुं भा-१ इ. ३७ दीहें भा-१ इ; व मा 'एन्हि दिवसि' अने भा-२ मां 'एन्हे दिवसे' एवो शब्दक्रम छे. ३८ एन्हे भा १ भा २, एन्हि व. ३९ शस्त्र भा-१ इ मा-२, शस्त्रि व ४० के भा-१ इ व, कें भा-२. ४१ विम ह्प्रो. ४२ घु भा-१ व भा-२, घृ इ. ४३ के ह्प्रो. ४४ परि भा-१ इ. ४५ मुग्ध व भा-२. ४६ धूरीनइ भा-१ इ,

मरडी व भा-२. ४७ मार्ड हप्रो. ४८ एहुं हप्रो; आनी पछी व मां 'तेन्हि' अने भा-२ मा 'तेन्हें' छे. ४९ चींतवतां भा-२. ५० तेहिइ व, तेहे भा-२. ५१ शिष्यनो हप्रो. ५२ परगामिथो भा-१, परगामिथो इ, परगामथी व, परगामिथी भा-२. ५३ नहोतरवा भा-१ इ, नहोतरवा व भा-२. ५४ स्वामिन् हप्रो. ५५ अम्हारे हप्रो. ५६ पहिरवा भा-१ व भा-२, पहिरवुं इ. ५७ आववुं हप्रो. ५८ एहुं हप्रो. ५९ कहीनइ व भा-२. ६० ग्यु भा-१ इ, ग्यो व भा-२. ६१ पछइ हप्रो. ६२ व भा-२ मा नथी. ६३ आषाढभूति भा-१ इ, आषाढभूत व भा-२. ६४ साधि भा-१ व, भा-२; आनी पछी व मां 'लेइ तिहा' अने भा-२ मा 'लेई तिहां' छे. ६५ पछइ भा-१ इ, पछिइ व, पछेइ भा-२. ६६ वाटें भा-१ इ भा-२, वाटि व. ६७ आवी हप्रो. ६८ देवीनइ हप्रो. ६९ कुनारीनइ हप्रो. ७० बाधीनइ हप्रो. ७१ पूजा करी इ, पूजीनि व, पूजीनें भा-२. ७२ आषाढभूतिनइ भा-१ इ, आषाढभूतनि व, आषाढभूतनें भा-२. ७३ कहतो हप्रो. ७४ हींउ हप्रो. ७५ जेतलें भा-१, जेतलंई इ, जेतलिं व, जैतलें भा-२. ७६ बाहर व भा-२; आनी पछी व भा-२ मां 'वाडि' छे. ७७ जै हप्रो. ७८ आवुं हप्रो. ७९ लगेइ भा-१ इ, लगे व भा-२. ८० जागेश्वरने हप्रो. ८१ सावधान हप्रो. ८२ थको भा-१ इ, थै व भा-२. ८३ राषजे भा-१ इ, राषि व, राषे भा-२. ८४ एहुं हप्रो. ८५ कहीनइ हप्रो. ८६ बाहारि व भा-२. ८७ पछइ भा-१ इ, पछे व भा-२; आनी पछी व भा-२ मा 'ते' छे. ८८ आषाढभूते व, आषाढभूत भा-२. ८९ मेल्यो हप्रो. ९० थाइ हप्रो. ९१ तेतलें भा-१ इ, तेतलिं व, तेतलेई भा-२. ९२ ग्यु भा-१ इ; व भा-२ मां 'नाठो' क्रियापद छे ९३ पछइ भा-१ इ; आनी पछी व भा-२ मां केटलीक पंक्तिओ आ प्रमाणे छे :

"* ते देवशर्मा ते विद्यार्थीनि [विद्यार्थीनि] विश्वास बाहिरि [बाहरि] निश्चिंत जोतो हौउ. बेठो जोइ तो सुवर्ण सरषा बि मींढा गाडरा [गाडरा] विढीता [विढता] दीठा. तेहना मारवाना भयथी वेगलो जोतो हौउ. ति [ते] विढतां माथानि [माथाने] प्रहारे रुधिर नीकली [नीकली] पडुं मुंई. तेन्हि [तेन्हे] एक शीयाल आवी तेहे चाटवा लागो. ते शीयालनिं [शीयालनें] देवशर्मा जोई चीनवतो [चींतवतो] हौउ, "अहो ए शीयाल मूर्ष जे ए मिंढुं मींढा [मींढां] मध्य रहीं ति [ते] रुधिर भक्ष करि [करे] छिइ [छेइ] जो बिहुना मस्तक मध्य*

* आनी पछी व नो केटलोक पाठ नथी तेथी तेटला पूरतो भा-२ नो पाठ छे.

[आविशि तो मरशे. " एहुं चीतवतां ते शीयाल बिहि मध्य पड्युं. रुधिर पातां] बिहूंनि [बिहुंनि] माथे चंगाई मुउ. ते देवशर्मा ते मुंउ- [देपी दुःख पाम्यो थको मात्रा कन्हे आवतो हौंउ. आवी जोइ तो तिहां आषाढभूतनें न देपइ. पछइ शीघ्र शोच] लइ [लेइ] कंथा जोइ तो मध्ये मात्रा न देखइ. पछइ [पछेइ] साद करतो हांउ.

९४ गुणनइ भा-१ इ. ९५ विश्वासें भा-१ इ. ९६ बाहिरि भा १ इ. ९७ चइठो भा-१ इ. ९८ जेतलें भा-१ इ. ९९ ऊठइ भा-१ इ. १०० तेतलें भा-१ इ. १ एहा भा-१ इ. २ वठता भा-१ इ. ३ मीढा इ. ४ मोए भा-१ इ. ५ वेगलो भा-१ इ. ६ जै भा-१ इ. ७ वढतां भा-१ इ. ८ तेहनें भा-१ इ. ९ माथइथी भा-१ इ. १० रुधिर भा-१ इ. ११ भुइं भा-१ इ. १२ पड्युं भा-१ इ. १३ शीआल भा-१ इ. १४ लागो भा-१ इ. १५ भुंई भा-१, भुइं इ. १६ तेन्हें भा-१ इ. १७ शीआलनें भा-१ इ. १८ भा-१ इ मा नथी. १९ देवशर्मा भा-१ इ. २० जोईनइ भा-१ इ. २१ चींतवतो भा-१ इ. २२ हौंउ भा-१ इ. २३ भा-१ इ मां 'अहो ए शीयाल' एवो पाठ छे. २४ जु भा-१ इ. २५ ए भा-१ इ. २६ बुना भा-१ इ. २७ विचि भा-१ इ. २८ आविशि भा १ इ २९ तो भा-१ इ. ३० मरशि भा-१ इ. ३१ जाणुं भा-१ इ. ३२ हुं भा-१ इ. ३३ एहुं भा-१ इ. ३४ चींतवता भा-१ इ. ३५ ते भा-१ इ. ३६ विहुं भा-१ इ ३७ विचिं भा-१ इ ३८ भा-१ इ मा 'भुइं पड्यु' एवो पाठ छे ३९ भा-१ इ मां नथी. ४० रुधिर भा-१ इ ४१ त्रुहुने भा-१ इ ४२ माथे भा-१ इ. ४३ मुंउ भा १ इ. ४४ देवशर्मा भा-१ इ ४५ ते भा-१ इ. ४६ मुउ भा-१ इ. ४७ देपीनइ भा-१ इ. ४८ पाम्यु भा-१, पामु इ. [पृ ६४] ४९ कन्हे भा-१ इ. ५० आवतो भा-१ इ. ५१ हौंउ भा-१ इ ५२ जेतलें भा-१ इ. ५३ आवइ भा १ इ. ५४ तेतलें भा १ इ. ५५ आषाढभूतिनें भा-१ इ. ५६ देपइ भा-१ इ. ५७ पछइ भा-१ इ. ५८ वेगु भा-१ इ ५९ थैं भा-१ इ. ६० शोच भा-१ इ. ६१ लेईं भा-१ इ. ६२ देतो भा-१ इ ६३ भा-१ इ मा नथी ६४ जोइ भा-१ इ ६५ देपइ भा-१ इ. ६६ व भा-२ मां नथी. ६७ वीह भा-१ इ, वीहइ व भा-२. ६८ काट हालता व भा-२. ६९ वीहे भा-१ इ, बीहैं व भा-२. ७० मृगनि व, मृगने भा-२. ७१ आहेडी भा-१ इ, पारधी व भा-२. ७२ मारे इम्. ७३ छड भा-१ इ.-

छि ष, छे भा २   ७४ पान्ह भा १ इ प छेइ व भा २   ७५ पडह भा-१ इ व, पढेइ भा २   ७६ बहिता भा १, वरता इ व भा   ७७ होउ हप्रा   ७८ हु हप्रा आनी पछी व भा २ मां 'देव' छे   ७९ देव्यु हप्रा   ८० एह्वुं हप्रा   ८१ मुंइ भा १ व मुइ इ मुंई भा २   ८२ ... भा १ इ व पडइ भा २ आ पंक्ति ... भा ... मां आ प्रमाणे छे

पडइ [पडेइ] गुण ... [आणी] ... गुण ... पणि उठीन्इ [उठीनइ] अत्र अग रत्नु माल्यु [मोल्युं]

८३ सोमग्यो भा १ इ   ८४ उठीनइ भा १ इ   ८५ वरयुं भा १ इ   ८६ मोल्यु भा १ इ   ८७ आशाभूमि भा १ इ व भा २ मां पछी 'मु' छे   ८८ मुर्हे भा १ इ भा २, मुंहि व   ८९ वांई भा १ वाइ इ, काइ व भा २   ९० मुंं भा १ इ   ९१ मुन्ह भा १ इ, मुन्हि व, मुंहे भा २   ९२ दइ भा १ व भा २, दइ इ   ९३ हणी हप्रा   ९४ पडि हप्रा   ९५ पर्यु हप्रा   ९६ बान्हीनइ हप्रा   ९७ जाता हप्रा   ९८ होउ हप्रा आना पछी व भा-२ मां 'पग्ग' छे   ९९ सल्याई हप्रा   १०० व भा-२ मां नथी   १ कोएक हप्रो   २ पाम्युं हप्रो   ३ साम्हा व भा २   ४ मथान भा १ इ भा २, संघाति व   ५ अनरह भा १ इ, अरि व अनरे भा २   ६ गामि हप्रा   ७ गाम्हो हप्रा   ८ मग्यो भा-१ इ गिल्या व भा २   ९ वह भा १ इ भा २ तन्हिव आनी पछी व मां 'दर्शनिइ' अने भा-२ मां 'दर्शनइ' छे   १० पडतो हप्रो   ११ होउ हप्रा   १२ हु हप्रा   १३ सल्यान समय व भा २   १४ ताहू भा १ इ, ताहिंइ व, ताह्या भा २   १५ आल्यु भा-१ इ, भा २ मां नथी   १६ हु हप्रो   १७ गाममाहि भा १ इ गाम मध्य व भा २   १८ वइन्ह भा १, वइन्ह इ वहुने व वहन भा २   १९ आल्यु हप्रा   २० त भणी हप्रा   २१ हु हप्रो   २२ ताहो हप्रा   २३ हु हप्रो   २४ बान्यु हप्रा   २५ छइ भा १ इ छेइ व भा २   २६ सल्याइ इ व सल्याठ भा २   २७ आनंधि हप्रा   २८ आवइ भा १ इ आव भा २   २९ तन्हि व तंह भा २   ३० नामें भा १ इ, नाम व भा २   ३१ कहीय भा १ इ व कहीइ भा २   ३२ तहें भा १ इ भा २, तन्हि व   ३३ करइ भा १ इ कर व, करे भा २   ३४ देवत्वन भा-१ इ देवत्व व भा २   ३ पामइ भा १ इ पामइ व भा २   ३६ भूमि व भा २   ३७ उदक व भा २   ३८ पुधु भा १ इ चोथी व भा २   ३९ रुड व भा १ इ, मधुर व भा २   ४० थाल्यु भा १ इ वाणा व भा २   ४१ एनरा हप्रो

४२ व भा-२ मा नथी ४३ ये भा-१ ड ४४ व भा-२ मां नथी, आ श्लोकना उत्तरार्धनो अनुवाद व भा-२ मां आ प्रमाणे छे :

अतिथिनि [अतिथिनि] सत्पुरुष सदा आवि [आवे]

४५ अतिथिनेड भा-१ ड ४६ आपइ भा-१ ड. [पृ. ६५] ४७ अतिथिन्ड भा-१ इ, अतिथिनें व भा-२. ४८ बोलावे ह्प्रो ४९ होइ भा-१ इ, थाइ व भा-२ ५० दीयें भा-१ इ भा-२, दीधि व. ५१ होइ भा-१ इ, थाइ व भा-२. ५२ गोविंद ह्प्रो. ५३ होइ ह्प्रो ५४ भोजनि भा-१ इ, भोजन दीधे व, भोजन दीयें भा-२ ५५ विष्णु ह्प्रो ५६ होइ ह्प्रो ५७ येन्हा भा-१ इ ५८ अतिथि ह्प्रो ५९ वलइ भा-१ इ, व भा-२ मां 'निराश थै जाइ' एवो पाठ छे ६० तेन्हे भा-१ इ, ते व भा-२ ६१ आपणु भा-१ इ, आपणु व भा-२. ६२ आपीनइ भा-१ इ, आपी व भा-२ ६३ अन्य ह्प्रो मां नथी. ६४ पुण्य ह्प्रो ६५ तेन्हु भा-१ इ, व भा-२ मां 'गृहस्थनुं पुण्य' एवो पाठ छे ६६ लेइ ह्प्रो ६७ जाइ ह्प्रो ६८ एहुं ह्प्रो, व भा-२ मां 'पच्छइ कोली एह वचन सांभली' एवो पाठ छे ६९ साभलीनइ भा-१ इ. ७० श्रीन्हें भा-१ इ, श्रीनें व भा-२ ७१ कहतो ह्प्रो ७२ होइ ह्प्रो. ७३ तु भा-१ इ ७४ अतिथिन भा-१ इ भा-२, अतिथिनि व ७५ लेईनइ भा-१ इ, लेई व भा-२ ७६ जैनइ भा-१ ड, जा व भा-२ ७७ एन्हें भा-१ भा-२, एन्हि व ७८ पग धोअण ह्प्रो ७९ आपीनइ ह्प्रो ८० तुं ह्प्रो ८१ घरि ह्प्रो ८२ रहे व भा-२ ८३ हुं ह्प्रो ८४ तारूं भा-१ इ, तून्हे व भा-२ ८५ व भा-२ मा नथी ८६ घणु ह्प्रो ८७ लेई ह्प्रो ८८ छुं ह्प्रो ८९ एहु ह्प्रो. ९० वालीनइ भा-१ द, वही व भा-२. ९१ ते ह्प्रो ९२ व्यभिचारिणी ह्प्रो ९३ व भा-२ मा नथी ९४ अतिथिनइ भा-१, अतिथिनइ द, अतिथिनि व, अतिथिन भा-२ ९५ लेईनइ भा-१ इ, लेई व भा-२. ९६ व भा २ मा नथी ९७ °थी भा १ ड ९८ कोएक ह्प्रो. ९९ पुरुषन्हें भा-१, पुरपन इ भा २, पुरुषनिं व १०० चींतवती भा-१ इ, चींतवतीथी व भा-२. १ भणीं व भा-२ २ एहु ह्प्रो ३ कहें भा-१ इ भा-२, कहि व. ४ ते ह्प्रो. ५ दुर्दिवसे व भा-२. ६ आ श्लोकना पूर्वार्धनो श्लोक व भा-२ मा आ प्रमाणे छे

मेघें करी वाट दुर्गम होइ, अधारु होइ,

७ रात्रि भा-१ इ. ८ मेघें भा-१ द. ९ होइ भा-१ इ. १० अधारइ

भा-१ इ. ११ पयसाडइ भा-१ इ. १२ गामि ह्प्रो. १३ त्यो ह्प्रो. १४ होइ ह्प्रो. १५ तेवारें भा-१, तिवारें ट भा-२, तिवारि व. १६ व्यभिचारिणीन भा-१ इ व, व्यभिचारिर्णिनि भा-२. १७ होइ ह्प्रो. १८ हट्ट भा-१. १९ पाधरयो ह्प्रो. २० अनइ ह्प्रो. २१ भर्त्तार ह्प्रो. २२ भलो भा-१ इ; व भा-२ मां 'चतुर भर्त्तार' एवो पाठ छे. २३ अन्य ह्प्रो. मां नथी. २४ हुइं ह्प्रो. २५ तृणनी व भा-२. २६ परिं भा-२. २७ मानइ भा-१ इ, मानि व, माने भा-२. २७ ये भा-१ इ, आनी पछी व भा-२ मां आ प्रमाणे अनुवाद छे :

स्त्री परपुरुषशुं लुब्ध होइ.

२८ चोरीनइ भा-१ इ २९ परपुरुष भा-१ इ. ३० कन्हे भा-१ इ. [पृ. ६६] ३१ प्राणिनव्य व भा-२. ३२ कुलनु व भा-२. ३३ पाडवुं भा-१ इ, पतन व भा-२. ३४ लोकनी भा-१ इ. ३५ आनी पछी व भा-२ मां 'अनइ' छे. ३६ संदेह ह्प्रो. ३७ व भा-२ मां नथी. ३८ अगीनरइ भा-१ इ व. ३९ ये भा-१ इ, जे व भा-२; आनी पछी व भा-२ मां 'स्त्री' छे. ४० पर व भा-२. ४१ °र्हुं ह्प्रो ४२ होइ ह्प्रो. ४३ आनी पछी व भा-२ मां 'कोलिणी' छे. ४४ जैनइ ह्प्रो. ४५ देवशर्मानइ भा-१ इ, देवशर्मानि व, देवशर्मनें भा-२. ४६ आनी पछी व भा-२ मां 'बैसवा' छे. ४७ व भा-२ मां नथी. ४८ व भा-२ मां नथी. ४९ आपीनइ ह्प्रो. ५० वहती ह्प्रो ५१ हुंईं ह्प्रो; आनी पछी व भा-२ मां एक पंक्तिनो अनुवाद आ प्रमाणे छे :

'अहो स्वामिन माहिइ [माहेइ] सखी गामिथी आवी छइ, तेन्हि [तेन्हें] मिली आवुं छुं. ता लगे घर साम्हुं जोज्यो'

५२ लगइ भा-१ इ. ५३ हुं भा-१ इ. ५४ गामथी भा-१ इ ५५ सखी भा-२ इ. ५६ तेन्हें भा-१ इ. ५७ मिली भा-१ इ. ५८ आवुं भा-१ इ. ५९ साम्हुं भा-१ इ. ६० एहुं ह्प्रो. ६१ बोलीनइ भा-१ इ, कही व भा-२. ६२ श्रृंगार ह्प्रो. ६३ कोइ ह्प्रो ६४ पुरुषनइ भा-१ इ, पुरुषनि व, पुरुषने भा-२ ६५ चींतवीनइ भा-१ इ, चींतवी व भा-२. ६६ जेतलइ भा-१, जेतलें इ. ६७ जाइ ह्प्रो. ६८ तां लगइ भा-१ इ, तेहिं व, तेहें भा-२. ६९ साम्हो ह्प्रो. ७० मदमत्त व भा-२ ७१ ऊघाडें भा-१ इ भा-२, ऊघाडि व ७२ माथे भा-१ इ भा-२, माथि व. ७३ डगल्इ डगल्इ भा-१ इ; व भा-२ मा आ प्रमाणे शब्दक्रम छे :

'हाथमाहि मद्यभाड, डगलेइ डगलेइ पडतो'

७४ पडतो भा-१ इ. ७५ ठामडुं भा-१ इ. ७६ ते ह्प्रो. ७७ स्त्रीनो ह्प्रो. ७८ भरतार व. ७९ माम्हो ह्प्रो. ८० अन्य ह्प्रो. मा नथी. ८१ पठइ भा-१ इ, पठिइ व, पच्छेइ भा-२. ८२ वेगी ह्प्रो. ८३ बलीनइ ह्प्रो. ८४ पइसीनड भा-१, पइसीनइ इ, पिसीनइ व, पैसीनइ भा-२. ८५ सणगार भा-१ इ, श्रृंगार व भा-२. ८६ मुंक्यो इ, मेल्ह्यो व भा-२. ८७ पछड इ, पछिइ व, पच्छेइ भा-२; आनी पछी भा-१ मा मात्र नीचेनो ज अनुवाद छे :

'सणगार ऊतारयो देवी कोडी क्रोध्यो, "तू किहां जाती हुंती" पूछ्युं. स्त्री बोली, "तू सूं मद्यना वशिथी बोलु छइ ? हूं घर......'

८८ तेन्ही इ. ८९ स्त्रीनट इ, स्त्रीनि व, स्त्रीनं भा-२. ९० उतारयो इ, ऊतारयो व भा-२. ९१ देखी इ, देखीनइ व, देखीनइ भा-२. ९२ क्रोध्यो ह्प्रो. ९३ व भा-२ मां नथी. ९४ °मध्य व भा-२. ९५ पैठी इ, पैसी व भा-२. ९६ व भा-२ मा नथी. ९७ स्त्रीन्हें इ स्त्रीनिं व, स्त्रीनें भा-२. ९८ कहितो इ, कहतो व भा-२. ९९ हौउ ह्प्रो. १०० अरे इ व भा-२. १ तुं इ व भा-२. २ किहां इ व भा-२. ३ ती इ, हती व भा-२. ४ *कन्हिथी व, कन्हेथी भा-२.* ५ आव्या व भा-२. ६ पछइ इ, पच्छी व भा-२. ७ कीहीं इ व भा-२. ८ नींकली व भा-२. ९ तु इ, तुं व भा-२ १० शुं इ व भा-२ ११ मद्यपान इ, मद्यपानना व भा-२. १२ वशथी इ व भा-२ १३ मुंड इ, व भा-२ मा आ प्रमाणे पाठ छे :

'बोलें छि [छें], भुंडुं बोलि छे.'

१४ एहुं इ भा-२, एहु व १५ करीये इ व भा-२ १६ पापिइ व, पापेइ भा-२. १७ मुंद भा-१ इ, मुई व भा-२. १८ पडवुं ह्प्रो. १९ यथा ह्प्रो. २० वाच्य ह्प्रो. २१ बोलवुं ह्प्रो. २२ सनिपातनां ह्प्रो २३ सघला इ, सघला भा-१ व भा-२. २४ देखाडइ भा-१ इ, देखवै व, देखवे भा-२. [पृ. ६७] २५ हालद इ, हालें व भा-२. २६ रुडु इ, रुडुं व भा-२. २७ छांडइ इ, छाडेइ व भा-२. २८ तेजनी व भा-२. २९ हाणि इ व भा-२. ३० मद्यपानुना इ, मद्यपान व भा-२. ३१ सरपी इ भा-२, सरीपी व. ३२ आनी पछी व भा-२ मा 'वारुणी दिशा पामीनइ' एवो पाठ छे. ३३ छइ इ व, च्छेंइ भा-२. ३४ ते इ व भा-२; आ परिच्छेदमा इ मा नीचे प्रमाणे अनुवाद छे :

'ते स्त्री वचन विपरीत साभली, लाक्डे मारीनइ थामसूं बांधीनिइ सूतो निद्रा पामी; तेहे समय तेन्ही सखी नावीनी स्त्री आवी कहि, "सखी देवदत्त ताहरी वाट पं ३४

जोइ छइ तीर्णि टामि." कोलणि बोली, "माह्री अवस्था जो; हुं किम जाउ ? तेन्हे हुं जैनइ कहि, आज आणइ अवसरि, तेन्हि संगम नहीं होइ. नावइणी बोली, "सखी [लपटनुं ए] धर्म नहीं."

३५ एहुं ह्प्रो. ३६ व भा-२ मां नथी. ३७ कनाएयो ह्प्रो. ३८ देवीनइ इ, देवीनिइ व, देवीने; भा-२. ३९ व भा-२ मां नथी. ४० कहितो इ, कहतो व भा-२. ४१ होउ इ व भा-२. ४२ छिनालि इ; पछी इ मां 'जे' छे. ४३ ताह्री इ, ताहरु व भा-२. ४४ व भा-२ मां नथी. ४५ दिननो इ, दिवसनो व भा-२. ४६ सांभलतो इ भा-२, साभलतो व. ४७ मैं इ भा-२; मिं व; पछी व भा-२ मा 'आज माह्री' शब्दो छे. ४८ आर्यं इ, दृष्टि व, दृष्टि भा-२. ४९ दीठु इ भा-२, दीठुं व. ५० तेथी व भा-२. ५१ जे इ व भा-२. ५२ तुन्हे इ, तुन्हि व, तुंन्हे भा-२. ५३ घटइ इ, घटेइ व भा-२. ५४ ते इ भा-२. ५५ कहुं इ व भा-२. ५६ एहुं इ व भा-२. ५७ बोलीनइ इ, बोली व भा-२. ५८ व भा-२ मां नथी. ५९ मारीनइ इ, मारी व भा-२. ६० करीनइ इ व भा-२. ६१ थाकिउ व, थाकिले भा-२. ६२ वांधीनइ इ व भा-२. ६३ निद्रानि इ, निद्रानि व, निद्राने भा-२. ६४ पाम्यो इ भा-२, पाम्युं व. ६५ एहेइ इ, एहि व, एहे भा-२. ६६ पाम्यो इ व भा-२ ६७ जाणीनइ इ व भा-२. ६८ आवीनइ इ, आवी व भा-२. ६९ कोलिणिनें इ, कोलिणि व भा-२. ७० कहती इ व भा-२. ७१ होइ इ व भा-२. ७२ अरे इ व भा-२. ७३ तुन्हे इ भा-२, तुन्हि व. ७४ तीणइ इ, तीणि व, तीणे भा-२. ७५ टामि इ व भा-२. ७६ जोइ व भा-२. ७७ छइ इ, छिइ व, छेइ भा-२. ७८ ते भणी व भा-२. ७९ तिहां इ व भा-२. ८० वेगी इ व भा-२. ८१ बोली इ व भा-२. ८२ आ वाक्य व भा-२ मां आ प्रमाणे छे:

'अरे सखी तु ए माह्री अवस्था जो.'

८३ ते भणी व भा-२. ८४ आउं इ व भा-२. ८५ तेन्हे इ भा-२, तेन्हि व. ८६ हुं इ, व भा-२ मां नथी. ८७ जैनइ इ, जि व, जै भा-२. ८८ कहजि व, कहजे भा-२; पछी व मां 'जि' अने भा-२ मां 'जे' छे. ८९ आणइ इ, ईणे व भा-२. ९० तुंन्हे इ, व भा-२ मां नथी. ९१ नहीं इ व भा-२. ९२ होइ इ व भा-२. ९३ नावइणी इ, नाविणि व भा-२. ९४ एहुं इ व भा-२. ९५ कहेसि इ, बोलिसि व भा-२. ९६ लंपटिनो इ भा-२, लिंपटनो व. ९७ नहीं इ भा-२. ९८ छइ इ, छे व, छेइ भा-२. ९९ येहनी

इ, व भा-२ मा नथी. १०० ईच्छा व. १ तेन्हु व, तेन्हु भा-२. २ जीवितव्य व भा-२ ३ परिं व भा-२ ४ संदेह व भा-२. ५ जाणतो इ, जाणतु व भा-२. ६ लोक्नी व भा-२. ७ छता भा-१ इ. ८ बहुचित्त व भा-२. ९ थता भा-१ इ, छता व भा-२. १० पीयारो भा-१ इ, पर व भा-२. ११ पुरुष हशे, आनी पछी व भा-२ मा 'आपणे' छे. १२ यौवननो भा-१ इ, यौवननु व भा-२. १३ भोगवे भा-१, भोगवे इ भा-२; पछी व मा 'छिं' अने भा-२ मा 'छे' छे. १४ ते हशे. १५ जो हशे. १६ एहुं हशे. १७ छइ हशे; आनी पछी भा-१ मा केटलोक पाठ नथी. १८ आनी पछी व भा-२ मां 'हुं' छे. १९ व भा-२ मां नथी. २० रिम हशे. २१ व भा-२ मां नथी. २२ °थी व भा-२. २३ छूटाडं इ, छूटूं व भा-२. २४ अनइ हशे. २५ छइ इ, छिइ व भा-२. २६ करुं हशे. [पृ. ६८] २७ ताहरो इ, ताहो व भा-२. २८ आनी पछी वार्तानो केटलोक भाग इ मा नीचे प्रमाणे संक्षेपमा छे:

'नाविणि बोली, "ए मद्यविह्वल छइ. ताहरि ठामि मूंन्हि बाधीनइ वेगी जा." ते आपणि ठांमि नाविणी बाधीनइ देवदत्त कन्हे गई. तिवार पछी कोली ऊठीनइ... थोयो; आपणी स्त्री जाणीनि कहितो हीउ, "अरे राड जो आज पछी परपरत्र न वाळइ तो छोडूं." घणूंइ कहूं पण नावणि सादं ऊलदवा भणी प्रतिउत्तर वल्तो*... कोली छरी लेई नाक वाढुं; अनइ कहितो होउ, "छीनालि तु हवे शोभा पामी," एहुं कहीनइ सूतो.'

२९ आ वाक्यनो उत्तरार्ध व भा-२ मा आ प्रमाणे छे:

'मदविह्वल छिइ [छेइ], सूतो छइं [छइ]

३० इ मा नथी. ३१ व्याहाणइ इ. ३२ °थि इ. ३३ उगिति इ. ३४ ते भणी इ व भा-२. ३५ हुं इ व भा-२ ३६ तुन्हि इ, तून्हें व, तून्हे भा-२. ३७ छोडुं इ व भा-२. ३८ छुं इ व भा-२ ३९ ताहिं इ व भा-२. ४० ठामि इ व भा-२. ४१ मूंन्हि इ व, मून्हें भा-२ ४२ तुं व भा-२. ४३ जै इ व भा-२. ४४ काम इ व भा-२. ४५ करावी भा-२. ४५ वेगी इ व भा-२. ४६ आवि इ, आवजे व भा-२. ४७ आ परे इ व भा-२, आनी पछी व भा-२ मां 'प्रमाण' छे. ४८ पछिइ व, पछेइ भा-२. ४९ आपणइ इ, आपणि व, आपणेइ भा-२. ५० ठामि इ व भा-२. ५१ नाविणी इ, नावणिनि व, नाविणिनि भा-२. ५२ बाधीनइ इ, बाधीने व भा-२. ५३ गै इ व भा-२

१ *. अन फाटेली होवाथी आनी पछी केटलाक शब्दो नथी.

५४ तिरार इ व भा-२. ५५ उठीनइ इ, छव्यो व भा-२. ५६ पछइ इ; आ पंक्तिनो पाठ व भा-२ मां आ प्रमाणे छे :

'सावधान थको आपणी स्त्री वाधी छि [छे] तेन्हि [तेन्हे] कहतो हौउ.'

५७ तेन्हे इ. ५८ साधीनि इ. ५९ जाणीनइ इ. ६० हौउ इ. ६१ अरे इ व भा-२. ६२ आनी पछी व भा-२ मां 'आजथी जो तुं' एवो शब्दक्रम छे. ६३ परपुरुषनं इ भा-२, परपुरुषनि व. ६४ न व भा-२. ६५ करें इ भा-२, करि व. ६६ तो इ भा-२, ति व. ६७ तुन्हे इ, तुन्हि व, तुन्हे भा-२. ६८ छोडुं इ व भा-२. ६९ व भा-२ मा नथी. ७० पछे इ, पछइ व भा-२; आनी पछी व भा-२ मां 'ने' छे ७१ आपणपानो व भा-२. ७२ प्रीछइ इ, व भा-२ मां 'एवें प्रीछेइ' एवो शब्दक्रम छे ७३ मादइ इ, व भा-२ मां 'एहुं जाणीनइ' एवो शब्दक्रम छे. ७४ घणुं घणु इ व भा-२. ७५ कहतो इ व भा-२. ७६ हौउ इ व भा-२. ७७ तोहइ इ, तोहिइ व भा-२. ७८ बोली व, बोले भा-२. ७९ पठइ इ, पच्छेइ व भा-२. ८० व भा-२ मा नथी. ८१ लेईनइ इ, लेई व भा-२. ८२ तेन्हु इ, ते नाविणिनुं व भा-२. ८३ वातुं इ, वातलो हौ इ व भा-२. ८४ अनइ इ, व भा-२ मा 'वार्ताेनइ' छे. ८५ कहतो इ व भा-२. ८६ हौउ इ व भा-२. ८७ तुं इ व भा-२. ८८ हवें इ व भा-२. ८९ पामी इ व भा-२. ९० एहुं इ व भा-२. ९१ बोलीनइ इ व भा-२, कहीनइ भा-१. ९२ सूतो इ व भा-२ ९३ अनइ हप्रो. ९४ ऊचाव्यो हप्रो. ९५ ऊडी व भा-२ भा-१. ९६ हौउ इ व भा-२. ९७ पठइ हप्रो. ९८ ते हप्रो. ९९ तिहा इ; व भा-२ मा नथी. १०० सघातिइ भा-१, सघातेइ इ, सघाति व, सराते भा-२. १ भोग भा-१ व २ करी भा-१ व भा-२, करीनइ इ. ३ भा-१ व भा-२ मां नथी. ४ आवीनइ भा-१ इ, आवी व भा-२. ५ नाविणिनें भा-१ इ, नाविणिनि व, नाविणिने भा-२. ६ कहती हप्रो. ७ हौई हप्रो, आनी पछी व भा-२ मा 'सु त्या पछी कुशल छिइ [छेइ]' एवो शब्दक्रम छे ८ छइ भा-१ इ. ९ सुं भा-१ इ. १० त्या भा-१ इ. ११ पूठि भा-१ १२ सु हप्रो. १३ ठव्यो भा-१ व, ऊठ्यो इ भा-२. १४ व भा-२ मां 'माह्रा नाक' एवो पाठ छे. १५ पाखइ भा-१ इ, विना व भा-२. १६ व भा-२ मा नथी १७ सघलु भा-१ इ, सघलि व, सघले भा-२. १८ कुशल व भा-२. १९ छइ भा-१ इ, छिइ व, छेइ भा-२. २० हौई भा-१ इ, 'कहती हौई' आ पाठ व भा-२ मा नथी. २१ मूहुं भा-१ इ; आनी पछी भा-१ इ मां

'तु' छे; व भा-२ मां आ पंक्ति आ प्रमाणे छे :

'हवे तु मून्हे छोडि.'

२२ हुं भा-१ इ, व भा-२ मा नथी २३ माहूइ भा-१ इ, माहेइ व भा-२. २४ पडइ ह्प्रो. २५ तीणी ह्प्रो २६ छोडीनइ ह्प्रो २७ वखाण्युं व भा-२. २८ उठीनइ भा-१ इ व. २९ कहतो ह्प्रो. ३० हाउ ह्प्रो ३१ अरे ह्प्रो. ३२ शें व भा-२. ३३ शुं ह्प्रो. ३४ कान ह्प्रो; आनी पछी व भा-२ मा 'पण' छे ३५ पडइ भा-१ इ भा-२, पडिइ व. ३६ गाटइं भा-१, गाढीइ इ, गाटे व भा-२ ३७ थें व भा-२. ३८ बोली व भा-२ ३९ हींडे भा-१ इ, व भा-२ मा नथी, ४० अरे ह्प्रो. ४१ मतीनि भा-१ इ भा-२, मतीनि व. ४२ साम्हुं ह्प्रो. ४३ बेडि व भा-२. ४४ नहीं भा-१ इ. ४५ तम्हे भा-१ इ, व भा-२ मा नथी. ४६ साभलयो भा-१ इ, साभलजो व. ४७ माहु भा-१, माहु इ व भा-२. [पृ. ६९] ४८ यम ह्प्रो. ४९ बेहि इ. ५० एतला ह्प्रो. ५१ अन्य ह्प्रो. मा नथी ५२ मनुष्यनुं भा-१ इ, मनुष्यना व भा-२. ५३ पापपुण्यनि व, पापपुण्यान भा-२. ५४ जाणे भा-१ इ भा-२, जाणि व. ५५ हुं ह्प्रो. ५६ सतीमाखी व भा-२. ५७ होउं ह्प्रो. ५८ आनी पछी भा-१ इ मा 'ए' अने व भा-२ मा 'एतला' छे ५९ देव व भा-२. ६० माहू भा-१, माहू इ, माहुं व भा-२. ६१ आनी पछी व मा 'वाल्युं छिइ ते' अने भा-२ मा 'वाल्युं छेइ ते' एवा शब्द छे ६२ साजी भा-१, साजू इ, साजूं व भा-२. ६३ वरज्यो ह्प्रो. ६४ अन्य ह्प्रो मा नथी ६५ जो ह्प्रो. ६६ मे ह्प्रो. ६७ मनइ भा-१ इ, चित्त विषि व भा-२ ६८ परपुरुष ह्प्रो ६९ चितव्यो व भा-२ ७० होइ ह्प्रो ७१ व भा २ मा नथी ७२ मुन्हे भा-१, मुंहे इ, मुन्हि व, मून्हे भा-२. ७३ करयो भा-१ ७४ एहुं ह्प्रो. ७५ कहीनइ भा-१ इ व, कहिनइ भा-२. ७६ कोलीनि भा-१ इ भा-२, कोलीनि व. ७७ कहती ह्प्रो. ७८ होइ ह्प्रो ७९ माहुं ह्प्रो. ८० आनी पछी व भा-२ मा 'तु' छे ८१ नार व भा-२ ८२ जेहीं भा-१ इ, जेहु व भा-२. ८३ हसुं व भा-२. ८४ तेहुं व भा-२, आनी पछी व भा-२ मां 'ज' छे ८५ भा-१ इ मा 'साजी थें' अने व भा-२ मां 'साजु थ्युं' एवो पाठ छे. ८६ कोली ह्प्रो; आनी पछी व भा-२ मां 'ऊठी अन्हारे' शब्द छे ८७ रुवाड व भा-२. ८८ लेईनइ भा-१ इ, लेइ व भा-२ ८९ देइ भा-१ इ, देयेइ भा-२ ९० तलइ भा-१ इ, आ आखी पंक्ति व भा-२ मा नथी ९१ घणुं भा-१ इ. ९२ पड्यु

भा-१ इ ९३ तेहि भा १ ८ ९४ पामीसइ भा-१ इ, आ पंक्ति व भा-२ मां आ प्रमाणे छे

। '[पच्छइ] तेन्हि [तेन्हे] छोडी आश्चर्य पामी रुडा रुडा वचन मधुर बोली संतोषतो होउ '

९५ तेन्हे भा-१ इ ९६ श्रीन भा-१ इ ९७ सतोषतो भा-१ इ ९८ हाँउ भा-१ इ ९९ व भा-२ मा नथी १०० जोडेनइ भा १, जोइनइ इ, जोड व भा-२. १ विस्मयम भा-१ इ, परम विस्मय व भा २ २ पाम्यु भा-१ इ, ३ व भा-२ मा नथी ४ चितवतो व भा-२ ५ होंउ ह्स्रो ६ वेदशास्त्रन भा-१, शास्त्रने इ, व भा-२ मा आ श्लोकनो अनुवाद आ प्रमाणे छे.

' 'शुक्र बृहस्पति जे शास्त्रने जाणे ते शास्त्रनी बुद्धि थकी विशेष नही पण स्त्रीनी बुद्धिगोचर नही '

७ जाण भा-१, जाणे इ ८ हर्षे ह्स्रो ९ जिवारें भा-१ इ भा-२, जिवारि व १० होइ ह्स्रो ११ तिवारें भा-१ इ भा-२, तिवारि व १२ कुल्नें ह्स्रो १३ दहें भा-१ इ, दहे व भा-२, आनी पछी व भा-२ मां आ प्रमाणे अनुवाद छे:

'जिम बीज पडी वृक्षन दहेइ '

१४ वृक्षन भा-१ इ १५ दहइ भा-१ इ १६ बोल्यु ह्स्रो १७ छइ ह्स्रो १८ स्त्रीनु व भा-२ १९ घणु भा-१ इ, व मां 'घणो प्रसग' अने भा-२ मां 'घणो प्रसग' एवो पाठ छ २० वन्दइवो व २१ देखी व भा-२. २२ जे भणी भा-१ इ, जेथी व भा-२ २३ ये भा-१ इ, व भा-२ मां नथी. २४ पुरुष भा १ इ, व भा-२ मा नथी २५ वरइ भा-१ इ, वरे व भा-२. २६ तेन्हे भा-१ इ भा-२, तेन्हि व २७ आनी पछी व भा-२ मां अनुवाद आ प्रमाणे छे

'अनेराशु रमेइ [रमे] जिम काग पाप भाडे [*तिम स्नेह ओडे.]

२८ कागनी भा-१ इ २९ परि भा-१ इ ३० पुरुपन भा-१ इ. ३१ रमइ भा-१ इ [पृ ७०] ३२ वितन्हे भा १ इ, वित्त निमित्त व भा-२. ३३ हसि भा-१ इ व, हस भा-२. ३४ अनइ भा-१ इ, अनि व, अने भा-२. ३५ पुरुषन भा-१ इ भा-२, पुरुषनि व ३६ ऊराजावे भा-१ इ भा २, ऊराजावि व.

* आ शब्दो व मां नथी

३७ विश्रंम भा-१ ड भा-२, विश्रमि व. ३८ नहीं हप्रो. ३९ तेथी व भा-२. ४० भलें हप्रो. ४१ पुरुषें भा-१ इ भा-२, पुरषि व. ४२ स्मशानना हप्रो. ४३ पडार्नी भा-१ ड. ४४ परिं हप्रो. ४५ आनी पछी व भा-२ मा 'स्त्री दुष्ट होइ ते लजवी' एवो पाठ छे. ४६ वेगरसुमवयुक्त हप्रो. ४७ मुख्य प्रत 'वि'-मार्थी पछी गयेलो आ शब्द अन्य हप्रो. मा छे. ४८ ए व भा-२. ४९ आनी पछी व भा-२ मां 'छता' छे. ५० बन्हइ भा-१ इ, ेनं व भा-२. ५१ थाइ भा-१ इ, थाई व भा-२. ५२ व भा-२ मां 'स्तन खीना' एवो पाठ छे. ५३ गांथि भा-२. ५४ सोनाना कुंभ भा-१ व भा-२. ५५ समान हप्रो. ५६ मरुं भा-१ इ, मरयुं व भा-२. ५७ समान हप्रो. ५८ कीरा भा-१ इ, कीधुं व भा-२. ५९ मूलनो हप्रो. ६० ठाम हप्रो. ६१ जे भा-१ इ, व भा-२. ६२ सरयुं भा-१ इ, समान व भा-२. ६३ कीउं हप्रो. ६४ पंडिते भा-१ इ, व भा-२ मां नथी. ६५ निंद्य भा-१ ड, निंदित व भा-२. ६६ ये भा-१ ड. ६७ ते हप्रो. ६८ ववीश्वरे हप्रो. ६९ मोटुं भा-१ ड, मोटुं भलुं व भा-२. ७० देशाव्यु भा-१ इ, देपव्युं व भा-२. ७१ चिणोठीनी व भा-२; भा-१ मां नथी. ७२ परि इ, परिं व भा-२; भा-१ मा नथी. ७३ मर्थ्यें व भा-२ ७४ अनइ हप्रो. ७५ वारुरि व भा-२. ७६ रुडीं व भा-२. ७७ निम सर्वे व भा-२. ७८ एह्वी भा-१ इ, इसी व भा-२ ७९ जाणवी हप्रो [पृ ७१] ८० ईणी इ, इणीं व, भा-२; भा-१ मा आ पंक्ति सळंगमा आ प्रमाणे छे

'देवशर्मा एहुं चींतवना विहाणुं थ्युं. ते नारणि ये दूती नाक वाढ्युं हाथमाहि साहींनड घरिमाहि गं.'

८१ परिं इ, व भा-२ ८२ चींतवता व भा-२. ८३ व भा-२ मा नथी. ८४ देवशर्मनिं ड, देवशर्मनि भा-२, देवशर्मानि व ८५ विहाणु इ, प्रभात व भा-२. ८६ थ्यु इ, हौउं व भा-२ ८७ व भा-२ मां 'अनइ ते' पाठ छे. ८८ यि इ, व भा-२ मा नथी ८९ दूती व व भा २ ९० तिवारिं इ, तत्काल व भा-२. ९१ वेगी इ व भा-२. ९२ जैनइ ड व भा-२. ९३ वाढ्युं ड व भा-२, व भा-२ मा पछी 'ते' छे. ९४ हस्तमाहि व भा-२. ९५ साहींनइ इ, साहीनिइ व भा-२; आनी पछी व भा-२ मां 'वेगी आपणपाना' छे. ९६ गै इ व भा-२. ९७ अनइ इ, भा-१ मा नथी, व मा 'पछिइ' अने भा-२ मा 'पछेइ' छे. ९८ दौड़ें हप्रो. ९९ हिंव भा-१, हवे व भा-२, हवइ इ. १०० हुं इ व भा-२, भा-१ मां नथी. १ ज्जुं हप्रो. २ करुं हप्रो. ३ तिवार भा-१ इ भा-२, तिवारे

व. ४ नावी हस्री. ५ प्रातःकालि भा-१ इ, प्रातःकालि व भा-२. ६ समारवानें भा-१ ह भा-२, समारवानि व. ७ द्वार व भा-२. ८ र्वंनिइ हस्री. ९ नाविणिनें इ, नाविणिनि व भा-२. १० वेगु वेगु इ व भा-२, भा-१ मां नथी. ११ कहतो हस्री. १२ हांउ हस्री. १३ अरे हस्री. १४ वेगो हस्री. १५ आपि हस्री. १६ ये भा-१ इ, जिम व भा-२. १७ जाउं हस्री. १८ पछइ भा-१ इ, पछि व, पच्छेइ भा-२. १९ स्त्रीनें भा-१, स्त्रीन्हें इ, नाविणिनि व, नाविणिनें भा-२. २० करनी हस्री. २१ अनइ इ व भा-२: भा-१ मां नथी. २२ कोथलामाहिथी हस्री. २३ वाडीनइ भा-१ इ, वाडी व भा-२. २४ साम्हो भा-१ इ. २५ नाप्यु भा-१, नोर्युं इ; आनी पछी व भा-२ मा 'नाम्यो ते साम्हो पण मघलो कोथलो नाख्यो' एवो पाठ छे. इ मां 'पछइ मघलो कोथलो नावीनें नाख्यु' एवो पाठ छे. २६ पछइ इ. २७ नावीनें इ. २८ सघलो इ. २९ कोथलो इ. ३० तीनें भा-१ ह; इ मां आ पंक्ति आ प्रमाणे छे:

'तीर्णे छगे कोप्यु थवो नावणि सांम्हो नांख्यो.'

व भा-२ मा आ पंक्ति आ प्रमाणे छे:

'ते नावीयि [नावीर्नि] कोपि नें छद नाविणि सामहो वेगलांथा छूटो नाख्यु.'

३१ व भा-२ मा नथी. ३२ नाविणि व भा-२. ३३ हाथि भा-१ इ व, हाथें भा-२. ३४ लहिनइ भा-१ इ, लही व भा-२. ३५ वाडीनइ भा-१ इ, वाडी व भा-२. ३६ आनी पछी व भा-२ मां 'हाथि' छे. ३७ इ व भा-२ मां छे. ३८ परडीनइ भा-१, परडीनें इ, परडीनिइ व भा-२. ३९ त्याडि भा-१ इ. ४० आनी पछी व मा 'वाहवती' अने भा-२ मा 'वाहवनी' छे. ४१ बाहरि व भा-२. ४२ नीकली भा-१ इ, नीकली व भा-२. ४३ लेई हस्री. ४४ पछइ भा-१ इ, पच्छिइ व, पच्छेइ भा-२. ४५ गाइं हस्री. ४६ कहती हस्री. ४७ अरे हस्री; आनी पछी व भा-२ मां आ प्रमाणे शब्दक्रम छे:

'अरे लोको इंण [इंणे] पापीयें माहुं नाक वाढ्युं, धाउ रे [रें] धाउ रे [रें]'

४८ इंणें भा-१, इंणे इ. ४९ माहुं भा-१ इ. ५० वाढ्युं भा-१ इ. ५१ पापीयें भा-१ इ. ५२ धाइ रे भा-१ इ. ५३ धाउ रे भा-१ इ. ५४ पछइ भा-१ इ, पछेइ व भा-२. ५५ जोई भा-१ इ. ५६ वाढ्युं हस्री. ५७ देवीनइ भा-१ इ. देवि व, देवे भा-२; आनी पछी व भा-२ मां आ प्रमाणे पाठ छे:

'एहुं देवीनइ राजसेवके गडडे पाहू मारी राजद्वारि लीधो.'

५८ नावी भा-१ इ. ५९ साहीनइ भा-१ इ. ५९ पाट्ट भा-१ इ. ६० मारीनइ भा-१ इ. ६१ लेई भा-१ इ. ६२ अन्य हप्रो. मा नथी ६३ स्त्रीने हप्रो. ६४ मघाते भा-१, सघाते इ व भा-२. ६५ लेई हप्रो. ६६ पछइ भा-१ इ, पछे व भा-२. ६७ माभइं भा-१ इ भा-२, मभाइ व. ६८ वडठा भा-१, बठा इ व भा-२. ६९ छे भा-१ इ, छे व भा-२. ७० तेहने भा-१ इ, तेन्हि व, तेन्हे भा-२. ७१ कहता भा-१ इ; व भा-२ मा 'हशु' क्रियापद छे. ७२ हौआ भा-१ इ; व भा-२ मां नथी. ७३ ईणे भा-१; व भा-२ मा आ पंक्ति आ प्रमाणे छे :

'अहो नावीये स्त्रीनुं निरपराध नाक वाढ्युं ते स्याथी ?'

७४ नावीयें इ ७५ स्त्रीरत्न भा-१ इ. ७६ गीवुं भा-१ इ. ७७ एहे इ, एन्हि व, एन्हे भा-२, भा-१ मा आनी पछी वार्तानो भाग नीचे प्रमाणे छे :

पछट राजपुरुप नावीने स्त्रीनो अपराध पछता हौया, "स्यो अपराध, चोरी कि परपुरुप कि तन्हि मारवा हीटती हुती?" पछइ विस्मय पाम्यो नावी उत्तर न ऊपजइ. तिवारे सभा सर्व शास्त्र जोईनइं कहता हौआ, "जे एणि राजपुरुषि सत्य बोल्युं जे नावीये स्त्रीने पोडि कीधी " बोल्युं छइ,

भिन्नस्वरमुखवर्णः शङ्कितदृष्टिः समुत्पतिततेजाः ।
भवति हि पापं कृत्वा स्वकर्मसन्त्रासितः पुरुषः ॥

मुखनो वर्ण अनइ स्वर विपरीत थाइ, दृष्टि चकित होइ अनइ आपण कानथीये बीन्इ तींणि पुरुषें पाप कीधु जाणवुं

पछइ नावी लाकडे मारयो ते बोली न सक्तो हौउ पछइ ए ईणे लक्षणे सापराधी जाणीनइ जणन कहता हौआ, "एन्हे शूल्ये चढावो " पछइ ते नावी वधभूमिकाइं आण्यो सन्यासी देषी राजाना आदेशकारी प्रति बोल्यो, "अहो हू राजा समीपिं जइ आवूं तिहा [लगी] एन्हि शली म वडशारस्यो " पछइ सन्यासी राजा समीपि जई नावणिनो सर्व वृत्तान्त कह्यो. नावीनइ छोडवीनइ एक श्लोक, जे पाछलि लख्यो छइ, भणतो हौउ, 'जम्बुको हुडुयुद्धेन' ए श्लोक. नाविणि काढी मूकी.'

७८ होट इ व भा-२. ७९ ते इ व भा-२. ८० पछइ इ, पछिइ व, पछेइ भा-२. ८१ सभा इ, सभाना व भा-२ ८२ वइठा इ, विइसणहार व, विटमणहार भा-२; आनी पछी व भा-२ इ मा 'जे पुरुष ते' एवा शब्दो छे, पछी व भा-२ मा 'नावीनि [नावीनं] पूछता हौआ' एवो शब्दक्रम छे. ८३ नावीनें

पं ३५

ड; आनी पछी व भा-२ मां नीचे प्रमाणे पाठ छे:

'ए स्त्रीरत्न नारकीन वां कीधी? इणी [ईणी] स्त्रीयें सुं परपुरुषसंबंध कीधो?'

८४ अरे ड. ८५ मोटुं ड. ८६ ताहूं ड. ८७ स्त्रीन्हे ड. ८८ कीधुं ड. ८९ स्त्रीये ड. ९० पुरुषशुं ड. ९१ कीधो ड. ९२ तुन्हे ड भा-२, तुन्हि व. ९३ मारवानो ड व भा-२. ९४ कीधो ड व भा-२. ९५ अथवा ष भा-२. ९६ आनी पछी व भा-२ मां 'तु' छे. ९७ कहने ड, वही व भा-२. ९८ तुं ड व भा-२. ९९ छइ ड, छेउ व भा-२. १०० पछइ ड, पच्छिइ व, पच्छेइ भा-२. १ ते ड, ते नारी व भा-२. २ पाम्यो ड व भा-२. [पृ. ७२] ३ °यो व भा-२; आनी पछी व भा-२ मां 'काई उत्तर न देतो हौउ' एवो अनुवाद छे. ४ उत्तर ड. ५ छराजनो ड. ६ हौउ ड. ७ विचारे ड भा-२, विचारि व. ८ सभाना जन व भा-२; आनी पछी व भा-२ मा 'सर्वे' छे. ९ जोइनइ ड, जोईने व, जोईने भा-२. १० बन्ना ड व भा-२. ११ हौआ ड व भा-२. १२ ईणे ड, ईणि व, इणीं भा-२. १३ राजाने ड भा-२, राजानि व. १४ कह्युं ड व भा-२. १५ जे ड व भा-२. १६ नारीये ड व भा-२. १७ स्त्रीन्हे ड, स्त्रीनि व, स्त्रीने भा-२. १८ बोल्यु ड व भा-२. १९ छिइ व. २० अनइ ड, व भा-२ मां नथी. २१ विपरीत ड व भा-२. २२ थाइ ड, व भा-२ मा नथी. २३ भयीन ड, भयभीन व भा-२. २४ होइ ड, व भा-२ मा नथी. २५ अनर ड व भा-२. २६ कामथी ड व भा-२; व भा-२ मां पछी 'पण' छे. २७ वे ड, व भा-२ मां नथी २८ वीहइ ड, वीहि व, वीहे भा २. २९ तीर्णे ड व भा-२. ३० पुरुषे ड व भा-२. ३१ जाणवुं ड व भा-२. ३२ पछइ ड; व भा-२ मा आ पंक्ति आ प्रमाणे छे:

'पछेइ ते नावी लाकडे मारयो पण बोलतो न हौउ.'

३३ नावी ड. ३४ लाकडे ड. ३५ सकतो ड. ३६ हौउ ड. ३७ ईणे व भा-२. ३८ लक्षणे ड व भा-२. ३९ अपराधी व भा-२. ४० जाणीनइ ड, जाणीनि व भा-२. ४१ जणयो ड, व भा-२ मां नथी. ४२ हौआ ड व भा-२. ४३ एन्हे ड, एन्हि व, एन्हें भा-२. ४४ स्त्रीये ड व भा-२. ४५ दो व भा-२. ४६ पछइ ड, पच्छिइ व, पच्छेइ भा-२; व भा-२ मा आ पंक्तिनो अनुक्रम आ प्रमाणे छे:

'पच्छिइ [पच्छेइ] तेन्हि [तेन्हे] राजसेवक मूलीयें चडाववा लेई जाता हौआ.'

४७ नावीनइ इ. ४८ शूली इ. ४९ चडाववा इ. ५० लेई इ. ५१ ते साथि व भा-२. ५२ जातो हौउ व भा-२. ५३ एहं इ, एहि व, एहं भा-२. ५४ तपसी व भा-२. ५५ कोलीनी इ कोलीनइ व भा-२. ५६ घरथी इ, घरिथो व भा-२. ५७ उठीनइ इ, ऊठीनइ व भा-२. ५८ प्रात-कालि इ; आनी पछी व भा-२ मां आ प्रमाणे अनुवाद छे :

'बाहर वाडि उदकनेइ अर्थि दैववशथी तिहा ग्यो जिहा ते नावीन सूलीये ये छे [छे]

५९ वाहिर इ. ६० उदकनै इ. ६१ गाम इ. ६२ तीणइ इ ६३ ठामि इ. ६४ तिहा इ ६५ जिहा इ ६६ नावीनि इ. ६७ शूली इ. ६८ वे इ. ६९ छेइ. ७० अनइ इ, व भा-२ मा 'पछइ' छे ७१ नावीनइ इ, नाविन्हि व, नावीन्हे भा-२. ७२ शूली इ, सूली व भा-२ ७३ वइसारवा इ, वेसारवा व भा-२. ७४ आण्यो इ व भा-२. ७५ दीपीनइ इ, देपीनि व, देपीने भा-२. ७६ ऊपनी इ व भा-२. ७७ आ पंक्ति व भा-२ मा आ प्रमाणे छे :

ते राजाना सेवकने कहतो हौउ, "अहो हुं जो लगेइ राजा कन्हि [कन्हे] जै आवुं ता लगेइ एन्हे तम्हि [तम्हे] सूली म देशो."

७८ सेवकने इ. ७९ कहतो इ. ८० हौउ इ ८१ इ मा नथी ८२ होउ इ. ८३ लगइ इ. ८४ एन्हइ इ. ८५ बइसारस्यु इ ८६ जेतल इ. ८७ राजान इ. ८८ कहुं इ. ८९ तीणे इ व भा-२ ९० तपस्वीनुं इ व भा-२. ९१ मान्युं इ व भा-२ ९२ पछइ इ, पछिइ व, पछेइ भा-२, आनी पछी व भा-२ मां आ प्रमाणे पाठ छे :

'सन्यासी जैनेइ जिहा राजद्वारि न्याय करें छे तिहा ते आगलि कहतो हौउ '

९३ ब्राह्मण इ ९४ जैनइ इ. ९५ करे इ. ९६ जइनइ इ ९७ कहतो इ. ९८ हौउ इ. ९९ नावीनो इ व भा-२. १०० नहीं व भा-२. १ माह्री इ व भा-२ २ वार्त्ता इ व भा-२ ३ साभलो इ व भा-२, आनी पछी इ मां 'ये' अने व भा-२ मा 'जे' छे ४ दिनि रात्रि इ, दिन्रात्नि व भा-२. ५ दीठु व भा-२. ६ ते इ व भा-२. ७ नाविंणीनो व ८ आ पंक्ति व भा-२ मा आ प्रमाणे छे.

'ते सर्व पूर्ववृत्तांत तेह आगली कही, छोडावी घार भणतो हौउ."

[पृ. ७३] ९ कहीनइ इ. १० छोडवीनइ इ. ११ भणतो इ. १२ हौंउ इ. १३ पाडरि इ. १४ हत्यो इ. १५ पठइ इ, पठिट व, पठेइ भा-२. १६ तीणि इ, ते व भा-२. १७ राजलेनक व भा २; आनी पछी व भा-२ मा ' धर्म करतो ते ' एवा शब्दो छे. १८ व भा-२ मा नथी, इ मा 'जाणी-नइ सर्व वृत्तांत ' ए प्रमाणे शब्दक्रम छे. १९ जाणी व भा-२. २० आनी पछी व भा-२ मा ' मारीतो ' छे. २१ अनि इ, व भा-२ मा नथी. २२ व भा-२ मा वाक्यनो अंतभाग आ प्रमाणे छे :

' नापिगिनं कान वाटीनइ नावी घरि मोकल्यो. '

२३ पच्छ इ. २४ घरि इ. २५ म्यु.

२६ ते भणी इ, तेथी व भा-२. २७ पच्छ ह्यो. २८ हवे ह्यो. २९ शुं ह्यो. ३० करखुं ह्यो. ३१ घटइ भा-१ इ, घटेइ व भा-२. ३२ आगण इ, व भा-२ मा ' तो हवें आगण...... ' एवो शब्दक्रम छे. ३३ धनुर्धरि इ व. ३४ मुंक्यु इ, मूंक्यो व भा-२. ३५ व भा-२ मा नथी. ३६ एकनें व, एकनें भा-२. ३७ मारइ इ, मारिं व, मारे भा-२. ३८ अथवा व भा-२. ३९ नारइ इ, मारे व भा-२. ४० बुद्धिवंतनी बुद्धि व भा-२. ४१ समेत्ति इ व भा-२. ४२ राज्यनें व, राज्यने भा-२. ४३ हणइ इ, मारि व, मारे भा-२; इ मा आ श्लोकनो सळंगमा अनुवाद आ प्रमाणे छे :

' शस्त्र बाण एकनइ मारइ पुण बुद्धे करी राजा समेति राज्य हणइ. '

४४ सम्भवार्थं व भा-२. ४५ ढुकडुं इ, ढूकडुं व भा २. ४६ आव्यु इ, आवीनइ व भा-२. ४७ व भा-२ मा नथी. ४८ करइवानइ इ, करवानें व भा-२. ४९ आवतुं इ व भा-२. ५० धन इ व भा-२. ५१ राखवानें इ भा-२, राखवानें व. ५२ अनइ इ व भा-२. ५३ शमाडवानइ इ, शमाडवानिं व, शमाडवाने भा २. ५४ जे इ, व भा-२ मा नथी. ५५ करवान इ व भा-२. ५६ कीजइ इ, कीजे व भा-२. ५७ प्रमाण इ व भा-२. ५८ सर्वावरन्हे इ, सर्वावरनिं व, सर्वावरने भा-२. ५९ स्वामीथी इ, स्वामीहीं व, स्वामीहीं भा-२. ६० करइ इ व भा-२. ६१ चोन्यु इ व भा-२, चोर्यु व. ६२ छइ इ, छिइ व, छेइ भा-२. ६३ प्रधाननें इ, व भा-२ मा ' प्रधान नीं राजा विहे ' एवा शब्द छे. ६४ प्रीति व भा-२. ६५ जाणवी इ व भा-२; आनी पछी व मां ' अनिइ ' अने भा-२ मा ' अनेइ ' छे. ६६ वैयनें इ व भा-२. ६७ जाणवी इ व भा-२. ६८ अन्यथा इ व भा-२ मा नथी. ६९ स्वस्थ व भा-२, आनी पछी व भा-२ मां

'कुण एक' छे ७० होइ इ व भा-२. [पृ. ७४] ७१ मोटे इ भा-२, मोटि व. ७२ वड्डे व भा-२. ७३ ठिइ व, छेइ भा-२. ७४ ते भणी इ, ते व भा-२. ७५ सजीवन्न थकी इ, सजीवकने व भा-२. ७६ वियोग इ व, वियोग भा-२. ७७ योग्य इ व भा-२. ७८ वोल्युं व भा-२. ७९ छेइ व भा-२. ७९ जिवारे इ भा-२, जिवारि व. ८० व्यसनिइ इ, व्यसनने व भा-२. ८१ पडइ इ, पामि व, पामे भा-२. ८२ तिवारे इ भा २, तिवारि व ८३ सेवके इ भा-२, सेवकि व. ८४ शास्त्रदृष्टि इ. ८५ ते इ व भा-२ मा नथी. ८६ आनी पछी व भा-२ मां 'तेन्हुं' छे. ८७ टाल्वुं इ व भा-२. ८८ स्वामी इ व भा-२. ८९ व्यसनि इ व भा-२. ९० पड्यो इ व भा-२. ९१ ये भणी इ, जेथी व भा-२. ९२ सजीवकि इ, सजीवके व, सजीवके भा-२. ९३ वन इ व भा २ ९४ कीधो इ व भा-२ ९५ छइ इ, छिइ व, छेइ भा-२. ९६ °मध्ये व भा-२. ९७ एम्नी व भा-२. ९८ करतो इ व भा-२. ९९ पाण-हार इ व भा-२. १०० करे इ व भा-२. १ घणु इ व भा-२. २ शुं इ व भा-२. ३ कहीये इ व भा-२. ४ जूउ इ व भा-२. ५ वोल्यो इ व भा-२. ६ स्मि इ व भा-२. ७ तेन्हे इ भा-२, तेन्हि व. ८ वियोग इ. ९ पमा-डेशि इ व भा-२. १० साभलो इ, सांभलुं व, साभलु भा-२. ११ जे व भा-२. १२ चाले व भा-२. १३ सूनाने भा-१ इ, सोनाने व, सोनान भा-२. १४ सूत्रे भा-१ इ भा-२, पछी व भा-२ मा 'करी' छे. १५ कालो हतो. १६ सर्प व भा-२. १७ मारयो हतो. १८ कहतो भा-१ इ, रहे व भा-२. १९ ठिइ व, छेइ भा-२.

[५. वायसदंपती अने कालो साप]

१ ठामि व भा-२ २ मोटो हतो, इ मा आ वार्तानो पूर्वार्ध संक्षेपमा आ प्रमाणे छे :

'एक ठामि मोटो वडनो वृक्ष, तिहा कागकागिणि रहि. कापराडिमांहियी सर्प नीकली नान्हा कागला सघा खाइ पछइ ते बालक पाखी देखी कागकागिणि दुखी हौआ, विमासि अनेयि जईइ पण घणा दिननो आश्रयो तेन्हे छाडी न शकइ.

३ तिहा इ व भा-२ ४ वहि व, विटे भा-२ ५ रहे इ भा-२, रहि व. ६ इ व भा-२ मा नथी ७ तेन्हा इ, तेन्हा व भा-२. ८ मालेथ्या इ, मालेथा व भा-२ ९ नान्हा इ भा-२, नान्हा व. १० कागनानि व, कागलान भा-२.

११ वटमी व भा-२. १२ घोसाडिमाहिंथी इ व भा-२. १३ नीकलिनेइ व, नींसर्लनेइ भा-२. १४ सरा इ व भा-२. १५ पछेद; इ मां 'पटइ ते काग ते वालर मांं पाशा केवीनई दुपी हीड' ए प्रमाणे पाठ छे. १६ काग व भा-२. १७ व भा-२ मा नथी. १८ देरी व भा-२; आनी पछी व भा-२ मा 'अनि' छे. १९ श्यु व भा-२. २० अनेइ व भा-२. २१ वहु व भा-२. २२ कालनु व भा-२. २३ जे व भा-२. २४ तेन्हे इ भा-२, तेन्हि व. २५ सके व भा-२. २६ छट व भा-२. [पृ. ७५] २७ वापुरप व भा-२, आनी पछी व भा-२ मा 'अनइ' छे. २८ व भा-२ मा नथी. २९ व भा-२ मा नथी. ३० आपणो इ व भा-२. ३१ ठाम इ व भा-२. ३२ छांडि इ व भा-२. ३३ हाथी इ व भा-२; आनी पछी व भा-२ मा 'ए अपमानथी ठाम छाडी जाइ' एवो पाठ छे. ३४ आनी पछी व भा-२ मा 'कागडी' छे. ३५ लागीने व भा-२. ३६ रुणा इ व भा-२. ३७ ईणे इ भा-२, ईणि व. ३८ दुष्ट इ व भा-२. ३९ तेथी व भा-२. ४० अनेरे व भा-२. ४१ वृक्षे व, वृक्ष भा-२. ४२ जेयि व. ४३ योयु इ व भा-२. ४४ समान भा-२. ४५ नहीं हुयो. ४६ आनी पछी व मा 'वो' छे. ४७ नहीं हुयो. ४८ समान भा-२. ४९ नहीं हुयो. ५० समान भा-२. ५१ नहीं हुयो. ५२ येहु भा-१, येन्हुं इ, जेन्ह व, जन्हु भा-२. ५३ काठे हुयो. ५४ जेन्ही व भा-२. ५५ परपुस्परत व भा-२. ५६ येन्हे इ, जेन्हि व, जेन्हे भा-२; आ चरणनो अनुवाद व भा-२ मा आ प्रमाणे छे :

'जेन्हि [जेन्हे] ग्रह मध्ये सर्पनो वास'

५७ सर्प इ. ५८ तेन्हि व, तेन्हे भा-२. ५९ नहीं इ व. ६० थयो भा-१ इ, °थो व भा-२. ६१ एणि भा-१, ईणे इ, ईणि व, ईणे भा-२. ६२ रहना इ व भा-२; भा-१ मा 'आपणनइ रहिता' एवो शब्दक्रम छे ६३ आपणने इ भा-२, आपणनि व. ६४ घणूं भा-१, घणुं इ व भा-२. ६५ थयूं भा-१, हौउं व भा-२. ६६ ते माटि भा-१, तिं भणि व; पछी व भा-२ मां 'सामल्या नथी सकता' एवो पाठ छे. ६७ पशली इ, पसली व भा-२. ६८ एतले इ, एतलें व भा-२. ६९ जीविउ व भा-२. ७० टिननुं इ व भा-२. ७१ छंडाइ व भा-२. ७२ आ पंक्ति व भा-२ मा आ प्रमाणे छे :

'पण सर्पनो हुं वध करीश.'

७३ मोटुं इ भा-२, मोटो व. ७४ आनी पछी व भा-२ मां 'ए कन्हे छेद'

एवो शब्दक्रम छे. ७५ आनी पहेलां व भा-२ मा 'तुं' छे. ७६ बोल्यो इ व भा-२. ७७ जोहें इ, जोहे व भा-२. [पृ. ७६] ७८ मे इ भा-२; आनी पछी इ मा 'नही ए सर्प मराय' एवो पाठ छे. व भा-२ मा 'ए सर्प नही मराइ' एवो शब्दक्रम छे. ७९ तोहे इ व भा-२. ८० न्यायशास्त्रन्हे व भा-२. ८१ छइ इ, छि व, छे भा-२. ८२ तेहने इ, तेन्हि व, तेन्हे भा-२. ८३ एन्हें इ, एन्हो व भा-२. ८४ मारवानो व भा-२. ८५ थोडि व, थोडे भा-२. ८६ करीशि व, कराशि भा-२. ८७ बोलीनइ इ, बोली व भा-२. ८८ अनेरे व, अनेरे भा-२. ८९ ग्रशि इ. ९० थ्यो इ व भा-२. ९१ ति भा-२. ९२ तले इ व भा-२. ९३ रहतो व भा-२. ९४ व भा-२ मां नथी. ९५ तेन्हो व भा-२; ९६ तेन्हि व. ९७ बोलावीनि व, बोलावीनइ भा-२. ९८ निर्वेवु इ, कर्युं व भा-२. ९९ अने व भा-२. १०० करतो इ व भा-२. १ होउ इ व भा-२. २ आनी पछी व भा-२ मा 'तां ए' छे. ३ मय व भा-२. ४ मं इ. ५ करश्यु इ, करशो व भा-२. ६ आपणो इ व भा-२. ७ मोटो इ व भा-२. ८ वैरी इ, शत्रु व भा-२. ९ छेइ व भा-२ १० तीणि इ; व भा-२ मा आ पंक्ति आ प्रमाणे छे :

'अनिश [अनेके] वाल तीणि [तीणे] मारथा [मारया]'

११ भा-१ मा वार्तानो आ भाग संक्षपमां नीचे प्रमाणे छे :

'ते वागनि सीयाल मित्र, ते आगलि सर्व वात कही अनि कह्युं, "मित्र एन्हि सर्पनि मारि." सीयाल बोल्यू, ए दुक्ख न करवु, ए पापि एंहि पापि नाश पामशे."

१२ मे इ व भा-२. १३ व भा-२ मा नथी १४ अनुभव्युं इ, अनुभव्यो व भा-२. १५ छि व भा-२ १६ करवुं इ व भा-२ १७ एन्हे इ भा-२, एन्हि व; पछी व भा-२ मा 'ज' छे. १८ पापे इ व भा-२ १९ पामशि व, पामशि भा-२. २० बोल्युं इ व भा-२. २१ छइ व भा-२ २२ व भा-२ मा नथी. २३ ऊपरि भा-१ व भा-२ २४ चीनवीये ह्यो. २५ तेन्हे भा-१ इ भा-२, तेन्हि व. २६ पापे भा १ इ भा-२, पापि व. २७ परे भा-१ इ, परि व भा २; आनी पछी व भा २ मा 'जाशि' क्रियापद छे. २८ पडें भा-१ इ. २९ 'श्रूयते च' व भा-२ मा नथी. ३० साभलीये भा-१ व भा-२. ३१ छि व, छे व भा-२. ३२ मत्स्यन व भा-२. ३३ आनी पछी व भा-२ मां आ

प्रमाणे अनुवाद छे :

'नहि चडाई [चडाई] पातो [पावो] देवी गले गाही मारयो.'

३४ वर्धमाने भा-१. ३५ तेतले भा-१ इ. ३६ योत्यौ भा-१ व, बोले भा-२. ३७ शीआल व भा-२. ३८ चढतो हयो.

[६. बगलो अने करचलो]

१ एकि व, एकें भा-२. २ तलावनेइ व भा-२. ३ काठे व भा-२. ४ वग व भा-२. ५ रहइ भा-१, रहि व, रहे भा-२; इ मा आ वार्त्ता संक्षेपमा आ प्रमाणे छे :

'एक ठामि तलावनइ काठि वग रहइ; माहि घणी जातिना मत्स्य ए विस्तार-कथा जाणवी जाव. कुलीर ति छेडे शाल इक्टो गयो. निहारि कुलीरे कहु, "मामा सरोवर मोटू ते किहा ?" कन्ही शिला ऊपरि हाड मत्स्यनो ढग देखाड्यो, कहूं, "आ ते."

कुलीर चींतवतो हौउ, "येनलाएक विचक्षण आपणुं काज साधवाने शत्रु ते मित्र थाइ, मित्र ते शत्रु थाइ.

भला शत्रुसु मेल न करवो, मेल कींधा पछी नाश पमाडइ जिम उन्हु पाणी वैश्वानरने शमाडइ.

ते भणी ढगे जाणीइ छइ सही सघला मत्स्य पाधा हाड एवडा दीसइ छइ. ते भणी माह्रो इ काल आव्यो." कुलीरि बोटि करडी मारयो.

६ ति व. ७ माटि व, माटे भा-२. ८ माछलाने इ, व भा-२ मा नथी. ९ मुखि भा-२. १० पाराने व भा-२. ११ चीनवीतो होउ व, चींतवतो हौउ भा-२. १२ व भा-२ मां नथी, पछी व मां 'पछिइ तिहा' अने भा-२ मा 'पछेइ तिहा' छे. १३ समीप व, समीपे भा-२. १४ आवे व भा-२. १५ जि व, जो भा-२ १६ तेन्हि व. १७ पाइ व भा-२; आनी पछी व भा-२ मा 'अने' छे. १८ बेठो व. १९ रहि व २० तिहां व भा-२. २१ सर्वे व भा-२. २२ व भा-२ मां नथी. २३ नामे इ, नामि व, नामें भा-२. २४ रहि व, रहे भा-२. [पृ. ७७] २५ जेनइ इ, जे व भा-२. २६ व भा-२ मां नथी. २७ पहिलों व भा-२. २८ माछलां व भा-२. २९ भक्ष व

भा-२. ३० हवे व, हवें भा-२; आनी पछी व भा-२ मां 'नथी भक्षता तेमे ?' एवो पाठ छे. ३१ बोरयो इ व भा-२. ३२ लगे व भा-२. ३३ तम्हनें व भा-२. ३४ मुख्य प्रतमांथी पडी गयेलो आ पाठ इ मांथी लीधो छे. ३५ मुयें व भा-२. ३६ रहता व भा-२. ३७ पछी व भा २. ३८ तम्हने इ, तम्हनि व, तम्हनें भा-२. ३९ देषुं इ व भा-२. ४० छउं इ, छु व भा-२. ४१ तीणें व भा-२. ४२ मूंन्हे इ, मुन्हि व, मुन्हे भा-२. ४३ गरटपर्णे व भा-२. ४४ भाजशि व, भाजशे भा-२. ४५ जन्हि व, जन्हे भा-२. ४६ छें व भा-२. ४७ व भा-२ मा नथी. ४८ 'पातो नथी' एवो शब्दक्रम छे. ४९ अम्हनि व. ५० शुं इ व भा २. ५१ छि व, छेइ भा-२. ५२ बोल्यु इ. ५३ मिं व. ५४ ईहा इ, ईहा व. ईहां भा-२ ५५ तलावनिइ व, तलावनेइ भा-२. ५६ कांठइ इ, काठे व भा-२. ५७ मत्स्यघाती व भा-२. ५८ नावडा इ व भा-२. ५९ माभल्या इ भा-२, साभल्या व. ६० व भा-२ मा नथी. ६१ तलावनिइ व. ६२ माछलं इ. ६३ छि व छे भा-२. .६४ व भा-२ मा आ पंक्ति आ प्रमाणे छे :

'ते विहाणि [विहाणे] परभि [परमे] जाल घाती समस्त माछला मारशुं [मारस्युं].'

६५ माछला इ. ६६ मारशु इ. ६७ तेथी व भा-२. ६८ एहुं इ, एहुं व भा-२. ६८ सामलीनि व, साभलीने भा-२. ६९ विशेषे इ; व भा-२ मां आ प्रमाणे शब्दक्रम छे :

'तम्हनि [तम्हने] विशेषि [विशेषे] कहुं छुं [छु]

७० नही इ व. ७१ रहइ इ, रहि व, रहे भा-२. ७२ तेथी व भा-२; आनी पछीनो मुख्य प्रतनो 'तम्हनें कहुं छउ जे' ए पाठ व भा-२ मा नथी. ७३ समीपि इ, कन्हि व, कन्हे भा-२. ७४ मोटो द्रह व भा-२. ७५ छे व भा-२. ७६ तिहा व भा-२. ७७ जैये इ व, जैये भा-२. ७८ हुं इ व भा-२. ७९ दु:खित व भा-२. ८० व भा-२ मा नथी ८१ हुंइ इ व भा-२. ८२ गरटपण इ व भा-२. ८३ माटे व भा-२. ८४ पछि व, पछे भा-२. ८५ दुष्टनु व, दुष्टनुं भा-२. ८६ व भा-२ मा नथी. ८७ साभली व भा-२. ८८ बीहीता इ. ८९ यत्ना व भा-२. ९० वगनि व, वगने भा-२ ९१ कहता व भा-२. ९२ व भा-२ मा 'मामा [मामा] वग' एवो शब्दक्रम छे. ९३ छि व, छे भा-२. ९४ अम्हनि व, अम्हनें भा-२. ९५ कहे व भा-२. ९६ अने व

भा-२ १७ गरतो इ व भा २ १८ आनी पछी व भा २ मां 'पछे' छे १९ वोच्यो " व भा-२ १०० व भा-२ मां 'जे हु पन्नी अन ते मनुष्य' ए प्रमाणे पंक्तिनी शरुआत छे १ तेनु व भा २ २ मूंहि व, मून्हें भा २ ३ छि व, छे भा-२ ४ व भा-२ मां नथी ५ थीना इ व भा २ ६ तलाव व भा २, आनी पछी इ भा '°माहि' अने व भा २ मां 'मध्य' छे ७ लेई व ८ जातां इ, जाइ व भा-२ ९ व भा २ मां आ पंक्ति आ प्रमाणे छे•

'ते तलाव मोटुं, जल घणु, कमले भर्युं'

१० तिहां इ व भा २ ११ तम्हन इ व भा २ १२ लेई व १३ जाउ इ, जाउं व भा-२. १४ पठि व, पठ भा २ १५ वगगने इ, बगल व भा २ १६ वचने इ, व भा २ मां नथी १७ माथाथी व भा २ १८ चालता व भा २ १९ मांमा व भा २ २० आनी पछी भा २ मां 'वग' शब्द छे २१ पहिलु इ, पहेलू व भा २ २२ मुन्हे इ, मूंहि व, मून्ह भा २ २३ लेईं इ व भा २ २४ आनी पछी इ भा 'एव कहि पहिलु मुन्हे लेई जा' ए पंक्ति छे व भा २ मां पण आ पंक्ति नीचे प्रमाणे छे

'एव कहि [कहे] पैलहु मुन्हि [मुन्हे] लेइ जा'

२५ मोटो इ व भा २ २६ तारा इ व भा २ २७ उपगार भा २ २८ हशि इ, हासि व भा २ २९ छि व, छे भा २ [पृ ७८] ३० अभिमान भा २ ३१ आपणु व भा २ ३२ जीवितमपि व भा २, जीवन इ ३३ मुख्य पाठनी प्रतमांथी पडी गयेला आ शब्द ट मांथी लीधा छे ३४ गर्व व भा २ ३५ विप्र इ व भा २ ३६ मुख्य ।नी प्रतमांथी पडी गयला अक्षर इ व भा २ मां मळे छे ३७ गणि व, गण भा २ ३८ मित्रने व भा २ ३९ पठे व भा २ ४० व भा २ मां 'हसनि [हसीने] अनर्गल' एवो शब्दक्रम छे ४१ चींतवता व, चींतवता भा २ ४२ हींड व भा २ ४३ भला इ व ४४ कीर्धा इ भा २ ४५ छि व, छे इ भा २ ४६ सुर्ये व भा २ ४७ पाईसे व भा २ ४८ चींतवी भा २ ४९ व भा २ मां नथी ५० °माहिथी व भा २ ५१ भगे व भा २ ५२ मत्स्य व भा २ ५३ एक एक व भा २ ५४ लेइ व ५५ व भा २ मा नथी ५६ ऊपरि इ व भा २ ५७ नांखी व भा २ ५८ पाता इ व भा २ ५९ चाच व, भा २ मां पछी 'करी' छे ६० लेइ इ ६१ 'जाइ अनइ' व भा २ मां नथी ६२ न इ, नि व, न भा-२ ६३ संदेशो इ व भा २ ६४ कहे इ व भा २ ६५ सुपनो इ व भा २.

६६ छे व भा-२. ६७ दणी ट व. ६८ परें व भा-२. ६९ चीटीतो इ व भा-२. ७० व भा-२ मा नथी. ७१ घणुं घणुं व भा-२. ७२ अहो मामा व भा-२. ७३ मूल्हे ट, मुन्हि व, मुन्हे भा-२. ७४ मरतो इ व भा-२. ७५ चीतवतो इ व भा-२. ७६ थाई इ व भा-२. ७७ छुं व भा-२. ७८ ऐह भा-२. ७९ माउलु इ, माउलो व भा-२. ८० छेईं व. ८१ एन्ह इ, एन्हि व, एन्हें भा-२. ८२ आम्वादिशि व भा-२. ८३ चीतवीनि व, चीतवीने भा-२. ८४ कुलीरस्नं ट व, कुलीरस्नें भा-२. ८५ लेईनइ इ, लेईं व भा-२. ८६ पछे व भा-२. ८७ मघला ८८ मूकीनें व भा-२. ८९ जे व भा-२. ९० ऊन्ही व भा-२. ९१ जेतले व, जेतलें भा-२. ९२ ऊतारे व भा-२. ९३ वेतलि इ व भा-२. ९४ होउ इ, हौउ भा-२. ९५ मामा व, मामा भा-२. ९६ मोटु इ, मोटुं व भा-२. ९७ पछे व भा-२. ९८ हशी इ, हसीनि व, हसीने भा-२. ९९ बोल्यु इ, वोल्यो व भा-२. १०० देखे इ, देख व, देखीं भा-२. १ छइ इ, छि व, छे भा-२; पछी व भा-२ मां 'तुं' छे. २ उन्ही इ, ऊन्ही व, उन्हीं भा-२. ३ सघला व भा-२. ४ माउला व भा-२. ५ हौआ व भा-२. ६ दहा इ. ७ तुहइ इ, तुहि व, तून्हे भा-२. ८ थापरिश इ व भा-२. ९ पछि व, पछे भा-२. १० कुलीरक व भा-२. ११ हेठु इ. हेठु व भा-२. १२ 'शल उपरि' व भा-२ मा नथी. १३ हाडनो इ, हाडनो भा-२; आनी पछी भा-२ मा 'वटकानो' शब्द छे. १४ टगलो इ व भा-२, आनी पछी भा-२ मां 'देखे' छे. १५ मोटो ट, व भा-२ मा नथी. १६ चींतवतो व भा-२. १७ होउ व. १८ आपणुं व भा-२. १९ कार्य व भा-२. २० थाद इ व, थाई भा-२. २१ मुख्य प्रतमाथी पडी गयेलो अनुवाद इ माथी लीधो छे. २२ थाइ व, थाई भा-२. [पृ. ७९] २३ शुं व भा-२. २४ करवो इ भा-२, करवौ व. २५ कीधा इ व भा-२. २६ पमाडइ इ, पमाडि व, पमाडे भा-२. २७ उन्हूं इ, ऊन्हुं व, ऊन्हुं भा-२ २८ शमाडे व भा-२. २९ तेथी व भा-२. ३० ट्णे इ, ईणें व भा-२ ३१ व भा-२ मा नथी ३२ जं मणीं व भा-२. ३३ दीशइ इ, दीसे व भा-२. ३४ छि व, छे भा-२ ३५ ए व भा-२. ३६ चीतवीये इ व, चींतवीये भा-२. ३७ मोटा इ. ३८ गर्वनें इ, गर्व व भा-२. ३९ पाम्या पछी व भा-२. ४० आ चरणनो अनुवाद व भा-२ मा आ प्रमाणे छे :

'ए कार्य कीजेइ [कीजेई] अथवा न कीजे एहु [एहुं] न जाणे.'

४१ वरीनें व भा-२. ४२ व भा-२ मां नथी. ४३ कार्जे इ, कार्य व भा-२. ४४ चोथो इ व भा-२. ४५ केतलि व, केतले भा-२. ४६ छे व भा-२. ४७ हुं इ व भा-२. ४८ *माहीं इ, माहिं व, माहें भा-२.* ४९ भारि व, भारें भा-२. ५० थाको इ व भा-२. ५१ हैंसि व भा-२. ५२ व भा-२ मां नथी; पछीनी पंक्ति व भा-२ मां 'पउट' थी शरु थाय छे. ५३ चींतवतो इ, चींतवतो व भा-२. ५४ चेगले व भा-२. ५५ आव्यो छेइ व भा-२; आनी पछीनी पंक्ति व भा-२ मा आ प्रमाणे छे :

'हवे मूं देखतां किम जाएशि [जाशि] ?'

५६ जाशि इ. ५७ एहुं इ व भा-२. ५८ चीतवी व भा-२. ५९ होइ इ. ६० रिहा व भा-२. ६१ छिद्र व छिद्रं भा-२. ६२ शिला व भा-२. ६३ ऊारि व भा-२. ६४ व भा-२ मां नथी. ६५ करेशि इ व भा-२. ६६ बगि व भा-२. ६७ पछीं व भा-२. ६८ कुलीरके व भा-२. ६९ वरहीनें व भा-२. ७० मारीनें व भा-२; आनी पछी व भा-२ मा आ पंक्तिनो उत्तरार्ध आ प्रमाणे छे :

'बगनूं गल्ह साही हल्ह हल्ह आपणा तलाव भणी आव्यो.'

७१ पछिइ व, पछेइ भा-२. ७२ मुख्य प्रतमाथी पडी गयेलो आ शब्द इ व भा-२ मां छे. ७३ कुलीरक व भा-२. ७४ काइ, काइं व भा-२. ७५ आव्यो व भा-२. ७६ शू. भा-२; आनी पछी व मां 'तुन्हि' अने भा-२ मा 'तुम्हे' छे ७७ *अपशकुन इ व भा-२.* ७८ *व भा-२ मां वाक्यनी शरुआत* 'अने' थी थाय छे ७९ सुं व भा-२. ८० तीणि व भा-२. ८१ व भा-२ मां 'कुलीरक हास्य करीनें' एवो शब्दक्रम छे. ८२ 'अहो सर्व माछला मूर्ख' ए रीते व भा-२ मां वाक्य शरु थाय छे ८३ *बगे व भा-२.* ८४ *वाहीनें* व भा-२. ८५ एक शिला व भा-२. ८६ व भा-२ मा नथी. ८७ सर्व व भा-२. ८८ बुद्धे व भा-२. ८९ उगर्यो इ व भा-२. ९० तेन्हुं भा-२, व मां आ पंक्ति नथी. ९१ जाणीनें भा-२. ९२ से इ भा-२. ९३ तेहनी भा-२. ९४ छे भा-२. ९५ हवें इ भा-२, हवे व. ९६ होशि व भा-२.

९७ मादे व भा-२. ९८ कहूं व भा-२. ९९ छेद व भा-२. १०० बोल्यो व भा-२. १ शीयाल इ, शियाल व भा-२. २ सर्प इ व भा-२. ३ मारीशि इ व, मारीनें भा-२. ४ *शियाल व भा-२.* [पृ. ८०] ५ व भा-२ मां 'एक को' पाठ छे ६ राजानें व भा-२. ७ ऊंबट भा-२. ८ चाचे

इ भा-२. ९ धरीनि व, धरीने भा-२. १० रिहइ इ, रहि व, रहे भा-२. ११ ठि व, छे भा-२. १२ निद्रा व भा-२. १३ °माहि इ व, महि भा-२. १४ मूंकि व भा-२. १५ सर्पनें व भा-२. १६ मुपि व, मृपि भा-२. १७ मारें व भा-२. १८ पूठि व, पूठिं भा-२. १९ एहुं व भा-२. २० साभलीने व भा-२. २१ उच्चा व. २२ जो एक व भा-२. २३ राजानी भा-२. २४ व भा-२ मा नथी. २५ जै इ, जैने व, जैनेइ भा-२. २६ बैठी इ, बिठी व भा-२. २७ स्त्री इ व भा-२. २८ 'सघली' व भा-२ मा नथी; तेनी पछीनुं 'तिहा' इ व भा-२ मा नथी. २९ मुझीनइ इ, मूंकीने व, मूंकीने भा-२. ३० नाह्वा व, नाहा भा-२. ३१ °माहि इ व भा-२. ३२ पेठी इ, पैठी व भा-२. ३३ तेतले इ, तेतलं भा-२. ३४ इ व भा-२ मा नथी. ३५ सोनानो इ; व भा-२ मा 'तिहाथी सोनानो हार.....' एवो शब्दक्रम छे. ३६ लेइ इ, लेइनि व, लेइने भा-२. ३७ होई इ व, होंई भा-२. ३८ पछेइ व भा-२. ३९ राजमित्रक व. ४० लेइ व, लेई भा-२. ४१ लेई इ, व भा-२ मा नथी. ४२ सर्पनइ व भा-२. ४३ टामि इ व भा-२. ४४ होइ व. ४५ पछि व, पछे भा-२. ४६ थै इ व भा-२. ४७ जे व भा-२. ४८ राजाने व भा-२. ४९ तिहा व. ५० माहि व. ५१ जणु व. ५२ व भा-२ मा 'ऊपरि वृक्षि चढ्यो' एवो वाक्यनो उत्तरार्ध छे. ५३ कागने व भा-२. ५४ माले व भा-२. ५५ कालो इ व भा-२. ५६ देखे व भा-२ ५७ सर्प व भा-२. ५८ लाकडीये इ, लाकडीयें व भा-२. ५९ मारी व भा-२ ६० व भा-२ मा नथी. ६१ ऊतारयो व भा-२. ६२ सघाते इ. ६३ रह्यां इ; व भा-२ मा आ पंक्ति आ प्रमाणे छे :

'पछेइ ते कागडी वेर साधीने काग विहि [विंहि] तिहा सुखे बालक लेइ [लेई] रह्या.'

६४ ति व. ६५ माटइ इ, माटि व. ६६ कहुं इ, कहु व भा-२. ६७ छु इ, छुं व भा-२. ६८ पुरपिं व, पुरषे भा-२ ६९ इ व भा-२ मा नथी. ७० मुक्यो इ, मुंक्यो व भा-२. ७१ व भा-२ मा नथी. ७२ करटकनि व. ७३ कहतो हुओ. [पृ. ८१] ७४ जेहन भा-१, जेहने इ, जेहनि व, जेहनेइ भा-२. ७५ तेहने ज भा-१, तेहने ज इ, तेहने व भा-२. ७६ पाखे भा-१ इ, विना व भा-२. ७७ पुरुपन भा-१, पुरुपने इ, व भा-२ मा नथी. ७८ शशो भा-१ इ, ससे व भा-२. ७९ मारो भा-२. ८० कहतो व भा-२.

[७. सिंह अने ससलो]

१ नामे व, नामे भा-२. २ व भा-२ मां नथी. ३ रहे व भा-२. ४ जेतला व भा-२. ५ °माहि व भा-१, माहिँ व, माहेँ भा-२. ६ भा-२ मां 'रहे जीव' एवो पाठ छे; 'देग्रह' व मां नथी. ७ तेतला भा-१ ड, तेतलोनि व, तेतलानें भा-२. ८ मारे व भा-२. ९ व भा-२ मां 'पछे वनना सघस्त जीव मिलीने' ए प्रमाणे पंक्ति शरू थाय छे. १० थें ड, था व भा-२. ११ सुखे व भा-२. १२ लेईनें व, लेईनें भा-२. १३ व भा-२ मा नथी. १४ सिंहने इ; व भा-२ मां वाक्यनो उत्तरार्ध आ प्रमाणे छे :

'ते वीननी वरवानि [वरवाने] वन्हि [वन्हे] ग्या.'

१५ व भा-२ मां 'ते युक्त नही' ए शब्दोथी वाक्य पूरुं थाय छे, आनी पछीनी पंक्ति व भा-२ मां नथी. १६ एहुं ड. १७ वरस्यु भा-१, वरछु इ. १८ व भा-२ मा नथी. १९ परलोक व भा-२. २० बोलु व भा-१ व भा-२. २१ ठिइ व, छेइ भा-२. २२ जन्मने व भा-२. २३ तेह्वा भा-१ इ, तेह्वा व भा-२. २४ वरड भा-१. २५ छई भा-१. २६ भोगवीइ व भा-२. २७ जीर्णे भा-१ व भा-२. २८ जीर्णे ह्यो. २९ पाइउं व भा-२. ३० होइ व भा-२. ३१ जीर्णे ह्यो, आनी पछी व भा-२ मां 'कर्म' छे. ३२ जैये ह्यो. ३३ आनी पछी व भा-२ मां 'कर्म' छे. ३४ काई इ, काइ व भा-२. ३५ करें व भा-२. ३६ तेथी व भा-२. ३७ जाणीने व भा-२. ३८ फेडवा भा-१ ड, नाश करवा व भा-२. ३९ अनेइ व भा-२. ४० आहाराने व, आहारने भा-२. ४१ लगो व भा-२. ४२ व भा-२ मा नथी. ४३ 'दिहाडी मोकलशुं' एवो शब्दक्रम व भा-२ मा छे. ४४ चालशे व भा-२. ४५ अनेइ व भा-२. ४६ अम्हारा व भा-२. ४७ जीवनो व भा-२. ४८ छिइ व. [पृ ८२] ४९ पठिइ व, पछेइ भा-२. ५० राजधर्म इ. ५१ जाणीनइ व भा-२. ५२ चीतवतो व भा-२. ५३ आ पंक्ति व भा-२ मा नथी. ५४ आनी पछी इ मा 'माह्री' छे. ५५ एहुं इ. ५६ चीनवी इ; आ पंक्तिनो पाठ व भा-२ मा 'पछे बोल्यो' ए प्रमाणे छे ५७ 'अहो मृगो विहाणे सुमुहूर्त्त छेइ' ए प्रमाणे व भा-२ मा आ पंक्ति शरू थाय छे. ५८ विहाणे इ, विहाणुं व भा-२. ५९ हीडो व भा-२. ६० पठइ इ भा-२, पठिइ व. ६१ आनी पछी व भा-२ मा 'इर्ष्या यिका' एवा शब्द छे. ६२ आपणे व भा-२. ६३ ग्या व

भा-२. ६४ लागो इ, लागो व भा-२ ६५ अनेको व भा-२. ६६ 'मोक्लता हौआ सिहने आशाने अधि' ए प्रमाणे व भा-२ मां पंक्तिनो उत्तरार्ध छे. ६७ पछे व भा-२. ६८ केनले द व भा-२. ६९ काले ट व भा-२. ७० जाते इ, जाति व भा-२; आनी पछी व भा-२ मा 'मध्य' छे. ७१ सरानो व भा-२. ७२ सघले ड व भा-२. ७३ मसो व भा-२. ७४ चीतवतो इ व, चीतवतो भा-२. ७५ हो इ. ७६ मुन्हे इ, मुंन्हि व, मुन्हे भा-२. ७७ घटि व, घटे भा-२. ७८ बुद्धिमंतने इ, बुद्धिवंतनि व, बुद्धिवंतनें भा-२. ७९ काँई काई व भा-२. ८० नहीं व भा-२. ८१ बुद्धि व भा-२. ८२ साधीये इ व भा-२. ८३ बोलड व भा-२. ८४ तेन्हि व. ८५ आनी पछी 'एर' छे. ८६ उद्यमीशु इ, उद्यमीनें व भा-२. ८७ पामिं इ, पामे व भा-२. ८८ पछिइ व, पछेइ भा-२; आनी पछी व भा-२ मा 'ते समो' छे. ८९ आनी पछी व भा-२ मा 'जातो हौउ' छे. ९० जातो इ. ९१ बूड द व भा-२; आनी पछी व भा-२ मा 'एक' छे. ९२ देवतो इ, व भा-२ मा 'दीठो' छे. ९३ हौउ इ. ९४ आ पंक्ति व भा-२ मा आ प्रमाणे छे

'ते माहि जोइ तो आपणपानी छाया देवतो हौउ.'

९५ रह्या द. ९६ तो ड. ९७ देषतो ड. ९८ होउ इ. ९९ पछिइ व, पछेइ भा-२. १०० ससो व भा-२. १ व भा-२ मा नथी. २ चींतवतो व भा-२. ३ मलो व भा-२. ४ छिइ व, छेइ भा-२, आ क्रियापद व भा-२मा पंक्तिनो अंते छे. ५ बुद्धि व भा-२. ६ एन्हि इ, व भा-२ मा नथी. ७ बूयि इ, बूड व भा-२. ८ नापुं इ, नापृ व, नापृं भा-२. ९ एहुं इ व भा-२. १० चीतवीनइ इ, चीतवी व भा-२. ११ गाली व भा-२ १२ असुरधो इ, असुरयु व भा-२. १३ कन्हि व, कन्हे भा-२ १४ ग्युं व, ग्यु भा-२. १५ तो इ व भा-२. १६ भुग्यो व भा-२ १७ पाम्यो व भा-२. १८ चाटतो इ व भा-२. १९ पाशी इ, पासा विहि व भा-२. २० बेठा ड, बेठा व भा-२. २१ आनी पछी व भा-२ मा 'क्रोधें' अने भा-२ मा 'क्रोधे' छे. २२ मारवाने व भा-२. २३ एहुं द, एहो व भा-२. २४ चीतवतो हौउ व भा-२; पछी इ मां 'ये' छे, व भा-२ मा 'जे' छे २५ विणाणे इ, व्याहाणे व भा २; व भा-२ मा पंक्तिनो उत्तरार्ध आ प्रमाणे छे :

'सर्व जीवनो सहार करुं.'

२६ मारेसि इ. २७ एहुं इ, एहेइ व भा-२. २८ 'हुं इन्द्र दासो जै

रह्यो' एवो व भा-२ नो पाठ छे. २९ ऊभो रह्यो व भा-२. ३० व भा-२ मां पंक्तिनी शरुआतमां 'ते देनी' छे. ३१ आ पंक्ति व भा-२ मा आ प्रमाणे छे :

अहो प्रमादी दुष्ट शशा में कोप्यो पछी हुं मारवो अनइ ईम्हे मारवो, तुं वहइ असूर वेला करी था आव्यो ?'

३२ ते ट. ३३ नोल्ह ट. ३४ अनेइ व भा-२. ३५ तेन्हो व भा-२. ३६ आनी पछी व मा 'तें' अने भा-२ मा 'ते' छे ३७ थाइ व भा-२. ३८ कीधो ड व भा-२. ३९ मुख्य प्रतमांथी पडी गयेली अहींथी शरु थती बे पंक्तिओ ड माथी लीधी छे. ४० ससो व भा-२. ४१ बीन्हो व भा-२, [पृ. ८३] ४२ व भा-२ मां 'दश दिशि जोतो हौउ, बोल्यो' एवो पंक्तिनो उत्तरार्ध छे. ४३ मुं व भा-२. ४४ व भा-२ मा पछी 'सेवक' छे ४५ ऊपरि व भा-२. ४६ करो व भा-२. ४७ आ पंक्ति व भा-२ मां आ प्रमाणे छे :

'वेला मि [मैं] नथी गाळी, असूर नथी मि [मैं] कीधुं; अनेरे जीवे नथी कीधूं.'

४८ पछिइ ड, पछेइ व भा-२. ४९ होउ ट, हौउ व भा-२. ५० वृर्णे व भा-२. ५१ कीधूं व भा-२. ५२ शशु ड, ससो व भा-२. ५३ अहीं शरू थती बे पंक्ति व भा-२ मां आ प्रमाणे छे :

'स्वामिन् एक सिंह बीजो मार्ग रुंधी रह्यो छेइ अनेइ तीणे [तीणें] हूं बीहाव्यो मिं [मैं] आवना [आवता] फेरि [फेरे] आव्यो तेथीं [तेथी] असूर थ्युं.'

५४ हुं ड. ५५ थ्यो ड. ५६ शशानुं ड, ससानुं व भा-२. ५७ सांभलीने वभा-२. ५८ कोप्योथो व भा-२. ५९ बोलतो होउ व भा-२. ६० शु ड, अरे शु व भा-२. ६१ व भा-२ मा नथी. ६२ छेइ व भा-२. ६३ ससो व भा-२. ६४ पच्छिइ व, पच्छेइ भा-२. ६५ चींतवतो व भा-२. ६६ शशु ड, ससो व भा-२. ६७ मारवाथी व भा-२. ६८ हुसे व भा-२. ६९ एन्हि व, एन्हे भा-२. ७० सिंहनि व, सिन्ने भा-२. ७१ पछेइ व भा-२. ७२ मुं ड भा-२, मु व. ७३ आनी पछी व भा-२ मा 'बापडो' छे. ७४ जाशि ड व भा-२. ७५ एहुं ड भा-२, एहवं व. ७६ चीतवीनेइ व, चीतवीनइ भा-२. ७७ समानं व भा-२. ७८ ति व. ७९ स्थानक ड व भा-२. ८० व भा-२ मां नथी. ८१ माड्यो व भा-२. ८२ वैरी ड व भा-२. ८३ छिद व भा-२. ८४ सगो भा-२. ८५ हसी व भा-२. ८६ व भा-२ मां नथी. ८७ आगणे व भा-२. ८८ अधि व भा-२. ८९ व भा-२ मां नथी. ९० सिंहनि

व. ९१ जलनो इ व भा-२ ९२ मूड इ व भा-२. ९३ 'देखाडतो हौउ' क्रियापद व भा-२ मा छे. ९४ बोलतो ट. ९५ होउ ट. ९६ इंहा इ व, ईहा भा-२· पंक्तिनी शरुआतमा व भा-२ मा 'अहो' छे. ९७ छेइ व भा-२. ९८ कूआ० ९९ जोतो इ व भा-२. १०० होउ इ. १ तो इ व भा-२. २ व भा-२ मा नथी. ३ व मा 'आपणि प्रतिबिंब' अने भा-२ मां 'आपणो प्रतिबिंब' एवो शब्दक्रम छे. ४ देखतो होउ व भा-२. ५ प्रतिबिंबनिइ व भा-२; प्रतिबिंबनि इ. ६ 'सिंह जाणीनइ' व भा-२ मां नथी. ७ करीनइ व भा-२. ८ व भा-२ मा नथी. ९ मामलीनि व भा-२. १० जाणे व भा-२; पछी व भा-२ मा 'ए' छे. ११ करि व, करे भा-२. १२ छि व, छे भा-२. १३ पछे व भा-२. १४ ऊडी इ व भा-२. १५ पड्यो इ व भा-२. १६ °माहि इ. १७ मुउ इ; व भा-२ मा 'पड्या पछी बूडी मुउ' एवा पाठनी आ पंक्ति छे.

१८ तेथी व भा-२. १९ छुं इ भा-२ छु व २० जोहे व भा-२. २१ तोहे व भा-२. २२ पाखेइ व भा-२. २३ व भा-२ मा नथी. २४ दमनक ह्यो. २५ कहिनो इ. २६ हौउ ह्यो २७ एहु भा-१ ट, एहु व भा-२. २८ कहेजे इ. २९ होउ ह्यो. ३० आनी पछी भा १ मा 'उद्यम करता निश्चि देवता साह्य करइ को दोष न काटइ.' एवा पंक्तिनो उत्तरार्ध छे ३१ निश्चि भा-२. [पृ ८४] ३२ निश्चे इ व भा-२ ३३ जे व भा-२ ३४ करे व भा-२. ३५ तेन्हे इ भा-२, तेन्हि व. ३६ व भा-२ मा आ चरणनो अनुवाद आ प्रमाणे छे :

'दैव करशेइ एहुं कापुरुष कहि [कहे].'

३७ एहुं इ ३८ करता इ व भा-२ ३९ जो इ व भा-२. ४० कोण व भा-२. ४१ तेथी व भा-२ ४२ आश्चर्यनि व भा-२. ४३ सर्जीवकनें भा-२. ४४ छच्याव्याश इ, छडानेमि व भा-२ ४५ कहतो इ, व भा-२ मां 'बोल्यो' क्रियापद छे ४६ तो व भा-२ ४७ कीम्हइ इ, व भा-२ मा नथी. ४८ जाणजे इ, जाणिजे व भा-२ ४९ तो व भा-२. ५० मारशे इ व भा-२. ५१ व भा-२ मा नथी ५२ ये इ व भा-२ ५३ करे इ, करे व भा-२. ५४ तेन्हे इ व भा-२ ५५ आनी पछी व भा-२ मा 'पण' छे. ५६ सहाय व भा-२. ५७ छेइ व ५८ पृठि इ, पूठि भा-१, पन्डि व भा-२. ५९ सहायने भा-१, महायने ट, सहाय व भा-२. ६० पामे ह्यो. ६१ कोलीनें पं ३७

भा-१ व भा-२. ६२ सहायने भा-१ व भा-२. ६३ पाम्या ड्प्रो ६४ ये ड भा-१. ६५ पारनइ भा-१, पारने व भा-२; आ श्लोकनो अनुवाद ड मां पाछळथी वार्तां गम्य थतां आप्यो छे. ६६ पामेइ व भा-२. ६७ विगुने भा-१ व भा-२. ६८ हर्षे भा-१ भा-२, हर्षि व. ६९ राजानी भा-१, राजकन्याने व भा-२ ७० भोगवतो भा-१ व भा-२. ७१ हौउ भा-१ व भा-२ ७२ वाल्यो व भा-२. ७३ थोयु इ, थो यो व भा-२.

[८. वणकर अने राजकन्या]

१ नामे ड, नामे व भा-२. २ निहो व भा-२ ३ अनड् ड्प्रो. [पृ ८५] ४ आपणि भा-१, आपणे व भा-२. ५ आपणिइ भा-१, आपणे व भा-२. ६ आवे इ व. ७ घणुं व भा-२. ८ 'धन कमाज्युं' ए प्रमाणे व भा-२ मा शब्द-क्रम छे. ९ मूलनो ड भा-१, आ पंक्तिथी शरू थतो वार्तानो केटलोक भाग व भा-२ मां आ प्रमाणे छे॰

'घणां भला वस्त्र पहरतो हौआ [होआ], फूल तांबूल कर्पूर कस्तूरी एह्वा जे परिमल तीणे सुगध शरीर करतो हौआ ते विहि प्रहर नण्य काम करें. पछिइ [पछेड] भला नाही, भला शृंगार करी, उत्तम स्थाने जोता विनोद जोता सध्या आपणे स्थानि आवता हौआ इणीं [ईणीं] परिं केतला दिन गया पछि [पच्छे] महोत्सव आयो. महोत्सवने दिवसि ते नगरमाहि शृंगार करी लोक सघले देहरे जोवा हीडता हौआ अनेइ ते कोली अनेइ सूत्रधार विहि शृंगार करी, ठामि ठामि लोक मिल्या शृंगार करी रह्या तेन्हे जोता तथा तथा धवलगृहना गोप मध्य रही अनेक शृंगार करी उच्च कठिण स्थूल जे स्तन ते युक्त सुदर श्रोनि कटि पातली, नितंब मोटा, चन्दनपुष्पचर्चित एहीं श्रीन कमल सदृश मुख, अति श्याम मस्तकना केश, कानि सुवर्णहीराजडी झाळि, नित्रानी परिं सर्व जनना नेत्र ग्रहती, सखीजने परिवरी, हाथिणी ऊपरि बैठी [बैठी], एह्वी राजानीं कुंअरि अधिका जोवानिं [जोवान] आवती हौई तेन्हि [तेन्हे] सूत्रधार कोली बिहि जोता हौआ. पछि [पच्छे] कोली ते कन्या जोई कदर्पे मूर्च्छा [मच्छों] थको मोटे कष्टे घरि आव्यो. सर्व जन ते कुंअरि देखी पछइ ते कोली चचलचित्त मोटा निश्वास करतो ऊपरली पाटि [पाटि] पड्यो पड्यो ते राजकन्याने चींतवतो [चींतवतो] हाउ श्लोक भणतो हौउ.

१० पहरतो भा-१ इ. ११ सूतहार भा-१ इ. १२ नाहा गू इ, नाहणूआ

भा-१. १३ उत्तम उत्तम भा-१ ड. १४ स्थानि ड भा-१. १५ सन्याइ ड, सन्याइं भा-१. १६ दन ड. १७ आव्येड भा-१ ड. १८ थके भा-१ ड. १९ महोत्सवनेइ भा-१ ड. २० देहुरे भा-१ ड. २१ हौंआ भा-१ ड. २२ सूतहार भा-१ ट. २३ विहि भा-१ ट. २४ वेठी भा-१ ट. २५ माथइना भा-१ ट. २६ टोकना भा-१ ट. २७ नेत्रनें भा-१, नेत्रने ट. २८ जोवाने भा-१. २९ कुंअरिनें भा-१, कुंअरिने ट; भा-१ मा पछी 'ते' छे. ३० राज-कन्याने भा-१, राजकन्याने ड. ३१ भा-१ ड मा नथी. ३२ निश्वासनें भा-१ ड. ३३ मुकनो भा-१ ट. ३४ पाड्ड ट. ३५ विपि ट. ३६ पड्यो भा-१ ड. ३७ चींतवतो भा-१ ट. ३८ भा-१ मा 'कहितो हौउ' छे. ३९ दैवि भा-१, दैवें व भा-२; आनी पछी व भा-२ मा 'जो' छे. ४० मारवाने ह्प्रो. ४१ कीधा व भा-२. [पृ. ८६] ४२ जे भणी व भा-२. ४३ व भा-२ मा नथी. ४४ आनी पछी व भा-२ मा 'मर्व' छे. ४५ जेथी व भा-२. ४६ आनी पछी व भा-२ मा 'भली विरहे' एवा शब्द छे ४७ शरीरने भा-१ व भा-२. ४८ छि व, छे भा-२. ४९ माहृा ह्प्रो ५० जेथी व भा-२. ५१ यि ट, व भा-२ मा नथी ५२ तेन्हि व, तेन्हे भा-२ ५३ व मा 'पाम्युं छिइ' अने भा-२ मा 'पाम्युं छेड' छे ५४ स्त्रीइं व भा-२ ५५ चेतनाई व भा-२. ५६ कठिन व भा-२. ५७ चीला भा-१ व भा-२. ५८ व भा-२ मा नथी. ५९ आ पंक्ति व भा-२ मा 'अनेथी' थी शरू थाय छे. ६० पीडि व. ६१ नहीं भा-१ व भा-२ ६२ आ श्लोकनो अनुवाद व भा-२ मा आ प्रमाणे छे:

[पृ. ८७] 'हाथीना कुंभस्थल सरखा, कुंकुमना पर्वत सरखा एवा जे स्त्रीना स्तन तीणे पेट पाम्यो तेन्हो हैयु बाथमाहि घाली रिवारे सुएशि?'

६३ तीणि भा-१ ट. ६४ तेन्हु भा-१, तेन्हु ड. ६५ रिह्वारे ट. ६६ अमूल्य व भा-२ ६७ स्त्री व भा-२. ६८ जिहा ह्प्रो. ६९ वहीये व भा-२. ७० जाणवो ह्प्रो. ७१ जींण व भा-२ ७२ वसइ भा-१ ड, बसे व, वसे भा-२ ७३ राषे व भा-२. ७४ मूर्ष भा-१ ड, मूर्षि व भा-२ ७५ हृदि व भा-२ ७६ छि व, छे भा-२. ७७ अनइ भा-१ ड, अने व भा-२. ७८ आनी पछी व भा-२ मा 'हुं' छे. ७९ व भा-२ मा आ श्लोकनो अनुवाद आ प्रमाणे छे:

'स्त्रीना सगमथी विरह भलो, जेथी सगमने विषे ते एक ज होइ अनइ विरह छता सर्व ससार स्त्रीमय होइ'

८० विपि ड; पछी भा-१ मां 'ते' छे. ८१ दीसइ भा-१ ड. ८२ विरह भा-१ ड. ८३ दिशाने व भा-२. ८४ विपइ भा-१; आ पंक्तिनो अनुवाद व भा-२ मां आ प्रमाणे छे :

'दिशाने विपि, भूमिने निपेइ आकाश सघलेइ दीसें.'

८५ आनी पछी व भा-२ मां 'पण' छे. ८६ जातांड व भा-२. ८७ परिं व भा-२. ८८ पंडित कहें भा-१ भा-२ ड पंडिन कहिं व. ८९ जे व भा-२. ९० संभोग हप्रो. ९१ जे भणी हप्रो. ९२ श्रीने भा-१ व भा-२, श्रीनि ड. [पृ. ८८] ९३ ईर्णी व भा-२. ९४ घणुं भा-१, घणु ड, घणो व भा-२. ९५ करतो व भा-२. ९६ मोटें भा-१ भा-२. ९७ वेटे व भा-२; आनी पछी व मां 'तेन्हि' अने भा-२ मां 'तेन्हे' छे. ९८ गे हप्रो. ९९ बीजे व भा-२. १०० तिमह व भा-२. १ तीणी ज भा-१ ड, तीणी व भा-२. २ कोलीनि व भा-२. ३ विरि ड. ४ व भा-२ मां आ पंक्ति आ प्रमाणे छे :

'जोइ तो ते कोळी ऊपरली पाटे विलास करतो पद्मो देखतो होउ.'

५ पछे व भा-२. ६ तेन्हे ड व भा-२. ७ नीसाशो ड, नीसासा व भा-२. ८ देपीनेइ व भा-२. ९ सूत्रधार व भा-२. १० बोल्यो भा-२. ११ आनी पछी व भा-२ मां 'तुं' छे १२ ईर्णी व भा-२. १३ अवस्थांड व भा-२ १४ काइ व भा-२. १५ इणी व. १६ परिं भा-२. १७ घणूं व भा-२. १८ घणुं व भा-२. १९ सूत्रधारे व, सूत्रधारें भा-२; पछी व भा-२ मां 'पूछ्यो तोहे बोले नहीं' एवो पाठ छे २० तिवारे व, तिवारें भा-२. २१ भणतो ड व भा-२. २२ जेन्हा व भा-२. २३ ऊपजइ भा-१ ड, ऊपजेइ व भा-२. २४ अनेइ व भा-२ २५ जि व, जे भा-२. २६ आणीये व भा-२. २७ 'सेवा कीजइ' व भा-२ मां नथी. २८ होइ हप्रो. २९ तेह ज व भा-२. ३० मातानी व भा-२. ३१ परिं व भा-२. ३२ ऊपजइ भा-१ ड, ऊपजेइ व भा-२. ३३ पछइ व भा-२. ३४ सूत्रहार ड, सूतहार भा-१. ३५ कोलीनि व भा-२. ३६ हृदय व भा-२. ३७ कहतो भा-१ ड, जोतो व भा-२. ३८ आ पंक्ति व भा-२ मा आ प्रमाणे छे :

'अरे कोली तून्हि [तून्हे] ज्वर ता नथी, तु ए अवस्था कंदर्पनी.'

३९ कहते भा-१, कहते ड, कहता व भा-२. ४० तेहे भा-१, व भा-२ मां नथी. ४१ कोलीनें भा-१, कोलीनइ व भा-२; पछी व मां 'आपि' छे. ४२ बेठो थे भा-१ ड भा-२, किगे थो व. ४३ वो-यो व भा-२. ४४ जाणिइ व,

जांगिड भा-२; आनी पछी व भा-२ मा 'ते' छे. ४५ चित्तने व, चित्तनं भा-२. ४६ चालउ भा-१ इ, चालती व भा-२. ४७ जे भा-१. ४८ आगलि व भा-२. ४९ निर्वेदिये तु व भा-२. ५० धैर्ये व भा-२. ५१ एहुं हप्रो. ५२ बोलीनइ व भा-२. ५३ °दर्शनतु भा-१ इ. ५४ बोल्यो भा-२. ५५ ऊठि व भा-२. ५६ र्गमिनि व भा-२. ५७ जमि हप्रो. ५८ ते हप्रो. ५९ वरेमि व भा-२; आनी पछीना पडी गयेला शब्द भा-१ माथी लीधा छे; आनी पछी व भा-२ मा आ पाठ छे.

'जीणि [जीणि] तुं राजकन्यान्हे भोगवेसि.'

[पृ. ८९] ६० एहुं हप्रो ६१ साभलीनइ व भा-२. ६२ व भा-२ मा नथी. ६३ करतो हप्रो ६४ दिवसि व भा-२. ६५ वाने व भा-२. ६६ हलावें भा-१, हलावे ट ने भा-२ ६७ ऊडट भा-१ ट, ऊडे व भा-२. ६८ वशिट भा-१ ट, बेसे न भा-२ ६९ करीनइ व भा-२. ७० मेलीनि व भा-२. ७१ आणीनइ ट, व भा-२ मा नथी. ७२ पछेइ भा-२. ७३ काष्ठना गरुडनि व, काष्ठना गरुडने भा-२. आनी पछी व भा-२ मा 'ऊपरि बेसी' छे. ७४ आनी पछी व भा-२ मा 'जिहा चीतवीये तिहा जाइ' एवो पाठ छे ७५ तिहा भा-१. ७६ जईये भा १, आनी पछीनी पंक्ति व भा-२ मा आ प्रमाणे छे :

'जेवारें [जिवार] पीली ऊघाडीये तिवारें बेसि.'

७७ तिवारे इ, तिवारे भा-२ ७८ पछइ नथी व भा-२. ७९ वसी भा-१ इ, वसी व भा-२ ८० ऊपरी व भा-२ ८१ आनी पछी व भा-२ मा वाक्यनो उत्तरार्ध आ प्रमाणे छे :

'तिणा रात्रि महू सूता पछी विष्णुनो वेष करी तिहा जाइ.'

८० लेईनइ भा-१ ८३ जई भा-१ इ. ८४ राजकन्यानि व, राजकन्यान भा-२. ८५ कहेजे व ८६ आनी पछी व भा-२ मा 'आव्यो छु' छे. ८७ पहिला व भा-२ ८८ तुन्हे व भा-२ ८९ शरुआतमा व भा-२ मा 'तु' छे ९० एहु भा-१ भा-२ व, एहु इ ९१ पूछि भा-१ व भा-२. ९२ कुमारी भा-१ इ, राजकुमारी व भा-२. ९३ तुन्हे इ, तुन्हि व, तुन्हे भा-२. ९४ भजसे व भा-२. ९५ तेशु ट, तेशु भा-१ ९६ भोगवजे व भा-२. ९७ शो व भा-२. ९८ दिवस व भा-२. ९९ गाढे व भा-२ १०० दृष्टि इ, दृष्टि व, दृष्ठे भा-२. १ लेईनइ भा-१, नीगमीनइ व, नीगमीनइ भा-२ २ पछी व भा-२ ३ करी व भा-२ पछी व भा-२ मा 'मुकेय' छे ४ चदनि भा-१,

चंदनि इ, चंदनं व भा-२. ५ सूत्रधारि ट, सूत्रधारं व भा २. ६ पछेइ व, पछिइ भा-२. ७ °धी व भा-२. ८ गरुडि व भा-२. ९ जाणी व भा-२. १० पलंगिथी व भा-२. ११ ऊनरी व भा-२. १२ व भा-२ मा नथी. १३ पछेउ व भा-२. १४ जोही व भा-२. १५ स्वप्न व भा-२. १६ विपिइ व भा-२. १७ पछेट व भा-२. १८ पठें व, पछे भा-२. १९ वांयो हप्रो. २० नाहूं व भा-२. २१ आव्यो व भा-२. २२ हौइ व भा-२. २३ व भा-२ मा 'नम्हे तेथी' एवो शब्दक्रम छे. २४ एहुं व भा-२. २५ नहीं व, नथी भा-२. २६ वोल्यो हप्रो. २७ आनी पछी व भा-२ मा 'शाप साहूथी ईणे' एवो पाठ छे. २८ हवे हप्रो. २९ वेइ हप्रो. ३० जाएसि हप्रो. ३१ व भा-२ मा 'तेन्हुं एहुं' एवो शब्दक्रम छे. [पृ. ९०] ३२ साभली हप्रो, पछी व भा-२ मा 'तेन्हे' छे. ३३ हर्षथी व भा-२. ३४ व भा-२ मा 'तेन्हे' छे. ३५ आनी पछी व भा-२ मा 'स्वामिन जिम युक्त होट तिम' एवी पंक्ति छे ३६ पछेइ तें व भा-२. ३७ हौउ व भा-२. ३८ आपणपाणे ट, आपणपानें भा-१ व भा-२. ३९ ईणी भा-१ इ, ईणीं व भा २, आनी पहेलां व भा-२ मा 'पछइ' छे. ४० परि हप्रो. ४१ 'मुख भोगवता' व भा-२ मा नथी. ४२ अहीथी शरू थती त्रेवण पंक्ति व भा-२ मां आ प्रमाणे छे :

'ते कोली ऊठी ग्रोहोडीये करतो हौउ जे हुं वैकुंठि जाउ छुं. [*एहुं कही गरुडि वैसी ऊडी घरि जातो हौउ. इम सदा कन्याने भोगवतो हौउ.] पछइ कतले दिने पोसरा ते कन्याने जोइ ते पुरुषे भोगवी होइ एहा चिह्न देखीनइ भयथी राजा आगलि कहता हौआ एवान समये.'

४४ वैकुंठि भा-१ ड. ४५ जोट भा-१. ४६ होइ भा-१ ड. ४७ होई ड, हुँई भा-१. ४८ कहता भा-१ ड. ४९ हौआ ड, हाआ भा-१. ५० जे व भा-२. ५१ तेन्हें भा-१ व भा-२, तेन्हे ड. ५२ दीसे व भा-२. ५३ छट भा-१ ड, छे व, छे भा-२ ५४ जोयुं हप्रो. ५५ अम्हारे व भा-२. ५६ न आवे व भा-२. ५७ चीतवतो व भा-२, चीतवतां भा-१. ५८ जाण्या व भा-२. ५९ पिताति ड. ६० घणी व भा-२. ६१ होइ हप्रो. ६२ केन्हि व भा-२. ६३ पछी व भा-२. ६४ हुइसि भा-१, हुसि ड, हुमे व, हुस्मे भा-२. ६५ नहीं होइ व भा-२ ६६ पितानें ड, पितानें भा-१. ६७ दुप भा-१ ड ६८

* त्रणमा लीटीनी पंक्तिओ व मां नथी.

थे भा-१ ड; छेल्ला चरणनो अनुवाद व भा-२ मां आ प्रमाणे छे :

'ते माटे कन्याना पिताने दुःख होइ कन्या पितानें आपदारूप दुःख दे '

६९ पितानें ड, पितानं भा-१. ७० छेड व भा-२ ७१ व भा-२ मा नथी. ७२ एह्ना भा-१ व भा-२. ७३ आनी पछी व भा-२ मा 'जले करी' छे ७४ तटनें व भा-२. ७५ पाडिड ड, पाडे व भा-२. ७६ आनी पछी व भा-२ मा 'दोषे करी' छे. ७७ पाडेड व भा-२. [पृ. ९१] ७८ घणां व भा-२. ७९ विमासी व भा-२. ८० राणीनें व, राणीनं भा-२. ८१ व भा-२ मां नथी. ८२ म्हतो ह्प्रो. ८३ स्युं व भा-२. ८४ छे व भा-२; पछी व भा-२ मा 'जे अम्हे' एवा शब्द छे. ८५ जेथी व भा-२. ८६ कन्याइं ८७ एहुं ह्प्रो. ८८ स्त्रीनें व भा-२. ८९ नहीं ह्प्रो. ९० पहिं व भा-२. ९१ प्रछावती ह्प्रो. ९२ यौवन भा-१ ड, यौवना व भा-२. ९३ हौआ भा-१ ड. ९४ छइं भा-१ छे व भा-२. ९५ माईं भा-१, माइं व भा-२. ९६ जेहुं व भा-२. ९७ हौउं भा-१ व भा-२, हौउ व ९८ म्हती ह्प्रो ९९ रात्रिं ह्प्रो, आनी पछी व मा 'आवी भोगवे छेट' अने भा-२ मा 'आवी भोगवइ छइं' एवो पंक्तिनो उत्तरार्ध छे. १०० मानतो ह्प्रो. १ जो व भा-२. २ एहु व भा-२. ३ छेइ व भा-२. ४ ते जे व भा-२. ५ माहरो व भा-२. ६ विष्णु व भा-२. ७ तेन्हें व भा-२. ८ आ पंक्ति व भा-२ मा आ प्रमाणे छे:

'राजन् बाप, हुं विष्णुन्हे देखाडी सकु, तम्हे सह सूता पछी जालीये आवी रात्रें जोज्यो, विष्णु आविशिं.'

९ जिवारं भा-१, जिवारे ड १० होइं भा-१. ११ तिवारिं भा-१. १२ तिवारि भा-१, तिवार ड. १३ अविशिं भा-१, आवशिं ड १४ सूते व भा-२. १५ व भा-२ मा नथी, आ पंक्ति व भा २ मा आ प्रमाणे छे :

'पछइ राजा रात्रिं सहू सूते जोइ तो विष्णु अंतरिक्षथी ऊतरतो देषी मनमांहि नारायणने नमस्कार करी हर्ष्यु थको घरमाहि जातो हौउ.'

१६ आवतो भा १, आव्यतो ड. १७ ऊतरतो भा-१ ड. १८ पछिद व, पछेइ भा-२, व भा-२ मा पछी 'जै' छे. १९ आनी पछी व भा-२ मा 'हौउ' छे. २० सरषा व भा-२, पछी व भा-२ मा 'कोइ' छे. २१ नही व भा-२. २२ पुत्रीन भा-१ व, पुत्रीनं भा-२ २३ स्वये भा-१, स्वयं ड, स्वये व भा-२. २४ भोगवे व, भोगवं भा-२ २५ छि भा-१ ड व, छे भा-२. २६ पुहोता भा-१ ड, पोहोता व भा २ २७ तहीं भा-१ ड, तिवार व भा-२. २८ पछी

व भा-२. २९ मोकल्यो इप्रो. ३० मथार्ते भा-२; पछी व भा-२ मा 'यथेट' छे. ३१ लेई ड. ३२ आ पंक्ति व भा-२ मां आ प्रमाणे छे :

'एणे समय ते राजा ऊपरि लक्ष ग्रामनो स्वामि [स्वामी] विक्रमसेन तेहनुं कटक ते राजा उपरि [ऊपरे] कर लेवा आव्या.'

३३ तेन्हा भा-१ ड. ३४ रपनो भा-१ ड. ३५ जाणं ते व भा-२. ३६ छै भा-१ भा-२, छे ट व. ३७ तेन्हि व, तेन्हें भा-२. ३८ रहतो इप्रो. ३९ होउ भा-१ व भा-२. ४० निपुनो इप्रो; पछी व भा-२ मा 'हुं' छे ४१ शगरों भा-१ ट, सगरो व भा-२. ४२ गइं जाणी व भा-२. ४३ व भा-२ मा नथी. ४४ दीधे भा-१ ट भा-२, दीधि व ४५ दिवस व भा-२. ४६ होउआ व. ४७ ते व भा-२. ४८ शुं इप्रो. ४९ तुन्हि भा-१, तुन्हि ट, तन्हि व, तझे भा-२; आनी पछी व भा-२ मां 'शुं' छे. ५० छेइ व भा-२, छि ट. ५१ नें व भा-२. ५२ कोप ऊपजावता व भा-२. ५३ हींडई भा-१, हींडि व, हींडे भा-२. ५४ छे व भा-२. ५५ जे इप्रो ५६ आनी पछी व भा-२ मां 'राजा माहूं' एवा शब्द छे ५७ तम्हि व. [पृ. ९२] ५८ आनी पछी पंक्तिने अन्ते व भा-२ मां 'कर नहीं आपुं' छे. ५९ व भा-२ मां 'वधारी कहना होआ' एवो पंक्तिनो उत्तरार्ध छे. ६० अहींथी शरू थती बे पंक्तिनो अनुवाद भा-२ मां आ प्रमाणे छे :

'पछे ते विक्रमसेन कोप करी चतुरंग सेना लेई ने राजा ऊपरि युद्धन आव्यो, सेवकन कहतो होउ.'

६१ सैन्यने भा-१. ६२ पटगड भा-१ ट. ६३ आनी पछीनो अनुवाद व भा-२ मां आ प्रमाणे छे :

'अथवा मेरु पर्वति इंद्र कन्हइ शरणि जाउ तोहे मे ए मारवा ए माहूं प्रतिज्ञा'

६४ आनी पछी भा-१ मां 'मई' छे. ६५ मारवा भा १ ड. ६६ अहींथी शरू थती बे पंक्ति व भा-२ मा आ प्रमाणे छे :

'पछेइ तेन्हो देश दिहाडी मारतो होउ पीयाणे पीयाणे. पछे ते तेमना लोक पुद्र नगरने द्वारि रही वाटवता होआ ते राजा मा ड साम्हो कोन दावतो होउ.'

लोकोनो भा-१ ड. ६८ पामनो भा १ ट. ६९ पछि व, पछेट भा २, आनी पछी व भा-२ मा 'पुद्र नगर नीपें वींट्या पछी' एवो पंक्तिनो पूर्वार्ध छे. ७० वींढ्या भा-१, वीख्या ट. ७१ नगरलोक व भा-२. ७२ राजान भा-१ व

भा-२, राजाने इ. ७३ वीनवता ह्प्रो. ७४ होआ ह्प्रो. ७५ आनी व भा-२. ७६ नगरनें व भा-२. ७७ रुंधी व भा-२. ७८ पठी व भा-२ मा 'छे' छे ७९ निश्चिन व भा-२. ८० छो व भा-२. ८१ 'एहुं सांभली' ए रीते व भा-२ मां पंक्ति शरू थाय छे. ८२ पुनीनें व भा-२. ८३ तेडावीनेड व भा-२. ८४ कहतो ह्प्रो. ८५ वलि न भा-२. ८६ में भा-२, मे व. ८७ °खुं व भा-२ ८८ कीधुं व भा-२. ८९ छे व भा-२. ९० रात्रि भा-१ व भा-२; आनी पछी व भा-२ मा 'तुं' छे. ९१ विष्णुनें भा-१ भा-२, विष्णुन्हि व. ९२ वीनति व, वीनते भा-२. ९३ जेम व, जिम भा-२. ९४ प्रभाति व भा-२. ९५ ए वेरीनें व, ए वेरीनें भा-२. ९६ पठइ ह्प्रो; आ पंक्ति व भा-२ मां आ प्रमाणे छे :

'पठइ ते वचन सुदर्शना रात्रि बोली आगलि कहती होई विशेष मधुर.'

९७ विशेपिं भा-१, विशेषे भा-२. ९८ बोलतो भा-१ ट, कहतो व भा-२. ९९ मनुष्य ह्प्रो. १०० पूर्वे ट, व भा-२ मा 'पूर्वे मे' एवो शब्दक्रम छे. १ हिरण्यकशिपु ह्प्रो २ आनी पछी व भा-२ मा 'रावण' छे. ३ आनी पछी व भा-२ मा 'मे' अने भा-२ मा 'मे' छे ४ तेथी व भा-२ ५ राजानें भा-१, राजानें इ व भा-२, आनी पछी व मा 'तुं' अने भा-२ मा 'तु' छे ६ निश्चित व भा-२. ७ रहो भा-१ इ भा-२, पछी व भा २ मा 'जे' छे. ८ आनी पछी व भा-२ मा पंक्तिनो उत्तरार्ध आ प्रमाणे छे :

'प्रातःकालि विष्णु चक्रे [चक्रे] करी निश्चि [निश्च] ए शत्रुनें [शत्रुनें] मारासि [मारसें]'

९ 'पठइ ते वचन कल्याउ प्रभाति' ए प्रमाणे व भा-२ मा पंक्ति शरू थाय छे. १० पछी व भा-२ मा 'यश' छे ११ वजावतो ह्प्रो १२ प्रातःकालि भा-१ ट, व भा-२ मा नथी १३ विक्रमसेनन व भा-२ १४ व भा-२ मा नथी १५ पछी व भा-२ १६ व भा-२ मा 'जे वस्तु जे टटे ते तेन्ही' एवो शब्दक्रम छे. [पृ ९३] १७ घोडा व भा-२ १८ आनी पछी व भा-२ मा 'सामट्ट रथ' छे १९ 'जे टटे ते तेन्हू ज' एवा शब्दोथी व भा २ मा पंक्ति पूरी थाय छे. २० तेन्हूं भा १. २१ पछी व भा-२. २२ छेट व भा-२ २३ तोहे व भा-२. २४ पामतो ह्प्रा २५ व भा-२ मा नथी. २६ प्रभाति व भा-२. २७ मारशि भा-१ इ, मारशे ज व भा-२. २८ भोग व भा-२. २९ छाडी व व भा-२. ३० उचार्यो ह्प्रो ३१ आनी पछी व भा-२ मा 'वनमाहि' छे. पं ३८

३२ चींनवतो भा-१ व भा-२ ३३ हौंउ हुयो ३४ हवें हुयो ३५ मे भा-१, मे इ व भा-२ ३६ शूं व भा-२ ३७ घटेइ व भा २ ३८ हु भा-१ इ, त भा-२ मा नथी ३९ लामडनेड व भा-२ ४० गरुडि भा १, गरुडि इ व भा-२ ४१ वैसी भा-१, नेसी इ, वैसी व भा-२ ४२ जाएश इ, जाएशि व, जएगि भा-२ ४३ आनी पछी व भा २ मा 'अनइ ए' छे ४४ लेईं भा-१ इ, लगी व भा २ ४५ करयाग व भा-२ ४६ ताहेंड व भा-२ ४७ व भा-२ मा नथी ४८ कर भा १ इ, करु व भा-२ ४९ तोहेंट व भा २ ५० मारेंड भा-१ इ, मारेंइ व भा-२ ५१ तेथी व भा-२ ५२ अवश्य व भा-२ ५३ गरुडि भा-१, गरुडि इ व भा २ ५४ व भा-२ मा नथी ५५ मामेंड व भा-२ ५६ पुण्यन व भा २ ५७ कम व भा-२ ५८ व भा २ मां नथी ५९ होइ व ६० तिमारि इ, तिमारे भा २ ६१ अन्यस्यनो व भा २ ६२ न्याय हुयो ६३ पछेइ व, पछेइ भा-२ ६४ पाषाण व भा २ ६५ रह्यां भा-१ ६६ आ श्लोकनो अनुवाद व भा-२ मा आ प्रमाणे छे

'महांते [महात] धर्य धरवु, वट, सकष्ट होइ तोहे धैर्य [धैर्य] छूगीवे '

६७ करवानो हुयो ६८ करतो व भा-२ ६९ हौंउ व भा २ ७० तिहि इ, तेहे व भा २ ७१ विणुहे व भा २ ७२ वीनवतो हुयो ७३ पुत्र व भा-२ ७४ नगरने व भा-२ ७५ विषेद व भा २ ७६ धरी व भा २. ७७ कन्यान व भा २ ७८ भोगवेइ व भा २ [पृ ९४] ७९ छे व भा २, ८० अहींथी शरु थती बे पक्तिओ व भा २ मां आ प्रमाणे छे

'ते रानानु नगर, वैरी जे राना तीणे वीटयु छेइ तिहां कोरीयें रागराने सग्राम करवा युद्धन निश्चय कीधो छेइ '

८१ दशराने भा १ इ ८२ सहायपणु भा १ इ ८३ तेइ व भा २ ८४ कोतान भा १ व भा २, कोरीनु इ ८५ °मारे व भा २ ८६ मारशि भा-१, मारशि इ, मारश व भा २ ८७ तो हुयो ८८ करशि भा १ करशि इ, करसे व भा २. ८९ देशान भा-१ भा २, देशने इ, देशनि व ९० रानार भा-१ व भा २ ९१ विणु व भा २ ९२ °लेवे भा १ इ ९३ पृठि भा-१ इ, पछी व भा-२ ९४ यजनो भा-१ यजनो इ, यज० व भा-२ ९५ होशि व भा-२ ९६ छांडशी व, छांडशे भा २ ९७ हणी इ व ९८ घमडइ हुया ९९ पछी व भा २ १०० होगि व भा-२ १ आ पंक्ति व भा २ मां आ प्रमाणे छे

'पच्छइ कपोत पामेइ प्रनानाश होशि.'

२ 'पच्छेइ एहुं साभली' ए रीते व भा-२ मां पंक्ति शरु थाय छे. ३ नारायणेन, नारायणे भा-२. ४ विमांस्युं व, विमाम्युं भा-२. ५ जोई व भा-२. ६ व भा-२ मां नथी. ७ आनी पछी व भा-२ मां 'तं' छे. ८ देवनो ह्प्रो. ९ दैत्यनो भा-१ इ; पंक्तिनो आ उत्तरार्ध व भा-२ मा नथी. १० वधनें ह्प्रो. ११ साज्युं भा-१ इ, सज्यों व भा-२. १२ हुं भा-१ इ; व भा-२ मा पंक्तिने अन्ते 'मे अवतरवुं' छे. १३ कोलीनि व, कोलनें भा-२. १४ 'अनइ गरुड हुं यंत्र मध्ये अवतरि' एवो आ पंक्तिनो उत्तरार्ध व भा-२ मा छे. १५ आनी पछी व भा-२ मा 'तुं' छे. १६ कोलीनि व, कोलनि भा-२. १७ सुदर्शनि व भा-२. १८ अवतरो भा-१ इ. १९ इणी भा-१. २० परिं व भा-२. २१ प्रातः-कालि व भा-२. २२ एहुं ह्प्रो. २३ देईनइ भा-१ इ, देई व भा-२. २४ अवतरवा तिहां व भा-२. २५ तेहि व, तेह भा-२. २६ नारायणनो ह्प्रो. २७ करी व भा-२. २८ मुख्य प्रतमांथी पडी गयेला आ शब्द अन्य ह्प्रो मा छे. २९ पहिरि व भा-२. ३० जेहा व भा-२. ३१ एहो भा-१ इ, एहा व भा-२. ३२ उपरि इ, ऊपरि भा-१ व भा-२. ३३ वैरीनइ भा-१ इ, वैरी व भा-२; आनी पछी वाक्यनो उत्तरार्ध व भा-२ मा आ प्रमाणे छे :

'आकाशि आवी विहि सैन्य जोई विक्रमसेनना सैन्य मध्यें आवी पड्यो.'

३४ सैन्यानिट भा-१ इ. ३५ विधि भा-१ इ. ३६ ते भा-१ व भा-२. ३७ जे भा-१ व भा-२. ३८ तीणि व. ३९ व भा-२ मा नथी. ४० कोलीयें व भा-२. ४१ लेइ व, लेई भा-२ ४२ कोलनें व भा २; कोलनइ भा-१ इ. ४३ पछे व भा-२. ४४ सर्व सैन्य व भा-२. ४५ मारयुं व भा-२. ४६ पछेइ व भा-२. ४७ आ पंक्ति व भा-२ मा आ प्रमाणे छे :

'केतला कहवा लागा, "नारायणशुं [नारायणस्युं] विरोध शुं कीजेइ ?" इम करी करी आवी मिल्या, स्तुति करता हौआ'

४८ करी भा-१ इ. ४९ मिल्या भा १ इ. ५० केतलाइ व भा-२. ५१ मुंआ भा-१ इ, मूआ व भा-२. ५२ इणी व भा-२; आनी पछी व भा-२ मा वार्तानो अन्त नीचे प्रमाणे छे :

'इणी परि कोली विजय पामी घरि राजकन्या [सघातें] आव्यो. विष्णुनो वेष लीधे समस्त लोक नमतो हौउ. पच्छेइ राजकन्याशुं संभोग करतो हौउ. पछेइ ते देखी समस्त राजा पुंड्रवर्द्धमान राजानी सेवा करता हौआ.'

५३ लेईनइ भा-१ ड. ५४ आपणयें भा-१, आपणपे ड. ५५ कहूं व भा-२. ५६ छूं व भा-२. [पृ. ९५] ५७ बोल्यो व भा-२. ५८ व भा-२ मां 'तें' छे. ५९ एहो व भा-२. ६० तुन्हें व भा-२. ६१ हव्यो व भा-२. ६२ पछी व भा-२. ६३ छठी व भा-२. ६४ कन्हे भा-२. ६५ ग्यु ट, ग्यो व भा-२. ६६ करी व भा-२. ६७ पछेइ व भा-२. ६८ गिहें व, गिहूं भा-२. ६९ पूछ्युं व भा-२. ७० व भा-२ मां 'अहो' नथी पण 'जे' थी पंक्ति शरु थाय छे. ७१ तुं इ व भा-२. ७२ दिवसे व भा-२. ७३ छे व भा-२. ७४ कांई इ व भा-२. ७५ मोटुं व भा-२. ७६ जे व भा-२. ७७ तेन्हि व, तेन्हें भा-२. ७८ वाछु इ; व भा-२ मां 'आव्यो छुं' वियादइ छे. ७९ छु इ. ८० घणो व भा-२. ८१ व भा-२ मां नथी. ८२ होउ इ व भा-२. ८३ तीणे ड, तीणें व भा-२. ८४ थको व भा-२. ८५ येन्हे इ, जेन्हे व, जेन्हें भा-२. ८६ वान्छीये व भा-२. ८७ तेन्हें व. ८८ व भा-२ मां 'अणपूछया थाइ कहवुं' एवो अनुवाद छे. ८९ व भा-२ मां नथी. ९० 'अहो तुं वोलि' ए प्रमाणे व भा-२ नी पंक्ति छे. ९१ जे व भा-२. ९२ पछीइ व भा-२. ९३ वचनने इ, वचन व भा-२. ९४ स्थानक व भा-२. ९५ जाणवां भा-२. ९६ राजन् व भा-२. ९७ बोले इ, व. ९८ ऐहा व. ९९ घणाइ व भा-२. १०० होइ इ व भा-२. १ आनी पछी व भा-२ मां श्लोकनो अनुवाद व भा-२ मां आ प्रमाणे छे :

'अप्रिय छुंइ हितकारी वचन तेहना बोलणहार अनइ सांभेलणहार [साभलणहार] दुर्लभ होइ.'

२ अनइ इ. ३ पंगल्क इ. ४ बोलणहार-छिं व भा-२. ५ होवि इ, व भा-२ मां नथी. ६ बोलो इ. ७ छेइ व भा-२. ८ पक्तिनो पूर्वार्ध व भा-२ मां आ प्रमाणे छे :

[पृ. ९६] 'ते सदा मुं आगलि वात करतो कहतो होउ.'

९ स्वामीनुं व भा-२. १० व भा-२ मां नथी. ११ व भा-२ मां नथी. १२ जाणुं छुं व भा-२. १३ हवें व भा-२. १४ विश्वसी व भा-२. १५ व भा-२मां नथी. १६ कहतो इ व भा-२. १७ छूं व भा-२. १८ होइ व भा-२. १९ छेइ व. २० माटे व भा-२; पछी व भा-२ मां 'जे' छे. २१ तुं व भा-२. २२ पछी व भा-२. मां 'छेइ' छे. २३ तेथी व भा-२. २४ व भा-२ मां नथी. २५ बीनवूं व भा-२. २६ छूं व भा-२. २७ दमनकनूं व भा-२. २८ कठिण व

भा-२. २९ सांभलीनइ व भा-२. ३० मोहनिं व. ३१ तिवारि व. ३२ कांइ व, कांई भा-२. ३३ बोल्यो व भा-२. ३४ तेन्हु इ, तेन्हो व भा-२. ३५ विमासीनइ व भा-२. ३६ बोल्यो व. ३७ आनी पछी व भा-२ मा 'ज' छे. ३८ अतिशयो इ, अतिशयें व भा-२. ३९ जे व भा-२. ४० प्रधान इ व भा-२. ४१ अनेइ व भा-२. ४२ तेन्हिं व; तन्हें भा-२. ४३ व भा-२ मां नथी. ४४ सहेइ व भा-२. ४५ विहुनो इ, विहूनो व भा-२. ४६ सहेइ व भा-२. ४७ तेथी व भा-२; मुख्य प्रतमांथी पडी गयेलो अनुवाद इ मांथी लीधो छे. ४८ विहुंमाहि व भा-२. ४९ एकनें व भा-२. ५० त्येजेइ व, त्येजेइ भा-२. ५१ मागो इ व भा-२. ५२ ये ट. ५३ आनी पछी व भा-२ मां 'जे' छे. ५४ एकलानें व भा-२. ५५ ऊवेडीये व भा-२. ५६ करे इ व भा-२. ५७ वान्छेइ व भा-२. ५८ कार्य करतो व भा-२. ५९ व भा-२ मा नथी. ६० मुख्य प्रत 'वि' अने 'इ' मांथी पडी गयेलो आ शब्द व भा-२ मां छे. ६१ होइ इ व भा-२. ६२ तोहे व भा-२. [पृ. ९७] ६३ व भा-२ मां नथी. ६४ सांभली व भा-२. ६५ व भा-२ मा 'अहो'थी पंक्ति शरु थाय छे. ६६ माहरो व भा-२. ६७ करजेइ व भा-२. ६८ राजलक्ष्मीनें व भा-२. ६९ लगे व भा-२. ७० ट व भा-२ मां नथी. ७१ लगे व भा-२. ७२ सेवे व भा-२. ७३ बोल्युं इ, बोल्यो व भा-२. ७४ तोहिइ व, तोहेइ भा-२; व भा-२ मां 'माहुं चित्त' पछी आ शब्द छे. ७५ वाह्लो इ, एह्लो व भा-२. ७६ बोलइ व भा-२. ७७ करें व भा-२. ७८ चित्तने व भा-२. ७९ विषे वभा-२. ८० होइ इ व भा-२. ८१ अने व, अनें भा-२. ८२ कार्य व भा-२; मुख्य प्रत 'वि' मांथी पडी गयेला आ शब्द 'इ' माथी लीधा छे. ८३ करे व भा-२. ८४ एहुं व भा-२. ८५ व भा-२ मा नथी. ८६ वाल्हु ट, वल्लभ व भा-२. ८७ होइ इ. ८८ व भा-२ मां नथी. ८९ अप्रिय व भा-२. ९० करे व भा-२. ९१ थको इ व भा-२. ९२ तेहे व भा-२. ९३ व भा-२ मा नथी ९४ बोल्यो व भा-२. ९५ व भा-२ मां 'अत एव राजानो दोष' एवी पंक्ति छे. ९६ दि व भा-२. ९७ छेइ व भा-२. ९८ हरे व भा-२. ९९ छेइ व भा-२. [पृ. ९८] १०० तीर्णं व भा-२. १ छिइ व, छेइ भा-२. २ राजलक्ष्मीनी ट. ३ वाळे व भा-२. ४ छें व भा-२. ५ मित्र व भा-२. ६ आनी पछी व भा-२ मा 'पण' छे. ७ एहे व भा-२. ८ माहे व भा-२. ९ करे व भा-२. १० आपणूं व भा-२. ११ वांन्छेइ भा-२. १२ 'वैयरि लोकमाहे पण एहुं' एवो शब्दक्रम व भा-२ मां छे. १३ तीर्णं व भा-२. १४ सोनें व भा-२. १५ सुं व भा-२. १६ कीजे

व भा-२. १७ जीर्ण व भा-२. १८ भृङ्ग व भा-२. १९ अने व भा-२. २० जेइ व भा-२. २१ माटि व भा-२. २२ उपगारने व भा-२. २३ होइ व भा-२. २४ व भा-२ मा नथी. २५ राजानूं व भा-२. २६ करे व भा-२. २७ मदोनमत्त इ व भा-२. २८ तीणि व भा-२; पछी व भा-२ मा 'पण' छे. २९ शुइ, शू व शुं भा-२. ३० कीजइ व भा-२. ३१ अने व भा-२. ३२ नान्हों व भा-२. ३३ करे व भा-२. ३४ भलु व भा-२. ३५ उपरि व भा-२. ३६ करि व, करे भा-२. ३७ छे व भा-२. ३८ सतनूं व भा-२. ३९ छाडीनइ व भा-२. ४० असतनूं व भा-२. ४१ करे व भा-२. ४२ कालइ इ, काठि व, कालि भा-२. ४३ पामीने व भा-२. ४४ पश्चात्ताप व भा-२. ४५ करे व भा-२. [पृ. ९९] ४६ जे व भा-२. ४७ रहुं व भा-२. ४८ करे व भा-२. ४९ ति व. ५० वेगो व भा-२. ५१ थें व भा-२. ५२ वेरीने व भा-२. ५३ वश व भा-२. ५४ पामि व, पामे भा-२. ५५ जे इ व भा-२. ५६ होइ इ व भा-२; आनी पछी व भा-२ मा 'अनेइ' छे. ५७ परिणामि इ व भा-२. ५८ होइ इ व भा-२ ५९ होइ इ, होई व भा-२. ६० कार्य व भा-२. ६१ वाहीये इ, वाहवा व भा-२. ६२ तेवी व भा-२. ६३ ये इ, व भा-२ मा नथी. ६४ व भा-२ मा नथी. ६५ तेथी व भा-२ मा नथी. ६६ अने व भा-२. ६७ ए व भा-२ ६८ व भा-२ मा नथी ६९ व भा-२ मा नथी. ७० आनी पछी व भा-२ मा 'सेवक' छे ७१ जेहो व भा-२. ७२ नर्नो व भा-२. ७३ राज्यनो इ व भा-२. ७४ व भा २ मा नथी. ७५ बोलिशि व भा-२. ७६ सत्वादाने व भा-२. ७७ विपइ इ, विपे व भा-२. ७८ कह्यो व भा-२. ७९ तेन्हे इ व. ८० जे व भा-२. ८१ रापे व भा-२. [पृ. १००] ८२ जाणीनि व भा-२. ८३ मे इ व भा-२. ८४ तेन्हे इ; व भा-२ मां 'तम्ह आगलि' छे ८५ तेथी व भा-२. ८६ वरसे व भा-२. ८७ तोहे व भा-२. ८८ एन्हि व, एन्हे भा-२. ८९ नहीं व भा-२. ९० माटे व भा-२. ९१ व भा-२ मां नथी. ९२ कोपइ भा-१ इ, कोपे व भा-२. ९३ व भा-२ मा नथी. ९४ उतारे व भा-२. ९५ तुमे व भा-२. ९६ नही इ व भा-२. ९७ व भा-२ मा नथी ९८ परि व भा-२. ९९ आनी पछी व भा-२ मां 'ए' छे. १०० कोपइ भा-१ इ व, कोपेइ भा-२. १ अनइ भा-१ इ, अने व भा-२. २ तुम भा-१, तुमे इ व भा-२. ३ आपणे व, आपणे भा-२. ४ मीहालो भा-१, चोडलो व भा-२. ५ घरयांउ भा-१ इ, घर्सीये पण व भा-२. ६ निर्मल हुओ. ७ माट भा-१, माटे इ व, अहींथी शरू थती त्रे पंक्ति व मां नथी. ८ मार्टुं भा-१,

मारे ट भा २ ९ तम्हे भा-१ ड भा २ १० होड भा-१ भा-२, होई ट, आनी पछी पक्तिनो उत्तरार्ध भा-२ मा नथी ११ छेड द भा-२ १२ भन व भा-२ १३ चलें हप्रो १४ तुल्य भा-१ इ १५ मर्मन भा-१ भा २, मर्मन ड, मर्मानि व १६ जाणे व भा-२ १७ आनी पछी व भा-२ मा 'ते' छे १८ हणे व भा-२ १९ मिनन भा-१, मिनने ट, मर्मानि व, मर्मान भा-२ २० व भा-२ मा नथी २१ मारे व भा २ २२ मित्रि भा-१, मर्मीत्रे, प्रधाने भा-२, व मा 'मडा नगी तें' एवो पाठ छे २३ मारियें भा १ २४ शु हप्रो २५ साभत्यु भा १, साभत्यु व भा-२ [पृ १०१] २६ एतग्लान् व भा-२ २७ व भा-२ मा नथी २८ मड भा-१, मेड ट, मे व भा २ २९ कीनृ व भा २ ३० तेथी व भा-२ ३१ जे व भा-२ ३२ तीणि हप्रा ३३ व भा-२ मां नथी ३४ वोयो हप्रो ३५ कर्तो हप्रो ३६ जाउ ड

[९. यज्ञदत्त ब्राह्मण, वाघ, वानर अने साप]

१ वो व भा-२ २ नगर मध्ये व भा-२ ३ वसे व भा २ ४ सदा व भा २ ५ कहे व भा-२ ६ छड भा १ इ, छे व, छे भा २ ७ तु भा १, आ पक्ति व भा-२ मा 'अनड' थी शरु थाय छ ८ हृदय भा-१ ट ९ छ भा १ छे इ, आखी पक्ति व भा २ मा आ प्रमाणे छे

'अनइ तु हृदय कठिन थै निश्चिन छि [छ] ते शु [शृ] ?'

१० कीटी व, कीही भा-२ ११ व भा-२ मा नथी १२ जइतइ भा-१, जैनइ ट, जैनेट व भा-२ १३ छे व भा-२ १४ साभली व भा २ १५ माटे व भा-२ १६ भिक्षानइ व भा २ १७ मये व भा २ १८ तरस्यो व भा-२ १९ सोवतो व भा २ २० हौंउ भा १ व भा-२ २१ पडें व भा-२ २२ दपे व भा-२ २३ एतला इ, एतगांन भा-२ २४ देखतो ड व भा-२ २५ हौंउ व भा २ २६ मनुष्यने ट व भा-२ २७ देपीने ड व भा २ २८ हर्प्यो ड, हरप्या व भा-२ २९ ते व भा २ ३० °थो इ, थी व भा-२ ३१ बोया ड व भा २ ३२ मनुष्य ड व भा २ ३३ छेड व भा-२ ३४ ते भणी व भा-२ ३५ मन्हे इ, व भा-२ मा नथी ३६ करीनेइ व भा-२ ३७ ऊतारि काढि व भा २ ३८ मारु ड व भा-२ ३९ कुटुवने इ, कुटुव एन्हे व भा २ ४० मित्र व, आ सवाद भा-१ मा सक्षेपमा आ

प्रमाणे छे :

"अहो मनुष्य अम्हनि का[टि]; जीव रायानूं मीट्ठ पूण्य." ते बोल्यो, "तम्हा[रो] वीस्वास मूंन्हि नहीं." '

४१ बोल्यो व भा-२. ४२ ताह्रि द, ताहूँ व भा-२; आनी पहेलां ड मां 'अहो सिंह' अने व भा-२ मा 'अने व्याघ्र' छे. ४३ नामि ड, नामें भा-२; आनी पछी ट व भा-२ मा 'मनुष्य' छे. ४४ वीहि व, वीहे मा-२. ४५ बोल्यो भा-१ व भा-२. ४६ व्यवहरतार व भा-२. ४७ एतलाने व, एतलानें भा-२. ४८ छेट व भा-२. ४९ कृतघ्ननें भा-१ ड, कृतघ्ने व भा-२. ५० छूटको व भा-२. [पृ. १०२] ५१ अनट व भा-२. ५२ मम व भा-२. ५३ छुं ड व भा-२. ५४ तुंहि ड, व भा-२ मा नथी. ५५ मारुं ट व भा-२. ५६ सुधी ट. ५७ आणेशि ट व भा-२. ५८ करीनट ट. ५९ काटि व भा-२. ६० पटेड भा-२, व भा-२ मा नथी. ६१ ब्राह्मणें ट, ब्राह्मणि व, ब्राह्मणे भा-२. ६२ बिमार्स्युं व, विमांस्युं भा-२. ६३ जे व भा-२. ६४ जो व भा-२. ६५ बिरुडं व भा-२. ६६ तो व भा-२. ६७ एहुं ड व भा-२. ६८ चौनकी व भा-२. ६९ ऊतारी काट्यु व भा-२. ७० पछिट व, पटेड भा-२. ७१ बोल्यो व भा-२. ७२ साधू भा-२. ७३ मुन्ह ड, मुंन्हेंइ व, मुंन्हेंइ भा-२. ७४ उतारि व. ७५ एहुं ट; व भा-२ मां 'पटेड' थी पंक्ति शरू थाय छे, ते बचे प्रतोमा 'एहुं साभळी' नथी. ७६ आव्यों व भा-२. ७७ वानर ट व भा-२. ७८ ऊतार्यो व भा-२. ७९ पटेड व भा-२. ८० सर्प ट व भा-२. ८१ बोल्यो ट व भा-२. ८२ मुन्हे ड, मुन्हि व, मुंन्हें भा-२. ८३ एहु व भा-२. ८४ बोल्यो व भा-२. ८५ भय व भा-२. ८६ ऊगांजे व भा-२. ८७ बीजे व भा-२; आनी पछी व मां 'ते' अने भा २ मा 'तो' छे. ८८ आनी पहेला व भा-२ मा 'पच्छेट' छे ८९ बोल्यो व भा-२. ९० पूटा व, पूटा भा-२. ९१ पापे व भा-२ ९२ डस्युं व भा-२. ९३ डसूं व भा-२. ९४ मम ड व भा-२. ९५ छे व भा-२. ९६ मुंधी ड व भा-२. ९७ नीहेशि ड. ९८ ब्राह्मणे ड, ब्राह्मणे व भा-२. ९९ सर्प ड ट. १०० ऊतार्यो ट व भा-२. १ कहूना व. २ हीआ ड; भा-१ मां तत्र सर्वेमां नीचेनां वाक्योवाळी वार्ता आगळ वधे छे :

'प्रति अनुक्रमि इन सम कीरा. पटइ ते प्रति व्याघ्र पटइ वाघ वानर सर्प कहूना हीआ.'

३ व भा-२ मां नथी. ४ पाननूं व भा-२. ५ ऊतारवु व भा-२. ६ आ पंक्तिनो पूर्वार्ध व भा-२ मां आ प्रमाणे छे :

'अहो जे मोटा शृंगनो पर्वत ए दीसे छइ तेन्हि [तेन्हे] उत्तरभागि गुफा छेइ.'

७ मोटा भा-१ इ. ८ जे व भा-२. ९ माटें व भा-२. १० तूहें भा-१ भा-२, तूंन्हि व. ११ उपकार हप्रो. १२ उपकारनो भा-१ इ, उपकारनुं व भा-२. १३ अनेरि भा-१. १४ भवि-जन्मि भा-१, जन्मातरे व, जन्मातरि भा-२. १५ रण व, रिणि इ. १६ हो भा-२. १७ एहुं हप्रो. १८ चाल्यो व भा-२. १९ कन्हि व, कन्हे भा-२. २० आश्रमनो व भा-२. २१ छे व भा-२. २२ पधारवुं व भा-२. २३ कही भा-१ व भा-२. २४ ग्यो व भा-२; पछीनी पंक्ति व भा-२ मा 'पच्छेइ' थी शरू थाय छे. २५ गाटें भा-१, गाढ्ढ इ व, गाडुं भा-२. २६ होइ हप्रो. २७ तिहा इ; व भा-२ मा 'तिवारें तें हुं स्मरवो' एवो पंक्तिनो उत्तरार्ध छे. २८ हुं भा-१ इ. २९ एहु व भा-२; भा-१ मा आ पंक्ति नथी. ३० पच्छे व भा-२. ३१ भा-१ मां नथी. ३२ °थी व भा २. ३३ वली वली हप्रो. ३४ लागो हप्रो. ३५ मुन्हि व, मुन्हि भा-२. ३६ वाडि व, वाढि भा-२; आ पंक्ति भा-१ मा नथी. ३७ कृपाइं भा-१, कृपाइ इ, कृपा करी व भा-२. ३८ जाणी भा-१. ३९ पच्छे भा-२; आ पंक्ति व भा-२ मा नथी. ४० बोल्यो भा-१ इ भा-२ ४१ व भा-२ मां 'अहो' थी पंक्ति शरू थाय छे. ४२ भृगुकच्छि व भा-२. ४३ घडवुं भा-१ इ. ४४ वेचवुं भा-१ इ. ४५ होइ भा-१ इ. ४६ तिवारि इ; आ पंक्ति व भा-२ मां आ प्रमाणे छे :

'जो तम्हारे सुवर्ण्ण घडवुं वेचवु होइ तिवारे मुं भणी कृपा करज्यो.'

४७ बोली भा-१ व भा-२. ४८ ग्युं भा-१, ग्यो इ व भा-२. ४९ पछेइ इ व भा-२. ५० तीणे इ, तीणें व भा-२. ५१ ब्राह्मणे इ व भा-२. ५२ भमता इ व भा-२. ५३ काई इ, काइ व भा-२. ५४ पामु इ. ५५ पछे व भा-२. ५६ भणीं व भा-२. ५७ चालता इ व भा-२. ५८ स्मरीनइ इ, सांभरीनइ व भा-२. ५९ कन्हे इ, समीपि व भा-२. ६० आव्यो इ व भा-२. ६१ वानर इ व भा-२. ६२ दीठो इ व भा-२. ६३ वानरें भा-२. [पृ. १०३] ६४ हडा भा-२. ६५ आणी भा-२. ६६ ब्राह्मणनुं इ व भा-२. ६७ कीधु इ, कीधो व भा-२. ६८ आनी पछी व मां 'काई' अने पं ३९

भा-२ मां 'काई' छे. ६९ दिहाडी इ, सदा व भा-२. ७० तें भा-२. ७१ कीधूं व भा-२. ७२ मुंन्हें व, मुन्हें भा-२. ७३ वानरी व, वानरिं भा-२. ७४ वाघि इ, व्याघ्र व भा-२. ७५ संतोषथी व भा-२. ७६ ब्राह्मणनिं व. ७७ बहेरपा व भा-२. ७८ व भा-२ मां 'व्याघ्र बोल्यो' एवो शब्दक्रम छे. ७९ व भा-२ मां 'अहो' थी पंक्ति शरू थाय छे. ८० राजानो इ व भा-२. ८१ आनी पछी व भा-२ मां 'असवार थै' एवा शब्द छे. ८२ मुं व भा-२. ८३ पूठें व भा-२. ८४ में इ व भा-२; व भा-२ मां पंक्तिनी शरूआतमां 'ते' पछी 'मे' छे. ८५ तेहु इ, तेन्हुं व भा-२. ८६ व भा-२ मा अहीं 'ए' छे. ८७ जाउ व भा-२. ८८ सर्व व भा-२. ८९ जाणीने व भा-२. ९० पछेइ व भा-२. ९१ तीर्णे व भा-२. ९२ मुन्हे इ, मून्हि व, मून्हं भा-२. ९३ व भा-२ मां अहीं 'ईहा' छे. ९४ दे व भा-२. ९५ बोयो व भा-२. ९६ मे इ, में व भा-२. ९७ व भा-२ मां नथी. ९८ मेची इ व भा-२. ९९ आवि व भा-२. १०० बोल्यो व भा-२. १ 'सोनुं देखाडो' एवो शब्दक्रम व भा-२ मां छे. २ व भा-२ मां 'पछइ' पंक्ति शरू थाय छे. ३ पछी व भा-२. ४ चीनवतो व. ५ चींतवी व भा-२. ६ बोल्यो व भा-२. ७ केन्हे इ, केन्हि व, केन्हें भा-२. ८ आवुं इ व भा-२. ९ वेइु इ, बेइसो व भा-२. १० जै व भा-२; आनी पछी व भा-२ मां 'बोल्यो' छे. ११ व भा-२ मा पंक्तिनो पूर्वार्ध आ प्रमाणे छे:

'ते सर्व ग्रहणु देपी राजा बोल्यो.'

१२ तें भा-२. १३ पामुं इ. १४ माह्रे व भा-२. १५ तीणे इ, तीर्णि व, तीर्णे भा-२. १६ आणुं इ, व भा-२ मां आनी पछी 'छेइ' छे. १७ पछिइ व, पछेइ भा-२. १८ चीनवतो इ, चींतवतो व भा-२. १९ इणें व भा-२. २० माह्रो व भा-२. २१ राजाइं इ व भा-२. २२ विहाणे व भा-२. २३ सूली इ व भा-२. २४ लावो इ, ल्यावु व भा-२. २५ तीणे व, तीर्मे भा-२. २६ ब्राह्मे व भा-२. २७ व भा-२ मां पंक्तिनो उत्तरार्ध आ प्रमाणे छे:

'वाघी मारतां पछी ते सर्प्प स्मरयो.'

२८ सर्प्प इ. २९ स्मरु इ. ३० पछे व भा-२. ३१ स्मर्यो व भा-२. ३२ बोल्यो व भा-२. ३३ तून्हे इ, तून्हि व, तून्हें भा-२. ३४ बोयो व भा-२; पछी व भा-२ मां 'जे' छे. ३५ मुंहिं व, मून्हें भा-२. ३६ मुंकावि इ भा-२, मुकावि व. ३७ सर्प्प इ व भा-२. ३८ बोल्यो व भा-२; आनी पछी व

भा-२ मां 'जे' छे, ३९ स्त्रीनिंहि व, स्त्रीन्हें भा-२. ४० इसु व भा-२. ४१ अनेरानें व भा-२. ४२ व भा-२ मां नथी. ४३ व भा-२ मा 'मंत्रे औषध' एवो शब्दक्रम छे. ४४ ताहु व भा-२. ४५ क्रतरेशि व भा-२. ४६ मुंकाएशि इ, मुंकाएसि व भा-२. ४७ ए इ व भा-२. ४८ पच्छे व भा-२. ४९ सर्प इ, सर्पे व भा-२; पछी व भा-२ मां 'ते' छे ५० व भा-२ मां नथी. ५१ पच्छे व भा-२. ५२ घर० व भा-२. ५३ आकुल व भा-२. [पृ. १०४] ५४ क्रतरे व, क्रतरेइ भा-२. ५५ पछे इ, पच्छं व भा-२. ५६ फरयो इ, फेरव्यो व भा-२. ५७ टंढेरो इ. ५८ साभली व भा-२. ५९ वहतो इ व भा-२. ६० व भा-२ मा नथी. ६१ राणीनें व भा-२. ६२ क्रतारेशि व भा-२. ६३ पच्छी व भा-२. ६४ राजना सेवक व भा-२; पछी व मा 'तेन्हि' अनें भा-२ मा 'तेन्हे' छे. ६५ ब्राह्मणने इ, ब्राह्मणनें व भा-२. ६६ व भा-२ मा नथी. ६७ लेइ व भा-२. ६८ ग्या इ व भा-२. ६९ चोरयो इ व भा-२. ७० राणीनिंहि व, राणीन्हें भा-२. ७१ पछेइ व भा-२. ७२ समीपि व भा-२. ७३ डैनेइ व भा-२. ७४ माडला व भा-२. ७५ पछेइ व भा-२. ७६ तेन्हिं व, तेन्हे भा-२. ७७ थैं इ व भा-२. ७८ देवीनेइ व भा-२. ७९ व भा-२ मां नथी. ८० कीधी व भा-२. ८१ पूछ्यो व भा-२. ८२ कहे व भा-२. ८३ प्रकारे व, प्रकारें भा-२. ८४ ते व भा-२. ८५ साभलीनेइ व भा-२. ८६ मानीने व भा-२. ८७ सोनारने इ, सोनारनें व भा-२. ८८ देशोट्ठ इ, देसोटो व भा-२. ८९ व भा-२ मां 'देतो हौउ अनद' एवो पाठ छे. ९० देईनेइ व भा-२. ९१ करतो हौउ व भा-२. ९२ तीणे इ, तीणें व भा-२. ९३ व भा-२ मा नथी. ९४ आणी व भा-२. ९५ सघाते इ, सयुक्त व भा-२, पछी व भा-२ मा 'अनेक' छे. ९६ भोगवतो व भा२, ९७ व भा-२ मा 'सुपें यज्ञ घणा करतो रह्यो एवो पंक्तिनो उत्तरार्ध छे. ९८ रहु इ.

९९ तेथी व भा-२. १०० चोरयो इ व भा-२. १ जातां व भा-२. २ जो व भा-२; आ चरणनो अनुवाद व भा-२ मां आ प्रमाणे छे:

'जो वारया न रहे तो जे हित होइ ते करावबुं.'

३ तोहे भा-१ इ. ४ करवुं भा-१ इ. [पृ. १०५] ५ हित व भा-२. ६ करता भा-१ व भा-२. ७ सतनो व भा-२. ८ करेइ भा-१ इ, करेइ व भा-२. ९ मुख्य प्रत 'वि' मांथी पडी गयेलो आ अनुवाद भा-१ मां लीधो छे.

१० अहित व भा-२. ११ करे व भा-२. १२ तेन्हुं भा-१ इ, तेहुं व भा-२. १३ भलो व भा-२. १४ फैडै व भा-२. १५ तेह ज व भा-२. १६ नि पाप ये भा-२. १७ तेह ज व भा-२. १८ चित्तने व भा-२. १९ अनुसरे हप्रो. २० व भा-२ मां 'बुद्धिमत' पछी 'ते' छे. २१ जेन्हं भा-१ इ भा-२, जेन्हि व. २२ माने हप्रो. २३ व भा-२ मां 'लक्ष्मी ते' एवो शब्दक्रम छे. २४ करेइ व भा-२. २५ ये हप्रो. २६ र्श्रीयें भा-१ इ, श्री देपी व भा-२. २७ पामें भा-१ इ, पामे व भा-२. २८ व भा-२ मां आ चरणना उत्तरार्धनो अनुवाद आ प्रमाणे छे:

'निःशंक हित कहे'

२९ पामीनेइ व भा-२. ३० उद्वेग व भा-२. ३१ पामेइ व भा-२. ३२ तेथी व भा-२. ३३ तम्हनें हप्रो. ३४ °नो व भा-२. ३५ कामने व भा-२. ३६ माहूं हप्रो. ३७ मान्या इ व भा-२; भा-१ मां 'न मानो तो' एवो पाठ छे. ३८ इच्छाईं व, इच्छाई भा २. ३९ प्रवर्त्तो इ प्रवर्त्तशु व भा-२. ४० व भा-२ मां नथी. ४१ सेवकनइं भा-१, सेवकने इ, सेवकनें व भा-२. ४२ देयो व भा-२. ४३ काम व भा-२. ४४ विषे व, विषें भा-२. ४५ नें व भा-२. [पृ. १०६] ४६ विमासिइ भा-१, विमासिए इ, विमासे व भा-२. ४७ मदनमत्त इ. ४८ परिं हप्रो. ४९ हींडि व, हींडे भा-२. ५० व भा-२ मां नथी. ५१ जिवारिं व. ५२ अभिमाननेइ व भा-२. ५३ सेवकने व भा-२. ५४ दूषण व भा-२. ५५ दे व भा-२. ५६ आपणो व भा-२. ५७ चींतवतो भा-१ भा-२, चींतवतो इ व. ५८ एणि भा-१, ईणें व भा-२. ५९ शास्त्रदृष्टिं व भा-२. ६० वहूं व भा-२. ६१ पाम्यो व भा-२. ६२ छेइ व. ६३ विमासो व भा-२. ६४ वैरी इ व भा-२. ६५ ईणी व भा-२. ६६ विमासीनइ इ, विमासीनेइ व भा-२. ६७ कालने व भा-२. ६८ निगमें व भा-२. ६९ व भा-२ मां नथी. ७० एहो इ, एहुं व भा-२. ७१ छुं व भा-२. ७२ माटे व भा-२. ७३ कहवा व भा-२. ७४ मुख्य प्रत 'वि' मांथी पडी गयेला आ शब्द इ मांथी लीधा छे. ७५ छूं व भा-२. ७६ बोल्यूं भा-२. ७७ छिइं व, छेइ भा-२. ७८ अणेपूछ्या इ, अणपूछ्या व भा-२. ७९ इच्छये इ, इच्छिये व भा-२. ८० बोल्यो इ व भा-२. ८१ आ अने आनी पछीनी पंक्ति व भा-२ मां आ प्रमाणे छे:

'"अहो न्याय छता वृथा शुं निरा करीये?" दमनक बोल्यो, "ए रायीयि

[रापीये] ए किहांनो न्याय ?"

८२ न्याय इ. ८३ नरा इ. ८४ करवो इ. ८५ बोलु इ. ८६ उपवार इ व भा-२. ८७ नहीं व भा-२. ८८ तेन्हि व, तेन्हें भा-२. ८९ वर्मे इ, वर्मे व भा-२. ९० व भा-२ मां नथी. ९१ वाणीयें व भा-२. ९२ नहीं व भा-२. ९३ बोरयो इ व भा-२; पछी व भा-२ मां 'जे' छे. ९४ करे व भा-२. [पृ. १०७] ९५ पाडउ इ. ९६ ए व भा-२. ९७ अन्ने व भा-२. ९८ भक्ष करे व भा-२. ९९ तोहे व भा-२. १०० व भा-२ मां नथी. १ जो व भा-२. २ आपणपे इ, आपणपहें व भा-२. ३ न व भा-२. ४ करे व भा-२. ५ तो व भा-२. ६ पाहिं व भा-२. ७ करावशि इ, कराविशे व भा-२. ८ लोकने व भा-२. ९ समर्थ होइ प्रेरे व भा-२. १० पाहाणनी व भा-२. ११ शल व भा-२. १२ आपणपहे इ व भा-२. १३ समर्थ न होइ व भा-२. १४ तोहई इ, तोहे व भा-२. १५ पाडाने व भा-२. १६ छेरावे व भा-२. १७ बोरयो व भा-२. १८ करशि इ, करशे व भा-२. १९ बोल्यु इ, बोरयो व भा-२. २० तेहने इ, तेन्हि व, तेन्हे भा-२. २१ ताहूं व भा-२. २२ शरीरि व, शरीरि भा-२. २३ व भा-२ मा नथी. २४ चोरा व भा-२. २५ होइ इ, थाइं छें व भा-२. २६ पासे व भा-२. २७ करे व भा-२. २८ पडिशि इ, पडशे व भा-२. २९ ताहूा व भा-२. ३० व भा-२ मां 'क्षत चादामाहि' एवो शब्दक्रम छे. ३१ पैसी व भा-२. ३२ ताहूा व भा-२. ३३ पैससें व भा-२. ३४ तोहइ इ, अहींथी शरु थतो पंक्तिनो उत्तरार्ध व भा-२ मा नथी. ३५ पामेशि इ. ३६ जेन्हुं ह्प्रो. ३७ तेन्हे भा-१ इ, तेन्हि व, तेन्हे भा-२. ३८ देवो ह्प्रो. ३९ टिट्टिभ व भा-२. ४० व भा-२ मा अहीं 'जे' छे. ४१ तेन्हें भा-१ इ भा-२, तेन्हि व. ४२ दोषें ह्प्रो. ४३ नाभि भा-१, नामे व भा-२. ४४ बोरयो व भा-२, ४५ कहतौ भा-१. ४६ होइ इ.

[१०. जू अने माकण]

१ वासनेइ भा-१, वासने इ, वासना व भा-२. २ हुती भा-१. [पृ. १०८] ३ पछेडीनइ व भा-२. ४ नामें व भा-२. ५ रहे व भा-२. ६ करे व भा-२. ७ देखाइ व भा-२. ८ रहे व भा-२. ९ व भा-२ मा 'इणी परिं' नथी पण [x] ते [१] थी पंक्ति शरु थाय छे. १० व भा-२ मां नथी. ११ शय्या व भा-२.

१२ ऊारि व भा-२. १३ व भा-२ मां 'तिहां राजानां शयन' एवो पाठ छे. १४ ओढणां ह्प्रो. १५ गंगानी व. १६ आनी पछी व भा-२ मां 'अनइ' छे. १७ 'एहुं शयन' भा-१ मां नथी. १८ देषीनइ इ. १९ महा इ, भा-१ व भा-२. २० 'ते कोमल......मांकण' पंक्तिनो आ पूर्वार्ध भा-१ मां नथी. २१ माटे व भा-२. २२ भ्रमतो ह्प्रो; व भा-२ मां पंक्तिनो उत्तरार्ध आ प्रमाणे छे:

'......माकण तिहां भ्रमतो हीउ; तेन्हि तिहां मंदविसर्पिणी नामे जू मिली.'

२३ ये भा-१ इ. २४ मांकण भा-१, माकणलें इ, मांकणने व, मांकणनें भा-२. २५ देखीनइ व भा-२. २६ दु:ष भा-१ व भा-२, दुषेने इ. २७ व भा-२ मां आ पंक्ति आ प्रमाणे छे:

'अहो अग्निमुष तुं ईहां राजानें शयनि किम आव्यो ?'

२८ तिहां भा-१ इ. २९ वेगो व भा-२; पछी व भा-२ मां 'तुं' छे. ३० परहु भा-१, पहर इ, व भा-२. ३१ पछेर व भा-२. ३२ बोल्यु भा-१ इ, बोल्यो व भा-२. ३३ व भा-२ मां नथी. ३४ ब्राह्मणनें व भा-२. ३५ पछी व भा-२ मां 'वडो' छे. ३६ व भा-२ मां 'वर्णनें सघलानें' एवो शब्दक्रम छे. ३७ भर्त्तार व. ३८ सर्वनो व भा-२; भा-१ मा 'अनइ सर्वनई अतिथि गुरु' एवो शब्दक्रम छे. ३९ अनेइ व भा-२. ४० सतनि व, सतनें भा-२. ४१ भा-१ मां नथी. ४२ 'वात कह्या' शब्द व भा-२ मां नथी. ४३ छेइ व भा-२. ४४ मिला व, मिल्या भा-२. ४५ कीधूं व भा-२. ४६ साथें भा-१, साथै इ, साथि व भा-२. ४७ चाल्या भा-१ इ. ४८ परिं व भा-२. ४९ मार्टेइ व, माटेइ भा-२. ५० ताहूो भा-१ इ, ताहू व भा-२. ५१ में भा-१ व, मे इ भा-२. ५२ सुखे भा-१ इ, सुखं व, सुखें भा-२. ५३ तेहनां व भा-२. ५४ पुष्टिने भा-१ इ, पुष्टि व भा-२. ५५ वरें व भा-२. ५६ ये भा-१ इ. ५७ आह्वा भा-१ इ, एह्वा व भा-२. ५८ शयन व भा-२. ५९ विशइ भा-१ इ, विषेइ व भा-२. ६० तेन्हुं ह्प्रो. ६१ निश्चिंत व भा-२. ६२ व भा-२ मां नथी. ६३ सरपुंउं व भा-२. ६४ मुख्य प्रत कि मा 'ते अनेक औषध, उत्तम' आ शब्द व भा-२ मां नथी. [पृ. १०९] ६५ घृत व भा-२; पछी व भा-२ मां 'शर्करा' छे. ६६ हीसे व भा-२. ६७ व भा-२ मां 'अहो' थी पंक्ति शरू थाय छे. ६८ हुं व भा-२. ६९ व भा-२ मा 'आ' पंक्तिने अन्ते छे. ७० आपणानें भा-१ व भा-२, आपणाने इ. ७१ व भा-२ मां नथी. ७२ अणविमाशि इ, विमस्या पाखे व भा-२. ७३ व भा-२ मां नथी. ७४ वरे

व भा-२. ७५ व भा-२ मां नथी. ७६ पामेइ व भा-२. ७७ पछे व भा-२. ७८ तीगीं व, तीगीं भा-२; पंक्तिनी शरुआतमां व मां 'पछी' अने भा-२ मां 'पछे' छे. ७९ दाक्षने व भा-२. ८० अंगीकार इ. ८१ कर्युं व भा-२. ८२ तीगें भा-१ इ भा-२, तीणि व. ८३ मांक्रणें भा-१ भा-२, मात्रणे इ, मात्रणि व. ८४ कथा ह्प्रो. ८५ जु इ, ते व भा-२. ८६ व भा-२ मां आ पंक्ति आ प्रमाणे छे :

'पछे ते जूई सांभली.'

८७ माक्रणि भा-१, माक्रणि इ, माकणें व भा-२. ८८ भणु भा-१ इ, भण्यो व भा-२. ८९ ये भा-१ इ. ९० पुगे भा-१ इ, पोगे व भा-२. ९१ कोप्यो भा-१ इ, कोप० व भा-२. ९२ थको भा-१ इ, °थी व भा-२. ९३ मानेइ व भा-२. ९४ तीगें भा-१ व भा-२, तीगे इ. ९५ ए ह्प्रो. ९६ निण्य भा-१ इ, नण्य व भा-२. ९७ अगमान्य ह्प्रो. ९८ एहुं ह्प्रो. ९९ साभली व भा-२. १०० व भा-२ मां 'अहो' थी पंक्ति शरू थाय छे. व मा 'मांक्रण' शब्द नथी १ जोईनइ भा-१ इ, जोईनेइ भा-२, जोइ व. २ राजा व भा-२. ३ भक्षवो व भा-१. ४ माक्रण भा-१. ५ बोल्यो इ व भा-२. ६ अहु व, अहु भा-२. ७ व भा-२ मां 'हु न जाणु' एवो शब्दक्रम छे ८ तुं इ, व भा-२ मां 'तू कहि' शब्द नथी. ९ जिवारें ह्प्रो. १० अन्य ह्प्रो. मां नथी. ११ इणे व. १२ तिवारिं भा-१ इ भा-२, तिवारइ व. १३ पुग व भा-२. १४ विषे व भा-२ १५ डसवो ह्प्रो. १६ मात्रणें भा-१ इ भा-२, माक्रणि व. १७ पछइ भा-१ इ, व भा-२ मां नथी. १८ आ पंक्ति व भा-२ मा आ प्रमाणे छे :

'एहे राजा प्रथम रात्रिं [रात्रे] शय्याइं आवी सूतो तिवारें ज मांक्रणें भूच्येथें [भूच्येथें] वांसे डस्यो राजा, अवसर विना डस्यो.'

१९ तीगें भा-१, तीणे इ. २० पामेंइ भा-१, पामेइ इ २१ याशइ भा-१ इ. २२ डस्यो भा-१ २३ दाधो ह्प्रो. २४ वींठीयें व भा-२. २५ पाधो ह्प्रो २६ होइ ह्प्रो. २७ तेहो भा-१ इ, एहो व भा-२. २८ वेगो ह्प्रो. २९ ऊठी व भा-२. ३० वासो ह्प्रो ३१ चचूआलतो भा-१ इ, चचूआलवा लागो व भा-२; पछीनो पाठ व भा-२ मां आ प्रमाणे छे :

'पासे सेवक हता तेन्हि [तेतहे] कहु [कर्युं], जे हुं जीवि केहि [केहे] पाधो ते जोउ. पछइ ते मांक्रण राजानु वचन सांभलीनिइ [सांभलीनेइ] पाटलानी

[पाटल्यानी] चोपराडिमाहि पैठो पीईतु. ते सेवक दीवें परी तिहां जोतां जोतां पाटलटेडीने [पाटलटेडीने] छेहि मंदविसर्पिणी जू दीठ परिवार समेत. पछे ते जू परिवार समेत मारी.

३२ पासे भा-१ इ. ३३ रमुं इ. ३४ गे भा-१ इ. [पृ. ११०] ३५ सेन्द भा-१ इ. ३६ हौउ भा-१ इ. ३७ हुं भा-१ इ. ३८ शय्याई भा-१ इ. ३९ जीवि इ. ४० पामो भा-१ इ. ४१ छुं भा-१ इ. ४२ भा-१ मां 'ते जोउ' शब्दोथी पंक्ति पूरि थाय छे. ४३ आनी पछी भा-१ मां 'नाशी' छे ४४ पीईनो भा-१, पीइतो इ. ४५ पइटो भा-१ इ. ४६ तीणे भा-१ इ. ४७ सेवके भा-१ इ. ४८ दीवीयें भा-१, दीवीये इ. ४९ लागा भा-१ इ. ५० छेहि भा-१ इ. ५१ परिवार भा-१ इ. ५२ समेति भा-१ इ. ५३ पछी भा-१ मां 'ते' छे.

५४ पड़तो भा-१ इ व, पड़तौ भा-२. ५५ हौउ भा-१ इ व, हौउं भा-२. ५६ हुं भा-१ इ, हूं भा-२. ५७ तेयी व भा-२. ५८ स्वामी व भा-२. ५९ व भा-२ मां नथी. ६० व भा-२ मां नथी. ६१ न कीजूं व भा-२. ६२ बोल्यु भा-१, बोल्यूं व भा-२. ६३ छेइ व भा-२. ६४ आपणो व भा-२. ६५ छाडी व भा-२. ६६ परवर्गनें० भा-१ इ, जे परवर्ग विषि० व भा-२. ६७ होई भा-१ इ, व भा-२ मां नथी. ६८ मृत्यु व भा-२. ६९ पामे हुओ. ७० वकुदुम व भा-२; मुख्य प्रतमांथी पडी गयेला कौंसमांना शब्द भा-१ मांथी लीधा छे. ७१ मुख्य प्रतमांथी पडी गयेलो श्लोकनो अनुवाद अने बीजा केटलाक शब्द व मांथी लीधा छे. भा-१ इ मां श्लोकनो अनुवाद आ प्रमाणे छे :

'आभ्यंतरना यौणे त्यजा, बाहिरिना अभ्यतर कीया ते मूर्ख चउख भुइ मूइ छिइ जिम तिम ते पुरुष थाइ.'

७२ बोल्यु भा-१ इ.

[११. गळीथी रंगायलो शियाळ]

१ भा-१ मा 'को' थी पंक्ति शरू थाय छे. २ व भा-२ मां नथी. ३ दइइं न भा-२. ४ 'रहे' व भा-२ मां पंक्तिने अन्ते छे. ५ एड्डि व. ६ नामें भा-२. ७ भूख्यो व भा-२. ८ राने व भा-२; व भा २ मा 'भूयो'-पछी

रात्रि' छे ९ आनी पछी भा १ मा नीचे प्रमाणे शब्द छे

'ए दृष्टांत सविस्तर सयोंगे छइ'

१० कीधुधु भा १ इ, कीधो व, कीधो थका भा २ ११ व भा २ मां नथी १२ नाशतोधु भा १ इ, नासतो व भा २ १३ व भा २ मा पक्तिनो उत्तरार्ध आ प्रमाणे छे

' घर मर्ध्य आव्यो, आकुल थ गलीना घुड मध्ये पड्यो '

[पृ १११] १४ पड्यु भा-१ इ १५ पछेइ व भा-२ १६ आ पंक्ति भा-१ मा 'पछइ सीयाल नीकली वनमाहि ग्यो' ए प्रमाणे छे व भा-२ मां आ पक्ति आ प्रमाणे छे

'पछेइ शीयाल घटे गलाना घुडथी नीकली वनमाहि ग्यो'

१७ वनमाहिना व भा-२ १८ गलीपरड्यु व भा-२ १९ धीहता भा-१ २० कहता व भा-२ २१ मोटो हुग्रो, आ पंक्ति व भा-२ मां आ प्रमाणे छे ·

'ए मोटो अपूर्व जीव दीसे छेइ, वनमाहि नवो आव्यो छेइ'

२२ वन० भा १ इ २३ तेन्हो व भा २ २४ जाणीये हुग्रो, पछी व भा २ मा 'जे' छे २५ केहो व भा २ २६ मारशे भा-१ व भा २ २७ अनेयि भा १, अनरे व भा २ २८ भा १ मा नथी २९ जईइ भा १, जैये इ व भा २ ३० वोल्यो व ३१ छे व भा २ ३२ जेन्ही व, जेन्हीं भा-२ ३३ आनी पछी व भा २ मा 'ए' छे ३४ जाणीये भा १ इ, जाणीयें व भा २ ३५ तेन्हो व भा २ ३६ वरवो हुग्रो ३७ जो व भा २ ३८ कुशल व भा २ ३९ वाछीये व भा २ ४० तो हुग्रो ४१ चीतवतो व भा २ ४२ माहू भा १ इ, माह्लो व भा २ ४३ देपीन व भा २ ४४ नासि व, नासें भा-२ ४५ छ भा २ ४६ वुद्धि व भा २ पछी व भा २ मा 'करी' छे, भा १ मा आ पक्ति आ प्रमाणे छे

'तु एह सेवक करु बुद्धि करी'

४७ जीवनें हुग्रो ४८ मुधी हुग्रा ४९ सव व भा-२ ५० भा १ व भा २ मा नथी ५१ मावल्यु भा १ इ, मोकल्यो व भा २ ५२ सव व भा-२ ५३ मुन्हि व, मुन्हे भा २ ५४ दीधू व भा २ ५५ छि व, छे भा २ ५६ पछे व, पछ भा २ ५७ साभली व भा २ ५८ व भा २ मा नथी ५९ व्याघ्र व भा २ ६० चीतरा व भा २. ६१ ससा व भा २ ६२ हरिण

व भा २   ६३ त व भा २   ६४ रावणाइ व भा २   ६५ जरता हप्रा ६६ यठा ऽ भा पछि व भा २ मां आ प्रमाण छे

'पछ त गिद्धादिक दुरजीनो मांग आणीन यैठा शीयाग्न पसरावता हौआ'

भा अन आगी पछीनी पंक्ति भा १ मां नथी

६७ पाग व भा २   ६८ शीआरे व भा २   ६९ कन्हया व भा २ ७० व भा २ मां 'आपणा शीआर' एवो शब्दक्रम छे   ७१ करी व भा २ ७२ व भा २ मां नथी   ७३ व्याघ्रात्किन इ व भा २   ७४ रापता इ व भा २ ७५ ताणइ इ, तीग त भा २, भा १ मां नथी   ७६ सिंहन हप्रा   ७७ आना पछी व भा २ मां शीआर' छे   ७८ शाभिन्नन व भा २   ७९ आपणहं व भा २   ८० भा १ मां इ नथी व भा २ मां 'माटे छनातो [छनाता] हौउ' एवी पंक्तिनो उत्तराध छे   ८१ शब्द भा १ ~   ८२ करता हप्रा   ८३ तह व भा २   ८४ शब्द करी व भा २   ८५ व भा २ मां नथी   ८६ शीआलाउ भा १, शीयालीयु इ   ८७ अन्य हप्रो मां नथी   ८८ वाझा व भा २   ८९ जाणी व भा २   ९० तेह भा १ इ भा २

[पृ ११२]   ९१ तथी व भा २   ९२ ए भा १ इ एह्यु व भा २ ९३ सांभलान‌इ व भा २   ९४ पिंगल भा १   ९५ वाल्या हप्रा   ९६ त व भा २   ९७ जाणीने व भा २   ९८ एह व भा २   ९९ युद्धवाना हप्रा १०० तु हप्रा   १ वाग व भा २   २ विदार हप्रा   ३ वीहता भा १   ४ मारवान हप्रा   ५ हाइ हप्रा   ६ तिवारिं भा १ इ तिवार व भा २   ७ मारदा व भा २   ८ व भा २ मा नथी   ९ वाली व भा २   १० ग्यु भा १ इ गयो व भा २ आनी पछी भा २ मा एक वाक्त नथी   ११ ति व   १२ कह भा १ भा २, कन्ह इ, कहि व   १३ सरयो भा १ इ, व भा २ मा अहा 'वै' छे १४ रह्या हप्रो   १५ वाल्या व भा २   १६ छेइ व छेइ भा २   १७ निति इ दिवसे व भा २   १८ दीठु भा १ इ दीठो व भा २   १९ छ व भा २ २० सेवकन व भा २   २१ छे व छि भा २   २२ ये० भा १ इ   २३ चित्तन हप्रा   २४ लिप्रात्त हप्रा   २५ व भा २ मा नथी   २६ राजसरकन व, राजसेवकन भा २   २७ होइ व भा २   २८ व भा २ मा नथी   २९ पछे व भा २   ३० पछे व भा २   ३१ दुखें व भा २   ३२ व भा २ मा नथी ३३ श्राप हप्रा   ३४ याधीया व भा २   ३५ सदा व भा २   ३६ सवक व भा २   ३७ करेइ इ   ३८ कह व भा २   ३९ मुआ व भा २

[पृ ११३] ४० ये भा-१ इ ४१ व भा-२ मा नथी ४२ कीधउ इ; व भा-२ मां 'कीधुं' पछी 'हडुं' छे. ४३ मृतिरो भा-१ इ, श्वान व भा-२, आनी पहेलां व भा-२ मा 'जेथी' छे ४४ इच्छां व भा-२. ४५ रहिइ व, रहेइ भा-२. ४६ व भा २ मां 'राजानी आज्ञा रहे' एवो पक्तिनो उत्तरार्ध छे ४७ मुवु भा-१, मूधु इ व भा-२ ४८ ल्घु व भा-२ ४९ भोजन व भा-२ ५० यतीन ह्रप्रो. ५१ करे व भा-२ ५२ करे व भा-२. ५३ ए व भा-२. ५४ आपणो ह्रप्रो ५५ अनेइ व भा-२. ५६ पीयारा ह्रप्रो ५७ चित्तनी भा-१ इ, चित्तन व, चित्तने भा-२ ५८ व भा-२ मा नथी ५९ व भा-२ मां नथी ६० तेन्हे भा १ इ, ते व भा-२ ६१ करे व भा-२ ६२ तीण ह्रप्रो ६३ आपणू व भा-२ ६४ अहीं व भा-२ मां 'तेथी' छे ६५ सेवक्न ह्रप्रो ६६ कहे भा-१, क्हे इ, व भा-२ मा नथी ६७ पामीनेइ व भा-२. ६८ व्यसनीनी व भा-२ ६९ छे व भा-२ ७० कूणनु व भा-२. ७१ ग्रह्यु व भा २ ७२ छे व भा-२ ७३ व भा-२ मा आ पक्ति आ प्रमाणे छे

'दुर्जननी जाल मध्य पड्यो कूण ग्यो छेइ ?'

७४ पर्चे व भा २ ७५ चींतववु व भा २ [पृ ११४] ७६ व भा-२ मां नथी ७७ बोल्वा व भा-२ ७८ बोल्यो व भा २ ७९ तू व भा २ ८० छेइ व भा २ ८१ सिंह व, सिंहे भा-२, आनी पछी व भा-२ मा नीचे प्रमाणे पाठ छे

' . .. जे सजीवक्न मारी आज समस्त जीव तृप्त कर तेन्हिं [तेन्हे] साभली मोटु कष्ट पाम्यो छु तो हु कहू छु म सिहने [सिहन] कह्य जे स्वामिन् ए युक्त नही जे मित्रदोह कीने * [पछेइ क्रोध्यो सिंह बाल्यो, तृण भक्ष करे तेस्यु अम्हारे स्वभावें वैर, तेहणे दोष नही हवे युक्त होइ ते करि] पछेइ सजीवक वज्र पड्या सरपु वचन साभली दु ख पाम्यो, दमनकना वचननो विश्वास आणीने परम परम दु ख पाम्यो पछे चेनना पामीनइ बोल्तो हौउ '

८२ कहता भा १ इ ८३ होइ भा-१ इ ८४ ये भा-१ इ ८५ बोल्यो भा १ ८६ करे व भा २ ८७ कुपात्रनिं व ८८ पोसे व भा-२ ८९ कहि व ९० अने व भा २ ९१ मध्य व भा २ ९२ वरसें व भा २.

* आनी पछी व मा बे पक्ति पडी गयेला छे, तेटला पूरतो कासमा भा-२ नो पाठ छे

९३ व भा २ मां आ श्लोकनो अनुवाद आ प्रमाणे छे

'राजा आराध्य छतां जे नथी आराधता ते एह ज विशेष जे सर्वी तोइ शत्रु पाइ, ए राजाना क्रोध टाग्या '

९४ छेइ व भा २ [पृ ११५] ९५ दर्शनि व भा २ ९६ ज्ये भा १, जे व भा २ ९७ करि व, करे भा २ ९८ पच्छि व भा २ ९९ व भा २ मां नथी १०० पामे व भा २ १ करे व भा २ २ राजें भा २ ३ °माहि हस्रो ४ तेन्हि व ५ धोलों हस्रो ६ जाणी व भा २, पछी व भा २ मां 'त' छे ७ भ्रम पाम्यो व भा २ ८ व भा २ मां नथा ९ दवे व भा २ १० व भा २ मां आ श्लोकना अनुवाद आ प्रमाणे छे

'जे राजान वैद्य गमतु बालें, यथाथ न वह, ते राजानो रोग न जाइ जे राजान जोसी गमतू बोलें ते राजाने शुभ नही जे राजाने प्रधान गमतू बालि तिहां भंडार नाश पामे '

११ पाइज व भा २ १२ पछी व भा २ मा 'छेइ' छे १३ बोल्यो व भा २ १४ पामेइ व भा २ १५ पाइज व भा २, आनी पछी व भा २ मां 'न' छे १६ करे व भा २ [पृ ११६] १७ भजता व भा २ १८ करतों व भा २ १९ करता व भा २ २० व्यवहारनां व भा २ २१ तत्त्व व भा २ २२ तेहनें भा १ इ, तेन्हि व, तेहें भा २ २३ पूठ भा २ २४ आपदानो हस्रो २५ माटिइ भा १ इ तथा व भा २ २६ संदेहनें हस्रो २७ करै व भा २ २८ मगरे व भा २ २९ हणें भा १ इ, हणे व भा-२ ३० भोगवतलें व, भोगवंतन भा २ ३१ विरदमख भा १, मुख व भा २ ३२ केतकी व भा २ ३३ व्यापी व भा २ ३४ विलासिनी इ व भा २ ३५ इणी व ३६ परें व भा २ ३७ व भा-२ मां 'सर्वे रत्नन उपद्रव छेइ' एवा पंक्तिनो उत्तरार्ध छे ३८ पुरुषनें व भा २ ३९ विषे व भा २ ४० गुणवत पुरुषना व भा २ ४१ पामे इ व भा २ ४२ ऋारि व भा २ ४३ चंद्रनां व भा २ [पृ ११७] ४४ राजि व भा २ ४५ चीगसो व भा २ ४६ कीधा व भा २ ४७ भुइ भा १ व भा २ ४८ घणाइ व भा २ ४९ छता भा १ इ, छता व भा २ ५० तूठा व भा २ ५१ कृतारानू व भा २ ५२ नमाल्यु हस्रो ५३ बहिराने भा १ इ बाहरान व भा २ ५४ कान भा १ इ, कानि व भा २ ५५ दाणगार्यु भा १ इ, शिणगार्यु व भा-२ ५६ व भा २ मां नथी ५७ अनइ व भा २ ५८ व भा २ मा नथी ५९ जाणीनइ व भा २

६० दोह्यो व भा-२ ६१ देपीने व भा-२ ६२ भ्रांतिं ह्रप्रो ६३ पाबैयु भा-१ इ, पाबैयो व भा २ ६४ देपीनइ व भा २ ६५ वाचने व भा-२ ६६ विरे व भा २, आनी पछी व भा २ मां आ प्रमाणे अनुवाद छे

'... मणिबुद्धि होइ, जे मे कृतघ्न राजा सेव्यो '

६७ करे व भा-२ ६८ मूगो व भा २ ६९ छेइ व भा-२ ७० व भा २ मां 'अनेइ' थी पंक्ति शरू थाय छे ७१ बोले व भा-२ ७२ व भा-२ मां ' तो कहें जल्पक छेइ' एवो पक्तिना उत्तरार्ध छे ७३ व भा-२ मां नथी ७४ करे व भा २ ७५ व भा २ मां ' कह बीहे छइ' एवो पक्तिनो उत्तरार्ध छे ७६ कहे इ, कहिइ भा १ ७७ काई भा १ इ ७८ सहेइ व ७९ छेइ व भा २ ८० पासे व भा-२, आनी पहेला व भा २ मां 'जो' छे ८१ रहे व भा २ ८२ धृष्ट छइ व भा २ ८३ कहें व भा २ ८४ रह व भा २ ८५ कह व भा २, आनी पछी व भा २ मां 'अजाण छइ' एवो पक्तिनो अन्तभाग छे ८६ तेथी व भा २ ८७ अति व भा २ ८८ योगीश्वरन व भा २, पछी व भा २ मा 'पण' छे ८९ मोल्पणान भा २, माल्पणानि व ९० व भा २ मा नथी ९१ नमे व भा-२ ९२ छाडइ भा-१ इ, वै व, वे भा २ [पृ ११८] ९३ सुखनी व भा २ ९४ कामनाइ व भा २ ९५ तेथी व भा २ ९६ आनी पछी व भा २ मां 'मृष नहीं' एवो पाठ छे ९७ जे व भा २ ९८ जीव व भा २ ९९ निराहा व भा २ १०० व भा २ मां नथी १ जेह भा १ इ भा २, जेन्हि व २ व भा २ मा नथी ३ तन्हि इ, तेन्हि व, तेह भा २ ४ सुवेइ व ५ तेन्हि व ६ वहे व भा २ ७ व भा २ मा नथी ८ जै व भा २ ९ सर्पनें व भा २ १० मारे व भा २ ११ कायना व भा २ १२ व भा २ मां 'मोटा' 'सव'नी पहेला आवे छे १३ पमाडि व, पमाडें भा २ [पृ ११९] १४ लागे व भा २ १५ नावडे व भा-२ १६ कदाचि भा १ व भा २ १७ वाध्या व भा २ १८ साठि व भा २ १९ छे व भा २ २० कर्र ह्रप्रो २१ व भा-२ मां '. शास्त्रनी परि जाणे' एवो पक्तिनो उत्तरार्ध छे २२ शीलपणु भा १ इ, 'शीलपणू' व भा २ मा 'शीलवतन' पछी आवे छे २३ सतोपन व भा २ २४ करे व भा २ २५ धर्म व भा २ २६ अपराधन ह्रप्रा २७ वीसरे व भा २ २८ व भा २ मां 'मेदइ नहीं' ने स्थाने 'स्मरे' क्रियापद छे २९ तेथी व भा २ ३० सव व भा २ ३१ मर्त्य व भा २, आनी पहेलानो 'पुरुप' शब्द

व भा-२ मां नथी. ३२ व भा-२ मां नथी. ३३ व भा-२ मां नथी. ३४ शूं भा-१ इ. ३५ जेन्हि व, जेन्हें भा-२. ३६ करे व भा-२. ३७ तेन्हि व. ३८ थाइ व भा-२. [पृ. १२०] ३९ जोईने भा-२. ४० सूझानें भा-२. ४१ जे ह्प्रो. ४२ सरपुं ह्प्रो. ४३ होशि इ. ४४ चींतवीनेइ भा-२. ४५ सूर्डे व भा-२. ४६ °रात्र व भा-२. ४७ जोयुं व भा-२. ४८ तेहे व भा-२. ४९ थाई व भा-२. ५० उडयुं व भा-२. ५१ तेथी व भा-२. ५२ जाणी व भा-२. ५३ सेव्यो व भा-२. ५४ बोल्युं ह्प्रो. ५५ छेइ व भा-२. ५६ कुमित्रनी व भा-१ इ, कुमित्रनीं व भा-२. ५७ धनुर्ये भा-१; व भा-२ मा आनी पछी आ प्रमाणे अनुवाद छे :

'...... धनुषना शरथी मारयो.'

५८ मुंक्यो भा-१. ५९ तीर्णे भा-१, तीणे इ. ६० बोल्यो व भा-२. ६१ कहतो ह्प्रो.

[१२. हंस अने घुवड]

१ केहा भा-१ इ, को एक व भा-२. २ रहे व भा-२. ३ व भा-२ मां नथी. ४ थ्यो व भा-२. ५ पछे व भा-२. ६ हंसनें व भा-२; आनी पछी व भा-२ मां '*नाश करवा घूअड आव्यो*' एवो पंक्तिनो उत्तरार्ध छे. ७ बोल्यो व भा-२. ८ आ पंक्ति व भा-२ मा आ प्रमाणे छे :

'*अहो तु किहांथी अरण्य मध्यें आव्यो ?*'

९ बोल्यो व भा-२. १० व भा-२ मां 'हु' पंक्तिनी शरुआतमा आवे छे. ११ छेइ व भा-२. १२ सघलीये व भा-२. १३ तेथी व भा-२. १४ कन्हि व, कन्हें भा-२. १५ आव्यो व भा-२. [पृ. १२१] १६ तू व भा-२. १७ सघाते भा-१, व भा-२, सघाते इ. १८ गगाने इ, गंगानि व, गगानें भा-२. १९ पामीने व, पामीनें भा-२. २० थाइ ह्प्रो. २१ हस्तनो व भा-२. २२ सत्र भा-२. २३ आनी पछी व भा-२ मा 'च्छेइ' छे. २४ छे व भा-२. २५ सघर्म व भा-२. २६ कोन्हें व भा-२; आनी पछी व भा-२ मां '*सोटो न करे ?*' एवो पंक्तिनो उत्तरार्ध छे. २७ वझो भा-१ व भा-२. २८ बोल्यो व भा-२. २९ आ पंक्ति व भा-२ मां आ प्रमाणे छे :

'*अहो मित्र आपण ए सरोवरमाहि सुषे रहइं.*'

३० पन्हि भा-२; आ पंक्ति व भा-२ मां आ प्रमाणे छे :

'पछइ [पन्हि] हंस पूअउ ते सरोवर मध्यें रहते [रहतं] घणो काल होउ.'

३१ पछेइ व भा-२. ३२ अन्नगरि व भा-२. ३३ व भा-२ मां नथी. ३४ बोल्यो व भा-२. ३५ जायोश भा-१, जायेश इ. ३६ जो व भा-२. ३७ में व भा-२. ३८ वरं व भा-२. ३९ प्रीछाणी व भा-२. ४० व भा-२मां नथी. ४१ आणी व भा-२. ४२ आश्रमें व भा-२. ४३ म्यो व भा-२. ४४ केतलेर व भा-२. ४५ आणे व भा-२; आनी पहेलां व भा-२ मां 'हुं' छे. ४६ रहतो हम्रो. ४७ गरटी भा-१, गरठो इ व भा-२. ४८ होउ इ. ४९ केजीद व भा-२. ५० जांगू व भा-२. ५१ तेथी व भा-२; आ पंक्ति व भा-२ मां आ प्रमाणे छे :

'तेथी मित्र जे पूअइ तिहां जाउं.'

५२ मुन्हि व, मुंन्हें भा-२. ५३ होशें व, होशे भा-२. ५४ चींतवी हम्रो. ५५ पूयइ भा १. ५६ पन्हि भा-१ व, पन्हे इ भा-२. ५७ म्यो व भा-२. ५८ तेन्हि व. ५९ मध्यें व भा-२. ६० देपे व भा-२. ६१ दिन विषे व भा-२. ६२ कोतरमाहि भा-१ इ; व भा-२ मां 'कोतर मध्य पन्थो छेइ' एवो पंक्तिनो उत्तरार्ध छे. ६३ घूअडने भा-१, घूअडने इ. ६४ कीधो भा-१ इ; व भा-२ मां 'बोल्यो' क्रियापद छे. ६५ व भा-२ मां 'हंस' 'मित्र' पछी आवे छे. ६६ ताह्रो व भा-२. ६७ आनी पछी व भा-२ मां 'तो' छे. ६८ ताहु-माहु भा-१ इ, ताह्रोमाहरो व भा-२. ६९ रात्रे व भा-२. ७० होसे व भा-२. ७१ रात्रि व भा-२. ७२ रह्या व भा-२. ७३ पच्छी व भा-२. ७४ रही व भा-२. ७५ सूतो हम्रो. ७६ पछेइ व भा-२. ७७ तिहां व भा-२. [पृ. १२२] ७८ मोटइ इ. ७९ ऊतर्यो व भा-२. ८० रात्रि इ, रात्रि व भा-२. ८१ सगे व भा-२. ८२ ऊठी व भा-२. ८३ चाल्यो इ; व भा-२ मां नथी. ८४ ऊठउ इ, ऊठ्यो व भा-२. ८५ पेठो इ, पैठो व भा-२. ८६ ते व भा-२. ८७ सगने व, सगन भा-२. ८८ माह्रा व भा-२. ८९ साथनो व भा-२. ९० करे व भा-२. ९१ छेइ व भा-२. ९२ °मध्यें व भा-२. ९३ दीठो व भा-२; आनी पछी व भा-२ मां 'पच्छइ' छे. ९४ वहता व भा-२. ९५ अहींथी शरू थती बे पंक्ति व भा-२ मां आ प्रमाणे छे :

'आ जे ए पक्षी अपशुकन करे छेइ. पछेइ बाण मुंकी हंस मार्यो.'

९६ तेंघी व भा-२. ९७ वहूं व भा-२. ९८ हूं व भा-२. ९९ पिंगल भा-१. १०० प्रथम व भा २. १ वाचा व भा-२. २ करेइ व भा-२. ३ एह्वो व भा-२. ४ वर्जवो व भा-२. ५ °भरयो व भा-२. ६ मूंटइ भा-१ इ, मुपि व भा-२. ७ अनुभव्यो भा-१ व भा-२. ८ °था भा-१ व भा-२. ९ ऊठी व भा-२. १० ऊंचो व भा-२. ११ करेड व भा-२. १२ अर्द्धासन व भा-२. १३ देयाडि व भा २. १४ गाढूं व भा-२. १५ वरे व भा-२. १६ तुल्य व भा-२. १७ वाहरि व भा-२. १८ व भा-२ मां नथी. १९ व भा-२ मा नथी. २० एतलानिं व, एतलानें भा-२; आनी पछीनो 'वाना' शब्द व भा-२ मां नथी. २१ नाटशालो व भा-२. २२ मग्यो व भा-२. [पृ. १२३] २३ घणो व भा-२. २४ व भा-२ मां नथी. २५ करें व भा-२. २६ अनेइ भा-२. २७ मध्यें भा-२. २८ संतोषेइ व भा-२. २९ निफल व भा-२. ३० जे व भा-२. ३१ वचने व. ३२ आनी पछी भा-२ मां 'करी' छे. ३३ संतोषेइ व भा-२; आनी पछी व भा-२ मां आ प्रमाणे अनुवाद छे :

'......छेडे पिशुनपणुं दुष्टता करे, अपमान करे, मलिण थाइ, एह्वो अदुर्जन दुष्ट चूर्ण निर्म्यों ते दुष्टने धिक्.'

३४ बोल्यो व भा-२. ३५ सेवाथी हुयो. ३६ मुंन्हि व. ३७ ए व भा-२. ३८ पाणहार तेन्हो व भा-२. ३९ कुलं व भा-२. ४० जेन्हेइ भा-१, जेह्नद इ, जेन्हि व, जेन्हें भा-२. ४१ जेन्हि व. ४२ कुल व भा-२; आनी पछीनो अनुवाद व भा-२ मां आ प्रमाणे छे :

'......ते प्रीति अने विवाहने परस्परिं [परस्परें] योग्य पण अधिक ओछा योग्य नही.'

४३ रहाने भा-१. ४४ व भा-२ मा आ अनुवाद आ प्रमाणे छे :

'जिवारें सूर्य अस्तंगत होइ तिवारें भ्रमर तृष्णातथी कमल मध्यें मकरंद पुष्परस पीवा पैसेइ; पण आगमनानुं कमल मध्ये रुंधन न जाणे, जे सुर्य्याइं कमल मिल्सेइ ते न जाणइ तिम मनुष्य फलनो वाह्यो आगणो नास चींतवे.'

४५ रुंधावु भा-१ इ. ४६ फलनो भा-१ इ. [पृ. १२४] ४७ व भा-२ मां आ अनुवाद आ प्रमाणे छे :

'वनना मदमत्त हस्तीना कुंभस्थलने क्षण मात्र मदना वादवथी भ्रमर मेलिं; ते

करगं विहुना मारयी शुंई पन्ना थस समउ मत्यनी कीडानें स्मरें ए गुणवंतनो ज दोष.'

४८ कुंभस्तलनें भा-१, कुंभस्थलने इ. ४९ सेनें भा-१, सेवे इ. ५० वहुना भा-१ इ. ५१ गुणवंतनो भा-१ इ. ५२ व भा-२ मां आ श्लोकनो अनुवाद नीचे प्रमाणे छे:

'फलनो भार स्वरूक्षशाखानें नमाडेइ, मोरना पिच्छनो भार गति शीघ्रनें फेडे, भलो चालनो जे अश्व ते गुणनी परिं वाहीये तिम गुणवंतना गुण पुरुषनें वैरी थाइं.'

५३ वाहि इ. ५४ पुरुषने इ, पुरुषनें भा-१. ५५ थाइं भा-१ इ. ५६ यमुनाना द्रहो. ५७ °मध्यें व भा-२. ५८ 'वाजल सरपो' व भा-२ मां नथी. ५९ दीशतो भा-१ इ, दीसतो व भा-२. ६० जोतां भा-१ इ, व भा-२ मां नथी. ६१ जो व भा-२. ६२ माथेउ व भा-२. ६३ योतता व भा-२. ६४ दीगता व भा-२. ६५ तेथी व भा-२. ६६ जीणे भा-१ इ, जीणें व भा-२. ६७ मोटाइ भा-१ इ, उपन व भा-२. ६८ पामें भा-१ भा-२, पामे इ, पामि व. ६९ तीणे द्रहो. [पृ. १२५] ७० कस्राटा व भा-२. ७१ घणूं व भा-२; पछी व भा-२ मां 'तो' छे. ७२ °मध्य व भा-२. ७३ गूपे व भा-२. ७४ निर्गे व भा-२; बाकीना चरणोनो अनुवाद व भा-२ मां आ प्रमाणे छे:

'जे नरनें गुणे करी मोटपणुं ते मिथ्या जेथी गुणवंत कथा पच्छी मनुष्यने न गमे.'

७५ करनें भा-१. ७६ राजानुं व भा-२. ७७ व भा-२ मां आ चरणनो अनुवाद आ प्रमाणे छे:

'हस्ती मदथी अंकुशे करी मस्तकि कष्टनें पाम्या.'

७८ मंनें व भा-२. ७९ विना व भा-२. ८० रहित व भा-२. ८१ परं व भा-२. ८२ ईणे व भा-२. ८३ स्मेकडे व भा-२. ८४ स्मेइ व भा-२. ८५ छेइ व भा-२. ८६ तेथी व भा-२; पछी व भा-२ मां 'वली' छे. ८७ मुन्हें भा-१ भा-२, मुन्हे इ, मुन्हि व. ८८ °मध्य व भा-२. ८९ पछी व भा-२. ९० जाणें द्रहो. ९१ आ चरणनो अनुवाद व भा-२ मां आ प्रमाणे छे:

'एहा चतुर घणा जे परकार्य नष्ट करी आपणुं काम करें.'

९२ काम भा-१ इ. ९३ करें भा-१, करे इ. ९४ ऊठनें व भा-२. ९५ विर्वे व भा-२. ९६ बोल्यो व भा-२.

[१३. सागरदत्त वाणियो, ऊंट अने सिंह]

१ कोएक ह्प्रो. २ नगरने व भा-२. ३ विपेट व भा-२. ४ नामें ह्प्रो. ५ ते ह्प्रो. ६ पणा भा-१ [पृ. १२६] ७ मुल्ना भा-१ व भा-२. ८ लेइ भा-१ इ, व भा-२ मां नथी. ९ उंट व भा-२. १० व भा-२ मां नथी. ११ भरीनइ व भा-२. १२ केहे भा-१, केहे इ, कोएक व भा-२. १३ चारयो ह्प्रो. १४ वाणीयानो भा-१ इ, वाणीयानेइ व भा-२. १५ एह्वि व. १६ व भा-२ मां 'जे ऊंट ते' एवो पाठ छे. १७ भारिं व भा-२. १८ व भा-२ मां नथी. १९ आनी पछी व भा-२ मां 'थरो' छे. २० बेठु इ, वैठो व भा-२. २१ व भा-२ मां नथी. २२ व भा-२ मां नथी. २३ तेन्हुं भा-१, तेन्हु इ, तेन्हो व भा-२. २४ विहिचीनइ इ, वंहची व भा-२. २५ अनेरा भा-१, बीजा व भा-२. २६ ऊभारि व भा-२. २७ घलावी व भा-२. २८ वाणीयु भा-१ इ, वाणीयो व भा-२; आनी पछी व भा-२ मा पंक्तिनो उत्तरार्ध आ प्रमाणे छे :

'......भयथी ते विकटने तिहां मूंकी सघात सार्थि चाल्यो.'

२९ माटेंइ भा-१. ३० पछी व भा-२. ३१ आनी पछी व भा-२ मां 'हल हल' शब्द छे. ३२ मुखें व भा-२. ३३ पातो भा-१ इ, भक्ष करतो व भा-२. ३४ व भा-२ मां नथी. ३५ ऊंट व भा-२. ३६ दिने ह्प्रो. ३७ चालवत्तर व भा-२. ३८ थ्यो व भा-२. ३९ °मर्ध्ये व, मध्ये भा-२. ४० मदोत्कट ह्प्रो. ४१ नामें भा-२. ४२ रहेइ व भा-२. ४३ तेन्हा ह्प्रो. ४४ व भा-२ मां नथी. ४५ शीयाल ह्प्रो. ४६ तीणे ह्प्रो. ४७ दीठो ह्प्रो. ४८ कदापि व भा २; आनी पछी व भा-२ मां 'न दीठो एह्वो' पाठ छे. ४९ व भा-२ मा नथी. ५० देखीनइ व भा-२. ५१ पूछतो भा-१ व भा-२. ५२ व भा-२ मा 'अहो' थी पंक्ति शरू थाय छे. ५३ वन व भा-२. ५४ मध्ये व भा-२. ५५ व मां आनी पछी 'पूछोथो कहतो हूवउ' एवो मूळ प्रतथी जुदा अक्षरोमां लखेलो पाठ छे ५६ कुणनूं भा-२. ५७ बोल्यो व भा-२. ५८ ऊंट व, ऊठ भा-२. ५९ पूछ्यो व भा-२. ६० व भा-२ मा 'अहो 'थी पंक्ति शरू थाय थाय छे. ६१ किहांथी व भा-२. ६२ आनी पछी व भा-२ मा 'छे' छे ६३ तीणे भा-१ इ; व भा-२ मां 'पछे' थी पंक्ति शरू थाय छे, ते प्रतोमां 'तीणे' नथी. ६४ ऊंटइ व. ६५ आपणूं व भा-२; आनी पछीनो 'जे' व भा-२ मां नथी. 'आपणूं' पछी व मां 'सगलो' अने भा-२ मां 'सर्वे' छे. ६६

आववानु व. ६७ पछेइ व भा-२. ६८ तेन्हिं व, व भा-२ मां 'गिहिं' पछी आ शब्द आवे छे. ६९ व भा-२ मां 'वन मध्य रहतो' ए प्रमाणे शब्दक्रम छे. ७० त्रिवारद्रक व, त्रिवारेएक भा-२. ७१ पासी व भा-२. ७२ फाल्यो व भा-२. ७३ आनी पछी व भा-२ मां 'दांतनी पीडाथी' शब्द छे. 'सिंह' पछीना 'क्षल माटइ' शब्दो व भा-२ मां नथी. ७४ रह्यो व भा-२. ७५ व भा-२मां आ पंक्ति आ प्रमाणे छे :

'पछइ [पछेइ] दिन पांच पछी गिहना तें सेवक क्षुधाई वटमाहं पड्या.'

७६ योज्यो व भा-२. ७७ प्रहारि इ. ७८ आहारलेइ भा-१, आंहरलें इ व भा-२. ७९ मुख्य प्रत 'त्रि' मांथी पडी गयेला आ शब्द भा-१ मांथी लीधा छे. ८० पछेइ व भा-२. ८१ तम्हि व भा-२. ८२ कही व भा-२. ८३ व भा-२ मां 'आहार शुं करुं ?' एवो शब्दक्रम छे. ८४ व भा-२ मां 'जे' थी पंक्ति शरू थाय छे. ८५ व भा-२ मां नथी. ८६ व भा-२ मां नथी. ८७ तो व भा-२. ८८ गुंह्दि व, गुंह्दे भा-२. ८९ आहार व भा-२. ९० आव्यो व भा-२. ९१ व भा-२ मां नथी. ९२ व भा-२ मां नथी. ९३ आनी पछी व भा-२ मां 'सिंह' छे. ९४ पछी व भा-२. ९५ बोल्यो व भा-२. ९६ व भा-२ मां नथी. ९७ गिहिं व भा-२. ९८ वहुं व भा-२. ९९ छाडो व भा-२. १०० जीवन भा-१. १ आहरलें इ, आहरनि व, आहरलें भा २, भा-१ मा नथी. २ जोउ इ व भा-२, जोउ भा-१. ३ हुं हुओ, आनी पहेलां व भा-२ मां 'जिम' छे. ४ करावुं व भा-२. ५ कथा व भा-२. ६ पछी व भा-२. ७ व भा-२ मां 'सर्व ते' एवो शब्दक्रम छे. ८ व भा-२ मां नथी. ९ °मध्य व भा-२. १० पैठा हुओ. ११ छाडीनिइ व भा-२. १२ ते व भा-२. १३ भा-१ मां नथी. १४ बोल्यो व भा-२. १५ व भा-२ मां 'भक्ष छतो' एवो शब्दक्रम छे. १६ अम्हे व, अह्म भा २. १७ पछेइ व भा-२. [पृ. १२७] १८ सरो व भा-२. १९ व भा-२ मां 'बीजो सिंह' एवो शब्दक्रम छे; भा-१ मां आ अने आनी पहेलांनी पंक्ति नथी. २० साथी व भा-२; पछी व भा-२ मां 'त्रिभ' छे. २१ बोल्यु भा-१ इ, बोल्यो व भा-२. २२ छतो इ व भा-२. २३ आनी पहेला व भा-२ मां 'अहो' छे. २४ बेहि इ. २५ 'अहो वाग स्वामी' आ शब्दो भा-१ मां नथी. २६ स्वामीये व भा-२. २७ व भा-२ मां नथी. २८ छे व भा २. २९ तेथी व भा-२. ३० बोल व भा-२; आनी पछी व भा-२ मां 'तिं' छे. ३१ बोल्यो भा-१ व भा-२. ३२

तम्हे भा-१ इ भा-२, तम्हि व. ३३ रहि व, रह्यो भा-२. ३४ एहुं इ, भा-१ व भा-२ मां नथी. आ स्थळे व भा-२ मा 'हूं' छे. ३५ सिहनइ भा-१, सिंहनि व, सिहनें भा-२. ३६ आनी पछी व भा-२ मा 'ए' छे ३७ साथ्योस व भा-२. ३८ व भा-२ मां नथी. ३९ वन्हिइ व, वन्हेइ भा-२. ४० व भा-२ मा 'जै पूछतो हौंउ' ए प्रमाणे अन्तभाग छे. ४१ सिह व भा-२. ४२ बोल्यो व भा-२. ४३ आ पंक्ति व भा-२ मां आ प्रमाणे छे :

'तम्हि [तम्हे] काइ जीव दीठो ?'

४४ जेन्हि व, जेन्हे व भा-२; आनी पहेला व भा-२ मा 'अहो' छे. ४५ शरीरें व भा-२. ४६ आनी पछी व भा-२ मा 'न' छे. ४७ दृष्टि व भा-२. ४८ आनी पछी व भा-२ मा 'न' छे. ४९ देवे व भा-२. ५० अम्हे व भा-२. ५१ सवेइ व भा-२. ५२ पापे व भा-२. ५३ आनी पछी व भा-२ मा 'थ्या छुं' छे. ५४ रहत व भा-२. ५५ तम्हि व. ५६ छते व, छतें भा-२. ५७ आहारे व भा-२. ५८ आपणपु इ, व भा-२ मा नथी. ५९ व भा-२ मा नथी. ६० छइता भा-१ इ, छेता व भा-२. ६१ व भा-२ मां आ पंक्ति आ प्रमाणे छे :

'अरे दुष्ट शुं कहें छे ?'

६२ कहे भा-१ इ. ६३ एन्हे भा-१ इ, व भा-२ मां 'तेन्हे मे' एवो शब्दक्रम छे. ६४ छे व भा-२. ६५ छे व भा-२; पछी व भा-२ मां 'जे' छे ६६ गौदान भा-१. ६७ महिषीदान व भा-२. ६८ अनदान व भा-२; आनी पछी इ भा-१ मा 'एतला दान' एवा शब्द छे. व भा-२ मां आ पंक्तिनो उत्तरार्ध आ प्रमाणे छे :

'एतला दान [दांन] अभयदाननी तुलाई न आवें.'

६९ तम्हनि व, तम्हेंन भा-२. ७० छेइ व भा-२. ७१ ए व भा-२. ७२ वचन भा-२; आनी पछी व भा-२ मा 'छइ' छे, पंक्तिनो उत्तरार्ध व भा-२ मां आ प्रमाणे छे :

'जे शरीर राखवानि [राखवान] पाप पण कीजि [कीजे].

७३ कुलनि व, कुलने भा-२. ७४ लजवो हरो. ७५ ग्रामनेइ व भा-२. ७६ देशने व, देशनें भा-२. ७७ आमानें व भा-२. ७८ पृथिवी व भा-२. ७९ लजवी हस्रो [पृ. १०८] ८० अशुभ व भा-२. ८१ जे व भा २.

८२ कीणे व, कीर्णें भा-२. ८३ आ पंक्तिनो उत्तरार्ध व भा-२ मा आ प्रमाणे छे :

'उपायें आपदि करी शरीर राखवुं.'

८४ यें व भा-२. ८५ आ शब्द व भा-२ मा नथी. ८६ उंटने व भा-२. ८७ मि व. ८८ मारवानु व भा-२. ८९ छेइ व भा-२. ९० गिंह ह्प्रो. ९१ बोल्यो व भा-२; आनी पछी व भा-२ मां 'ते' छे. ९२ बोल्यो व भा-२. ९३ आ शब्द भा-१ मा नथी; अम्हनि व. ९४ आनी पछी व भा-२ मा 'अर्थि' छे. ९५ सर्वेना व भा-२. ९६ आपणो व भा-२. ९७ जीव व भा-२. ९८ हींडि व, हींडे भा-२. ९९ छेइ व भा-२. १०० 'ते कहइ छइ' आ शब्दो व भा-२ मां नथी. १ आ पंक्ति व भा-२ मां आ प्रमाणे छे :

'ते काग एहुं कह्या पछी बोधिन बोल्यो.'

२ पठइ व भा-२; आनी पछीना शब्दोनो क्रम 'ते काग' ए प्रमाणे व भा-२ मा छे. ३ कन्हियो व, कन्हैयो भा-२. ४ मघला भा-१ ड, सर्वे भा-२. ५ हुता भा-१, छि व, छे भा-२. ६ ग्यो व भा-२; आनी पछी व भा-२ मा 'जे बोल्यो' एवा शब्द छे. ७ जैनेइ व भा-२. ८ अक्षमनें व भा-२. ९ आ शब्द व भा-२ मा नथी. १० आपणपाना व भा-२; आनी पछी व भा-२ मां 'प्राण' छे. ११ सांभलीये व भा-२. १२ छेइ व भा-२; भा-१ मां नथी. १३ इंद्र ह्प्रो. १४ होलानें रुपि भा-१, होलाने रुपि ट, होलाने रुपे व भा-२. १५ अतिथि ह्प्रो. १६ आव्यो ह्प्रो. १७ मांस ह्प्रो; आनी पछी '......मांस करी राख्यो' एवा शब्दो व भा-२ मा पंक्तिना उत्तरार्धमा छे. १८ ये भा-१ ड. १९ देवतां ह्प्रो. २० स्वामी व भा-२ २१ आपदाने व, आपदानें भा-२. २२ पामे व भा-२. २३ व भा-२ मा नथी. २४ व भा-२ मा 'आपणा प्राण' एवो शब्दक्रम छे. २५ राखे व भा-२. २६ तो ह्प्रो. २७ कहिवुं भा-१ ड, कहवुं व भा-२. २८ °भक्षक ह्प्रो, सर्व प्रतोमा 'भक्षण कर' ने स्थाने 'भक्षक' छे. २९ अम्हारे ह्प्रो ३० शरीर भा-१, ड; शरीरि व भा-२, आनी पछी भा-१ मा 'आहार' छे. ३१ करो ह्प्रो ३२ एहो व भा-२. ३३ सर्वे व भा-२; व भा-२ मा आ प्रमाणे शब्दक्रम छे :

'विकट सघातें सर्व......'

३४ पच्छिइ व, पच्छे भा-२. ३५ 'नमस्कार करी' भा-१ मा नथी. ३६ बोल्यो भा-१ व भा-२. [पृ. १२९] ३७ माहिं व. ३८ शरीरि भा-१ व भा-२. ३९ राखो व भा-२. ४० भा-१ व भा-२ मा नथी. ४१

बोल्यु भा-१, बोलो इ, बोल्यो व भा-२. ४२ व भा-२ मां 'अहो' थी पंक्ति शरू थाय छे. ४३ ताहरिं इ, ताहिं व, ताहै भा-२. ४४ अम्हे भा-१ इ भा-२, अम्हि व. ४५ थाउं हूंओ. ४६ भा-१ मां अहींथी शरू थतो वार्तानो अन्तभाग नीचे प्रमाणे छे :

'......पछइ इम ज सीयालि कह्युं. सिंहि तिम ज प्रतिउत्तर कह्यो. सघलानइ न पोहचइ. पछइ बीजि सिंहि कह्यु 'ए विहुं पिहि माहु सरीर मोटुं छइ, पारणुं स्यो.

जीर्णे करी घणा जीवे तिहां ते यत्ने राखीये. ते नाश पाम्ये कुल नाश पामइ जिम नाभिने नाशे आरा नाश पामे.

ते सिंह प्रति सिंह राजा कहतो हाउ, "ताहुं शरीर अल्प, ते युक्त कयुं पण नखायुधने ठाकुर किम पाइ ? अनइ स्वजाती न खाउं." पछइ विकटक चीतवनो हीउ, "मूर्खपणे टहो कोइ मारयु नहीं. तु हुंइ एहुं कहुं" पछइ उंट सिंह प्रति बोल्यो, "स्वामिन्, सेवक स्वामिनइ अर्थि प्राण छांडीनइ जे गति पामे ते गतिने याज्ञिक योगीश्वर न पामे.

एहना शरीरथी माहुं शरीर मोटुं छइ. माहे शरीरे तम्हारा प्राण राखो." एहुं कहा पूठि सिंह-सीयाल विहइ उंटना पासा फाडी मारीनइ खावा लागा.'

४७ आ वाक्य व भा-२ मां आ प्रमाणे छे :

'काग एहु कयां पछी शीयाल बोल्यो, "तुं स्वामिन् [स्वामिन्] अम्हारे शरीरि [शरीरि] तम्हारा प्राण राखो, काग पहि [पहे] माहुं शरीर मोटुं छइ, माहे शरीरें पारणुं [पारणु] करो." सिंह बोल्यो, [सर्वने तु न पोहोंचे.]'

४८-कहतो इ. ४९ माहुं इ. ५० शरीरे इ. ५१ माहे इ. ५२ करो इ. ५३ इ मां आ वाक्य आ प्रमाणे छे :

'पछइ सिंह कहवा लागो, "सर्वने न पोहोंचइ."

५४ कयां इ व भा-२. ५५ पछि व भा-२. ५६ बीजो इ व भा-२. ५७ सिंह इ व भा-२. ५८ बोल्यो व भा-२. ५९ विहू व भा-२. ६० पहे व भा-२. ६१ माहुं इ व भा-२. ६२ मोटु इ व भा-२. ६३ माहे इ व भा-२. ६४ शरीरे इ व भा-२. ६५ करो व भा-२. ६६ आनी पहेलांनो 'तिहां' शब्द व भा-२ मां नथी. ६७ राखनो व भा-२. ६८ पाम्ये इ व भा-२.

६९ पामेट व भा-२. ७० व भा-२ मां आ चरण आ प्रमाणे छे :

'जिम पैडानी नाभि विना आरा न रहि.'

७१ व भा-२ मां आ पंक्ति आ प्रमाणे छे :

'ते राजा सिंह, सेवक सिंहने करतो हौउ.'

७२ ताहुं इ व भा-२. ७३ तें भा-२. ७४ नगरयुक्त जीवने. ७५ आनी पछी व भा-२ मा 'न गांइं' एवा शब्द छे. ७६ स्वजातिनो व भा-२. ७७ गावो व भा-२. ७८ पछइ इ, पछि व, पछे भा-२. ७९ निकट व भा-२. ८० चिंतवतो व भा-२. ८१ मूर्पगणि व, मूर्पगणे भा-२. ८२ डींणि व, डींणे भा-२. ८३ मारयो व भा-२. ८४ नहीं इ व भा-२. ८५ तौं भा-२. ८६ हुंइ इ, हुंइ व, हुइ भा-२. ८७ इम व भा-२. ८८ पछिड व, पछेड भा-२. ८९ ऊंट व भा-२. ९० वन्हि व, वन्हे भा-२. ९१ जेनइ इ. ९२ बोल्यो व भा-२. ९३ स्वामीनें व, स्वामीनें भा-२. ९४ छांडीने व भा-२. ९५ ये व भा-२. ९६ पामे इ व भा-२. ९७ माहूं व भा-२. ९८ शरीरें इ, शरीरिं व भा-२. [पृ १३०] ९९ पुठे इ, पछी व भा-२. १०० विहउं इ, विहिं व भा-२. १ मारी व भा-२.

२ तेथी व भा-२. ३ कहूं व भा-२. ४ छउं इ, छूं व भा-२; आनी पछी व भा-२ मा 'जे' छे. ५ अहो ह्प्रो. ६ राजानो व भा-२. ७ आनी पछी व भा-२ मां 'छेइ' छे. ८ तेथी व भा-२. ९ सेवकने इ, सेवकनिं व, सेवकने भा-२. १० होइ व भा-२. ११ हस व भा-२. १२ काइं भा-१ व भा-२. १३ होइ व भा-२. १४ भूंडाने इ भा-१ भूंडाने व भा-२. १५ ये इ भा-१, इ व भा-२. १६ ते ह्प्रो. १७ करे व, करें भा-२. १८ व भा-२ मां नथी. १९ सरयोइ व भा-२. २० मित्रने ह्प्रो. २१ कठिण भा-१ इ, कठिन व भा-२. २२ वचने ह्प्रो. २३ होइ ह्प्रो. २४ पच्छिड व, पच्छेइ भा-२. २५ शत्रुने व भा-२. २६ वश व भा-२; आनी पछी व भा २ मां 'किम न' छे २७ व भा-२ मां 'ते शु' ने स्थाने 'तेहुं' पाठ छे. २८ साभळीये व भा-२ २९ छेइ व भा-२. ३० ये भा-१ इ. ३१ माटे व भा-२. ३२ पासे व भा-२. ३३ अनेड व भा-२, 'वि' प्रतमां शब्दो पडी गया होवाथी, कौंसमा मूकेला तेटला शब्द भा-१ मांथी लीधा छे इ मां भा-१ प्रमाणे ज पाठ छे. ३४ तीणीं व भा-२. ३५ पामे व भा-२ ३६ छेइ व भा-२. ३७ चड्यो व भा-२ ३८ भलो व भा-२. ३९ कहइ भा-१. ४० छे व भा-२.

[१४. सुथार अने सिंह]

१ कोएक हशे. २ विषें व भा-२. ३ आनी पछी भा-१ ड मा 'नामि' अने व भा-२ मां 'नामे' छे. ४ सूतार भा-१, सूत्रहार व भा-२. ५ वसे व भा-२. ६ अहींथी शरु करी, '...विमल नामेंड सिंह रहइ,' त्यां सुधीनो 'वि' मुख्य प्रत नो पाठ व भा-२ मा आ प्रमाणे छे :

'ते वनमाहि माथि भात लेई ग्यो. तिहां स्तंभ वाटना विमल नामें सिंह दीठो.'

७ रहइं भा-१ ड. ८ नामें भा-१, नामे ड. ९ सिंह भा-१ ड. [पृ. १२१] १० आनी पछी व भा-२ मां 'एक काग, बीजो शिआल' ते वेहुए [विहुए] भ्रमतें सूत्रधार दीठो' एवा शब्द छे. ११ दीठो भा-१ ड. १२ सूत्रधार व भा-२. १३ सिंहनें हशे. १४ बीहीनो हशे. १५ एह्वी व भा-२. १६ एन्हीं भा-१ ड, एन्ही व भा-२. १७ आनी पहेलां व भा-२ मा 'पच्छइ' छे. १८ जै व भा-२. १९ बोल्यो व भा-२. २० सिंह भा-१ व भा-२. २१ आनी पछी व भा-२ मा 'करी' छे. २२ आनी पछी भा-१ ड मां 'रा' छे. २३ आ पंक्ति भा-१ मा नथी. २४ होये ड व. २५ छेइ व भा-२. २६ भाइ भा-१ ड; व भा-२ मा 'माहरो भाइ' ए प्रमाणे छे. २७ छि व, छे भा-२. २८ व भा-२ मा 'पछे' थी पंक्ति शरू थाय छे. २९ बोल्यो हशे. ३० मुंन्हि व, मुंन्हें भा-२. ३१ व भा-२ मा 'हुं मांस-भक्षक छुं' एवो पाठ छे. ३२ तोहिइ व भा-२. ३३ प्रीतिने व भा-२; आनी पछी व भा-२ मा 'अर्थे' छे. ३४ आनी पछी व भा-२ मा 'शुं' छे. ३५ शुं व भा-२. ३६ सूत्रधारि व, सूत्र धारें भा-२. ३७ आणी भा-१ ड, काढी व भा-२. ३८ पछेइ व. ३९ पक्वान्न हशे ४० सतोषायो व भा-२. ४१ पछे व भा-२. ४२ सिंहि भा-१, सिंहे ड व भा-२. ४३ सूत्रधारनइं भा १, सूत्रधारनें व भा-२. ४४ आ पंक्ति व भा-२ मा आ प्रमाणे छे :

'आज पछी तें अवश्य ईहां आववुं.'

४५ पछि व, पछे भा-२. ४६ सूत्रहार भा-१. ४७ बोल्यो भा-१ व भा-२. ४८ आ पंक्ति व भा-२ मां आ प्रमाणे छे :

'स्वामिन् एक वार माहरुं अन्न दिन प्रति भक्षवुं.'

४९ बीजो व भा-२. ५० आनी पहेला, कोइं व, कोइ भा-२. ५१ कन्हि

भा-२. ५२ ईर्णी भा-१, इणी व, ईर्णी भा-२. ५३ परि भा-१ व भा-२. ५४ प्रीतिं भा-१ व भा-२. ५५ घणो व भा-२. ५६ हौंउ भा-१ व भा-२, होइ इ. ५७ निद्र भा-१ व भा-२. ५८ आहारिं तृप्त भा-१ इ, आहारें तृप्त व भा-२. ५९ थ्या ह्रप्रो. ६० पृठि भा-१ इ, पच्छी व भा-२. ६१ करि व, करे भा-२. ६२ पछि व, पच्छेइ भा-२. ६३ शीआल अने काग व भा-२. ६४ विहे व भा-२. ६५ °थस्य व भा-२. ६६ वेतलाइ व भा-२. ६७ विमनस व भा-२. ६८ मित्रनें भा-१ व भा-२. ६९ वीनती करता व. ७० छो व भा-२. ७१ आनी पहेलां, व मा 'माह्री' अने भा-२ मा 'मांह्रे' छे. ७२ आवि व, आवे भा-२. ७३ छेइ भा-२. ७४ सूतहार भा-१ इ भा-२. ७५ संघातें भा-१ भा-२, संघातिं व. ७६ आ पंक्ति व भा-२ मां आ प्रमाणे छे :

'तीणे भाति [भांति] करी हु[हुं] अति तृप्त थाउं छु.'

७७ पछेइ व भा-२. ७८ व भा-२ मा काग शीयाल एवो शब्दक्रम छे. ७९ विहे व भा-२. ८० सूत्रधारनि व. ८१ मारीनइ भा-१ इ, मारी व भा-२. ८२ तेन्हे भा-१ इ भा-२, तेन्हि व. ८३ मांसि भा-१ इ व, मासें भा-२. ८४ सिर ह्रप्रो. ८५ योयो व भा-२. ८६ व मां 'तेन्हि मि' अने भा-२ मां 'तेन्ह मे' एवो शब्दक्रम छे. ८७ छिइ व, चछेइ भा-२. ८८ कारि भा-२. ८९ मनसाई ह्रप्रो. ९० अशुभ ह्रप्रो. ९१ चींतवीये ह्रप्रो. ९२ तम्हनि व. ९३ अनेहं अनेह भा-१. ९४ भक्ष व भा-२. ९५ आणीशे व भा-२. ९६ व भा-२ मा नथी. ९७ भा-१ मा आ पंक्ति आ प्रमाणे छे :

'सूत्रधारनें भक्षशु, अनेहं नहीं.'

९८ मोटे भा-१ इ. ९९ कष्टे भा-१ भा-२, कष्टे इ व. १०० सिंहें भा-१, सिंहें इ; व भा-२ मां आ शब्द नथी. १ तहेनुं भा-१, तेन्हे इ, तेन्ह व, तेन्हु भा-२. २ मार्गनि व भा-२. ३ जाता भा-१ इ, जातो व भा-२. ४ वेगलुथो भा-१, वेगुलुथो इ, वेगगेथो व भा-२. ५ विहि भा-१ इ; व भा-२ मा नथी. ६ शीआल भा-१ इ, शीयाल व भा-२; व भा-२ मा 'शीआल काग' एवो शब्दक्रम छे, आनी पछी ह्रप्रो. मा 'युक्त' छे. ७ आवतो ह्रप्रो [पृ. १३२] ८ देषीनेइ व भा-२. ९ दुष्टि इ. १० चिन्ह भा-१ व भा-२; चिन्हे इ. ११ सहत व भा २. १२ तृजि भा-१. १३ चड्युं भा-१ इ, चड्यो व, चड्यो भा-२. १४ पच्छिइ व, पछेइ भा-२. १५ सिंह भा-१ व भा-२. १६ कहतो ह्रप्रो. १७ ह्रप्रो मां आ पंक्ति 'अहो'थी शरु थाय छे. १८ मून्हें भा-१ भा-२, मून्हे

इ, गृहि व, १९ देपी व भा-२. २० ऊपरि इप्रो. २१ वाइ व भा-२. २२ चस्यु भा-१ इ, चस्नो व भा-२. २३ ताहो व भा-२. २४ नामिं भा-१ नामि इ, नामिं व, नामें भा-२. २५ तुं भा-१ इ भा-२. २६ बीहेशि भा-१ इ. २७ °थो भा-१, थु इ, थी व भा-२.

२८ देथी व भा-२; व भा-२ मां आनी पछी 'हुं' छे. २९ वहुं भा-१ व भा-२. ३० हुं इप्रो. ३१ क्षुद्रनो व भा-२. ३२ वींट्यो व, वींट्यो भा-२. ३३ परिव र्ते इप्रो. ३४ न इप्रो. ३५ वरि व, करे भा-२. ३६ वोट्यो व भा-२. ३७ व भा-२ मां आ पंक्ति आ प्रमाणे छे :

'ते पिंगल [पिंगलव] मुं ऊपरि [तुणि] कोपश्यो ?'

३८ आनी पछी व भा-२ मां 'पण' छे. ३९ पडिं व, पडें भा-२. ४० छि व, छे भा-२. ४१ पछइ व, पच्छेइ भा-२. ४२ काननइ भा-१ इ, कानने व भा-२. ४३ विषेइ भा-१ विषिं व, विषि भा-२. ४४ दें भा-१ इ, थिं व, थें भा-२. ४५ तेहेने भा-१ इ, तेन्हि व, तेन्हे भा-२. ४६ मनुना व. ४७ जेहु भा-१, जेह्रो इ, व भा-२. ४८ होइ इप्रो. ४९ तेहं व, तेहों भा-२. ५० छिइ भा-१ इ. ५१ छइ भा-१ इ, छेइ व भा-२. ५२ अशार्य इप्रो; आनी पछी व भा-२ मां 'जाणतो न होइ' एवो शब्दक्रम छे. ५३ जाणे भा-१ इ. ५४ तोहोइ भा-१ इ. ५५ तेन्हें भा-१ इ भा-२, तेन्हिं व; आनी पछी व भा-२मा 'पण' छे. ५६ निं व. ५७ व भा-२ मां आ चरण आ प्रमाणे छे :

'क्षणेन भावेन च यान्ति शूराः'

[पृ. १३३] ५८ व भा-२ मां आ अनुवाद आ प्रमाणे छे :

'जे दानि [दानें], तपि [तपें], अनेक यज्ञे करी पामीये ते प्राणदान [प्राणदाने] करी पामीये.'

५९ दाने भा-१. ६० छांडतो भा-१ इ. ६१ परिपालनीयाः व भा-२. ६२ एतलां व भा-२. ६३ युद्धे करतां व, युद्ध करतां भा-२. ६४ रावणां व भा-२. ६५ युद्धने व भा-२. ६६ विषे व भा-२. ६७ मरीये व भा-२; आनी पछी व भा-२ मा 'ते' छे. ६८ वैरीनइ भा-१ इ, वैरीने व भा-२. ६९ वशि भा-१ इ, वश व भा-२. ७० व भा-२ मा आ पंक्तिनो अंत आ प्रमाणे छे :

'जीवीये ते कांई नही, ते मुउं.'

७१ मूउ भा-१ इ. ७२ थशे व भा-२. ७३ पामे व भा-२. ७४

शमुनें भा-१ भा-२, शमुनि व. ७५ जीपी व भा-२. ७६ तु भा-१; व भा-२मां नथी. ७७ पामे व भा-२. ७८ द्वरनि व, द्वरने भा-२. ७९ नि व भा-२. ८० जे व भा-२. ८१ बेटो व भा-२. ८२ पीहे व भा-२. ८३ तेन्टि व. ८४ विभूष्यित व. ८५ घोडो व भा-२. ८६ एतला व भा-२. ८७ पदार्थ व भा-२. ८८ होइ हस्रो.

८९ चीतवतो भा-१ द, चींतवतो व भा-२. ९० होउ द. ९१ छि व, छैं भा-२. ९२ मारदो व भा-२. ९३ छेद व, च्छेद भा-२. [पृ. १३४] ९४ दिरं व भा-२. ९५ कुद भा-१. ९६ दान हस्रो. ९७ आनी पछी व भा-२ मां 'दड' छे. ९८ पन्छि व, पच्छे भा-२. ९९ एन्हे भा-१ द, एन्हि व, एन्हें भा-२; आनी पछी भा-१ मां 'बुद्धि' छे. १०० चीतवी हस्रो. १ चीतयो व भा-२. २ आ शब्द हस्रो मां नथी. ३ जे व भा २. ४ जे व भा-२; भा-१ मां नथी. ५ विना व भा-२. ६ वरि व, घरे भा-२. ७ हस्रो मां नथी. ८ पाने व भा-२. ९ टाटहोडीथी भा-१ द, टींटोहडीथी व भा-२. १० पाम्यो व भा-२. ११ आनी पछी व भा-२ मां 'कथा' छे.

[१५. टींटोडो अने समुद्र]

१ जे व भा-२. २ तेन्हि व. ३ एर व भा-२. ४ तटने विषे व भा-२. ५ टीटुहडी भा-१ द, टीटोहोडी व भा-२. ६ व मां 'रहि विहि' अने भा-२ मां 'रहें विहि' एवो शब्दक्रम छे. ७ टीटोहोडी व भा-२; आ शब्द पछी व भा-२ मां आ प्रमाणे पाठ छे:

'ते आगलि छी कहती हीई'

८ टीटुहडीयें भा-१ द. ९ मुन्हि व. १० छेद व भा-२. ११ भणी व भा-२. १२ भलो व भा-२. १३ आनी पछी व भा-२ मां 'ए' छे. १४ मूकुं व भा-२; आनी पछीनो पंक्तिनो अन्तभाग व भा २ मां नथी. १५ टीटटेडो व, टींटहोडो भा-२. १६ बोयो व भा-२. १७ इहां व भा-२. १८ आणे व, आपणा भा-२. १९ जूनो व भा-२. २० मावाश्ना व भा-२. २१ वारानो व भा-२. २२ व भा-२ मां नथी. २३ तिहां व भा-२. २४ जै व भा-२. २५ टींटुहडी भा-१, टीटुहडी द, टीटंडी व भा-२. २६ ईहां हस्रो. २७ पूनिमने व भा-२. २८ दिन व भा-२. २९ आवशे व भा-२. ३०

जाइं व, जाइ भा-२. ३१ व भा-२ मां नथी. ३२ तींगें भा-१, तींगे इ, तेथी व भा-२. ३३ स्थानक व भा-२. ३४ काइं व भा-२. ३५ नही व भा-२. ३६ पाते ज व भा-२. ३७ वेलि भा-१; व भा-२ मां नथी. ३८ टींदुट्टो भा-१ इ, टीटोडो व भा-२. ३९ बोल्यो व भा-२. ४० स्त्री भा-१ व भा-२. ४१ मुंहि व. ४२ जाणे व भा-२. ४३ छे व भा-२. ४४ साथिं व भा-२. ४५ करवा व भा-२. ४६ व भा-२ मां आ पंक्ति आ प्रमाणे छे :

'ते ए सांभल्युं नथी ?' [पृ. १३५]

४७ व भा-२ मा आ श्लोकनो अनुवाद आ प्रमाणे छे :

जे पुत्र परथी भय पामी आपणुं स्थानक छाडे [छांडे] तींगे पुत्रें करी तेन्ही माता अपुत्रिणी बाझि जाणवी.

४८ वीहीनो भा-१ इ. ४९ स्थान भा-१ इ. ५० तींगें भा-१. ५१ वांझिणी भा-१ इ. ५२ मार्यो ह्प्रो. ५३ हस्तीनां व भा-२. ५४ छायानें ह्प्रो. ५५ वरइ भा१ इ. ५६ व भा-२ मा आ अनुवाद आ प्रमाणे छे :

हिमाचलनो जे वायु अने प्रभातनों अति टाढो जे वायु तींगें करी टाढो [टाढ्यो] थको कुण पुरुष जल करी टाढि फेडे.

५७ परलोक० व भा-२. ५८ हरतांनि भा-१ भा-२, हर्तनें व भा-२. ५९ विदारे भा-१, विदारें इ व भा-२. ६० एड्रो व भा-२; पछी व भा-२ मां 'जे' छे. ६१ सिंह भा-१ व भा-२; आनी पछी व मां 'तिन्हि' अने भा-२ मां 'तेन्हे' छे. ६२ सूतानें भा-१ इ भा-२, सूतानि व. ६३ कोण व भा-२. ६४ यमनें व भा-२. ६५ जावानि भा-१, जावानि इ, जावानें व भा-२; आनी पछी भा-१ मां 'सूतो सिंह' छे. ६६ ऊठाडि व, ऊठाडे भा-२. ६७ यमना ह्प्रो. ६८ स्थाननें ह्प्रो. ६९ पामेंसिइ व भा-२. ७० यमनें भा-१ भा-२, यमने इ, यमनि व. ७१ इम ह्प्रो. [पृ. १३६] ७२ कहि व, कहें भा-२. ७३ ते ह्प्रो. ७४ तू माहि व भा-२. ७५ व भा-२ मां नथी. ७६ व भा-२ मां आनी पहेलां 'निरूप' छे. ७७ व भा-२ मां नथी. ७८ ते व भा-२. ७९ मल्यो व भा-२. ८० स्नेच्छाइ व भा-२. ८१ पेंगे व भा-२. ८२ मोलें व भा-२; आनी पछी व भा-२ मां 'तुं' छे. ८३ आनी पछी व भा-२ मां 'जिम' छे. ८४ सगो व भा-२. ८५ हनें व भा-२. ८६ आपुणपानें भा-१ इ, आपणपानें व भा-२. ८७ आनी पछी व भा-२ मां 'अथवा' छे. ८८ जाणीयें भा-१, जाणीयें इ व भा-२. ८९ मुन्हे भा-१, मुन्हि व, व, मुंन्हें

भा-२. ९० येन्हे भा-१ इ, येन्हि व, येन्हें भा-२. ९१ होइ ह्प्रो. ९२ ते ह्प्रो. ९३ योग्य ह्प्रो. ९४ इणें भा-१, इणे इ, इंणि व भा-२. ९५ आनी पछी व भा-२ मां 'ए' छे. ९६ विचारे व भा-२. ९७ तेन्हा व भा-२. ९८ कार्य व भा-२. [पृ. १२७] ९९ हितनें भा-१ इ, हित व भा-२. १०० ये ह्प्रो. १ व भा-२ मां नथी. २ करेइ व भा-२. ३ अनुवादनी आ पंक्तिनो उत्तरार्ध अहींथी आ प्रमाणे छे :

'...... ते पुरुष दुर्बुद्धि काछवानी परें पम्यो नाश पामे.'

४ काछवानीं भा-१. ५ पाम्यु भा-१ इ. ६ पामइ भा-१ इ. ७ टींटु-हडु भा-१ इ, टीटोहोडो व भा-२. ८ पूछे व भा-२. ९ छे व भा-२. आनी पछी व भा-२ मां 'कथा' छे. १० टीटुंहडी भा-१ इ, टीटोहोडी व भा-२. ११ कहइ भा-१ इ, कहे व भा-२. १२ छि व, छे भा-२.

[१६. बे हंस अने काचबो]

१ °मध्य व भा-२. २ नामे व भा-२. ३ काछव ह्प्रो. ४ वसै व, वसेइ भा-२. ५ तेन्हि व, तेन्हें भा-२. ६ नामें ह्प्रो; आनी पछी ह्प्रो. मां 'बि' छे. ७ घणो ह्प्रो. ८ करें भा-१ इ भा-२, करिं व. ९ ह्प्रो मां नथी. १० सरोवरनि व, सरोवरनें भा-२. ११ व मां 'बैठा रहिं' अने भा-२ मां 'बैठा रहे' ए प्रमाणे पंक्तिनो अन्तभाग छे. १२ कहे भा-१ इ. १३ सांझि व, साझें भा-२. १४ आपणे व भा-२. १५ आपणि व, आपणे भा-२. १६ रहतां ह्प्रो. १७ केतले भा-१, केतलें इ व भा-२ १८ आनी पछी व भा-२मां 'करी' छे. १९ पछेइ व भा-२. २० कछुमीवने ह्प्रो २१ कहता ह्प्रो. २२ सुकुं व भा-२. २३ छिइ व, छेइ भा-२. २४ सुं व भा-२. २५ करेशि ह्प्रो. २६ अम्हनि व, अम्हने भा-२. २७ घणुं व भा-२. २८ छेइ व भा-२. २९ सामलीनि व भा-२. ३० बोल्यो व भा-२. ३१ अम्हनइं भा-१ ३२ पापि व, पापे भा-२. ३३ नही व भा-२. ३४ छेइ व भा-२. ३५ मित्रने व भा-२. ३६ बाधवने व भा-२. ३७ करे व भा-२. ३८ न ह्प्रो ३९ करे व भा-२. ४० करिइ भा-१, करे व भा-२. ४१ करें व भा-२. ४२ मुन्हे भा-१ इ, मुन्हि व, मुन्हें भा-२. ४३ विहो भा-१ इ. ४४ पारो भा-१ इ. ४५ साही ह्प्रो ४६ मध्यें व भा-२. ४७ लाकडे व भा-२. ४८

व भा-२ मां नथी. ४९ राहेसि व भा-२. ५० ईर्गो हप्रो. ५१ परिं हप्रो. ५२ तुम्हे भा-१ इ, तुंम्हि व, तुंम्हे भा-२. ५३ तम्हे भा-१ इ; व भा-२ मां नथी. ५४ मयुं हप्रो. ५५ होइ हप्रो. ५६ तिहा हप्रो. ५७ लेइ हप्रो. ५८ जाउ हप्रो. ५९ तें हप्रो. [पृ. १३८] ६० सुंवयुं हप्रो ६१ तो हप्रो. ६२ पछेइ व भा-२. ६३ तीणि भा-१ इ भा-२, तीणि व. ६४ मित्रे हप्रो. ६५ विहो भा-१ इ, विहू व भा-२. ६६ पारो भा-१ इ. ६७ व भा-२ मां नथी. ६८ काच्छवानें हप्रो. ६९ आ पक्ति व भा-२ मां आ प्रमाणे छे :

'पच्छेइ जाता हेठुं जोइ तो एक नगर देषेइ.'

७० जात भा-१ इ. ७१ हेठुं भा-१ इ. ७२ भा १ इ मा आ पंक्तिनो अन्तभाग आ प्रमाणे छे :

'जोइ तो देषइ.'

७३ तेन्हे भा-१ इ, तेन्हि व, तेन्हे भा-२. ७४ देषीने व भा-२. ७५ रयेडु इ. ७६ छई हप्रो. ७७ जोउ हप्रो. ७८ लोकनो हप्रो. ७९ काच्छबो भा-१ व भा-२. ८० चोरयो व भा-२. ८१ शु भा-१ व भा-२, ईंशु इ. ८२ बोले इ, बोलतो ज व भा-२. ८३ तेतलें भा-१ इ; व भा-२ मां नथी. ८४ मुंई भा-१ इ, मुंई व भा-२. ८५ पडु इ, पड्यो व भा-२. ८६ आनी पछी व भा-२ मां 'मारी' छे. ८७ पायो व भा-२. ८८ टींटुहडी भा-१ इ. टीटोहोडी व भा-२. ८९ आगिम भा-२; आ श्लोकनो अनुवाद भा-१ इ मा नथी, बोंसमा मूकेलो अनुवाद व नो छे. ९० अंन भा-२. ९१ स्थाजे भा-२. ९२ ते भा-२. ९३ भविष्यंत भा-२. ९४ टीटुहडो इ, टीटोहु व, टीटोइ भा-२. ९५ व भा-२ मा 'ए क्या किम ?' एवो शब्दक्रम छे. ९६ टिट्टीभि भा-१ इ, टिटोडी व, टीटोडी भा-२. ९७ वहइ भा-१ इ, बोली व भा-२. ९८ प्र भा-२ मां नथी.

[१७. अनागतविधाता, प्रत्युत्पन्नमति अने यद्भविष्य]

१ ⁰मध्यें व भा-२. २ मत्स्य व भा-२. ३ व भा-२ मां नथी. ४ रहे व भा-२. ५ त्रीजो व भा-२. ६ त्रीजो व भा-२. ७ ते मध्ये व भा-२ ८ उदकनेइ व भा-२. ९ वराचे व भा-२. १० एहं भा-१. ११ जे व

भा-२. १२ घणे व भा-२. १३ मत्स्ये०-व भा-२. १४ °भयो व भा-२. १५ छेद्द व भा-२. १६ प्रभाति व भा-२. १७ मत्स्यबंधन व भा-२. १८ करुग भा-१ इ, करी लेई जाशुं व भा-२. १९ वचननें व भा-२. २० सांभली व भा-२. २१ चींतवतो भा-१ भा-२. २२ सांझ व भा-२. २३ विहाणइ भा-१; आनी पछी व भा-२ मां 'सर्व मत्स्यनें' छे. २४ साहासि भा-१ इ, साहासे व भा-२. २५ करीशे व भा-२. २६ तेथी व भा-२. २७ व भा-२ मां नथी. २८ प्रत्युत्पन्नमतिनें व भा-२. २९ अने व भा-२. ३० यद्भविष्यने व, यद्भविष्यनें भा-२. ३१ व भा-२ मा नथी. [पृ. १३९] ३२ व भा-२ मां नथी. ३३ अनेरे व भा-२. ३४ द्रहि भा-१ इ; आनी पछी इ मां 'प्रवाहि' छे; अने व भा-२ मां 'जलद्रह मध्ये' छे. ३५ लेई व भा-२. ३६ पच्छे व भा-२. ३७ पूछतो भा-१ व भा-२. ३८ होउ इ. ३९ बोल्यो व भा-२. ४० व भा-२ मां नथी. ४१ आनी पछी व भा-२ मां 'आपणनें' छे. ४२ व भा-२ मां नथी. ४३ व भा-२ मा नथी. ४४ जो व भा-२. ४५ आविसें व भा-२. ४६ आनी पछी व भा-२ मां 'आपणपुं' छे. ४७ व भा-२ मां नथी. ४८ करी व भा-२. ४९ राखोस भा-१ राखसुं व भा-२. ५० घणा भा-१ इ; आ आखी पंक्ति व भा-२ मा नथी. ५१ छे भा-१ इ. ५२ घटें भा-१ इ. ५३ आहा व भा-२. ५४ तेथी व भा-२. ५५ ठाम ह्प्रो. ५६ जन्मनो व भा-२. ५७ छाडीयि इ, छाडीयें व भा-२. ५८ छेद्द व भा-२. ५९ सिद्धि ह्प्रो. ६० जाई ह्प्रो. ६१ तेथी व भा-२; आनी पछी व भा-२ मां 'ए' छे. ६२ प्रवर्त्ते व भा-२. ६३ छेद्द व भा-२. ६४ व भा-२ मां 'पच्छेद्द' थी पंक्ति शरू थाय छे. ६५ अनेरे व भा-२. ६६ द्रह भा-१ इ, द्रहि व. ६७ ग्युं भा-१ इ, ग्यो व भा-२. ६८ आ अने आनी पछीनी पंक्ति व भा-२ मा आ प्रमाणे छे :

'पछि प्रत्युत्पन्नमति अने यद्भविष्य विहि रह्या. एहे एक दिवसि सघला मत्स्यना ढीवर आवी, सउटुंब आवी जाले करी ते सर्व साद्या.'

६९ सगानें भा-१ इ. ७० जालें भा-१ इ. ७१ साझ्या इ. ७२ पच्छेद्द व भा-२. ७३ मत्स्य व भा-२. ७४ जालने व भा-२. ७५ छेहड भा-१ इ, छेड्रि व भा-२. ७६ सरपी भा-२. ७७ रह्यो व भा-२, आनी पछी व भा-२ मां 'निश्चल थै रह्यो' ए प्रमाणे पाठ छे. ७८ आफणीये ह्प्रो. ७९ मुउ भा-१ इ, मुउ व भा २. ८० जाणी ह्प्रो. ८१ कांठे व भा-२. ८२ नाख्यो

व भा-२. ८३ पछे व भा-२. ८४ ऊडी भा-१ इ. ८५ व भा-२ मा 'ते मत्स्य उडी' ए प्रमाणे शब्दक्रम छे. ८६ पच्छेइ व भा-२. ८७ व भा-२ मां नथी. ८८ तीर्गे भा-१, तीणे इ व भा-२. ८९ मार्यो व भा-२. ९० मुज व भा-२. ९१ तेथी व भा-२.

९२ टीटोडु व भा-२. ९३ तुं इप्रो. ९४ मुंन्हे भा-१ भा-२, मुन्हे इ. ९५ सरवो इप्रो. ९६ मानें इप्रो. ९७ छि व, छे भा-२. [पृ. १४०] ९८ अनुवादनो अन्तभाग आ प्रमाणे छे :

'एताने घणो अंतर परस्परें.'

९९ तून्हें भा १ इ, तुंन्हि व, तुंन्हे भा-२; आनी पछी व भा-२ मां 'कन्होइ [केन्होइ] पराभव नही' ए प्रमाणे पाठ छे. १०० मेल्हां व भा-२. १ व भा-२ मां आ पंक्ति आ प्रमाणे छे :

'पूर्वे समुद्रे टीटोडीनुं वाक्य सामर्थ्यो ते स्मरी समुद्र चीतवतो हौउ, "अहो वचन ए साधु."

२ वाक्य भा-१. ३ आगणे व भा-२. ४ करे व भा-२. ५ टीटुहडु भा-१ इ, टीटोडो व, टींटोहडो भा-२. ६ आनी पछीनो अनुवाद व भा-२ मां आ प्रमाणे छे :

'आभ पडवानें भयें उंचा पग [पगे] करी सूइ.'

७ पडतो भा-१ इ. ८ जाणी भा-१ इ. ९ व भा-२ मा नथी. १० तेथी व भा-२.

११ आ पंक्ति व भा-२ मां आ प्रमाणे छे :

'ए शुं करे, एन्हा ईंडा हरुं.'

१२ एहुं इ भा-२. १३ व भा-२ मां नथी. १४ चींतवीनि व भा-२. १५ जिवारें इप्रो. १६ टीटुहडु भा-१ इ, टीटोडु व भा-२. १७ टीटुहडी भा-१ इ, टीटोडी व, टींटोडी भा-२. १८ आनी पछी व भा-२ मां पंक्तिनो उत्तरार्ध आ प्रमाणे छे :

'विहि चिण ऐरा क्रन्ना तिवारें समुद्रें कौतुकें तेन्हां ईंडा वेलि करी ताणी लीधां.'

१८ आनी भा-१ इ व मां 'विहि' छे. १९ कीड़ी भा-१ इ. २० रूडी भा-१ इ. २१ ग्यां भा-१ इ. २२ वेलतें भा-१ इ. २३ कौतकें भा-१ इ.

२४ तेन्हें व भा-२. २५ ईंडां हस्रो. २६ देषेइ व भा-२. २७ देषेइ व भा-२. २८ पढइ भा-१ इ, पछे व भा-२. २९ भर्त्तारनें हस्रो. ३० कहवा लागी इ. ३१ हींडे हस्रो. ३२ हस्रो मां आनी पहेलां 'आ जो' छे; माह्रा हस्रो. ३३ ईंडां हस्रो. ३४ समुंद्र भा-१ इ, समुद्र व भा-२. ३५ माहुं भा-१ इ, माहरुं व भा-२. ३६ में भा-१ व भा-२, मे इ. ३७ तूर्न्हे भा-१, तून्हे इ, तून्हि व, तूंर्न्हे भा-२. ३८ ईहांथी हस्रो. ३९ जैये हस्रो. ४० पढइ व भा-२. ४१ तुं हस्रो. ४२ आनी पछी व भा-२ मा 'दुर्बुद्धिनी परिं' एवो पाठ छे. ४३ व भा-२ मां नथी. ४४ व भा-२ मां आ पंक्ति व भा-२ मां आ प्रमाणे छे:

'आहां हुं अग्निप्रवेश करेसि.'

४५ पञ्जोरा भा-१. ४६ टींटुहडु भा-१, टीटुहडु इ, टीटोडो व भा-२. ४७ बोल्यो व भा-२. ४८ माहु हस्रो. ४९ ए हस्रो. ५० गाजे व भा-२. ५१ छेइ व भा-२. ५२ मुन्हे भा-१, मुन्हइ इ, मुंन्हें भा-२. ५३ माने भा-२. ५४ ज्ये भा-१, जे व भा-२. ५५ निर्गुण व भा-२. [पृ. १४१] ५६ आपणगानें हस्रो. ५७ ये भा-१. ५८ वपाणि व, वपाणें भा-२. ५९ मूर हस्रो. ६० पाडुउं हस्रो. ६१ बोले व, बोलें भा-२. ६२ दिहाड भा-१ इ; व भा-२ मां नथी. ६३ मारे व भा-२. ६४ व भा-२ मा नथी. ६५ एतलां हस्रो. ६६ पुरुषनें हस्रो. ६७ करें हस्रो. ६८ मुंन्हि भा-१, मुन्हि इ; आ श्लोकनो अनुवाद व भा-२ मां आ प्रमाणे छे:

'ए समुद्र मुझं क्षमायुक्त देषी असमर्थ जाणेइ छइ [छेइ]. एह्रो पुरुष समर्थ नोहे एम जाणे छि.'

६९ बोली व भा-२. ७० व भा-२ मां 'पक्षी बोलावी' एवा शब्द छे. ७१ मोर व भा-२. ७२ ये व भा-२. ७३ माहु व भा-२. ७४ फेडो व भा-२. ७५ पछेइ व भा-२. ७६ पाये व भा-२. ७७ समुद्रनइ भा-१. ७८ लाव्या हस्रो; आनी पछीनी बे पंक्ति भा-१ मा नथी. ७९ पठे व, पच्छे भा-२. ८० एक व भा-२. ८१ पक्षी व भा-२. ८२ बोल्यो व भा-२. ८३ धूर्ले व भा-२. ८४ पाहाणे व भा-२. ८५ पूरीये व भा-२. ८६ पछेइ व भा-२. ८७ धूर्ड व भा-२. ८८ व भा-२ मा नथी. ८९ पच्छेइ व भा-२. ९० समुद्रछुं व भा-२. ९१ अनेरे हस्रो. ९२ कीजेइ व भा-२. ९३ गरुढ भा-१ इ, गरुड भा-२; आ पंक्ति व मा नथी. ९४ रहइ भा-१ इ, रहे भा-२. पं ४३

९५ छ व भा २ ९६ आगणने भा १ ड, आगणन भा २ ९७ व भा १ इ
९८ होर भा-१ इ, होर व भा २ ९९ तेहु हवा १०० वचन व भा २
१ वरखु व भा २, आनी पछीनो अनुवाद व भा २ मां आ प्रमाण छे

'तिम हसनु यूथ वनमाहि वांखु ते वृद्धनी बुद्धि मुगनु

२ पूछ्या व भा २ ३ हीआ व भा २ ४ कहतां इ कहना व भा २
५ हौउ भा १, हीआ इ व भा २ [पृ १४२]

[१८. वृद्ध हंस अने वड उपरनी वेल]

१ कोसमांना शब्द भा १ ना छे २ मय व भा २ ३ शाखानो हसो
४ आनी पछी व भा २ मां 'एक' छे ५ टहूव भा २ ६ रहइ व भा २
आ आखी वार्ता भा १ मा सक्षेपमां आ प्रमाणे छ

'एक वनमाहिं मोगी शाखाना वड तिहां हसनु टोलु रा[इ] ते वड तलइ एक वेली ऊगी पछइ गरढा हसे परिवार प्रति क ु ' ए वेलि पाडइ नाही छेदा " ते न मानू पछी पास बध्यां गरडानी बुद्धयी नासी गया ए छत त घणो विस्तर छइ इही सघु

७ वड व भा २ ८ तले व भा २ ९ वेति इ व भा २ १० आ पक्ति व भा २ मा आ प्रमाण छे

'ते देषी ते हस-यूथमाहिथी वृद्ध हस हता ते बोल्यो '

११ आनी पछी व भा २ मां 'ऊगे छेद ते शब्दो छे १२ पाडइ व भा २
१३ ल्गे व भा २ १४ ल्गे व भा २ आनी पछी व भा २ मा चाचे करी छेदो' छे १५ व भा २ मां नथी १६ आनी पछी व भा २ मा आ प्रमाणे पक्ति छे

'नहीं तो बाध्यो पछी एथी यान छेइ, का चनी यान करशे '

१७ पछेइ व भा २ १८ वृक्ष व भा २ १९ व भा २ मा नथी २० पच्छेइ व भा २ २१ ताणी व भा २ २२ व भा २ मां नथी २३ व भा २ मा नथी २४ च ी व भा २ आनी पछनी व भा २ मां 'थैनइ' अने भा २ मा 'थैनइ' छे २५ हसनइ व भा २ माले व भा २ २६ बाधी व भा २ २७ म्यो व भा २ २८ सांझे इ व मा आ पक्ति नथी भा २ मां

आ पंक्ति आ प्रमाणे छे:

'पच्छेइ साझें हंस सर्वे आव्या वैटा, तेतलें वैयागा पाशे कगी.'

२९ तीणे इ. ३० वडि इ. ३१ बेटा इ. ३२ पच्छिइ व, पच्छेइ भा-२. ३३ तम्हे इ व भा-२. ३४ माहु इ, माहुं व भा-२. ३५ मान्यु इ व भा-२. ३६ वष्टमाहि इ, पाशमाहि व भा-२. ३७ पड्या व भा-२. ३८ मूआ व भा-२. ३९ हवें इ व भा-२. ४० घटेइ व भा-२; आनी पछी व भा-२ मा आ पंक्ति छे: 'काई [काई] उपाय कहो.' ४१ व भा-२ मां नथी. ४२ बोल्यो इ व भा-२. ४३ जो व भा २. ४४ माहु इ, माहु व भा-२. ४५ कयु व भा २. ४६ वारें इ व भा २. ४७ आवे व भा-२; आनी पछी व भा-२ मा 'ति वारें' छे. ४८ हालशु इ, हालशो व भा-२; आनी पहेला व भा २ मा 'थै रह्यो' छे. ४९ मा व भा-२. ५० जाणशे व भा-२. ५१ आनी पछी व भा-२ मा 'आफणीइ' छे. ५२ व भा-२ मां नथी. ५३ पच्छेइ व भा-२. ५४ चडीनेइ व, चडीनेइ भा-२. ५५ तम्हने इ, तम्हनि व, तम्हनें भा २; आनी पछी व भा-२ मां 'आफणीये' छे. ५६ नाखशि इ, नाखसे व भा-२. ५७ भुंइ व भा-२. ५८ तिवारें व भा-२. ५९ नाखी व भा-२. ६० जेतले व भा-२ मा नथी. ६१ ऊतरिं व, ऊतरे भा-२. ६२ तेतले इ भा-२. ६३ 'सघला साथे ज उडव्यो' ए प्रमाणे शब्दक्रम छे. ६४ एह्व व, एहु भा-२. ६५ पच्छी व भा-२. ६६ आव्यो इ व भा-२ ६७ तो व भा-२. ६८ व भा २ मा नथी. ६९ सर्वे व भा-२. ७० दियइ इ, देपेइ व भा-२. ७१ पच्छेइ व भा-२ ७२ तीणि इ, तीणि व, तीणें भा-२. ७३ सर्वे व भा-२. ७४ छोडी व भा-२ ७५ भुंई इ व भा-२. ७६ पछेइ व भा-२. ७७ ते व भा-२. ७८ ऊतरेइ व भा-२ ७९ तेतले इ, तेतलें व भा-२. ८० वृद्ध व भा-२. ८१ हंसना इ व भा-२. ८२ वचनथी व भा-२. ८३ सार्यि व भा-२. ८४ गया इ व भा-२.

८५ कह्या व भा-२ ८६ पछी व भा-२ ८७ सर्वे व भा-२. ८८ पंखी भा-१, पखी इ, पच्छी व भा-२ ८९ कन्हे भा-१ इ, कन्हि व, कन्हे भा-२. ९० जईने व भा-२. ९१ तिहा व भा-२ ९२ पच्छे व भा-२. ९३ बोल्यो व भा-२. ९४ तम्हे भा-१ इ भा-२, तम्हि व ९५ हंस व भा-२; आनी पछी व भा-२ मा आ शब्दो मळे छे- 'छिइ [छेइ] ते कन्हि [कन्हे] जाउ, तम्हे सर्वे जाउ.' ९६ तम्हने भा-१, तम्हने इ. [पृ. ३३३] ९७ फेडशे भा-१

इ; आ पंक्ति व भा-२ मां नथी. ९८ आ पंक्ति व भा-२ मां आ प्रमाणे छे :

'जै आनंद करुं'

९९ गरुडने भा-१ इ, गरुडनें व भा-२. १०० छ्राजरो व भा-२. १ यन्हइ भा-१ इ, यन्हि व, कन्हे भा-२. २ एदइ भा-१ इ. ३ समय इप्रो. ४ व भा-२ मां नथी. ५ मारवानि व भा-२. ६ बोलाव्यो इप्रो. ७ छेइ व. ८ रार्वे व भा-२. ९ व भा-२ मां नथी. १० व भा-२ मां नथी. ११ स्वामी व भा-२. १२ छं व भा-२. १३ व भा-२ मां आ पंक्ति आ प्रमाणे छे :

'अम्हि [अम्हे] दुर्बल जाणीनइ समुद्रे अम्हारां ईंडा लीधां'

१४ समुद्रें भा-१ इ. १५ सांभलीये इप्रो. १६ छे व भा-२. १७ दरिद्रि भा-१, दरिद्रीये व, दरिद्रीयें भा-२. १८ विमोंरें इप्रो. १९ जिहे व भा-२. २० गीडो व भा-२. २१ मारयो व भा-२. २२ पूछे भा-२. २३ छे भा-२. २४ गरुड भा-१ इ, वृद्ध व भा-२. २५ बोल्यो व भा-२.

[१९. सिंह अने घेटुं]

१ कोएक इप्रो; व भा-२ मां 'मींढु' शब्द आनी पछी आवे छे. २ व भा-२मां नथी. ३ °थो भा १ इ, °थी व भा-२. ४ भूलो व भा-२. ५ मींढु भा-१. ६ मातो व भा-२. ७ एकलो व भा-२. ८ मध्ये व भा-२. ९ एकें व भा-२. १० सिंहि भा-१ इ, सिंहें व भा-२. ११ दीठु भा-१ इ, दीठो व भा-२. १२ तेन्हे भा-१ भा-२, तन्हि व. १३ देषीनइ भा-१ इ. १४ पाम्यो व भा-२. १५ चींतवतो भा-१ व भा-२. १६ होशे व भा-२. १७ मून्हि व, मून्हें भा-२. १८ मारे व भा-२. १९ विमासीनइ इ, विमासी व भा-२. २० मोडइ इ, हल व भा-२. २१ मुडइं भा-१, हल भा-२, व भा-२ मां नथी. २२ वेगले भा-१ इ, वेगलो व भा-२. २३ स्यु भा-१ इ, स्यों व भा-२. २४ पच्छे व भा-२. २५ व भा-२ मा आनी पछी 'मींडो' शब्द छे. २६ माहि वि भा-१ इ, वनमाहे व भा-२. २७ ओइ व भा-२. २८ पातो इप्रो. २९ दीठु इप्रो. ३० पच्छे व भा-२. ३१ चीतवतो व, चींतवतो भा-२; पछी व भा-२ मां 'होउ' छे. ३२ व भा-२ मां नथी. ३३ छेइ व भा-२. ३४ आनी पछी व भा-२ मा 'एन्हि' अने भा-२ मा 'एन्हे' छे. ३५ हशि भा-१ इ, होशि व भा-२. ३६ में इप्रो. ३७ कीधो व भा-२. ३८ एहुं इप्रो; आ पंक्ति व

भा-२ मां आ प्रमाणे छे :

'एहुं चींतवीनि [चींतवीनि] सिहिं [सिहिं] उच्छली मीडो थापि [थापे] मार्यो, मुउं.'

३९ हुं हप्रो. ४० कहुं हप्रो. ४१ छुं हप्रो. ४२ पर्क्षाने भा-१, पक्षीने इ, हंस पर्क्षीनी व भा-२. ४३ होउ इ. [पृ. १४४] ४४ नारायणने हप्रो. ४५ व भा-२ मां नथी. ४६ छेइ व भा-२. ४७ मुन्हि व. ४८ पच्यउ भा-१ इ, पच्यो व भा-२. ४९ ताह्रो व भा-२. ५० जेथी व भा-२. ५१ आश्रयोथो भा-१ इ, आश्रयथी व भा-२. ५२ वरे व भा-२. ५३ समुद्रने व भा-२. ५४ कहता हप्रो. ५५ व भा-२ मां 'अहो समुद्र' थी पंक्ति शरु थाय छे. ५६ टीट्टहडाना भा-१ इ, टीटोडीनां व भा-२. ५७ व भा-२ मां आनी पछी पंक्तिनो उत्तरार्ध आ प्रमाणे छे :

'आग्नेयास्त्र मुंकी आग्नेयास्त्र बाणे सर्वे शोषेशि.'

५८ आग्नेय भा-१ इ. ५९ तूंन भा-१ इ ६० शोषेश भा-१ इ. ६१ चींतवतो हप्रो. ६२ हौउ हप्रो. ६३ टीट्टहडानां भा-१ इ, टीटोडीना व भा-२. ६४ माहु इ, माह्रो व भा-२. ६५ ऊगनु भा-१ इ, ऊगनो व भा-२. ६६ एहुं हप्रो. ६७ विमाशीनइ भा-१ इ, विमासीनेइ व भा-२. ६८ नारायणनें हप्रो. ६९ वरीने व भा-२. ७० टीट्टहडाना भा-१ इ, टीटोडीना व भा-२. ७१ ईंडां भा-१, ईंडा व भा-२.

७२ कहुं हप्रो. ७३ छु हप्रो. ७४ दमनकें हप्रो. ७५ पूठि भा-१ इ, पछी व भा-२. ७६ पूछतो भा-१ इ, बोल्यो व भा २. ७७ दया भा-१ इ, दिशा व भा-२. ७८ कहो व भा-२. ७९ बोल्यो व भा २. ८० वंसे व भा-२. ८१ च्यारि भा-१ इ; व भा-२ मां नथी. ८२ पुण व भा-२. ८३ वेगळोयो भा-१ इ, वेगलो थकी व भा-२. ८४ तूंन्हि व, तूंन्हे भा-२. ८५ जाणवो व भा-२. ८६ छे व भा-२. ८७ कन्हइ भा-१ इ, कन्हि व, कन्हे भा-२. ८८ ग्यो व भा-२ ८९ करटकिं भा-१ इ, करटकें व भा-२. ९० पूछ्यूं व भा-२. ९१ बोल्यो व भा-२. ९२ परस्परि व, परस्परिं भा-२. ९३ फरें हप्रो. [पृ. १४५] ९४ मेरुनं हप्रो. ९५ परि हप्रो. ९६ जाणें व भा २. ९७ स्थिरमतिनें भा-१ इ मा २, स्थिरमतिनि व. ९८ मेरिं व, मेरें भा-२. ९९ मद्दा हप्रो. १०० पूर हप्रो. १ क्लिानें भा-१ इ भा-२,

शिलानि व; आनी पछी व मा २ मां 'पण' छे. २ भेदें व भा-२. ३ योग्यो ह्मो. ४ नेडूराअंगीनिइ व भा-२. ५ पुरुषे भा-१ इ, पुरुषानि व, पुरुषनें भा-२. ६ आरघुं व भा-२. ७ जे व भा-२. ८ जाणी ह्मो. ९ न भा-१ व भा-२, स इ. १० वरे व भा-२. ११ तेहनें भा-१ इ, तेन्हि व, तेन्हें भा-२. १२ शास्त्रनो ह्मो. १३ जाणवो व भा-२. १४ बोल्यो ह्मो. १५ जोईये भा-१ इ, जोइये व भा-२. १६ आगुं व भा-२. १७ किम भा-१ इ. १८ भोगवें व भा-२. १९ तेन्हि व, तेन्हें भा-२. २० व भा-२ मां नथी. २१ व भा-२ मां नथी. २२ जाणी भा-१ इ भा २, जाणि व. २३ बांधी व भा-२. २४ छेद व भा-२. २५ हृदयनिं व, हृदयने भा-२. २६ पांडानी घर व भा-२. २७ कीजि व भा २. २८ कीजेइ व भा-२. २९ विना व भा-२. ३० शत्रुनें ह्मो. ३१ होशि व भा-२. [पृ. १४६] ३२ वरीनिइ व, वरीनेइ भा-२. ३३ व भा-२ मां नथी. ३४ व भा-२ मां नथी. ३५ °मध्ये व भा-२. ३६ बोल्यो व भा-२. ३७ बोल्यो व भा-२.

[२० वरु अने सिंहने छेतरनारो शियाळ]

१ °मध्यें व भा-२. २ व भा-२ मां 'श्रीयो शंबु, वर्ण चोथो' ए प्रमाणे शब्दक्रम छे. ३ आनी पछी व भा-२ मां 'तिहां' छे. ४ नामें ह्मो. ५ सिंह व भा-२. ६ रहिं व, रहे भा-२. ७ तेन्हि व, तेन्हे भा-२. ८ आनी पछी व भा-२ मां 'हांउ' छे. ९ व भा-२ मा नथी. १० आनी पछी व भा-२ मां 'कीधा' छे. ११ कह्नो ह्मो. १२ हाँउ ह्मो. १३ वाई भा-१ इ. १४ लेधी व भा-२. १५ व भा-२ मा नथी. १६ तम्हनिं व. १७ ऊजावुं व भा-२. १८ पखिइ व, पच्छेइ भा-२. १९ प्रधान व भा-२. २० मागीनिइ व, मागीनेइ भा-२. २१ सध्यें व भा-२. २२ पाम्यो व भा-२. २३ चीतवतो व. २४ जो व भा-२. २५ अनेड भा-२. २६ एन्हे भा-२. २७ माटे व भा-२. २८ देई भा-१ इ, दे व भा-२. २९ मारे व भा-२. ३० गर्व्ये व भा २. ३१ बुद्धिमंतनें ह्मो. ३२ व भा-२ मा नथी. ३३ सर्व ह्मो; आनी पछी व भा-२ मां 'काम' छे. ३४ बुद्धि व भा-२. ३५ तेथी व भा-२. ३६ चींतवीनेइ व भा-२. ३७ व भा-२ मा आनी पछी 'क्षुधा करी' छे. ३८ पाणि व, पाणे भा-२. ३९ पीडाइ व भा-२. ४० छिद्र व, छेद्र भा-२. ४१ अम्हि व, अम्हे भा-२; पछी व भा-२ मा 'सर्व' छे ४२ हलुने व, हलुनें

व भा २ १७ आव्या हुंतो १८ आ पंक्ति व भा २ मां आ प्रमाणे छे

'जो दवेइ तो देयानु मांस तेन्हे न देयि [देवे] यु '

१९ चतुरस्न इ व भा २ २० यहतो इ व भा २ २१ द्दौउ इ व भा २ २२ एहु भा १ इ, एन्हा भा २, व मां नथी २३ बोल्तांयां इ, बोल्तां व भा २ २४ बोलतो इ, बोलतु व भा २ २५ नासमान व भा २, नासतो इ २६ हलावतो इ, हलावते व भा २ २७ शीयाल्ना इ, शीआल्ना व भा २ २८ मुग इ, मुख व भा २ २९ साम्हु इ व भा २ ३० द्दौउ इ व भा २ ३१ बोल्यो इ व भा २ ३२ व भा २ मां नथी ३३ व भा २ मां नथी ३४ व भा २ मां नथी. [पृ १७८] ३५ नाग व भा २ ३६ चींतवतो इ व, चींतवतो भा २ ३७ °नो व भा २ ३८ थो व भा २ ३९ लोक्नो व भा २ ४० साथ इ व भा २ ४१ वाले व भा २ ४२ जातो व भा २ ४३ द्दौउ व भा २ ४४ मध्य व भा २ ४५ आगर्थिया इ ४६ मर्गे व भा २ ४७ गले व भा २ ४८ छेइ व भा २ ४९ व भा २ मां आ पंक्ति आ प्रमाणे छे

'ते दोकरानो मोटो शब्द सांभळी सिंह चतुरक प्रति कहतो द्दौउ, ' अहो नासि जिम वेगे नगाइ तिम ' '

५० शीआल व भा २ ५१ बोल्यो व भा २ ५२ व भा २ मां नथी ५३ बीहाव व, बीहावें भा २ ५४ छें व भा २ ५५ बोलु इ, वा यो व भा २ ५६ तो व भा २ ५७ तु व भा २ ५८ नो व भा २ ५९ आवे व भा २ ६० छे२ व भा २ ६१ जोइ व भा २ ६२ बोल्यो व भा-२ ६३ चतुरकनु आ कथन व भा २ मां आ प्रमाणे छे

' " स्वामिन् आपण मारया जो ए धर्मराज उट मारयु देवी तु ऊपरि कोप्या छइ ते उन्ना वि शरीर मागवा आवे छेइ कहि [कहु] छेइ जे हु पटू वांइ दीवो अने२ ए उट का मारय एहु जाणी तु भणी धर्मराज आवे छेइ हु शतगुण [शतगुणां] शरीर ए कहि [कहे] जेशि '

६४ सांभळी व भा २ ६५ बोल्यो व भा २ ६६ व भा २ मां नथी. ६७ करवु व भा २ ६८ कहि इ व भा २ ६९ रंगे व भा २ ७० व भा २ मां नथी ७१ एहु भा १ इ, एहो व भा २ ७२ पछी व भा २ ७३ मृत व भा २ ७४ उट भा १ इ, उटन व भा २ ७५ नाठो व भा २

७६ एमले व भा-२; पंक्तिनो उत्तरार्ध व भा-२ मा आ प्रमाणे छे :

'ते घणा दिन लगे पाधो.'

७७ पारो भा १ इ. ७८ तेथी व भा-२. ७९ हुं ह्प्रो. ८० कहुं ह्प्रो. ८१ छुं भा-१ इ, छेइ व, छेइं भा-२. ८२ पच्छिड व. ८३ ग्या भा-१ इ, ग्या व भा-२. ८४ चींनवतो ह्प्रो. ८५ होउ भा-१ व भा-२, हौउ इ. ८६ मारशि भा-१ इ, मारशे व भा-२. ८७ सकीये व भा-२. ८८ स्वामीनो व भा-२. ८९ करीनेइ व भा-२. ९० वेगगे व भा-२. ९१ छुं ह्प्रो. ९२ सुखुं ह्प्रो. ९३ साहीनेइ व भा-२. ९४ प्रमादीनें व भा-२. ९५ ताणे व भा-२. ९६ परि ह्प्रो. ९७ निमाशीनड भा-१, विमाशीनइ इ, विमासी व भा-२; मुख्य पाठ तरीके स्वीकारेली 'वि' प्रतमांथी पडी गयेला शब्द व मांथी लीधा छे. [पृ. १४९] ९८ कन्हइ भा-१. ९९ जातउ भा-१, जातो इ व भा-२. १०० वेगलुधु भा-१ इ, वेगलोथो व भा-२. १ हौउ ह्प्रो. २ होइ ह्प्रो ३ जे व भा-२. ४ मध्यें व भा-२. ५ होइ ह्प्रो ६ होउ ह्प्रो. ७ मध्यें व भा-२. ८ ह्प्रो. मां नथी. ९ एहा व भा-२. १० सेवक व भा-२. ११ कन्हि व, कन्हे भा-२, कन्ह इ. १२ पछिइ व. १३ माथी व. १४ मन्हि व. १५ मिहि व भा-२. १६ तेन्ही भा-१ इ, व भा-२ मा नथी. १७ एही व भा-२. १८ देइ व भा-२. १९ पञ्यो व भा २. २० व भा-२ मा आ पंक्ति आ प्रमाणे मळे छे :

'मिहि नखे करी विदारे ते पेटमाहि सजीवकें शींगे करी सिंह मारयो, पेट फाडी मोटि [मोटें] कष्टे नाठो.'

२१ विहूर्नि व, विहून भा-२. २२ हौउ ह्प्रो २३ विहुना भा-१ इ, विहूना व भा-२. २४ करटक ह्प्रो २५ दमनकनि व २६ कहलो ह्प्रो. २७ हौउ ह्प्रो. २८ व भा-२ मा पंक्तिनो पूर्वार्ध आ प्रमाणे छे :

'अरे दुरात्मा जेहिनें ते......'

२९ उपजाव्यो व भा-२ ३० तें व भा-२. ३१ कीजूं भा-१, कीजुं इ भा-२, कीग्र व. ३२ कीधुं ह्प्रो. ३३ जाणि भा-१, जाणें इ व भा-२. ३४ साधीये ह्प्रो ३५ तेन्हे व, तेन्हे भा-२. [पृ. १५०] ३६ शमाटेट व भा-२. ३७ जाणवा ह्प्रो. ३८ अन्याइ व भा-२. ३९ करि इ, करी व, ४० जाणें व भा-२. ४१ तीणे ह्प्रो. ४२ स्याणपणें भा-१ इ, चातुर्यें व भा-२, पं ४४

४३ करवा व भा-२. ४४ व भा-२ मां आ पंक्तिनो अनुवाद आ प्रमाणे छे:

'जे चातुरीयें कीजेइ ते रुट होइ.'

४५ ऊजेड व भा-२. ४६ वडे व भा-२; आनी पछी व भा-२ मां 'सूर्यनें तेजिं [तेजे]' छे. ४७ फीटे व भा-२. ४८ ध्यानपणे भा-१ इ, ध्यानपणें व भा-२. ४९ पामेइ व भा-२. ५० वाठि व, वाठे भा-२. ५१ छइं भा-१, छेइं इ, छे व भा-२. ५२ ठनेइ व भा-२. ५३ ठाम व भा-२. ५४ जाणतो भा-१, जाणतो इ, जाणतु व भा-२. ५५ करें व भा-२. ५६ ठिं व, छे भा-२. ५७ च्यारि व भा-२. ५८ माहे व भा-२. ५९ तजतो व भा-२. ६० जो व भा-२. ६१ होइ ह्मो. ६२ करवो ह्मो. ६३ व भा-२ मा नथी. ६४ नमेइ व भा-२. ६५ पाईये ह्मो. [पृ. १५१] ६६ ये व भा-२. ६७ ये व भा-२. ६८ चुउ भा-१ इ, चोथो व भा-२. ६९ पुरुषनें भा-१ इ भा-२, पुरुषनि व. ७० मूरखूं व भा-२. ७१ पापेइ व भा-२. ७२ गुरु भा-१ इ. ७३ निफल भा-१, निष्फल व भा-२. ७४ एह्वाथा भा-१, एह्वा थको व भा-२. ७५ कीजेइ व भा-२. ७६ जोटहेइ व भा-२. ७७ भण्यो व भा-२. ७८ छे व भा-२. ७९ छे व भा-२. ८० तोहइ व, तोहोइ भा-२. ८१ नाशने व भा-२. ८२ इंद्रिय व भा-२. ८३ वश व भा-२. ८४ बुद्धिनें ह्मो. ८५ करे व भा-२. ८६ प्रवर्त्तावि व भा-२. ८७ जीणी व भा-२. ८८ विणाइं व भा-२. ८९ व भा-२ मां नथी. ९० नामेइ व भा-२. ९१ अहीं व भा-२ मां 'न' छे. ९२ व भा-२ मा नथी. ९३ शाति व भा-२. ९४ न करे व भा-२. ९५ जे व भा-२. ९६ यश व भा-२. ९७ न करे व भा-२. ९८ तीर्ण भा-२. ९९ विद्या व भा-२. १०० कीजेइ व भा-२. [पृ. १५२] १ विषेइ व भा-२. २ पांच ह्मो. ३ प्रकारनो व भा-२. ४ बोध्यो व भा-२. ५ करे व भा-२. ६ देशमाले भा-२. ७ स्वामीनें व भा-२. ८ कष्ट व. ९ तेन्हो व भा-२. १० करे व भा-२. ११ बुद्धि व भा-२. १२ जे व भा-२. १३ करेइ व भा-२. १४ आनी पछी व भा-२ मां 'जाणवी' छे. १५ एम भा-१ इ, व भा-२ मां नथी. १६ होइ व भा-२. १७ करता व भा-२. १८ जाणे व भा-२. १९ तूं व भा-२. २० ऊजाडें व भा-२. २१ व भा-२ मा नथी. २२ करे व, करेइ भा-२. २३ घूअडनें भा-२, घूअडने व. २४ आंधलो व भा-२. २५ व भा-२ मा आ श्लोकनो अनुवाद आ प्रमाणे छे:

'ज्ञान मदने [मदनें] ने ज्ञाने मद पामेइ तेन्हि [तेन्हे] उपाय नथी. जिम

अमृत मिय थाइ तेन्हि [तेन्हे] उपाय नथी. '

२६ स्वामी व भा-२; आनी पछी व भा-२ मा आ प्रमाणे शब्दक्रम छे :

'कष्ट पाम्यो देपी बोल्नो हीउ.'

२७ ऊगनुं छेइ व भा-२. [पृ. १५३] २८ ये व भा-२. २९ करे भा-१, करे इ व भा-२. ३० करें ह्प्रो. ३१ छुटीये ह्प्रो. ३२ °माहे व भा-२. ३३ करे व भा-२. ३४ अनेइ भा-२. ३५ समीपि व भा-२. ३६ छेइ व भा-२. ३७ व भा-२ मा आ प्रमाणे पंक्ति शरु थाय छे :

'गुणवत राजानो प्रधान'.

३८ वन्हि व, वन्हे भा-२. ३९ न आवे व भा-२. ४० मध्ये व भा-२. ४१ व भा-२ अन्तभागना शब्दोनो क्रम आ प्रमाणे छे :

'को माहि न पैसे.'

४२ जाणे व भा-२. ४३ छे व भा-२ ४४ व भा-२ मा 'ते हुं मुये छि [छें]' एवा शब्द छे. ४५ परिवर्यु भा-१ इ, परिवर्यो व भा-२. ४६ सोभे व भा-२. ४७ कदाचे व भा-२, 'वि' माथी पछी गयेला शब्द भा-१ माथी लीधा छे. ४८ शोभे व भा-२. ४९ ये व भा-२. ५० कीजे व भा-२. ५१ होइ भा-१ इ भा-२. ५२ अने भा-२. ५३ कीजे भा-२. ५४ सरपो व भा-२. ५५ नि व. ५६ छि व, छें भा-२. [पृ. १५४] ५७ धूर्त्तपणे ह्प्रो. ५८ मित्रनें ह्प्रो. ५९ वाछे ह्प्रो. ६० मलिनपणि व. ६१ पर व भा-२. ६२ वाछेइ व भा-२. ६३ सुखि भा-२ ६४ वाछे व, वाच्छ भा-२. ६५ कठिणपणे भा-१ इ भा-२, कठिनपणि व. ६६ क्षीनि भा-१ इ भा-२, क्षीनि व. ६७ वाछे भा-१, वान्छइ इ व भा-२. ६८ जीर्णे ह्प्रो. ६९ लाधूं व भा-२. ७० हुइ व भा-२. ७१ मोटो व भा-२. ७२ वीहाड्यो व भा-२. ७३ दारपणू व भा-२. ७४ छाडे व भा-२ ७५ व भा-२ मा पद्यनो उत्तरार्ध आ प्रमाणे छे :

'समुद्रना तट त्रूटे करी डहोलो न थाइ.'

७६ डुहलो भा-१, डहोलो इ ७७ थाइ भा-१ इ; आनी पछी व भा-२ मा 'अनइ' छे. ७८ चलइ भा-१ इ, चलेइ व भा २. ७९ डोलइं भा-१ इ ८० करे व भा-२ ८१ ये व भा-२. ८२ रमेइ व भा-२. ८३ लक्ष्मीनें ह्प्रो. ८४ भोगवे व भा-२. ८५ वार्त्ता व भा-२. ८६ वहइ भा-१.

[पृ १५५] ८७ नाम हस्तो ८८ तीण हस्ता ८९ श्रमणक हस्ता ९० दया व भा २ ९१ कीधो हस्तो ९२ आपणन हस्ता ९३ बोल्यो व भा २

[२६. राजा, मंत्री अने नग्न श्रमण]

१ मध्य व भा २ २ नामि व ३ सजन व भा २ ४ व भा २ मा नथी ५ आवी व भा २ ६ थाई हस्ता ७ छ व भा २ ८ व भा २ मा नथी ९ वनपाग्नु व भा २ १० राजाइ व भा २ ११ नाम भा १ इ, भा २, नामिं व १२ वाग्वीनिउ व, वाग्वीनड भा २ १३ दुष्न भा १ इ भा २, दुष्टनि व १४ मालन्ता हस्ता १५ पच्छी व भा २ १६ पैठा व भा २ १७ वतल व भा २ १८ आना पछी व भा २ मां 'अनक' छे १९ प्रकारे व भा २ २० व भा २ मां नथी २१ चोसीन भा १ इ, चोसीन व भा २ २२ मांभिग्री हस्तो २३ वागाणी व भा २ २४ आपी व भा २ २५ पूछ्यो व भा २ २६ पीयारा व भा २. २७ अभिप्राय हस्तो. २८ आ पक्ति व भा २ मा आ प्रमाण छ

तम्हि [तम्ह] पूछा हु जाणु छु '

२९ करेइ व भा २ ३० व भा २ मा पक्ति आ प्रमाणे पूरी थाय छे

'सरा नाइ आवइ '

३१ व भा २ मा आना पछी नासी छे ३२ करा व भा २ ३३ कन्हइ भा १ इ, कहि व कन्ह भा २ ३४ राजान भा १ इ भा २, राजानि व ३५ कहतो हस्तो ३६ हाउ हस्ता ३७ व भा २ मा नथी ३८ निवडु भा २ ३९ मूकी व भा २ ४० विवेइ व भा २ ४१ आनी पछी व भा २ मां 'पान' छे ४२ दरनाय व ४३ वध्या व भा २ ४४ हता व भा २ ४५ व भा २ मा अही 'राजा छ ४ सुरथन हस्ता ४७ छेदे व भा २ ४८ पाम्याथा हस्ता ४९ बोयो हस्ता ५० तू व भा २ ५१ स्वर्गि व भा २ ५२ व भा २ मा नथी ५३ पच्छइ व भा २ ५४ मानी व भा २ ५५ राजकाय व भा २ ५६ छांडी व भा २ [पृ १५६] ५७ स्यु व भा २ ५८ एइ व भा २ ५९ पेंडी भा १, पेडी इ व भा २ ६० आनी पछी व भा २ मां पक्तिनो उत्तरार्ध आ प्रमाणे छे

'त राजा सरस गव पहू करी नासी सघातं [सघात] वार्नाद वटा दीग

६१ आ पंक्ति व भा-२ मा नथी. ६२ पच्छे व भा-२. ६३ तेणें व भा-२. ६४ प्रधानें व भा-२. ६५ पूछ्यूं व भा-२. ६६ बोल्यो व भा-२. ६७ तेन्हे ह्प्रो ६८ तूं व भा-२. ६९ जाणे भा-१ व भा-२. ७० छि व, छे भा-२. ७१ बोल्यो व, बोल्यो भा-२. ७२ मध्ये व भा-२. ७३ जाणीयें व, जाणीयें भा-२; आनी पछी व भा-२ मां पंक्तिनो उत्तरार्ध आ प्रमाणे छे :

'ए आचार्य जे ए स्वर्गि देवलोकि जाइ छेद.'

७४ पछे व भा-२. ७५ बोल्यो व भा-२. ७६ आनी पछी भा-१ इ मां 'जो' छे. ७७ पैशीनट भा-१ इ, पैसी व भा-२. ७८ रह्यो व भा-२ ७९ मात्र व भा-२. ८० रहीनेइ व भा-२. ८१ बोल्यो व भा-२. ८२ आवशे व भा-२. ८३ व मा नथी. ८४ बोल्यो व भा-२ मा नथी. ८५ व भा-२ मा 'तुं गइ' छे. ८६ उतावलो ह्प्रो. ८७ छे व भा-२. ८८ बीजुं व भा-२. ८९ लेइ व. ९० स्वर्ग भा-१ इ, व भा-२ मा नथी. ९१ व भा-२ मां नथी. ९२ जाशे व भा-२ मा नथी. ९३ बोल्यो व भा-२. ९४ आणी व भा-२. ९५ मढी ह्प्रो. ९६ वले व भा-२. ९७ तीणइं भा-१ इ, तीणे व भा-२. ९८ शरीरि व, शरीरे भा-२; आनी पछीना शब्द व भा-२ मा पडी गया छे. ९९ आ पंक्ति व भा-२ मा नथी.

[२२. सर्पने परणनारी राजकन्या]

१ व भा-२ मा आ पंक्तिना शरूआतना शब्दो पडी गया छे, 'देवशर्मा ब्राह्मण हौउ' एटला शब्द मळे छे. २ छोरु ह्प्रो. ३ गाइई भा-१ इ, गाडे व भा-२. ४ रोइ ह्प्रो ५ कहतो ह्प्रो. ६ करेसि व भा-२ ७ करयोस व भा-२. ८ आनी पछी व मा 'तीणे' अने भा-२ मा 'तीणें' छे. ९ पुत्रार्थि व भा-२. १० कीधो ह्प्रो ११ पन्टेइ व भा २. १२ हौउ व भा २. १३ ताढ्रै व भा २. १४ हुसे व भा-२. [पृ. १५७] १५ सांभली व भा-२. १६ हर्ष्यु व भा-२ १७ बोल्यो व भा-२ १८ प्रसव व भा २. १९ कटुवना व भा-२ २० व भा २ मा 'पछट तीणी ब्राह्मणीयें' ए रीते पंक्ति शरू थाय छे. २१ अनादरी व भा-२ २२ कोरडेट व भा-२. २३ मांदण ह्प्रो. २४ केतले व भा-२. २५ व भा-२ मा नथी. २६ व भा-२ मां नथी २७ 'डेपीनट' व भा-२ मा नथी. २८ रोतीथी ह्प्रो, व भा-२ मा आ शब्द पंक्तिने

छेडे आवेलो छे. २९ याधी व भा २. ३० देशांतरि व भा-२. ३१ कुक्कुट भा-१, कुरुह इ, कुक्कुट व, कुरकुट भा-२. ३२ नगर व भा-२; आनी पछी व भा-२ मा 'निता' छे. ३३ गयो व भा-२. ३४ सर्वंधीनि व, सर्वंधीनि भा-२. ३५ गयो व भा-२. ३६ व भा-२ मां नथी. ३७ व भा-२ मा नथी. ३८ व भा-२ मा नथी. ३९ व भा-२ मां नथी. ४० प्रातःकालि व भा-२. ४१ तीणि ह्यो. ४२ आहा व भा-२. ४३ मे कार्यें व भा-२. ४४ आनी पछी व भा-२ मां 'अनइ' छे. ४५ जागु ह्यो. ४६ व भा-२ मा आ पंक्ति आ प्रमाणे छे:

'पुननी कन्याने अर्थि आव्यो छुं.'

४७ घरनो व भा-२. ४८ कहतो ह्यो. ४९ आनी पछी व भा-२ मां 'घरि' छे. ५० छेइ व भा-२. ५१ व भा-२ मा नथी. ५२ तम्हारा व भा-२. ५३ पुनन व भा-२. ५४ रयो व भा-२. ५५ कन्याना व भा २. ५६ परिवारने व भा-२. ५७ लेइ व भा-२. ५८ आपणइ भा-१ इ, आपणे व भा-२. ५९ हौउ ह्यो. ६० आनी पहेला व भा-२ मा 'अहो' छे. ६१ सुंदरी व भा-२. ६२ सर्पेन व भा-२. ६३ वाइ व भा-२. ६४ ब्राह्मणने व भा-२. ६५ छेइ व भा-२. ६६ देशु व भा-२. ६७ रेई व भा-२. ६८ अहीं व मा 'तम्हि' अने भा-२ मा 'तम्हे' छे. ६९ सर्पेन ह्यो. ७० यमन भा-१, यमने इ व भा-२. ७१ जाशइ भा-१ इ, जासे व भा-२. ७२ पच्छेइ व भा-२. ७३ रह्यो ह्यो ७४ बोलि व भा-२. ७५ बोलै भा-१ इ, बोलिइ व भा-२. ७६ व भा-२ मां आगो आ प्रमाणे पाठ मळे छे:

'कन्या एक वार ज दीजे, ए उत्तम एक वचन होइ.'

[पृ १५८] ७७ कृतांत व भा-२, आनी पछी व भा-२ मा 'देवें' छे. ७८ कीटु व भा-२, कीटु भा-१ इ. ७९ व भा-२ मा नथी ८० शक्तीयें ह्यो. ८१ पूच्छतुं भा-१ इ भा-२, पूच्छतु व.

[२३. इन्द्रनो सूडो]

१ इंद्रने व भा-२. २ सूडो व भा-२. ३ विद्यागत व भा-२. ४ मण्यु भा-१, व भा-२ मा नथी. ५ रुप व भा-२. ६ कदाचेक भा-१ इ, कदाचें व भा-२. ७ बैठो ह्यो. ८ पाम्यो व भा-२. ९ करवान व, करवाने भा-२.

१० यमनें व भा-२. ११ आनी पछी भा-१ ड मा 'सुडु उठी' छे; व मा 'सुडो ऊडी' छे. १२ नाठो व भा-२. १३ पच्छेट व भा-२. १४ देवताए व भा-२. १५ पूछ्यो व भा-२. १६ सूडा व भा-२. १७ तूं व भा-२. १८ देवीनइ व भा-२. १९ काइ व भा-२. २० नाठो व भा-२. २१ सूडो व भा-२. २२ बोल्यो भा-१ व भा-२. २३ जीवनो व भा-२. २४ नाशीये भा-१ ड, नासीये व भा-२. २५ एहुं भा-१ भा-२, एहवुं व. २६ साभली ह्यो. २७ उडानो भा-१ ड, सूडानो व भा-२. २८ यमनें ह्यो. २९ वहता हौंअ व भा-२. ३० आ पंक्ति व भा-२ मा आ प्रमाणे छे :

'अहो यम, तन्हि [तन्हे] अम्हारा बोलथी सूडो न मारवो.'

३१ बोल्यो व भा-२. ३२ आणूं व भा-२. ३३ मोटो व भा-२. ३४ छेड व भा-२. ३५ देवता ह्यो. ३६ वन्हि व, वन्हे भा-२. ३७ कालनि व, कालने भा-२. ३८ मारेशि व भा-२ मा आनी पछी वार्त्तानो अन्तभाग व भा-२ मा आ प्रमाणे छे :

'हु न जाणे, मृत्यु जाणे. पच्छइ मृत्युन्हि [मृत्युन्हे], "मृत्यु न्हाला दर्शनथी सहू मरे छेइ." मृत्यु अगीकार करचा पच्छी सर्वे आपणे आपणे ठामि गयुं'

४० मृन्हि व. ४१ जाणीनेइ व भा-२ ४२ मानाप व भा-२. ४३ सर्पनें ह्यो. ४४ देना हौआ व भा-२. ४५ सर्प ह्यो. ४६ आ पंक्ति व भा-२ मां आ प्रमाणे छे :

'पच्छे ते सर्पनें सदा भक्ति दुग्धपानादिक करीन [करावे].'

४७ व भा-२ मां नथी ४८ °थी व भा-२. ४९ नीसरीनइ व, नीसरीनेइ भा-२. [पृ. १५९] ५० पुरपनेइ व भा-२, पुरपनइ भा-१ ड. ५१ आवारइं भा-१ ५२ छेइ व भा-२ ५३ व भा-२ मा 'एहुं कही वातनी' ए प्रमाणे शब्दक्रम छे

५४ जाणशि ह्यो. ५५ आ पक्ति व भा-२ मा आ प्रमाणे छे :

'एहुं कही स्त्रीन प्रतीति देपाडवानि [देपाडवान], सर्पशरीर लेइ पेटामांमाहि पेठो [पैठो], वली मनुष्यशरीर लेइ नीकल्यो पछइ ते स्त्री तेन्हि [तेन्हे] रत्न कुंडल वहिरपा मुकुट भूषित देखीनइ पोगे लागी.'

५६ पछे व भा-२. ५७ प्रकारे व भा-२. ५८ देवतो व भा-२. ५९ शरीरमाहे व भा-२. ६० पैसेइ व भा-२. ६१ रत्नें व भा-२. ६२ छेट व

भा-२. ६३ °धुं न भा-२. ६४ थायुं हस्रो. ६५ पुत्रनें व भा-२. ६६ व भा-२ मां नथी. ६७ शरीरें व भा-२. ६८ रणो व भा-२. ६९ पछेइ व भा-२; आनी पछी न भा-२ मां 'प्रभाति' छे. ७० मामृगमरानें हस्रो. ७१ मायारनें हस्रो. ७२ व भा-२ मां नथी. ७३ रोगे व भा-२. ७४ मुदे व भा-२. ७५ आ पंक्ति व भा-२ मां आ प्रमाणे छे:

'ते ब्राह्मण पुत्रनें देषाडी लोक आगलि हर्ख्यो रीउ.'

७६ ब्राह्मणरना व भा-२. ७७ °मातिनू व भा-२. ७८ रहे व भा-२. ७९ शरीरें व भा-२. ८० अहा ज व, आंहा ज भा-२. ८१ आरमे व भा-२. ८२ देषाडी व भा-२. ८३ शरीर व भा-२. ८४ व भा-२ मां 'गंडी समेति' शब्दक्रम छे. ८५ थालनी हस्रो.

८६ वहानो हस्रो. ८७ तेश्री व भा-२. ८८ हुं हस्रो. ८९ व भा २ मां नथी. ९० आपणो व भा-२. ९१ स्वार्थे भा-१ ड. ९२ छिंद व, छेड भा-२. ९३ ताटू व भा-२. ९४ पिताइ व भा-२. ९५ तुं व भा-२. ९६ आ श्लोकनो अनुवाद व भा-२ मां आ प्रमाणे छे:

'जेहो पितानो आचार तेहो ज पुत्रनो आचार, जिम हुं केतकीनइ वृक्षि आमलो लागि [लागे] ? न लागि [लागे].'

[पृ. १६०] ९७ जे व भा-२. ९८ छिं व, छे भा-२. ९९ तेन्हि व, तेन्हें भा-२. १०० व भा-२ मां नथी. १ पडि व, पडे भा-२. २ आ पंक्ति व भा-२ मां नथी. ३ चपलपणें भा-१ ड. ४ व भा-२ मां आ श्लोकनो अनुवाद आ प्रमाणे छे:

'गुण यत्ने [यत्नें] मोरना फरवानुं [फिरवानुं] स्थान जोतुं जो मोर रववे नाचवाने [नाचवानें] पीच्छनी कला न करतो ?

५ यत्ने ड. ६ करता ड. ७ तो ड. ८ नमतु व, नमतुं भा-२. ९ व भा-२ मां नथी. १० आनी पछी व भा-२ मां 'पण' छे. ११ नमे व भा-२. १२ व भा-२ मा नथी. १३ व भा-२ मां 'पाषाण शब्दें न छोलाइ' एवो शब्दक्रम छे. १४ सूचीमुखीनो व भा-२. १५ हीननें व भा-२. १६ व भा-२ मां नथी. १७ विरइ भा-१ ड, विरे व भा-२. १८ मुख व भा-२. १९ हूउ व भा-२. २० बोल्यो व भा-२.

[२४. सूचीमुख पक्षी अने वांदराओ]

१ मर्घ्ये व भा-२. २ वानरनूं व भा-२. ३ रहेइ व भा-२. ४ व भा-२ मां नथी. ५ व भा-२ मा नथी. ६ तीर्णे इ, व भा-२ मा नथी. ७ वानरि व, वानरे भा-२. ८ वीठो व भा-२. ९ पानडा इ व भा-२. १० बैटा व भा-२. ११ सेवलाने व भा-२. १२ व भा-२ मां नथी. १३ पडोल्ता व भा-२. १४ होआ इ. १५ मध्ये व भा-२. १६ व भा-२ मा 'सीतिं [सीतिं] गाडो पीड्यो' एवो शब्दक्रम छे. १७ मूटै इ, मूढे व भा-२. १८ शूचीमुपी व भा-२. १९ आनी पछी व भा-२ मां 'थडकली कहती हींई' एवा शब्द पक्तिना अन्ते छे. २० तापसो व भा-२. २१ आनी पछी व भा-२ मां 'छेइ' छे. २२ तेन्हि व, तेन्हू भा-२, अनादरीनिइं व, अनादरीनेइ भा-२. २३ फूक्तो इ, फूंक्ता व भा-२. २४ हौआ व भा-२. [पृ. १६१] २५ आ पंक्ति व भा-२ मा नथी. २६ आ पंक्ति व भा-२ मां आ प्रमाणे छे:

'वली तिम्ह ज सूचीमुर्षायें कर्ह्यु.'

२७ पच्छेइ भा-२. २८ अहीं व भा-२ मा 'ते' छे. २९ व भा-२ मां नथी. ३० तेन्हि व, तेन्हे भा-२. ३१ साही व भा-२. ३२ पाहाण इ व भा-२. ३३ आच्छेटीनि भा-२, आच्छेटीनिं व. ३४ करडी व भा-२. ३५ वुपानेइ व भा-२. ३६ विपि व, विपे भा-२ ३७ करे भा-२. ३८ घडामाहि व भा-२. ३९ दीपनो व भा-२. ४० होइ व भा-२. ४१ छिइ व, छै भा-२. ४२ होइ ह्रप्रो ४३ कहींयें व भा-२. ४४ कहींये व भा-२. ४५ होइ ह्रप्रो ४६ कहींये व भा-२. ४७ यौवनै व. ४८ वलें भा-२. ४९ धरा व भा-२. ५० वहे व भा-२ ५१ तीर्णे व भा-२ ५२ पुत्रें व भा-२. ५३ होइ ह्रप्रो. ५४ व भा-२ मा नथी. ५५ राजाने व, राजानें भा-२ ५६ छेइ व भा-२. ५७ कहेइ व भा-२ ५८ बीजो व भा-२. ५९ पुत्रें ह्रप्रो. ६० पंडितपर्णे भा-१ इ भा-२, पडितपणिं व. [पृ १६२] ६१ बोल्यो ह्रप्रो.

[२५. धर्मबुद्धि अने पापबुद्धि]

१ बिर्हि व भा-२. २ वाणियाना ह्रप्रो. ३ व भा-२ मां नथी. ४ कोएकनो व भा-२. ५ टकानो व भा-२. ६ व भा-२ मां नथी. ७ भरयो व

भा-२. ८ घडो व भा-२. ९ संघाति व. १० जैये इ व भा-२. ११ आ पंक्ति व भा-२ मां आ प्रमाणे छे :

'एहुं चीतवी आपणा गामनेई [गामनेइ] गुआंदरें [गुआंदरे] आव्या.'

१२ 'वि' प्रतमांथी शब्द पछी गयेलो छे; खटता शब्द व मांथी लीधा छे; ट मां 'पठइ धर्मबुद्धि कहु' एवो पाठ छे. १३ आनी पछी व भा-२ मां 'पठइ' छे. १४ व भा-२ मां अहीं 'वगी' छे. १५ बोल्यो व भा-२. १६ जैशि व, जैसे भा-२. १७ अहीं व मां 'पठइ' अने भा-२ मां 'पछेइ' छे. १८ आनी पछी व भा-२ मां 'निहां' छे. १९ डाटीनिइ व, डाटीनेइ भा-२. २० पच्छिइ व, पच्छेइ भा-२. २१ मध्यें व भा-२. २२ व भा-२ मां नथी. २३ व भा-२ मां नथी. २४ व भा-२ मां नथी. २५ रह्यो व भा-२. २६ पच्छेइ भा-२. २७ खाधुं हस्ये. २८ 'इम छतां' ना स्थाने व भा-२ मां 'पच्छे' छे. २९ चींनवतो व भा-२. ३० व भा-२ मां नथी. ३१ हविं व, हवें भा-२. ३२ आकर्णीयिं व, आकर्णीये भा-२. ३३ आव्यो व भा-२. ३४ तेहेंइ व, तेहेइ भा-२. ३५ मध्यें व भा-२. ३६ व भा-२ मां पंक्तिना पूर्वार्धमां 'धन' पछी कुमार्गे '[कुमार्गे]' छे. ३७ व भा-२ मां नथी. ३८ लीजि व, लीजे भा-२. ३९ लीजेइ व भा-२. ४० व भा-२ मां नथी. ४१ आनी पछी व भा-२ मां 'तिहा' छे. ४२ देपि व, देपे भा-२. ४३ व भा-२ मां अहीं 'पच्छेइ' छे. ४४ लेई व भा-२. ४५ मार्यु इ व भा-२. ४६ लागो इ व भा-२. ४७ तें भा-२. ४८ लीधूं व भा-२. ४९ आनी पछी व भा-२ मा 'मार्हु' छे. ४९ नहि तो व भा-२. ५० बोल्यो व भा-२. ५१ कहेति व भा-२. ५२ चोरी हस्ये. [पृ. १६३] ५३ व भा-२ मां नथी. ५४ व भा-२ मा नथी. ५५ कहींये भा-१ इ. ५६ पीयारी भा-१ इ. ५७ श्रोनिं व. ५८ मातानी व भा-२. ५९ घर व भा-२. ६० देपि व भा-२. ६१ व भा-२ मा नथी. ६२ पर व भा-२. ६३ देवानी व भा-२. ६४ देवेइ व भा-२. ६५ व भा-२ मां नथी. ६६ व भा-२ मां नथी. ६७ आमानी व भा-२. ६८ देपिइं व, देपेइ भा-२. ६९ देवता; आनी पछी व भा-२ मा 'अनेरा अज' छे. ७० परस्परनी भा-१ इ, परस्परिं व भा-२. ७१ करतो व भा-२; आनी पछी व भा-२ मां पंक्तिनो अन्त आ प्रमाणे छे :

'राजद्वारि स्या धर्मस्थानि.'

७२ जै व भा-२. ७३ मध्यें व, मध्ये भा-२. ७४ विमासी व भा-२.

७५ बोल्यो व भा-२. ७६ माह्रि व, माह्रे भा-२. ७७ साची व भा-२. ७८ छि व, छै भा-२. ७९ करो व भा-२. ८० न्याय कर्ताए व भा-२. ८१ पूछु व भा-२. ८२ ताह्रि व, ताह्रे भा-२. ८३ साक्षि व, साहि भा-२. ८४ छे व, छे भा-२. ८५ व भा-२ मां नथी. ८६ व भा-२ मा नथी. ८७ °थी व भा-२. ८८ देगाड्योस व भा-२; आनी पछी व भा-२ मा 'तो तम्हि [तम्हे] मानज्यो' एवा शब्द छे. ८९ पछेइ व भा-२. ९० पामी व भा-२. ९१ चींतवता व भा-२. ९२ पापिं व, पापे भा-२. ९३ बोलशे व भा-२. ९४ पढु व भा-२. ९५ विहाणिं व, विहाणे भा-२. ९६ जोईसि व भा-२. ९७ जै व भा-२. ९८ पितानिं व, पिताने भा-२. ९९ आनी पछी व भा-२ मां 'सोनाना' छे. १०० माह्रि व, माह्रे भा-२. १ व भा-२ मा नथी. २ जो व भा-२. ३ कहे व भा-२. ४ रहे व भा-२. ५ व भा-२ मा 'तइं रानि' नथी पण तेने स्थाने 'फावें तो तुं' छे. ६ डाटवानें व, डाटवाने भा-२. ७ ठामि व. ८ तेन्ही ह्सो. ९ आनी पछी व भा-२ मा 'रहि' छे. १० जिवारें व भा-२. ११ साक्षि व. १२ तिवारें व भा-२. १३ देजो व भा-२. १४ तेन्हो व भा-२. १५ बोल्यो व भा-२. १६ आपण ह्सो. १७ जेथी व भा-२. १८ आपणो व भा-२. १९ पुरुपि व २० अने व भा-२. २१ विहे भा-२. [पृ. १६४] २२ कहे व भा-२. २३ छेइ व.

[२६. बगलो, साप अने नोळियो]

१ °मध्ये व भा-२. २ सरोवरनिं व, सरोवरने भा-२. ३ काठि व, काठे भा-२. ४ विहे व भा-२. ५ रहे व भा-२. ६ तेन्हीं व, तेन्हे भा-२. ७ मध्यथी व भा-२. ८ बालक व. ९ तीणिं व. १० विहे व. ११ पाधा व; आ पंक्तिनी अधवचथी शरु थई, पछीनी केटलीक पंक्तिओ भा-२ मां नथी १२ पापिं व. १३ तलावनि व. १४ काठे व. १५ रहें व भा-२. १६ व मा आ पंक्ति आ प्रमाणे छे :

'पच्छेइ तिहां जीव बोल्यो.'

१७ कहतो भा-१ व. इ १८ हौउ भा-१ इ. १९ आनी पछी व मां 'किम तम्हि' छे. २० व मां नथी. २१ पापें व. २२ किहां व. २३ पच्छेइ व. २४ बोल्यो व. २५ व मां आ पंक्ति आ प्रमाणे छे :

'तुम्हि दुख साथी करनुं छि ?'

२६ व मां नथी. २७ व मां नथी. २८ भक्ष करिं व. २९ जीर्णे व. ३० मरे व. ३१ व मां नथी. ३२ वहिंक्डो व. ३३ बंसनो व. ३४ कीजे व. ३५ कीजेइ व. ३६ शत्रुनइ भा-१ इ, शत्रुनें व. ३७ दीजेइ व. ३८ वहिंक्डो व. ३९ वधनो व. ४० व मां नथी. ४१ नोलीया व. ४२ छेइ व. ४३ आ पंक्ति व भा-२ मा आ प्रमाणे छे :

'तेह्ना ठामथी सर्पना स्थान लगे मत्स्यना मास तम्ह वेरी मुंकी मुइ. पच्छइ तेन्हा लोमथी नोलीया सर्प लगे आवसें, सर्पनें पासे पछइ [पछे].'

४४ आविशि इ. ४५ सर्प भा-१ इ. ४६ पाशि भा-१ इ. ४७ पच्छे भा-२. ४८ करी व भा-२. ४९ व भा-२ मा नथी. ५० 'तीणइ मार्गि वृक्षनइ' आ शब्दो व भा-२ मा नथी. ५१ पामी व भा-२. ५२ सर्पनें व भा-२. ५३ पच्छेइ व भा-२. ५४ सर्व बगनो व भा-२. ५५ कीधो व भा-२. ५६ ते व भा-२. [पृ. १६५] ५७ हुं भा-१ इ, हूं व भा-२. ५८ कहुं भा-१ इ, कहूं व भा-२. ५९ छुं भा-१ इ, छूं व भा-२.

६० तेन्हो व भा-२. ६१ व भा-२ मां 'वृक्षनी कोपराडि मध्ये पैठो' एवो पंक्तिनो उत्तरार्ध छे. ६२ पहिरि व, पहिरी भा-२. ६३ धर्मबुद्धिने व, धर्मबुद्धिनें भा-२. ६४ तेडी व भा-२; आनी पछी व भा-२ मां 'राजद्वारि जै राजलोक तेडी' एवा शब्द छे. ६५ कन्हि व, कन्हे भा-२. ६६ जै व भा-२. ६७ मोटे व भा-२. ६८ करतो व भा-२. ६९ व भा-२ मां नथी. ७० दिन व भा-२. ७१ एतलो व भा-२. ७२ मनुष्यनो व भा-२. ७३ जाणि व.

७४ अम्ह व भा-२. ७५ मध्यें व भा-२. ७६ थो व भा-२. ७७ पच्छी व भा २; आनी पछी व भा-२ मां 'तेन्हो वृद्ध पिता ते शमी मध्यथी बोल्यो' एवो शब्दक्रम छे ७८ लीधु व भा-२. ७९ विह्मय व भा-२. ८० पाम्या व भा-२. ८१ व भा-२ मां 'पछइ जेतलें' थी पंक्ति शरू थाय छे. ८२ धर्मबुद्धिने व, धर्मबुद्धिनें भा-२. ८३ चोरवानो हत्रो. ८४ विमासि हत्रो. ८५ तेतलें हत्रो. ८६ चींतवतो हत्रो. ८७ पटे व भा-२; आनी पछी व भा-२ मां आ पंक्ति मळे छे :

'देवतानी अंतरिक्ष वाणी तो न होइ.'

८८ छेइ व भा-२. ८९ व भा-२ मां नथी. ९० छेइ व भा-२. ९१ चींतवी हत्रो. ९२ लोकनें भा-१ इ, लोकन्हि व, लोकन्हें भा-२. ९३ कहतो हत्रो. ९४ बोल्यो व भा-२. ९५ छेइ व भा-२. ९६ मई भा-१, में व भा-२.

९७ एक्नें व भा-२. ९८ पाम्यो व भा-२. ९९ अहीं व भा-२ मां 'अनेइ' छे. १०० निमासुं व भा-२; पछी व भा-२ मां 'जे' छे. १ लेई इत्यो. २ मुंं इत्यो. ३ एन्हि व, व एन्हें भा-२. ४ 'तेनाई हु करीसि' व भा-२ मां नथी. ५ ते इत्यो. ६ में व भा-२. ७ मन्ने व भा-२. ८ लेतानि व. ९ भगे व, भगें भा-२. १० छेद व भा-२. [पृ. १६६] ११ मच्यें व, मच्चे भा-२. १२ धर्नार्थि व भा-२. १३ पारनाइ व भा-२. १४ छे व भा-२, लि भा-१ इ. १५ पच्छेइ व भा-२; आनी पछी व भा-२ मां 'हुं' छे. १६ एयोम व भा २. १७ परे व भा-२. १८ तो व भा-२. १९ एकलो व भा-२. २० आवी व भा-२. २१ अहीं व भा-२ मां 'में' छे. २२ माड्यूं भा-१, माड्युं व भा-२. २३ मर्यंभी व भा-२. २४ व भा-२ मां नथी. २५ मोटो इ; व भा-२ मां अहीं 'एक' छे. २६ नीगयो व भा-२. २७ तेन्हि व. २८ आनी पछी व भा-२ मां 'में' छे. २९ 'कोसराडि भरी घाली देतो हीउ' ए प्रमाणे व भा-२ मां पंक्तिनो अन्त छे. ३० माहिंगु व भा-२. ३१ व भा-२ मां 'अरे' थी पंक्ति शरू थाय छे. ३२ व भा-२ मां आनी पछीनी पंक्तिओ आ प्रमाणे छे :

'पच्छे वैश्वानर प्रगट थ्या पछी सघले थलतु थ्यु ते माहिंथी दुष्टबुद्धिनो पिता बोयो. पच्छइ आंखि फूटी, गर्वाग बल्युं, माथाना नीमाला बल्या. अधबल्यो कांईएक सासनो एहो दुष्टबुद्धिनो पिता पड्यो. पच्छइ सर्व लोक आवी ते कौतुक जोता हीउआ. पछइ सर्व तेन्हे पूछता हौआ."

३३ आरणउं व भा-२. ३४ कांई भा-२. ३५ ईर्णे व भा-२ ३६ मोटे व भा-२. ३७ थ्यापनि व भा-२. ३८ पड्यो व भा-२, पाड्यु भा-१. ३९ वहनो व भा-२. ४० मुंउ व भा-२. ४१ रामीनीं भा-१ इ, रामीनी व भा-२. ४२ हालें व भा-२. ४३ ऊंभे व भा-२. ४४ मुंडइ भा-१ इ, माथे व, माथे भा-२. ४५ व भा-२ मां नथी. ४६ पहिं व, पहें भा-२. ४७ संतोषावता व भा-२.

४८ कहूं व भा-२. ४९ छूं व भा-२. ५० बोरयो व भा-२. ५१ जीवि व, जीवें भा-२. ५२ छे व भा-२. ५३ तें भा-१, व भा-२. ५४ दहो व भा-२. ५५ व भा-२ मां आ चरणनो अनुवाद आ प्रमाणे छे :

'चंधुना हैयानो भेदक स्त्री.'

५६ पिशुननुं भा-१ इ, पिशुनने व भा-२. ५७ सामले व भा-२. ५८

मुलनो व भा-२. ५९ व भा-२ मां अहीं 'अनेइ' छे. ६० मनुष्यनि व भा-२. ६१ मुपि व भा-२. ६२ जिह्वा व भा-२. ६३ होई व भा-२. ६४ तेहनि व, तेन्हैं भा-२. ६५ कोण व भा-२. ६६ वीमसे व भा-२. [पृ. १६७] ६७ दें व भा-२. ६८ व भा-२ मां पंक्तिनो उत्तरार्ध आ प्रमाणे छे:

'सर्प दुष्ट एन्हां मुरत विस जागतां'.

६९ मुंन्हि व, मुंन्हें भा-२. ७० काजे व भा-२. ७१ छेइ व भा-२. ७२ मैं इ व भा-२. ७३ सेव्यो व भा-२. ७४ व भा-२ मां नथी. ७५ जाणी व भा-२. ७६ करवो इ व भा-२. ७७ व भा-२ मां पंक्तिना उत्तरार्धनो शब्दक्रम आ प्रमाणे छे:

'जिम घणोइ काल सेवीये पण वीमस्यो साप पाइ.'

७८ सेवीयइ इ. ७९ व भा-२ मां आ श्लोकनो अनुवाद आ प्रमाणे छे:
'जिम चंदनना काष्टनोइ वह्नि दहेइ तिम उत्तम कुलि ऊपनोइ दुष्ट दहि [दहे].'

८० पामे व, पामेइ भा-२. ८१ छेइ भा-२. ८२ मूर्खनो इ व भा-२. ८३ अवगुण व भा-२. ८४ बोलवाने व भा-२. ८५ समर्थ व भा-२. ८६ बोले व भा-२. ८७ अनेइ व भा-२. ८८ आणवहें व भा-२. ८९ दैवें व भा-२. ९० दंड्यो व भा-२. ९१ होइ ई व भा-२; आनी पछी व भा-२ मा 'तोहि' छे. ९२ हीडि व, हीडे भा-२. [पृ. १६८] ९३ तेथी व भा-२. ९४ आनी पछी व भा-२ मां आवो शब्दक्रम छे:

'मनुष्यनो स्वभाव जाणी सगति करवी.'

९५ छेइ व भा-२. ९६ पुरुषे व भा-२. ९७ विपि व भा-२. ९८ सरल व भा-२. ९९ व भा-२ मा नथी. १०० होइ व भा-२. १ जे व भा-२. २ ते उपरि व भा-२. ३ कीजेइ व भा-२. ४ व भा-२ मां नथी. ५ त्यजवो व भा-२. ६ न व भा-२. ७ विण्यास्यो व, विणास्यो भा-२. ८ राजानो व भा-२. ९ पमाड्यो व भा-२. १० तेथी व भा-२. ११ ताहे व भा-२. १२ अनेरो व भा-२. १३ मनुष्य व भा-२. १४ व भा-२ मां नथी. १५ व भा-२ मा नथी. १६ सहसतुला व भा-२. १७ उंदिरा व भा-२. १८ पांई व भा-२. १९ खींचाणो व भा-२. २० हाथीने व, हाथीनें भा-२. २१ हरेइ व, हरेंइ भा-२. २२ बालक व भा-२. २३ बोल्यो व भा-२. २४ बोल्यो व भा-२.

[२७. लोढुं ऊंदर खाई गया!]

१ व भा-२ मां नथी. २ वमे व, वसें भा-२. ३ देसांतरि व भा-२. ४ आणगानो व भा-२. ५ चींतवतो व भा-२. ६ हौउ ह्प्रो. ७ पंक्तिनो पूर्वार्ध व भा-२ मां आ प्रमाणे छे : ,

'जिहां पुरुषार्थे भोग नाना प्रकार भोगव्या होइ.'

८ पापे व भा-२. ९ वमे व भा-२. १० पुरुषाधम व भा-२. [पृ. १६९] ११ पूर्वेइ इ, पूर्वे व भा-२. १२ होईये व भा-२. १३ वीधां व भा-२. १४ होइ व भा-२. १५ बोले व भा-२. १६ निंदे व भा-२. १७ चींतवी व भा-२. १८ वाणीयानो इ व भा-२. १९ पूर्वजनी इ व भा-२. २० नामे व भा-२. २१ तेन्हे व भा-२. २२ मूकीने व, मुंकी भा-२. २३ देसांतरि व भा-२. २४ ग्यु इ, ग्यो व भा-२. २५ देशि इ, वदेशि व भा-२. २६ हीड्यो व भा-२. २७ दुर्भाग्यमाहे व भा-२. २८ व भा-२ मां नथी. २९ वाई व भा-२. ३० घणो व भा-२. ३१ हौउ इ व भा-२; आनी पछीनो पंक्तिनो उत्तरार्ध व भा-२ मां नथी. ३२ लीणइ इ. ३३ आवतो इ. ३४ आवीनेइ व भा-२. ३५ कन्हे भा-२. ३६ मागतो ह्प्रो. ३७ वाणीयाने इ. ३८ वहतो इ. ३९ हौउ इ; व भा-२ मां आ पंक्ति आ प्रमाणे छे :

'पछइ लक्ष्मण वाणी बोल्यो.'

४० व भा-२ मां नथी. ४१ पच्छेइ भा-२, पछिइ व. ४२ होउ इ, हुउ व, हौउ भा-२. ४३ जे व भा-२. ४४ लोह पण व भा-२. ४५ तला-वेइ व भा-२. ४६ सूकाइ व. ४७ अने व भा-२. ४८ बोल्यो व भा-२. ४९ व भा-२ मां नथी. ५० करे व भा-२; आनी पछी व भा-२ मां 'अने मधुर होइ' शब्दो छे. ५१ आ पंक्ति व भा-२ मां आ प्रमाणे छे :

'पछे हर्ष्यु ते लक्ष्मण ते प्रोहोणाने घरि लेई पग धोई पूजतो हौउ.'

५२ बोल्यो व भा-२. ५३ छेइ व भा-२. ५४ तेन्हि व. ५५ करवानो व भा-२. ५६ आपी व भा-२. ५७ साथें भा-२. ५८ कोप्योथो व भा-२. ५९ व भा-२ मां नथी. ६० राजद्वारि व भा-२. ६१ ग्यो व भा-२ [पृ. १७०] ६२ बोल्यो व भा-२; आनी पछी व भा-२ मां आ प्रमाणे पाठ छे :

'"ए पुहोमें मान्या पुन कीहीं[कीहीं] रयाव्यो एन्हि[एन्ह] रायो " पछे ते लोक[लोके] पूछ्यो '

६३ एक्ो व भा २ ६४ वाया व भा २ ६५ शींचाणा व भा २ ६६ लेइ व भा ६७ ग्या व भा २ ६८ पछेइ व भा २ ६९ विस्मय व भा २ ७० पाम्या व भा २ ७१ अहा इ व भा २ ७२ बोयो व भा २ ७३ इहां व भा २ ७४ शु व भा २, आ पंक्ति व भा २ मा नथी पण तने स्थाने व भा २ मा आ पंक्ति छे

'शींचाणा लेइ नाइ तिहां शु आश्चर्य ?'

७५ लेइ व भा २ ७६ धाइ भा २, धाइ व ७७ लइ नाइ व भा २ ७८ एहा इ ७९ गुइ व भा २ ८० करणहार व भा २ ८१ तेहि व, तेन्हें भा २ ८२ वहत्तो इ व भा १ ८३ हाउ भा २ ८४ तेन्ही व, तेन्हीं भा २ ८५ व भा २ मां नथी ८६ तेहो व भा २ ८७ पुनइ व भा २ ८८ अणाव्यो व भा २

८९ व्यर्थ व भा २ ९० तल्माहे व भा २ ९१ मूर्ष व भा २ ९३ व भा २ मां आने स्थाने 'इहा' छे ९४ पामि व, पाम भा २ ९५ येन्ही भा १ इ, जेन्ही व भा २ ९६ पामि व, पामे भा २ ९७ भग्गे व भा २ ९८ वाना व भा २ ९९ साथ व, साथें भा २ १०० इतघ्ना इ व भा-२ १ साथ व भा २ २ आवें व, आवे भा २ [पृ १०१] ३ भा १ मां 'कीर्त्ति निमल्या' थी पंक्ति शरू थाय छ ४ °शु व भा २ ५ मरे व भा २ ६ तह व भा २ ७ कहिइ इ कहीइ भा १ ८ नरा व भा २ ९ पामेइ व भा २ १० व भा २ मा नथी ११ नीवि व भा २ १२ 'षगु व भा २ १३ अहा व भा २ १४ छेइ व भा २ १५ ताहो व भा २ १६ निंदे व भा २ १७ आ चरणनो अनुवाद व भा २ मां आ प्रमाण छे:

'दुभगा सौभाग्यवर्तिन निंद'

१८ निंद व भा २ १९ निंदें व भा २ आनी पछी व भा २ मां अनुवादनी पंक्तिओ पडी गयेली छे २० आ चरणनो अनुवाद भा १ इ मां आ प्रमाण छे

'पंडितनइ [पंडितन] मूर्ख निंदइ '

२१ पंडितनें हूआ २२ द्वेर्षि व, द्वर्षे भा २ २३ निर्धन भा १ इ २४ धनाढ्यन हूओ २५ निंदि व, निंदें भा २ २६ तपस्वीनि व, तपस्वीनें भा २

२७ करे व भा-२. २८ व्यभिचारिणी ह्स्त्री. २९ कुल्यतीनें व भा-२. ३० व भा-२ मां नथी. ३१ करे व भा-२. [पृ. १०२] । ३२ 'इ जे' व भा-२ मां नथी. ३३ आणा व भा-२. ३४ सरपो व भा-२. ३५ तेन्हि व तेन्हें भा-२; पंक्तिनो उत्तरार्ध व भा-२ मां नथी. ३६ करे व भा-२. ३७ तेन्हि व तेन्हे भा-२. ३८ जेन्हि व जेन्हे भा-२. ३९ लागि व लागे भा-२. ४० व भा-२ मां पंक्ति आ रीते शरु थाय छे :

'अरे तृन्हि[तृन्हें] उपदेश शुं करे ?'

४१ करत्री व भा-२. ४२ व भा-२ मां नथी. ४३ व भा-२ मां नथी. ४४ लागेड व भा-२. ४५ स्थाने व भा-२. ४६ सघानें व भा-२. ४७ रहवुं व भा-२. ४८ जोहे व भा-२. ४९ तोहे व भा-२. ५० जमेलां व, जमलां भा-२. ५१ लागे व भा-२. ५२ °माहे भा-२. ५३ पडीये व भा-२. ५४ आनी पछीनो अनुवाद व भा-२ मां आ प्रमाणे छे :

'मूर्खनीं संगति कांई[कांई] नहीं.'

५५ 'तेन्हां विद' व भा-२ मां नथी. ५६ रिपे, व रिपें भा-२. ५७ व भा-२ मां 'अहो राजन्' नथी पण त्यां 'अनइ' छे. ५८ व भा-२ मां आ पंक्ति आ प्रमाणे छे :

'प्रत्यक्ष ते[ते] ए दीठुं छइ जे सगतिथी दोषगुण होई.'

[पृ. १०३] ५९ दमनकिं व भा-२. ६० बोल्यो व भा-२.

[२८. राजा अने सूडाना बे पुत्र]

१ सागा व भा-२. २ ग्यो व भा-२. ३ बीजो व भा-२. ४ रिदिनेइ व भा-२. ५ ग्यो इ, आव्यो व भा-२ ६ पोशु इ, पोशो व भा-२. ७ कोएक इ व भा-२. ८ वशथी व भा-२. ९ रहे व भा-२. १० छि व, छे व भा-२. ११ तिहां व भा-२. १२ मध्यें व भा-२. १३ सूडउ इ, सूडो व भा-२. १४ जोइ व भा-२. १५ आव्यो व भा-२. १६ सूडु इ, व भा-२ मा नथी १७ घोडे व भा-२. १८ विगे व भा-२. १९ आवे व भा-२. २० घोडो व भा-२. २१ त्यो व भा-२. २२ दुडावी व भा-२ २३ घणे व भा-२. २४ ग्यो व भा-२. २५ रिषिनो व भा-२. २६ दीठो व भा-२.

२७ *विहां* पण व भा-२. २८ सूडो व भा-२. २९ *छेइ* व भा-२. ३० एन्हें भा-२, एन्हि व. ३१ व भा-२ मां नथी पण व मां अहीं 'थो' छे. ३२ आनी पछी व भा-२ मां 'सर्व थो' एवो पंक्तिनो अन्तभाग छे. ३३ पामी व भा-२. ३४ बोल्यो व भा-२. ३५ में व भा-२. ३६ मर्यो व भा-२. ३७ आवी व भा-२. ३८ सूडो व भा-२. ३९ एक व भा-२. ४० व भा-२ मां नथी. ४१ दीठो व भा-२. ४२ वहे व भा-२. ४३ राजानें व भा-२. ४४ माठ व भा-२. ४५ व भा-२ मां नथी. ४६ वांधो व, वाधो भा-२. ४७ व भा-२ मां नथी. ४८ पछेइनुं व भा-२. ४९ शुभ व भा-२. ५० पछेइ व भा-२. ५१ सूडो व भा-२. ५२ सांभली व भा-२. ५३ बोलतो व भा-२. ५४ संघातें व भा-२. ५५ तें व भा-२. ५६ मूर्ख व भा-२. [पृ. १७४] ५७ शत्रु भा-१ इ भा-२. ५८ ते भा-१ इ भा-२. ५९ व मां आ चरणनो अनुवाद आ प्रमाणे छे:

'पण हित करतो मूर्ख कांइ नहीं.'

६० वधने व भा-२. ६१ मार्यो व भा-२. ६२ वानरिं भा १ इ; आ चरणनो अनुवाद व भा-२ मां नथी. ६३ बोल्यो व भा-२. ६४ कहे व भा-२. ६५ छेइ व भा-२.

[२९. पंडित शत्रु अने मूर्ख मित्र]

१ राजानो हूओ. २ भत्नो हूओ. ३ मिष्य इ, मध्य व भा-२. ४ हींई इ, हींई व भा-२. ५ हींडिं व भा-२. ६ भोगवे व भा-२. ७ चडि व, चडे भा-२. ८ करे व भा-२. ९ करि व, करेइ भा-२. १० राजाइं व भा-२. ११ ते व भा-२. १२ पुत्रनें व भा-२. १३ कीधां इ व भा-२. १४ कीधो इ व भा-२. १५ पठेइ व भा-२. १६ राजानिं व. १७ पच्छि व, पच्छे भा-२. १८ आपणनें भा-२. १९ गालि व भा-२. २० दें व भा-२. २१ *मैत्रीयें* व भा-२. २२ जाणूं व भा-२. २३ हवे व, हवें भा-२. २४ गांभली व भा-२; आनी पछी व भा-२ मां आ शब्दक्रम छे:

'हुपी चिहे थ्या.'

२५ राजानो व भा-२. २६ बोल्यो व भा-२. २७ कोटी इ व भा-२. २८ छांडी व भा-२. २९ परदेश व, परदेशि भा-२. ३० व भा-२ मां नथी. ३१ पुरुषि व, पुरुषें भा-२.

३२ सर्वे व भा-२. ३३ निवेइ व भा-२. ३४ आगुं व भा-२. ३५ पछे व भा-२. ३६ वाणीयानो व भा-२. ३७ बेठयो व भा-२. ३८ वांजे व भा-२. ३९ पामेइ व भा-२. ४० तेथी व भा-२. ४१ द्रोहणाचल व भा-२. ४२ तिहां व भा-२. ४३ व भा-२ मां नथी. ४४ आणंनि व भा-२. ४५ पछेइ व भा-२. ४६ व भा-२ मां नथी. ४७ मानी व भा-२. ४८ भाग्यवराथी व भा-२. [पृ. १७५] ४९ तीणे इ भा-२, तीणि व. ५० विमांसुं इ, विमांसुं व भा-२. ५१ मध्यें व भा-२; आनी पहेलांनो 'दुष्ट' व भा-२ मां नथी; आनी पछी व भा-२ मां 'अमूल्य' छे. ५२ लेईं व भा-२. ५३ जागुं व भा-२. ५४ भह्लो इ व भा-२. ५५ घेरो इ व भा-२. ५६ बोल्यु इ, बोल्यो व भा-२. ५७ प्रधाननो व भा-२. ५८ तम्हनें इ व भा-२. ५९ शु इ व भा-२. ६० ए इ व भा-२. ६१ लेई व भा-२. ६२ आगापणा व भा-२. ६३ गिलीं व भा-२. ६४ चाल्यो इ व भा २. ६५ व भा-२ मां नथी. ६६ जाणि व, जाणो भा-२. ६७ एह्लो व भा-२. ६८ भोजनवेला व भा-२. ६९ व भा-२ मां नथी. ७० पोह मध्यथी व भा-२. ७१ गिलतो व भा-२. ७२ देपी व भा-२. ७३ चीतवतो इ व भा-२. ७४ ईणे व भा-२. ७५ रह्यो व भा-२. ७६ आ पंक्ति व भा-२ मां आ प्रमाणे छे:

'एहनां वाटे जातां पेट फाडी रत्न ल्युं'

७७ चाल्यो व भा-२. ७८ बोल्यो व भा-२. ७९ एकलो व भा-२. ८० बीहुं व भा-२. ८१ हुं व भा-२. ८२ माह्वे इ व भा-२. ८३ ने व भा-२; आनी पछी व भा-२ मां 'सघलाइ' छे. ८४ °मध्य व भा-२. ८५ अधिक व भा-२; आनी पछी व भा-२ मां 'संघाती' छे. ८६ तेन्हि व, तेन्हें भा-२. ८७ साथि व, साथें भा-२. ८८ मध्यें व भा-२. ८९ मध्ये व, मध्यं भा-२; आनी पछी व भा-२ मां 'एक भील मिल्यो' एवा शब्द छे. ९० पक्षीनी इ, पक्षीनीं व भा-२. ९१ जाणेइ व भा-२. ९२ सर्व व भा-२. ९३ मध्य व भा-२. ९४ मध्यथी व भा-२. ९५ चाल्यो व भा-२. ९६ पक्षी मध्ये व भा-२. ९७ व भा-२ मां नथी. ९८ °थी व भा-२. ९९ व भा-२ मां आ पंक्ति आ प्रमाणे छे:

'ते भील पक्षीनो शब्द सांभली तेन्हो विचार जोइ घरि आवी सर्वे भीलनें बोलावीनइ कहतो हौउ.'

१०. छेद व भा-२. १ मार्गे व, मार्गें भा-२. २ आवें व भा-२. ३

छिइ व, छेई भा-२. ४ तेह व भा-२. ५ कहि व कन्हे भा-२. ६ छे व भा-२. ७ बहु व भा-२. ८ मूल्य व भा-२. ९ छं भा-२. १० तयो व भा-२. ११ कहिं व, कहै भा-२. १२ पच्छिइ व, पच्छेइ भा-२. १३ सर्व व भा-२. सांभली व भा-२; आनी पछी व भा-२ मा पंक्तिनो उत्तरार्ध आ प्रमाणे छे:

एकत्र मिली वाटै जोता हौआ.'

१५ जोइं भा-२. १६ तो इ व भा-२; आनी पछी व भा-२ मा 'वाटै च्यारि जणा [जण] आवें छे.' एवो शब्दक्रम छे. १७ च्यारि व भा-२. १८ पच्छेइ व भा-२. १९ व भा-२ मां नथी. २० पक्षी इ व भा-२. २१ तिम्ह ज व भा-२. २२ लागो व भा-२. २३ जेतलं व भा २. २४ तेतालि व, तेतलें भा-२. २५ व भा-२ मां 'पक्षी शब्द गाढो करइ' एवो पंक्तिनो उत्तरार्ध छे २६ मीलि व, मीलें भा-२, मीलइ इ. २७ क्युं इ व भा-२. २८ कन्हि व, कन्हें भा-२. [पृ. १७६] २९ छेइ व भा-२. ३० कहे व भा-२. ३१ छिइ व, छेइ भा-२. ३२ कदापि व भा-२ ३३ बोलिइ व, बोलेइ भा-२. ३४ सर्वे व भा-२. ३५ होइ व भा-२. ३६ दीसि व, दीसें भा-२. ३७ बोल्यो व भा-२. ३८ व भा-२ मां 'ए पक्षी' पंक्तिनी शरुआतमा छे ३९ कहे व भा-२. ४० छिइ व, छेइ भा-२. ४१ तम्हारा व भा-२. ४२ मध्यें व भा-२. ४३ होसि व भा-२. ४४ वहाणइ इ, विहाणेइ व भा-२ ४५ जोईशि इ, जोईसि व भा-२. ४६ एहुं इ व भा २. ४७ वदीगाणि व, वदीगाणे भा-२. ४८ राख्या व भा-२ ४९ पछेइ व भा-२. ५० मध्यें व भा-२. ५१ चोथो व भा-२. ५२ मिल्यो व भा-२ ५३ छेइ व भा २ ५४ चीनवतो व भा-२. ५५ जिवारें व भा-२. ५६ फाडशे भा-२, फाडनां इ, फाडशि व. ५७ आनी पहेलां अनि व, अनें भा-२. ५८ नीसरसं व भा २; आनी पछी व भा-२ मां आ प्रमाणे पंक्तिनो अन्तभाग छे:

'अने माहु पेट फाडशे ज तोहे मृत्यु आव्युं'

५९ व भा-२ मां नथी ६० जाशि व, जासें भा-२. ६१ जो व भा-२. ६२ कीजे व भा-२. ६३ महातनूं व भा-२. ६४ व भा-२ मां आनी पछी 'अमृतनी परिं' एवा शब्द छे. ६५ विपेइ व भा-२. ६६ करे व भा-२. ६७ हुं इ व भा-२. ६८ माहुं इ व भा-२. ६९ प्रथम व भा-२. ७० देवीनइ व भा-२. ७१ मीत्रानां व भा-२. ७२ फाडि व फाडें भा-२. ७३

करतो व भा-२. ७४ रात्यानूं व भा-२. ७५ मूर्न्हि व, मून्हें भा-२. ७६ होशि व भा-२. ७७ पछेइ व भा-२. ७८ त्यां व भा-२. ७९ पछी व भा-२. ८० भीछि व भा-२. ८१ फाडयानि व, फाडयानें भा-२. ८२ तिवारे व भा-२. ८३ चोर्यो व भा-२. ८४ व भा-२ मां 'भाई माह्लाना' एवो शब्दक्रम छे. ८५ मार्हु व भा-२. ८६ फाडो व भा-२. ८७ आ पंक्ति व भा-२ मां आ प्रमाणे छे :

'पछइ तीणें भीलि ते चोरनूं पेट फाड्युं अनइ जोता हांआ पण रत्न न दीठुं.'

८८ पछे व भा-२. ८९ करतो इ व भा-२. ९० में व भा-२. ९१ पक्षीनें व भा-२. ९२ वचनें व भा-२. ९३ फाड्युं व भा-२. ९४ व भा-२ मां 'मइ जाण्युं जे' शब्दो आ पंक्तिनी शरुआतमां आवे छे. ९५ पछेद व भा-२. ९६ त्युटूनें व भा-२. ९७ व भा-२ मां आ पंक्ति आ प्रमाणे छे :

'अहो तम्हारा पेट एन्ही [एन्हीं] गरिं ठालां हुति [हुतें].'

९८ तम्हि व. ९९ छांडी व भा-२. १०० कोइ व भा-२. १ नगरि भा-२. २ नामि व, नामें भा-२. [पृ. १७०] ३ व भा-२ मां नथी. ४ तीगें व भा-२. ५ मल्यो व भा-२. ६ व भा-२ मां 'शत्रु पणि[पण] पंडित' एवो शब्दक्रम छे. ७ उपर्युक्त वार्ता भा-१ मां संक्षेपमां दशेक पंक्तिमां आपेली छे. ८ वाणीयानो इ व भा-२. ९ मित्य इ, व भा-२ मां नथी. १० वेराव्यां व भा-२. ११ आनी पछीनी पंक्तिओ व भा-२ मां आ प्रमाणे छे :

'पछइ[पछेइ] घणुं धन आणी, ते धनवलें प्रधान मेत्री, ते देशना राजाशुं युद्ध करी, राजानि[राजानें] मारी तीणि[तीगें] पुत्रि[पुत्रे] राज्य लीधुं. पछेइ ते राजा मित्र पहि[पहे] राज्य चलावतो हौउ. ते राज्यभार मित्रनि[मित्रनें] मूंकी आपण पहिं[पहे] विलासनां सुख भोगवतो हौउ.'

१२ मध्यें छता व भा-२. १३ पासे व, पासें भा-२. १४ °माहे भा-२. १५ बाध्यो इ, व भा-२. १६ हृतो व भा-२. १७ राजानें व भा-२. १८ प्रिय इ व भा-२. १९ पोसी व भा-२. २० वानरनिं व, वानरनें भा-२. २१ वज्रभपणि व, वज्रभपणे भा-२, वाल्हा इ. २२ हरित व भा-२. २३ आपेइ व भा-२. २४ आनी पछी व भा-२ मां 'घर' छे. २५ छेइ व भा-२. २६ तिहां व भा-२. २७ बोल्यावी व भा-२. २८ संघाति व भा-२. २९ व भा-२ मां नथी. ३० आ पंक्ति व भा-२ मां आ प्रमाणे छे :

'ते वाडीनां अनेक फूल फल जोतां जोतां थाको.'

३१ वानरनें इ भा-२, वानरनिं व. ३२ हौउ व भा-२. ३३ आहीं व भा-२. ३४ आ पंक्तिमा व भा-२ मां नीचे प्रमाणे शब्दक्रम छे :

'कोई तुं मारा शरीरनें उपद्रव करतो जोए, सावधान थै वारीं[वारें] '

३५ सूतो इ व भा-२. ३६ राजाना व भा-२. ३७ मध्यें व भा-२. ३८ पंक्तिनो उत्तरार्ध व भा-२ मां आ प्रमाणे छे :

'कस्तूरीनो परिमल एहवा सुगन्धया भमरं राजानेइ मस्तकि फूल हतां ते ऊपरि बैठो '

३९ इ व भा-२ मां नथी. ४० क्रोध्यो व भा-२. ४१ भमरो व भा-२. ४२ इशशिइ इ, इसे छेइ व भा-२. ४३ एहुं व भा-२. ४४ भमरानिं व, भमराने भा-२. ४५ लाग्युं इ, लागो व भा-२. ४६ उडाडि व भा-२. ४७ बेसि व, बेसे भा-२. ४८ वार्तानो अन्तभाग व भा-२ मां आ प्रमाणे छे :

'पछइ वान्र क्रोधे पाडग [पाड] काढी जिहां राजानिं [राजाने] मस्तकिं भमर बैठोइ तिहां पाडें मारतो हौउ ते भमरानिं [भमरानें], प्रहारिं [प्रहारें] राजानुं माथु वाढ्युं. पछइ तिहां सूती हती जे राणी ते आक्रंद करी बोली : "अरे मूर्ख वानर ताहरो विश्वास कीधो हतो, तें चांडाल शुं कर्म कीधुं." पछइ वानरें कह्युं, "मिं [मे] तो भमर [भमर ज] ऊडाड्यो. न ऊडि [ऊडे] तो भमर आणी घा दीधो. पछइ लोके वान्र धिक्कारी काढ्यो.

तीणिं [तीणें] वयुभाग श्लोक भणतो हौउ 'न तु मित्रमपण्डितं कार्यं, यद्वानरेण नृपो हतः' इति ते भणी हुं कहुं छुं जे 'पण्डितोऽपि वरं शत्रु' ए कथा.'

[पृ. १७८] ४९ करवानिं व, करवानें इ व भा-२. ५० तूं व तू भा-२. ५१ डाहो व भा-२. ५२ मैत्रीनो इ व भा-२ ५३ तूं व भा-२. ५४ वरि व, वरें भा-२. ५५ तूं व भा-२. ५६ होईं व भा-२. ५७ होइ इ व भा-२. ५८ व भा-२ मां आ श्लोकनो अनुवाद आ प्रमाणे छे :

'साधु पुरुष कष्टदशानि [कष्टदशानें] पाम्यो होईं तोहेइ हितकार्यनें करें जीणे आपणो अपयश न होइ.'

५९ व भा-२ मां नथी. ६० वरि व, करे भा-२. ६१ गाडोइ व भा-२. ६२ तरसु द, तरसो व भा-२. ६३ तोहइ द, पण व भा-२. ६४ चुहोटा-माहिनु इ, चोहोटानी चाटनुं व भा-२. ६५ पीवेइ द, पीवे व भा-२. [पृ. १७९] ६६ जे व भा-२. ६७ होइ द, होई व. ६८ व भा-२ मां

'सत्पुरुषे' शानी पछी आवे छे. ६९ वंठि व भा-२. ७० होइ व भा-२. ७१ तोहे व भा-२. ७२ करवुं व भा-२. ७३ अनुवादनो उत्तरार्ध व भा-२ मां आ प्रमाणे छे :

'जे करवा योग्य ते सत्पुरुषि [सपुरुषे] पंठ प्राण होइ तोहइ [तोहेइ] करवुं.'

७४ व भा-२ मां आ पंक्ति आ प्रमाणे छे :

'पछइ दमनक करटकानुं वित्र सरखुं अगगमतुं वचन सांभली हियांथी छटयो.'

७५ °थि इ. ७६ युं इ. ७७ करतो इ; आ पंक्ति व भा-२ मां नथी, पण पछी व भा-२ मां आ प्रमाणे वाक्य छे :

'चींतव्युं, "अहो माहा प्राण छून्य माछो ए मित्र मारवो न घटे ते मारयुं, ए अयुक्त कीधुं. ए वचन साधु.'

७८ व भा-२ मां आ अनुवाद आ प्रमाणे छे :

'भूमिनो वृत्तिलोप, मित्रनो नाश, राजा मैं सेवकनुं समान; भूमि कदाचि पामीये.'

७९ इ व भा-२ मां नथी. ८० पामीयेइं इ. ८१ °रहिते व, °रहेते भा-२. ८२ देवी व भा-२. ८३ कन्हि व, कन्हे भा-२. ८४ चोरयो व भा-२ ८५ कीजेइ व भा-२. [पृ. १८०] ८६ ये व भा-२. ८७ करिव, करे भा-२. ८८ हित न करे व भा-२. ८९ ये व भा-२. ९० आनी पछी व भा-२ मां 'पुरुष' छे. ९१ व भा-२ मां नथी. ९२ वालकनेइ इ व भा-२. ९३ यको व भा-२. ९४ प्रेम व भा-२. ९५ करे भा-२, करि व. ९६ त्यजीये व भा-२. ९७ सर्पे इ, सर्पि व भा-२. ९८ डस्यु व भा-२. ९९ हरत व भा-२. १०० छेदिये व भा-२. १ कीजइ इ. करिं व, करे भा-२. २ न शकीये व भा-२. ३ मनुष्यना इ व भा-२. ४ ते व भा-२. ५ राजाने इ, राजाना व भा-२. ६ होइ इ व भा-२ ७ बोले व भा-२. ८ बोले व भा-२. ९ बोलेइं व भा-२. [पृ. १८१] १० करे व भा-२. ११ करे व भा-२. १२ पणो व भा-२. १३ करइ इ, करे व भा-२, करिं व. १४ घणूं व भा-२. १५ आवे व भा-२; आनी पछी व भा-२ मां पंक्तिनो अन्तभाग आ प्रमाणे छे :

'एह्वा राजनीतिना गुण जाणवा अने वेश्यानाइ जाणवा.'

१६ पच्छिइ व, पच्छेइ भा-२. १७ कन्हि व, कन्हे भा-२. १८ आवी व भा-२. १९ दमनकनि व. २० आणि व. २१ तूं व भा-२. २२ करि व,

करे भा-२. २३ छे व भा-२. २४ अनेइ व भा-२. २५ पाहिं व भा-२. २६ सीखवीये इ, शीखवीये व भा-२. २७ तुब, तूं भा-२. २८ व भा-२ मां 'करावें छिद्र[छेदं]' छे; इ मां 'करावाइं' छे. २९ कीजेइ व भा-२. ३० एतलर्नें व भा-२. ३१ °थी व भा-२. ३२ कइन्हें इ, कोइनि व, कोइनें भा-२. ३३ जय इ व भा-२. ३४ होइ इ व भा-२. ३५ घणानो इ व भा-२. ३६ थाइ इ व भा-२. ३७ के व भा-२. ३८ होइ इ व भा-२. ३९ करिं व करें भा-२. ४० वांछे व भा-२. [पृ. १८२] ४१ अनें व, अने भा-२. ४२ वरिं व, वरें भा-२; आनी पछीना 'बुद्धि होइ' शब्दो व भा-२ मां नथी. ४३ जेह इ, जे व भा-२. ४४ शत्रुनिइं व, शत्रुनेइ भा-२. ४५ न्यायनई भा-१, नायनें व भा-२. ४६ जाणें व भा-२. ४७ एक व भा-२. ४८ अन्यायना व भा-२; आनी पछी व भा-२ मां 'कलहनि[कलहने] त्यजें'. ४९ करें व भा-२. ५० राजानें व भा-२. ५१ आनी पछी व भा-२ मां 'वचन' छे. ५२ एकर्ठुं व भा-२. ५३ व भा-२ मां नथी. ५४ राजाइं व भा-२. ५५ पूज्य व भा-२. ५६ बोलें व भा-२. ५७ व भा-२ मां नथी. ५८ होइ इ व भा-२. ५९ राजाइं व भा-२; व भा-२ मां आनी पछी 'सर्व प्रधान' छे. ६० तेथी व भा-२. ६१ बोल्युइ इ, बोल्याइ व भा-२. ६२ °माहे व, °माहिं भा-२. ६३ दीसेइ व भा-२. ६४ अगीयो व भा-२. ६५ सरणो व भा-२. ६६ दीसेइ व भा-२. ६७ न होइ व भा-२. [पृ. १८३] ६८ वंले व भा-२. ६९ सरीसा इ, सरसा व भा-२. ७० दीसि व, दीसें भा-२. ७१ दीसें व भा-२. ७२ परीक्षण व, परीक्षा इ भा-२. ७३ भर्लुं व भा-२. ७४ तेथी व भा-२. ७५ अन्यानुं व भा-२. ७६ करे भा-२, करें भा-१. ७७ ये व भा-२. ७८ त्रिमासी इ व भा-२. ७९ करेइ व भा-२. ८० पामेइ व भा-२. ८१ पणी व भा-२. ८२ होइ इ व भा-२. ८३ बुद्धि आणजी व भा-२. ८४ थई व भा-२. ८५ चौतवी भा-१ व भा-२. ८६ व भा-२ मां नथी. ८७ व भा-२ मां नथी. ८८ जोवो व भा-२. ८९ बीनवी व भा-२. ९० आरणरहे भा-१, आरणरहे इ व भा-२. ९१ करतो हवो. [पृ. १८४] ९२ मार्गे व भा-२. ९३ व भा-२ मां आ पुष्पिका आ प्रमाणे छे :

'इति श्रीविष्णुशर्मणा विरचिते पंचाख्याने राजनीतिशास्त्रे मित्रभेदे नाम प्रथमं तंत्रं समाप्तं' ॥

इ प्रत अहीं पूर्ण थाय छे, तेमां पछीनां तंत्र नथी.

'प्राचीन गुर्जर ग्रन्थमाला 'ना प्रथम प्रकाशन विषे केटलाक अभिप्राय

Shri G V. Mavlankar (Speaker, Indian Parliament, President, Gujarat Vidya Sabha, Ahmedabad)—"It was a new thing to me to know that our old literature has a number of works in prose. Then there are a couple of points which I appreciate very much. The first is that the book is printed in Devanagari script The other point is the gradual compilation of a vocabulary consisting of words of special importance It is essential to have such a vocabulary for the study of our old literature "

Dr Suniti Kumar Chatterji (*Emeritus Professor of Comparative Philology, University of Calcutta, Chairman, West Bengal Legislative Council*)—"*I congratulate you on the very* fine piece of work which you have brought under the auspices *of the University of Baroda This is a very auspicious start.* The book, because of both its language and subject-matter has very great interest *for all the students of Indian linguistics and* philosophy as well as general culture and the editing has *been done in a very fine scholarly style, and on the top of* that, the printing and the get up are excellent It was a very *good idea to print the introduction and everything in Gujarati* in the Devanagari character Your work is a valuable addition *to the mass of texts in early* Gujarati which has been *made* already available by other scholars The University of Baroda can be *most* heartily felicitated for inaugurating this series of *Prācina Gurjara Granthamala*, which I feel perfectly confident, will become a very honoured series among the various well-known series of texts published by different institutions of India "

Dr. R L Turner (Director, School of Oriental and African Studies, *London University*)—" *I have now been very carefully* through your Shashtishataka Prakarana and I should like to take this further opportunity of saying how much I appreciate

the additions you have made and how useful this type of work will be for elucidating the history of the modern Indo Aryan Languages I have found the vocabulary in particular of the greatest use for my work for the Comparative Dictionary of Indo Aryan I would like to congratulate you on so successfully initiating this series of old Gujarati texts '

Professor Alfred Master (Retired Professor of Indian Philology, School of Oriental and African Studies, London University)—" The edition as the part of a planned series is very welcome, as the number of critical texts in old Gujarati published is still very small, considering the vast amount of manuscripts extant As it is still necessary to emphasise the linguistic rather than the literary significance of old Gujarati texts, the publication of a manuscript of Somasundarasuri's commentary written only fourteen years after his death is of particular importance The book is well-planned, clearly printed and well-bound so that it is a pleasure to the student to handle and read '

Professor G H Bhatt (Director, Oriental Institute, Baroda, in the *Journal of the Oriental Institute* Vol II, p 405)—' We congratulate Dr Sandesara on his excellent edition and we are sure, the new series under his able guidance will, in course of time, supply the necessary sources of a Gujarati Dictionary to be prepared on historical principles—a long felt desideratum "

Dr. A N. Upadhye (Rajaram College, Kolhapur, President, Prakrit and Jainism section, 11th All India Oriental Conference)—" The introduction gives useful material, and the text of the Balavabodhas is very well presented .. ..I am sure, you will bring out many such books which would give us a connected account of the development of Apabhraṃśa prose "

Dr. J Filliozat (Professor of Sanskrit, College de France; in *Journal Asiatique, no 2 of 1953*)—

" Premier volume d une Prācīna Gurjar Granthamālā " Serie d'ouvrages anciens du Gujarāt," publiée à Baroda par L' Université Mahārāja Sayājī Rao, avec une préface en gujarātī par

Mme Hamsa Mheta, Vice Chancelier......L' édition est trés soigneuse et trés bien présentée ....." (First volume of Prācina Gurjar Granthamālā 'series of ancient works of Gujarat' published at Baroda by the Maharaja Sayajirao University, with a preface in Gujarati by Mrs. Hansa Mehta, Vice-Chancellor...The edition is very careful and very well presented..).

श्री· कनैयालाल माणेकलाल मुनशी (गवर्नर, उत्तर प्रदेश; प्रमुख, भारतीय विद्याभवन, मुंबई)—"तमे तो खूब काम करी रह्या छो; अने प्राचीन गुर्जर ग्रन्थमाला घणी ज उपयोगी थशे· तमारा प्रयत्नोने सफळता इच्छुं छु·"

श्री· हरसिद्धभाई दिवेटिया (वाइस-चान्सेलर, गुजरात युनिवर्सिटी)—'भाषा तेम ज विवेचन बन्नेनी दृष्टिए पुस्तक मूल्यवान छे अने तमारा विवेचन अने विद्वत्तापूर्ण शब्दकोशथी ते वधारे मूल्यवान बन्युं छे."

श्री· कृष्णलाल मोहनलाल झवेरी (वाइस-चान्सेलर, शेठ ना. दा. ठा. महिला विद्यापीठ)—"साधारण रीते एवी मान्यता प्रसरी गयेली के जूना गुजरातीमां गद्य हतुं ज नहि.......आ संशोधन, ने ते पण शास्त्रीय रीते करीने तमे आपणा साहित्यनी परंपरा पर नवो ज प्रकाश पाड्यो छे."

विख्यात विवेचक **प्रो. रामनारायण विश्वनाथ पाठक**—"वाचना संपूर्ण संतोष थयो. तमे जे उद्देशथी ग्रन्थमाला शरू करी छे तेने सिद्ध करवा बधी रीते उपयोगी नीवडे तेवी संपादनपद्धति योजी छे. आ पुस्तक हवे पछी प्राचीन गुजराती भाषाना पुस्तकसंपादननो एक सारो नमूनो थई पडशे. मुद्रण चोख्खुं अने मूळ पाठ अने बालावबोध स्पष्ट जुदा तरी आवे एवी रीते करेलुं छे ते योग्य ज कर्युं छे. अने आपेलो शब्दकोश भविष्यमां गुजराती भाषानो पूर्ण कोश करवो हशे त्यारे पूरो उपयोगी थशे."

प्रो· रसिकलाल छोटालाल परीख (अध्यक्ष, भो. जे. अध्ययन-संशोधन विद्याभवन, गुजरात विद्यासभा, अमदावाद)—"महाराजा

सयाजीराव विश्वविद्यालय स्थापी मुंबई राज्ये युनिवर्सिटीना साचा अर्थमां —'गुरुशिष्यमंडल ना अर्थमां—विद्याकीय संस्थानो अखतरो आदर्यो छे आ युनिवर्सिटी अनेक विद्याशाखाओ विकसाववा प्रयत्न करे छे, तेमां तेनो प्रशंसनीय अने सौथी वधारे आवश्यक प्रयत्न गुजराती विद्याविभाग खोलवानो छे सद्भाग्ये आ विभागना अध्यक्ष तरीके डॉ सांडेसरा जेवा कृतपरिश्रम संशोधनकुशळ विद्वाननी निमणूक थई छे डॉ सांडेसराए प्राचीन गुर्जर ग्रंथमाळानी योजना करी तेना पहेला ग्रंथ तरीके नेमिचन्द्र भंडारी-विरचित 'षष्टिशतक प्रकरण' अने तेना त्रण बालावबोधोनुं संपादन करी प्रकाशन कर्युं छे ते तेमनी कार्यपरायणता अने संशोधन दक्षता व्यक्त करे छे

गुजराती भाषानुं वास्तविक स्वरूप जाणवा माटे तेना विकास अने घडतरने जाणवा जरूरी छे सुनीतिकुमार चाटुर्ज्याए बंगाळी भाषानुं अने फ्रेन्च भाषाशास्त्री सद्गत ब्लोके मराठी भाषानुं जे शास्त्रीय पद्धतिए निरूपण कर्युं छे तेवुं गुजरातीनुं थवुं हजी बाकी छे अंग्रेजी भाषानो जेवो शब्दकोश ओक्सफर्ड युनिवर्सिटी तरफथी बहार पड्यो छे तेवो गुजराती भाषानो शब्दकोश संशोधकोनी प्रतीक्षा करे छे पण आ प्रवृत्तिओ हाथ धराय ते पहेलां कालक्रममां प्राचीन गुजराती साहित्यना कृतिओनुं शास्त्रीय पद्धतिए संशोधन अने प्रकाशन वहाळा प्रमाणमां थवुं जरूरी छे आ जरूरियातने लक्ष्य करी डॉ सांडेसराए आ ग्रंथमाळानी योजना अने आ ग्रंथनुं संपादन कर्यां छे ते शास्त्रीयताना साचा मार्गे जाय छे एवो मारो अभिप्राय छे

महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालयना, गुर्जर ग्रंथमाळाना आ पहेला प्रकाशनने आवकार आपतां अने तेना संपादकने धन्यवाद आपतां मने आनंद थाय छे. आवी ग्रंथमाळाने अवकाश आपवा माटे गुजराती भाषाना अभ्यासीओ वाइस चान्सेलर श्रीमती हंसाबहेनने अभिनंदन आपशे"

विख्यात साहित्यकार श्री रमणलाल वसंतलाल देसाई ('सयाजी विजय' ता २९मी मार्च १९५३ना अंकमां)—"वडोदरा राज्यनी

'प्राचीन काव्यमाला'नी श्रेणीनी याद आपती अने ए श्रेणीना कार्य-उद्देशने विस्तार आपती 'प्राचीन गुर्जर ग्रन्थमाला'ना पहेला ग्रन्थ तरीके प्रसिद्ध थयेलु 'षष्टिशतक प्रकरण' संपादनकार्यनो एक यशस्वी नमूनो बनी रह्यु छे."

प्रो. विष्णुप्रसाद र. त्रिवेदी (अध्यक्ष, श्री. चुनीलाल गांधी, विद्याभवन, एम. टी. बी. कॉलेज, सूरत)—*संपादननी समग्र पद्धति* नमूनेदार छे...... ग्रन्थनो देखाव आकर्षक छे, तेनु संपादन प्रशंसापात्र छे, अने तेनु तात्पर्य सद्वृत्ति अने सद्धर्मना शोधकने उपयोगी नीवडे तेम छे."

प्रो. अनंतराय म. रावळ (*गुजरात कॉलेज, अमदावाद*)—"आपणी भाषाना अभ्यासीओने भाषाविकासना इतिहासमा खूटता अंकोडा पूरा पाडती तेम ज साहित्यना अभ्यासीओने अभ्यास अने विवेचन माटे नवो भंडार संपडावती प्राचीन गुजराती कृतिओनु प्रकाशन आ पुस्तकथी प्रारंभती, तमारा विश्वविद्यालयनी 'प्राचीन गुर्जर ग्रन्थमाला' गुजराती साहित्यनी मोटी सेवा करशे."

प्रो. डोलरराय मांकड (आचार्य, दरबार गोपाळदास महाविद्यालय, अलियाबाडा)—"*युनिवर्सिटीने योग्य ए प्रकाशन छे.* आपणा प्राचीन गद्यना अभ्यासमा ए घणु उपयोगी नीवडशे, एमा शंका नथी. संस्कृतनी पेठे जूनी गुजरातीमा पण आवी विवरणशैली हती ते पण आ प्रकाशनथी स्पष्ट थाय छे."

प्रो. गौरीप्रसाद चु. झाला (सेन्ट झेवियर्स कॉलेज, मुंबई)—"प्रस्तावना अने शब्दकोश बन्नेमा तमारी लाक्षणिकता—विद्वत्तानी, विचारनी अने शैलीनी—अंकाई छे अभिनन्दन अने 'ग्रन्थमाला'ने शुभेच्छा!"

डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल (कॉलेज ऑफ इन्डोलोजी, बनारस हिन्दु युनिवर्सिटी)—"नेमिचन्द्र भंडारी विरचित 'षष्टिशतक' ग्रन्थ

को तीन बालावबोध टीकाओं के साथ प्रकाशित देख कर अत्यन्त प्रसन्नता हुई. आपने बडौदा विश्वविद्यालय से प्राचीन गुर्जर ग्रन्थमाला का संपादन आरम्भ कर के अपने लिये उत्तम कार्य का सूत्रपात किया है। **गुजराती भाषा में जैसा आपने भूमिका में लिखा है इतना अधिक प्राचीन साहित्य बच गया है जितना अन्य किसी प्रादेशिक भाषा में नहीं।** गुजराती का यह साहित्य गुजराती के लिये ही नहीं, हिन्दी की प्राचीन व्युत्पत्तियों के लिये भी अनमोल है। शब्दनिरुक्ति की जो समस्या गुजराती के लिये है, वही हिन्दी के लिये है, वही बंगला और मराठी, पंजाबी के लिये भी है। असम और उड़िया भाषा के लिये भी अपभ्रंशजन्य शब्दों की व्युत्पत्ति की सामग्री प्राचीन भाषा साहित्य में से उपलब्ध हो सकेगी। मेरी दृष्टि से ११वीं शती से १९-१६वीं शती तक का साहित्य संस्कृत परिवार की भाषाओं के लिये एक जैसा उपयोगी है। इस गुजराती 'षष्टिशतक' में कितने ही हिन्दी शब्दों की व्युत्पत्ति मुझे मिल रही है। इस ग्रन्थ से मेरा परिचय कराने के लिये आप का कृतज्ञ हूं।"

प्राचीन गुर्जर ग्रन्थमालानां प्रकाशनो

१. नेमिचन्द्र भंडारी-विरचित **षष्टिशतक प्रकरण**—त्रण बालावबोध सहित. एक ज प्राकृत ग्रन्थना पंदरमा-सोळमा शतक आसपास थयेला त्रण जूना गुजराती गद्यानुवादो: प्रस्तावना, परिशिष्टो अने शब्दकोश सहित संपादक: डॉ. भोगीलाल सांडेसरा पृ. ३०+१६२. मूल्य पांच रुपिया.

२. महीराजकृत **नल-दवदंती रास**—सं. १६४१मां कर्तांना हस्ताक्षरोमां लखायेली प्रति अनुसार. संपादक: डॉ. भोगीलाल सांडेसरा पृ. २४+१७४. मूल्य रुपिया ४=२५ नया पैसा.

३. **प्राचीन फागु संग्रह**—विक्रमना चौदमाथी अढारमा शतक सुधी रचायेलां आडत्रीस फागु-काव्योनो समुच्चय, प्रतिपरिचय अने कृतिपरिचय, फागु-विषयक अभ्यासलेख अने शब्दकोश सहित. संपादक: डॉ. भोगीलाल सांडेसरा अने डॉ. सोमाभाई पारेख. (देवनागरी टाईप) पृ. ७२+२९० मूल्य आठ रुपिया, (विद्यार्थी आवृत्ति, गुजराती टाईप) पृ. ५६+२८६. मूल्य पांच रुपिया.

४. **वर्णक-समुच्चय, भाग १**—मूल पाठः सांस्कृतिक अने साहित्यिक इतिहास माटे महत्त्वना पद्यानुकारी गद्य-वर्णकोनो समुच्चय. संपादकः डॉ. भोगीलाल सांडेसरा. पृ. १२+२२०. मूल्य रुपिया ७=५० नया पैसा.

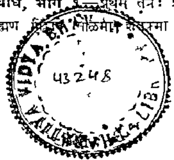
५. **भालणकृत नलाख्यान**—मध्यकालीन गुजरातीना लक्षणो जाळवती श्रद्धेय प्रति अनुसार पुनःसंपादन; प्रस्तावना अने शब्दकोश सहित. संपादकः प्रो. केशवराम का. शास्त्री. पृ. ७६+१७६. मूल्य आठ रुपिया.

६. उदयभानुकृत **विक्रमचरित्र रास**—विक्रम-विषयक वार्ताचक्रोमा महत्त्वना अकोडारूप, मध्यकालीन गुजरातीनी एक पद्यवारता संपादकः स्व प्रो. बलवंतराय क. ठाकोर. पृ. २६+६८. मूल्य बे रुपिया.

७. **भालणः एक अध्ययन**—भालणना जीवन अने कवननी, ऐतिहासिक तेम ज भाषा-साहित्यविषयक सांगोपांग समीक्षा. लेखकः प्रो. केशवराम का. शास्त्री. पृ. १८६ मूल्य रुपिया ४=७५ नया पैसा.

८. **वर्णक-समुच्चय, भाग २**—सांस्कृतिक अध्ययन अने शब्दसूचिओ. कर्ताः डॉ. भोगीलाल सांडेसरा अने डॉ. रमणलाल ना. महेता. पृ २५६. मूल्य रुपिया ८=२५ नया पैसा.

९. यशोधीरकृत **पंचाख्यान बालावबोध, भाग १**—प्रथम वार प्रसिद्ध संस्कृत कथाग्रन्थ 'पंचतंत्र'नो, एक ब्राह्मण [illegible] सैकामां जूनी गुजरातीमां करेलो गद्यानुवाद.



प्राप्तिस्थान :

युनिवर्सिटी पुस्तकवेचाण विभाग,

महाराजा सयाजीराव युनिवर्सिटी ऑफ बरोडा प्रेस
(साधना प्रेस), राजमहेल दरवाजा पासे,
राजमहेल रोड, वडोदरा.